विषय-सूची

सूरसागर

दशम स्कंध

(क्रमशः)

ग्रीष्म-लीला

सखियों के साथ यमुना-विहार *राग टोड़ी*

सुनि कहियौ अब न्हान चलौगी।
तब अपनौ मन भायौ कीजौ, जब मोकौं हरि-संग मिलौगी॥
वहै बात मन मैं गहि राखी, मैं जानति कबहूँ विसरौगी।
बड़ी बार मोकौं भई आऐं, न्हान चलति की बहुरि लरौगी॥
गहि-गहि बाहँ सबनि करि ठाढ़ी, कैसैंहू घर तैं निसरौगी।
सूर राधिका कहति सखिनि सौं, बहुरि आइ घर-काज करौगी॥
॥ १७५० ॥ २३६८ ॥

राग मारू

राधिका-संग मिलि गोप-नारी।
चलीं हिलि मिलि सबै, रहसि विहँसति तरुनि, परसपर कौतुहल करत भारी॥
मध्य ब्रज-नागरी, रूप-रस-आगरी, घोष-उज्जागरी, स्याम-प्यारी।
वदन-दुति इंदु री, दसन-छवि-कुंद री, काम-तनु दुंद री करनहारी॥
अंग अँग सुभग अति, चलति गजराज-गति, कृष्न सौं एक मति जमुन जाहीं।
कोउ निकसि जाति, कोउ ठठकि ठाढी रहति, कोउ कहति संग मिलि चलहु नाहीं॥
जुवति आनँद भरी, भईं जुरिकै खरी, नई छरहरी सुठि बैस थोरी।
सूर-प्रभु सुनि स्रवन, तहाँ कीन्हौ गवन, तरुनि मन रवन सब ब्रज-किसोरी॥
॥ १७५१ ॥ २३६९ ॥

राग नट नारायन

गईं ब्रज-नारि जमुना-तीर।
संग राजति कुँवरि राधा, भई सोभा-भीर॥
देखि लहरि तरंग हरषीं, रहत नहिं मन धीर।
स्नान कौं वै भईं आतुर, सुभग जल गंभीर॥
कोउ गई जल पैठि तरुनी, और ठाढ़ीं तीर।
तिनहिं लई बुलाइ राधा, करति सुख-तनु-कीर॥
एक एकहिं धरति भुज भरि, एक छिरकति नीर।
सूर राधा हँसति ठाढ़ी, भींजी छवि तनु-चीर॥
॥ १७५२ ॥ २३७० ॥

राग जैतश्री

राधा जल विहरति सखियनि सँग।
ग्रीव-प्रजंत नीर मैं ठाढ़ी, छिरकति जल अपनैं अपनैं रँग॥
मुख भरि नीर परसपर डारति, सोभा अतिहिं अनूप वढ़ी तब।
मनहु चंद-गन सुधा गँडूपनि, डारति हैं आनंद भरे सब॥
आईं निकसि जानु कटि लौं सब, अँजुरिनि तैं लै लै जल डारतिं।
मानहु सूर कनक-वल्ली जुरि, अंमृत-बूँद पवन-मिस झारतिं॥
॥ १७५३ ॥ २३७१ ॥

राग नट

जमुना जल विहरति ब्रज-नारी।
तट ठाढ़े देखत नँद-नंदन, मधुर-मुरलि कर धारी॥
मोर मुकुट, स्रवननि मनि कुडल, जलज-माल उर भ्राजत।
सुंदर सुभग स्याम तन नव घन विच वग पाँति विराजत॥
उर वनमाल सुमन वहु भाँतिनि, सेत, लाल, सित, पीत।
मनहु सुरसरी तट वैठे सुक वरन वरन तजि भीत॥
पीताम्बर कटि तट छुद्रावलि, वाजति परम रसाल।
सूरदास मनु कनकभूमि ढिग, वोलत रुचिर मराल॥
॥ १७५४ ॥ २३७२ ॥

राग विहागरौ

नटवर-वेप काछे स्याम।
पद-कमल नख-इदु-सोभा ध्यान पूरन काम॥

जानु जंघ सुघटनि करभा, नहीं रंभा-तूल।
पीत पट काछनी मानहुँ, जलज-केसर झूल॥
कनक छुद्रावली पंगति, नाभि कटि कैं भीर।
मनहुँ हँस-रसाल-पगति, रहे हैं ह्रद-तीर॥
झलक रोमावली-सोभा, ग्रीव मोतिनि हार।
मनहुँ गंगा-बीच जमुना, चली मिलि त्रय धार॥
बाहु दंड बिसाल तट दोउ, अंग-चंदन रैनु।
तीर-तरु बनमाल की छबि, ब्रज-जुवति सुख दैनु॥
चिबुक पर अधरनि, दसन-दुति बिंब बीजु लजाइ।
नासिका सुक, नैन खंजन, कहत कवि सरमाइ॥
स्रवन कुंडल कोटि-रबि-छबि, भृकुटि काम-कोदंड।
सूर-प्रभु हैं नीप कैं तर, सीस धरे सिखंड॥
॥१७५५॥२३७३॥

राग पूरबी

उपमा धीरज तज्यौ निरखि छबि।
कोटि मदन अपनौ बल हारयौ, कुँडल किरनि छप्यौ रवि॥
खंजन कंज, मधुप, बिधु, तड़ि, घन दीन रहत कहुँवै दबि।
हरि-पटतर दै हमहिं लजावत, सकुच नाहिं खोटे कवि॥
अरुन अधर, दसननि दुति निरखत, बिद्रुम सिखर लजाने।
सूर स्याम आछौ वपु काछे, पटतर मेटि बिराने॥
॥१७५६॥२३७४॥

राग गौरी

उपमा हरि-तनु देखि लजानी।
कोउ जल मैं, कोउ बननि रहीं दुरि, कोउ कोउ गगन समानी॥
मुख निरखत ससि गयौ अंबर कौं, तड़ित दसन-छबि हेरि।
मीन कमल, कर, चरन, नयन डर, जल मैं कियो बसेरि॥
भुजा देखि अहिराज लजाने, बिबरनि पैठे धाइ।
कटि निरखत केहरि डर मान्यौ, बन-बन रहे दुराइ॥
गारी देहिं कविनि कैं बरनत, श्री-अँग पटतर देत।
सूरदास हमकौं सरमावत, नाउँ हमारौ लेत॥
॥१७५७॥२३७५॥

राग कान्हरौ

बनी मोतिनि की माल मनोहर।
सोभित स्याम-सुभग-उर-ऊपर, मनु गिरि तैं सुरसरी धँसी धर ॥
तट भुज दंड, भौंर भृगु-रेखा, चंदन चित्र तरंग जु सुंदर।
मनि की किरन मीन, कुंडल-छवि मकर, मिलन आए त्यागे सर ॥
जग्युपबीत विचित्र सूर सुनि, मध्य धार धारा जु बनी वर।
संख चक्र गदा पद्म पानि मनु कमल कूल हंसनि कीन्हे घर ॥
॥१७५८॥२३७६॥

राग नट नारायन

राधा निरखि भूली अंग।
नंद-नंदन-रूप पर, गति मति भई तनु पंग ॥
इत सकुच अति सखिनि कौ, उत होति अपनी हानि।
ज्ञान करि अनुमान कीन्हौ, अबहिं लैहैं जानि ॥
चतुर सखियनि परखि लीन्हीं, समुझि भईं गँवारि।
सबै मिलि इत न्हान लागीं, ताहि दियौ बिसारि ॥
नागरी मुख-स्याम निरखति, कबहुँ सखियनि हेरि ॥
सूर राधा लखति नाहीं इन दई अवढेरि ॥
॥१७५९॥२३७७।

राग कान्हरौ

जब जान्यौ ये न्हाति सबै।
हरि-प्रति-अंग-अंग की सोभा, अँखियनि मग ह्वै लेउँ अबै ॥
कमल-कोस मैं आनि दुराऊँ, बहुरि दरस धौं होइ कबै।
यह मन करि जुवतिनि तन हेरति, इनसौं करियै गोप तबै ॥
कबहुँक कहै तजौं मरजादा, सकुचति है पुनि नहीं फबै।
सूरदास तबहीं मन मानै, सगहिं रैहौं जाइ जबै ॥
॥१७६०॥२३७८॥

राग गौरी

चितै राधा रति-नागर-ओर
नैन-बदन छवि यौं उपचति, मनु ससि अनुराग चकोर ॥

सारस रस अचवन कौं मानौ, फिरत मधुप जुग जोर।
पान करत कहुँ तृप्ति न मानत, पलकनि देत अकोर॥
लियौ मनोरथ मानि सफल ज्यौं, रजनि गएँ पुनि भोर।
सूर परस्पर प्रीति निरंतर, दंपति हैं चितचोर॥

॥१७६१॥२३७९॥

राग कल्यान

यह कछु भोरैं हि भाइ भई।
निरखत वदन नंद नंदन कौ, और हुती सु गई॥
हिरदै जामि प्रेम अंकुर जड़, सप्त पताल गई।
सो द्रुम पसरि सिखर अंबर लौं, सब जग छाइ लई॥
बचन सुपत्र, मुकुल अवलोकनि, गुन-निधि पुहुप मई।
परसि परम अनुराग सींचि सुख, लगी प्रमोद जई॥
मन के सकल मनोरथ पूरन, साँभरि भार नई।
सूरदास फल गिरिधर नागर, मिलि रस-रीति ठई॥

॥१७६२॥२३८०॥

राग रामकली

चितवनि रोकैं हूँ न रही।
स्याम सुंदर-सिधु-सनमुख, सरित उमँगि बही॥
प्रेम-सलिल प्रवाह भँवरनि, मिति न कबहुँ लही।
लोभ-लहर-कटाच्छ, घूँघट-पट-करार ढही॥
थके पल पथ, नाव-धीरज, परति नहिँन गही।
मिली सूर सुभाव स्यामहिँ, फेरिहू न चही॥

॥१७६३॥२३८१॥

राग जैतश्री

देखौ री राधा उत अँटकी।
चितै रही इक टक हरि ही तन ना जानियै कौन अँग लटकी॥
कालिह हमैं कैसैं निदरति ही, मेरैं चित वह टरति न खटकी।
न्हात रही कैसैं सँग मिलिकै, चित चंचल बिरहा की चटकी॥

राग कान्हरौ

बनी मोतिनि की माल मनोहर।
सोभित स्याम-सुभग-उर-ऊपर, मनु गिरि तैं सुरसरी धँसी धर ॥
तट भुज दंड, भौंर भृगु-रेखा, चंदन चित्र तरंग जु सुंदर।
मनि की किरन मीन, कुडल-छवि मकर, मिलन आए त्यागे सर ॥
जग्युपबीत विचित्र सूर सुनि, मध्य धार धारा जु बनी बर।
संख चक्र गदा पद्म पानि मनु कमल कूल हंसनि कीन्हे घर ॥
॥१७५८॥२३७६॥

राग नट नारायन

राधा निरखि भूली अंग।
नंद-नंदन-रूप पर, गति मति भई तनु पंग ॥
इत सकुच अति सखिनि कौ, उत होति अपनी हानि।
ज्ञान करि अनुमान कीन्हौ, अबहिं लैहैं जानि ॥
चतुर सखियनि परखि लीन्हीं, समुझि भई गँवारि।
सबै मिलि इत न्हान लागीं, ताहि दियौ बिसारि ॥
नागरी मुख-स्याम निरखति, कबहुँ सखियनि हेरि ॥
सूर राधा लखति नाहीं, इन दई अवढेरि ॥
॥१७५९॥२३७७।

राग कान्हरौ

जब जान्यौ ये न्हाति सबै।
हरि-प्रति-अंग-अंग की सोभा, अँखियनि मग ह्वै लेउँ अबै ॥
कमल-कोस मैं आनि दुराऊँ, बहुरि दरस धौं होइ कबै।
यह मन करि जुवतिनि तन हेरति, इनसौं करियै गोप तबै ॥
कबहुँक कहै तजौं मरजादा, सकुचति है पुनि नहीं फबै।
सूरदास तबहीं मन मानै, सगहिं रैहौं जाइ जबै ॥
॥१७६०॥२३७८॥

राग गौरी

चितै राधा रति-नागर-ओर
नैन-बदन-छवि यौं उपजति, मनु ससि अनुराग चकोर ॥

सारस रस अचवन कौं मानौ, फिरत मधुप जुग जोर।
पान करत कहुँ तृप्ति न मानत, पलकनि देत अकोर ॥
लियौ मनोरथ मानि सफल ज्यौं, रजनि गएँ पुनि भोर।
सूर परस्पर प्रीति निरंतर, दंपति हैं चितचोर ॥

॥१७६१॥२३७९॥

राग कल्यान

यह कछु भोरैं हि भाइ भई।
निरखत वदन नंद नंदन कौ, और हुती सु गई ॥
हिरदै जामि प्रेम अंकुर जड़, सप्त पताल गई।
सो द्रुम पसरि सिखर अंबर लौं, सब जग छाइ लई ॥
बचन सुपत्र, मुकुल अवलोकनि, गुन-निधि पुहुप मई।
परसि परम अनुराग सींचि सुख, लगी प्रमोद जई ॥
मन के सकल मनोरथ पूरन, साँभरि भार नई।
सूरदास फल गिरिधर नागर, मिलि रस-रीति ठई ॥

॥१७६२॥२३८०॥

राग रामकली

चितवनि रोकैं हूँ न रही।
स्याम सुंदर-सिधु-सनमुख, सरित उमँगि बही ॥
प्रेम-सलिल प्रबाह भँवरनि, मिति न कबहुँ लही।
लोभ-लहर-कटाच्छ, घूँघट-पट-करार ढही ॥
थके पल पथ, नाव-धीरज, परति नहिंन गही।
मिली सूर सुभाव स्यामहिं, फेरिहू न चही ॥

॥१७६३॥२३८१॥

राग जैतश्री

देखौ री राधा उत अँटकी।
चितै रही इक टक हरि ही तन ना जानियै कौन अँग लटकी ॥
काल्हि हमैं कैसैं निदरति ही, मेरैं चित वह टरति न खटकी।
न्हात रही कैसैं सँग मिलिकै, चित चचल बिरहा की चटकी ॥

बात कहत तुलसी मुख मेलै, नैन-सैन दे-दे मुँह मटकी।
सूर स्याम कैं रूप भुलानी, राधा कैं सुधि रही न घट की॥
॥१७६४॥२३८२॥

राग बिलावल

चितै रही राधा हरि कौ मुख।
भृकुटि विकट, बिसाल नैन लखि, मनहिं भयौ रतिपति दुख॥
उतहिं स्याम इकटक प्यारी-छवि, अग अंग अवलोकत।
रीझे रहे इत हरि, उत राधा, अरस-परस दोउ नोकत॥
सखिनि कह्यौ वृषभानु-सुता सौं, देखे कुँवर कन्हाई।
सूर स्याम येई हैं, ब्रज मैं जिनकी होति बड़ाई॥
॥१७६५ २३८३॥

राग रामकली

हमहिं कह्यौ हो स्याम दिखावहु।
देखहु दरस नैन भरि नीकैं, पुनि-पुनि दरस न पावहु॥
बहुत लालसा करति रही तुम, वै तुम कारन आए।
पूरी साध मिली तुम उनकौं, यातैं हमहिं भुलाए।
नीकैं सगुन आजु ह्यॉं आई, भयौ तुम्हारौ काज।
सुनहु सूर हमकौं कछु दैहौ, तुमहिं मिले ब्रजराज॥
॥१७६६॥२३८४॥

राग रामकली

राधा कह्यौ आजु इन जानौं।
बार-बार मैं हरि-तन चितई, तबहीं ये मुसुकानी॥
कालिह कही मैं इनसौं वैसैं, अब तौ बात न ठानी।
यह चतुरई परी मोहीं पर, मन मन अतिहिं लजानी॥
मेरी बात गई इन आगैं, अबहिं करति बिनु पानी।
सूरदास-प्रभु कहा कहौं मैं, अब तुम हाथ बिकानी॥
॥१७६७॥२३८५॥

राग बिलावल

मैं अतिहीं यह पोच करी।
ये मेरी मरजादा लैहैं, ता दिन बहुत लरी।

सुंदर स्याम कमल-दल-लोचन, तुम अब होहु सहाइ।
ऐसी बात कहौं इन आगैं, मेरी पति जनि जाइ॥
तब इक बुद्धि रची मनहीं मन, अति आनंद हुलास।
सूर स्याम राधा-आधा-तन, कीन्हौ बुद्धि-प्रकास॥
॥१७६८॥२३८६॥

राग गूजरी

राधा चलहु भवनहिं जाहिं।
कबहिं की हम जमुन आईं, कहहिं अरु पछिताहिं॥
कियौ दरसन स्याम कौ तुम, चलौगी की नाहिं।
बहुरि मिलिहौ चीन्हि राखहु, कहत, सब मुसुकाहिं॥
हम चलीं घर तुमहुँ आवहु, सोच भयौ मन माहिं।
सूर राधा सहित गोपी चलीं ब्रज-समुहाहिं॥
॥१७६९॥२३८७॥

राग बिलावल

कहि राधा हरि कैसे हैं।
तेरैं मन भाए की नाहीं, की सुंदर, की नैसे हैं॥
की पुनि हमहिं दुराव करौगी, की कैहौ वै जैसे हैं।
की हम तुमसौं कहति रहीं ज्यौं साँच कहौ की तैसे हैं॥
नटवर-वेष काछनी काछे, अंगनि रति-पति-सै से हैं।
सूर स्याम तुम नीकैं देखे, हम जानत हरि ऐसे हैं॥
॥१७७०॥२३८८॥

राग बिलावल

राधा मन मैं यहै विचारति।
ये सब मेरैं ख्याल परी हैं, अबहीं बातनि लै निरुवारति॥
मोहूँ तैं ये चतुर कहावति, ये मनहीं मन मोकौं नारति।
ऐसे बचन कहौंगी इन सौं, चतुराई इनकौ मैं झारति॥
जाकैं नंद-नँदन सिर समरथ, बार-बार तन-मन-धन वारति।
सूर स्याम कैं गर्व राधिका, सूधैं काहू तन न निहारति॥
॥१७७१॥२३८९॥

राग सूही

राधा हरि कैं गर्व गहीली ।
मंद-मंद गति मत मतंग ज्यौं, अंग-अंग सुख पुंज-भरीली ।।
पग द्वै चलति ठटकि रहै ठाढ़ी, मौन धरै हरि कैं रस गीली ।
धरनी नख चरननि कुरवारति, सौतिनि भाग-सुहाग-डहीली ।।
नैंकु नहीं पिय तैं कहुँ बिछुरति, तातैं नाहिन काम-दहीली ।
सूर सखी बूझैं यह कैहौं, आजु भई यह भेंट पहीली ।।
।।१७७२।।२३९०।।

राग आसावरी

क्यौं राधा फिरि मौन धर्‌यौ री ।
जैसैं नउआ अंध-भँवावर, तैसैं हि तैं यह मौन कर्‌यौ री ।।
बात नहीं मुख तैं कहि आवति, की तेरौ मन स्याम हर्‌यौ री ।
जाति नहीं पहिचानि न कबहूँ, देखत ही चित तिनहिं ढर्‌यौ री ।।
साँची बात कहौ तुम हमसौं, कहा सोच सो जियहिं पर्‌यौ री ।
सूर स्याम-तन देखि रही कह, लोचन इकटक तैं न टर्‌यौ री ।।
।।१७७३।।२३९१।।

राग धनाश्री

कहा कहति तुम बात अलेखे ।
मोसौं कहति स्याम तुम देखे, तुम नीकैं करि देखे ।।
कैसौ बरन, बेष है कैसौ, कैसौ अंग त्रिभंग ।
मो आगैं वह भेद कहौ धौं, कैसो है तनु-रंग ।।
मैं देखे की नाहीं देखे, तुम तौ बार हजार ।
सूर स्याम द्वै अँखियनि देखति, जाकौ वार न पार ।।
।।१७७४।।२३९२।।

राग कान्हरौ

हम देखे इहिं भाँति कन्हाई ।
सीस सिखंड अलक बिथुरे मुख, कुंडल स्रवन सुहाई ।।
कुटिल भृकुटि, लोचन अनियारे, सुभग नासिका राजत ।
अरुन अधर दसनावलि की दुति, दाड़िम कन-तनु लाजत ।।
ग्रीव हार मुकुता, बनमाला, बाहु दंड गज-सुंड ।
रोमावली सुभग बग-पगति, जाति नाभि ह्रद कुंड ।।

कटि पट पीत, मेखला कंचन, सुभग जंघ जुग जानु।
चरन-कमल नख चंद नहीँ सम, ऐसे सूर सुजान॥
॥ १७७५ ॥ २३९३ ॥

राग बिलावल

बने बिसाल कमल-दल नैन।
ताहू मैँ अति चारु बिलोकनि, गूढ़ भाव सूचति सखि सैन॥
बदन-सरोज-निकट कुंचित कच, मनहुँ मधुप आए मधु लैन।
तिलक तरुन ससि कहत कछुक हँसि, बोलत मधुर मनोहर बैन॥
मदन नृपति कौ देस महा मद, बुधि बल बसि न सकत उर चैन।
सूरदास प्रभु दूत दिनहिं दिन, पठवत चरित चुनौती दैन॥
॥ १७७६ ॥ २३९४ ॥

राग देवगंधार

मोहन बदन बिलोकत अँखियनि उपजत है अनुराग।
तरनि ताप तलफत चकोर गति पिवत पियूष पराग॥
लोचन नलिन नए राजत रति पूरन मधुकर भाग।
मानहु अलि आनंद मिले मकरंद पिवत रितु फाग॥
भँवरि भाग भृकुटी पर कुमकुम चंदन बिंदु बिभाग।
चातक सोम सक्र धनु घन मैँ निरखत मन बैराग॥
कुंचित केस मयूर चंद्रिका मंडल सुमन सुपाग।
मानहु मदन धनुष सर लीन्हे बरषत है बन बाग॥
अधर बिंब तैँ अरुन मनोहर मोहन मुरली-राग।
मानहु सुधा-पयोधि घेरि घन ब्रज पर बरषन लाग॥
कुंडल मकर कपोलनि झलकत स्रम सीकर के दाग।
मानहुँ मीन मकर मिलि क्रीड़त सोभित सरद-तड़ाग॥
नासा तिल प्रसून पदवी पर चिबुक चारु चित खाग।
दाड़िम दसन मंद गति मुसुकनि मोहत सुर नर नाग॥
श्री गुपाल रस रूप भरी हैँ, सूर सनेह सुहाग।
ऐसो सोभा सिंधु बिलोकति इन अखियनि के भाग॥
॥ १७७७ ॥ २३९५ ॥

राग धनाश्री

हम देखे इहि भाँति गुपाल।
छंद कपट कछु जानति नाहिंन, सूधी हैँ ब्रज की सब बाल॥

झूठी की साँची नहिं भाषैं, साँची झूठी कबहुँ न होइ।
साँची की झूठी करि डारैं, यह सोई जानैं धनि जोइ॥
इतननि मैं दुराव कछु नाहीं, नाहीं भेदाभेद विचार।
सूरदास जे झूठी मिलवैं, तिनकी गति जानै करतार॥
॥ १७७८ ॥ २३९६ ॥

राग आसावरी

झूठी बात न होति भलाई।
चोर जुवार संग बरु करियै, झूठे कौं नहिं कोउ पतियाई॥
साँची की झूठी करि डारैं, पचनि मैं मर्यादा जाई।
बोलि उठी इक सखी बीचहीं, तैं कह जानै लाज-बड़ाई॥
यामैं कछू नफा है उनकौं, जातैं मन ऐसीयै भाई।
सूर सुभाउ परयौ ऐसोई, को जानै री बुद्धि पराई॥
॥ १७७९ ॥ २३९७ ॥

राग धनाश्री

ऐसे हम देखे नँद-नंदन।
स्याम सुभग तनु, पीत बसन, जनु नीलजलद पर तड़ित सुछंदन॥
मंद-मंद मुरली-रव-गरजनि, सुधा दृष्टि बरषति आनंदन।
बिबिध-सुमन बनमाला उर, मनु सुरपति-धनुष नये हीं छंदन॥
मुक्तावली मनहुँ बग-पंगति, सुभग अंक चरचित छबि-चंदन।
सूरदास-प्रभु नीप तरोवर तर ठाढ़े सुर नर मुनि बंदन॥
॥ १७८० ॥ २३९८ ॥

राग देवगंधार

तुमकौं कैसे स्याम लगे।
न्हात रहीं जल मैं सब तरुनी, तब तुव नैना कहाँ खगे॥
अंग-अंग अवलोकन कीन्हौ, कौन अंग पर रहे पगे।
भूल्यौ न्हान, ज्ञान तनु भूल्यौ, नंद सुवन उत तैं न डगे॥
जानति नहीं कहूँ नहिं देखे मिलि, गई ऐसैं मनहु सगे।
सूर स्याम ऐसैं तुम देखे, मैं जानति दुख दूरि भगे॥
॥ १७८१ ॥ २३९९ ॥

राग गौरी

तुम देखे मैं नहीं पत्यानी।
मैं जानति मेरी गति सबही, यहै साँच अपनैं मन आनी॥
जो तुम अंग-अंग अवलोक्यौ, धन्य धन्य मुख अस्तुति गानी।
मैं तौ एक अंग अवलोकति, दोऊ नैन गए भरि पानी॥
कुंडल-झलक कपोलनि आभा, मैं तौ इतनेहि माँझ बिकानी।
इकटक रही नैन दोउ रूँधे, सूर स्याम कौं नहिं पहिचानी॥
॥१७८२॥२४००॥

राग नट

अँखियाँ जानि अजान भईं।
एक अंग अवलोकत हरि कौं, और न कहूँ गईं॥
यौं भूली ज्यौं चोर भरैं घर, निधि नहिं जाइ लई।
फेरत पलटत भोर भयौ, कछु, लई न छाँड़ि दई॥
पहिलैं रति करिकै आरति करि, ताही रँग रँगई।
सूर सु कत हठि दोष लगावति, पल पल पीर नई॥
॥१७८३॥२४०१॥

राग सारंग

बिधना-चूक परी मैं जानी।
आजु गुबिंदहिं देखि देखि हौं, यहै समुझि पछितानी॥
रचि पचि, सोचि, सँवारि सकल अँग चतुर चतुरई ठानी।
दृष्टि न दई रोम-रोमनि-प्रति, इतनिहिं कला नसानी॥
कहा करौं, अति सुख, द्वै नैना, उमँगि चलत पल पानी।
सूर सुमेरु समाइ कहाँ लौं, बुधि-बासनी पुरानी॥
॥१७८४॥२४०२॥

राग धनाश्री

द्वै लोचन तुम्हरैं द्वै मेरैं।
तुम प्रति अंग बिलोकन कीन्हौ, मैं भई मगन एक अँग हेरैं॥
अपनौ-अपनौ भाग्य सखी री, तुम तनमय मैं कहूँ न नेरैं।
जो बुनियै सोई पुनि लुनियै, और नहीं त्रिभुवन भटभेरैं॥

स्याम रूप अवगाह-सिंधु तैं, पार होत चढ़ि डोंगनि केरैं।
सूरदास तैसैं ये लोचन, कृपा-जहाज बिना क्यौं पेरैं॥
॥१७८५॥२४०३॥

राग आसावरी

पावै कौन लिखैं बिनु भाल।
काहू कौं पट रस नहिं भावत, कोउ भोजन कहँ फिरत बिहाल॥
तुम देख्यौ हरि-अंग-माधुरी, मैं नहिं देख्यौ कौन गुपाल।
जैसैं रंक तनक धन पावै, ताही मैं वह होत निहाल॥
तुमहिं मोहिं इतनौ अंतर है, धन्य धन्य ब्रज की तुम बाल।
सूरदास-प्रभु की तुम संगिनि, तुमहि मिले यह दरस गुपाल॥
॥१७८६॥२४०४॥

राग कल्यान

सुनहु सखी राधा की बानी।
हमकौं धन्य कहति आपुनधिक यह निर्मल अति जानी॥
आपुन रंक भई हरि-धन कौं, हमहिं कहति धनवंत।
यह पूरी, हम निपट अधूरी, हम असंत, यह संत॥
धिक धिक हम, धिक बुद्धि हमारी, धन्य राधिका नारि।
सूर स्याम कौं इहिं पहिचान्यौ, हम भईं अंत गँवारि॥
॥१७८७॥२४०५॥

राग गौड़ मलार

धन्य राधा धन्य बुद्धि हेरी।
धन्य माता धन्य पिता, धनि भगति तुव, धिग हमहिं नहीं सम
दासि तेरी॥
धन्य तुव ज्ञान, धनि ध्यान, धनि परमान, नहीं जानति आन
ब्रह्म-रूपी।
धन्य अनुराग, धनि भाग, धनि सौभाग्य धन्य जोबन रूप अति
अनूपी॥
हम विमुख तुम सुमुखि कृष्न प्यारी, सदा निगम मुख सहस
अस्तुति बखानैं।
सूर स्यामा स्याम नवल जोरी अटल, तुमहि बिनु कान्ह धीरज
न आनैं॥१७८८॥२४०६॥

राग बिहागरौ

जैसे कहे स्याम हैं तैसे।
कृष्न-रूप अवलोकन कौं सखि, नैन होहिं जौ ऐसे।
तैं जु कहति लोचन भरि आए, स्याम कियौ तहँ ठौर।
पुन्य थली तिहिं जानि बिराजे, बात नहीं कछु और॥
तेरैं नैन बास हरि कीन्हौ, राधा आधा जानि।
सूर स्याम नटवर-वपु काछे, निकसे इहिं मग आनि॥
॥१७८९॥२४०७॥

राग कान्हरौ

अचानक आइ गए तहँ स्याम।
कृष्न-कथा सब कहतिं परस्पर, राधा-संग मिलीं ब्रज-बाम।
मुरली अधर धरे नटवर-वपु, कटि कछनी पर वारौं काम।
सुभग मोर चंद्रिका सीस पर, आइ गए पूरन सुख धाम॥
तरु-तमाल-तर तरुन कन्हाई, दूरि-करन जुवतिनि तनु-ताम।
सूर स्याम बंसी-धुनि पूरत, राधा-राधा लै लै नाम॥
॥१७९०॥२४०८॥

राग बिलावल

थकित भई राधा ब्रजनारि।
जो मन ध्यान करति तेइ अंतरजामी ये बनवारि॥
रतन-जटित पग सुभग पाँवरी, नूपुर परम रसाल।
मानहुँ चरन-कमल-दल-लोभी, बैठे बाल मराल॥
जुगल जघ मरकत-मनि-रंभा, बिपरीत भाँति सँवारे।
कटि काछनी कनक छुद्रावलि, पहिरे नंद-दुलारे॥
हृदय बिसाल माल मोतिनि बिच, कौस्तुभ मनि अति भ्राजत।
मानहु नभ निर्मल तारागन, ता मधि चंद्र बिराजत॥
दुहुँ कर मुरली अधरनि धारे, मोहन राग बजावत।
चमकत दसन, मटकि नासा-पुट, लटकि नैन मुख गावत॥
कुंडल झलक कपोलनि मानहुँ, मीन सुधा-सर क्रीड़त।
भ्रकुटी धनुष, नैन-खंजन मनु, उड़त नहीं मन ब्रीड़त॥
देखि रूप ब्रजनारि थकित भईं, कीट मुकुट सिर सोहत।
ऐसे सूर स्याम सोभा-निधि, गोपीजन-मन मोहत॥
॥१७९१॥२४०९॥

राग कल्यान

जब तैं निरखे चारु कपोल।
तब तैं लोक-लाज-सुधि बिसरी, दै राखे मन ओल ॥
निकसे आइ अचानक तिरछे, पहिरे पीत निचोल।
रतन-जटित सिर मुकुट बिराजत, मनिमय कुंडल लोल ॥
कहा करौं बारिज मुख ऊपर, त्रिथके षटपद जोल।
सूर स्याम करि ये उतकरषा, बस कीन्ही बिनु मोल ॥
॥१७९२॥२४१०॥

राग पूरवी

चारु चितौनि सुचचल डोल।
कहि न जाति मन मैं अति भावति, कछु जु एक उपजति गति गोल ॥
मुरली मधुर बजावत, गावत, चलत करज अरु कुंडल लोल।
सब छबि मिलि प्रतिबिंब बिराजत, इंद्रनील-मनि-मुकुर कपोल ॥
कुंचित केस सुगंध-सुबसि मनु, उड़ि आए मधुपति के टोल।
सूर सुभ्रुव, नासिका मनोहर, अनुमानत अनुराग अमोल ॥
॥१७९३॥२४११॥

राग बिभास

गोकुल गाँउ रसीले पिय कौ। मोहन देखि मिटत दुख जिय कौ ॥
मोर-मुकुट कुंडल बनमाला। या छबि सौं ठाढ़े नंद-लाला ॥
कर मुरली पीतांबर सोहै। चितवत हीँ सबकौ मन मोहै ॥
मन मोहियौ इन साँवरैं हो, चकित सी डोलत फिरौं।
और कछु न सुहाइ तन-मन, बैठि-उठि गिरि-गिरि परौं ॥
मदन-बान सुमार लागे, जाइ पीर न कछु कही।
और कछू उपाइ नाहीं स्याम बैद बुलावही ॥
मैं तौ तजी लाज गुरुजन की। अब मोहि सुधि न परै या तन की ॥
लोग कहैं यह भई है बौरी। सुत पति छाँडि फिरति बन दौरी ॥
छाँड़ि सुरति सम्हार जिय की, कृष्न-छबि हिरदै बसी।
मदन मोहन देखि धाई, बैसियै कुंजनि धँसी ॥
कुंज-धाम किसोर ठाढ़े, केसरि खौरि बनाइ कै।
चंद्रिका पर प्रान वारौं, बलि गई या भाइ कै ॥

इन नैननि बाँध्यौ प्रन भारी। निरखत रहैं सदा गिरिधारी ॥
काहू को कह्यो मन नहिं आन्यौ। कमलनैन नैननि पहिचान्यौ ॥
निरखि नंदन-किशोर सखि री, कोटि किरनि-प्रकासु री।
कालिंदी कैं तीर ठाढ़े, स्रवन सुनियत बाँसुरी ॥
बाँसुरी बस किये सुरनर, सुनत पातक नासु री।
सूर के प्रभु यहै विनती, सदा चरननि बासु री ॥
॥ १७९४ ॥ २४१२ ॥

राग गौरी

नंद-नँनद बृंदाबन-चंद।
जदुकुल नभ, तिथि द्वितिय देवकी, प्रगटे त्रिभुवन-चंद ॥
जठर कुहू तैं बिहरि बारुनी दिसि मधुपुरी सुछंद।
वसुद्यौ-संभु सीस धरि आन्यौ, गोकुल-आनँद-कंद ॥
ब्रज प्राची, राका-तिथि जसुमति, सरस सरद रितु नंद।
उड़गन सकल सखा संकर्षन, तम-कुल-दनुज निकंद ॥
गोपी-जन-चकोर-चित बाँध्यौ, निमि निवारि पल द्वंद।
सूर सुदेस कला षोडस, परिपूरन परमानंद ॥
॥ १७९५ ॥ २४१३ ॥

राग गौरी

देखि सखि हरिकौ मुख चारु।
मनहुँ छिड़ाइ छिड़ाइ लियौ नँद-नंदन, वाससि कौ सत-सारु ॥
रूप तिलक, कच कुटिल, किरनि-छवि कुंडल कल-बिस्तारु।
पत्रावलि परिवेष, सुमन सरि मिल्यौ मनहुँ उड़ दारु ॥
नैन चकोर विहंग सूत सुनि, पिवत न पावत पारु।
अब अंबर ऐसौ लागत है, जैसौ झूठौ थारु ॥
॥ १७९६ ॥ २४१४ ॥

राग कान्हरौ

देखि री हरि के चंचल तारे।
कमल मीन कौं कहँ एती छवि, खंजन हू न जात अनुहारे ॥
वह लखि निमिष नवत मुरली पर, कर मुख नैन भए इक चारे।
मनु जलरुह तजि बैर मिलत बिधु, करत नाद वाहन चुचकारे ॥

उपमा एक अनूपम उपजति, कुंचित अलक मनोहर भारे।
बिडरत त्रिकुकि जानि रथ तैं मृग, जनु ससंकि ससि लंगर सारे॥
हरि-प्रति-अंग बिलोकि मानि रुचि, ब्रज-बनितानि प्रान धन वारे।
सूर स्याम-मुख निरखि मगन भईं, यह बिचारि चित अनत न टारे॥
॥ १७९७ ॥ २४१५ ॥

राग सोरठ

हरि-मुख निरखत नैन भुलाने।
ये मधुकर रुचि-पंकज-लोभी, ताही तैं न उड़ाने॥
कुंडल मकर कपोलनि कैं ढिग, जनु रवि रैनि बिहाने।
भ्रुव सुंदर, नैननि गति निरखत, खंजन मीन लजाने॥
अरुन अधर, दुज कोटि बज्र दुति, ससि घन रूप समाने।
कुंचित अलक, सिलीमुख मिलि मनु लै मकरंद उड़ाने॥
तिलक ललाट, कंठ मुकुतावलि, भूषन मनिमय साने।
सूर स्याम रस-निधि नागर के क्यौं गुन जात बखाने॥
॥ १७९८ ॥ २४ ६ ॥

राग केदारौ

देखि री नवल नंद किसोर।
लकुट सौं लपटाइ ठाढ़े, जुवति जन-मन-चोर॥
चारु लोचन, हँसि बिलोकनि, देखि कै चित भोर।
मोहिनी मोहन लगावत, लटकि मुकुट झकोर॥
स्रवन धुनि सुनि नाद पोहत, करत हिरदै फोर।
सूर अंग त्रिभंग सुंदर, छबि निरखि तृन तोर॥
॥ १७९९ ॥ २४१७ ॥

राग कान्हरौ

ब्रज-बनिता देखति नँद-नंदन।
नव घन नील बरन, ता ऊपर खौरि कियौ तनु चंदन॥
कनक बरन तन पीत पिछौरी, उर भ्राजति बनमाल।
निर्मल गगन स्वेत-बादर पर, मनौ दामिनी जाल॥
मुक्ता-माल बिपुल बग-पंगति, उडत एक भई जोति।
सूर स्याम छबि निरखत जुवती, हरष परस्पर होति॥
॥ १८०० ॥ २४१८ ॥

राग सूही

प्रात समय आवत हरि राजत।
रतन-जटित कुंडल सखि स्रवननि, तिनकी किरनि सूर-तनु लाजत ॥
सातैं रासि मेलि द्वादस मैं, कटि मेखला-अलंकृत साजत।
पृथ्वी-मथी पिता सो लै कर मुख समीप मुरली-धुनि बाजत ॥
जलधि-तात तिहिं नाम कंठ के, तिनकैं पंख मुकुट सिर भ्राजत।
सूरदास कहै सुनहु गूढ़ हरि, भगतनि भजत, अभगतनि भाजत ॥
॥१८०१॥२४१९॥

राग नट

हरि-तन मोहिनी माई।
अंग-अंग अनंग सत-सत, बरनि नहिं जाई ॥
कोउ निरखि सिर मुकुट की छबि, सुरति बिसराई।
कोउ निरखि बिथुरी अलक मुख, अधिक सुख छाई ॥
कोउ निरखि रही भाल-चंदन, एक चित लाई।
कोउ निरखि बिथकी भ्रकुटि पर, नैन ठहराई ॥
कोउ निरखि रही चारु लोचन, निमिष भरमाई।
सूर प्रभु की निरखि सोभा, कहत नहिं आई ॥
॥१८०२॥२४२०॥

राग गुंड मलार

स्याम सुख-रासि, रस-रासि भारी।
रूप की रासि, गुन-रासि, जोबन-रासि, थकित भई निरखि नव तरुन नारी ॥
सील की रासि, जल-रासि, आनँद-रासि, नील-नव-जलद-छबि बरन-कारी।
दया की रासि, बिद्या रासि, बल रासि, निर्दयाराति दनु-कुल-प्रहारी।
चतुरई-रासि, छल-रासि, कल रासि, हरि भजै जिहिं हेत तिहिं देन हारी।
सूर-प्रभु स्याम सुख-धाम पूरन काम, बसन-कटि-पीत मुख मुरली-धारी ॥१८०३॥२४२१॥

राग बिहागरौ

सुदर बोलत आवत बैन।
ना जानौं तिहिं समय सखी री, सब तन स्रवन कि नैन॥
रोम-रोम मैं सब्द सुरति की, नख सिख लौं चख ऐन।
इते मान बानी चंचलता, सुनी न समुझी सैन॥
तब तकि जकि ह्वै रही चित्र सी, पल न लगत चित चैन।
सुनहु सूर यह साँच कि संभ्रम, सुपन किधौं दिट रैन॥
॥१८०४॥२४२२॥

राग मलार

नैना (माई) भूलैं अनत न जात।
देखि सखी सोभा जु बनी है, मोहन कैं मुसुकात॥
दाड़िम-दसन-निकट नासा सुक, चोंच चलाइ न खात।
मनु रतिनाथ-हाथ भृकुटी-धनु, तिहिं अवलोकि डरात॥
बदन-प्रभा मय चचल लोचन, आनँद उर न समात।
मानहुँ भौंह-जुवा-रथ जोते, ससि नचवत मृग मात॥
कुंचित केस, अधर धुनि मुरली, सूरदास सुरसात।
मनहुँ कमल पहँ कोकिल कूजत, अलिगन उपर उडात॥
॥१८०५॥२४२३॥

राग कान्हरौ

स्याम-कमल-पद नख की सोभा।
जे नख चंद्र इंद्र-सिर परसे, सिव बिरचि मन लोभा॥
जे नख-चंद्र सनक मुनि ध्यावत, नहिं पावत भरमाहीं।
ते नख-चद्र प्रगट ब्रज-जुवती, निरखि निरखि हरषाहीं॥
जे नख-चंद्र फनिक-हृदय तैं, एकौ निमिप न टारत।
जे नख-चंद्र महा मुनि नारद, पलक न कहूँ बिसारत॥
जे नख-चंद्र-भजन खल नासत, रमा हृदय जे परसति।
सूर स्याम-नख-चद्र-बिमल-छबि, गोपी-जन मिलि दरसति॥१८०६॥२४२४॥

राग आसावरी

स्याम-हृदय जल-सुत की माला अतिहिं अनूपम छाजै (री)।
मनहुँ बलाक-पाँति नव-घन पर, यह उपमा कछु भ्राजै (री)॥

पीत, हरित सित, अरुन माल-वन, राजति हृदय बिसाल (री)।
मानहुँ इंद्र-धनुष नभ-मंडल, प्रगट भयौ तिहिँ काल (री)॥
भृगु-पद-चिन्ह उरस्थल प्रगटे, कौस्तुभ मनि ढिग दरसत (री)।
बैठे मानौ षट बिधु इक सँग, अर्द्ध निसा मिलि हरषत (री)॥
भुजा बिसाल स्याम सुंदर की, चंदन-खौरि चढ़ाए (री)।
सूर सुभग अँग अँग की सोभा, ब्रज-ललना ललचाए (री)॥
॥ १८०७ ॥ २४२५ ॥

राग मलार

निरखि सखि सुंदरता की सींवा।
अधर अनूप मुरलिका राजति, लटकि रहति अध ग्रीवा॥
मंद-मंद सुर पूरत मोहन, राग मलार बजावत।
कबहुँक रीझि मुरलि पर गिरिधर, आपुहिँ रस भरि गावत॥
हँसत लसति दसनावलि-पगति, ब्रज-बनिता-मन-मोहतै॥
मरकतमनि-पुट-बिच मुकुताहल, बंदन-भरे मनु सोहत॥
मुख बिकसत सोभा इक आवति, मनु राजीव-प्रकास।
सूर अरुन-आगमन देखि कै, प्रफुलित भए हुलास॥
॥ १८०८ ॥ २४२६ ॥

राग टोडी

गोपी जन हरि-बदन निहारतिँ।
कुंचित अलक बिथुरि रहे भ्रुव पर, ता पर तन मन वारतिँ॥
बदन-सुधा सरसीरुह लोचन, भृकुटी दोउ रखवारी।
मनौ मधुप मधु पानहिँ आवत, देखि डरत जिय भारी॥
इक-इक अलक लटकि लोचन पर, यह उपमा इक आवति।
मनहुँ पन्नगिनि उतरि गगन तैँ, दल पर फन परसावति॥
मुरली अधर धरे, कल-पूरत, मंद मंद सुर गावत।
सूर स्याम नागरि नारिनि के चंचल चितहिँ चुरावत॥
॥ १८०९ ॥ २४२७ ॥

राग बिलावल

देखि सखी यह सुंदरताई।
चपल-नैन-बिच चारु नासिका, इकटक दृष्टि रही तहँ लाई॥

करतिँ विचार परस्पर जुवती, उपमा आनतिँ बुद्धि बनाई।
मानहुँ खजन-बिच सुक बैठ्यौ, यह कहिकै मन जातिँ लजाई॥
कछु इक तिल-प्रसून की आभा, मन-मधुकर तहँ रह्यौ लुभाई।
सूर स्याम-नासिका मनोहर, यह सुंदरता उन कहँ पाई॥
॥ १८१० ॥ २४२८ ॥

राग रामकली

मनोहर है नैनकि की भाँति।
मानहुँ दूरि करत बल अपनैँ, सरद-कमल की काँति॥
इंदीवर राजीव कुसेसय, जीते सब गुन जाति।
अति आनंद सुप्रौढ़ा तातैँ, बिकसत दिन अरु राति॥
खजरीट मृग मीन बिचारति, उपमा कौं अकुलाति।
चंचल चारु चपल अवलोकनि, चितहिँ न एक समाति॥
जब कहुँ परत निमेषहु अंतर, जुग समान पल जाति।
सूरदास वह रसिक राधिका, निमि पर अति अनखाति॥
॥ १८११ ॥ २४२९ ॥

राग रामकली

आजु सखि देखे स्याम नए (री)।
निकसे आनि अचानक अबहीँ, इत फिरि फिरि चितए (री)॥
मैँ तब तैँ पछिताति यहै, तन नैन न बहुत भए (री)।
जौ बिधना इतनी जानत है, कत दृग दोइ दए (री)॥
सब दै लेउँ लाख लोचन कहुँ, जो कोउ करत नए (री)।
हरि-प्रति अंग बिलोकन कौँ मैँ प्रन करिकै पठए (री)॥
अपनैँ चोप बहुत कहँ पइये, ये हरि-संग गए (री)।
थके चरन मुनि सूरि मनौ गुन मदन बान बिधए री)
॥ १८१२ ॥ २४३० ॥

राग गूजरी

देखि री हरि के चचन नैन।
खंजन-मीन-मृगज-चपलाई, नहिँ पटतर इक सैन॥
राजिव दल इंदीवर सतदल, कमल कुसेसय जाति।
निसि मुद्रित प्रातहिँ वै बिकसित, ये बिकसित दिनराति॥

अरुन, स्वेत, सित झलक पलक प्रति, को बरनैं उपमाइ।
मनु सरसुति, गंगा, जमुना मिलि, आस्रम कीन्हौ आइ॥
अवलोकनि जलधार तेज अति, तहाँ न मन ठहराइ।
सूर स्याम लोचन-अपार-छबि, उपमा सुनि सरमाइ॥
॥ १८१३ ॥ २४३१ ॥

राग सोरठ

देखि सखी मोहन मन चोरत।
नैन-कटाच्छ बिलोकनि मधुरी, सुभग भृकुटि बिबि मोरत॥
चंदन खौरि ललाट स्याम कैं, निरखत अति सुखदाई।
मनौ एक सँग गंग-जमुन नभ तिरछी, धार बहाई॥
मलयज भाल भ्रकुटि रेखा की कवि उपमा इक पाई।
मानहुँ अर्द्धचंद्र-तट अहिनी, सुधा चुरावन आई॥
भ्रकुटि चारु निरखि ब्रज-सुंदरि, यह मन करति बिचार।
सूरदास प्रभु सोभा-सागर, कोउ न पावत पार॥
॥ १८१४ ॥ २४३२ ॥

राग रामकली

देखि री देखि कुंडल लोल।
चारु स्रवननि ग्रहन कीन्हें, झलक ललित कपोल॥
बदन-मंडल सुधा सरवर, निरखि मन भयौ भोर।
मकर क्रीड़त गुप्त परगट, रूप जल झकझोर॥
नैन मीन, भुवंगिनी, भ्रुव, नासिका थल बीच।
सरस मृग मद-तिलक-सोभा, लसित है लगि कीच।
मुख बिकास सरोज मानहु, जुवति-लोचन भृंग॥
बिथुरि अलकैं परीं मानहुँ, प्रेम-लहरि तरंग॥
स्याम तनु-छबि अमृत-पूरन, रच्यौ काम-तड़ाग॥
सूर प्रभु की निरखि सोभा, ब्रज-तरुनि बड़भाग॥
॥ १८१५ ॥ २४३३ ॥

राग धनाश्री

हरि-मुख निरखति नागरि नारि।
कमल नैन के कमल-बदन पर, वारिज वारिज वारि॥

सुमति सुंदरी सरस-पिया रस-लंपट मॉडी आदि।
हरि जुहारि जु करत बसीठी, प्रथमहिं प्रथम चिन्हारि॥
राखति ओट कोटि जतननि, करि, झाँपनि अंचल झारि।
खंजन मनहुँ उड़न कौं आतुर, सकत न पख पसारि॥
देखि सरूप स्याम सुंदर को, रही न पलक सम्हारि।
देखहु सूरज अधिक सूर तन, अजहुँ न मानी हारि॥
॥ १८१६ ॥ २४३४ ॥

राग धनाश्री

हरि-मुख किधौं मोहिनी माई।
बोलत बचन मंत्र सौ लागत, गति मति जाति भुलाई॥
कुटिल अलक राजति भ्रुव ऊपर, जहाँ तहाँ बगराई।
स्याम फाँसि मन करष्यो हमरौ, अब समुझी चतुराई॥
कुंडल ललित कपोलनि झलकत, इनकी गति मैं पाई।
सूर स्याम जुवती-मन-मोहन, ये सँग करत सहाई॥
॥ १८१७ ॥ २४३५ ॥

राग नट

निरखत रूप नागरि नारि।
मुकुट पर मन अटकि लटक्यौ, जात नहिं निरुवारि॥
स्याम तन की झलक, आभा चंद्रिका झलकाइ।
बार बार बिलोकि थकि रहीं, नैन नहिं ठहराइ॥
स्याम मरकत-मनि महानग सिखा निरतत मोर।
देखि जलधर हरष उर मैं, नहीं आनँद थोर॥
कोउ कहति सुर-चाप मानौ, गगन भयौ प्रकास।
थकित ब्रज-ललना जहाँ तहँ, हरष कबहुँ उदास॥
निरखि जो जिहिं अंग राँची, तहीं रही भुलाइ।
सूर-प्रभु-गुन-रासि-सोभा, रसिक जन सुखदाइ॥
॥ १८१८ ॥ २४३६ ॥

राग बिहागरौ

देखि री देखि सोभा-रासि।
काम-पटतर कहा दीजै, रमा जिनकी दासि॥

मुकुट सीस सिखंड सोहै, निरखि रहीं ब्रज नारि।
कोटि सुर-कोदंड-आभा, झिरकि डारैं वारि॥
केस कुंचित बिथुरि भ्रुव पर, बीच सोभा भाल।
मनौ चंदहिं अवल जान्यौ, राहु घेर्‍यौ जाल॥
चारु कुंडल सुभग स्रवननि, को सकै उपमाइ।
कोटि कोटि कला तरनि छवि, देखि तनु भरमाइ॥
सुभग मुख पर चारु लोचन, नासिका इहिं भाँति।
मनौ खंजन बीच सुक मिलि, बैठे हैं इक पाँति॥
सुभग नासा तर अधर-छवि, रस धरे अरुनाइ।
मनौ बिंब निहारि सुक, भ्रुव धनुष देखि डराइ॥
हँसत दसननि चमकताई, बज्र कन रची पाँति।
दामिनी, दारिम नहीं सरि, कियौ मन अति भ्राँति॥
चिबुक वर चित-वित चुरावत, नवल नंद-किसोर।
सूर-प्रभु की निरखि सोभा भई तरुनी भोर॥

॥१८११॥२४३७॥

राग सोरठ

तन मन नारि डारतिं वारि।
स्याम सोभा-सिंधु जान्यौ, अंग-अंग निहारि॥
पचि रहीं मन ज्ञान करि-करि लहतिं नाहिंन तीर।
स्याम तन जल-रासि-पूरन, महा गुन गंभीर॥
पीतपट-फहरानि मानौ, लहरि उठति अपार।
निरखि छबि थकि तीर बैठीं, कहूँ वार न पार॥
चलत अंग त्रिभंग करिकै, भौंह भाव चलाइ।
मनौ बिच-बिच भँवर डोलत, चित परत भरमाइ॥
स्रवन कुंडल मकर मानौ, नैन मीन बिसाल।
सलिल झलकनि-रूप-आभा, देखि री नँदलाल॥
बाहु दंड भुजंग मानौ, जलधि-मध्य-बिहार॥
मुक्त-माला मनौ सुरसरि, ह्वै चली द्वै धार॥
अंग अँग भूषन बिराजत, कनक-मुकुट प्रभास।
उदधि मथि मनु प्रगट कीन्हौ श्री, सुधा-परगास॥

चकित भईं तिय निरखि सोभा देह-गति बिसराइ।
सूर-प्रभु छबि रासि नागर, जानि जाननिराइ॥

॥१८२०।२४३८॥

राग सारग

बैठी कहा मदन मोहन कौ, सुंदर बदन बिलोकि।
जा कारन घूँघट पट अँचलौ, अँखियाँ राखौं रोकि॥
फबि रही मोर-चंद्रिका माथैं, छबि की उठति तरंग।
मनहुँ अमर-पति-धनुष बिराजत नव जलधर कैं संग॥
रुचिर चारु कमनीय भाल पर, कुकुम-तिलक दिये।
मानहुँ अखिल भुवन की, सोभा राजति उदय किये॥
मनिमय जटित लोल कुंडल की, आभा झलकति गंड।
मनहुँ कमल ऊपर दिनकर की, पसरीं किरनि प्रचंड॥
भ्रकुटी कुटिल निकट नैननि कैं, चपल होति इहिं भाँति।
मनहुँ तामरस कैं सँग खेलत बाल भृंग की पाँति॥
कोमल स्याम कुटिल अलकावलि, ललित कपोलनि तीर।
मनहुँ सुभग इंदीवर ऊपर, मधुपनि की अति भीर॥
अरुन-अधर-नासिका निकाई, बदत परस्पर होड़।
सूर सुमनसा भई पाँगुरी, निरखि डगमगे गोड़॥

॥१८२१॥२४३९॥

राग नट नारायन

सजनी निरखि हरि कौ रूप॥
मनसि बचसि बिचारि देखो, अंग-अंग अनूप॥
कुटिल केस सुदेस अलिगन, बदन सरद सरोज।
मकर-कुंडल-किरनि की छबि, दुरत फिरत मनोज॥
अरुन अधर कपोल नासा, सुभग ईषद हास।
दसन की दुति तड़ित, नव ससि, भ्रकुटि मदन-बिलास॥
अंग-अंग अनंग जीते, रुचिर उर बनमाल।
सूर सोभा हृदय पूरन, देत सुख गोपाल॥

॥१८२२॥२४४०॥

राग नट

नैननि ध्यान नंद-कुमार।
सीस मुकुट सिखंड भ्राजत, नहीं उपमा-पार॥

कुटिल केस सुदेस राजत, मनहुँ मधुकर-जाल ।
रुचिर केसरि-तिलक दीन्हें, परम सोभा भाल ॥
भृकुटि वंकट, चारु लोचन, रहीं जुवती देखि ।
मनौ खंजन चाप-डर डरि, उड़त नहिं तिहिं पेखि ॥
मकर कुंडल गंड झलमल, निरखि लज्जित काम ।
नासिका-छबि कीर लज्जित, कबिनि बरनत नाम ॥
अधर बिद्रुम, दसन दाड़िम, चुबुक है चित-चोर ।
सूर प्रभु-मुख चंद पूरन, नारि-नैन चकोर ॥
॥ १८२३ ॥ २४४१ ॥

राग केदारौ

प्यारे नंदलाल हो । मोही तेरी चाल हो ॥
मोर मुकुट डालनि, मुख मुरली कल मंद ।
मनु तमाल सिखा सिखी, नाचत आनंद ॥
मकराकृत कुंडल-छबि, राजत सु कपोल ।
ईषद मुसुकानि वीच, मंद-मंद बोल ॥
चितवनि चख अतिहिं चपल, राजति भ्रुव-भंग ।
धनुष बान डारि होत, बस कोटि अनंग ॥
वदन-सुधा कौ सरवर, कुटिल अलक पारि ।
ब्रज-जुवती मृगिनी रची, तिनकौं फँदवारि ॥
पीतांबर-छबि निरखत, दामिनिहु लजाइ ।
चमकि-चमकि सावन घन मैं सो दुरि जाइ ॥
चरन-कमल अवलंबित, राजति बनमाल ।
प्रफुलित ह्वै लता मनौ चढ़ीं तरु तमाल ॥
सूरदास वा छवि पर, वारौं तन प्रान ।
गिरिधर पिय देखि देखि, कह करौं अनुमान ॥
॥ १८२४ ॥ २४४२ ॥

राग सारंग

देखि सखी सुंदर घनस्याम ।
सुंदर मुकुट, कुटिल कच सुंदर, सुंदर भार तिलक छबि-धाम ॥
सुंदर भ्रुव, सुंदर अति लोचन, सुंदर अवलोकनि-बिस्राम ।
अति सुंदर कुंडल स्रवननि वर, सुंदर झलकनि रीझत काम ॥

सुंदर हास नासिका सुंदर, सुंदर मुरली अधर उपाम ॥
सुंदर दसन, चिबुक अति सुंदर, सुंदर हृदय विराजति दाम ॥
सुंदर भुजा, पीतपट सुंदर, सुंदर कनक-मेखला-झाम ।
सुंदर जंघ, जानु पद सुंदर, सूर-उधारन सुंदर नाम ॥

॥ १८२५ ॥ २४४३ ॥

राग धनाश्री

नंद-नँनद-मुद देखो नीकैं ।
अंग-अंग प्रति कोटि माधुरी, निरखि होत सुख जी कैं ॥
सुभग स्रवन कुंडल की आभा, झलक कपोलनि पी कैं ।
दह-दह अमृत मकर क्रीडत मनु, यह उपमा कछु ही कैं ॥
और अंग की सुधि नहि जानैं, करै कहति हैं लीकैं ।
सूरदास-प्रभु नटवर काछे, रहत है रति-पति वीकैं ॥

॥ १८२६ ॥ २४४४ ॥

राग रामकली

देखि री देखि कुंडल-झलक ।
नैन द्वै छबि धरौं कैसैं, लगति तापर पलक ॥
लसति चारु कपोल दुहुँ बिच, सजल लोचन चारु ।
मुख सुधा-सर मीन मानौ, मकर संग बिहारु ॥
कुटिल अलक सुभाइ हरि कैं, भ्रुवनि पर रहे आइ ।
मनौ मनमथ फाँदे फंदनि, मीन बिबि तट ल्याइ ॥
चपल लोचन, चपलकुंडल, चपल भ्रकुटी बक ।
सखा व्याकुल देखि अपने, लेत बनत न संक ॥
सूर-प्रभु नँद-सुवन की छबि, बरनि कापै जाइ ।
निरखि गोपी निकर थिथकीं, बिधिहिं अति रिस पाइ ॥

॥ १८२७ ॥ २४४५ ॥

राग जैतश्री

बिधना अतिहीं पोच कियौ री ।
कहा बिगार कियौ हम वाकौ, ब्रज काहैं अवतार दियौ री ॥
यह तौ मन अपनैं जानत हो, एतै पर क्यों निठुर हियौ री ।
रोम रोम लोचन इकटक करि, जुवतिनि प्रति काहैं न ठियौ री ॥

अखियाँ द्वै, छवि की चमकनि वह, हम तौ चाहति सबै पियौ री।
सुनि सजनी यह करनी अपनी अपनैं ही सिर मानि लियौ री॥
हम तौ पाप कियौ, भुगतै को, पुन्य-प्रगट क्यौं जात छियो री।
सूरदास प्रभु रूप-सुधा निधि, पुट थोरौ, बिधि नहीं बियौ री॥
॥१८२८॥२४४६॥

राग धनाश्री

सुनि री सखी वचन इक मोसौं
रोम-रोम प्रति लोचन चाहति, द्वै सावित हैं तोसौं॥
मैं बिधना सौं कहौं कछू नहिं, नित प्रति निमि कौं कोसौं।
येऊ जो नीकैं दोउ रहते निरखत रहती हौं सौं॥
इक इक अंग-अंग छवि धरती, मैं जो कहती तोसौं।
सूर कहा तू कहति अयानी, काम पर्‍यौ सुनि ज्यौ सौं॥
॥१८२९॥२४४७॥

राग कान्हरौ

कह काहू कौं दोष लगावैं।
निमि सौं कहा कहति, कह बिधि सौं, कह नैननि पछितावैं॥
स्याम हितू कैसैं करि जानति, औरौ निठुर कहावैं।
छिन मैं और-और अँग सोभा, जोवैं देखि न पावैं॥
जबहीं इकटक करि अवलोकति, तबहीं वै झलकावैं।
सूर स्याम के चरित लखै को, येई बैर बढ़ावैं।
॥१८३०॥२४४८॥

राग नट

लहनी करम के पाछैं।
दियौ अपनौ लहै सोई, मिलै नहिं बाँछैं॥
प्रगट ही हैं स्याम ठाढ़े, कौन अँग किहि रूप।
लह्यौ काहूँ, कहौं मोसौं, स्याम हैं ठग भूप॥
प्रेम-जाचक धनी हरि सौं, नैन पुट कह लेइ।
अमृत-सिंधु हिलोरि पूरन, कृपा दरस न देइ॥
पाइयै सोई सखी री, लिख्यौ जोई भाल।
सूर उत कछु कमी नाहीं, छवि समुद गोपाल॥
॥१८३१॥२४४९॥

राग सूही बिलावल

देखि सखी अधरनि की लाली।
मनि मरकत तैं सुभग कलेवर, ऐसे हैं बनमाली ॥
मनौ प्रात की घटा साँवरी, तापर अरुन प्रकास।
ज्यौं दामिनि बिच चमकि रहत है, फहरत पीत सुबास ॥
कीधौं तरुन तमाल बेलि चढ़ि, जुग फल बिंब सुपाके।
नासा कीर आइ मनु बैठ्यौ, लेत बनत नहिं ताके ॥
हँसत दसन इक सोभा उपजति, उपमा जदपि लजाइ।
मनौ नीलमनि-पुट मुकुता-गन, बंदन भरि बगराइ ॥
किधौं वज्र कन, लाल नगनि खँचि, तापर बिद्रुम पाँति।
किधौं सुभग बंधूक-कुसुम-तर, झलकत जल कन-काँति ॥
किधौं अरुन अंबुज बिच बैठी, सुंदरताई जाइ।
सूर अरुन अधरनि की सोभा, बरनत बरनि न जाइ ॥
॥१८३२॥२४५०॥

राग धनाश्री

स्याम रूप देखन की साध, भरी माई।
कितनौ पचिहारी रही, देत नहिं दिखाई ॥
मन तौ निरखत सु अंग, मैं रही भुलाई।
मोसौं यह भेद कहौ कैसैं उहिं पाई ॥
आपुन अँग अंग बिध्यौ, मोकौं बिसराई।
बार बार कहत यहै, तू क्यौं नहिं आई ॥
कबहूँ लै जात साथ, बाँह गहि बुलाई।
सूर स्याम छबि अगाध, निरखत भरमाई ॥
॥१८३३॥२४५१॥

राग बिलावल

सुनहु सखी मैं बूझति तुमकौं, काहूँ हरि कौं देखे हैं।
कैसो तन, कैसो रँग देखियत, कैसी बिधि करि भेषे हैं ॥
कैसौ मुकुट, कुटिल कच कैसे, सुभग भाल भ्रुव नीके हैं।
कैसे नैन, नासिका कैसी, स्रवननि कुंडल पी के हैं ॥
कैसे अधर, दसन दुति कैसी, चिबुक चारु चित चोरत हैं।
कैसैं निरखि हँसत काहूँ तन, कैसैं बदन सकोरत हैं ॥

कैसौ उर, माला है कैसी, कैसैं भुजा विराजति हैं।
कैसे कर, पहुँची हैं कैसी, कैसी अँगुरियाँ राजति हैं।।
कैसी रोमावली स्याम की नाभि चारु कटि सुनियत है।
कैसी कनक-मेखला,कैसी कछनी, यह मन गुनियत है।।
कैसे जंघ, जानु कैसे दोउ, कैसे पद-नख जानति है।
सूर स्याम अँग-अँग की सोभा, देखी कै अनुमानति है।।
॥१८३४॥२४५२॥

राग रामकली

ऐसे सुने नंद-कुमार।
नख निरखि ससि कोटि वारत, चरन कमल अपार।।
जानु जंघ निहारि करभा, करनि डारत वारि।
काछनी पर प्रान वारत, देखि सोभा भारि।।
कटि निरखि तनु सिंह वारत, किंकिनी जु मराल।
नाभि पर ह्रद आपु वारत, रोम-अलि अलि-माल।।
हृदय मुक्ता-माल निरखत, वारी अवलि-बलाक।
करज कर पर कमल वारत, चलति जहँ तहँ साक।।
भुजनि पर वर नाग वारत, गए भागि पताल।
ग्रीव की उपमा नहीं कहुँ, लसति परम रसाल।।
चिबुक पर चित वारि डारत, अधर अंबुज लाल।
बँधुक, विद्रुम, बिंब वारत, ते भए बेहाल।।
बचन सुनि कोकिला वारति, दसन दामिनि कांति।
नासिका पर कीर वारत, चारु लोचन-भाँति।।
कंज, खंजन, मीन, मृग सावकहु डारत वारि।
भ्रकुटि पर सुर-चाप वारत, तरनि कुंडल हारि।।
अलक पर वारति अँध्यारी, तिलक भाल सुदेस।
सूर-प्रभु सिर मुकुट धारे, धरे नटवर-भेप।।
॥१८३५॥२४५३॥

राग सारंग

ऐसी विधि नंदलाल, कहत सुने माई।
देखै जौ नैन, रोम-रोम, प्रति सुहाई।।

विधना द्वै नैन रचे, अंग ठानि ठान्यौ।
लोचन नहिँ बहुत दियौ, जानि कै भुलान्यौ॥
चतुरता प्रवीनता, विधाता की जानी।
अब ऐसे लगत हमहिँ, बातैँ न अयानी॥
त्रिभुवन-पति तरुन कान्ह, नटवर बपु काछे।
हमकौं द्वै नैन दिये, तेऊ नहिं आछे॥
ऐसौ विधि कौ विवेक, कहौँ कहा वाकौं।
सूर कबहुँ पाऊँ जौ, अपनैं कर ताकौं॥
॥१८३६॥२४५४॥

राग नट

मुख पर चंद डारौं वारि।
कुटिल कच पर भौंर वारौं, भौंह पर धनु वारि॥
भाल-केसरि-तिलक-छवि पर, मदन सर सत वारि।
मनु चली बहि सुधा धारा, निरखि मन द्यौं वारि॥
नैन सुरसति-जमुन-गंगा, उपम डारौं वारि।
मीन खंजन मृगज वारौं, कमल के कुल वारि॥
निरखि कुंडल तरनि वारौं, कूप स्रवननि वारि।
झलक ललित कपोल छवि पर, मुकुट सत-सत वारि॥
नासिका पर कीर वारौं, अधर विद्रुम वारि।
दसन पर कन-वज्र वारौं, बीज दाडिम वारि॥
चिबुक पर चित-वित्त वारौं, प्रान डारौं वारि॥
सूर हरि की अंग सोभा, को सकै निरवारि॥
॥१८३७॥२४५५॥

राग सोरठ

स्याम उर सुधा दह मानौ।
मलय चंदन लेप कीन्हे, बरन यह जानौ॥
मलय तनु मिलि लसति सोभा, महा जल गंभीर।
निरखि लोचन भ्रमत पुनि-पुनि, धरत नहिं मन धीर॥
उरजु भँवरी भँवर मानौ, नीलमनि की कांति।
भृगु चरन हिय चिह्न ये सब, जीव जल बहु भाँति॥

स्याम बाहु बिसाल केसरि-खौरि बिबिध बनाइ ।
सहज निकसे मगर मानौ, कूल खेलत आइ ॥
सुभग रोमावली की छवि, चली दह तैं धार ।
सूर-प्रभु की निरखौं सोभा, जुवति बारंबार ॥
॥ १८३८ ॥ २४५६ ॥

राग सोरठी

मन-मधुकर पद कमल लुभान्यौ ।
चित्त-चकोर चंद नख अटक्यौ, इकटक पलक भुलान्यौ ॥
बिनहीं कहैं गए उठि मो तैं, जात नहीं मैं जान्यौ ।
अब देखौं तनु मैं वै नाहीं, कहा जियहि धौं आन्यौ ॥
तब तैं फेरि तक्यौ नहिं मो तन, नख चरननि हित मान्यौ ।
सूरदास वै आपु स्वारथी, पर-वेदन नहिं जान्यौ ॥
॥ १८३९ ॥ २४५७

राग मा[illegible]

स्याम सखि नीकैं देखे नाहिं ।
चितवत ही लोचन भरि आए, बार-बार पछिताहिं ॥
कैसेहुँ करि इकटक मैं राखति, नैंकहिं मैं अकुलाहिं ।
निमिष मनौ छवि पर रखवारे, तातैं अतिहिं डराहिं ॥
कहा करौं इनकौ कह दूषन, इन अपनी सी कीन्ही ।
सूर स्याम-छबि पर मन अटक्यौ, उन सब सोभा लीन्ही ॥
॥ १८४० ॥ २४५८ ॥

राग गौरी

मन लुबध्यौ हरि रूप निहारि ।
जा दिन स्याम अचानक आये, तब तैं मोहिं बिसारि ॥
इंद्रिनि संग लगाइ गयौ ह्याँ, डेरा निकस्यौ झारि ।
ऐसे हाल करत री कोऊ, रही अकेली नारि ॥
फेरि न मेरी उहिं सुधि लीन्हीं, आपु करत सुख भारि ।
सूर स्याम कौं उरहन दैहौं, पठवत काहे न मारि ॥
॥ १८४१ ॥ २४५९ ॥

अनुराग-समय *राग रामकली*

पुनि पुनि कहति हैं ब्रज-नारि।
धन्य बड़ भागिनी राधा, तेरैं बस गिरिधारि॥
धन्य नंदकुमार धनि तुम, धन्य तेरी प्रीति।
धन्य दोउ तुम नवल जोरी, कोक कलानि जीति॥
हम बिमुख, तुम कृष्न सगिनि, प्रान इक, द्वै देह।
एक मन, इक बुद्धि, इक चित, दुहुंनि एक सनेह॥
एक छिनु बिनु तुमहि देखैं, स्याम धरत न धीर।
मुरलि मैं तुव नाम पुनि पुनि कहत हैं बलबीर॥
स्याम मनि तैं परखि लीन्हौ, महा चतुर सुजान।
सूर के प्रभु प्रेमहीं बस, कौन तो सरि आन॥
॥ १८४२ ॥ २४६० ॥

राग बिहागरौ

राधा परम निर्मल नारि।
कहति हौं मन कर्मना करि, हृदय दुबिधा टारि॥
स्याम कौं इक तुहीं जान्यौ, दुराचारिनि और।
जैसैं घट पूरन न डोलै, अध भरौ डगडौर॥
धनी धन कबहूँ न प्रगटै, धरै ताहि छपाइ।
हैं महानग स्याम पायौ, प्रगटि कैसैं जाइ॥
कहति हौं यह बात तोसौं प्रगट करिहौ नाहिं।
सूर सखी सुजान राधा, परसपर मुसुकाहिं॥
॥ १८४३ ॥ २४६१ ॥

राग गौरी

तैं ही स्याम भले पहिचाने।
साँची प्रीति जानि मनमोहन, तेरेहिं हाथ बिकाने॥
हम अपराध कियौ कहि तुमसौं, हमहीं कुलटा नारि।
तुमसौं उनसौं बीच नहीं कछु, तुम दोऊ बर-नारि॥
धन्य सुहाग भाग है तेरौ, धनि बड़भागी स्याम।
सूरदास-प्रभु से पति जाकैं, तोसी जाकैं बाम॥
॥ १८४४ ॥ २४६२ ॥

राग सोरठ

राधा स्याम की प्यारी
कृष्न पति सर्बदा तेरे, तू सदा नारी ।।
सुनत बानी सखी मुख की, जिय भयौ अनुराग ।
प्रेम-गदगद, रोम पुलकित, समुझि अपनौ भाग ।।
प्रीति परगट कियौ चाहै, बचन बोलि न जाइ ।
नंद नंदन काम नायक रहे नैननि छाइ ।।
हृदय तैं कहुँ टरत नाहीं, कियौ निहचल बास ।
सूर प्रभु-रस भरी राधा, दुरत नहीं प्रकास ।।
।।१८४५।।२४६३।।

राग जैतश्री

सुनि सजनी मेरी इक बात ।
तुम तौ अतिहीं करति बड़ाई, मन मेरौ सरमात ।।
मोसौं कहति स्याम तुम एकै, यह सुनि कै परमात ।
एक अंग को पार न पावत, चकित होइ भरमात ।।
वह मूरति द्वै नैन हमारैं, लिखी नहीं करमात ।
सूर रोम प्रति लोचन देत्यौ, बिधना पर तरमात ।।
।।१८४६।।२४६४।।

राग कल्यान

जौ बिधना अपबस करि पाऊँ ।
तौ सखि कह्यौ होइ कछु तेरौ, अपनी साध पुराऊँ ।।
लोचन रोम-रोम प्रति माँगौं पुनि पुनि त्रास दिखाऊँ ।
इकटक रहैं पलक नहिं लागैं, पद्धति नई चलाऊँ ।।
कहा करौं छबि रासि स्यामघन, लोचन द्वै नहिं ठाऊँ ।
एते पर ये निमिष सूर सुनि, यह दुख काहि सुनाऊँ ।।
।।१८४७।।२४६५।।

राग बिलावल

कहा करौं बिधि हाथ नहीं ।
वह सुख, यह तनु दशा हमारी, नैननि की रिस मरत महीं ।।

अंग अंग कीन्ही विधि बनए, द्वै नैना देखति जबहीँ।
ऐसौ कौन ताहि धरि आनै, कहा करौ खीझति मनहीँ।
बड़ौ सुजान चतुराई नीकी, जगत-पिता कहियत सबहीँ।
सूर स्याम-अवतार जानि ब्रज, लोचन बहु न दिये हमहीँ॥
॥१८४८॥२४६६॥

राग बिलावल

अब समुझी यह निठुर बिधाता।
ऐसेहि जगत-पिता कहवावत, ऐसे घात करै सो धाता॥
कैसौ ज्ञान, चतुरई कैसी, कौन बिबेक, कहाँ को ज्ञाता।
जैसौ दुख हमकौं इहिँ दीन्हौ, तैसौ याको होइ निपाता॥
द्वै लोचन तनु मैं करि दीन्हे, याही तैं जान्यौ पितु-माता।
सूर स्याम-छबि तैं अघात नहिं, बार-बार आवति अकुलाता॥
॥१८४९॥२४६७॥

राग सूही बिलावल

द्वै लोचन साबित नहिं तेऊ।
बिनु देखैं कल परति नहीँ छिनु, एते पर कीन्ही यह टेऊ॥
बार-बार देख्यौइ चाहत, साथी निमिष मिले हैं येऊ।
ते तौ ओट करत छिनहीँ छिनु, देखत ही भरि आवत द्वेऊ॥
कैसैं मैं उनकौं पहिचानौं, नैन बिना लखियै क्यौं भेऊ।
ये तौ निमिष परत भरि आवत, निठुर बिधाता दीन्हे जेऊ॥
कहा भई जौ मिली स्याम सौं, तू जानै, जानै सब केऊ।
सूर स्याम कौ नाम स्रवन सुनि, दरसन नीकैं देत न बेऊ॥
॥ १८५० ॥ २४६८ ॥

राग सूही

स्यामहिं मैं कैसैं पहिचानौं।
क्रम क्रम करि इक अंग निहारति, पलक ओट ताकौं नहिं जानौं॥
पुनि लोचन ठहराइ निहारति, निमिष मेटि वह छबि अनुमानौं।
औरै भाव, और कछु सोभा, कहौ सखी, कैसैं उर आनौं॥
छिनु छिनु अंग अंग छबि अगिनित, पुनि देखौं, फिरि कै हठ ठानौं।
सूरदास स्वामी की महिमा, कैसैं रसना एक बखानौं॥
॥ १८५१ ॥ २४६९ ॥

राग सारंग

स्याम सौं काहे की पहिचानि।
निमिष निमिष वह रूप, न वह छवि, रति कीजै जिय जानि॥
इकटक रहति निरंतर निसि दिन, मन बुद्धि सौं चित सानि।
एकौ पल सोभा की सीवाँ, सकति न उर महँ आनि॥
समुझि न परै प्रगटहीं निरखत, आनँद की निधि खानि।
सखि यह बिरह, सँजोग, कि सम रस, सुख दुख, लाभ कि हानि॥
मिटति न घृत तैं होम-अग्नि-रुचि, सूर सु लोचन-बानि।
इत लोभी उत रूप परम निधि, कोउ न रहत मिति मानि॥
॥ १८५२ ॥ २४७० ॥

राग बिलावल

कहा करौं नीकैं करि हरि कौ, रूप रेख नहिं पावति।
संगहि संग गिरति निसि-बासर, नैन निमेष न लावति॥
बँधी दृष्टि ज्यौं गुड़ी डोर बस, पाछैं लागी धावति।
निकट भएँ मेरीयै छाया, मोकौं दुख उपजावति॥
नख सिख निरखि निहारयौ चाहति, मन मूरति अति भावति।
जानति नहीं कहाँ तैं निज छबि, अंग-अंग मैं आवति॥
अपनी देह आपु कौं बैरिनि, दुरति न दुरी दुरावति।
सूर स्याम सौं प्रीति निरतर, अंतर मोहिं करावति॥
॥ १८५३ ॥ २४७१ ॥

राग धनाश्री

जौ देखौं तौ प्रीति करौं री।
संगहिं रहौं, फिरौं निसि-बासर, चित तैं नैंकु नहीं बिसरौं री॥
कैसैं दुरत दुराए मेरैं, उन बिन धीरज नहीं धरौं री।
जाउँ तहीं जहँ रहैं स्याम-घन, निरखत इकटक तैं न टरौं री॥
सुनि री सखी दसा यह मेरी, सो कहि धौं अब कहा करौं री
सूर स्याम लोचन भरि देखौं, कैसैं इतनी साध भरौं री॥
॥ १८५४ ॥ २४७२ ॥

राग बिलावल

हरि-दरसन की साध मुई।
उड़ियै उड़ी फिरति नैननि सँग, फर फूटैं ज्यौं आक-रुई॥

जानौं नहीँ कहाँ तैं आवति, वह मूरति मन माहिं उई।
बिनु देखे की बिथा बिरहिनी, अति जुर जरति न जाति छुई॥
कछुवै कहति कछू कहि आवत, प्रेम-पुलक स्रम स्वेद चुई।
सूखति सूर धान-अंकुर सी, बिनु बरषा ज्यौं मूल तुई॥
॥ १८५५ ॥ २४७३ ॥

राग धनाश्री

सुनि री सखी दसा यह मेरी।
जब तैं मिले स्यामघन सुंदर, संगहि फिरति भई जनु चेरी॥
नीकैं दरस देत नहि मोकौं, अंगनि प्रति अनंग की ढेरी।
चपला तैं अतिहीं चंचलता, दसन चमक चकचौंधि घनेरी॥
चमकत अंग, पीत पट चमकत, चमकति माला मोतिनि केरी।
सूर समुझि बिधना की करनी, अति रिसि करति सौंह मोहिं तेरी॥
॥ १८५६ ॥ २४७४ ॥

राग मारू

आज के द्यौस को सखी अति नहीँ जो लाख लोचन अंग अंग होते।
पूरती साध मेरे हृदय माँझ की, देखती सबै छबि स्याम को ते॥
चित्त लोभी नैन-द्वार अतिहीं सुछम, कहाँ वह सिंधु छबि है अगाधा।
रोम जितने अंग, नैन होते संग, रूप लेती निदरि कहति राधा॥
स्रवन सुनि-सुनि दहै, रूप कैसैं लहै, नैन कछु गहै रसना न ताकैं।
देखि कोउ रहै, कोउ सुनि रहै, जीभ बिनु, सो कहै कहा नहिं नैन जाकैं॥
अंग बिनु हैं सबै, नहीँ एकौ फबै, सुनत देखत जबै कहन लोरै।
कहै रसना, सुनत स्रवन, देखत नयन, सूर सब भेद गुनि मनहिं तोरै॥ १८५७ ॥ २४७५ ॥

राग धनाश्री

इनहूँ मैं घटतार कीन्हीं।
रसना स्रवन, नैन का होत, की रसनाहाँ इनहीं दीन्हीं॥

वैर कियौ हमसौं विधना रचि, याकी जाति अबै हम चीन्ही।
निठुर निर्दई यातैं और न, स्याम बैर हमसौं है लीन्ही॥
या रस ही मैं मगन राधिका, चतुर सखी तबहीं लखि लीन्ही।
सूर स्याम कै रंगहिं राँची, टरति नहीं जल तैं ज्यौं मीन्ही॥
॥१८५८॥२४७६॥

राग सोरठ

धन्य-धन्य बड़ भागिनी राधा।
नीकैं भजी नंदनंदन कौं, मेटि भवन-जन-बाधा॥
नवल स्याम नवला तुमहूं हौ, दोऊ रूप अगाधा।
मैं जानी यह बात हृदय की, रही नहीं कछु साधा॥
संगहिं रहत सदा पिय प्यारी, क्रीड़त करत उपाधा।
कोक-कला वितपन्न भई हौ, कान्ह रूप-तनु आधा॥
प्रेम उमँगि तेरैं मुख प्रगस्यौ, अरस-परस-अबराधा।
सूरदास प्रभु मिले कृपा करि, गए दुरित दुख दाधा॥
॥१८५९॥२४७७॥

राग धनाश्री

कहि राधिका बात अब साँची।
तुम अब प्रगट कही मो आगैं, स्याम प्रेम रस माँची॥
तुमकौं कहाँ मिले नँद-नंदन, जब उनकैं रँग राँची।
खरिक मिले, की गोरस बेंचत, की जब त्रिपहर बाँची॥
कहैं बनै छाँड़ौ चतुराई, बात नहीं यह काँची।
सूरदास राधिका सयानी, रूप-रासि-रस-खाँची॥
॥१८६०॥२४७८॥

राग गौरी

कब री मिले स्याम नहिं जानौं।
तेरी सौं करि कहति सखी री, अजहूँ नहिं पहिचानौं॥
खरिक मिले, की गोरस बेंचत, की अबहीं, की कालि।
नैननि अंतर होत न कबहूँ, कहति कहा री आलि॥
एकौ पल हरि होत न न्यारे, नीकैं देखे नाहिं।
सूरदास-प्रभु टरत न टारैं, नैनन सदा बसाहिं॥
॥१८६१॥२४७९॥

राग बिलावल

स्याम मिले मोहिं ऐसें माई। मैं जल कौं जमुना-तट आई॥
औचक आए तहाँ कन्हाई। देखत ही मोहिनी लगाई॥
तबहीं तैं तन-सुरति गँवाई। सूधैं मारग गई भुलाई॥
बिनु देखें कल परै न माई। सूर स्याम मोहिनी लगाई॥
॥१८६२॥२४८०॥

राग आसावरी

तबहीं तैं हरि हाथ बिकानी। देह गेह सुधि सबै भुलानी॥
अंग सिथिल भए जैसैं पानी। ज्यौं-त्यौं करि गृह पहुँची आनी॥
बोले तहाँ अचानक बानी। द्वारैं देखे स्याम बिनानी॥
कहा कहौं सुनि सखी सयानी। सूर स्याम ऐसी मति ठानी॥
॥१८६३॥२४८१॥

राग धनाश्री

जा दिन तैं हरि दृष्टि परे री।
ता दिन तैं मेरे इन नैननि, दुख-सुख सब बिसरे री॥
मोहन अंग गुपाल लाल के, प्रेम-पियूष भरे री।
बसे उहाँ मुसुकनि-बाँह लै, रचि रुचि भवन करे री॥
पठवति हौं मन तिनहिं मनावन निसिदिन रहत अरे री।
ज्यौं ज्यौं जतन करति उलटावति त्यौं त्यौं हठनि खरे री॥
पचिहारी समुझाइ ऊँच-निच पुनि-पुनि पाइ परे री।
सो सुख सूर कहाँ लौं बरनौं इक टक तैं न टरे री॥
॥ ८६४॥२४८२॥

राग सारंग

जब तैं प्रीति स्याम सौं कीन्ही।
ता दिन तैं मेरैं इन नैननि, नकुहुँ नींद न लीन्ही॥
सदा रहै मन चाक चढ़्यौ, सो और न कछू सुहाइ।
करत उपाइ बहुत मिलिबे कौं, यहै बिचारत जाइ॥
सूर सकल लागति ऐसीयै, सो दुख कासौं कहियै।
ज्यौं अचेत बालक की बेदन, अपने ही तन सहियै॥
॥१८६५ २४८३॥

राग अडाना

का जानै हरि कहा कियौ री।
मन समुझति, मुख कहत न आवै, कछु इक रस ननि जुनै पियौ री॥
ठाढ़ी हुती अकेली आँगन आनि अचानक दरस दियौ री।
सुधि बुधि कछु न रही उत चितवत, मेरौ मन उन पलटि लियौ री॥
ता सुख हेतु दहत दुख दारुन, छिनु छिनु जरत जुड़ात हियौ री।
सूर सकल आनति उर अंतर, उपमा कौं पावत न बियौ री॥
॥ १८६६ ॥ २४८४ ॥

राग सारंग

हरि मेरैं आँगन ह्वै जु गए।
निकसे आइ अचानक सजनी, इत फिरि-फिरि चितए॥
अति दुख मैं पछिताति यहै कहि, नैनन घहुत टए।
जौ विधि यहै कियौ चाहत हो, द्वै मोहिं कतव दए॥
सव दै लेउँ लाख लोचन सखि, जौ कोउ जटत गए।
थाके सूर पथिक मग मानौ, मदन व्याध विधाए॥
॥ १८६७ ॥ २४८५ ॥

राग कान्हरौ

पीतांवर की सोभा सखि री, मोपै कही न जाई।
सागर सुत पति-आयुध मानौ, घन रिपु-रिपु मैं देत दिखाई॥
जा रिपु पवन, तासु-सुत स्वामी आभा, कुंडल कोटि दिपाई।
छाया पति-तनु वदन विराजत वंधुक अधरनि रहे लजाई॥
नाकी नायक-वाहन की गति, राजत मुरली सुधुनि वजाई।
सूरदास-प्रभु हर-सुत-वाहन, ता पख लै रहे सीस चढ़ाई॥
॥ १८६८ ॥ २४८६ ॥

कहाँ लगि अलकैं देहौं ओट।
चचल चपल सुरग छवीलौ, आनि वन्यौ मग जोट॥
खंजन कमल नैन अति राजत, उपमा है जो कोट।
सूर-स्याम छवि कहँ लौं वरनौं, नहिंन रूप की टोट॥
॥ १८६९ ॥ २४८७ ॥

राग सारंग

टरति न टारैं छवि मन जु चुभी ।
घन तन स्याम, पितांबर दामिनि, चातक आँखि लुभी ॥
द्वै बग पगति राजति मानौ, मुक्ता-माल सुभी ।
गिरा गँभीर गरज मानौ सखि, स्रवननि आइ खुभी ॥
मुरली मोर मनोहर-बानी, सुनि इकटक जु उभी ।
सूरदास मनमोहन निरखत, उपजी काम गुभी ॥
॥ १८७० ॥ २४८८ ॥

राग बिलावल

नंद के लाल हर्‌यौ मन मोर ।
हौं बैठी मोतिनि लर पोवति, काँकरि डारि चले सखि भोर ॥
बंक बिलोकनि, चाल छबीली, रसिक सिरोमनि नवल किसोर ।
कहि कासौं मन रहै स्रवन सुनि, सरस मधुर मुरली की घोर ॥
बदन गुबिंद इंदु कैं कारन तरसत नैन, बिहग चकोर ।
सूरदास-प्रभु के मिलिबे कौं, कुच-श्रीफल हौं करति अँकोर ॥
॥१८७१॥२४८९॥

राग अडानौ

मेरे मन गोपाल हर्‌यौ री ।
चितवत हीं उर पैठि नैन मग ना जानौं धौं कहाँ कर्‌यौ री ॥
मातु-पिता पति-बंधु सजन जन, सखि आँगन सब भवन भर्‌यौ री ॥
लोक वेद प्रतिहार, पहरुआ, तिनहुँ पैं राख्यौ न पर्‌यौ री ॥
धर्म धीर कुलकानि कुँजी करि, तिहिं तारौ दै, दूरि धर्‌यौ री ।
पलक-कपाट कठिन उर अंतर, इतेहुँ जतन कछुवै न सर्‌यौ री ॥
बुधि बिवेक-बल सहित सँच्यौ पचि, सु धन अटल कबहूँ न टर्‌यौ री ।
लियौ चुराइ चितै चित सजनी, सूर सोच तनु जात जर्‌यौ री ॥
॥ १८७२ ॥ २४९० ॥

राग अडानौ

मेरौ मन तब तैं न फिर्‌यौ री ।
गयौ जु संग स्याम सुंदर कैं तहँ तैं कहुँ न टर्‌यौ री ॥

जोबन-रूप-गर्वधन सँचि-सँचि, हौं उर मैं जु धर्यौ री।
कहा कहौं कुल-सील, सकुच सखि, सरबस हाथ पर्यौ री॥
बिनु देखैं मुख हरि कौ मन यह, निसि दिन रहत अर्यौ री।
सूरदास या बृथा लाज तैं, कछुव न काज सर्यौ री॥
॥ १८७३ ॥ २४९१ ॥

राग सारंग

यह सब मैं हीं पोच करी।
स्याम रूप निरखत नैननि भरि, मोहन-फंद परी॥
बय किसोर कमनीय, मुगध मैं, लुबधत हूँ न डरी।
अब छबि गई समाइ हिये मैं, टारतहूँ न टरी॥
अति सुख, दुख, संभ्रम ब्याकुलता, बिधु-मुख सनमुख री।
बुधि, बिवेक, बल, बचन, बिबस ह्वै, आनँद-उमँग भरी॥
जद्यपि सील सहित सुनि सूरज, अंग हुते न सरी।
तद्यपि मुख-मुरलिका बिलोकत, उलटि अनंग जरी॥
॥ १८७४ ॥ २४९२ ॥

राग आसावरी

ना जानौं तबहीं तैं मोकौं, स्याम कहा धौं कीन्हौ री।
मेरी दृष्टि परे जा दिन तैं, ज्ञान-ध्यान हरि लीन्हौ री॥
द्वारैं आइ गए औचक हीं, मैं आँगन ही ठाढ़ी री।
मनमोहन-मुख देखि रही तब काम-बिथा तनु बाढ़ी री॥
नैन-सैन दै दै हरि मो तन, कछु इक भाव बतायौ री।
पीतांबर उपरैना कर गहि, अपनैं सीस फिरायौ री॥
लोक-लाज, गुरुजन की संका, कहत न आवै बानी री।
सूर स्याम मेरैं आँगन आए, जात बहुत पछितानी री॥
॥ १८७५ ॥ २४९३ ॥

राग सोरठ

मन हरि लीन्हौ कुँवर कन्हाई।
जब तैं स्याम द्वार ह्वै निकसे, तब तैं री मोहि घर न सुहाई।
मेरैं हेत आइ भए ठाढ़े, मोतैं कछु न भई री माई।
तबहीं तैं ब्याकुल भई डोलति, बैरी भए मातु-पितु-भाई॥

मो देखत सिर-पाग सँवारी, हँसि चितए छवि कही न जाई।
सूर स्याम गिरधर वर नागर, मेरौ मन लै गए चुराई॥
॥ १८७६ ॥ २४९४ ॥

राग धनाश्री

प्रेम सहित हरि तेरैं आए।
कछु सेवा तै करी कि नाहीँ की धौं वैसैं हि उनहिँ पठाए॥
काहे तैं हरि पाग सँवारी, क्यौं पीतांबर सीस फिराए।
गुप्त भाव तोसौं कछु कीन्हौ, घर आए काहैं बिसराए॥
अतिही चतुर कहावति राधा, बातनि हाँ हरि क्यौं न भुराए।
सूर स्याम कौं बस करि लेती, काहे कौं रहते पछताए?॥
॥ १८७७ ॥ २४९५ ॥

राग धनाश्री

गुरुजन माहिं बैठी बाल, आए हरि तहँ, बेदी सँवारन मिस, पाइ लागी।
चतुर नायक पाग मसकी मनहिँ मन, रीझे गुप्त भेद प्रीति नन जागी॥
हस्त-कमलहिँ हरि हेरि कै हिरदै धरे, भामिनिहुँ उत आपु कठ लागी।
सूरदास अतिहि चतुर नागरी नागर, दुहुँ कह्यौ, मन मैं सुहाग भागी॥ १८७८ ॥ २४९६ ॥

राग धनाश्री

स्याम अचानक आइ गए री।
मैं बैठी गुरुजन बिच सजनी, देखतहीं मेरे नैन नए री॥
तब इक बुद्धि करी मैं ऐसी, बेंदी सौं कर परस कियौ री।
आपु हँसे उत पाग मसकि हरि, अंतरजामी जानि लियौ री॥
लै कर कमल अधर परसायौ, देखि हरषि पुनि हृदय धर्यौ री।
चरन छुए दोउ नैन लगाए, मैं अपनैं भुज अंक भर्यौ री॥
ठाढ़े रहे द्वार अति हित करि, तबहीं तैं मन चोरि गयौ री।
सूरदास कछु दोष न मेरौ, उत गुरुजन इक हेत नयौ री॥
॥ १८७९ ॥ २४९७ ॥

राग धनाश्री

करत मोहिं कछुवै न बनी ।
हरि आए चितवत ही रही सखि, जैसैं चित्र धनी ॥
अति आनंद हरष आसन उर कमल कुटी अपनी ।
न्यौछावरि अंचल फहरनि, दृग अर्घ जु धार घनी ॥
गुरुजन लाज कछू न सकी कहि-सुनि मन-बुधि सजनी ।
हृदय उमँगि कुच-कलस प्रगट भए, टूटी तरकि तनी ॥
अब उपजति अति लाज मनहिं मन समुझत निज करनी ।
तदपि सूर मेरी जड़ता प्रभु, मंगल माँझ गनी ॥
॥१८८०॥२४९८॥

राग कल्यान

सेवा मानि लई हरि तेरी ।
अब काहैं पछिताति राधिका, स्याम जात करि फेरी ॥
गुरुजन मैं भावहि की पूजा, और कहौ कछु टेरी ।
मोहन अति सुख पाइ गए री, चाहति हौ कह मेरी !
तेरैं बस भए कुँवर कन्हाई, करति कहा अवसेरी ।
सूर स्याम तुम कौं अति चाहत, तुम प्यारी हरि केरी ॥
॥१८८१॥२४९९॥

राग आसावरी

राधा भाव कियौ यह नीकौ, तुम बंदी, उन पाग छुई ।
ऐसे भेद कहा कोउ जानै, तुमही जानौ गुप्त दुई ॥
तुम जुहार उनकौं जब कीन्हौ, तुमकौं उनहुँ जुहार कियौ ।
एकै प्रान, देह द्वै कीन्हे, नम वै एकै, नहीं वियौ ॥
तुम पग परसि नैन पर राख्यौ, उन कर कमलनि हृदय धर्‌यौ ।
सूर स्याम हिरदै तुम राखे, तुम उनकौं लै कंठ भर्‌यौ ॥
॥१८८२॥२५००॥

राग बिहागरौ

एक गाउँ के बसत बार इक, कीन्ही हरि पहिचानि ।
निसि-दिन रहै दरस की आसा, मिले अचानक आनि ॥

भाग दसा आँगनहीं आए, सुंदर सरब सुजानि।
नीकैं करि देखनहुँ न पाए, बहि न जाइ कुल-कानि॥
कल न परति हरि-दरसन-बिनु री, मोहिं परी यह बानि।
सूरजदास बिकानी री हौं नंद-सुवन कैं पानि॥
॥१८८३॥२५०१॥

राग बिहागरौ

कहा करौं गुरुजन डर मान्यौ।
आए स्याम कौन हित करिकै, मैं अपराधिनि कछू न जान्यौ॥
ठाढ़े स्याम रहे मेरैं आँगन, तब तैं मन उन हाथ बिकान्यौ।
चूक परी मोकौं सबहीं बिधि, कहा करौं गई भूलि सयान्यौ॥
वै उतहीं कौं गए हरषि मन, मेरी करनी समुझि अयान्यौ।
सूर स्याम सँग मन उठि लाग्यौ, मो पर बारबार रिसान्यौ॥
॥१८८४॥२५०२॥

राग मारू

औचक आए री घर मेरैं, चितै रही तब छबि निहारि हरि।
कुंडल लोल कपोल, रहे कच स्रम-जल सौं कर-कंजनि सौं टरि॥
गुरुजन बिच मैं आँगन ठाढ़ी, अति हित दरसन दियौ मया करि।
सूरदास प्रभु अंतरजामी, वे हमि चितए अतिसय सुख भरि॥
॥१८८५॥२५०३॥

राग गौरी

मैं अपनैं कुल-कानि डरानी।
कैसैं स्याम अचानक आए, मैं सेवा नहिं जानी॥
वहै चूक जिय जानि, सखी सुनि, मन लै गए चुराइ।
तन तैं जात नहीं मैं जान्यौ, लियौ स्याम अपनाइ॥
ऐसैं ठगत फिरत हरि घर घर, भूलि कियौ अपराध।
सूर स्याम मन देहिं न मेरौ, पुनि करिहौं अनुराध॥
॥१८८६॥२५०४॥

राग काफी

(मेरौ) मन न रहै कान्ह बिना, नैन तपै माई।
नव किसोर स्याम-बरन मोहिनी लगाई॥

वन की धातु चित्रित तन मोर-चंद सोहै।
वनमाला लुब्ध भँवर - सुर नर - मन मोहै॥
नटवर-वपु-वेप ललित, कटि किंकिनि राजै।
मनि कुंडल मकराकृत तरुन तिलक भ्राजै॥
कुटिल केस अति सुदेस, गोरज लपटानी।
तड़ित-बसन, कुंद-दसन, देखिहौं भुलानी॥
अरुन सेत खुंभि वज्र-खचित-पदिक सोभा।
मनि कौस्तुभ कंठ लसत, चितवत चित लोभा॥
अधर सुधा मधुर मधुर मुरली कल गावै।
भ्रू बिलास, मंद हास, गोपिनि जिय भावै॥
कमल नैन चित के चैन, निरखि मैन वारौं।
प्रेम-अंस उरझि रह्यौ, उर तैं नहिं टारौं॥
गोप वेप धरि सखि री, संग-संग डोलौं।
तन-मन अनुराग भरी, मोहन सँग बोलौं॥
नव किसोर चितके चोर, पल न ओट करिहौं।
सुभग चरन-कमल अरुन, अपनैं उर धरिहौं॥
असन-वसन-सयन भवन, हरि बिनु न सुहाई।
बिनु देखैं कल न परै, कहा करौं माई॥
जसुमति-सुत सुंदर-तनु निरखि हौं लुभानी।
हरि-दरसन-अमल पर्‌यौ, लाज ना लजानी॥
रूप-रासि सुख बिलास, देखत बनि आवै।
सूर मुदित-रूप की सु उपमा नहि पावै॥
॥ १८८७ ॥ २५०५ ॥

राग गोरी

मन मेरौ हरि साथ गयौ री।
द्वारैं आइ स्याम घन सजनी, हँसि मोतन तिहिं संग लयौ री॥
ऐसैं मिल्यौ जाइ मोकौं तजि, मानौ उनहीं पोषि जयौ री।
सेवा चूक परी जो मो तैं, मन उनकौ धौं कहा कियौ री॥
मोकौं देखि रिसात कहत यह, तेरैं जिय कछु गर्व भयौ री।
सूर स्याम-छवि-अंग लुभान्यौ मन-वच-क्रम मोहिं छाँड़ि दयौ री॥
॥ १८८८ ॥ २५०६ ॥

राग रामकली

मैं मन बहुत भाँति समुझायौ ।
कहा करौं दरसन रस अँटक्यौ, बहुरि नहीं घट आयौ ।।
इन नैननि कै भेद, रूप रस उर मैं आनि दुरायौ ।
बरजत ही बेकाज सुपन ज्यौं, पलट्यौ, नहिं जो मिधायौ ।।
लोक वेद-कुल निदरि, निडर ह्वै, करत आपनौ भायौ ।
मुख छबि निरखि,चौं धिनिसि खग ज्यौं, हठि अपुनपौ बँधायौ ।।
हरि कौ दोष कहा कहि दीजै, यह अपनैं बल धायौ ।
अति बिपरीत भई 'सुनि सूरज, मुरझ्यौ मदन जगायौ ।।
।। १८८९ ।। २५०७ ।।

राग बिलावल

मनहिं बिना कह करौं सही री ।
घर तजि कै कोउ रहत पराएँ, मैं तबही तैं फिरति बही री ।।
आइ अचानक ह्याँ लै गए हरि, बार-बार मैं हटकि रही री ।
मेरौ कह्यौ सुनत काहे कौं, गैल गयौ हरि कैं उतही री ।।
ऐसी करत कहूँ री कोऊ कहा करौं मैं हारि रही री ।
सूर स्याम कौं यह न बूझियै ढीट कियौ मन कौं उनहीं री ।।
।। १८९० ।। २५०८ ।।

राग टोडी

माखन की चोरी तैं सीखे, करन लगे अब चित की चोरी ।
जाकी दृष्टि परे नँद-नंदन, फिरति सु गोहन डोरी-डोरी ।।
लोक लाज, कुल-कानि मेटि कै, बन बन डोलति नवल किसोरी ।
सूरदास-प्रभु रसिक सिरोमनि, देखत निगम बानि भई भोरी ।।
।। १८९१ ।। २५०९ ।।

राग आसावरी

क्यों सुरझाऊँ नंद-लाल सौं, अरुझि रह्यौ सजनी मन मेरौ ।
मोहन मूरति नैंकु न बिसरति, हारी कैसैंहु करत न फेरौ ।।
बहुत जतन करि घेरि सु राखति, फिरि-फिरि-लरत सुनत नहिं टेरौ ।
सूरदास-प्रभु कैं संग डोलत, निसि-बासर निरखत नहिं डेरौ ।।
।। १८९२ ।। २५१० ।।

राग बिलावल

मैं अपनौ मन हरत न जान्यौ ।
कीधौं गयौ संग हरि कैं वह, कीधौं पंथ भुलान्यौ ॥
कीधौं स्याम हटकि है राख्यौ, कीधौं आपु रतान्यौ ।
काहे तैं सुधि करी न मेरी, मोपै कहा रिसान्यौ ॥
जबहीं तैं हरि ह्याँ ह्वै निकसे, वैरु तबहिं तैं टान्यौ ।
सूर स्याम सँग चलन कह्यौ मोहिं कह्यौ नहीं तब मान्यौ ॥
॥१८६३॥२५११॥

राग गूजरी

स्याम करत हैं मन की चोरी ।
कैसैं मिलत आनि पहिलैं ही, कहि-कहि बतियाँ भोरी ॥
लोक-लाज की कानि गँवाई, फिरति गुड़ी बस डोरी ।
ऐसे ढंग स्याम अब सीख्यौ, चोर भयौ चित कौ री ॥
माखन की चोरी सहि लीन्ही, बात रही वह थोरी ।
सूर स्याम भयौ निडर तबहिं तैं, गोरस लेत अँजोरी ॥
॥१८९४॥२५१२॥

राग टोडी

सुनहु सखी हरि करत न नीकी ।
आपु स्वारथी हैं मनमोहन, पीर नहीं पर ही की ॥
वै तौ निठुर सदा मैं जानति, बात कहत मनही की ।
कैसेहुँ उनहिं हाथ करि पाऊँ रिस मेटौं सब जी की ॥
चितवत नहीं मोहिं सुपनैंहूँ, को जानै उन ही की ।
ऐसैं मिली सूर के प्रभु कौं, मनहुँ मोल लै बीकी ॥
॥१८९५॥२५१३॥

राग आसावरी

माई कृष्न-नाम जब तैं स्रवन सुन्यौ है री, तब तैं भूली
री भौन बावरी सी भई री ।
भरि भरि आवैं नैन, चित न रहत चैन, बैन नहिं सूधौ दसा
औरहिं ह्वै गई री ॥

मैं इनकौं घटि बढ़ि नहिं जानति भेद करै सो को है।
सूर स्याम नागर, यह नागरि, एक प्रान तन दो है॥
॥ १९०३ ॥ २५२१ ॥

राग मलार

सुंदर स्याम पिया की जोरी।

सखी गाँठि दै मुदित राधिका, रसिक हँसी मुख मोरी॥
वै मधुकर ये कंज कली, वै चतुर एउ नहिँ भोरी।
प्रीति परस्पर करि दोऊ सुख, बात जतन की जोरी॥
बृंदावन वै सिसु तमाल ये कनक-लता सी गोरी।
सूर किसोर नवल नागर ये, नागरि नवल किसोरी॥
॥ १९०४ ॥ २५२२ ॥

राग गूजरी

सुनि सजनि ये ऐसे लागत।

एक प्रान जुग तन सुख-कारन, एकौ निमिष न त्यागत॥
बिछुरत नहीं संग तैं दोऊ बैठत, सोवत, जागत।
पूरब-नेह आजु यह नाहीँ, मोसौं सुनहु अनागत॥
मेरी कही साँच तुम जानौ, कीजौ आगत स्वागत।
सूर स्याम राधा-बर ऐसे, प्रीतिहिँ तैं अनुरागत॥
॥ १९०५ ॥ २५२३ ॥

राग जैतश्री

सखी सखी सौं धन्य कहै।

इनकौ हम ऐसे नहिँ जाने, ब्रज-भीतर ये गुप्त रहैं॥
धन्य-धन्य तेरी मति साँची, हम इनकौं कछु और कहैं।
राधा कान्ह एक हैं दोऊ, तौ इतनौ उपहास सहैं॥
वै दोउ एक दूसरी तू है, तोहूँ कौं सखि स्याम चहैं।
सूर स्याम धनि, अरु राधा धनि, तुहूँ धन्य हम वृथा बहैं॥
॥ १९०६ ॥ २५२४ ॥

राग धनाश्री

धन्य धन्य यह तेरी बानी।

तैं नीकैं हरि कौं पहिचाने, अब हम तोकौं जानी॥

राधा आधा देह स्याम की, तू उनकी बिचवानी।
राधा हू तैं अधिक स्याम सौं, तेरी प्रीति पुरानी॥
जौ हरि की संगिनि तू नाहीं, आदि नेह क्यौं गानी।
सूरदास-प्रभु रसिक-सिरोमनि, यह रस कथा बखानी॥
॥१६०७॥२५२५॥

राग पूरवी

राधा मोहन सहज सनेही।
सहज रूप गुन, सहज लाड़िले, एक प्रान द्वै देही॥
सहज माधुरी अंग-अंग प्रति, सहज सदा बन-गेही।
सूर स्याम स्यामा दोउ सहजहिं सहज प्रीति करि लेहीं॥
॥१९०८॥२५२६॥

राग आसावरी

राधा नँद-नंदन अनुरागी।
भय चिंता हिरदै नहिं एकौ, स्याम-रंग-रस पागी॥
हृदय चून रँग, पय पानी ज्यौं दुविधा दुहुँ की भागी।
तन-मन-प्रान समर्पन कीन्हौ, अंग-अग रति खागी॥
ब्रज-वनिता अवलोकन करि करि, प्रेम बिबस तनु त्यागी।
सूरदास-प्रभु सौं चित लाग्यौ, सोवत तैं मनु जागी॥
॥१९०९॥२५२७॥

राग मारू

गोपी स्याम-रंग रॉची।
देह-गेह-सुधि बिसारि, बढ़ी प्रीति सॉची॥
दुविधा उर दूरि भई, गई मति वह कॉची।
राधा तैं आपु बिबस भई, उघरि नॉची॥
हरि तजि जो और भजै, पुहुमि लीक खॉची।
मातु-पिता-लोक-भीति, वाकी नहिं बॉची॥
सकुच जबहिं आवै उर, बार-बार झॉची।
सूर स्याम-पद-पराग, ता ही मैं मॉची॥
॥१९१०॥२५२८॥

राग मारू

स्याम जल सुजल ब्रज-नारि खोरैं।
नदी माला-जलज, तट भुजा अति सबल, धार रोमावली जमुन भोरैं॥
नैन ठहरात नहिं, बहत अति तेज सौं, तहाँ गयौ चित धीर न सम्हारैं।
मन गयौ तहाँ, आपुन रहीं निकट जल, एक इक अंग-छबि सुधि बिसारैं॥
करति अस्नान सब प्रेम-बुडकीहिं दै, समुझि जिय होइ भजि तीर आवैं।
सूर-प्रभु स्याम जल-रासि, ब्रज-बासिनी, करतिं अनुमान नहिं पार पावैं॥१९११॥२५२९॥

राग बिलावल

स्याम रंग राँची ब्रज-नारी। और रंग सब दीन्हे डारी॥
कुसुम रंग गुरुजन पितु माता। हरित रंग भगनी अरु भ्राता॥
दिना चारि मैं सब मिटि जैहै। स्याम रंग अजराइल रैहै॥
उज्ज्वल-रंग गोपिका नारी। स्याम-रंग गिरिवर के धारी॥
स्यामहिं मैं सब रंग बसेरौ। प्रगट बताइ देउँ कह झेरौ॥
अरुन सेत सित सुंदर तारे। पीत रंग पीतांबर धारे॥
नाना रंग स्याम गुनकारी। सूर स्याम-रँग घोष-कुमारी॥
॥१९१२॥२५३०॥

राग बिहागरौ

स्याम रूप मैं री मन अरयौ।
लटु ह्वै लटक्यौ, फेरि न मटक्यौ, बहुतै जतन करयौ॥
ज्यौं ज्यौं खैंचति मगन होत त्यौं, ऐसी-धरनि धरयौ।
मोसौं बैर करत उनकैं ह्याँ, देखौ जाइ ढरयौ॥
ज्यौं सिवछत दरसन रवि पाऐं, तेहीं गरति गरयौ।
सूरदास प्रभु रूप थक्यौ मनु, कुंजर पंक परयौ॥
॥१९१३॥२५३१॥

राग देवगंधार

निस दिन इन नैननि कौं आली, नंदलाल की रहै लालसाइ।
मुरली तान परी है स्रवननि, कैसेहुँ दुरत नहीं जदुराइ॥

कहा कहौं तोसौं यह सजनी, मन मेरो लै गयौ चुराइ।
सूर स्याम कौ नाम धरौ, पुनि धरि न जाइ सुधि रहै न माइ॥
॥ १९१४॥२५३२॥

राग देवसाख

मन न रहै सखि स्याम बिना।
अतिही चतुर सुजान जानमनि, वा छबि पर मैं भई लिना॥
मन तौ चोरि लियौ पहिलैं ही, झुरि झुरि कै ह्वै रही छिना।
अपनी दसा कहौं कासौं मैं, बन-बन डोलौं रैन-दिना॥
वै मोहन मन हरत सहजहीं हरि लै ताकौ करत हिना।
सूरदास-प्रभु रसिक रसीले, बहु नायक है नाउँ जिना॥
॥ १९१५ ॥ २५३३ ॥

राग सारंग

नैननि नींद गई री निसि दिन, पल पल छतियाँ लग्यौ रहै धर कौ।
उन मोहन मुख मुरलि सुनत सखि, सुधि न रही इत घेरा घर कौ॥
ननदी तौ न दिये बिनु गारी रहति, सासु सपनेहु नहिं ढरकौ।
माइ निगोड़ी कानिन मैं लियैं रहै, मेरे पायनि कौ खरकौ॥
निकसन हूँ पैयै नहिं, कासौं दुख कहियै, देखे नहिं हरि कौं।
सूरदास के प्रभु तन मेरौ, ज्यौं भयौ हाथ पाथर तर कौ॥
॥ १९१६ ॥ २५३४ ॥

राग सुघराई

मोहन मुरलि बजाई रिझाई, तिनहीं हौं मोही, मोही री।
साँझ समय निकले ह्वै आँगन, हौं तब तैं चितवति ओही री॥
काकी देह, गेह सुधि काकैं, को हैं हरि, मोहूँ को ही री।
तेरे कहैं कहति हौं बानी, तब तैं मैं इकटक जोही री॥
मिलत नहीं नहिं सँग तैं त्यागत, कहा करौं बूझौं तोही री।
सूर स्याम तब तैं नहिं आए, मन जब तैं लीन्हौ दोही री॥
॥ १९१७ ॥ २५३५ ॥

राग अड़ानो

ब्रज की खोरिहिं ठाढौ साँवरौ, तिनहीं मोही री मोही री।
जब तैं देखे स्याम सुँदर सखि, चलि नहिं सकति काम द्रोही री॥

को ल्याई, किन चरन चलाई, बहियाँ गही सुधौं को ही री।
सूरदास प्रभु देखि न सुध बुधि, भई विदेह बूझति तोही री॥
॥१९१८॥२५३६॥

राग सुघराई

आँखिनि मैं बसै, जिय मैं बसै हिय मैं बसत निसि-दिवस प्यारौ।
तन मैं बसै, मन मैं बसै, रसना हू मैं बसै नंदवारौ॥
सुधि मैं बसै, बुधिहू मैं बसै, अंग-अंग बसै मुकुटवारौ।
सूर बन बसै, घरहु मैं बसै, संग ज्यौं तरंग जल न न्यारौ॥
॥१९१९॥२५३७॥

राग सोरठ

नंद-नँदन-बिनु कल न परै।
अति अनुराग भरीं जुवती सब, जहाँ स्याम तहँ चित्त ढरै।
भवन गईं मन तहाँ न लागै गुरु गुरुजन अति त्रास करैं।
वे कछु कहैं, करैं कछु औरै, सासु ननद तिन पर झहरैं॥
वहै तुमहिं पितु-मातु सिखायौ, बोल करति नहिं, रिसनि जरैं।
सूरदास-प्रभु सौं चित अरुझ्यो, यह समुझैं जिय ज्ञान धरैं॥
॥१९२०॥२५३८॥

राग जैतश्री

सासु ननद घर त्रास दिखावैं।
तुम कुल-बधू लाज नहिं आवति, बार बार समुझावैं॥
कब की गई न्हान तुम जमुना, यह कहि कहि रिस पावैं।
राधा कौ तुम संग करति हौ, ब्रज उपहास उडावैं॥
वे हैं बडे महर की बेटी, तौ ऐसी कहवावैं।
सुनहु सूर यह उनहीं फावै, ऐसी कहति डरावैं॥
॥१९२१॥२५३९॥

राग सारग

हम अहीर ब्रजवासी लोग।
ऐसैं चलौ हँसै नहिं कोऊ, घर मैं बैठि करौ सुख-भोग॥
दही-मही, लवनी, घृत बेंचौ, सबै करौ अपने उनजोग।
सिर पर कंस मधुपुरी बैठयौ, छिनकहि मैं करि डारै सोग॥

फूँकि फूँकि धरनी पगधारौ, अब लागीँ तुम करन अजोग।
सुनहु सूर अब जानौगी तब, जब देखौ राधा-संजोग॥
॥१६२२॥२५४०॥

राग धनाश्री

तुम कुल-बधू निलज जनि ह्वैहौ।
यह करनी उनहीँ कौँ छाजै, उनकैँ संग न जैहौ॥
राधा-कान्ह-कथा ब्रज-घर-घर, ऐसैँ जनि कहवैहौ।
यह करनी उन नई चलाई, तुम जनि हमहिं हँसैहौ॥
तुम हौ बड़े महर की बेटी, कुल जनि नाउँ धरैहौ।
सूर स्याम राधा की महिमा, यहै जानि सरमैहौ॥
॥१६२३॥२५४१॥

राग टोड़ी

यह सुनि कै हँसि मौन रहीँ री।
ब्रज उपहास कान्ह-राधा कौ, यह महिमा जानी उनहीँ री॥
जैसी बुद्धि हृदय है इनकैँ, तैसीयै मुख बात कही री।
रवि कौ तेज उलूक न जानै, तरनि सदा पूरन नभहीँ री॥
बिष कौ कीट बिषहिं रुचि मानै, कहा सुधा रसहीँ री।
सूरदास तिल-तेल सवादी, स्वाद कहा जानै घृतहीँ री॥
॥१६२४॥२५४२॥

राग सोरठी

अहिर जाति गोधन कौ मानैं।
नंद-नँदन सुर-नर मुनि-बंदन, तिनकी महिमा ये क्यौं जानैं॥
धनि राधा उपहास धन्य यह, सदा स्यामही के गुन गानै।
परम पुनीत हृदय अति निर्मल, बार-बार वा जसहिं बखानै॥
स्याम-काम की पूरनहारी, ताकौं कुलटा करि पहिचानै।
सूरदास ऐसे लोगनि कौ नाउँ न लीजै होत बिहानै॥
॥१६२५॥२५४३॥

राग बिहागरौ

बिधना यह संगति मोहिं दीन्ही।
इनकौ नाउँ प्रात नहिं लीजै, कहा निठुरई कीन्ही॥

मनमोहन गोहन-बिनु अब लौं, मनु बीते जुग चारि।
बिमुखनि तैं मैं कबधौं छूटौं, कब मिलिहौं बनवारि॥
इक इक दिन बिहात कैसैहूँ अब तौ रह्यौ न जाइ।
सूर स्याम-दरसन बिनु पाएँ बार-बार अकुलाइ॥
॥१६२६॥२५४४॥

राग सोरठ

बिमुख जननि कौ संग न कीजै।
इनके बिमुख बचन सुनि स्रवननि, दिन-दिन देही छीजै।
मोकौं नैंकु नहीं ये भावत, परबस कौं कह कीजै।
धिक जीवन ऐसौ बहु दिन कौ, स्याम-भजन पल जीजै॥
धिक इहिं घर धिक इन गुरुजन कौं, इनमैं नहीं बसीजै।
सूरदास प्रभु अंतरजामी, यहै जानि मन लीजै॥
॥१६२७॥२५४५॥

राग नट

राधा स्याम-रंग रँगी।
रोम रोमनि भिदि गयौ सब, अंग अंग पगी॥
प्रीति दै मन लै गए हरि, नंद-नंदन आपु।
कृष्न-रस उन्मत्त नागरि, टुरत नहिं परतापु॥
चली जमुना जाति मारग, हृदै यहै बिचार।
सूर प्रभु कौ दरस पाऊँ, निगम-अगम अपार॥
॥१६२८॥२५४६॥

राग धनाश्री

चित कौ चोर अबहिं जौ पाऊँ।
हृदय-कपाट लगाइ जतन करि, अपने मनहिं मनाऊँ॥
जबहिं निसंक होति गुरुजन तैं, तिहिं औसर जो आवैं।
भुजनि धरौं भरि सुदृढ़ मनोहर, बहु दिन कौ फल पावैं॥
लै राखौं कुच बीच चाँपि करि, तन कौ ताप बिसारौं।
सूरदास नँद नंदन कौ गृह गृह - डोलनि भ्रम टारौं॥
॥१६२९॥२५४७॥

राग बिलावल

इततैं राधा जाति जमुन-तट, उततैं हरि आवत घर कौं।
कटि काछनी, बेष नटवर कौ, बीच मिली मुरलीधर कौं॥
चितै रही मुख-इंदु मनोहर, वा छबि पर वारति तन कौं।
दूरिहु तैं देखत ही जाने, प्राननाथ सुंदर घन कौं॥
रोम पुलक, गदगद बानी कही, कहाँ जात चोरे मन कौं।
सूरदास प्रभु चोरन सीखे, माखन तैं चित वित धन कौं॥
॥१६३०॥२५४८॥

राग बिलावल

यह न होइ जैसैं माखन-चोरी।
तब वह मुख पहिचानि, मानि सुख, देता जान हानि हुति थोरी॥
तब तिनि दिननि कुमार कान्ह तुम, हमहुँ हुतीं अपनैं जिय भोरी।
तुम ब्रजराज बड़े के ढोटा, गोरस-कारन कानि न तोरी॥
अब भए कुसल किसोर कान्ह तुम, हौं भई सजग समान किसोरी।
जात कहाँ बलि बाँह छुड़ाए मूसे मन-संपति सब मोरी॥
नख-सिख लौं चित-चोर सकल अँग, चीन्हे पर कत करत मरोरी।
इक सुनि सूर हर्‌यौ मेरौ सरवस, औ उलटी डोलति सँग डोरी॥
॥१९३१॥२५४९॥

राग गौरी

भुजा पकरि ठाढ़े हरि कीन्हे।
बाहँ मरोरि जाहुगे कैसैं, मैं तुम नीकैं चीन्हे॥
माखन-चोरी करत रहे तुम, अब भए मन के चोर।
सुनत रही मन चोरत हैं हरि, प्रगट लियौ मन मोर॥
ऐसे ढीठ भए तुम डोलत, निदरे ब्रज की नारि।
सूर स्याम मोहूँ निदरौगे, देहुँ प्रेम की गारि॥
॥१९३२॥२५५०॥

राग सारंग

यह बल केतिक जादौ राइ।
तुम जु तमकि कै मो अबला सौं, चले बाहँ छुटकाइ॥

कहियत हौ अति चतुर सकल अँग आवत बहुत उपाइ ।
तौ जानौं जौ अब एकौ छिन, सकौ हृदय तैं जाइ ॥
सूरदास स्वामी श्रीपति कौं, भावत अंतर भाइ ।
सहि न सके रति-बचन, उलटि हँसि लीन्ही कंठ लगाइ ॥
॥१९३३॥२५५१॥

राग ईमन

मैं तुम्हरे गुन जाने स्याम ।
औरनि कौ मन चोरि रहे हौ, मेरौ मन चोरयौ किहिं काम ॥
वै डरपतिं तुमकौं धौं काहैं, मोकौं जानत वैसी बाम ।
मैं तुमकौं अबहीं बाँधौगी, मोहि बूझि जैहौ तब धाम ॥
मन लैहौं पहुनाई करिहौं राखौं अटकि द्यौस अरु जाम ।
सूर स्याम यह कौन भलाई, चोर जहाँ तहँ तुम्हरौ नाम ॥
॥१९३४॥२५५२॥

राग कल्यान

ब्रज मैं ढीठ भए तुम डोलत ।
अब तौ स्याम परे फँग मेरैं सूधैं काहे न बोलत ॥
मन दीजै मरजादा जैहै, रहत चतुरई कीन्हे ।
दुख करि देहु कि सुख करि दीजै, अब तौ बनिहै दीन्हे ॥
ऐसे ढंग तुम करत कन्हाई, जीति रहे ब्रज गाउँ ।
सूर आजु बहुतै दुख पाए, मन कारन पछिताउँ ॥
॥१९३५॥२५५३॥

राग गौड मलार

सुनि री कुल की कानि, ललन सौं मैं झगरौ माँडौगी ।
मेरे इनके कोउ बीच परै जिनि, अधर दसन खाँडौगी ।
चतुर नायक सौं काम परयौ है, कैसैं कै छाँडौगी ।
सूरदास-प्रभु नँद-नंदन कौं, रस लै लै डाँडौगी ॥
॥१९३६॥२५५४॥

राग कान्हरौ

चोरी के फल तुमहिं दिखाऊँ ।
कचन-खंभ, डोर कचन की, देखौं तुमहिं बँधाऊँ ॥

खडौं एक अंग कछु तुम्हरौ, चोरी-नाउँ मिटाऊँ।
जो चाहौ सोई सब लैहौ, यह कहि डाँड़ मनाऊँ॥
बीच करन जो आवै कोऊ, ताकौं सौंह दिवाऊँ।
सूर स्याम चोरनि के राजा, बहुरि कहाँ मैं पाऊँ॥
॥ १९३७ ॥ २५५५ ॥

राग गंधारी

रही री लाज नहिं काज आजु हरि, पाए पकरन चोरी।
मूसि-मूसि लै गए मन-माखन, जो मेरैं धन हो री॥
बाँधौं कंचन-खंभ कलेवर, उभय भुजा दृढ़ डोरी।
चाँपौं कठिन कुलिस-कुच-अंतर, सकै कौन धौं छोरी॥
खंडौं अधर भूलि रस गोरस हरैं न काहू कौ री।
दंडौं काम-दंड परघर कौ नाउँ न लेइँ बहोरी॥
तव कुल कानि, आनि भई तिरछी छमि अपराध किसोरी।
सिव पर पानि धराइ सूर, उर सकुच मोचि, सिर ढोरी॥
॥ १९३८ ॥ २५५६ ॥

राग बिहागरौ

बीच कियौ कुल-लज्जा आइ।
सुनि नागरी बकसि यह मोकौं, सनमुख आए धाइ॥
चूक परी हरि तैं मैं जानी, मन लै गए चुराइ।
ठाढ़े रहे सकुचि तो आगैं, राख्यौ बदन दुराइ॥
तुम हौ बड़े महर की बेटी, काहैं गई भुलाइ।
सूर स्याम हैं चोर तिहारे, छाड़ि देहु डरपाइ॥
॥ १९३९ ॥ २५५७ ॥

राग गौरी

कुल की लाज अकाज कियौ।
तुम बिनु स्याम सुहात नहीं कछु, कहा करौं अति जरत हियौ॥
आपु गुप्त करि राखी मोकौं, मैं आयसु सिर मानि लियौ।
देह गेह-सुधि रहति बिसारे, तुम तैं हितु नहिं और बियौ॥
अब मोकौं चरननि तर राखौ, हँसि नँद-नंदन अंग छियौ।
सूर स्याम श्रीमुख की बानी, तुम पैं प्यारी बसत जियौ॥
॥ १९४० ॥ २५५८ ॥

राग गुंड मलार

बिहँसि राधा कृष्न अंक लीन्ही ।
अधर सौं अधर जुरि, नैन सौं नैन मिलि, हृदय सौं हृदय लगि, हरष कीन्ही ॥
कंठ भुज-भुज जोरि, उछँग लीन्ही नारि भुवन-दुख टारि, सुख दियौ भारी ।
हरषि बोले स्याम, कुंज-बन-घन-धाम, तहाँ हम तुम संग मिलैं प्यारी ।
जाहु गृह परम धन, हमहुँ जैहैं सदन, आइ कहुँ पास मोहि सैन दैहौ ।
सूर यह भाव दै, तुरतहीं गवन करि, कुन गृह-सदन तुम जाइ रैहौ ॥
॥ १९४८ ॥ २५६६ ॥

राग गुंड मलार

यह सुनत नागरी माथ नायौ ।
स्याम रस-बस भरे, मदन जिय डरडरे, सुंदरी बात कौ भेद पायौ ॥
खरे ब्रज जमुन बिच, दुहुँनि मन अति सकुच, और कछु बनै नहिं बुद्धि ठानी ।
तबहिं ब्रज-नारि आवत देखि, जमुन तैं, इक ब्रजहि तैं जु राधा लजानी ।
स्याम हँसि कै चले, तुरत ग्वालनि मिले, कहाँ सब रहे कहि हाँक दीन्ही ।
भाव यह करि गए, सूर-प्रभु-गुन नए, नागरी रसिक जिय जानि लीन्ही ॥ १९४९ ॥ २५६७ ॥

राग टोडी

राधा हरि के भावहिं जान्यौ ।
यहै बात कैहौं इन आगैं, मनहीं मन अनुमान्यौ ॥
उन देखी राधा मग ठाढी, स्याम पठायौ टारि ।
बूझतहीं कछु बुद्धि रचैगी, बडी चतुर यह नारि ॥
इत बृषभानु सुता मन सोचति, मोहि देखि हरि संग ।
सूर अबहिं बातनि करि धरिहैं, जानति इनके रंग ॥
॥ १९५० ॥ २५६८ ॥

राग गुंड मलार

चतुर बर नागरी बुद्धि ठानी।
अबहिं मोहिं बूझिहैं इनहिं कहिहौं कहा, स्याम सँग आजु मोहिं प्रगट जानी॥
भाव करि गए, हरि ग्वाल बूझत रहे, जानि जिय लई अति चतुर रासी॥
यह रचौं बुद्धि इक, कहा ये कहैं मोहिं, मेरैं मन सबै ये घोष-बासी॥
इतहुँ की उतहुँ की सबै, जुरि एकठी, कहतिं राधा कहाँ जाति है री।
सूर-प्रभु कौं अबहिं देखे हम तेरैं ढिग, कहाँ गए तिनहिं पछिताति है री॥१९५१॥२५६९॥

राग गूजरी

कान्ह कहा बूझत हे तुमसौं।
ह्वाँहीं तैं लखि लीन्हे तबहीं, कहा दुरावति हमकौं॥
मन लै गए चुराइ तुम्हारौ, सो अपनौ तुम पायौ।
अपनौ काज सारि तुम लीन्हौ, हम देखतहिं पठायौ॥
सदा चतुरई फबती नाहीं, अतिहीं निदरि रही हौ।
सूर स्याम धौं कहाँ रहत हैं, यह कहि-कहि जु तहीं हौ॥
॥१९५२॥२५७०॥

राग अलहिया

कहति रही तब राधिका, जब हरि-सँग पेखौ।
बेसरि लीजौ छीनि कै, मुख तन कह देखौ॥
दैहौ बेसरि की नहीं, की लेहि छँड़ाई।
चतुराई प्रगटी अबै, ऐसी हौ माई॥
बार-बार नागरि हँसी, तरुनी बैहानीं।
ऐसेहिं बेसरि लेहुगी, सब भई अयानी॥
हम मूरख, तुम चतुर हौ, कछु लाज न आवै।
सूर स्याम-सँग नहिं रही? अब कहा दुरावै॥
॥१९५३॥२५७१॥

राग सोरठ

कहै कहन मोकौं तुम आई।
इततैं ये उततैं तुम सब मिलि, काहैं ऐसैं धाई॥

वेसरि एक लेहुगी को को, पीतांबर न दिखावहु।
वेसरि अरु पीतांबर लै, तब घर-वर जाइ सुनावहु॥
तारी एक बजत कै दोऊ, इतनोइ ज्ञान विचारौ।
सुनहु सूर ये वेसरि लैहैं, जान्यौ ज्ञान तुम्हारौ॥
॥१९५४॥२५७२॥

राग जैतश्री

सुनि राधा तो सौं हम हारी।
तेरे चरित नहीं कोउ जानै, वस कीन्हे गिरिधारी॥
अवहीं कान्ह टारि करि पठए, धनि तेरी महतारी।
अंग-अंग रचि कपट-चतुरई, विधना आपु सँवारी॥
अवहीं प्रगट दुहुँनि हम देखे, जानतिं देहौ गारी।
सूर स्याम कैं यह बुधि नाहीं, जितनी है तो वाॅरी॥
॥१९५५॥२५७३॥

राग बिलावल

स्याम भले अरु तुमहुँ भली।
वेसरि छीनति हौ वेकाजहिं जाहु न घरहिं चली॥
कैसैं दौरि परीं मेरे पर, मानहुँ सग मिली।
और भई सब घन की वेली, आपुन कमल-कली॥
तौ कहतीं गहि वाहँ दुहुँनि की, जो तुम चतुर अली।
सूरदास राधा गुन आगरि, नागरि नारि छली॥
॥१९५६॥२५७४॥

राग अलहिया

अब हमसौं साँची कहौ वृपभानु-दुलारी।
कछु तौ तोसौं कहत हे, ठाढे गिरिधारी।
हा-हा हमसौं सोइ कहौ, देहौ जिनि गारी।
हमकौं देखतहीं गए, उन ग्वाल हँकारी॥
भेद करै जौ लाडिली तोहिं सौंह हमारी।
तू ठाढी काहँ रही, मग मैं री प्यारी॥
सहज होइ तू कहि अवै, उर तैं रिस टारी।
सूर स्याम की भावती, कहै कहा कहा री॥
॥१९५७॥२५७५॥

राग सूही

मैं जमुना-तन जात सही री।
ब्रज तैं आवत देखि सखिनि कौं इन कारन ह्याँ परख रही री॥
उततैं आइ गए हरि तिरछैं, मैं तुमहीं तन चितै रही री।
बूझन लगे कान्ह ग्वालनि कौं, तुम तौ देखे उनहिं नहीं री॥
कछु उनसौं बोली नहिं सन्मुख, नाहीं हाँ कछुवै न कही री।
सूर स्याम गए ग्वालनि टेरत, ना जानौं तुम कहा गही री॥
॥ १९५८ ॥ २५७६ ॥

राग टोडी

तुम मेरी बेसरि कौं धाईं।
सकुचि गईं सुनि सुनि यह बानी, तरुनी भलैं लजाईं॥
यह तौ बात लगति कछु साँची, हम पर न्याइ रिसाई।
टेरत कान्ह गए ग्वालनि कौं, स्रवन परी धुनि आई॥
बेसरि नाउँ लेत सरमानीं, तब राधा झहरानी।
सूरदास ब्रज-नारि मनहिं मन यह गुनि गुनि पछितानी॥
॥ १९५९ ॥ २५७७ ॥

राग गूजरी

राधा तू अतिहीं है भोरी।
झूठहिं लोग उड़ावत घर-घर, हम जान्यौ अब तौ री॥
कंठ लगाइ लई रिस छाँड़ौ, चूक परी हम-ओरी।
तुम निर्मल गंगा-जलहू तैं, दुरति नहीं वह चोरी॥
घर जैहौ कै जमुना जैहौ, हम आवैं सँग गोरी?
सूरदास-प्रभु प्यारी राधा, चतुर दिननि की थोरी॥
॥ १९६० ॥ २५७८ ॥

राग आसावरी

अहो सखी तुम ऐसी हौ।
अब लौं तुम कुलटी करि जानति, मोकौं री सब नैसी हौ॥
अपनैं हौ जैसी-तैसी सब, मोहूँ जानतिं तैसी हौ।
तोरी भली बनैगी हरि सौं, छाँह निहारौ कैसी हौ॥

अब लागीं मोकौं दुलरावन, प्रेम करत ढरियै सी हौ।
सुनहु सूर तुम्हरैं छिन-छिन मति, बड़ी पेट की गैसी हौ॥
॥ १९६१ ॥ २५७९ ॥

राग टोडी

हँसति नारि सब घरहिं चलीं।
हम जानी राधा है खोटी, हम खोटी राधिका भली॥
इततैं जुवति जाति जमुना जे, तिनकौं मग मैं परखि रही।
स्याम कहूँ तैं आइ कढ़े ह्याँ, चले गए उत हेरत हीं॥
इतनी तबहिं नहीं हम जानी, झूठैं ही सब आनि गही।
सूर स्याम अपनैं रँग आए, हम वाकौं नहिं भली कही॥
॥ १९६२ ॥ २५८० ॥

राग बिलावल

राधा स्याम-सनेहिनी, हरि राधा नेही।
राधा हरि कैं तन बसै, हरि राधा देही॥
राधा हरि कै नैन मैं, हरि राधा-नैननि।
कुंज-भवन रति जुद्ध कौं, जोरत बल मैननि॥
और न काहू कौं रुचै, घर-घर गए दोऊ।
मातु-पिता सनिभाइ सौं, यह जानै न कोऊ॥
कैसैहुँ करि-करि दिन गयौ, निसि बटत न क्यौंहूँ।
दोउ रस-बिरह मगन भए, निसि भई अगौहूँ॥
बिरह सरोवर बूड़ई अँधकार सिवारा।
सुधि अवलंबन टेकहीं, कहुँ वार न पारा॥
तमचुर टेरि पुकारई, बूड़ै जनि कोऊ।
सूर प्रात नौका मिली आनँद मन दोऊ॥
॥ १९६३ ॥ २५८१ ॥

राग धनाश्री

मन-मृग बेध्यौ नैन-बान सौं।
गूढ़ भाव की सैन अचानक, तकि ताक्यौ भृकुटी कमान सौं॥
प्रथम नाद कल घेरि निकट लै, मुरली सप्तक सुर बँधान सौं।
पाछैं बंक चितै, मधुरैं हँसि घात कियौ उलटे सुठान सौं॥

सूर सु मार बिथा या तन की, घटति नहीं औषधी आन सौं।
ह्वै है सुख तबहीं उर-अंतर, आलिंगन गिरिधर सुजान सौं॥
॥१९६४॥२५८२॥

राग बिलावल

कान्ह उठे अति प्रातहीं, तलबेली लागी।
प्रिया प्रेम कैं रस भरे, रति अंतर खागी॥
स्याम उठत अवलोकि कै, जननी तब जागी।
सुंदर बदन बिलोकि कै, अँग-अँग अनुरागी॥
माता पूछति सुअन कौं, बलि गई मेरे बारे।
कहा आजु अचरज कियौ, तुम उठे सबारे॥
उत्तम जल लै प्रेम सौं, सुत-बदन पखार्‌यौ।
झारी जल, दँतुवनि दियौ, छबि पर तनु वार्‌यौ॥
करी मुखारी अतुरई, नागरि-रस छाके।
सूर स्याम ऐसी दसा, त्रिभुवन बस जाकैं॥
॥१९६५॥२५८३॥

राग बिलावल

उत वृषभानु-सुता उठी, वह भाव बिचारे।
रैनि बिहानी कठिन सौं, मनमथ बल भारे॥
ग्रीव मुतिसरी तोरि कै, अँचरा सौं बाँध्यौ।
यहै बहानौ करि लियौ, हरि-मन अनुराध्यौ॥
जननि उठी अकुलाइ कै, क्यौं राधा जागी।
कहा चली उठि भोरहीं, सोवे न सभागी॥
अब जननी सोऊँ नहीं, रवि किरनि प्रकासी।
तुहुँ उठति काहैं नहीं, जागे ब्रज वासी॥
आपु उठी आँगन गई, फिरि घरहीं आई।
कब धौं मिलिहौं स्याम कौं, पल रह्यो न जाई॥
फिरि फिरि अजिरहिं भवनहीं, तलवेली लागी।
सूर स्याम कैं रस भरी, राधा अनुरागी॥
॥१९६६॥२५८४॥

राग गुंड मलार

सुता सौं कहति वृषभानु-घरनी ।
कहाँ तू राधिका भोर तैं फिरति है, तेरी गति मोपै नहिं जाति बरनी ॥
तोरि मोतीसरी गुप्त करि धरी कहुँ, याहि मिस सकुचि रही मुख न बोलै ।
मनहुँ खंजन चपल चद-फदा पर्‌यौ, उडत नहिं बनत इत उतहिं डोलै ।
कहा तेरी प्रकृति परी धौं लाडिली, अबहिं तैं कहाँ तू जाइगी री ।
सूर कहै जननि बोलै नहीं आज तू, परुसि धरिहैं आइ खाइगी री ॥
॥१९६७॥२५८५॥

राग नट

जननी पुनि पुनि ग्रीव निहारै ।
देखौं नहीं मुतिसरी-माला, सो जनि कतहूँ डारै ॥
बोलै नहीं बात यह सुनि रही, मन लागी मुसुकान ।
अबहीं मोकौं खीझि पठैहै बनिहै ह्वाँ कौ जान ॥
भली बुद्धि मेरैं चित आई, कृष्न-प्रीति है साँची ।
सूरदास राधिका नागरी, नागर कैं रँग राँची ॥
॥ ९६८॥२५८६॥

राग सोरठ

जननी अतिहिं भई रिसहाई ।
बार-बार कहै कुँवरि राधिका, मोतिसरि कहाँ गँवाई ॥
बूझे तैं ताहि ज्वाब न आवै, कहा रही अरगाई ।
चौसर हार अमोल गरे कौ, देहु न मेरी माई ॥
कालिहिं तैं रीतौ गर तेरौ, डारि कहूँ तू आई ।
सुनहु सूर माता रिस देखत, राधा हँसति डराई ॥
॥१६६९॥२५८७॥

राग बिलावल

सुनी री मैया कालिहहीं, मोतिसरी गँवाई ।
सखिनि मिलै जमुना गई, धौं उनहि चुराई ॥

कीधौँ जलही मैँ गई, यह सुधि नहिँ मेरैँ।
तब तैँ मैँ पछिताति हौँ, कहति न डर तेरैँ॥
पलक नहीँ निसि कहुँ लगी, मोहिँ सपथ तिहारी।
इहि डर तैँ मैँ आजुहीँ, अति उठी सवारी॥
महरि सुनत चकित भई, मुख ज्वाब न आवै।
सूर राधिका गुन भरी, कोउ पार न पावै॥
॥ १९७० ॥ २५८८ ॥

राग गुंड मलार

क्रोध करि सुता सौँ कहति माता।
तोहिँ बरजति मरी, अचगरी सिर परी, गर्ब गंजन नाम है बिधाता॥
तोहिँ कछु दोप नहिँ, भ्रमति तू जहाँ तहँ नदी, डोँगर, बनहिँ पात पाता।
मातु पितु लोक की कानि मानै नहीँ, निलज भई रहति नहिँ लाज गाता।
भली नहिं उन करी, सीस तोकौँ धरी, जगत मैँ सुता तू महर ताता।
बात सुनिहै स्रवन, भई बिनही भवन, सूर डारै मारि आजु भ्राता॥
॥ १६७१ ॥ २५८६ ॥

राग धनाश्री

जाहु तहीँ मोतिसरी गँवाई।
तबहीँ तौ घर पैठन पैहौ, अब ऐसैँ ढंग आई॥
जो बरजौँ आपुन सोई करै, देखौ री गुन माई।
इक इक नग सत सत दामनि कौ, लाख टका दै ल्याई॥
जाकैँ हाथ पर्‍यौ सो भागी, घर बैठे निधि पाई।
सूर सुनति री कुँवरि राधिका, तोकौँ नहीँ भलाई॥
॥ १६७२ ॥ २५९० ॥

राग टोड़ी

भरि-भरि नैन लेति है माता। मुख तैँ कछु आवै नहिँ बाता॥
रीती ग्रीव निहारति जबहीँ। हियौ उमँगि आवत है तबहीँ॥

मुतिसरि तैं मुख परम बिराजै। मानौ ससि पारस बिच भ्राजै॥
मुतिसरि-माला कहाँ गँवाई। जीव बिना करिहै वह भाई॥
जा धौं देखि कहूँ जो पावै। सूर जोरि कर बिधिहिँ मनावै॥
॥ १९७३ ॥ २५९१ ॥

राग गुड मलार

कहा वह मोतिसरि, जो गँवाई री।
बबा सौं और लैहौं मँगाई री॥
वै कहा करेगी, सैंति राखे री।
ता दिन तुहीं धौं, कितिक भाखे री॥
नैन भरि लेति, कह, और नाहीँ री।
छार मोतिसरि कौ मोहिँ रिसाही री॥
संदूखनि भरि धरे, सो न खोलै री।
कहा मोसौं खीझि खीझि बोलै री॥
सुता वृषभानु की हरष मनहीँ री।
सूर-प्रभु सैन दै बोले बनहीं री॥
॥ १९७४ ॥ २५९२ ॥

राग गौरी

सुनि राधा अब तोहिँ न पत्यैहौं।
और हार चौकी हमेल अब, तेरैं कंठ न नैहौं॥
लाख टका की हानि करी तैं, सो जब तोसौं लैहौं।
हरि बिना ल्याएँ लडबौरी, घर नहिँ पैठन दैहौं॥
जब देखौंगी वहै मोतिसरि, तबहीँ तौ सचु पैहौं।
नातरु सूर जन्म भरि तेरौ, नाउँ नहीँ मुख लैहौं॥
॥ १९७५ ॥ २५९३ ॥

राग कल्यान

सुनि री राधा अति लड़बौरी, जमुन गई जब संग कौन ही।
बूझति नहीँ जाइ अपननि कौं, न्हाति रही जब जौन जौन ही॥
काकौ नाउँ धरौं तो आगैं, ललिता चंद्रावली हैं नहीँ।
बहुत रहीँ सँग सखी सहेली, कहौं काहि मैं मैन मैन ही॥

देखौं जाइ जमुन-तट ही मैं, जहँ धरिकै मैं न्हाति रही ही।
सूर जाइ बूझौं धौं वाकौं, ब्रज-जुवती इक देखि रही ही ॥
॥१९७६॥२५९४।

राग कल्यान

जैहै कहाँ मोतिसरि मोरी।
अब सुधि भई लई वाही नैं, हँसति चली वृषभानु-किसोरी ॥
अबहीं मैं लीन्हे आवति हौं, मेरैं सँग आवै जनि को री।
देखौ धौं कह करिहौं वाकौ, बड़े लोग सीखन हैं चोरी ॥
मोकौं आजु अबेर लागि है, ढूढ़ौंगी घर-घर ब्रज-खोरी।
सूर चली निधरक ह्वै सब सौं, चतुर राधिका वातनि भोरी ॥
॥१९७७॥२५९५॥

राग कल्यान

नंद-नँदन बार-बार रवनि-पथ जोहै री।
लोचन हरि करि चकोर, राधा-मुख चंद-ओर, देखत नहिं तिमिर भोर, मनही मन मोहै री ॥
नैना दोउ भृंग रूप, वदन कमल-सरदऽनूप, तरनि कौ प्रकास मिलन बिना चपल डोलै री।
लोचन मृग सुभग जोर राग रूप भए भोर, भौंह-धनुष सर-कटाच्छ, सुरति-च्याध तोलै री।
कीधौं ये चच्छु चारु, प्यारी-मुख रूप सारु, स्याम देखि रीझे, मन यहै साँच मानी री।
सूर स्याम सुखः धाम, राधा है जाहि नाम, आतुर पिय जानि गवन प्यारी अतुरानी री ॥१९७८॥२५९६॥

राग देवगंधार

स्याम अति राधा-विरह भरे।
कबहुँ-सदन, कबहूँ अँगनाई, कबहूँ पौरि खरे ॥
जननी आतुर करति रसोई, देखि-देखि हरि जात।
कहा अबेर करति तू अब री, भूख लगी अति मात ॥
मैं बलि जाउँ स्याम-घन-सुंदर, अब बैठौ तुम आइ।
सूर सखा सँग सबै बुलावहु, हलधर नहीं बत्याइ ॥
॥१९७९॥२५९७॥

राग बिलावल

महरि कह्यौ नँद-लाड़िले, सँग सखा बुलावहु।
करैं कलेऊ आइकै, हलधरहुँ चलावहु॥
हलधर लयौ बुलाइ कै, मोहन करि आदर।
दाऊ जू चलि जैंइयै, यह कहि मन सादर॥
कान्ह जाइ तुम जैंवहू, मोकौं रुचि नाहीं।
सखा संग हरि लै गए, बैठे इकटाहीं॥
पटरस ब्यंजन को गनै, बहु भाँति रसोई।
सरस कनिक बेसन मिलै, रुचि, रोटी पोई॥
प्रेम सहित परुसन लगी, हलधर की माता।
ग्वाल सखा सब जोरि कै, बैठे नँद-ताता॥
सखा सबै जैंवन लगे, हरि आयसु दीन्हो।
सूरदास-प्रभु आपहूँ कर कौर जु लीन्हो॥
॥१९८०॥२५९८॥

राग आसावरी

नंद-महर घर के पिछवारैं, राधा आइ बतानी।
मनौ अंब-दल-मौर देखि कै, कुहुकी कोकिल बानी॥
झूठेहिं नाम लेति ललिता कौ, काहें जाहु परानी।
बृंदावन-मग जाति अकेली, सिर लै दही मथानी॥
मैं बैठी परखति ह्याँ रैहौं, स्याम तबहिं तिहिं जानी।
कोक कला-गुन आगरि नागरि, सूर चतुरई ठानी॥
॥१९८१॥२५९९॥

राग रामकली

स्याम सखा जेंवत हो छाँडे।
कर कौ कौर डारि पनवारैं, आपु चले अति चाँडे॥
चकित भईं देखत जननी दोउ, चकित भए सब ग्वाल।
अति आतुर तुम चले कहाँ हो, हमहिं कहौ गोपाल॥
अबहीं एक सखा यह कहि गयौ, गाइ रहीं बन ब्याइ।
सुनहु सूर मैं जेंवन बैठ्यौ वह सुधि गई भुलाइ॥
॥१९८२॥२६००॥

राग ललित

धौरी मेरी गाइ बियानी ।
सखनि कह्यौ तुम जँवहु बैठे, स्याम चतुरई ठानी ॥
गाइ नहीं ह्याँ बछरा नाहीं, ह्वैहै राधा रानी ।
सखा हँसत मनहीं मन कहि-कहि, ऐसे गुननि निधानी ॥
जननी भेद नहीं कछु जानै, बार-बार अकुलानी ।
सूर स्याम भूखौ उठि धायौ, मरै न गाइ बियानी ॥
॥ १९८३ ॥ २६०१ ॥

राग कल्यान

सैन दै नागरी गई बन कौं ।
तबहिं कर-कौर दियौ डारि, नहिं रहि सके, ग्वाल जेंवत तजे, मोह्यौ उनकौं ॥
चले अकुलाइ बन धाइ, ब्याई गाइ देखिहौं जाइ, मन हरष कीन्हौ ।
प्रिया निरखति पंथ, मिलैं कब हरि कंत, गए इहिं अंत हँसि अंक लीन्हौ ।
अतिहिं सुख पाइ अतुराइ मिले धाइ दोउ, मनौ अति रंक नव-निधिहिं पाई ।
सूर प्रभु की प्रिया राधिका अति नवल, नवल नँद-लाल के मनहिं भाई ॥ १९८४ ॥ २६०२ ॥

राग धनाश्री

पिछवारैं ह्वै बोलि सुनायौ ।
कमल-नयन हरि करत कलेऊ, कर नाहिंत आनन लौं आयौ ॥
गाइ एक बन ब्याइ रही है, याहीं मिस आतुर उठि धायौ ।
बेनु न लियौ, लकुट नहिं लीन्ही, हरबराइ कोउ सखा न बुलायौ ॥
चौंकि परे चकित ह्वै जित-तित, सत्य आहि की सुपन भुलायौ ।
फूरे फिरत अंक नहिं मावत, मानहुँ सुधा-किरनि छबि छायौ ॥
मिलि बैठे संकेत-लता-तर, कियौ सबै जितनौ मन भायौ ।
सूरदास सुंदरी सयानी, उलटि अंक गिरिधर पर नायौ ॥
॥ १९८५ ॥ २६०३ ॥

राग देव गंधार

दोऊ राजत रति रन-धीर।
महा सुभट प्रगटे भूतल वृषभानु सुता बल-बीर॥
भौंहैं धनुष चढ़ाइ परस्पर, सजे कवच तनु चीर।
गुन-संधान निमेष घटत नहिं छुटे कटाच्छनि तीर॥
नख नेजा-आकुन उर लागैं नैंकु न मानत पीर।
मुरली धरनि डारि आयुध लैं, गहे सुभुन भट भीर॥
प्रेम समुद्र छाँडि मरजादा, उमँगि मिले तजि तीर।
करत बिहार दुहूँ दिसि तैं मनु सींचत सुधा सरीर॥
अति बल जोबनधाइ रुचिर रचि चंदन मिलि स्रम नीर।
सूरदास-स्वामी अरु प्यारी, बिहरत कुंज कुटीर॥
॥ १९८६ ॥ २६०४ ॥

राग कान्हरो

नवल निकुंज नवल नवला मिलि, नवल निकेतन, रुचिर बनाए।
बिलसत बिपिन बिलास बिबिध बर, वारिज-बदन बिकच सचु पाए॥
लागत चंद्र मयूख सु तिय तनु, लता-भवन रंध्रनि मग आए।
मनहुँ मदन-बल्ली पर हिमकर, सींचत सुधा धार सत नाए॥
सुनि सुनि सुचित स्रवन जिय सुंदरि, मौन किये मोदति मन-लाए।
सूर सखी राधा माधव मिलि क्रीडत रति रति पतिहिं लजाए॥
॥ १९८७ ॥ २६०५ ॥

राग कल्यान

हरषि पिय प्रेम तिय अंक लीन्ही।
प्रिया बिनु बसन करि, उलटि धरि भुजनि भरि, सुरति रति पूरि, अति निबल कीन्ही
आपनैं कर नखनि अलक कुरवारहीं, कबहुँ बाँधैं अतिहिं लगत सोभा।
कबहुँ मुख मोरि चुंबन देत हरष ह्वै, अधर भरि दसन बह उनहिं सोभा॥
बहुरि उपज्यो काम, राधिका पति स्याम, मगन रस-ताम नहिं तनु सम्हारैं।
सूर प्रभु नवल-नवला, नवल कुंज गृह, अंत नहिं लहत दोउ रति बिहारैं॥ १९८८ ॥ २६०६ ॥

राग नट

नागर स्याम नागरि नारि।
सुरत रति-रन जीति दोऊ, अंग मनमथ धारि॥
स्याम-तनु धन नील मानौ, तड़ित तनु सुकुमारि।
मनौ मरकत कनक संजुत, सच्यौ काम सँवारि॥
कोक-गुन करि कुसल स्यामा, उत कुसल नँद-लाल।
सूर स्याम अनंग नायक, त्रिबस कीन्ही बाल॥
॥१९८९॥२६०७॥

राग मलार

(उलहरि आयौ) सीतल बूँद पवन पुरवाई।
जहाँ तहाँ तैं उमड़ि घुमड़ि घन, कारी घटा चहूँ दिसि धाई॥
भींजत देखी राधा माधव, लै कारी कामरी उढ़ाई।
अति जल भींजि चीरवर टपकत और सबै टपकत अँबराई॥
काँपत तन तिय कौ, पिय हँसि कै, भुज भरि अपनैं कंठ लगाई।
ह्वै इकठौर सूर-प्रभु, प्यारी, रहे उपरना बीच समाई॥
॥१९९०॥२६०८॥

राग मलार

दीजै कान्ह काँधे कौ कंबर।
नान्ही नान्ही बूँदनि बरषन लाग्यौ, भीजत कुसुँभी अंबर॥
बार-बार अकुलाइ राधिका, देखि, मेघ आडंबर।
हँसि-हँसि रीझि बैठि रहे दोऊ, ओढ़ि सुभग पीतंबर॥
सिव सनकादिक नारद सारद, अत न पावैं सुंबर।
सूर स्याम-गति लखि न परति कछु, खात ग्वाल सँग संबर॥
।१९९१॥२६०९॥

राग मलार

भींजत कुंजनि मैं दोउ आवत।
ज्यौं ज्यौं बूँद परतिं चूनरि पर, त्यौं त्यौं हरि उर लावत।
तैसें मोर कोकिला बोलत पवन बीजु घन धावत।
लै मुरली कर मंद घोर सुर, राग मलार बजावत॥

अधिक झकोर जबै मेघनि की, द्रुम तिरछनि बिरमावत।
वै हँसि ओट करत पीतांबर, ये चूनरी उढ़ावत॥
भींजे राग रागिनी दोऊ, भींजें जल छबि पावत।
सूरदास प्रभु रीझि परस्पर, प्रीति अधिक उपजावत॥
॥१९९२॥२६१०

राग बिभा

स्यामा स्याम सौं अति रति कीनी।
स्रम-जल बुंद वदन यौं राजति, मनु ससि पर मोतिनि लर दीनी॥
मुक्ता-माल टूटि यौं लागनि, जनु सुरसरी अधोगति लीनी।
सूरदास मनहरन रसिक वर, राधा संग सुरति-रस भीनी॥
॥१९९३ २६११

राग गौ

सुरति अंत बैठे बनवारी।
प्यारी-नैन जुरत नहि सन्मुख, सकुचि हँसत गिरिधारी॥
बसन सम्हारन लगे दोऊ तन, आनँद उर न समाइ।
चितवत दुरि-दुरि नैन लजौहँ, सो छबि बरनि न जाइ॥
नागरि अंग मरगजी सारी, कान्ह मरगजे अंग
सूरज-प्रभु प्यारी बस कीन्ही, हाव-भाव रति रंग॥
॥१९९४॥२६१२

राग मोर

रीझे स्याम नागरी-छबि पर।
प्यारी एक अंग पर अँटकी, यह गति भई परस्पर॥
देह दसा की सुधि नहिँ काहूँ नैन नैन मिलि अँटके।
इंदीवर राजीव कमल पर, जुग खंजन जनु लटके॥
चकित भए तनु की सुधि आई, बनहीं मैं भई राति।
सूर स्याम स्यामा बिहार कियौ, सो छबि की इक भाँति॥
॥१९९५॥२६१३

राग आसावर

कान्ह कह्यौ बन रैनि न कीजै, सुनहु राधिका प्यारी।
अति हित सौं उर लाइ कह्यौ, अब भवन आपनैं जारी॥

मातु-पिता जिय जानै न कोऊ, गुप्त-प्रीति-रस भारी।
कर तैं कौर डारि मैं आयौ, देखत दोउ महतारी॥
तुम जैसी मोहिं प्यारी लागति, चंद चकोर कहा री।
सूरदास स्वामी इन बातनि, नागरि रिझई भारी॥
॥ १९९६ ॥ २६१४ ॥

राग कल्यान

प्यारी उठि पिय कैं उर लागी।
आलस-अंग, लटकि लट छूटी, देखि स्याम बड़ भागी॥
सुरति मौन निसि बीती मानौ, हँसनि प्रात भयौ जागी।
अति-सुख कंठ लगाइ लई हरि, अरस-परस अनुरागी॥
नूतन मेघ, नबेली दामिनि, सहज मेटि मिलि पागी।
सूरदास-प्रभु कौं अंकम भरि, काम-द्वंद्व तनु त्यागी॥
॥ १९९७ ॥ २६१५ ॥

राग गौरी

कहा करौं पग चलत न घर कौं।
नैन बिमुख-जन देखे जात न, लुबधे अरुन अधर कौं॥
स्रवन कहत वै वचन सुनैं नहिं, रिस पावत मोपर कौं।
मन अँटक्यौ रस मधुर हँसनि पर, डरत न काहू डर कौं॥
इंद्री अंग अंग अरुझानी, स्याम रंग नटवर कौं।
सुनहु सूर प्रभु रही अकेली, कहा कहौं सुंदर वर कौं॥
॥ १९९८ ॥ २६१६ ॥

राग गौरी

स्याम अपनी चितवनि बरजौ, अरु मुख की मुसुकानि।
तुम्हरे तनक सहज कैं कारन, सहियत सर्वस हानि॥
इजै बिजै दोऊ आपस मैं निरए विधना आनि।
विद्यमान सबहीं इनि देखत, बस करिवे की बानि॥
आपुनही डहकाइ अपुनपौ, कहियत कहा बखानि।
सूरज सुगथ गँवाइ गाँठि कौ, रही बौरई मानि॥
॥ १९९९ ॥ २६१७॥

नैननि निरखि वसीठी कीन्ही, मन मिलयौ पल पानि ।
गहि रतिनाथ लाज निज पुर तैं, हरि कौं सौंपी आनि ॥
सुनि सिख करति नंद-नंदन की दासी सब जग जानि ।
जोइ जोइ कहत, करति सोई सोइ आयसु माथैं मानि ॥
गई जाति, अभिमान, मोह, मद पति-परिजन-पहिचानि ।
सूर सिंधु सरिता मिलि जैसैं, मनसा-बूँद हिरानि ॥

॥ २००० ॥ २६१८ ॥

राग बिहागरौ

अति हित स्याम बोले बैन ।
तुव बदन देखे बिना ये, तृप्त होत न नैन ॥
पलक नहि चित तैं टरति तुम, प्रान वल्लभ नारि ।
सुनत स्रवननि वचन अंमृत, हरप अंतर भारि ॥
मातु पितु अवसेरि करिहैं, गवन कीजै गेह ।
सूर प्रभु प्रिय त्रिया आगैं, प्रगट्यौ पूरन नेह ॥

॥ २००१ ॥ २६१९ ॥

राग बिहागरौ

स्याम प्रगट कीन्हौ अनुराग ।
अति आनंद मनहिं मन नागरि वदति आपने भाग ॥
सुंदर घन उत ब्रजहिं सिधारे, इतहिं गमन कियौ नारि ।
दंपति नैन रहे दोउ भरि-भरि, गए सुरति रति सारि ॥
जननी मन अवसेर करति ही, हरि पहुँचे तिहिं काल ।
सूर स्याम कौं मातु अंक भरि, कहति जाउँ बलि लाल ॥

॥ २००२ ॥ २६२० ॥

राग ईमन

मैं बलि जाउँ कन्हैया की ।
करतैं कौर डारि उठि धायौ, बात सुनी बन गैया की ॥
धौरी गाइ आपनी जानी, उपजी प्रीति लवैया की ।
तातैं जल समोइ पग धोवति, स्याम देखि हित मैया की ॥

जो अनुराग जसोदा कैं उर, मुख की कहनि नन्हैया की।
यह सुख सूर और कहुँ नाहीं, सौंह करत वल भैया की॥
॥२००३॥२६२१॥

राग ईमन

(कान्ह प्यारे) वारी स्याम सुँदर मूरति पर।
छवि सौं लट लटकी मुख ऊपर, राजत मुरली सुभग धरे कर॥
सुंदर नैन विसाल भौंह घन, तिलक बिराजत ललित भाल पर।
सूरज स्याम वन्यौ अति वानक, वनमाला उर, कटि पीतांवर॥
॥२००४॥२६२२॥

राग बिहागरौ

वह तौ मेरी गाइ न होइ।
सुनि मैया मैं बिरथा भरम्यौ, वन देख्यौ, नैननि भरि जोइ॥
वृंदावन ढूँढ़्यौ, जमुना-तट, देख्यौ, वन, डौंगरनि मँझारि।
सखा संग कोउ नहीं अकेलौ, काँध कमरि, कर लकुटी धारि॥
वह तौ धेनु और काहू की, जुवती एक मिली धौं कौन।
सूर संग मेरैं वह आई, मोकौं इहिं पहुँचायौ भौन॥
॥२००५॥२६२३॥

राग रामकली

राधा अतिहिं चतुर प्रवीन।
कृष्न कौं सुख दै चली हँसि, हंस-गति कटि छीन॥
हार कैं मिस इहाँ आई, स्याम-मनि कैं काज।
भयौ सब पूरन मनोरथ, मिले श्रीब्रजराज॥
गाँठि-आँचर छोरि कै, मोतिसरी लीन्ही हाथ।
सखी आवति देखि राधा, लई ताकौं साथ॥
जुवति बूझति कहाँ नागरि, निसि गई इक जाम।
सूर ब्यौरो कहि सुनायौ, मैं गई तिहिं काम॥
॥२००६॥२६२४॥

राग कान्हरौ

ऐसी री निधरक तू राधा।
ब्रज-घर-घर-वन वन डोली तू, नहीं कियौ कहुँ वाधा॥

मोकौं संग बोलि तू लेती, करनी करी अगाधा।
प्रातहिं तैं तू अब आवति है रैनि जाम लगि आधा॥
पायौ हार किधौं पुनि नाहीं, देखौं री मोहिं साधा।
आँचर हेरि, ग्रीव दिखरायौ, दामनि मोल उपाधा॥
मन-मन कहति बात यह मिलवति, गई स्याम-अवराधा।
सूर सखी लखि लीन्ही ताकौं, यह तौ है कछु बाधा॥

॥२००७॥२६२५॥

राग धनाश्री

कहि राधा किन हार चुरायौ।
ब्रज-जुवतिनि सबहिन मैं जानति, लै लै नाम बतायौ॥
स्यामा, कामा, चतुरा, नवला, प्रमदा, सुमदा नारि।
सुखमा, सीला, अवधा, नंदा, वृंदा, जमुना सारि॥
कमला, तारा, बिमला, चंदा, चंद्रावलि सुकुमारि।
अमला, अबला, कंजा, मुकुता, हीरा, नीला प्यारि॥
सुमना, बहुला, चंपा' जुहिला, ज्ञाना, भाना भाउ।
प्रेमा, दामा, रूपा, हंसा, रंगा, हरषा जाउ॥
दुर्वा, रंभा, कृष्ना, ध्याना, मैना, नैना रूप।
रत्ना, कुसुमा, मोहा, करुना, ललना, लोभाऽनूप॥
इतननि मैं कहि कौनैं लीन्हौ, ताको नाउँ बताउ।
सूर स्याम हैं चोर तिहारे, मैं जानति सब दाउ॥

॥२००८॥२६२६॥

राग सकराभरन

सुरति मानि आई पिय पै तैं, तैं री गज गति गामिनी।
मरगजे हार बार बिथुरे हैं गई जान इक गामिनी।
औरहि सोभा अंग-अंग की, बोलति है अलसायिनी।
सूरदास प्रभु छबि निरखति रही, रसबत है, धनि भामिनी॥

॥२००९॥२६२७॥

राग कान्हरौ

लटैं उघरारी रहीं छूटि छूटि आनन पै, भाँजी हैं फुलेलनि सौं आली हरि संग केलि।
सौं वै अरगजा अरु मरगजी सारी अग, कहूँ दरकी कुचनि पर अँगिया नवेलि॥

नैन अरसात अरु बैनहू अटपटात, जाति ऐँड़ाति गात गोरि
बहियानि भेलि ॥
सूर-प्रभु-प्यारी प्यारे संग करि रंग-रास, अरस परस दोऊ
अंकम धर्यौ है मेलि ॥२०१०॥२६२८।

राग ललित

डगमगात ऐँड़ात जँभावत आई रंगमगी रँग भरि कै।
चंद उदौ मुख पेखि री दर्पन, पीक लीक नैननि छवि परि कै ॥
बिथुरी अलक सुथरे आनन पर, अति आनंद भरी उर हरि कै।
सूरज रसिकराइ रस-बस किये नवला नवल रीझे मन ढरि कै ॥
॥२०११॥२६२९॥

राग बिलावल

सुनि री राधा अबहिँ नई।
बातैँ कहा बनावति मोसौँ, हमहूँ तैँ तू चतुर भई ॥
कहाँ ग्वालि, कहँ हार तुम्हारौ, कहाँ कहाँ तू आजु गई।
मनहीँ जानि लेहि मैँ जान्यौ, जाकैँ रँग तू सदा रई ॥
तेरे गुन परगट करिहौँ मैँ, ऐसी री कबहूँ न भई।
सूर स्याम-सँग जब तैँ कीन्ही, तब ही तैँ मैँ जानि लई ॥
२०१२॥२६३०॥

राग बिलावल

इन बातनि कछु पावति री।
बिनु देखैँ लोगनि सौँ सुनि-सुनि, काहैँ बैर बढ़ावति री ॥
मोकौँ जहाँ अकेली देखति, तबहिँ घात उपजावति री।
ब्रज-जुवतिनि की संगति त्यागौँ, पुनि-पुनि क्रोध करावति री ॥
कैसी बुद्धि तुम्हारी सबको, ऐसी तुमकौँ भावति री।
सूर सीस तृन दै बूझति हौँ, कहति तुमहु कहनावति री ?
॥२०१३॥२६३१॥

राग गुंड मलार

करति अवसेर वृषभानु-नारी।
प्रात तैं गई, बासर गयौ बीति सब, जाम निसि गई, धौँ कहाँ
बारी ॥

हार कैं त्रास मैं कुँवरि त्रासी बहुत, तिहिं डरनि अजहुँ नहि सदन आई।
कहाँ मैं जाउँ, कह धौं रही रूसि कै, सखिनि सौं कहति कहुँ मिलि माई।
हार बहि जाइ, अति गई अकुलाइ कै, सुता कैं नाउँ इक वहै मेरैं।
सूर यह बात जौ सुनैं अबहीं महर, कहैंगे मोहिं ये ढंग तेरे॥
॥२०१४॥२६३२॥

राग सोरठ

राधा डर डराति घर आई।
देखत हीं कीरति महतारी, हरषि कुवरि उर लाई॥
धीरज भयौ सुता-माता जिय, दूरि गयौ तनु-सोच।
मेरी कौं मैं काहैं त्रासी, कहा कियौ यह पोच॥
लै री मैया हार मोतिसरी, जा कारन मोहिं त्रासी।
सूर राधिका के गुन ऐसे, मिलि आई अबिनासी॥
॥२०१५॥२६३३॥

राग बिहागरौ

परम चतुर बृषभानु-दुलारी।
यह मति रची कृष्न मिलिबे की, परम पुनीत महा री॥
उत सुख दियौ नंद-नंदन कौं, इतहिं हरष महतारी।
हार इतौ उपकार करायौ, कबहुँ न उर तैं टारी॥
जे सिव-सनक-सनातन दुर्लभ, ते बस किये कुमारी।
सूरदास-प्रभु-कृपा अगोचर, निगमनि हू तैं न्यारी॥
॥२०१६॥२६३४॥

राग मारू

निगम तैं अगम हरि कृपा न्यारी।
प्रीति बस स्याम है राव कै रंक कोउ, पुरुष कै नारि नहिं भेद कारी॥
प्रीति-बस देवकी-गर्भ लीन्हौ बास, प्रीति कैं हेत ब्रज बेष कीन्हौ।
प्रीति कैं हेतु जसुमति-पय पान कियौ, प्रीति कैं हेतु अवतार लीन्हौ॥

प्रीति कैं हेतु वन धेनु चारत कान्ह, प्रीति कैं हेतु नँद-सुवन नामा।
प्रीति कैं हेतु सूरज-प्रभुहिं पाइयै, प्रीति कैं हेतु दोउ स्याम स्यामा॥
॥ २०१७ ॥ २६३५ ॥

राग मारू

प्रीति के बस्य ये हैं मुरारी।
प्रीति के बस्य नटवर सुभेषहिं धर्यौ, प्रीति बस करज गिरिराज धारी॥
प्रीति के बस्य ब्रज भए माखन चोर, प्रीति के बस्य दाँवरि बँधाई।
प्रीति के बस्य गोपी-रमन नाम प्रिय, प्रीति-बस जमल तरु मोच्छदाई॥
प्रीति बस नंद-बंधन बरुन-गृह गए, प्रीति के बस्य बन-धाम कामी।
प्रीति के बस्य प्रभु सूर त्रिभुवन बिदित, प्रीति-बस सदा राधिका-स्वामी॥ २०१८ ॥ २६३६ ॥

राग भैरव

स्याम भए बस नागरि कैं।
नैन कटाच्छ बंक अवलोकनि, रीझे घोष उजागरि कैं॥
चित मधुकर, रस कमल कोस कौ, प्यारी बदन सुधागरि कौं।
लोक-लाज-संपुट नहिं छूटत, फिरि-फिरि आवत बागरि कौं॥
मिलन प्रकास मनावत मन-मन, कहा कहौं अनुरागरि कौं।
सूर स्याम बस-बाम भए हैं, धन ऐसी बड़भागरि कौं॥
॥ २०१९ ॥ २६३७ ॥

राग आसावरी

स्याम भए वृषभानु-सुता-बस, और नहीं कछु भावै (हो)।
जो प्रभु तिहूँ भुवन कौ नायक, सुर-मुनि अंत न पावै (हो)॥
जाकौं सिव ध्यावत निसि-बासर, सहसानन जिहिं गावै (हो)।
सो हरि राधा-वदन-चंद कौं, नैन चकोर त्रसावै (हो)॥
जाकौं देखि अनंग अनंगत, नागरि छवि भरमावै (हो)।
सूर स्याम स्याम-बस ऐसैं ज्यौं सँग छाँह डुलावै (हो)॥
॥ २०२० ॥ २६३८ ॥

राग जैतश्री

कबहुँ स्याम जमुना-तट जात।

कबहूँ कदम चढत मग देखत, राधा बिनु अतिहीं अकुलात।
कबहूँ जात घन कुंज-धामकौं, देखि रहत नहिं कछू सुहात।
तब आवत वृषभानु पुरा कौं, अति अनुराग भरे नँद-तात॥
प्यारी हृदय प्रगटहीं जानति, तब वह मनहीं माँझ सिहात।
सूरदास नागरि के उर मैं, निवसे नागर स्यामल गात॥
॥ २०२१ ॥ २६३९ ॥

राग गूजरी

राधा स्याम स्याम राधा रँग

पिय प्यारी कौं हिरदै राखत, प्यारी रहति सदा हरि कैं सँग॥
नागरि नैन चकोर बदन ससि, पिय मधुकर अंबुज सुंदरि-मुख।
चाहत अरस परस ऐसैं करि, हरि नागरि, नागरि नागर सुख॥
सुख दुख सोचि रहत मनहीं मन, तब जानत तन को यह कारन।
सुनहु सूर कुल-कानि जानि, दुख सुख दोऊ फल करत बिचारन॥
॥ २०२२ ॥ २६४० ॥

यमुना रमन-युगल समागम — राग सूही बिलावल

जमुना चली राधिका गोरी।

जुवति वृंद-बिच चतुर नागरी, देखे नंद-सुवन तिहिं खोरी॥
व्याकुल दसा जानि मोहन की, मनहीं मन डरपी उन ओरी।
चतुर-काम फँग परे कन्हाई, अब धौं इनहिं छुड़ावै को री॥
इत सखियनि सौं बात बनावति, अति ह्वै गई तनक सी भोरी।
सूर हरिहिं उत भाव बतावति, धीर धरौ मिलिहैं दोउ जोरी॥
॥ २०२३ ॥ २६४१ ॥

राग जैतश्री

तब राधा इक भाव बतावति।

सुख मुसुकाइ सकुचि पुनि सहजहिं, चली अलक सुरझावति॥
एक सखी आवति जल लीन्हे, तासौं कहति सुनावति।
टेरि पह्यौ मेरे घर जैहौ, मैं जमुना तैं आवति॥

तब सुख पाइ चले हरि घर कौं, हरि प्रियतमहिं मनावति ॥
सूरज-प्रभु त्रितपन्न-कोक गुन, तातैं हरि हरि ध्यावति ।
।।२०२४।।२६४२

राग धनाश्री

स्याम कौं भाव दै गई राधा ।
नारि नागरिनि काहू लख्यौ, कोउ नहीं, कान्ह कछु करत है
बहुऽनुराधा ।
चितै हरि बदन याकौं हँसत मैं लखी, वै उतहिं गए कछु हरष
कीन्हे ॥
भावते भाव के सौंग नाहीं सुने, ये महा चतुर चतुरई लीन्हे ।
आजुहीं रैनि दोउ संग ये मिलैंगे, हरैं कहि परस्पर मनहिं जानी ॥
सूर ब्रज नागरी नारि नागरिनि सँग, फिरी ब्रज तुरत लै जमुन
पानी ॥२०२५॥२६४३॥

राग टोड़ी

भाव दियौ आवैंगे स्याम ।
अंग-अग आभूषन साजति राजति अपनैं धाम ॥
रति रन जानि अनंग नृपति सौं आपु नृपति-बल जोरति ।
अति सुगंध, मरदन अँग अंगनि, बनि बनि भूषन सौंरति ॥
बीरा हार-चीर-चोली छबि, सैना साजि सिंगार ।
पान बचन सन्नाह कवच दै, जोरे सूर अपार ॥
॥२०२६॥२६४४॥

राग कान्हरौ

प्यारी अंग-सिंगार कियौ ।
बेनी रची सुभग कर अपनैं, टीका भाल दियौ ॥
मोतिनि माँग सँवारि प्रथमहीं, केसरि-आड़ सँवारि ।
लोचन आँजि, स्रवन तरिवन-छवि, को कवि कहै निवारि ॥
नासा नथ अतिहीं छवि राजति, अधरनि बीरा रंग ।
नव सत साजि चोर चोरी बनि, सूर मिलन हरि संग ॥
॥२०२७॥२६४५॥

राग कल्यान

नागरि नागर पंथ निहारै।
उदै बाल-ससि अस्त भयौ रबि, जिय-जिय यहै बिचारै ॥
कीधौं अबहीं आवत ह्वै हैं, की आवन नहिं पैहैं।
मातु पिता की त्रास उतहिं, इत मेरे घरहिं डरैहैं ॥
अंग-सिंगार स्याम हित कीन्हे, बृथा होन ये चाहत।
सूर स्याम आवैं की नाहीं, मन-मन यह अवगाहत ॥
॥२०२८॥२६४६॥

राग बिहागरौ

राधा रचि-रचि सेज सँवारति।
तापर सुमन सुगध बिछावति, बारबार निहारति ॥
भवन गवन करिहैं हरि मेरैं हरषि दुखहिं निरुवारति।
आवैं कबहुँ अचानक ही कहि, सुभग पाँवडे डारति ॥
इहिं अभिलाखहिं मैं हरि प्रगटे, निरखि भवन सकुचानी।
वह सुख श्रीराधा माधौ कौ, सूर उनहिं जिय जानी ॥
॥२०२९॥२६४७॥

राग बिहागरौ

कहा कहौं सुख कह्यौ न जाइ।
वह अभिलाख स्याम की आवनि, दोउनि उर आनँद न समाइ ॥
द्वादस कान्ह, द्वादसी आपुन, वह निसि, वह हरि-राधा जोग।
वह रस की झकझकनि, वह महिमा, वह मुसुकनि, वैसौ संजोग ॥
वै हित बोल परस्पर दोऊ, ठठकनि कहत प्रेम सकुचानि।
सूर स्याम कर बाम भुजा धरि, उछँग लई वह सुख पहिचानि ॥
॥२०३०॥२६४८॥

राग कान्हरौ

स्याम सकुच प्यारी उर जानी।
लई उछंग बाम भुज भरि कै, बार-बार कहि बानी ॥
निरखति सकुचि बदन हरि प्यारी, प्रेम-सहित जुदगानी।
करत कहा पिय अति उताइली, मैं कहुँ जाति परानी ॥

कुटिल कटाच्छ वंक करि भ्रकुटी, आनन मुरि मुसुकानि।
सूर स्याम गिरिधर रति-नागर नागरि राधा रानी॥
॥ २०३१ ॥ २६४९ ॥

राग बिहागरौ

नागरि नागर करत बिहार।
काम नृपति सैना दुहुँ अँगनि, सोभा वार न पार॥
अधर-अधर, नैननि नैननि, भ्रुव भाल कियौ इक ठौर।
मनु इंदीवर कमल कुसेसय, चारि भँवर रँग और॥
वंदन भाल चिन्ह सन् दोऊ, अरस-परस वर नारि।
मनु बिच चंद चकोर परस्पर, कमल अरुन रवि धारि॥
रति-आगम हित अति उपजायौ, पिय प्यारी मन एक।
सूरदास-स्वामी-स्वामिनि मिलि, कोक-कलानि अनेक॥
॥ २०३२ ॥ २६५० ॥

राग गुड मलार

स्याम स्यामा परम कुसल जोरी।
मनौ नव जलद पर दामिनी की कला, सहज गति मेटि अति भई भोरी॥
अलक आकुल बिथुरि स्याम-मुख पर रहीं, मनौ बल राहु ससि घेरि लीन्हौ।
चितै मुख चारु चुंबन करत सकुच तजि, दसन छत अधर पिय मगन दीन्हौ॥
परत स्रम-बूँद टप टपकि आनन-बाल, भई बेहाल रति-मोह भारी।
बिधु परसि दंत विध्वंत अंमृत चुवत, सूर बिपरीत रति पीउ प्यारी॥ २०३३ ॥ २६५१ ॥

राग कुरंग

कुंज के निकट सुरत-निरत कंज-सेज राजै सुख गात।
टूटि गई तनी चोली दरकि तरकि गई, चारयौ जाम रजनी बिहानी भयौ प्रात॥
आरस सौं उठि बैठै अरस परस दोऊ दंपति अतिहिं मन मन मुसुकात॥
सूर आस पूरी स्यामा, स्याम बनी जोरी निसि-रस-सुधि आए नैन नैननि-लजात॥ २०३४ ॥ २६५२ ॥

राग ललित

राजत दोउ रति रंग भरे ।
सहज प्रीति बिपरीत निसा बस आलस सेज परे ॥
अति रन-धीर परस्पर दोऊ, नैंकुहुँ कोउ न मुरे ।
अंग अंग बल अपने अस्त्रनि, रति-संग्राम लरे ॥
मगन मुरछि रहे सेज खेत पर, इत-उत कोउ डरे ।
सूर स्याम स्यामा रति-रन तैं, इक पग पल न टरे ॥
॥ २०३४ ॥ २६५३ ॥

राग बिभास

स्याम स्याम सेज उठि बैठे, अरस-परस दोउ करत बिहार ।
उन उनकी पहिरी मोति-माला, उन पहिर्‌यौ उन नौसरि हार ॥
लटपट पेच सँवारति प्यारी, अलक सँवारत नंद कुमार ।
सूरदास-प्रभु नागर नागरि, बिपरित भूषन करत सिँगार ॥
॥ २०३६ ॥ २६५४ ॥

राग ललित

करि सिंगार दोऊ अरसाने ।
प्रथम बोल तमचुर सुनि हरषे, पुनि पौढे दोऊ लपटाने ॥
रति रन-जुद्ध जाम त्रय नीकैं, सेज परे, पुनि उठि मुरझाने ।
मानौ सूर खेत सम लरिकै, गिरत उठे फिरि गिरत लजाने ॥
॥२०३७॥२६५५॥

राग ललित

बोले तमचुर, चार्‌यौ जाम को गजर मार्‌यौ, पौन भयौ
सीतल, तमि तें तमता गई ।
प्राची अरुनानी भानु किरनि उज्यारी नभ छाई उडुगन चंद्रमा
मलीनता लई ॥
मुकुले कमल, बच्छ बंधन बिछोर्‌यौ ग्वाल, चरैं चलीं गाइ, द्विज
पाँती कर कौं दई ।
सूरदास राधिका सरस बानी बोलि कहै, जागौ प्रान प्यारे जू
सबारे की समै भई ॥२०३८॥२६५६॥

राग बिभास

चिरई चुहचुहानी, चंद की ज्योति परानी, रजनी बिहानी,
प्राची पियरी प्रवान की।
तारिका दुरानी, तम घट्यौ, तमचुर बोले, स्रवन भनक परी
ललिता के तान की ॥
भृंग मिले भारजा, बिछुरी जोरी कोक मिले, उतरी पनच अत्र
काम के कमान की।
अथवत आए गृह, बहुरि उवत भानु, उठौ प्रान-नाथ महा जान
मनि जान की ॥
ब्रज-घर-घर यहै करत चवाउ लोग, बार बार कहनि पगनि-पग
आन की।
सूरदास-प्रभु नंद-सुवन सिधारौ धाम, सुनत उठनि छवि कृपा के
निधान की ॥२०३९॥२६५७॥

राग बिलावल

जागियै प्रान-पति रैनि बीती।
चंद की दुति गई, यहै पीरी भई सकुच नाहीँ दई अतिहिँ भीती ॥
मातु-पितु, बंधु, गुरुजन अबहिँ जानिहैँ, लखैँ जानि कहूँ यह
लाज भारी।
सखिनि आगैँ नहीँ-नहीँ सब दिन कही, मोहिँ घेरे रहतिँ सबै नारी।
उठे मुसकाइ, अकुलाइ, अतुराइ, कै निकसि गए स्याम ब्रज-नारि-
जान्यौ।
सूर-प्रभु नंद नंदन दरस दै गए, निरखि इक टक रहीँ पल
भुलान्यौ ॥२०४०॥२६५८॥

राग बिलावल

प्रगट दरस दै गए कन्हाई।
राधा-गृह तैँ निकसत देखे, इन उनकी मन-साध पुराई ॥
सीस मुकुट, मोतिनि उर-माला, पीतांबर पट सहज फिराई।
स्याम-बरन तनु निरखि भुलानी, अंग-अंग छबि कही न जाई ॥
करति सोच राधा मन अपनैँ, आलस भरे गए हरि माई।
सूर स्याम निसि नैँकु न सोए, यहै कहति पुनि-पुनि पछिताई ॥
॥२०४१॥२६५९॥

राग ललित

राधा हरि कैं गर्ब भरी।
सखियनि कौ आगम जब जान्यौ, बैठी रही खरी॥
उत ब्रज-नारि संग जुरि कै वै, हँसति करत परिहास।
चलौ न जाइ देखियै री, वा राधा कौ जु उजास॥
कैसौ बदन, सिंगार कौन विधि, अंग-दसा भई कैसी।
सूर स्याम सँग निसि रस कीन्हे, निधरक ह्वै है वैसी॥
॥२०४९॥२६६७॥

राग जैतश्री

सुनौ सखी राधा के मन की, यह करनी नहिं जान्यौ।
जब हम जाति चलीं जमुना कौं, तबहीं मैं पहिचान्यौ॥
तबहिं सैन दै स्याम बुलाए, गृह आवन कौ भाव।
उनके गुन धौं को नहिं जानत, चतुर सिरोमनि राव॥
सुनौ सखी अति नहीं कीजियै, मूँड परै अपनैंहीं।
सूर स्याम सुख हमहिं दुरावति, आजु मिले सपनैंहीं॥
॥२०५०॥२६६८॥

राग सारंग

तुम जो कहति राधिका भोरी।
आजु रही अब कहा भुराई, कौन दिननि की थोरी॥
जो छोटी तेई हैं खोटी, साजति-माँजति जा री।
बैंदी भाल, नैन नित आँजति, निरखि रहति तनु गोरी॥
चमकति चलै, बदन मटकावै, गर्भा जोबन-जोरी।
सूर सखी तिहिं कहति अयानी, मन मोहनहिं ठगो री॥
॥२०५१॥२६६९॥

राग रामकली

राधा कौं मैं तबहीं जानी।
अपनैं कर जो माँग सँवारे, रचि रचि बेनी बानी॥
मुख भरि पान मुकुर लै देखति, तासौं कहति अयानी।
लोचन आँजि सुधारति करजनि, छाँह निरखि मुसुकानी॥

वार-वार उरजति अवलोकनि, वा तैं कौन सयानी।
सूरदास जैसी है राधा, तैसी मैं पहिचानी॥
॥२०५२॥२६७०॥

राग गुंड मलार

राधिका-सदन व्रज-नारि आईं।
रही मुख मूँदि कै वचन बोलै नहीं, नैन की सैन दै वै बुलाईं॥
इन तवहिं लखि लई, रचति है चतुराई, बुद्धि रचि कै अवहिं और कैहै।
चोर चोरी करै आपनैं जंघ-वल, प्रगट कैहै तुमहिं नहिं पत्यैहै।
भौंह देखौ निरखि ज्वाव दैहै कौन, तुमहुँ राखतिं गरव बोलि देखौ॥
सूर प्रभु-संग तैं अतिहि निधरक भई, नैन-मुख-ओर तुम नहीं पेखौ॥२०५३॥२६७१॥

राग सूही

आजु कहा मुख मूँदि रही री।
सुनति नहीं है कुँवरि राधिका, कापर रिस करि मौन गही री।
हमकौं यह काहैं न सुनावति, हम हैं तेरी संग सखी री।
यह कहि कहि मुसुकातिं परस्पर, चतुर नारि यह तवहिं लखी री।
कीधौं ध्यान करति देवनि कौ, कीधौं ऐसी प्रकृति परी री।
सूर जवहि आवतिं हम तेरैं, तव-तव ऐसी धरनि धरी री॥
॥२०४५ २६७२॥

राग बिलावल

वार-वार जुवती सवै, राधा सौं भाषैं।
तुम दुराव कत करति, हम तुमसौं नहि राखैं।
इतनौ सोच पर्‌यौ कहा, मुख ज्वाव न आवै।
हम तौ हैं तेरी सखी, सो कहि न सुनावै॥
कछु दिन तैं तेरी दसा, तनु रहति भुलाए।
निठुर भई कापर इती, कहि सूर सुभाए॥
॥ २०५५ ॥ २६७३ ॥

राग मलार

राधिका कहति ये करति हाँसी।
रहति मुख-मुख हेरि, नैन की सैन दै, कहतिं मोकौं कृष्न की उपासी॥
सुनहु री सखी मैं कहा तुमसौं कहौं, कहा बूझति मोहिं कहति राधा।
आजुहीं प्रात इक चरित देख्यो नयौ, तबहिं तैं मोहिं यह भई बाधा॥
कहौं ज्यौ एक करि देखती नैन भरि, भोर तैं भोर ह्वै रही माई।
सूर-प्रभु स्याम, की स्यामता मेघ की, दहै जिय सोच कछु नहिं सुहाई॥ २०५६॥ २६७४॥

राग रामकली

कधर की धर-मेरु सखी री।
की बग-पगति की सूक-सीपज, मोर कि पीड पखी री॥
कि सुर-चाप किधौं बनमाला, तडित किधौं पट पीत।
किधौं मद गरजनि जलधर, की पग नूपुर रव नीत॥
की जलधर की श्याम सुभग तनु यहे भोर तैं सोचति।
सूर स्याम रस भरी राधिका, उमँगि-उमँगि रस मोचति।
॥ २०५७॥ २६७५॥

राग रामकली

आजु सखी अरुनोदय मेरे, नैननि कौं धोख भयौ।
की हरि आजु पथ इहिं गवने, स्याम जलद की उनयौ॥
की बग-पाँति भाँति, उर पर की मुकुत माल बहु मोल।
कीधौं मोर मुदित नाचन, की बरह-मुकुट की डोल॥
की घनघोर गँभीर प्रात उठि, की ग्वालनि की टेरनि।
की दामिनि कौंधति चहुँदिसि, की सुभग, पीत पट फेरनि॥
की बनमाला लाल-उर राजति, की सुरपति धनु चारु।
सूरदास प्रभु-रस भरि उमँगी, राधा कहत विचारु॥
॥ २०५८॥ २६७६॥

राग बिलावल

सुनहु सखी राधा कहनावति ।
हम आईं याकैं जिहिं कारन, सो यह प्रगट सुनावति ॥
हम देख्यौ सोई इन देख्यौ, ऐसैं हि दोष लगावतिं ।
यह पुनीत हमहीं अपराधिनि, तनु अपराध बढ़ावतिं ॥
इतनैं हि रहौ और जनि भाषहु, अजहूँ लाज न आवति ॥
सूर स्याम राधा जौ एकै, तऊ नहीं कहि आवति ॥
॥२०५६॥२६७७॥

राग बिलावल

राधा कौ कछु और सुभाउ ।
हम देखति हरि कौं औरैं अँग, यह निरखति सतिभाउ ॥
यह है बिनु कलंक की साँची, हम कलंक मैं सानी ।
हम हरि की दासी सम नाहीं, यह हरि की पटरानी ॥
याकी अस्तुति हम कह करि हैं, रसना एक न आवै ।
सूर स्याम कौं इनहीं जाने, भजन - प्रताप बतावै ॥
॥२०६०॥२६७८॥

राग गुड मलार

राधिका हृदय तैं धोख टारौ ।
नंद के लाल देखे प्रात-काल तैं, मेघ नहिं स्याम-तनु-छबि बिचारौ ॥
इंद्र-धनु नहीं बन-दाम बहु सुमन के, नहीं बग पाँति बर मोति-माला ।
सिखी वह नहीं सिर मुकुट सीखंड-पछ, तड़ित नहिं पीत पट-छबि रसाला ॥
मंद गरजन नहीं चरन नूपुर-सबद, भोरहीं आजु हरि गवन कीन्हौ ।
सूर-प्रभु-भामिनी भवन करि गवन, मन-रवन दुख के दवन जानि लीन्हौ ॥
॥२०६१॥२६७९॥

राग गुड मलार

भोर जे गए ते स्याम वै री ।
धोख मोहिं भयौ तब लखे नहिं एक करि, नील नव मेघ छबि-चीन्ह लये री ॥

सिखी की भाँति सिरपीड़ डोलत सुभग, चाप तैं अधिक वनमाल सोभा।
साँवरी घटा पर वग-पाँति तैं रुचिर, मोति-वर दाम उर देखि लोभा ॥
तड़ित तैं पीतपट की चमक राजई, गरज नहिं प्रातहीं ग्वाल बोलैं।
सूर सुनि सखी यह बात साँची कही, पवन वस मेघ ज्यौ अग डोलैं ॥२०६२॥२६८०॥

राग कल्यान

धन्य हौ धन्य तुम घोप-नारी।
मोहिं धोखैं गयो, दरस तुमकौं भयो, तुमहिं मोहिं देखी री बीच भारी।
जा दिना संग मैं गई अस्नान कौं, जमुन कैं तीर देखे कन्हाई।
पीड़ सीखंड सिर, वेप नटवर कछे, अंग इक छटा मैं रही भुलाई।
दिवस इक आइ ठाढ़े भए द्वार पर, आजु हरि गए है द्वार मेरैं।
सूर प्रभु ता दिन तुमहिं कहि दियो, मोहिं, आजु मैं लखे सोउ कहे तेरैं ॥२०६३॥२६८१॥

राग आसावरी

तुम कैसैं दरसन पावति री।
कैसैं स्याम अंग अवलोकति, क्यौं नैननि ठहरावति री ॥
कैसैं रूप हृदैं राखति हो, वै तौ अति भलकावत री।
मोकौं जहाँ मिलत हैं माई, तहँ तहँ अति भरवावत री ॥
मैं कबहूँ नीकैं नहिं देखे, कह कहौं कहत न आवत री।
सूर स्याम कैसैं तुम देखति, मोहिं दरस नहिं द्यावत री।
॥२०६४॥२६८२॥

राग आसावरी

धन्य धन्य वृपभानु कुमारी।
धनि माता, धनि पिता तिहारे तोसो जाई वारी ॥
धन्य दिवस, धनि निसा तवहिं की, धन्य घरी, धनि जाम।
धन्य कान्ह तेरैं वस जे हैं, धनि कीन्हे वस स्याम।
धनि मति, धनि रति, धनि तेरो हित, धन्य भक्ति, धनि भाउ ॥
सूर स्याम पति धन्य नारि तू, धनि-धनि एक सुभाउ।
॥२०६५॥२६८३॥

राग जैतश्री

तोहिं स्याम हम कहा दिखावैं।
तुमतैं न्यारे रहत कहुँ न वै, नैंकु नहीं बिसरावैं॥
एक जीव द्वै राची, यह कहि कहि जु सुनावैं।
उनकी पटतर तुमकौं दीजै, तुम पटतर वै पावैं॥
अंमृत कहा अमृत-गुन प्रगटै, सो हम कहा बतावैं।
सूरदास गूँगे कौ गुर ज्यौं, बूझति कहा बुझावैं॥
॥ २०६६ ॥ २६८४ ॥

राग टोडी

सुनि राधा यह कहा बिचारै।
वै तेरैं तू उनकैं रँग, अपनौ मुख क्यौं न निहारै॥
जौ देखै तौ छाँह आपनी, स्याम-हृदै ह्याँ छाया।
ऐसी नंद-नंदन की, तुम दोउ निर्मल काया॥
नीलांबर स्यामल तनु की छबि, तुम छबि पीत सुबास।
घन-भीतर दामिनी प्रकासित, दामिनि घन-चहुँ पास॥
सुनि री सखी बिछल कहौं तोसौं, चाहति हरि कौ रूप।
सूर सुनहु तुम दोउ सम जोरी, एक स्वरूप अनूप॥
॥ २०६७ ॥ २६८५ ॥

राग धनाश्री

सुनि ललिता चंद्रावलि बात।
मोसौं स्याम नेह मानत हैं तुमसौं कहति लजात॥
तुम तौ सदा रहति हरि-संगहिं, भेद कहौ यह मोहिं।
हा हा करति पाइ हौं लागति, सपथ हमारी तोहिं॥
काहे कौं इतराति सखी री, तोतैं प्यारी कौन।
सूर स्याम तेरैं बस ऐसैं, ज्यौं पंखा-बस पौन॥
॥ २०६८ ॥ २६८६ ॥

राग नट

पिय तेरैं बस यौं री माई।
ज्यौं सगहिं सँग छाँह देह-बस, कह्यौ नहिं जाई॥

ज्यौं चकोर बस सरद चंद्र कैं, चक्रवाक बस-भान।
जैसैं मधुकर कमल-कोस बस, त्यौं बस स्याम सुजान॥
ज्यौं चातक बस स्वाति बूँद कैं, तन कैं बस ज्यौं जीय।
सूरदास-प्रभु अति बस तेरैं, समुझि देखि धौं हीय॥
॥ २०६९ ॥ २६८७ ॥

राग धनाश्री

तू री छाँह किये हरि राखति।
अपनैं मन तू जानति नीकैं, मुख मोसौं यह भाखति॥
अति बस रहत कान्ह री तोसौं, मधुर हाथ लै देखि।
तैसीयै मनमोहन की गति, वहै भाव मन लेखि।
तू है वाम अंग दच्छिन वै, ऐसैं करि इक-देह।
सूर मीन-मधुकर चकोर कौं, इतनौ नहीं सनेह॥
॥ २०७० ॥ २६८८ ॥

राग देवसाख

नंद-नंदन बस तेरैं (री)।
सुनि राधिका परम बड़भागिनि, अनुरागनि हरि केरैं (री)॥
जा दिन तैं तोहिं खरिक मिले हरि, धेनु दुहावन आई (री)।
ता दिन तैं बस भए कन्हाई, कहा ठगौरी लाई (री)॥
अब तू कहति कहा मो आगैं, बातनि मोहिं भुलावै (री)।
सूरदास ललिता की बानी, सुनि सुनि हरष बढ़ावै (री)॥
॥ २०७१ ॥ २६८९ ॥

लघु मान लीला *राग टोड़ी*

ललिता मुख सुनि सुनि ये बानी। मन ऐसी जिय मैं यह आनी॥
और नहीं कोउ ब्रज मैं सरि मेरी। हौं राधा आधा अँग हरि की॥
अपनैं हीं बस पिय कौ करिहौं। कहूँ जान देहौं तब लरिहौं॥
घर घर सबै गईं ब्रज नारी। इहिं अंतर आए गिरिधारी॥
हरि अंतरजामी अविनासी। जानि राधिका गर्व उदासी॥
सूर स्याम राधा तन हेर्यौ। नागरि देखत नहीं मुख फेर्यौ॥
॥ २०७२ ॥ २६९० ॥

राग सारंग

बरज्यौ नहिं मानत तुम नैकहुँ, उझकत फिरत कान्ह घर ही घर।
मिस ही मिस देखत जु फिरत हौ, जुवतिनि बदन कहौ काकैं बर॥
कोउ अपनैं घर जैसैं तैसैं काम काज तैं आवत दर-दर।
सूरदास प्रभु देत अचगरी डोलत नैकु नहीं जिय मैं डर॥
॥ २०७३ ॥ २६९१ ॥

राग बिलावल

यह जान्यौ जिय राधिका, द्वार हरि लागे।
गर्व कियौ जिय प्रेम कौ, ऐसे अनुरागे॥
बैठि रही अभिमान सौं, यह ठौर न पायौ।
हृदय स्याम-सुख-धाम मैं, अभिमान बसायौ॥
राधा जिय यह जानि कै, आपुन पछिताहीं।
जहाँ गर्व-अभिमान है, तहँ गोविंद नाहीं॥
तहाँ नैंकुहूँ नहिं रहे, नहिं दरसन दीन्हौ।
सूर स्याम अंतर भए, जब गर्वहिं चीन्हौ॥
॥ २०७४ ॥ २६९२ ॥

राग धनाश्री

राधा चकृत भई मन माहीं।
अबहीं स्याम द्वार ह्वै झाँके, ह्याँ आए क्यौं नाहीं॥
आपु न आइ तहाँ जो देखै, मिले न नंद-कुमार।
आवत ही फिरि गए स्याम-घन, अति भयौ बिचार॥
सूनैं भवन अकेली मैं ही, नीकैं उझकि निहारयौ।
मोतैं चूक परी मैं जानी, तातैं मोहिं बिसारयौ॥
इक अभिमान हृदय करि बैठी एते पर झहरानी।
सूरदास-प्रभु गए द्वार ह्वै, तब ब्याकुल पछितानी॥
॥ २०७५ ॥ २६९३ ॥

राग सारंग

मैं अपने जिय गर्व कियौ।
वह अंतरजामी सब जानत, देखत ही उन चरचि लियौ।

कासौं कहौं मिलावै को अब नैंकु न धीरज धरत जियौ।
वै तौ निठुर भए या बुधि सौं, अहंकार फल यहै दियौ॥
तब आपुन कौं निठुर करावति, प्रीति सुमिरि भरि लेति हियौ।
सूर स्याम प्रभु वै बहु नायक, मोसी उनकैं कोटि तियौ॥
॥ २०७६ ॥ २६९४ ॥

राग बिहागरौ

स्याम बिरह बन माँझ हिरानी।
सगी गए संग सब तजि कै, आपुन भई दिवानी॥
स्याम-धाम मैं गर्बहिं राखति, दुराचारिनी जानी॥
तातैं त्यागि गए आपुहिं सब, अग अग रति मानी॥
अहकार लंपट अपकाजी, संग न रह्यौ निदानी॥
सूर स्याम-नागर-बिनु, राधा नागरि चित्त भुलानी॥
॥ २०७७ ॥ २६९५ ॥

राग बिहागरौ

महा बिरह-बन माँझ परी।
चकित भई ज्यौं चित्र-पूतरी, हरि-मारग बिसरी॥
सँग बटपार गर्ब जब देख्यौ, साथी छोडि पराने।
स्याम-सहर-अँग-अंग माधुरी, तहँ वै जाइ लुकाने॥
यह बन माँझ अकेली व्याकुल, सपति गर्ब छँडायौ।
सूर स्याम-सुधि टरति न उर तैं, यह मनु जीव बचाया॥
॥ २०७८ ॥ २६९६ ॥

राग मारू

बिरह-बन मिलन-सुधि त्रास भारी।
...न जल नदी, पर्वत उरज येइ मनु, सुभग बेनी भई अहिनि कारी॥
...न मृग, स्रवन बन कूप जहँ-तहँ मिले, भ्रुवगली सघन नहिं पार पावैं।
...सिंह कटि, ब्याघ्र अँग - अग भूषन मनौं, दुसह भए मार अतिहीं डरावैं॥

सरन कर अब्र हरि डर लहत कोउ नहिँ, अंग सुख-स्याम बिनु भए ऐसे।
सूर प्रभु स्याम करुना-धाम जाउँ क्यौँ, कृपा-मारग बहुरि मिलै-कैसे ॥२०७९॥२६९७॥

राग टोडी

राधा-भवन सखी मिलि आईं।
अति व्याकुल सुधि बुधि कछु नाहीँ, देह-दसा बिसराई ॥
बाँह गही तिहिँ बूझन लागीँ, कहा भयौ री माई।
ऐसी बिबस भई तू काहैँ, कहौ न हमहिँ सुनाई ॥
कालि हि और बरन तोहिँ देखी, आजु गई मुरझाई।
सूर स्याम देखे की बहुरौ, उनहिँ ठगौरी लाई ॥
॥२०८०॥२६९८॥

राग हमीर

स्याम नाम चकृत भई, स्रवन सुनति जागी।
आए हरि यह कहि-कहि, सखिनि कंठ लागी ॥
मोतैँ यह चूक परी, मैँ बड़ी अभागी।
अब कैँ अपराध छमहु, गए मोहिँ त्यागी ॥
चरन-कमल सरन देहु, बार-बार माँगी।
सूरदास प्रभु कैँ बस, राधा अनुरागी ॥
॥२०८१॥२६९९॥

राग बिहागरौ

सखी रही राधा-मुख हेरि।
चकित भई कछु कहत न आवै, करन लगी अवसेरि ॥
बार-बार जल परसि बदन सौँ, बचन सुनावति टेरि।
आजु भई कैसी गति तेरी, ब्रज मैँ चतुर निबेरि ॥
तब जान्यौ यह तौ चंद्रावलि, लाज सहित मुख फेरि।
सूर तबहिँ सुधि भई आपनी, मिटी मोह अंधेरि ॥
॥२०८२॥२७००॥

राग जैतश्री

कहा भई तू आजु अयानी।
अतिहीँ चतुर प्रबीन राधिका, सखियनि मैँ तू बड़ी सयानी ॥

कहि धौं बात हृदय की मोसौं, ऐसी तू काहैं चितवानी।
मुख मलीन, तनु की गति औरै, बूझति बार बार सो बानी॥
कहा दुराव करौं री तो सौं, मैं तौ हरि कैं हाथ बिकानी।
सूर स्याम मोकौं परित्यागी, जा कारन मैं भई दिवानी॥
॥२०८३॥२७०१॥

राग जैतश्री

अब मैं तोसौं कहा दुराऊँ।
अपनी कथा, स्याम की करनी, तो आगैं कहि प्रगट सुनाऊँ॥
मैं बैठी ही भवन आपनैं, आपुन द्वार दियौ दरसाऊँ।
जानि लई मेरे जिय की उन, गर्व प्रहारन उनकौ नाऊँ॥
तबहीं तैं ब्याकुल भई डोलति, चित न रहै कितनौ समुझाऊँ।
सुनहु सूर गृह बन भयौ मोकौं, अब कैसैं हरि दरसन पाऊँ॥
॥२०८४॥२७०२॥

राग नट नारायन

सखि मिलि करौ कछुक उपाउ।
मार मारन चढ़्यौ बिरहिनि, निदरि पायौ दाउ॥
हुतासन-धुज जात उन्नत, चल्यौ हरि दिस बाउ।
कुसम सर रिपु-नंद-बाहन, हरपि हरपित गाउ॥
बारि-भव-सुत तासु भावरी अब न करिहौं काउ।
बार अब की प्रान-प्रीतम, बिजय-सखा मिलाउ।
रति बिचारि जु मान कीन्हौ, सोउ बहि किन जाउ।
सूर सखी सुभाउ रहिहौं, सँग सिरोमनि-राउ॥
॥२०८५॥२७०३॥

राग नट

मिलवहु पार्थ-मित्रहिं आनि।
जलधि-सुत के सुत की रुचि करि भई हित की हानि।
दधि सुता-सुत-अवलि उर पर, इंद्र-आयुध जानि।
गिरि सुता पति-तिलक करकस, हनत सायक तानि॥
पिनाकी-सुत तासु बाहन, भपक भप बिप-खानि।
साख मृग रिपु बसन मलयज, हित हुतासन-बानि॥

धर्म-सुत के अरि-सुभावहिँ, तजति धरि सिर पानि।
सूरदास विचित्र विरहिनि, चूक मन-मन मानि॥
॥ २०८६ ॥ २७०४ ॥

राग टोडी

सुनि सजनी यह करनी तेरी।
हमसौं भेद करै हित उनसौं, ऐसे गुन उनके री॥
आजुहिँ तैं ऐसे ढँग आए, अबहीं तौ दिन है री।
ऐसैं टूटि परी उन ऊपर, तुमहीं कीन्हौ बैरी॥
अजहूँ कह्यौ मानिहै मेरौ, कीधौं नहीँ करै री।
सूर स्याम सौं मान करै किन, काहैं वृथा मरै री॥
॥ २०८७ ॥ २७०५ ॥

राग सोरठ

तैंहीं उनकौं मूड़ चढ़ायौ।
भवन विपिन सँगही सँग डोले, ऐसैं हि भेद लखायो॥
पुहुप-भँवर दिन चारि आपने, अपनौ चाड़ सरायौ।
नंद नँदन बहु रवनि रवन वै, यहै जानि बिसरायौ॥
अपनी बात आपनैं कर है, हमकौं तब न सुनायौ।
सुनहु सूर विनु मान कहो किन, अपनो पिय अपनायौ॥
॥ २०८८ ॥ २७०६ ॥

राग कान्हरौ

रैनि मोहिँ जागतहिँ बिहानी, मान कियौ मोहन सौं, तातैं
भई अधिक तन तपति।
सेज सुगंधित लखि विष लागत, पावक हू तैं दाह सखीरी, त्रय
विधि पवन उड़पति॥
ऐसी कै व्याप्यौ है मनमथ मेरौई ज्यौ जानै माई, स्याम स्याम
कै जपति।
बेगि मिलाउ सूर के प्रभु कौं, भूलिहुँ मान करौं कबहूँ नहिं, मदन
वान तैं कँपति॥ २०८९ ॥ २७०७ ॥

राग धनाश्री

मान बिना नहिं प्रीति रहै री।
धाइ मिले की गति तेरी सी, प्रगट देखि मोहिँ कहा कहै री॥

अपनो चाड़ सारि उन लीन्हौ, तू काहें अब वृथा वहै री।
बैठि रहै काहें नहिं दृढ़ ह्वै, फिरि काहें नहिं मान गहै री॥
अपनौ पेट दियौ तैं उनकौं, नाक बुद्धि तिय सबै कहै री।
सूर स्याम ऐसे हैं माई, उनकौं बिनु अभिमान लहै री।
॥ २-९० ॥ २७०८ ॥

राग मलार

सजौं मान क्यौं, मन न हाथ, पिय सुमिरत उमँगि भरत।
मोसौं मानत बाम स्याम-गुन गुनि, अभिलाष करत॥
जो मो कानि न मानि, आन तिय रत, तिन बिनु न सरत।
अपमानतहू मुदित मूढ़, जस अपजस हू न डरत॥
रस मैं रिस बिष दै बिरचत हठ, लालन प्रान हरत।
भ्रमि मैं तौ रिस करति न रस बस, मोहिं सौं उलटि लरत॥
स्वारथ बस इंद्री समूह पर, बिरह अधीर धरत।
सूरदास घर की फूटैं री, कैसैं रह्यौ परत॥
॥ २०९१ ॥ २८०९ ॥

राग कान्हरौ

चारि चारि दिन सबै सुहागिनि, है चुकौं बैस रूप अपनी।
कोउ अपनैं जिय मान करौ माई, मोहिं तो छूटति अति कपनी॥
मेरौ कह्यौ करि, मान हृदै धरि, छाँडि देहि री अति तपनी।
सूर स्याम तबहीं मानैंगे, तबहिं करैंगे वै जपनी॥
॥ २०९२ ॥ २७१० ॥

राग टोड़ी

हमरी सुरति बिसारी बनवारी, हम सरबस दै हारी।
पै न भए अपने सनेह बस, सपनेहु गिरधारी॥
वै मोहन मधुकर समान सखि, अनगन, बेली-चारी।
व्याकुल बिरह व्यापि दिन दिन हम, नीर जु नैनन ढारी॥
हम तन मन दै हाथ बिकानी, वै अति निठुर मुरारी॥
सूर स्याम बहु रमनि रमन, हम इक ब्रत, मदन-प्रजारी॥
॥ २०९३ ॥ २७११ ॥

राग गौरी

मैं अपनी सी बहुत करी री ।
मोसौं कहा कहति तू माई, मन कैं सँग मैं बहुत लरी री ॥
राखौं हटकि उतहिं कौं धावत, वाकी ऐसियै परनि परी री ।
मोसौं बैर करै रति उनसौं, मोकौं राख्यौ द्वार खरी री ॥
अजहूँ मान करौं, मन पाऊँ, यह कहि इत-उत चितै डरी री ।
सुनहु सूर पाँचनि मत एकै, मैं ही मोही रही परी री ॥
॥२०९४॥२७१२॥

राग गौरी

मन जनि सुनै बात यह माई ।
कौरैं लग्यौ होइगौ कतहूँ, कहि दैहै ह्वाँ जाई ॥
ऐसैं डरति रहति हौं वाकौं, चुगली जाइ करैगौ ।
उनसौं कहि फिरि ह्याँ आवैगौ, मोसौं आनि लरैगौ ॥
पंच संग लीन्हे वह डोलत, कोऊ मोहिं न मानै ।
सूर स्याम कौं उनहिं सिखायौ, वे इतनौ कह जानै ॥
॥२०९५॥२७१३॥

राग ईमन

मेरौ मन कहिवे ही कौं है ।
जब ही तैं हरि दरसन कीन्हौ, नैननि भेद कियौ है ॥
इंद्रिनि सहित चित्तहू लै गयौ, रहीं अकेली हमहीं ।
एते पर तुम मान करावतिं, देहु न तौ मन तुमहीं ॥
मोकौं दोवल देति कहा हौ, तुम तौ सबै अयानी ।
सूर स्याम कौं वेगि मिलावहु, हारि आपनी मानी ॥
॥२०९६॥२७१४॥

राग रामकली

सारँग सारँगधरहिं मिलावहु ।
सारँग विनय करति, सारँग सौं, सारँग दुख विसरावहु ॥
सारँग-समय दहत अति सारँग, सारँग तिनहिं दिखावहु ।
सारँग गति सारँगधर जे हैं, सारँग जाइ मनावहु ॥

सारँग-चरन सुभग-कर-सारँग, सारँग-नाम बुलावहु ।
सूरदास सारँग उपकारिनि, सारँग मरत जियावहु ॥
॥२०९७॥२७१५॥

राग बिहागरौ

मो तैं यह अपराध परयौ ।
आए स्याम द्वार भए ठाढ़े, मैं जिय गर्व धरयौ ॥
जानि-बूझि मैं यह कृत कीन्हौ, सो मेरे सीस परयौ ।
मन अपने ढँग ही मैं मोसौं बारंबार लरयौ ॥
मैं अति बिमुख रही, यह सनमुख नीकैं उनहिं ढरयौ ।
सूरदास मन आप-स्वारथी, अपनौ काज करयौ ॥
॥२०९८॥२७१६॥

राग सोरठ

मन जो कह्यौ करै री माई ।
तेरी कही बात सब होती, मिल्यौ उनहिं कौं धाई ॥
निलज भई तनु-सुधि बिसराई, गुरुजन करत लराई ।
इत कुल-कानि उतहि हरि कौ रस, दुबिधा मैं दिन जाई ॥
आपु-स्वारथी सबै देखियत, है मोकौं दुखदाई ।
सूरदास प्रभु चित अपनौ करि, तनकहिं गए रिसाई ॥
॥२०९९॥२७१७॥

राग धमार

मान करौं, मन थिर न रहै ।
कोटि जतन करि करि पचिहारी मोहिं बिसारि गयौ कौन कहै ॥
माकौं निदरि मिल्यौ है उनसौं, ऐसे पर तन मदन दहै ।
सूर स्याम सँग नेकु न त्यागत, बरु निसि दिन अपमान सहै ॥
॥२१००॥२७१८॥

राग धमार

मनहिं कह्यौ करि मान स्याम सौं पै वह नाहीं कह्यौ करै ।
बार-बार हरि हरि गुहरावत, मोहिं मँगावन आइ लरै ।
घटहू मैं इती घम वाकैं, लै निरख्यौ मोहिं कौन डरै ।
सुनि सजनी मैं रही अकेली, बिरह दही गुरुजन जहरै ॥

अब बिन मिले बनत नहिं आली, निसि-दिन पल-पल रह्यौ न परै।
सूर स्याम बहु रमनि-रमन वै, पै यह चित नैकुहु न धरै॥
॥२१०१॥२७१६॥

राग बिलावल

भूलि नहीं अब मान करौं री।
जातैं होइ अकाज आपनौ, काहैं वृथा मरौं री॥
ऐसे तन मैं गर्व न राखौं, चिंतामनि बिसरौं री।
ऐसी बात कहै जो कोऊ, ताकैं संग लरौं री॥
आरजपंथ चलैं कह सरिहै, स्यामहिं संग फिरौं री।
सूर स्याम जउ आपु सारथी, दरसन नैन भरौं री॥
॥२१०२॥२७२०॥

राग आसावरी

चूक परी मोतैं मैं जानी, मिलैं स्याम बकसाऊँ री।
हा हा करि दसननि तृन धरि-धरि, लोचन नीर बहाऊँ री॥
चरन-कमल गाढ़ैं गहि कर सौं, पुनि-पुनि सीस छुवाऊँ री।
मुख चितवौं, फिरि धरनि निहारौं, ऐसैं रुचि उपजाऊँ री॥
मिलौं धाइ अकुलाइ, भुजनि भरि, उर की तपति जनाऊँ री।
सूर स्याम अपराध छमहु अब, यह कहि-कहि जु सुनाऊँ री॥
॥२१०३॥२७२१॥

राग गौरी

माई मेरौ मन पिय सौं यौं लाग्यौ, ज्यौं सँग लागी छाँहि।
मेरौ मन पिय जीव बसत है, पिय जिय मो मैं नाहिं॥
ज्यौं चकोर चंदा कौं निरखत, इत-उत दृष्टि न जाइ।
सूर स्याम बिनु छिन-छिन जुग सम क्यौं करि रैनि बिहाइ॥
॥२१०४॥२७२२॥

राग जैतश्री

उनकौ यह अपराध नहीं।
वै आवत हैं नीकैं मेरैं, मैं ही गर्व कियौ तनहीं॥
गर्व करे तैं सर्‌यौ कछू नहिं, एक भई तनु दसा नहीं।
सुख मिटि गयौ, हियौ दुख पूरन, अब रैहौं इनहीं बिनहीं॥

अब जौं दरस देहिं कैसेहू, फिरति रहौं सँग ही सँग ही।
सूरदास प्रभु कौं हियरे तैं, अंतर करौं नहीं छिनहीं॥
।।२१०५।।२७२३

राग बिलावल

अब कैं जौ पिय कौं पाऊँ, तौ हिरदै माँझ दुराऊँ।
जौ हरि कौ दरसन पाऊँ, आभूषन अंग बनाऊँ॥
ऐसौ को जो आनि मिलावै, ताहि निहाल कराऊँ।
जौ पाऊँ तौ मंगल गाऊँ, मोतियनि चौक पुराऊँ॥
रस करि नाचौं गाऊँ बजाऊँ, चंदन भवन लिपाऊँ।
मनि मानिक न्यौछावरि करिहौं, सो दिन सुदिन कहाऊँ॥
केतकि, करना, बेल, चमेली, फूलनि सेज बिछाऊँ।
तापर पिय कौ पौढाऊँ, मैं अंचरा बायु डुलाऊँ॥
चंदन, अगर, कपूर, अरगजा, प्रभु कैं खोरि बनाऊँ।
जौ बिधना कबहूँ यह करै तो, काम कौं काम पुराऊँ॥
अब सो करो उपाउ सखी मिलि, जातैं दरसन पाऊँ।
सूर स्याम देखैं बिनु सजनी, कैसैं मन अपनाऊँ॥
।२१०६।।२७२४

राग मलार

ए री मो ही तौ पिउ भावै, को ऐसी जो आनि मिलावै।
चौदह बिद्या प्रवीन अतिहीं बहु नायक कौं कौन मनावै॥
नैंकु दृष्टि भरि चितवै बिरहिनि, बिरह-तपनि मो तन तैं बुझावै।
सूरदास-प्रभु करे कृपा अब मोकौं, नित-प्रति बिरह जरावै॥
।।२१०७।।२७२५

राग बिलावल

धीरज करि री नागरी, अब स्यामहि ल्याऊँ।
अति ब्याकुल जनि होहि री, सुख अबहिं कराऊँ॥
देखि दसा सहि नहिं सकी, मन हौं अकुलानी।
मैं राधा की प्रिय सखी, यह कहि पछितानी॥
भूरि-भूरि पियरी परी, यह तौ सुकुमारी।
ऐसी चूक परी कहा कैहौ गिरिधारी॥

प्यारी कौं मुख धोइ कै, पट पोंछि सँवारयौ।
तरक बात बहुतै कही, कछु सुधि न सँभारयौ॥
सावधान करिकै गई, ल्याऊँ गिरिधर कौं।
सूर तहाँ आतुर गई, पाए हरि वर कौं॥
॥ २१०८ ॥ २७२६ ॥

राग टोडी

ललिता मुख चितवत मुसकाने।
आपु हँसी पिय मुख अवलोकत, दुहुनि मनहिं मन जाने॥
अति आतुर धाई कहँ आई, काहैं वदन झुराए।
बूझत हैं पुनि-पुनि नँद-नंदन, चितवत नैन चुराए॥
तब बोली वह चतुर नागरी, अचरज कथा सुनाऊँ।
सूर स्याम जौ चलहु तुरत हीं, नैनन जाइ दिखाऊँ॥
॥ २१०९ ॥ २७२७ ॥

राग सारंग

अद्भुत एक अनूपम बाग।
जुगल कमल पर गज वर क्रीड़त, तापर सिंह करत अनुराग॥
हरि पर सरवर, सर पर गिरिवर, गिरि पर फूले कंज-पराग।
रुचिर कपोत बसत ता ऊपर, ता ऊपर अमृत-फल लाग॥
फल पर पुहुप, पुहुप पर पल्लव, ता पर सुक, पिक, मृग-मद काग।
खंजन धनुष, चंद्रमा ऊपर, ता ऊपर इक मनिधर नाग॥
अंग-अंग प्रति और-और छवि, उपमा ताकौं करत न त्याग।
सूरदास प्रभु पियौ सुधा-रस मानौ अधरनि के बड़ भाग॥
॥ २११० ॥ २७२८ ॥

राग रामकली

पद्मिनि सारँग एक मझारि।
आपुहिं सारँग नाम कहावै सारँग-बरनी बारि॥
तामैं एक छबीलो सारँग अध सारँग उनहारि।
अध सारँग पर सकलइ सारँग अध सारंग बिचारि॥
तामैं सारँग-सुत सोभित है ठाढ़ी सारँग भारि।
सूरदास-प्रभु तुमहू सारँग बनी छबीली नारि॥
॥ २१११ ॥ २७२९ ॥

राग

विराजति एक अंग इति बात।
अपनें कर करि धरे बिधाता, पट खग, नव जलजात॥
द्वै पतग, ससि बीस, एक फनि, चारि बिबिध रँग धात।
द्वै पक बिंब, बतीस बज्र-कन, एक जलज पर थात॥
इक सायक, इक चाप चपल अति चितवत चित्त बिकात।
द्वै मृणाल, मालूर उभै, द्वै कदलि खंभ बिनु पात॥
इक केहरि, इक हंस गुप्त रहैं, तिनहिं लग्यौ यह गात।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन कौं अति आतुर अकुलात॥
॥ २११२ ॥ २

राग

आज लखी इक बाम नई सी।
ठाढी हुती अंगना द्वारें, बिधि बिरची किधौं मदन मई सी
हम-तनु चितै, सकुचि अंचल दियौ, बारिज मुख पर बारि बई स
मनु द्वै ढंग चले हैं दृग (नि) लै, ललित बलित हरि मनहिं नई सी
जनु पावस तैं निकसि दामिनी, नैकु दमकि दुरि ओट लई स
भोजन, भवन कछू नहिं भावत, लगत पलक मनु करत खई सी
यह मूरति कबहूँ नहिं देखी, मेरी आँखिनि कछु भूल भई सी
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन कौं, मन-मोहन मोहिनि अँचई सी
॥ २११३ ॥ २

राग

बरनौ श्री वृषभानु-कुमारि।
चित दै सुनहु स्याम सुंदर छबि, रति नाहीं अनुहारि॥
प्रथमहिं सुभग स्याम बेनी की, सोभा कहौं बिचारि।
मनौ रह्यौ पन्नग पीवन कौं, ससि मुख सुधा निहारि॥
सुभग सुदेस सीस सेंदुर कौ, देखि रही पचिहारि।
मानौ अरुन किरन दिनकर की, पसरी तिमिर बिदारि॥
भ्रकुटी बिकट निकट नैननि कैं, राजति अति बर नारि।
मनौ मदन जग-जीति, जेर करि, राख्या धनुष उतारि॥
ता बिच बनी आड़ केसर की, दीन्ही सखिनि सँवारि।
मानौ बँधी इंदु मंडल मैं, रूप सुधा की पारि॥

चपल नैन, नासा बिच सोभा, अधर सुरंग सुढारि।
मनौ मध्य खंजन सुक बैठ्यौ, लुबध्यौ बिंब बिचारि॥
तरिवन सुधर, अधर नकबेसरि, चिबुक चारु रुचिकारि।
कंठसिरी दुलरी तिलरी पर, नहिं उपमा कहुँ चारि॥
सुरँग गुलाब माल कुच-मंडल, निरखत तन मन वारि।
मनु दिसि दिसि निर्धूम अग्नि कै, तप बैठे त्रिपुरारि॥
जौ मेरौ कृत मानौ मोहन करि ल्याऊँ मनुहारि।
सूर रसिक बदिहौं जब चितवत मुरली सकौ सँभारि॥
॥२११४॥२७३२॥

राग मलार

लाल उन सुनी मनोहर बंसी।
नहिँ संभार अजहुँ जुवतिनि बलि, मदन-भुवंगम डंसी॥
कैसैं ल्याउँ, सँगीत-सरोवर, मगन भई गति हंसी।
आपुन ही चलियै उद्धरियै, मेलि भौंह दृढ़ फँसी॥
मानहु तरुन तमाल स्याम तन, लता मालती ग्रंसी।
सूरदास-प्रभु सब सुख-दाता, लै भुज बीच प्रसंसी॥
॥२११५॥२७३३॥

राग धनाश्री

मनसिज माधवैं मानिनिहिं मारिहै।
त्रोटि परलव अरत परमौ अर निरखि निमुख को तारिहै॥
किसलय कुसुम कुंत सम सायक, पायक पवन बिचारिहै॥
द्रुम बल्ली यह दीप जुग बनी, जनति अनल त्रिय जारिहै॥
भँवर जु एक चक्रत चामर कर भरि वंझुष खग डारिहै।
पुनि पुनि बाज साज सुनि सुंदरि, त्रसित तिनहिँ देखे मारिहै।
बिरह बिभूति चढ़ी बनिता बपु, सीस जटा बनवारि है।
मुख ससि सेस रह्यौ सित मानौं, भई तमौ उनहारि है॥
जौ न इते पर चलहु कृपानिधि, तौ वह निज कर सारिहै।
सूरदास-प्रभु रसिक-सिरोमनि, तुम तजि काहि पुकारिहै॥
॥२११६॥२७३४॥

राग सारंग

सिव न, अबध सुंदरी, घवौ जिन।
सुक्ता माँग अनंग, गंग नहिँ, नव सत साजे अर्थ स्याम घन॥

भाल तिलक उडपति न होइ यह, कबरि ग्रथित अहिपति न सहस फन।
नहिं विभूति दधिसुत न कंठ जड़, यह मृगमद चंदन चर्चित तन॥
नहिं गज चर्म सु असित कंचुकी, देखि बिचारि कहाँ नंदी गन।
सूर सु हरि अब मिलहु कृपा करि, बरबस समर करत हठ हम सन॥२११७॥२७३५॥

राग धनाश्री

प्रिया मुख देखौ स्याम निहारि।
कहि न जाइ आनन की सोभा, रही बिचारि-बिचारि॥
छीरोदक घूँघट हातौ करि, सन्मुख दियौ उघारि।
मनो सुधाकर दुग्ध सिंधु तैं कढ्यौ कलंक पखारि॥
मुक्ता माँग सीस पर सोभित, राजति इहिं आकारि।
मानो उड़गन जानि नवल ससि, आए करन जुहारि॥
भाल लाल-सिंदूर-बिंदु पर, मृगमद दियौ सुधारि।
मनो बँधूक-कुसुम ऊपर अलि बैठ्यौ, पख पसारि॥
चंचल नैन चहूँदिसि चितवत, जुग खंजन अनुहारि।
मनो परस्पर करत लराई, कीर बचाई रारि॥
बेसरि के मुक्ता मैं झाईं, बरन बिराजति चारि।
मानौ सुरगुरु, सुक्र, भौम, सनि, चमकत चंद मँझारि॥
अधर बिंब बिच दसन बिराजत, दुति दामिनि चमकारि।
चिबुक बिंदु-बिच दियौ बिधाता, रूप सींव निरुवारि॥
तरिवन स्रवन रतन मनि भूषित, सिर सीमत सँवारि।
जनु जुग भानु दुहूँ दिसि उगए, भयो द्विधा तम हारि॥
लाल माल कुच बीच बिराजति, सखियनि गुही सिंगारि।
मनहुँ धुईं निर्धूम अग्नि पर, तप, बैठे त्रिपुरारि॥
सन्मुख दृष्टि परैं मनमोहन, लज्जित भई सुकुमारि।
लीन्हीं उमँगि उठाइ अंक भरि सूरदास बलिहारि॥
॥२११८॥२७३६॥

राग नट

भुज भरि लई हिरदय लाइ।
बिरह ब्याकुल देखि बाला नैन दोउ भरि आइ॥

रैनि-बासर-बीचही मैं, दोउ गए मुरझाइ।
मनौ वृच्छ तमाल बेली-कनक, सुधा सिँचाइ ॥
हरष डहडह मुसुकि फूले, प्रेम फलनि लगाइ।
काम मुरझनि बेलि तरु की, तुरत ही बिसराइ ॥
देखि ललिता मिलन वह आनंद उर न समाइ।
सूर के प्रभु स्याम स्यामा, त्रिबिध ताप नसाइ ॥
॥२११९॥२७३७॥

राग रामकली

ललिता-प्रेम-बिबस भई भारी।
वह चितवनि, वह मिलनि परस्पर अति सोभा वर नारी ॥
इकटक अंग-अंग अवलोकति, उत बस भए बिहारी।
वह आतुर छवि लेत देत वै, इक तैं इक अधिकारी ॥
ललिता संग सखिनि सौं भाषति, देखौ छवि पिय प्यारी।
सुनहु सूर ज्यौं होम अगिनि घृत, ताहू तैं यह न्यारी।
॥२१२०॥२७३८॥

राग धनाश्री

देखि सखी राधा अकुलानी।
ऐसैं अंग-अंग छवि लूटति, मिलैंहु नहीँ पतियानी ॥
जैसैं तृषावंत जल अँचवत, वह तौ पुनि ठहरात।
यह आतुर छवि लै उर धारति, नैंकु नहीँ तृपितात ॥
ज्यौं चकोर इकटक निसि चितवत, याकी सरि सोउ नाहिँ।
ज्यौं घृत होम वह्नि की महिमा, सूर प्रगट या माहिँ ॥
॥२१२१॥२७३९॥

राग केदारौ

जद्यपि राधिका हरि संग।
हाव-भाव, कटाच्छ लोचन, करत नाना रंग ॥
हृदय व्याकुल, धीर नाहीं, बदन कमल बिलास।
तृषा मैं जल नाम सुनि ज्यौं, अधिक अधिकहिँ प्यास ॥
स्याम रूप अपार उत, इत लोभ-पुट बिस्तार ॥
सूर मिति नहिँ लहत कोऊ, दुहुँनि बल अधिकार ॥
॥२१२२॥२७४०॥

राग केदारौ

राधेहिं मिलेहुँ प्रतीति न आवति ।
जदपि नाथ विधु-बदन विलोकत, दरसन कौ सुख पावति ॥
भरि-भरि लोचन रूप-परम-निधि, उरमै आनि दुरावति ।
बिरह-बिकल-मति दृष्टि दुहूँ दिसि, सँचि सरधा ज्यौं धावति ॥
चितवत चकित रहति चित अंतर, नैन निमेष न लावति ।
सपनौ आहि कि सत्य ईस यह, बुद्धि वितर्क बनावति ॥
कबहुँक करति बिचार कौन हौं, को हरि कैं हिय भावति ॥
सूर प्रेमकी बात अटपटी, मन तरंग उपजावति ॥
॥२१२३॥२७४१॥

राग रामकली

देखेहुँ अनदेखे से लागत ।
जद्यपि करत रंग भए एकहि, इक टक रहैं निमिष नहिं त्यागत ॥
इत रुचि दृष्टि मनोज-महासुख, उत सोभा गुन अमित अनागत ।
बाढ़्यौ वैर करन अर्जुन ज्यौं, द्वै महिं एक भूलि नहिं भागत ॥
उत सनमुख श्री सावधान सजि, इत सनेह अँग-अँग अनुरागत ।
ऐसे सूर सुभट ये लोचन, अधिकौ अधिक स्याम सुख माँगत ॥
॥२१२४॥२७४२॥

राग कान्हरौ

देखियत दोउ अहँकार परे ।
उत हरि-रूप, नैन याके इत, मानहुँ सुभट अरे ॥
रुचिर सुदृष्टि मनोज महासुख, इन इत एक करे ॥
उन उत भूषन-भेद व्यूह रचि, अँग अग धनुष धरे ॥
ये अति रति-रन रोष न मानत, निमिष निषंग भरे ।
बाहु-बिथाहिं न बदत पुलक-रुहु सब अँग सर सँचरे ॥
वै श्री, ये अनुराग, सूर सजि, छिन-छिन बढत खरे ।
मानहु उमँगि चल्यौ चाहत हैं, सागर सुधा भरे ॥
॥२१२५॥२७४३॥

राग बिहागरौ

नख सिख अंग-अंग छवि देखत, नैना नाहिं अघाने ।
निसि-बासर इकटकहीं राखे, पलक लगाइ न जाने ।

छबि-तरंग अगिनित सरिता-जल, लोचन तृप्ति न माने ।
सूरदास प्रभु की सोभा कौं, अति व्याकुल ललचाने ॥
॥ २१२६ ॥ २७४४ ॥

राग बिभास

ललिता संग सखिनि कौं लीन्हे ।

दंपति-सुख देखति अति भावत, इकटक लोचन दीन्हे ॥
प्यारी स्याम-अंग की सोभा, निदरे देख्यौ चाहत ।
उत नागर नागरि नैननि कौं, निदरि रूप अवगाहत ॥
उत उदार सोभा की सींवाँ, इत लोभहिं नहिं पार ।
सूर स्याम अँग-अँग की सोभा, निरखति बारंबार ॥
॥ २१२७ ॥ २७४५ ॥

राग गुंड मलार

निदरि अँग-अंग-छबि लेति राधा ।

यह कहति, कितिक सोभा करैंगे स्याम, मेटिहौं आजु मन सबै साधा ॥
उतहिं हरि-रूप की रासि, नहिं पार कहुँ, दुहुनि मन परसपर होड़ कीन्हौ ।
ये इतहि लुब्ध, वै उतहिं उदार चित, दुहुनि बल-अंत नहिं परत चीन्हौ ॥
जुरे रन वीर ज्यौं, एक तैं इक सरस, मुरत कोउ नहीं, दोउ रूप भारी ।
सूर के स्वामि, स्वामिनी राधा, सरस-निरस कोउ नाहिं लखि लई नारी ॥ २१२८ ॥ २७४६ ॥

राग मारू

रुपे संग्राम रति खेत नीके ।

एक तैं एक रन बीर जोधा प्रबल, मुरत नहिं नैंकु अति सबल-जीके ॥

भौंह कोदंड, सर नैन, धानुषि काम, छुटनि मानो कटाच्छनि निहारैं।
हँसनि दुज-चमक करवरनि लौं है झलक, नखनि-छत-घात नेजा सम्हारैं॥
पीत पट डारि, कचुकी मोचिन करन, कवच सन्नाह सो छुटे तन तैं।
भुजा-भुज धरत, मनु द्विरद सुडनि लरत, उर उरनि भिरे दोउ जुरे मन तैं॥
लटकि लपटानि मानो सुभट लरि परे खेत, रति सेज रुचि ताम कीन्हे।
सूर प्रभु रसिक प्रिय राधिका रसिकिनी, कोक-गुन सहित सुख लूटि लीन्हे॥ २१२९॥ २७४७॥

राग नट

किसोरी अँग अँग भेंटी स्यामहिं।
कृष्न तमाल तरल भुज साखा, लटकि मिली ज्यौं दामहिं॥
अचरज एक लता गिरि उपजै, सोउ दीन्हे करुनामहिं।
कछुक स्यामता स्यामल गिरि की, छाडि कनक अगामहिं॥
गिरिवर धरन सुरत-रति-नायक रति जीत्यौ संग्रामहिं।
सूर कहै ये उभय सुभट विच, क्यौं जु बसै रिपु कामहिं॥
॥ २१३०॥ २७४८॥

लपटे अग सौं सब अग।
सुरसरी मनु कियौ सगम, तरनि तनया सग॥
जोरि अक प्रयंक पौढे, ओढि बसन सुरग।
गिरत करते कुसुम कुतल, अरल तरल तरग॥
नवल मृग-दृग त्रिपित आतुर, पिवत नीर निसग॥
नाद किकनि-केहरी सुनि, चपल होत मारग।
बाहुवनि घन विविध फूले,, जलज जमुना-गग॥
ललित लटकनि डोल मानो, मधुप माल मतंग।
कुच कठोर किसोर उर विचि, लगत उछरि उमग।
कमठ पाया अमम, साजत-उमगि होत-उतग॥
बर्नो बेसरि नासिका मिलि, मिले दोउ अग-अग।
नैन मनसा बस परयौ मिटि, चपल ताल नगग॥

करम नथ नव जोति संगम, जोर भूप अनंग।
देत दीन विलास-सहचर, सूर सुविधि सु-अंग॥
॥२१३१॥२७४९॥

राग नट

रसना जुगल रस-निधि बोल।
कनक बेलि तमाल अरुझी, सुभुज बंध अखोल॥
भृंग-जूथ सुधाकरनि मनु, सघन आवत जात।
सुरसरी पर तरनि-तनया, उमँगि तट न समात॥
कोक नद पर तरनि-तांडव, मीन-खंजन-संग।
कीर तिल जल सिखर मिलि जुग, मनौ संगम रंग॥
जलद तैं तारा गिरत खसि, परत पय निधि माहिं।
जुग भुजंग प्रसन्न मुख ह्वै, कनक-घट लपटाहिं॥
कनक संपुट कोकिला-रव, बिबस ह्वै दै दान।
बिकच कंज अनारँगी पर लसि, करत पय पान॥
दामिनी थिर, घन-घटा चर, कबहुँ ह्वै इहिं भाँति।
कबहुँ दिन उद्योत, कबहूँ होति अति कुहु राति॥
सिंह मध्य सनाद मनि गन, सरस सर कैं तीर।
कमल जुग बिनु नाल उलटे, कछुक तीच्छन नीर॥
हंस साखा सिखर चढ़ि चढ़ि, करत नाना नाद।
मकर निजपद निकट बिहरत, मिलन अति अह्लाद॥
प्रेम-हित कैं छीर-सागर, भई मनसा एक।
स्याम मनि के अंग चंदन, अमी के अभिषेक॥
सूरदास सखी सबै मिलि, करति बुद्धि बिचार।
समय सोभा लगि रही, मनु सूम कौं संसार॥
॥२१३२॥२७५०॥

राग रामकली

सोभा सुभग-आनन-ओर।
त्रास तैं तनु त्रसित तिरछैं चितै देति अँकोर॥
निरखि समकरि कियौ चाहत, वदन बिधु की जोर।
तुला बिच लोकेस तौलैं, गरुअ आनन गोर॥

दरस पति-रुचि मुदित मनसिज, चपल दृगहिं चकोर।
कोस क्रीड़त मीन मानौ, नील नीरज भोर॥
स्याम सुंदर नैन जुग वर, झलक कज्जल कोर।
सुधा सर संकेत मानौ, कुहू-दानव चोर॥
स्रवन मनि ताटंक मंजुल, कुटिल कुंतल छोर।
मकर-संकट काम-त्रापी अलक-फदनि डोर॥
चिकुर अध नव मोति मंडल- तरल लट तृन तोर।
जनु बिध्वसित व्याल-बालक, अमी की झकझोर॥
स्वेद सीकर गंड मंडित, रूप अंबुज घोर।
उमँगि ईषद ज्यौं स्रवत, पीयूष कुंभ-झकोर॥
मुदित मधुकर बिदुगन-मकरंद-मध्य न घोर॥
हँसत दसननि चमक बिद्युत लसत कुलिस कठोर॥
निरखि सोभा समर लज्जित इंदु भयौ भ्रम भोर।
सूर धन्य सु नव किसोरी धन्य नंद-किसोर॥

॥२१३३॥२७५१॥

राग बिलावल

धन्य कान्ह धनि राधा गोरी।
धनि यह भाग, सुहाग धन्य यह, धन्य नवल-नवला-नव-जोरी॥
धनि यह मिलनि, धन्य यह बैठनि, धनि अनुराग नहीं रुचि थोरी।
धनि यह अरस-परस छवि लूटनि, महाचतुर, मुख-भोरे-भोरी॥
प्यारी अंग-अंग अवलोकति, पिय अवलोकन लगति ठगोरी।
सूरदास प्रभु रीझि थकित भए, नागरि पर डारत तृन तोरी॥

॥२१३४॥२७५२॥

राग धनाश्री

नागरि-छवि पर रीझे स्याम।
कबहुँक वारत हैं पीतांबर, कबहुँक वारत मुक्ता दाम॥
कबहुँक वारत हैं कर मुरली, कबहुँक वारत मोहन-नाम।
निरखि रूप सुख अंत लहत नहिं, तनु मनु वारत पूरनकाम॥
बारबार सिहात सूर-प्रभु, देखि-देखि राधा सी बाम।
इनकौं पलक ओट नहिं करिहौं, मन यह कहत आसरहु जाम॥

॥२१३५॥२७५३॥

राग बिलावल

स्याम निरखि प्यारी अँग-अंग।
सकुचि रहत मुख तन नहिँ चितवत, जिहिँ बस रहत अनंत अनंग॥
चपल नैन दीरघ अनियारे, हाव भाव नाना गति भंग।
वारौँ मीन कोटि अंबुज गन, खंजन वारौँ कोटि कुरंग॥
लोचन नहिँ ठहरात स्याम के, कबहूँ बनिता के इक अंग।
सूरदास-प्रभु यौँ प्यारी बस, ज्यौँ बस-डोर फिरत सँग चंग॥
॥२१३६॥२७५४।

राग आसावरी

निरखि स्याम प्यारी-अँग-सोभा, मन अभिलाष बढ़ावत हैँ।
प्रिया अभूषन माँगत पुनि-पुनि, अपनैँ अंग बनावत हैँ॥
कुंडल-तट तरिवन लै साजत, नासा बेसरि धारत हैँ।
बेँदी भाल, माँग सिर पारत, बेनी गूँथि सँवारत हैँ॥
प्यारी नैननि कौ अंजन लै, अपने नैननि अंजत हैँ।
पीतांबर ओढ़नी सीस दै, राधा कौ मन रंजत हैँ॥
कंचुकि भुजनि पहिरि उर धारत कंठ हमेल सजावत हैँ।
सूर स्याम लालच तिय तनु पर, करि सिँगार सुख पावत हैँ॥
॥२१३७॥२७५५॥

राग टोडी

स्याम भए राधा बस ऐसैँ।
चातक स्वाति, चकोर चंद ज्यौँ, चक्रवाक रवि जैसैँ॥
नाद कुरंग, मीन जल की गति, ज्यौँ तनु कैँ बस छाया।
इकटक नैन अंग-छवि मोहे, थकित भए पति-जाया॥
उठैँ उठत, बैठैँ बैठत हैँ, चलैँ चलत सुधि नाहीँ।
सूरदास बड़भागिनि राधा, समुझि मनहिँ मुसुकाहीँ॥
॥२१३८॥२७५६॥

राग नट

स्यामा स्याम-छबिकी साध।
मुकुट-कुंडल-पीतपट-छबि, देखि रूप अगाध॥

प्रिया हा हा करति पुनि-पुनि, देहु प्रीतम मोहि।
अंग-अंग सँवारि भूषन, रहति वह छवि जोहि॥
काछि कछनी पीत पट, कटि किंकिनी अति सोभ।
हृदय वनमाला बनावति 'देखि' छवि मन लोभ॥
स्रवन कुंडल धारि सोभा, सीस रचि सीपड।
सूर स्याम सुहागिनी रुचि, कनक कर लै दड॥
॥२१३९॥२७५७॥

राग कर्नाटी

श्री गोपाल लालजी बंसी नैंकु तिहारी पाऊँ।
करनाटी गौरी मैं गाऊँ मुरलि बजाइ रिझाऊँ॥
तुम सँगीत गावत जेइ जेई, तेइ तेइ तान सुनाऊँ।
तहँ लगि गान सुनाऊँ, जहँ लगि सप्त सुरनि मैं पाऊँ॥
सुरनि विमान थकित करि राखौं, कलिंदीहि थिराऊँ।
बेनी, सीस फूल पहिरौ तुम, मैं सिर मुकुट बनाऊँ॥
तुम वृषभानु-सुता ह्वै बैठौ, मैं नँदलाल कहाऊँ।
तुम मानिन ह्वै मान करौ पुनि, मैं गहि चरण मनाऊँ॥
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस कौं, भक्ति-भावना पाऊँ।
कीजै कृपा आपनैं अनुचर, अनुपम, लीला गाऊँ॥
॥२१४ ॥२७५८॥

राग नट

तिहारी लाल मुरली नैंकु बजाऊँ।
जो जिय होति प्रीति कहिबे की, सो धरि अधर सुनाऊँ॥
जैसी तान तुम्हारे मुख की, तैसिये मधुर उपाऊँ।
जैसें आपु अधर धरि फूँकत, मैं अधरनि परसाऊँ॥
जैसें फिरति रध्र मग अँगुरी, तैसें मैं हुँ फिराऊँ।
हा हा करति पाइ हौं लागति, बाँस बँसुरिया पाऊँ॥
सारँग नट पूरबी मिलि कै, राग अनूपम गाऊँ।
तुम्हरे आभूषन मैं पहिरौं अपने तुम्हैं पिन्हाऊँ।
तुम बैठौ ह्वै मान साजि कै, मैं गहि चरन मनाऊँ।
तुम राधे, हौं माधौ, माधौ ऐसी प्रीति जनाऊँ॥

यह अभिलाष बहुत मेरैं जिय नैननि यहै दिखाऊं।
सूर स्याम गिरिधरन छबीले, भुज भरि कंठ लगाऊँ॥
॥ २१४१ ॥ २७५९ ॥

राग नट

हरि जू मुरली तुम्है सुनाऊँ।
तुम सुर पुरवौ प्राननाथ प्रभु, हौं अंगुरीनि चलाऊँ॥
मधुरैं सुर गति राग रागिनी, भली तान उपजाऊँ।
जिहिं जिहिं भाँति रिझहु नँद-नंदन, तिहिं-तिहिं भाँति रिझाऊँ॥
अंस बाहु धरि कर पकरौंगी, सर्वस सुख हौं पाऊँ।
सूरदास अटकैं न चलै पल, मन अभिलाप बढ़ाऊँ॥
॥ २१४२ ॥ २७६० ॥

राग नट

प्यारी कर बाँसुरी लई।
सनमुख ह्वै तुम सुनौ रसिक पिय, ललित त्रिभंग भई॥
उठति राग रागिनी तरंगनि, छिनु छिनु उपज नई।
आल-बाल नँदलाल-स्रवन बर, जनु मोहिनी बई॥
नमित सुधाकर बदन अमित छबि, मनमोहन चितई।
मनहुँ चकोर मत्त मेचक मृग, तनु सुधि-बिसरि गई॥
करि पीतांबर छाह नाह कौं, अलबेली रिझई।
सूरदास हँसि कमलनैन कहँ, राधा अंक दई॥
॥ २१४३ ॥ २७६१ ॥

राग गूजरी

मुरली लई कर तैं छीनि।
ता समय छबि कही जाति न, चतुर नारि नवीन॥
कहति पुनि-पुनि स्याम आगैं, मोहि देहु सिखाइ।
मुरलि पर मुख जोरि दोऊ अरस परस बजाइ॥
कृष्न पूरत नाद, उछरत प्यारि रिस करि गात।
बार बारहिं अधर धरि-धरि, बजति नहिं अकुलात॥
प्रिया-भूपन स्याम पहिरत, स्याम-भूपन नारि।
सूर प्रभु करि मान बैठे तिय करति मनुहारि॥
॥ २१४४ ॥ २७६२ ॥

राग बिलावल

कहति नागरी स्याम सौं, तजि मान हठीली ।
हम तैं चूक कहा परी, तिय गर्व-गहीली ॥
हँसतहिं मैं तुम रिस कियौ, कह प्रकृति तुम्हारी ।
बार-बार कर धरति है, कहि कहि सुकुमारी ॥
बृथा मान नहिं कीजियै, सिर चरननि धारति ।
आनन आनन जोरि कै, पिय-मुखहि निहारति ॥
निठुर भई हो लाडिली, कब के हम ठाढे ।
तुम हम पर रिस करति हौ, हम हैं तुव चाढे ॥
स्याम कियौ हठ जानि कै, इक चरित बनाऊँ ।
सुनहु सूर प्यारी-हृदय, रस बिरह उपाऊँ ॥
॥ २१४५ ॥ २७६३ ॥

राग बिलावल

लाल निठुर ह्वै बैठि रहे ।
प्यारी हा हा करति, मनावति, पुनि पुनि चरन गहे ॥
नहिं बोलत, नहिं चितवत मुख-तन, धरनी नखनि करोवत ।
आपु हँसति पुनि-पुनि उर लागति, चकित होति मुख जोवत ॥
कहा करत यह बोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावहु ।
सूर स्याम-मुख कोटि-चंद्र-छबि, हँसिकै मोहि दिखावहु ॥
॥ २१४६ ॥ २७६४ ॥

राग धनाश्री

नागरि हँसति हृदय डर भारी ॥
कबहुँ अंक भरि लेति उरज बिच, कबहुँ करति मनुहारी ॥
मान करत नीके नहिं लागौ, दूरि करौ यह ख्याल ।
नैंकु नहीं चितवत राधा तन, निठुर भए नँदलाल ॥
सीस धरति चरननि लै पुनि-पुनि, पिय कौ रूप निहारत ।
सूरदास-प्रभु मान धर्यौ हठ, धरनी नखनि बिदारत ॥
॥ २१४७ ॥ २७६५ ॥

राग गूड

निरखि पिय-रूप तिय चकित भारी ।
किधौं वै पुरुष मैं नारि, की वै नारि मैं ही हौं पुरुष, तन सुधि बिसारी ॥

आपु तन चितै सिर मुकुट, कुंडल स्रवन, अधर मुरली, माल-
बन बिराजै।
उतहिं पिय-रूप सिर माँग बेनी सुभग, भाल बेंदी-बिंदु महा
छाजै॥
नागरी हठ तजौ, कृपा करि मोहिं भजौ, परी कह चूक सो कहौ
प्यारी।
सूर नागरी प्रभु-बिरह-रस मगन भई, देखि छबि हँसत गिरिराज-
धारी ॥२१४८॥२७६६॥

राग धनाश्री

निरखत पिय प्यारी-अँग-अंग बिरह सोभा।
कबहूँ पिय-चरन परति, कबहूँ भुज अंक भरति, कबहूँ जिय डरति,
बचन सुनिबे की लोभा॥
कबहुँ कहति पिय सौं पिय, कबहुँ कहति प्यारी हो, हा हा करि
पाइ परति, बिकल भई बाला।
कबहुँ उठति, कबहुँ बैठि पाछैं ह्वै रहति, कबहुँ आगैं ह्वै बदन हेरि
परी बिरह ज्वाला॥
काहैं तुम कियौ मान, बोले बिनु लात प्रान, दंपति हैं संग दसा
ऐसी उपजाई।
रीझे प्रिय सूर स्याम, अंकम भरि लई बाम, बिरह द्वंद मेटि हरष
हृदय मैं बसाई॥२१४९॥२७६७॥

राग धनाश्री

प्रिया प्रिय लीन्ही अंकम लाइ।
खेलत मैं तुम बिरह बढ़ायौ, गई कहा बितताइ!
तुमहीं कह्यौ मान करिबे कौं, आपुहिं बुद्धि उपाइ।
काहैं बिबस भई बिनु कारन ऐसी गई डराइ॥
सुनु प्यारी यह भाव बतायौ, अंतर गयौ जनाइ।
बारंबार अलिंगन दीन्हौ, अबहि रही मुरझाइ।
अति सुख दै दुख कौं बिसरायौ, राधा-रमन कन्हाइ।
सींची कनक-लता सूरज-प्रभु, अमृत-बचन सुनाइ॥
॥२१५०॥२७६८॥

राग गुड मलार

स्याम-तनु प्रिया-भूषन बिराजै।
कनक-मनि-मुकुट, कुडल स्रवन, माल उर अधर मुरली धरे नारि छाजै॥
निरखि छबि परसपर रीझे दोउ नारि-बर, गयौ तजि बिरह डर, प्रेम पागे।
सूर-प्रभु-नागरी हँसति, मन-मन रसति बसति मन स्याम कैं बड़े भागे॥२१५१। २७६९॥

राग नट

नागरि-भूषन स्याम बनावत।
श्री नागरि नागर सोभा अँग, कियौ निरखि मन भावत॥
स्यामा कनक-लकुट कर लीन्हे, पीतांबर उर धारै।
उत गिरिधर नीलांबर-सारी-घूँघट-ओट निहारै॥
बचन परस्पर कोकिल-बानी, स्याम नारि, पति राधा।
सूर सरूप-नारि पति काछे, पति तनु नारी साधा॥
॥२१५२॥२७७०॥

राग नट

नीकैं स्याम मान तुम धारौ।
तुम बैठे दृढ मान ठानि, मैं मेट्यौ, मान तुम्हारौ॥
यह मन साध बहुत ही मेरैं, तुम बिनु कौन निवारै।
नागरि पिय-तनु अपनी सोभा, बारबार निहारै॥
बेनी माँग, भाल बेंदी-छबि, नैननि अंजन रंग।
सूर निरखि पिय-घूँघट की छबि, पुलकि न मावति अंग॥
॥२१५३॥२७७१॥

राग धनाश्री

कुंज बन गवन दंपति बिचारैं।
नारि कौ बेष करि, नारि के मनहिं हरि, मुकुर लै भावती छबि निहारैं॥
भामिनी अंग वह बेष नटवर निरखि, हँसनहीं हँसन मन मेटि डारैं।
सहज अपनौ रूप धर्‌यौ मन भावती, और भूषन तुरत अंग धारैं॥

तिया कौ रूप धरि, संग राधा कुँवरि, जात ब्रज-खोरि नहिं लखत कोऊ।
सूर स्वामिनी स्वामी वने एक से, कोउ न पटतर अरस-परस दोऊ ॥ २१५४ ॥ २७७२ ॥

राग गौरी

नंद-नँदन तिय-छवि तनु काछे।
मनु गोरी साँवरी नारि दोउ, जाति सहज मैं आछे ॥
स्याम अंग कुसुमी नई सारी, फल गुंजा की भाँति।
इत नागरि नीलांबर पहरे जनु दामिनि घन काँति ॥
आतुर चले जात वन-धामहिं, मन अति हरष वढ़ाए।
सूर स्याम वा छवि कौं नागरि निरखति नैन चुराए ॥
॥ २१५५ ॥ २७७३ ॥

राग कान्हरौ

मन ही मन रीझति है राधा, वह पिय रूप निहारै।
निरखि भाल बेंदी सेंदुर की, छवि पर तन मन वारै ॥
यह मन कहति सखी जनि देखैं, बूझे से कह कैहौं।
तिहूँ भुवन सोभा सुख की निधि, कैसैं इन्है दुरैहौं ॥
पग जेहरि विछियनि की झमकनि, चलत परसपर वाजति।
सूर स्याम स्यामा सुख जोरी, मनि-कंचन-छवि लाजत ॥
॥ २१५६ ॥ २७७४ ॥

राग कल्यान

स्यामा स्याम कुंज वन आवत।
भुज भुज-कंठ परस्पर दीन्हे, यह छवि उनहीं पावत ॥
इततैं चंद्रावली जाति ब्रज, उततैं ये दोउ आए।
दूरिहिं तैं चितवति उनहीं तन, इक टक नैन लगाए ॥
एक राधिका दूसरि को है, याकौं नहिं पहिचानौं।
ब्रज-वृषभानु-पुरा-जुवतिनि कौं, इक-इक करि मैं जानौं ॥
यह आई कहुँ और गाँव तैं, छवि साँवरी सलोनी।
सूर आजु यह नई बतानी, एकौ अँग न विलोनी ॥
॥ २१५७ ॥ २७७५

राग सोरठ

राधा सकुचि स्याम-मुख हेरति ।
चंद्रावली देखि कै आवत, ब्रज ही कौं पिय फेरति ॥
जाहु जाहु मुख तैं कहि भाषति, कर तैं कर नहिं छूटत ।
उतहिं सखी आवत सकुचानी, इतहि स्याम-सुख लूटत ॥
दुख सुख हरष कछू नहिं जानति, स्याम-महारस माती ।
सूर उतहिं चंद्रावलि इकटक, उनही कैं रँग राती ॥
॥ २१५८ ॥ २७७६ ॥

राग गौरी

यह वृषभानु-सुता वह को है ।
याकी सरि जुवती कोउ नाहीं यह त्रिभुवन मन मोहै ॥
अति आतुर देखन कौं आवति, निकट जाइ पहिचानौं ।
ब्रज मैं रहति किधौं कहुँ औरै, बूझे तैं तब जानौं ॥
यह मोहिनी कहाँ तैं आई, परम सलोनी नारी ।
सूर स्याम देखत मुसुक्यानी, करी चतुरई भारी ॥
॥ २१५९ ॥ २७७७ ॥

राग गौरी

इन तैं निधरक और न कोई ।
कैसी बुद्धि रची है नोखी, देखी सुनी न होई ॥
यह राधा सै हाथ विधाता, बुद्धि चतुरई वानी ।
कै सैं स्याम चुराइ चली लै, अपने भूषन ठानी ॥
और कहा इनकौं पहिचानै, मोपै लखे न जात ।
सूर स्याम चंद्रावलि जाने, मनहीं मन मुसुकात ॥
॥ २१६० ॥ २७७८ ॥

राग कान्हरौ

सकुच छाँड़ि अब इनहिं जनाऊँ ।
ये तौ चले आपने काजहिं मैं काहैं न समुझाऊँ ॥
मन हीं मन मैं जीति जाहिंगे, जानि-बूझि निदराऊँ ।
ये चतुरई काढ़ि कै आए, सो अब प्रगटि दिखाऊँ ॥

बड़े गुनज्ञ कहावत दोऊ, इनकौं लाज लजाऊँ।
सूर स्याम राधा की करनी-महिमा प्रगट सुनाऊँ ॥
॥२१६१॥२७७९॥

राग सारंग

कहि राधा येको हैं री।
अति सुंदरि साँवरी सलोनी, त्रिभुवन-जन-मन-मोहैं री ॥
और नारि इनकी सरि नाहीं, कहौ न हम-तन जोहैं री।
काकी सुता, वधू हैं काकी, काकी जुवती धौं हैं री ॥
जैसी तुम तैसी हैं येऊ, भली वनी तुमसौं हैं री।
सुनहु सूर अति चतुर राधिका, येइ चतुरनि की गौं हैं री॥
॥२१६२॥२७८०॥

राग ईमन

मथुरा तैं ये आई हैं।
कछु संबंध हमरौ इनसौं, तातैं इनहिं बुलाई हैं ॥
ललिता संग गई दधि वेंचन, उनहीं इनहिं चिन्हाई हैं।
उहै सनेह जानि री सजनी, आजु मिलन हम आई हैं ॥
तब ही की पहिचानि हमारी, ऐसी सहज सुभाई हैं।
सूरदास मोहिं आवत देखी, आपु संग उठि धाई हैं ॥
॥२१६३॥२७८१॥

राग सोरठ

इनकौं ब्रजहीं क्यौं न बुलावहु।
को वृषभानुपुरा, की गोकुल, निकटहिं आनि बसावहु ॥
येऊ नवल, नवल तुमहूँ हौ, मोहन कौं दोउ भावहु।
मोकौं देखि कियौ अति घूँघट, काहैं न लाज छुड़ावहु ॥
यह अचरज देख्यौ नहिं कबहूँ, जुवतिहिं जुवति दुरावहु।
सूर सखी राधा सौं पुनि-पुनि, कहति जु हमहिं मिलावहु ॥
॥२१६४॥२७८२॥

राग हमीर

साँवरैं तनु कुसुंभि सारि, सोहति है नीकी (री)।
मानौ रति-पति सँवारी बनी, रवनि जी की (री) ॥

राधा तैं अतिहिं सरस, स्याम देखि भावै री) ॥
ऐसी यह नारि और, नारि मन चुरावै (री) ॥
घूँघट-पट बदन ढाँकि, काहैं इन राख्यौ (री) ।
चितवहु मो तन कुमारि, चंद्रावलि भाख्यौ री) ॥
आपुहिं पट दूरि कियौ, तरुनी-बदन देख्यौ (री) ।
मनहीं मन सफल जानि, जीवन-जग लेख्यौ री ॥
नैन-नैन जोरत महिं, भाव सौं लजाने (री) ।
सूर स्याम नागरि-मुख, चितवत मुसकाने (री) ॥

॥२१६५॥२७८३॥

राग बिहागरौ

मथुरा में बस बास तुम्हारौ ?
राधा तैं उपकार भयौ यह, दुर्लभ दरसन भयौ तुम्हारौ ॥
बार बार कर गहि गहि निरखति, घूँघट ओट करौ किन न्यारौ ।
कबहुँक कर परसति कपोल छुइ चुटकि लेति हाँ हमहिं निहारौ ॥
कछु मैं हूँ पहिचानति तुमकौं, तुमहिं मिलाऊँ नंद दुलारौ ।
काहे कौं तुम सकुचति हौ जू कहौ काह है नाम तुम्हारौ ॥
ऐसी सखी मिली तोहिं राधा, तौ हमकौं काहैं न बिसारौ ।
सूरदास दंपति मन जान्यौ, यातैं कैसैं होत उबारौ ॥

॥२१६६॥२७८४॥

राग रामकली

राधा सखी मिली मन भाई ।
जब तैं इनसौं नेह लगायौ, बहुत भई चतुराई ॥
और भयौ इनतैं तुमकौं सुख, गृह जन सौं निठुराई ।
काहू कौं मन मैं नहिं आनति, हमहू सबनि बिसराई ॥
तुम हौ कुसल, कुसल ए येऊ, आपु स्वारथी माई ।
सूर परस्पर दंपति आतुर चतुर सखी लखि पाई ॥

॥२१६७॥२७८५॥

राग रामकली

यह सखि अब लौं कहाँ दुराई ।
इते दिवस हम कबहुँ न देखी, अब जु कहाँ तैं आई ॥

त्रिभुवन की सोभा सब गुन निधि, है विधि एक उपाई।
विद्यमान वृषभानु-नंदिनी सहचरि सब सुखदाई॥
अपनैं मन तकि-तकि तनु तोलति, त्रिय जन सुंदरताई।
द्वितिय रूप की रासि राधिका, कहौ कौन पुर पाई॥
रॉचि रहे रस-सुरति सूर दोउ, निरखत नैन निकाई।
चीन्हे हौं चलि जाहु कुंज-गृह छाड़ि देहु चतुराई॥
॥ २१६८ ॥ २७८६ ॥

राग रामकली

ऐसी कुँवरि कहाँ तुम पाई।
राधा हू तैं नख-सिख सुंदरि, अब लौं कहाँ दुराई॥
काकी नारि, कौन की बेटी, कौन गाउँ तैं आई।
देखी सुनी न ब्रज, वृंदावन, सुधि-बुधि हरति पराई॥
धन्य सुहाग भाग याकौ, यह जुवतिनि की मनभाई।
सूरदास-प्रभु हरषि मिले हँसि, लै उर कंठ लगाई॥
॥ २१६९ ॥ २७८७ ॥

राग गुंडमलार

नंद-नंदन हँसे नागरी-मुख चितै, हरषि चंद्रावली कंठ लाई।
वाम भुज रवनि, दच्छिन भुजा सखी पर, चले बन-धाम सुख कहि न जाई॥
मनौ बिवि दामिनी बीच नव घन सुभग, देखि छबि काम रति सहित लाजै।
किधौं कंचन-लता बीच सु तमाल तरु, भामिनिनि बीच गिरिधर बिराजै।
गए गृह कुंज, अलि गुंज, सुमननि पुंज, देखि आनँद भरे सूर-स्वामी।
राधिका रवन, जुवती-रवन मन रवन निरखि छबि होत मन-काम कामी॥ २१७० ॥ २७८८ ॥

राग बैराटी

बसेरी नैननि मैं पट इंदु।
नंद-नँदन वृषभानु-नंदिनी सखी सहित सोभित जग-वंद॥

द्वादस ही पतंग, ससि सौ बिस, पट फनि, चौबिस चतुरँग छंद।
द्वादस बिंब, सौ बानवे बज्रकन, पट कमलनि मुसक्यात जु मंद ॥
द्वादस ही मृनाल, कदली खँभ, लखि द्वादस मराल आनंद।
द्वादस ही सायक, द्वादस धनु, खग ब्यालीस माधुरी फंद ॥
चौबिस चतुष्पदनि सोभा मनु, चलत चुवत करभा मकरंद।
पीत गौर दामिनि बिच राजत, अनुपम छवि श्री गोकुल चंद ॥
साठि जलज अरु द्वादस सरवर, अंगहि अंग सरस रस कंद।
सूर स्याम पर तन मन वारति ललिता, देखि भयौ आनंद ॥
॥ २१७१ ॥ २७८९ ॥

राग केदारौ

कुंज सुहावनौ भवन, बनि-ठनि बैठे राधा-रवन।
बरन बहु कुसुम प्रफुलित ससि की किरनि जगमग द्युति तैंमोर्ड बहै त्रिबिध पवन ॥
अलिगन पिक मंगल धुनि गावत, मन भावत मुनि, देखत दंपति अति बिवस मन।
सूरदास प्यारी प्रभु राजत सँग साजत सुन, लखि सखि वारति रतिपति सयन ॥ २१७२ ॥ २७९० ॥

राग बिलावल

सँग सोभित वृषभानु-किसोरी।
सारँग नैन, बैन बर सारँग, सारँग बदन, कहै छबि कोरी ॥
सारँग अधर, सुधर कर सारँग, सारँग जति, सारँग मति भोरी।
सारँग बरन, पीठि पर सारँग सारँग गति, सारँग कटि थोरी ॥
सारँग पुलिन, रजनि रुचि-सारँग, सारँग अंग सुभग भुज जोरी।
बिहरत सघन कुंज सखि निरखति, सूर स्याम घन, दामिनि गोरी ॥
॥ २१७३ ॥ २७९१ ॥

राग बिलावल

कुंज भवन राधा मनमोहन।
रति बिलास करि मगन भए अति, निरखत नैन लजौंहन ॥
निय-तन कौ दुख दूरि कियौ पिय, दै-दै अपनौ मोहन।
बार बार भुज धरि अंकम भरि, मिलि बैठे दोउ गोहन ॥

पीतांबर पट सौं मुख पोंछत, हरषि परस्पर जोहन।
सूर स्याम स्यामा-मन रिझवत, पीन कुचनि टकटोहन॥
॥२१७४॥२७९२॥

राग बिहागरौ

वनहिं धाम सुख-रैनि बिहाई।
तैसियै नवल राधिका नागरि, तैसेइ नवल कन्हाई॥
तैसोइ पुलिन पवित्र जमुन कौ, तैसोइ मंद सुगंध।
तैसियै कंठ कोकिला कुहुकनि, तैसोइ सुख संबंध॥
रति-विहार करि पिय अरु प्यारी, प्रात चले ब्रज धाम।
सूरदास दोउ बाहाँजोरी, राजत स्यामा स्याम॥
॥२१७५॥२७९३॥

राग ललित

नवल निकुंज नवल रस दोऊ, राजत हैं अतिसय रँग-भीने॥
कुसुमनि सेज भोर उठि आवत, आलस जुत असनि भुज दीने।
अरुन नैन कुच-रेप विराजति, स्रम-जल वसन पलटि तनु लीने।
सूरज-प्रभु प्यारी-सुख निरखति, सखिनि सहित ललिता दृग दीने॥
॥२१७६॥२७९४॥

राग कान्हरौ

वरन वरन वादर मन हरन उदै करन मंजु निकसत वन धाम
तैं ऐसे दोउ लागे।
राजत, दुरि जात कबहुँ कबहूँ पुनि प्रगट होत अरुन भये जु नैन
सब ही निसि जागे॥
मोर मुकुट पीत वसन इंद्र धनुप बीच बीच, मंद-मंद गरजनि
बोलनि अनुरागे।
सूरदास प्रभु-प्यारी की छवि प्रिय गावत नित, पावत कवि उपमा
जे ते बड़भागे॥२१७७॥२७९५॥

राग अडानौ

बाहाँ जोरी प्रात कुंज तैं निकसे रीझि-रीझि कहैं बात।
कुंडल झलमलात झलकत अति चकाचौंध नैन न ठहरात॥

राधा मोहन घन चपला ज्यौं चमक मेरी पुतरी न समात।
सूर स्याम के मधुर वचन सुनि भूल्यौ मोहि पाँच औ सात॥
॥२१७८॥२७९६॥

राग बिलावल

नवल किसोर किसोरी जोरी, आवत हैं रति रँग अनुरागे।
कबहुँ चरन गति डगति लगति छबि, अलस नैन आनँद निसि जागे॥
बानक देखन रीझि रही हौं, अंजन पीक पलटि मुख लागे।
सूरदास प्रभु प्यारी राजत, आवत बने मरगजे बागे॥
॥२१७९॥२७९७॥

राग सारँग

अरुझि रहे मुक्ता निरुवारति, सोहत घूँघरवारे बार।
रति मानी सँग नंद-नँदन के, टूटे बंद कंचुकी, हार॥
निसि के जागे दोऊ नैना, ढरकि रहे जोबन मद-भार।
सूर स्याम यह अति अनुपम सुख देखत रीझे बारंबार॥
॥२१८०॥२७९८॥

राग बिलावल

नवल स्याम, नवला श्री स्यामा।
दोऊ राजत बाहँजोरी, चले जात ब्रज बामा॥
या छबि की उपमा दीबे कौं त्रिभुवन नहीं उपामा।
दामिनि घन पटतर दीजै क्यों सकुचत कबि लिये नामा।
सुधा सरीर परस्पर दोऊ, सुखदायक दिन-जामा।
सूरदास नागरि नागर प्रभु, जीते रति अरु कामा॥
॥२१८१॥२७९९॥

राग ललित

दोउ घन ते ब्रज-धाम गए।
रति-संग्राम जाति पिय प्यारी, भूषन सजत नए॥
वै ब्रज गए आपु अपनैं गृह, चित तैं कोउ न टारत।
मन बाचा कर्मना एक दोउ, एकौ पल न बिसारत॥

जैसे मीन नीर नहिँ त्यागत, तनु खंडित वै पूरन।
सूर स्याम स्यामा दोउ देखौ, इत-उत कोउ न अधूरन ॥
॥ २१८२ ॥ २८०० ॥

राग धनाश्री

बहुरि फिरि राधा सजति सिँगार।
मनहुँ देति पहिरावनि अँग, रन जीते सुरत अपार ॥
कटि तट सुभटहिं देति रसन पट, भुज भूषन, उर हार।
कर कंचन, काजर, नकवेसरि, दीन्हौ तिलक लिलार ॥
बीरा बिहँसि देति अधरनि कौं, सन्मुख सहे प्रहार।
सूरदास प्रभु के जु बिमुख भए, बाँधति कायर वार ॥
॥ २१८३ ॥ २८०१ ॥

राग कान्हरौ

आजु अति राधा नारि बनी।
प्रति-प्रति अंग अनंग जीति, रस बस त्रैलोक्य धनी ॥
सोभित केस विचित्र भाँति द्युति सिखि सिखंड हरनी।
रची माँग सम-भाग राग-निधि, काम-धाम-सरनी ॥
अलक तिलक राजत अकलंकित, मृद-मद-अंक बानी।
खुभिनि जराव-फूल-द्युति यौं, मनु द्वै ध्रुव-गति रजनी ॥
भौंह कमान-समान बान मनु हैं जुग-नैन अनी।
नासा तिल-प्रसून, बिंबाधर, अमल कमल वदनी ॥
चिबुक मध्य मेचक-रुचि राजत, बिंदु कुंद-रदनी।
कंबु-कंठ-त्रिधि लोक बिलोकत, सुंदरि एक गनी ॥
बाहु-मृनाल, लाल कर पल्लव, मद-गज-गति गवनी।
पति-मन-मनि-कंचन-संपुट कुच, रोमराज तटनी ॥
नाभि-भँवर, त्रिवली-तरंग-गति, पुलिन-तुलिन ठटनी।
कृस-कटि, पृथु-नितंब, किंकिनि जुत, कदलि-खंभ-जघनी ॥
रचि आभरन सिँगार, अंग सजि, ज्यौं रति पति सजनी।
जीते सूर स्याम गुन कारन, मुख न मुऱ्यौ लजनी ॥
॥ २१८४ ॥ २८०२ ॥

राग बिलावल

नंद-नँदन बस कीन्हे राधा, भवन गए चित नैंकु न लागत।
स्याम स्यामा रूप मंदिर सुख, अंतर तैं सो नैंकु न त्यागत ॥

राधा मोहन घन चपला ज्यौं चमक मेरी पुतरी न समात।
सूर स्याम के मधुर वचन सुनि भूल्यौ मोहि पाँच औ सात॥
॥२१७८॥२७९६॥

राग बिलावल

नवल किसोर किसोरी जोरी, आवत हैं रति रँग अनुरागे।
कबहुँ चरन गति डगति लगति छवि, अलस नैन आनँद निसि जागे॥
बानक देखन रीझि रही हौं, अंजन पीक पलटि मुख लागे।
सूरदास प्रभु प्यारी राजत, आवत बने मरगजे बागे॥
॥२१७९॥२७९७॥

राग सारँग

अरुझि रहे मुक्ता निरुवारति, सोहत घूँघरवारे बार।
रति मानी सँग नंद-नँदन के, टूटे बंद कंचुकी, हार॥
निसि के जागे दोऊ नैना, ढरकि रहे जोबन मद-भार।
सूर स्याम यह अति अनुपम सुख देखत रीझे बारंबार॥
॥२१८०॥२७९८॥

राग बिलावल

नवल स्याम, नवला श्री स्यामा।
दोऊ राजत बाहाँजोरी, चले जात ब्रज धामा॥
या छवि की उपमा दीबे कौं त्रिभुवन नहीं उपामा।
दामिनि घन पटतर दीजै क्यौं सकुचत कबि लिये नामा।
सुधा सरीर परस्पर दोऊ, सुखदायक दिन-जामा।
सूरदास नागरि नागर प्रभु, जीते रति अरु कामा॥
॥२१८१॥२७९९॥

राग ललित

दोउ बन तै ब्रज-धाम गए।
रति-संग्राम जीति पिय प्यारी, भूषन सजत नए॥
वै ब्रज गए आपु अपनैं गृह, चित तैं कोउ न टारत।
मन बाचा कर्मना एक दोउ, एकौ पल न बिसारत॥

जैसे मीन नीर नहिँ त्यागत, तनु खडित वै पूरन।
सूर स्याम स्यामा दोउ देखौ, इत-उत कोउ न अधूरन ॥
॥ २१८२ ॥ २८०० ॥

राग धनाश्री

बहुरि फिरि राधा सजति सिँगार।
मनहुँ देति पहिरावनि अँग, रन जीते सुरत अपार ॥
कटि तट सुभटहिँ देति रसन पट, भुज भूषन, उर हार।
कर कंचन, काजर, नकबेसरि, दी·हौ तिलक लिलार ॥
बीरा बिहँसि देति अधरनि कौँ, सन्मुख सहे प्रहार।
सूरदास प्रभु के जु बिमुख भए, बाँधति कायर बार ॥
॥ २१८३ ॥ २८०१ ॥

राग कान्हरौ

आजु अति राधा नारि बनी।
प्रति-प्रति अंग अनंग जीति, रस बस त्रैलोक्य धनी ॥
सोभित केस विचित्र भाँति दुति सिषि सिषड हरनी।
रची माँग सम-भाग राग-निधि, काम-धाम-सरनी ॥
अलक तिलक राजत अकलंकित, मृद-मद-अंक बानी।
खुभिनि जराव-फूल-दुति यौँ, मनु द्वै ध्रुव-गति रजनी ॥
भौंह कमान-समान बान मनु हैँ जुग नैन अनी।
नासा तिल-प्रसून, बिंबाधर, अमल कमल बदनी ॥
चिबुक मध्य मेचक-रुचि राजत, बिंदु कुंद-रदनी।
कंबु-कंठ-बिधि लोक बिलोकत, सुंदरि एक गनी ॥
बाहु-मृनाल, लाल कर पल्लव, मद-गज-गति गवनी।
पति-मन-मनि-कंचन-संपुट कुच, रोमराज तटनी ॥
नाभि-भँवर, त्रिवली-तरंग गति, पुलिन-तुलिन टटनी।
कृस-कटि, पृथु-नितंब, किंकिनि जुत, कदलि-खंभ-जघनी ॥
रचि आभरन सिँगार, अंग सजि, ज्यौँ रति पति सजनी।
जीते सूर स्याम गुन कारन, सुख न सुन्यौ लजनी ॥
॥ २१८४ ॥ २८०२ ॥

राग बिलावल

नंद-नँदन बस कीन्हे राधा, भवन गए चित नैँकु न लागत।
स्याम स्यामा रूप मंदिर सुख, अंतर तैँ सो नैँकु न त्यागत ॥

जा कारन बैकुंठ बिसारत, निज स्थल मन मैं नहिं भावत।
राधा कान्ह देह धरि पुनि पुनि, जा सुख कौं बृंदावन आवत ॥
बिछुरन मिलन बिरह सँयोग-सुख, नूतन दिन दिन प्रीति प्रकासत।
सूर स्याम स्यामा बिलास रस, निगम् नेति कहि-कहि नित भाषत ॥
॥ २१८५ ॥ २८०३ ॥

राग कान्हरौ

राधा-प्रान गोवर्धनधारी।
कनक लता अरु चंपकली तनु हरहिं प्रान-धन राधा प्यारी ॥
मरकत मनि नँदलाल लाडिलौ, कंचन तनु बृषभानु-दुलारी।
सूर स्याम प्रिय प्रीति परस्पर जोरी जुगल बनी बनवारी ॥
॥ २१८६ ॥ २८०४ ॥

राग टोड़ी

निगम नेति निन गावत जाकौं। राधा बस कीन्हौ है ताकौं ॥
निसि बनधाम संग रहे दोऊ। इक मँग नैंकु टरे नहिं कोऊ ॥
प्रात गए घर घर रस पागे। अरस परस दोऊ अनुरागे ॥
अपनी अपनी दसा बिचारैं। भाग बडे कहि बारंबारैं ॥
प्यारी फेरि अभूषन साजति। बैठी रंग महल मैं राजति ॥
ज्यौं चकोर चंदा कौं आतुर। त्यौं नागरि बस गिरिधर चातुर ॥
आए उझकि झरोखैं झाँक्यौ। करत सिंगार सुंदरिहिं ताक्यौ ॥
जाल रंध्र मग नैन लगायौ। सूर स्याम मन कौ फल पायौ ॥
॥ २१८७ ॥ २८०५ ॥

राग टोडी

आधौ मुख नीलाबर सौं ढँकि, बिथुरी अलकैं सोहैं।
एक दिसा मनु मकर चाँदनी, घन बिजुरी मन मोहै ॥
कबहुँ केस पाछे लै डारति, निकसन ससि ज्यौं जोहै।
सूर स्याम प्यारी छबि देखत, त्रिभुवन उपमा को है ॥
॥ २१८८ ॥ २८०६ ॥

राग टोडी

दरपन लै कजराहिं सँवारत।
सीस फूल अति लसत नग जर्‍यौ, ता पर सेस सीस मनि वारत ॥

करनफूल कर लिएँ सँवारति, वँदी बुंद ललाट सुधारत।
सूर स्याम दुरि देखत दरपन, मुख तैं इकटक पलक न टारत॥
॥२१८९॥२८०७॥

राग गुंडमलार

करति श्रृंगार वृषभानु-बारी।
रहे इकटक जाल रंध्र मग हेरि कै, स्याम-मन भावती परम प्यारी॥
कबहुँ वेनी रचति फूल सौं मिलै कच, कबहुँ रचि माँग मोतिनि सँवारै।
कबहुँ राखति सीसफूल लटकाइ कै, कबहुँ वदन बिंदु भाल भारै॥
कबहुँ केसरि-आड़ रचति दर्पन हेरि, कबहुँ भ्रुव निरखि रिस करि सकारै।
निरखि अपनौ रूप आपु ही बिबस भई, सूर परछाँहिँ कौं नैन जोरै॥२१९०॥२८०८॥

राग टोड़ी

यह सुंदरी कहाँ तैं आई।
बार-बार प्रतिबिंब निहारति, नागरि मन-मन रही लुभाई॥
कर तैं मुकुर दूरि नहिं डारति, हृदय माँझ कछु रिस उपजाई।
देखैं कहूँ नैन भरि याकौं नागर सुंदर कुँवर कन्हाई॥
मेरी कहा चलै या आगैं, यह धौं आजु अरस तैं आई।
सूरदास याकौं या ब्रज मैं, ऐसी को बैरिनि जो ल्याई॥
॥२१९१॥२८०९॥

राग हमीर

मुकुर छाँह निरखि देह की दसा गँवाई।
बोली धौं कौन की, आपुन हीं गवन कियौ, ऐसी को बैरिनि है याँ ब्रज मैं माई॥
थकी अँग अँग निरखि, बार बार रहै परखि, ललिता चंद्रावलि कहँ इतनी छबि पाई।
मन मैं कछु कहन चहै, देखत ही ठठुकि रहै, सूर स्याम निरखत दुति, तन सुधि बिसराई॥२१९२॥२८१०॥

राग बिलावल

कहति छाँह सौं नागरी, को है तू माई।
मिली नहीं ब्रज-गाँव मैं, री कहँ तैं आई॥
नाम कहा है सुंदरी, कहि सौंह दिवाई।
कहौ न मेरैं साथ है मुख बचन सुनाई॥
दिननि हमहुँ तुम सरबरी, तुव छवि अधिकाई।
और संग नहिं कोउ लई, यह कहि डरपाई॥
जानति हौं यह नहिं सुनी, ह्याँ की अधमाई।
अभरन लेत छँड़ाइ कै, ब्रज ढीट कन्हाई॥
सदन जाहु मेरे कहैं, पट अंग छपाई।
सूर स्याम जो देखिहैं, करिहैं बरियाई॥२१९३॥२८११॥

राग धनाश्री

मैं उनके गुन नीकैं जानति।
सदन जाहु मरजादा जैहै, कह्यौ न काहैं मानति॥
अपनी दसा कहौं तव आगैं, जैसी बिपति बनाई।
मथुरा चली जाति दधि बेंचन, घेरि लई उन आई॥
गोरस लियौ, अभूषन छीने, हम अनेक तुम एक।
सूर स्याम जो देखन पैहैं, करिहैं अपनी टेक॥
॥२१९४॥२८१२॥

राग बिलावल

तेरे हित कौं कहति हौं, मानै जनि मानै।
तू आई है आजु हीं, उनकौं का जानै॥
ऐसौ ढीट नहीं कहूँ, त्रिभुवन मैं माई।
नारि पराई देखि कै, हँसि लेत बुलाई॥
सो अपने सहजहिं मिले, उनके गुन ऐसे।
भूषन लेत नगाइ कै, औरो गुन नैसे॥
काहू कौं नहिं डरपहीं, मथुरा-पति धरकै।
मन कौ भायौ करत है, कबहूँ नहिं हरकै॥
तुम सुंदरि काकी बधू, घर जाहु सवारी।
सूर स्याम सुनि सुनि हँसैं मनहीं मन भारी॥
॥२१९५॥२८१३॥

राग मारू

नागरी चरित पिय चकित भारी।
अंग की छवि निरखि प्रथमहीं बिबस ह्वै, बिंब निरखत देह सुधि बिसारी॥
एक राधा दूसरी वाहि जानि जिय, नागरी पास आवत लजाहीं।
नैन ठहराइ-ठहराइ पुनि-पुनि रहैं कहैं नहिं कछू हरषत डराहीं॥
पुनि उठत जागि देखैं मुकुर, नारि-कर, ललचाल अंक भरि लैन लोरैं।
सूर प्रभु भावती के सदा रस भरे, नैन भरि-भरि प्रिया रूप चोरैं॥
॥२१९६॥२८१४॥

राग गुंडमलार

धन्य हरि नैन, धनि रूप-राधा।
धन्य वह मुकुर, धनि धन्य प्रतिबिंब मुख, धन्य दंपति रहत वेष राधा॥
धन्य सिगार, धनि धन्य निरखनि-स्याम, धन्य छवि-लूट लूटत मुरारी।
सूर प्रभु चतुर चतुरा नवल नागरी, रहे प्रतिबिंब पर नैन धारी॥
॥२१९७॥२८१५

राग केदारौ

(स्यामा जू) अपनौ रूप देखि रीझति है, नैंकहु दर्पन दूरि न करति।
अपनी छवि निहारि तन वारति, बिबस बिबके पायनि परति।
कबहूँ स्याम सकुच मानति जिय, वासौं प्रीति करै जनि, डरति।
सूर स्याम न्यारे ह्वै प्रिय छवि, निरखत, दृष्टि न इत उत टरति॥
॥२१९८॥२८१६॥

राग आसावरी

नाम कहा सुंदरी तुम्हारौ, क्यों मोसौं नहिं बोलति हौ।
हँसि हँसति चितएँ चितवति तुम, तन डोलैं तन डोलति हौ॥
परम चतुर मैं जानति तुम कौं, मो पर भौंह मरोरति हौ।
लटकति सुभग नासिका बेसरि, पुनि-पुनि बदन सकोरति हौ॥

अरुन अधर चितहरन चिबुक अति, दामिनि दसन लजावति हौ।
ऐसे मुख की बचन माधुरी, काहैं न हमहिं सुनावति हौ॥
कहौ बचन काकी तुम घरनी, काके मन कौं चोरति हौ।
सुनहु सूर सहजहिं की धौं रिस, मोसौं लोचन जोरति हौ॥
॥२१९९॥२८१७॥

राग सोरठा

कछु रिस कछु नागरि जिय धरकी।
यह तौ जोबन रूप गहीली, संका मानति हरि की॥
यह बिपरीत होन अब चाहत, ब्रज मैं आइ समानी।
यह तौ गुननि उजागरि नागरि, वै तौ चतुर बिनानी॥
कर दर्पन प्रतिबिंब निहारति, चकित भई सुकुमारी।
सूर स्याम निरखत गवाच्छ-मग, नागरि भोरी-भारी॥
॥२२००॥२८१८॥

राग बिलावल

सुता बिबस बृषभानु की, देखी गिरिधारी।
लोचन इकटक दै रही, प्रतिबिंब निहारी॥
अपनी छबि पर आपनौ, तन-मन-धन वारै।
बार-बार हा हा करै, तिय नाम न सारै॥
बूझति ताकौं कौन की, को है री प्यारी।
मैं देखी तोहिं आजुहीं, सुदरि गुन-भारी।
त्रिभुवन मैं कोऊ नहीं, तेरी उपमा री।
यह कहि मुख, मन सोचई, भई सौति हमारी॥
दृष्टि परै जनि स्याम कैं, तबहीं बस ह्वैहैं।
सोच करै पछिताति है, सँगहीं सँग रैहैं॥
ऐसी सुदर नारि कौं, जबहीं वै पैहैं।
दोउ भुज भरि अँकवारि कै, हँसि कंठ लगैहैं॥
यह बैरिनि मोकौं भई, धौं कहँ तैं आई।
मो तन इक टक हेरई, मैं रही लजाई॥
स्यामहिं बस करि लेहिगी, मैं जानी माई।
देखि दसा प्रतिबिंब की, यह बाम भुलाई॥

इकटक नैन टरैं नहीं, छवि की अधिकाई।
पिय हरषे आनँद भरे, सोभा यह पाई ॥
कबहुँ चलत तिय पास कौं, फिरि रहत लुभाई।
सूर स्याम तृन तोरहीं, मन मन मुसुकाई ॥

॥२२०१॥२८१९॥

राग विहागरौ

नागरि रही मुकुर निहारि।
आनि औचक नैन मूँदे, कमल-कर गिरिधारि ॥
चौंकि चकित भई मन मैं, स्याम कौं जिय जानि।
मैं डरति ही अबहिं जाकौं, मिले ताकौं आनि ॥
तबहिं तन की सुरति आई लख्यौ तन प्रतिछाँहिं।
सकुच मनहीं मन दुरावति, परस्पर मुसुकाहिं ॥
समुझि मन मैं कहति सखियनि, विपुल लै लै नाम।
सूर प्रभु उर सीस परसे, बीच बेनी स्याम ॥

॥२२०२॥२८२०॥

राग गौरी

मूँदि रहे पिय प्यारी-लोचन।
अति हित बेनी उर परसाए, बेष्टित भुजा अमोचन ॥
कंचन-मनि-सुमेर अँग दोऊ, सोभा कही न जाइ।
मनौ पन्नगी निकसि बीच रही, हाटक-गिरि लपटाइ ॥
चपल नैन दीरघ अति सुंदर, खंजन तैं अधिकाइ।
अति आतुर भए कारन धाई, धरत फनहिं न समाइ ॥
मन हरषति, मुख खिझति सखिनि कहि चतुर-चतुरई भाव।
सूर स्याम मनकामनि के फल, लूटत हैं इहिं दाव ॥

॥२२०३॥२८२१॥

राग रामकली

करत मन-काम-फल-लूट दोऊ।
रहे दोउ नैन पिय मूँदि कोमल करनि, बरनि नहिं सकत वह उपम कोऊ ॥

हृदय भरि बाम सुख धाम मोहन-काम, मनौ घन दामिनी कोर लीन्हे।
महा आनंद सुख सिंधु उच्छलत दोउ, सूर-प्रभु नागरी तुरत चीन्हे ॥२२०४॥२८२२॥

राग कान्हरौ

बैठी रही कुँवरि राधा, हरि अँखिया मूँदी आइ।
अतिहिं बिसाल चपल अनियारी, नहिं पिय-पानि समाइ।
खन खोलत खन ढाँकत, नागरि, मुखरिस मन मुसुकाइ।
ज्यौं मनिधर मनि छाँडि बहुरि फिरि, फन-तरधरत छपाइ ॥
स्याम अँगुरियनि अंतर राजति, आतुर दुरि दरसाइ।
मानौ मरकत मनि पिंजरनि मैं बिबि खंजन अकुलाइ ॥
कर कपोल बिच सुभग तरयौना, सोभा बढ़ी सुभाइ।
मनु सरोज द्वै मिलत सुधानिधि, बिबि रबि संग सहाइ ॥
अपनैं पानि पकरि मोहन के कर धरि लिये छँडाइ।
कमल-चकोर चचरि ज्यौं, दै ससि दिनकर जुरति सगाइ ॥
उपमा काहि देउँ को लायक, देखी बहुत बनाइ।
सूरदास प्रभु दंपति देखत, रति स्यौं काम लजाइ ॥
॥२२०५॥२८२३॥

राग गुंडमलार

स्याम भुज बाम गहि सँमुख आने।
भले जू भले मैं सखी धोखैं रही, मूँदि लोचन रहे अति पिराने ॥
दौरि पैठे भवन, कबहिं कीन्हौ गवन, नारि-मन-रवन तुम हौ कन्हाई।
सूर-प्रभु हरषि भरि अंक प्यारी लई, मुकुर की कथा तब कहि सुनाई ॥२२०६॥२८२४॥

राग गूजरी

नागरि यह सुनि कै मुसुकानी।
को जानै पिय महिमा तुम्हरी, नैननि चितै लजानी ॥
मैं बैठी प्रतिबिंब बिलोकति, अपनैं सहज सुभाइ।
आपुन कहा अचानक आए, तुब गति लखी जाइ ॥

इक सुंदर दूजैं अति नागर, तीजैं कोक प्रवीन।
सूरदास-प्रभु अबहीँ तौ तुम, जसुमति-सुवन नवीन॥
॥२२०७॥२८२५॥

राग बिलावल

हँसत चले तब कुँवर कन्हाई।
मन के करे मनोरथ पूरन, राधा के सुखदाई॥
उत हरषत हरि भवन सिधारे, नागरि हरष बढ़ाई।
इत आवति सुधि मुकुर-विलोकनि, जब तब रहति लजाई॥
इहिँ अंतर सखियनि सँग लीन्हे चंद्रावलि तहँ आई।
सूर तुरत राधिका सबनि कौं, आदर करि बैठाई॥
॥२२०८॥२८२६॥

राग रामकली

अति आदर सौं बैठक दीन्हौ।
मेरैं गृह चंद्रावलि आई, अति हीँ आनँद कीन्हौ॥
स्याम-संग-सुख प्रगट्यौ चाहति, पुनि धीरज धरि राखति।
जोइ जोइ कहति वचन गदगद सौं, बार-बार मुख भाषति॥
सखी संग की कहति राधिका, आजु कहा तैं पायौ।
सुनहु सूर इतने आदर सौं, कबहूँ नहीँ बुलायो॥
॥२२०९॥२८२७॥

राग आसावरी

हम तुम्हरैं नितहीँ प्रति आवतिं, सुनहु राधिका गोरी।
ऐसौ आदर कबहुँ न कीन्हौ, मेरी अलकसलोरी॥
काहैं आजु हरष जिय उपज्यौ, कहा विभव तुम पायौ।
कीधौं आजु मिले नँद-नंदन, पिछलौ दुख बिसरायौ।
उमँग्यौ प्रेम रहत नहिँ रोकैं, सखियनि कहति सुनावै॥
सूर स्याम मो भवन पधारे, यह कहि कहि मन भावै॥
॥२२१०॥२८२८॥

राग बिहागरौ

आए स्याम मेरैं गेह।
कही जाति न सखी मोपैं, मिले जौन सनेह॥

करति अंग-सिंगार बैठी, मुकुर लीन्हे हाथ।
आइ पाछैं भए ठाढ़े, चतुर वर ब्रजनाथ॥
भाव इक मैं कियौ भोरैं, कहत ताहि लजाउँ।
निरखि अपनी छाँह कौं तिय, और जानि डराउँ॥
जाल-रंध्रनि रहे ठाढे, निरखि कौतुक स्याम।
नैन औचक आनि मूँदे, सुनहु हरिके काम॥
देति हौं उरहनौ तुमकौं, भए डोलत चोर।
सूर-प्रभु आए अचानक, भवन बैठी भोर।

॥२२११॥२८२९॥

राग बिलावल

स्याम संग सुख लूटति हौ
सुनि राधे रीझे हरि तोकौं, अब उनतैं तुम छूटति हौ॥
भली भई हरिकैं रस पागी, वै तुमसौं रति मानत हैं।
आवत जात रहत घर तेरैं अंतर हित पहिचानत हैं॥
तुम अति चतुर, चतुर वे तुम तैं, रूप गुननि दोउ नीके हौ।
सूरदास स्वामी स्वामिनि दोउ, परम भावते जी के हौ॥

॥२२१२॥२८३०॥

राग अडानौ

भली भई मेरे लालन आए, फूले अंग न आजु समाई।
गाइ बजाइ प्रेम भरि नाचौं, तन मन धन मैं देउँ बधाई॥
धनि धनि भाग, सुहाग धन्य, अरु धन्य धन्य अनुराग कन्हाई।
धनि धनि रैन धन्य दिन ऐसौ, धन्य घरी फल धनि मैं पाई॥
धन्य देह धनि गेह सखी री, धनि सिंगार प्रतिबिंब भुलाई।
धनि धनि सूर नैन मूँदे कर, धनि अवलोकनि पिय-सुखदाई॥

॥२२१३॥२८३१॥

राग ईमन

धनि-धनि आवत हैं मेरे लालन, भाग बडे री मेरे।
दरस देखि अति हौं सुख उपजत, अरु सनमुख जब हेरैं॥
तब मैं हँसति मद मुसुकत जब, आनँद आवत नेरैं॥
सूरदास प्रभु की सूरति जिय, टरति न साँझ सवेरैं॥

॥२२१४॥२८३२॥

राग ईमन

स्याम अचानक आए री।
पाछे तैं लोचन दोउ मूँदे, मोकौं हृदय लगाए री॥
लहनौ ताकौ जाकैं आवैं, मैं वड़भागिनि पाए री।
यह उपकार तुम्हारौ सजनी, रूसे कान्ह मिलाए री॥
ल्याई तुरत जाइ ब्रज-नागर, जे अपराध छमाए री।
सूरदास प्रभु नैननि लागे, भावत नहिं विसराए री॥
॥ २२१५ ॥ २८३३ ॥

नैन समय के पद *राग टोड़ी*

हरि अनुराग भरीं ब्रजनारी। लोक सकुच कुलकानि विसारी॥
सासु ननद हारी दै गारी। सुनति नहीं कोउ कहति कहा री॥
सुत-पति-नेह जगत यह जोरयौ। ब्रज तरुनिनि तिनुका सौं तोरयौ॥
कॉचौ सूत तोरि सो डार्यौ। उरग कैंचुरी फिरि न निहार्यौ॥
ज्यौं जलधार फिरै तृन नाहीं। जैसैं नदी समुद्र समाहीं॥
जैसै सुभट खेत चढ़ि धावै। जैसैं सती वहुरि नहिं आवै॥
ऐसैं भजीं नंद-नंदन कौं। सकुचीं नहिं त्यागत गृह जन कौं॥
सूरज-प्रभु-वस घोप-कुमारी। ज्यौं गज पंक न सकै निवारी॥
॥ २२१६ ॥ २८३४ ॥

राग सोरठ

इहिं अंतर तिहिं खोरिहीं नँद-नंदन आए।
सखिनि सहित ब्रज-नागरी, फल विनु टक लाए॥
मोर मुकुट सिर सोहई, स्रवननि वर कुंडल।
ललित कपोलनि झलमलै, सुंदर अति निर्मल॥
तरुनि गईं चकचौंधि कैं, नहीं नैन थिराहीं।
सूर स्याम-छवि निरखि कै, जुवती भरमाहीं॥
॥ २२१७ ॥ २८३५ ॥

राग सोरठ

देखे स्याम अचानक जात।
ब्रज की खोरि अकेले निकसे, पीतांवर कटि पर फहरात॥
लटकत मुकुट मटक भौंहनि की, चटकत चलत मंद मुसुकात।
पग द्वै जात वहुरि फिरि हेरत, नैन-सैन दैकै नँद-तात॥

निरखत नारि-निकर बिथकित भईं, दुख-सुख ब्याकुल झुरत सिहात ।
सूर-स्याम-अँग-अंग-माधुरी, चमकि चमकि चकचौंधति गात ॥
॥ २२१८ ॥ २८३६ ॥

राग सारंग

सघन कल्पतरु-तर मनमोहन ।
दच्छिन चरन चरन पर दीन्हे, तनु त्रिभंग कीन्हे मृदु जोहन ॥
मनिमय-जटित मनोहर कुंडल, सिखी-चंद्रिका सीस रही फबि ।
मृगमद-तिलक, अलक घुँघरारी, उर बनमाल कहाँ जु कहै छबि ॥
तनु घन स्याम, पीत पट सोभित, हृदय पदिक की पाँति दिपति दुति ।
तनु बन धातु बिचित्र बिराजति, बसी अधरनि धरे ललित गति ॥
करज मुद्रिका, कर कंचन-छबि, कटि किंकिनि, पग नूपुर भ्राजत ।
नख सिख-कांति बिलोकि सखी री, ससि अरु भानु मगन तनु लाजत ॥
नख-सिख-रूप अनूप बिलोकत, नटवर-बेप धरे जु ललित अति ।
रूप-रासि जसुमति कौ ढोटा, बरनि सकै नहिं सूर अलप-मति ॥
॥ २२१९ ॥ २८३७ ॥

राग सोरठ

लोचन हरत अंबुज-मान ।
चकित मनमथ सरन चाहत, धनुप तजि निज बान ॥
चिकुर कोमल कुटिल राजत, रुचिर बिमल कपोल ।
नील-नलिन सुगंध ज्यौं, रस-थकित मधुकर लोल ॥
स्याम उर पर परम सुंदर, सजल मोतिनि हार ।
मनो मरकत-सैल तैं, बहि चली सुरसरि-धार ॥
सूर कटि पटपीत राजत, सुभग-छबि नँद-लाल ।
मनौ कनक-लता-अवलि बिच, तरल बिटप तमाल ॥
॥ २२२० ॥ २८३८ ॥

राग रामकली

मोहन (माई री) हठ करि मनहिं हरत ।
अंग-अंग प्रति और-और गति, छिनु-छिनु अतिहीं छबि जु धरत ॥

सुंदर सुभग स्याम कर दोऊ तिनसौं मुरली अधर धरत।
राजत ललित नील कर-पल्लव, उभय उरग ज्यौं सुभट लरत।
कुंडल मुकुट भाल गोरोचन, मनौ सरद ससि उदय करत।
सूरदास-प्रभु-तनु अवलोकत, नैन थके इत उत न टरत॥
॥२२२१॥२८३९॥

राग रामकली

मन तौ हरिहीं हाथ बिकान्यौ।
निकस्यौ मान गुमान सहित वह, मैं यह होत न जान्यो॥
नैननि साटि करी मिलि नैननि, उनहीं सौं रुचि मान्यौ।
बहुत जतन करि हौं पचिहारी, फिरि इत कौं न फिरान्यौ॥
सहज सुभाइ ठगौरी डारी, सीस, फिरत अरगानौ।
सूरदास प्रभु-रस-बस गोपी, बिसरि गयौ तनु मानौ॥
॥२२२२॥२८४०॥

राग सोरठ

मन तौ गयौ नैन हे मेरे।
अब इनसौं वह भेद कियौ कछु, येउ भए हरि चेरे॥
तनक सहाइ रहे हे मोकौं, येउ इंद्रिनि मिलि घेरे।
क्रम-क्रम गए कह्यौ नहिं काहू, स्याम संग अरुझे रे॥
ज्यौं दिवाल गीली पर काँकर, डारत ही जु गड़े रे।
सूर लटकि लागे अँग छवि पर, निठुर न जात उखेरे॥
॥२२२३॥२८४१॥

राग बिहागरौ

सजनी मनहि अकाज कियौ।
आपुन जाइ भेद करि हरि सौं, इंद्रिनि बोलि लियौ॥
मैं उनकी करनी नहिं जानी, मोसौं बैर कियौ।
जैसैं करि अनाथ मोहिं त्यागी, ज्यौं त्यौं मानि लियौ॥
अब देखौं उनकी निठुराई, सो गुनि भरत हियौ।
सूरदास ये नैन रहे हैं, तिनहूँ कियौ बियौ॥
॥२२२४॥२८४२॥

राग बिहागरौ

मेरैं जिय यहई सोच पर्‌यौ।
मन के ढंग सुनौ री सजनी, जैसे मोहिं निदर्‌यौ॥
आपुन गयौ पच सँग लीन्हे, प्रथमहिं यहै कर्‌यौ॥
मोसौं बैर, प्रीति करि हरि सौं, ऐसी लरनि लर्‌यौ॥
ज्यौं त्यौं नैन रहे लपटाने, तिनहूँ भेद भर्‌यौ।
सुनहु सूर अपनाइ इनहुँ कौं, अब लौं रह्यौ उर्‌यौ॥
॥ २२२५ ॥ २८४३ ॥

राग गौरी

मन बिगर्‌यौ येउ नैन बिगारे।
ऐसौ निठुर भयौ देखौ री, तब तैं टरत न टारे॥
इद्री लई, नैन अब लीन्हे, स्यामहिं गीधे भारे।
ये सब कहा कौन हैं मेरे, खानाजाद बिचारे॥
इतने तैं इतने मैं कीन्हे, कैसैं आजु बिसारे।
सुनहु सूर जे आपुस्वारथी, ते आपुनहीं मारे॥
॥ २२२६ ॥ २८४४ ॥

राग गौरी

आपु स्वारथी की गति नाहीं॥
ते बिधना काहैं अवतारे, जुवती गुनि पछिताहीं॥
जनमे संग, संग प्रतिपाले, संगहि वड़े भए हैं।
जब उनकौ आसरौ करयौ जिय, तबहीं छोडि गए हैं॥
ऐसे हैं ये स्वामिकारजी, तिनकौं मानत स्याम।
सुनहु सूर अब प्रगटहिं कहियै, ऐसे उनके काम॥
॥ २२२७ ॥ २८४५ ॥

राग कान्हरौ

हम तैं गए उनहुँ तैं खोवैं।
ह्वाँ तैं खेदि देहिं वै हम तन, हम उन तन नहिं जोवैं॥
जैसी दसा हमारी कीन्ही, तैसैं उनहिं बिगोवैं।
भटके फिरे द्वार द्वारनि सब, हम देखैं वै रोवैं॥

आवहु यहै मतौ री करियै, निधरक ह्वै सुख सोवैं।
सूर स्याम कौं मिले जाइ कै, कैसैं उनकौं धोवैं॥
॥ २२२८ ॥ २८४६ ॥

राग धनाश्री

मन कैं भेद नैन गए माई।
लुब्धे जाइ स्यामसुंदर-रस, करी न कछू भलाई॥
जबहीं स्याम अचानक आए, इकटक रहे लगाई।
लोक-सकुच, मरजादा कुल की, छिनहीं मैं बिसराई॥
व्याकुल फिरति भवन बन जहँ-तँह, तूल आक उधराई।
देह नहीं अपनी सी लागति, यह है मनौ पराई॥
सुनहु सखी मन के ढँग ऐसे, ऐसी बुद्धि उपाई।
सूर स्याम लोचन बस कीन्हे, रूप-ठगौरी लाई॥
॥ २२२९ ॥ २८४७ ॥

राग नट

नैन न मेरे हाथ रहे।
देखत दरस स्याम सुंदर कौ, जल की ढरनि बहे॥
वह नीचे कौं धावत आतुर, वैसेहि नैन भए।
वह तौ जाइ समात उदधि मैं, ये प्रति अंग रए॥
वह अगाध कहुँ वार पार नहिं, येउ सोभा नहिं पार।
लोचन मिले त्रिबेनी ह्वैकै, सूर समुद्र अपार॥
॥ २२३० ॥ २८४८ ॥

राग बिहागरौ

मन तैं ये अति ढीठ भए।
वह तौ आइ मिलत है कबहूँ, ये जु गए सु गए॥
ज्यौं भुजंग काँचुरी बिसारत, फिरि नहिं ताहि निहारत।
तैसैं हि जाइ मिले इक टक ह्वै, डारत लाज निवारत॥
इंद्रिनि सहित मिल्यौ मन तबहीं, नैन रहे मोहिं सालत।
सूर स्याम-सँगहीं-सँग डोलत, औरनि के घर घालत॥
॥ २२३१ ॥ २८४९ ॥

राग सोरठ

लोचन गए निदरि कै मोकौं।
तोहूँ कौं ब्यापी री माई, कहा कहति है सोकौं।।
मैं आई दुख कहन आपनौ, तेरैं दुख अधिकारी।
जैसैं दीन दीन सौं जाँचै, बृथा होइ स्रम भारी।।
मन अपनौ बस कैसेहुँ कीजै, याही तैं सचु पावै।
सूरदास इंद्रिनि समेत वह, लोचन अबहिं मँगावै।।
।। २२३२ ।। २८५० ।।

राग सोरठ

नैना नीकैं उनहि रए।
मन जब गयौ नहीं मैं जान्यौ, ये दोउ निदरि गए।।
ये तौ भए भावते हरि के, सदा रहत इन माहीं।
कर मीड़तिं सिर धुनतिं नारि सब, यह कहि-कहि पछिताहीं।।
मूरख कैं ज्यौं बुद्धि पाछिली, हमहूँ करि दियो आगैं।
अब तौ मिले सूर के प्रभु कौं, पावति हो अब माँगैं।
।। २२३३ ।। २८५१ ।।

राग गौरी

नैना नहिं आवैं तुव पास।
कैसैंहू करि निकसे ह्याँ तैं, अतिहीं भए उदास।।
अपने स्वारथ के सब कोई, मैं जानी यह बात।
यह सोभा सुख लूटि पाइ कै, अब वह काहि पत्यात।।
षटरस व्यजन त्यागि कहौ को, रूखी रोटी खात।
सूर स्याम रस-रूप माधुरी, एते पर न अघात।।
।। २२३४ ।। २८५२ ।।

राग जैतश्री

नैन परे रस-स्याम-सुधा मैं।
सिव सनकादि, ब्रह्म, नारद मुनि, ये लुब्धे हैं जामैं।।
ऐसौ रस बिलसत नाना बिधि, खात, खवावत, डारत।
सुनहु सखी वैसी निधि तजि कै, क्यौं वै तुमहिं निहारत।।

जिनि वह सुधा-पान सुख कीन्हौ, ते कैसैं दुख देखत।
त्यौं ये नैन भए गरबीले, अब काहैं हम लेखत॥
काहे कौं अपसोस मरति हौ, नैन तुम्हारे नाहीं।
जाइ मिले सूरज के प्रभु कौं, इत उत कहूँ न जाहीं॥
॥२२३५॥२८५३॥

राग भैरव

नैन परे हरि पाछैं री।
मिले अतिहिं अतुराइ स्याम कौं, रीझे नटवर काछैं री॥
निमिष नहीं लागत इकटकहीं, निसि-बासर नहिं जानत री॥
निरखत अंग-अंग की सोभा, ताही पर रुचि मानत री॥
नैन परे परबस री माई, उनकौं इनि बस कीन्हे री।
सूरज-प्रभु सेवा करि रिझए, उनि अपने करि लीन्हे री।
॥२२३६॥२८५४॥

राग कल्यान

नैना हरि अंग रूप लुब्धे री माई।
लोक लाज, कुल की मरजादा, बिसराई॥
जैसैं चंदा चकोर, मृगी नाद जैसैं॥
कंचुरि ज्यौं त्यागि फनिग, फिरत नहीं तैसैं॥
जैसैं सरिता-प्रवाह सागर कौं धावै।
कोऊ स्रम कोटि करै, तहाँ फिरि न आवै॥
तनु की गति पंगु किये, सोचति ब्रजनारी।
तैसैं ये मिले जाइ, सूरज प्रभु ढारी॥
।२२३७॥२८५५॥

राग कल्यान

लोचन भए स्यामहिं बस, कहा करौं माई।
जितहीं वै चलत तितहीं, आपु जात धाई॥
मुसुकनि दै मोल लिए, किये प्रगट चेरे।
जोइ जोइ वै कहत, करत, रहत सदा नेरे॥
उनकी परतीति स्याम, मानत नहिं अबहूँ।
अलकनि रजु बाँधि धरे, भाजैं जिनि कबहूँ॥

मन लै इनि उनहिं दियौ, रहत सदा सँगहीं।
सूर स्याम रूप रासि, रीझे वा रँगहीं॥
॥२२३८॥२८५६॥

राग बिहागरौ

नैना भए बजाइ गुलाम।
मन बेंच्यौ लै वस्तु हमारी, सुनहु सखी ये काम॥
प्रथम भेद करि आयौ आपुन, माँगि पठायौ स्याम।
बेंचि दिये निधरक हरि लीन्हे, मृदु मुसुकनि दै दाम॥
यह बानी जहँ तहँ परकासी, मोल लए कौ नाम।
सुनहु सूर यह दोष कौन कौ, यह तुम कहौ न बाम॥
॥२२३९॥२८५७॥

राग मारू

कियौ यह भेद मन, और नाहीं।
पहिलैं ही जाइ हरि सौं कियौ, भेद उहिं और बेकाज कासौं बताहीं॥
दूसरैं आइ कै इंद्रियनि लै गयौ, ऐसौ अपदाँव सब इनहिं कीन्हे।
मैं कह्यौ नैन मोकौं सँग देहिंगे, इनहु लै जाइ हरि हाथ दीन्हे॥
जो कछू कियौ सो मनहिं सब करत है, इहाँ कछु स्याम कौ दोष नाहीं।
सूर प्रभु नैन लै मोल अपबस किये, आपु बैठे रहत तिनहिं माहीं॥२२४०॥२८५८॥

राग बिलावल

कहा भए जो ऐसे लोचन, मेरैं तौ कछु काज नहीं।
मैं तौ व्याकुल भई पुकारति, वै सँग लै जु गए मनहीं॥
त्रिभुवन मैं अति नाम जगायौ, फिरत स्याम-सँगहीं सँगहीं।
अपनैं सुख कौं कहा चाहियै, बहुरि न आए मो-तनहीं॥
सो सपूत परिवार चलावै, ये तौ लोभी धिक इनहीं।
एते पर ये सूर कहावत, लाज नहीं ऐसे जनहीं॥
॥२२४१॥२८५९॥

राग कान्हरौ

इन बातनि कहुँ होति बड़ाई।
लूटत हैं छबि-रासि स्याम की, नोखे करि निधि पाई ॥
थोरे ही मैं उघरि परैंगे, अतिहिं चले इतराई।
डारत खात देत नहिं काहूँ, ओछैं घर निधि आई ॥
यह संपति है तिहूँ भुवन की, सब इनहीं अपनाई।
सूरदास प्रभु सँग लै घोखैं, काहूँ नहीं जनाई ॥
॥ २२४२ ॥ २८६० ॥

राग बिलावल

नैन परे बहु लूटि मैं, नोखैं निधि पाई।
छोह लगति यह समुझि कै, इन हमहिं जिवाई ॥
इनकैं नैंकु दया नहीं, हम पर रिस पावैं।
स्याम अछय निधि पाइ कै, तउ कृपिन कहावैं ॥
ऐसे लोभी ये भए, तब इनहिं न जान्यौ।
संगहि संग सदा रहैं अति हित करि मान्यौ ॥
जैसी हमकौं इनि करी, यह करै न कोई।
सूर अनल कर जो गहै, डाढ़ै पुनि सोई ॥
॥ २२४३ ॥ २८६१ ॥

राग कान्हरौ

नैन आप ने घर के री।
लूटन देहु स्याम-अँग सोभा, जो हम पर वै तरके री ॥
यह जानी नीकैं करि सजनी, नहीं हमारे डर के री।
वै जानत हम सरि को त्रिभुवन, ऐसे रहत निधरके री ॥
ऐसी रिस आवति है उनपर, करैं उनहिं घर-घर के री।
सूर स्याम के गर्ब भुलाने, वै उनपर हैं ढरके री ॥
॥ २२४४ ॥ २८६२ ॥

राग गौरी

नैना कह्यौ न मानैं मेरौ।
मो घरजत-घरजत उठि धाए, बहुरि कियौ नहिं फेरौ ॥

निकसे जल-प्रवाह की नाईं, पाछैं फिरि न निहार्यौ।
भव-जंजाल तोरि तरु वनके, पल्लव हृदय विदार्यौ॥
तबहीं तैं यह दसा हमारी, जब येऊ गए त्यागि।
सूरदास-प्रभु सौं वै लुबधे, ऐसे बड़े सभागि॥
॥ २२४५ ॥ २८६३ ॥

राग टोडी

इन नैननि मोहिं बहुत सतायौ।
अब लौं कानि करी मैं सजनी, बहुतैं मूँड़ चढ़ायौ॥
निदरे रहत गहे रिस मोसौं, मोहीं दोष लगायौ।
लूटत आपुन श्री अँग-सोभा, ज्यौं निधनी धन पायौ॥
निसिहूँ दिन ये करत अचगरी, मनहिं कहा धौं आयौ।
सुनहु सूर इनकौं प्रतिपालत, आलस नैंकु न लायौ॥
॥ २२४६ ॥ २८६४ ॥

राग रामकली

लोचन भए स्याम के चेरे।
एते पर सुख पावत कोटिक, मोतन फेरि न हेरे॥
हा हा करत, परत हरि-चरननि, ऐसे बस भए उनहीं।
उनकौ बदन विलोकत निसि-दिन, मेरौ कह्यौ न सुनहीं॥
ललित त्रिभंगी छवि पर अँटके, फटके मोसौं तोरि।
सूर दसा यह मेरी कीन्ही, आपुन हरि सौं जोरि॥
॥ २२४७ ॥ २८६५ ॥

राग धनाश्री

हरि छवि देखि नैन ललचाने।
इकटक रहे चकोर चंद ज्यौं, निमिष विसरि ठहराने॥
मेरौ कह्यौ सुनत नहिं स्रवननि, लोक लाज न लजाने।
गए अकुलाइ धाइ मो देखत, नैंकुहुँ नहीं सकाने॥
जैसैं सुभट जात रन सन्मुख, लरत न कबहुँ पराने।
सूरदास ऐसी इनि कीन्ही, स्याम-रंग लपटाने॥
॥ २२४८ ॥ २८६६ ॥

राग गुंडमलार

नैन तौ कहे मैं नहीं मेरे।
बारहीं बार कहि हटकि राखत कितक, गए हरि-संग नहिं रहे घेरे ॥
ज्यौं व्याध-फंद तैं छुटत खग उड़ि चलत, तहाँ फिरि तकत नहिं त्रास माने।
जाइ घन-द्रुमनि मैं दुरत त्यौंहीं गए, स्याम-तनु-रूप-बन मैं समाने।
पालि इतने किये, आजु उनके भए, मोल करि लए अब स्याम उनकौं।
सूर यह कहतिं ब्रजनारि व्याकुल-प्रेम, नैन लै गए पछितातिं मन कौं ॥
॥२२४९॥२८६७॥

राग जैतश्री

नैना हाथ न मेरैं आली।
इत ह्वै गए ठगौरी लावत, सुंदर कमल-नैन बनमाली ॥
वे पाछैं ये आगैं धाए, मैं बरजति बरजति पचिहारी।
मेरैं तन वै फेरि न चितए, आतुरता वह कहौं कहा री।
जैसे बरत भवन तजि भजियै, तैसेहिं गए फेरि नहिं हेरौ।
सूर स्याम रस रसे रसीले, पय पानी को करै निवेरौ ॥
॥२२५०॥२८६८॥

राग रामकली

स्याम रँग रँगे रँगीले नैन।
धोएँ छुटत नहीं यह कैसैंहु, मिले पघिलि ह्वै मैन ॥
औचक ही आँगन ह्वै निकसे, दै गए नैननि सैन।
नख-सिख अंग अंग की सोभा, निरखि लजत सत मैन ॥
ये गीधे नहिं टरत उहाँ तैं, मोसौं लेन न दैन।
सूरज-प्रभु कैं सँग-सँग डोलत, नैकुहुँ करत चैन।
॥२२५१॥२८६९॥

राग ईमन

नैन भए हरिही के।
जब तैं गए फेरि नहिं चितए ऐसे गुन इनिही के ॥

औरं सुनौ इनके गुन सजनी, सोऊ तुमहिं सुनाऊँ।
मोसौं कहत तुहूँ नहिं आवै, सुनत अचंभौ पाऊँ॥
मन भयौ ढीठ, इनहुँ कौं कीन्हौ, ऐसे लोनहरामी।
सूरदास-प्रभु इन्हैं पत्याने, आखिर बड़े निकामी॥

॥२२५२॥२८७०॥

राग बिलावल

नैना लुब्धे रूप कौं, अपनैं सुख माई।
अपराधी अपस्वारथी, मोकौं बिसराई॥
मन इंद्री तहईं गए, कीन्ही अधमाई।
मिले धाइ अकुलाइ कै, मैं करति लराई॥
अतिहिं करी उन अपतई हरि सौं सुपत्याई।
वै इनसौं सुख पाइ कै, अति कर बड़ाई॥
अब वै भरुहाने फिरैं, कहुँ डरत न माई।
सूरज-प्रभु-मुँह पाइ कै, भए ढीठ बजाई॥

॥२२५३॥२८७१॥

राग सारंग

ढीठ भए ये डोलत हैं।
मौन रहत मो पर रिस पाए, हरि सौं खेलत-बोलत हैं॥
कहा कहौं निठुराई इनकी, सपनैंहु ह्याँ नहिं आवत हैं।
लुब्धे जाइ स्याम सुंदर कौं, उनहीं के गुन गावत हैं॥
जैसैं इन मोकौं परितेजी, कबहूँ फिरि न निहारत हैं।
सूर भले कौ भलो होइगौ, वै तौ पथ बिगारत हैं॥

॥२२५४॥२८७२॥

राग बिलावल

सुनि सजनी तू भई अयानी।
या कलियुग की बात सुनाऊँ, जानति तोहिं सयानी॥
जो तुम करौ भलाई कोटिक, सो नहिं मानै कोई।
जे अनभले बड़ाई तिनकी, मानै जोई सोई॥
प्रगट देखि कह दूरि बताऊँ, हमहुँ स्याम कौं ध्यावैं।
सुनहु सूर सब व्याकुल डोलैं, नैन तुरत फल पावैं॥

॥२२५५॥२८७३॥

राग बिलावल

नैन करैं सुख, हम दुख पावैं।
ऐसौ को पर वेदन जानै, जासौं कहि जु सुनावैं॥
तातैं मौन भलौ सबही तैं, कहि कै मान गँवावैं।
लोचन, मन इंद्री हरि कौं भजि, तजि हमकौं सुख पावैं॥
वै तौ गए आपने कर तैं, बृथा जीव भरमावैं।
सूर स्याम हैं चतुर सिरोमनि, तिनसौं भेद जनावैं॥
॥२२५६॥२८७४॥

राग धनाश्री

इन नैननि की कथा सुनावैं।
इनकौ गुन-औगुन हरि-आगैं, तिल-तिल भेद जनावैं॥
इनसौं तुम परतीति बढ़ावत, ये हैं अपने काजी।
स्वारथ मानि लेत रति करि कै, बोलत हाँ जी, हाँ जी॥
ये गुन नहिं मानत काहू कौ, अपनैं सुख भरि लेत।
सूरज प्रभु ये पहिलैं हित करि, फिरि पाछैं दुख देत॥
॥२२५७॥२८७५॥

राग सोरठी

ये नैना यौं आहिं हमारे।
इतने तैं इतने हम कीन्हे, बारे तैं प्रतिपारे॥
धोवति पुनि अचल लै पोंछति आँजति इनहिं बनाइ।
बड़े भए तब लोन मानि यह, जहँ तहँ चलत भगाइ॥
ऐसे सेवक कहाँ पाइहौ, यहै कहैं हरि आगैं।
ये अब ढीठ भए ह्याँ डोलत, इनहिं बनै परित्यागैं॥
सूर स्याम तुम त्रिभुवन-नायक, दुखदायक तुम नाहीं।
ज्यौं त्यौं करि ये हमहिं मिलावहु, यहै कहैं बलि जाहीं॥
॥२२५८॥२८७६॥

राग सूही

नैननि कौं अब नहीं पत्याउँ।
बहुत्यौ उनकौं बोलति हौ तुम, हाय-हाय लीजै नहिं नाउँ॥

राग सोरठ

नैना अतिहीँ लोभ भरे।
संगहिँ संग रहत वै जहँ-तहँ, बैठत चलत खरे॥
काहू की परतीति न मानत, जानत सबहिनि चोर।
लूटत रूप अखूट दाम कौ, स्याम बस्य यौँ भोर॥
बड़े भागमानी यह जानी, कृपिन न इनतैँ और।
ऐसी निधि मैं नाउँ न कीन्हौ, कहँ लै हैं, कहँ ठौर॥
आपुन लेहिँ औरहूँ देते, जस लेते संसार।
सूरदास प्रभु इनहिँ पत्याने, को कहै बारबार॥
॥२२६६॥२८८४॥

राग कान्हरौ

ऐसे आपुस्वारथी नैन।
अपनोइ पेट भरत हैं निसि-दिन, और न लैन न दैन॥
बस्तु अपार परी ओछैँ कर, ये जानत घटि जैहै।
को इनसौँ समुझाइ कहै यह दीन्हैं ही अधिकैहै॥
सदा नहीँ रैहैं अधिकारी, नाउँ राखि जौ लेते।
सूर स्याम सुख लूटैँ आपुन, औरनि हूँ कौँ देते॥
॥२२६७॥२८८५॥

राग बिलावल

जे लोभी ते देहिँ कहा री।
ऐसे निठुर नहीँ मैं जाने, जैसे नैन महा री॥
मन अपनौ कबहूँ बरु ह्वै है, ये नहि होहिँ हमारे।
जब तैँ गए नंद-नंदन-ढिग, तब तैँ फिरि न निहारे॥
कोटि करौं वै हमहिँ न मानैँ, गीधे रूप अगाध।
सूर स्याम जौ कबहूँ त्रासैँ, रहै हमारी साध॥
॥२२६८॥२८८६॥

राग नट

नैना भरे घर के चोर।
लेत नहिँ कछु बनै इनसौँ, देखि छबि भयौ भोर॥

नहीं त्यागत, नहीं भागत, रूप जाग प्रकास।
अलक डोरनि बाँधि राखे, तजौ उनकी आस॥
मैं बहुत करि बरजि हारी, निदरि निकसे हेरि।
सूर स्याम बँधाइ राखे, अंग-अँग-छवि घेरि॥
॥ २२६९ ॥ २८८७ ॥

राग बिलावल

भली करी उनि स्याम बँधाए।
बरज्यौ नहीं कन्यौ उन मेरौ, अति आतुर उठि धाए।
अल्प चोर, बहु माल लुभावे, संगी सबनि धराए।
निदरि गए तैसौ फल पायौ, अब वै भए पराए॥
हमसौं इन अति करी ढिठाई, जो करि कोटि बुझाए।
सूर गए हरि-रूप चुरावन, उन अपबस करि पाए॥
॥२२७०॥२८८८॥

राग बिहागरौ

लोचन चोर बाँधे स्याम।
जातही उन तुरत पकरे, कुटिल अलकनि दाम॥
सुभग ललित कपोल-आभा गिधे, दाम अपार।
और अँग-छवि-लोग जागे, अब नहीं निरवार॥
सँग गए वै सबै अटके, लटकि अंग अनूप।
एक एकहिं नहीं जानत, परे सोभा-कूप॥
जो जहाँ, सो तहाँ डार्‍यौ, नैंकु तन-सुधि नाहिं।
सूर गुरुजन डरहिं मानत, यहै कहि पछिताहिं॥
॥ २२७१ ॥ २८८९ ॥

राग जैतश्री

लोचन भए पखेरू माई।
लुब्धे स्याम-रूप चारा कौं, अलक-फंद परे जाई॥
मोर मुकुट टाटी मानौ, यह बैठनि ललित त्रिभंग।
चितवनि लकुट, लास लटकनि-पिय, काँपा अलक तरंग॥
दौरि गहनि मुख-मृदु-मुसुकावनि, लोभ-पींजरा डारे।
सूरदास मन-ब्याध हमारौ, गृह-बन तैं जु बिसारे॥
॥ २२७२ ॥ २८९० ॥

राग गुंड मलार

कपट-कन दरस खग नैन मेरे।

चुननि निरखनि तुरत आपुहीँ उडि मिले, पर्‌यौ चारा पेट मत्र फेरे॥

निरखि सुंदर बदन मोहिनी सिर परी, रहे इकटक निरखि वै डरत नाहीँ।

लाज-कुल कानि-बन फेरो आवत कबहुँ रहत नहिँ नैँकुहूँ, उतहिँ जाहीँ॥

मृदु हँसनि ब्याध, पढ़नि मंत्र बोलनि मधुर, स्रवन धुनि सुनत इत कौँ न आवैँ।

सूर-प्रभु स्याम छवि धामहीँ मैँ रहैँ, गेह-बन नाम मन तैँ भुलावैँ॥

॥ २२७३ ॥ २८९१ ॥

राग मारू

नैन खग स्याम जी कैँ पढ़ाए।

किये बस कपट-कन मंत्र के डारि कै, लए अपनाइ मनु बढ़ाए॥

वै गिधे उनहिँ सौँ रूप-रस पान करि, नैँकुहुँ टरत नहीँ चीन्हि लीन्हे।

गए हमकौँ त्यागि, बहुरि कबहुँ न फिरे, कैँचुरी उरग ज्यौँ छाँड़ि दीन्हे॥

एक ह्वै गए हरदी चून-रंग ज्यौँ, कौन पै जात निरुवारि माई।

सूर-प्रभु कृपामय कियौ उन बास रचि निज देहु, बन-सघन-सुधि भुलाई॥ २२७४ ॥ २८९२ ॥

राग बिहागरौ

नैना ऐसे हैं बिसवासी।

आप काज कीन्हौ हमकौँ तजि, तब तैँ भई निरासी॥

प्रतिपालन करि बड़े कराए, जानि आपने अंग।

निमिष निमिष मैँ धोवति, आँजति, सिखए भाव-तरंग॥

हम जान्यौ हमकौँ ये ह्वैहैं, ऐसे गए पराइ।

सुनहु सूर बरजत ही बरजत, चेरे भए धजाइ॥

॥ २२७५ ॥ २८९३ ॥

राग जैतश्री

नैना भए प्रगटही चेरे।

ताकौ कछु उपकार न मानत, हम ये किये बड़े रे॥

जौ बरजौं यह बात भली नहिं, हँसत, न नैंकु लजात ।
फूले फिरत सुनावत सबकौं, एते पर न डरात ॥
यहौ कही हमकौं जनि छाँड़ौ, तुम बिनु तनु बेहाल ॥
तमकि उठे यह यह बात सुनतहीं, गीधे गुन गोपाल ॥
मुकुट-लटक, भौंहनि की मटकनि, कुंडल-झलक कपोल ।
सूर स्याम मृदु मुसुकनि ऊपर, लोचन लीन्हे मोल ॥
॥२२७६॥२८९४॥

राग सोरठ

लोचन मेरे भृंग भए री ।
लोक-लाज बन-घन बेली तजि, आतुर ह्वै जु गए री ॥
स्याम रूप रस बारिज लोचन, तहाँ जाइ लुबधे री ।
लपटे लटकि पराग-बिलोकनि, संपुट-लोभ परे री ॥
हँसनि प्रकास बिभास देखि कै, निकसत पुनि तहँ पैठत ।
सूर स्याम अंबुज कर चरननि, जहाँ तहाँ भ्रमि बैठत ॥
॥२२७७॥२८९५॥

राग रामकली

लोचन-भृंग कोस-रस पागे । स्याम-कमल-पद सौं अनुरागे ।
सकुच कानि बन बेली त्यागी । चले उड़ाइ सुरति-रति-लागी ॥
मुकुति-पराग-रसहिं इनि चाख्यौ । भव-सुख-फूल-रसहिं इनि नाख्यौ ॥
इनि तैं लोभी और न कोई । जो पटतर दीजै कहि सोई ॥
गए तबहिं तैं फेरि न आए । सूर स्याम वै गहि अटकाए ॥
॥२२७८॥२८९६॥

राग सारंग

नैना बीधे दोऊ मेरे ।
मानौ परे गयंद पंक महिं, महा सबल बल केरे ॥
निकसत नाहिं अधिक बल कीन्हें, जतन न बनै घनेरे ।
स्याम सुँदर के दरस परस तैं, इत उत फिरत न फेरे ॥
लंपट लीन हटक नहिं मानत, चंचल चपल अरे रे ।
सूरदास प्रभु निगम अगम सत, सुनि सुमिरत बहुतेरे ॥
॥२२७९॥२८९७॥

राग धनाश्री

मेरे नैन कुरंग भए।
जोबन-बन तैं निकसि चले ये, मुरली-नाद रए॥
रूप ब्याध, कुंडल-दुति ज्वाला, किंकिनि घंटा घोष।
ब्याकुल ह्वै एकहि टक देखत, गुरुजन तजि संतोष॥
भौंह कमान, नैन सर साधनि, मारनि चितवनि-चारि।
ठौर रहे नहिं टरत सूर वै, मंद हँसनि सिर डारि॥
॥२२८०॥२८९८॥

राग रामकली

नैन भए बस मोहन तैं।
ज्यौं कुरंग बस होत नाद के, टरत नहीं ता गोहन तैं॥
ज्यौं मधुकर बस कमल-कोस के, ज्यौं बस चंद चकोर।
तैसैं हि ये बस भए स्याम के, गुडी-बस्य ज्यौं डोर॥
ज्यौं बस स्वाति बूंद के चातक ज्यौं बस जल के मीन।
सूरज-प्रभु के बस्य भए ये, छिनु छिनु प्रीति नवीन॥
॥२२८१॥२८९९॥

राग टोडी

ऐसे बस्य न काहुहिं कोऊ।
जैसे बस्य नंद-नंदन के, ये नैना मेरे दोऊ॥
चंद चकोर नहीं सरि इनकी, एकौ पल न बिसारत।
नाद कुरंग कहा पटतर इन, ब्याध तुरत ही मारत॥
ये बस भए सदा सुख लूटत, चतुर चतुरई कीन्हे।
सूरदास-प्रभु त्रिभुवन के पति, ते इन बस करि लीन्हे॥
॥२२८२॥२९००॥

राग जैतश्री

ये नैना अपस्वारथ के।
और इनहिं पटतर क्यौं दीजै, जे हैं बस परमारथ के॥
बिना दोष हमकौं परित्याग्यौ, सुख कारन भए चेरे।
मिले धाइ बरज्यौ नहिं मान्यौ, तक्यौ न दहिनैं डेरे॥
इनकौ भलौ होइगौ कैसैं, नैंकु न सेवा मानी।
सूर स्याम इन पर कह रीझे इनकी गति नहिं जानी॥
॥२२८३॥२९०१॥

नैना मेरे अटके री, माई, वा मोहन कैं संग ।
कहा करौं बरज्यौ नहिं मानत, रँगे उनहिं कैं रंग ॥
औरनि कौं तिरछे ह्वै चितवत, गुरुजनहूँ सौं जंग ।
सूरदास-प्रभु-प्रेम-सुरति सौं, होत न कबहूँ भंग ॥
॥ २२८४ ॥ २९०२ ॥

राग सूही

नैना लोन हरामी ये ।
चोर, ढुंढ, बटपार कहावत, अपमारगी अन्यायी वे ।
निलज, निर्दयी, निसंक, पातकी, जैसे आपु स्वारथी वै ॥
बारे तैं प्रतिपालि बढ़ाए बड़े भए तब गए तजि कै ।
हमकौं निदरि करत सुख हरि-सँग वै उनकौं लीन्हौ हित कै ।
मिले जाइ सूरज के प्रभु कौं, जैसे मिलत नीर अरु पै ॥
॥ २२८५ ॥ २९०३ ॥

राग जैतश्री

नैन मिले हरि कौं ढरि भारी ।
जैसैं नीर नीर मिलि एकै, कौन सकै निरुवारी ॥
बात-चक्र ज्यौं तृनहिं उड़त लै, देह-संग ज्यौं छाहिं ।
पवन वस्य ज्यौं उड़त पताका, ये तैसे छबि माहिं ॥
मन पाछैं, ये आगैं धावत, इंद्री इनहिं लजाने ।
सूर स्याम जैसे इन जाने, त्यौं काहूँ नहिं जाने ॥
॥ २२८६ ॥ २९०४ ॥

राग नट

लोचन भए अतिहीं ढीठ ।
रहत हैं हरि-संग निसि-दिन, अतिहिं नवल अहीठ ॥
बदत काहूँ नहीं निधरक, निदरि मोहिं न गनत ।
बार-बार बुझाइ हारी, भौंह मोपर तनत ॥
ज्यौं सुभट रन देखि टरत न, लरत खेत प्रचारि ।
सूर छबि सन्मुखहिं धावत, निमिष-अस्त्रनि डारि ॥
॥ २२८७ ॥ २९०५ ॥

राग बिलावल

सुभट भए डोलत ये नैन ।
सन्मुख भिरत, मुरत नहिं पाछैं, सोभा चमू डरैं न ॥
आपुन लोभ-अत्र लै धावत, पलक-कवच नहिं अंग ।
हाव भाव सर लरत कटाच्छनि, भृकुटी धनुष अपंग ॥
महावीर ये उत अँग-अँग-बल रूप-सैन पर धावत ।
सुनहु सूर ये लोचन मेरे, इकटक पलक न लावत ॥
॥२२८८॥२९०६॥

राग जैतश्री

सेवा इनकी वृथा करी ।
ऐसे भए दुखदायक हमकौं, याही सोच मरी ॥
घूँघट ओट-महल मैं राखति, पलक-कपाट दिये ।
ये जोइ कहैं करैं हम सोई, नाहिन भेद हिये ॥
अब पाई इनकी लँगराई, रहते पेट समाने ।
सुनहु सूर लोचन बटपारी-गुन, जोइ सोइ प्रगटाने ॥
॥२२८९॥२९०७॥

राग गौरी

नैना हैं री ये बटपारी ।
कपट-नेह करि-करि इन हमसौं, गुरुजन तैं करी न्यारी ॥
स्याम-दरस लाडू कर दीन्हौ, प्रेम ठगौरी लाइ ।
मुख परसाइ हँसनि-माधुरता, डोलत संग लगाइ ॥
मन इनसौं मिलि भेद बतायो, बिरह-फाँस गर डारी ।
कुल-लज्जा-संपदा हमारी, लूटि लई इन सारी ॥
मोह-बिपिन मैं परी, कराहति, नेह-जीव नहिं जात ।
सूरदास गुन सुमिरि-सुमिरि वै, अंतरगत पछितात ॥
॥२२९०॥२९०८॥

राग बिहागरौ

तिनकौं स्याम पत्याने सुनियत ।
ह्वाऊँ जाइ अकाज करैंगे, यह गुनि-गुनि सिर धुनियत ॥
बिवस भई तन की सुधि नाहीं, बिरह-फाँस गये डारि ।
लगन-गाँठि बैठी नहिं छूटति, मगन-मूर्छा भारि ॥

प्रेम जीव निसरत नहिं कैसैं हु, अंतर-अंतर जानति।
सूरदास-प्रभु क्यौं सुधि पावैं, बार-बार गुन गानति॥
॥२२९१॥२९०९॥

राग सारंग

रोम रोम ह्वै नैन गए री।
ज्यौं जलधर परबत पर बरषत, बूँद-बूँद ह्वै निचटि द्रए री॥
ज्यौं मधुकर रस-कमल पान करि, मोतैं तजि उन्मत्त भए री।
ज्यौं काँचुरी भुअंगम तजहीं, फिरि न तकैं जु गए सु गए री॥
ऐसी दसा भई री उनकी, स्याम-रूप मैं मगन भए री।
सूरदास प्रभु-अगनित-सोभा, ना जानौं किहि अंग छए री॥
॥२२९२॥२९१०॥

राग सारंग

नैन निरखि अजहूँ न फिरे री।
हरि-मुख-कमल कोस-रस-लोभी, मनहुँ मधुप मधु-माति गिरे री॥
पलकनि सूल सलाक सही है, निसि बासर दोउ रहत अरे री।
मानहुँ बिवर गए चलि कारे, तजि कँचुरी भए निनरे री॥
ज्यौं सरिता परबत की खोरी, प्रेम पुलक स्रम स्वेद, झरे री।
बूंद बूँद ह्वै मिले सूर-प्रभु, ना जानौ किहिं घाट तरे री॥
॥२२९३॥२९११॥

राग सारंग

नैन गए सु फिरे नहिं फेरि।
जद्यपि घेरि-घेरि मैं राखति, रहे नहीं पचिहारी टेरि॥
कहा कहौं सपनैंहु नहिं आवत, वस्य भए हरि हीं के जाइ।
मोतैं कहा चूक उन जानी, जातैं निपट गए बिसराइ॥
छिनहूँ की पहिचानि मानियै, उनकौं हम प्रतिपाले प्रेम।
जौ तजि गए हमारैं वैसेइ, उन त्याग्यौ, हम हैं उहिं नेम॥
मात पिता संगहिं प्रतिपाले, संगहिं संग रहे निसि-जाम।
सुनहु सूर ये बाल-सँघाती, प्रेम बिसारि मिले ढरि स्याम॥
॥२२९४॥२९१२॥

राग नट

नैननि देखिबे की टौरि।
नंद-गोप-कुमार सुंदर, किये चंदन-खौरि॥
सीस पीड़ सिखंड राजत, नख सिखहिं छबि औरि।
सुभग गावनि, मृदु बजावनि बेनु, ललित सु गौरि॥
कुटिल कच मृगमद-तिलक-छबि, बचन [मंत्र-ठगौरि।
सूर-प्रभु नट-रूप नागर निरखि लोचन बौरि॥
॥२२९५॥२९१३॥

राग मलार

तब तैं नैन रहे इकटकहीं।
जब तैं दृष्टि परे नँद-नंदन, नैं कु न अंत मटकहीं।
मुरली धरे अरुन अधरनि पर, कुडल झलक कपोल।
निरखत इकटक पलक भुलाने, मनौ बिकाने मोल।
हमकौं वै काहैं न बिसारैं, अपनी सुधि उन नाहिं।
सूर स्याम-छबि-सिंधु समाने, बृथा तरुनि पछिताहिं॥
॥२२९६॥२९१४॥

राग मलार

नैना नैननि माँझ समाने।
टारैं टरत न इक पल मधुकर ज्यौं, रस मैं अरुझाने।
मन गति पंगु भई सुधि बिसरी, प्रेम पराग लुभाने।
मिले परस्पर खंजन मानौ, झगरत निरखि लजाने॥
मन बच क्रम पल-ओट न भावत, छिनु छिनु जुग परमाने।
सूर स्याम के बस्य भए ये, जिहिं बीतै सो जाने॥
॥२२९७॥२९१५॥

राग गौरी

मेरैं माई लोभी नैन भए।
कहा करौं ये कह्यौ न मानत, बरजतहीं जु गए॥
रहत न घूँघट-ओट-भवन मैं, पलक-कपाट दए।
लए फँदाइ बिहंगम मानो, मदन-ब्याध बिधए॥

नहिँ परमिति मुख-इंदु सुधा निधि, सोभा नितहिँ नए।
सूर स्याम-तनु-पीत-बसन छवि, अंग अंग जितए॥
॥२२९८॥२९१६॥

राग बिहागरौ

नैना लोभहिँ लोभ भरे।
जैसैँ चोर भरे घर पैठत, बैठत उठत खरे॥
अंग अंग सोभा-अपार-निधि, लेत न, सोच परे।
जोइ देखै सोइ सोइ निरमोलै, कर लै, तहीँ धरे।
त्यौँ लुब्धे ये टरत न टारे, लोक लाज न डरे।
सूर कछू उन हाथ न आयौ, लोभ-जाग पकरे॥
॥२२९९॥२९१७॥

राग सोरठ

नैना ओछे चोर भरी री।
स्याम-रूप-निधि नोखैँ पाई, देखत गए भरी री॥
अंग-अंग-छवि चित्त चलायौ, सो कछु रहति परी री।
कहा लेहिँ, कह तजैँ, बिबस भए, तेसिय करनि करी री॥
पुनि-पुनि जाइ एक इक लेते, आतुर धरनि धरी री।
भोरे भए भोरसौ ह्वै गयौ, धरे जगार परी री॥
जो कोउ काज करे बिनु बूझैँ, पेलनि लहत हरी री।
सूर स्याम बस परे जाइ कै, ज्यौँ मोहि तजी खरी री॥
॥२३००॥२९१८॥

राग मलार

नैना मारेहूँ पर मारत।
राखी छवि दुराइ हिरदै मैँ, तिनकौँ हिय भरि ढारत॥
आपु न गए भली कीन्ही, अब उनहिँ इहाँ तैँ टारत।
परबस ह्वाँ लै जान कहत हैँ, पैज आपनी सारत॥
ऐसे खोज परे घहलैहैँ, आवत जात न हारत।
इनकौ गुन कैसैँ कहि आवै, सूर पयारहिँ झारत॥
॥२३०१॥२९१९॥

राग मलार

नैना खोज परे हैं ऐसे।
नैंकु रही हरि-मूरति हिरदै, डाह मरत हैं जैसे॥
मन तौ गयौ इंद्रियनि लैकै, बुधि-मति-ज्ञान समेत।
जिनकी आस सदा हम राखैं, तिन दुख दीन्हौ जेत॥
आपुन गए कौन सो चालै, करत ढिठाई और।
नैंकु रही छबि दुति हिरदै मैं, ताहि लगावत ठौर॥
गए रहे आए इहिं कारज, भरि ढारत हैं ताहि।
सूरदास नैननि की महिमा, को है कहिये काहि॥
॥२३०२॥२९२०॥

राग सारग

नैना इहिं ढग परे, कहा करौं माई।
आए फिरि कौन काज, कबहिं मैं बुलाई॥
अब लौं इहिं आस रही, मिलिहैं ये आई।
भाँवरि सी पारि फिरे, नारि ज्यौं पराई॥
आवत हैं लोभ भरे, कपट नेह धाई।
तनक रूप चोरि हियैं धरयौ हौं दुराई॥
आए हैं ताहि लैन, ऐसे दुखदाई।
मारे कौं मारत हैं, बड़े लोग भाई॥
अतिहीं ये करत फिरत, दिनहिं दिन ढिठाई।
सूरदास-प्रभु-आगैं, चलौ कहैं जाइ॥
॥२३०३॥२९२१॥

राग गौरी

यह तौ नैननि ही जु कियौ।
सरबस जो कछु रह्यौ हमारैं, सो लै हरिहिं दियौ॥
बुधि बिबेक कुल-कानि गँवाई, इंद्रिनि कियौ बियौ।
आपुन जाइ बहुरि आए इहँ, चाहत रूप लियौ।
अब लागे जिय घात करन कौ, ऐसो निठुर हियौ।
सुनहु सूर प्रतिपाले कौ गुन, बैरइ मानि लियौ॥
॥२३०४॥२९२२॥

राग नट

मेरे नैन चकोर भुलाने।
अह निसि रहत पलक सुधि बिसरे, रूप-सुधा न अघाने॥
पल घटिका, घटि जाम, जाम दिन, दिनहीं जुग वर जाने।
स्वाद परे निमिषहुँ नहिं त्यागत, ताही माँझ समाने॥
हरि मुख बिधु पीवत ये ब्याकुल, नैंकहुँ नहीं थकाने।
सूरदास प्रभु निरखि ललित तनु, अंग-अंग अरुझाने॥
॥२३०५॥२६२३॥

राग सारंग

हरि-मुख बिधु मेरी अँखियाँ चकोरी।
राखे रहति ओट पट जतननि, तऊ न मानति कितिक निहोरी॥
बरबस ही इन गही मूढ़ता, प्रीति जाइ चंचल सौं जोरी।
बिबस भई चाहतिं उड़ि लागन, अटकतिं नैंकु अंजन की डोरी॥
बरबसही इन गही चपलता, करत फिरत हमहूँ सौं चोरी।
सूरदास प्रभु मोहन नागर, बरषि सुधा रस सिंधु झकोरी॥
॥२३०६॥२९२४॥

राग बिहागरो

लोचन लालच तैं न टरे।
हरि सारँग सौं सारँग गीधे, दधि-सुत-काज जरे॥
ज्यौं मधुकर बस परे केतकी, नहिं ह्याँ तैं निकरे।
ज्यौं लोभी लोभहिं नहिं छाँड़त, ये अति उमँग-भरे॥
सनमुख रहत, सहत दुख दारुन, मृग ज्यौं नहीं डरे।
वह धोखैं, यह जानत हैं सब, हित चित सदा करे॥
ज्यौं पतंग फिरि परत प्रेम-बस, जीवत मुरछि मरे।
जैसैं मीन अहार-लोभ तैं, लीलत परै गरे॥
ऐस हि ये लुब्धे हरि छबि पर, जीवत रहत भिरे।
सूर सुभट ज्यौं रन नहिं छाँड़त, जब लौं धरनि गिरे॥
॥२३०७॥२९२५॥

राग नट

नैननि कोउ समुझावै री।
अपनौ घर तुम छाँड़े डोलत, मेरे ह्याँ लै आवै री॥

यहौ बूझि देखौ नीकैं करि, जहाँ जात कछु पावै री।
देखत के सब साँचे लागत, ताहि छुवत नहिं आवै री॥
वृथा फिरत नट के गुर देखत, नाना रूप बनावै री।
सूर स्याम अंग-अँग-माधुरी, सत-सत मदन लजावै री॥

॥२३०८॥२९२६॥

राग नट

हरि छवि अंग नट के ख्याल।
नैन देखत प्रगट सब कोउ, कनक, मुक्ता, लाल॥
छिनक मैं मिटि जात सो पुनि, और करत विचार।
त्यौं हियैं छवि और औरै, रचत चरित अपार॥
लहै तब जब हाथ आवै, दृष्टि नहिं ठहरात।
वृथा भूले रहत लोचन, इन कहै कोउ बात॥
रहत निसि दिन संग हरि के, हरप नाहिं समात।
सूर जब जब मिले हमकौं, महा बिह्वल गात॥

॥२३०९॥२९२७॥

राग कान्हरौ

भई गई ये नैन न जानत।
फिरि-फिर जात लहत नहिं सोभा, हारेंहु हार न मानत॥
बूझहु जाइ रहत निसि-बासर, नैंकु रूप पनिचानत?
सुनहु सखी सतरात इते पर, हम पर भौंहैं तानत॥
झूठैं कहत स्याम-अँग सुंदर, बातैं गढि गढि बानत।
सुनहु सूर छवि अति अगाध गति, निगम नेति जिहिं गानत॥

॥२३१०॥२९२८॥

राग बिहागरौ

स्याम-छवि लोचन भटकि परे।
अतिहीं भए बिहाल सखी री, निसि दिन रहत खरे।
हम तैं गए लूटि लैबे कौं, ह्वाँ सो परे अगोट।
अपनौ कियौ तुरत फल पायौ, राखति घूँघट ओट॥
इकटक रहत पराएँ बस भए, दुख-सुख समुझि न जाइ।
सूर कहौ ऐसो को त्रिभुवन, आवै सिंधु थहाइ॥

॥२३११॥२९२९॥

राग नट

नैन भए बोहित के काग ।
उड़ि-उड़ि जात पार नहिँ पावत, फिरि आवत तिहिँ लाग ॥
ऐसी दसा भई री इनकी, अब लागे पछितान ।
मो बरजत-बरजत उठि धाए, नहिँ पायौ अनुमान ॥
वह समुद्र ये ओछे बासन, धरैँ कहाँ सुख-रासि ।
सुनहु सूर ये चतुर कहावत, वह छवि महा प्रकासि ॥
॥२३१२॥२९३०॥

राग गौरी

हारि जीति नैना नहिँ जानत ।
धाए जात तहाँ कौँ फिरि-फिरि, वै कितनौ अपमानत ॥
परे रहत द्वारैँ सोभा के, वेई गुन गुनि गानत ।
हरषित रहत सबनि कौँ निदरे, नैँकहु लाज न आनत ॥
अब ये रहत निघसई कीन्हे, जद्यपि रूप न जानत ।
दुख सुख बिरह सँयोग समिति जनु, सूरदास यह गानत ॥
॥२३१३॥२९३१॥

राग रामकली

नैना मानऽपमान सह्यौ ।
अति अकुलाइ मिले री बरजत, जद्यपि कोटि कह्यौ ॥
जाकी बानि परी सखि जैसी, सो तिहिँ टेक रह्यौ ।
ज्यौँ मरकट मूठी नहिँ छाँड़त, नलिनी सुवा गह्यौ ॥
जैसैँ नीर प्रवाह समुद्रहि, माँझ बह्यौ सु बह्यौ ।
सूरदास इन तैसिय कीन्ही, फिरि मोतन न चह्यौ ॥
॥२३१४॥२९३२॥

राग सोरठ

यह नैननि की टेव परी ।
जैसैँ लुबधति कमल-कोस मैँ, भ्रमर की भ्रमरी ॥
ज्यौँ चातक स्वातिहिँ रटलावै, तैसिय धरनि धरी ।
निमिष नहीँ मिलवत पल एकौ, आपु-दसा बिसरी ॥
जैसैँ नारि भजै पर पुरुषहिँ, ताकैँ रंग ढरी ।
लोक बेद आरज पथ की सुधि, मारगहू न डरी ॥

ज्यौं कंचुरी त्यागि उहिँ मारग, अहि-घरनी न फिरी।
सूरदास तैसैंहि ये लोचन, का धौं परनि परी॥
॥२३१५॥२९३३॥

राग बिहागरौ

नैन गए न फिरे री माई।
ज्यौं मरजादा जाइ सुपत की, बहु-यौ फेरि न आई॥
ज्यौं बालापन बहुरि न आवै, फिरे नहीं तरुनाई।
ज्यौं जल ढरत गिरत नहिं पाछैं, आगैं आगैं जाई॥
ज्यौं कुलवधू बाहिरी परि कै, कुल मैं फिरि न समाई।
वैसी दसा भई इनहूँ की, सूर स्याम-सरनाई॥
॥२३१६॥२९३४॥

राग सूही

जब तैं नैन गए मोहि त्यागि।
इंद्री गई, गयौ तनु तैं मन, उनहिं बिना अवसेरी लागि॥
वै निरदई, मोह मेरैं जिय, कहा करौं मैं भई बिहाल।
गुरुजन तजे, इहाँ इन त्यागी मेरे बाँटैं परयौ जँजाल॥
इत की भई न उत की सजनी, भ्रमत भ्रमत मैं भई अनाथ।
सूर स्याम कौं मिले जाइ सब, दरसन करि वै भए सनाथ॥
॥२३१७॥२९३५॥

राग बिलावल

नैना मेरे मिलि चले, इंद्री अरु मन संग।
मोकौं व्याकुल छाँड़ि कै, आपुन करैं जु रंग।
अपनौ नहिं कबहूँ करैं, अधमनि के ये काम।
जनम गँवायौ साथहीं अब हम भईं निकाम॥
धिक जन ऐसे जगत मैं, यह कहि कहि पछितातिं।
धर्म हृदय जिनकैं नहीं, धिक तिनकी है जाति॥
मनसा बाचा कर्मना, गए बिसारि बिसारि।
सूर सुमिरि गुनि नैन के बिलपति हैं ब्रजनारि॥
॥२३१८॥२९३६॥

राग बिलावल

नैननि सौं झगरौ करिहौं री।
कहा भयौ जौ स्याम-संग हैं, बाँह पकरि सन्मुख लरिहौं री॥
जन्महिं तैं प्रतिपालि बड़े किये, दिन-दिन कौ लेखौ करिहौं री।
रूप-लूट कीन्ही तुम काहैं, अपने बाँटे कौ धरिहौं री॥
एक मातु पितु भवन एक रहे, मैं काहैं उनकौं डरिहौं री।
सूर अंस जौ नहीं देहिगे, उनकैं रंग मैंहूँ ढरिहौं री॥
॥२३१९॥२६३७॥

राग आसावरी

मोहूँ तैं वै ढीट कहावत।
जबहीं लौं मैं मौन धरे हौं, तबलौं वै कामना पुरावत॥
मैं उनकौं पहिलैं करि राख्यौ वै मोकौं काहैं बिसरावत।
आपु काज कौं उनहिं चले मिलि, बाँटौ देत रोइ अब आवत॥
बहुतै कानि करी मैं सजनी, अब देखौ मरजाद घटावत।
जो जैसो तासौं त्यौं चलियै, हरि आगैं गढ़ि बात बनावत॥
मिले रहैं नहिं उनकौं चाहति, मेरौ लेखौ क्यौं न चुकावत।
सूर स्याम-सँग गर्व बढ़ायो, उनहीं कैं बल बैर बढ़ावत॥
॥२३२०॥२९३८॥

राग धनाश्री

नैना रहैं न मेरे हटकैं।
कछु पढ़ि दियौ सखी उहि ढोटा, घूघरवारी लटकैं॥
कज्जल कुलुफ मेलि मन्दिर मैं, पल सँदूक पट अटकैं।
निगम नेति कुल लाज टूटै सब, मन गयद के झटकैं॥
मोहनलाल करी बस अपनैं हौं, निमेष के मटकैं।
सूरदास पुर नारि फिरावत, संग लगाए नट कैं॥
॥२३२१॥२९३९॥

राग सारंग

नैना निपट बिकट छवि अटके।
टेढ़ी कटि, टेढ़ी कर मुरली, टेढ़ी पाग लर लटके॥
देखि रूप रस सोभा रीझे, फेरे फिरत न घटके।
पारत बंधन कमल-दल-लोचन, लाल के मोदनि अटके॥

कहा चाहियै अपने सुख कौं, इन तौ सीखी यहै भलाई।
अजहूँ जाइ कहै कोउ उनसौं, काहे कौं तुम लाज गँवाई॥
अचरज कथा कहति हौ सजनी, ऐसी है तुमसौं चतुराई।
सुनहु सूर जे भजि उबरे हैं, तिनकौं अब चाहति है माई॥
॥२३३६॥२९५४॥

राग बिहागरो

सजनी नैना गए भगाइ।
अरवाती कौ नीर बडेरी, कैसैं फिरिहैं धाइ।
बरत भवन जैसैं तजियत है, निकसे त्यौं अकुलाइ।
सोउ अपनौ नहिं, पथिक पंथ कै, बासा लीन्हौ आइ॥
ऐसी दसा भई है इनकी, सुख पायौ हौं जाइ।
सूरदास-प्रभु कौं ये नैना, मिले निसान बजाइ॥
॥२३३७॥२९५५॥

राग बिलावल

मोहन बदन बिलोकि थकित भए, माई री ये लोचन मेरे।
मिले जाइ अकुलाइ अगमने, कहा भयौ जौ घूँघट घेरे॥
लोकलाज कुलकानि छाँड़ि कै, बरबस चपल चपरि भए चेरे।
काहैं बादिहिं बकति बावरी, मानत कौन मते अब तेरे॥
ललित-त्रिभंगी-तनु-छवि अटके, नाहिन फिरत कितोऊ फेरे।
सूर स्याम सन्मुख रति मानत, गए मग बिसरि दाहिने डेरे॥
।२३३८॥२९५६॥

राग रामकली

थकित भए मोहन-मुख नैन।
घूँघट-ओट न मानत कैसैंहु, बरजत कीन्हौ गैन॥
निदरि गए मरजादा कुल की, अपनौ भायौ कीन्हौ।
मिले जाइ हरि कौं आतुर ह्वै, लूटि सुधा रस लीन्हौ॥
अब तू बकति बादि री माई, कह्यौ मानि रहि मौन।
नहु सूर अपनौ सुख तजिकै, हमहिं चलावै कौन।
॥२३३९॥२९५७॥

राग देवगधार

मेरे इन नैननि इते करे।
मोहन-वदन चकोर-चंद ज्यौं, इकटक तैं न टरे॥
प्रमुदित मनि अवलोकि उरग ज्यौं, अति आनंद भरे।
निधिहिं पाइ इतराइ नीच ज्यौं, त्यौं हमकौं निदरे॥
जौ अटके गोचर घूँघट-पट, सिसु ज्यौं अरनि अरे।
धरे न धीर निमेष रुदन-जल, सौं हठ-करनि परे॥
रही ताड़ि, खिझि लाज-लकुट ले, एकहु डर न डरे।
सूरदास गथ खोटौ, काहैं पारखि-दोष धरे॥
॥२३४०॥२९५८॥

राग जैतश्री

नैननि दसा करी यह मेरी।
आपुन भए जाइ हरि-चेरे, मोहिं करत हैं चेरी॥
जूठौ खैये मीठैं कारन, आपुहिं खात अड़ावत।
ओर जाइ सो कौन नफे कौं, देखन तौ नहिं पावत॥
काज होइ तौ यहौ कीजियै, वृथा फिरै को पाछैं।
सूरदास प्रभु जब जब देखत, नट-सँवाँग सो काछै॥
॥२३४१॥२९५९॥

राग बिलावल

को इनकी परतीति बखानै।
नैना धौं काहे तैं अटके, कौन अंग ढरकाने॥
इनके गुन बारैंहि तैं सजनी, मैं नीकैं करि जाने।
चेरे भए जाइ ये तिनके, कैसैं तिनहिं पत्याने॥
छिनु-छिनु मैं औरै गति जिनकी, ऐसे आपु सयाने।
सूर स्याम अपनैं गुन सोभा, को नहिं बस करि आने॥
॥२३४२॥२९६०॥

राग रामकली

नैननि कठिन बानि पकरी।
गिरिधर लाल रसिक बिनु देखैं, रहत न एक घरी॥

आवतिही जमुना-जल लीन्हे, सखी सहज डगरी।
वे उलटे मग मोहिं देखि, हौं उलटी लै गगरी॥
वह मूरति तब तैं इन बल करि, लै उर माँझ धरी।
ते क्यौं तृप्त होत अब रंचक, जिनि पाई सिगरी॥
जग-उपहास लोक-लज्जा तजि, रहे एक जक री।
सूर पुलक अंग अंग प्रेम भरि, सगति-स्याम-करी॥
॥२३४३॥२९६१॥

राग रामकली

नैननि बानि परी नहिं नीकी।
फिरत सदा हरि-पाछैं पाछैं कहा लगनि उन जी की॥
लोक लाज कुल की मरजादा, अतिहीं लागति फीकी।
जो बीतति मोकौं री सजनी, कहौं काहि या ही की॥
अपनैं मन उन भली करी है, मोहिं रहे हैं बीकी।
सूरदास ये जाइ लुभाने, मृदु मुसुकनि हरि पी की॥
॥२३४४॥२९६२॥

राग धनाश्री

ऐसे निठुर नहीं जग कोई।
जैसे निठुर भए डोलत हैं, मेरे नैना दोई॥
निठुर रहत ज्यौं ससि चकोर कौं, वै उन बिनु अकुलाहीं।
निठुर रहत दीपक पतंग ज्यौं, उड़ि परि परि मरि जाहीं॥
निठुर रहत जैसैं जल मीनहिं, तैसिय दसा हमारी।
सूरदास धिक धिक है तिनकौं, जिनहिं न पीर परारी॥
॥२३४५॥२९६३॥

राग ललित

नैना घूँघट मैं न समात।
सुंदर बदन नंद-नंदन कौं, निरखि निरखि न अघात॥
अति-रस-लुब्ध महा मधु लंपट, जानत एक न बात।
कहा कहौं दरसन-सुख माते, ओट भएँ अकुलात॥
बार-बार बरजत हौं हारी, तऊ टेव नहिं जात।
सूर तनक गिरिधर बिनु देखैं, पलक कलप सम जात॥
॥२३४६॥२९६४॥

राग धनाश्री

नैना मानत नाहिँन बरज्यौ ।
इनके लएँ सखी री मेरौ, बाहिर रहै न घर ज्यौ ॥
जद्यपि जतन किये राखति ही, तदपि न मानत हरज्यौ ।
परबस भई गुड़ी ज्यौं डोलति, परयौ पराएँ कर ज्यौ ॥
देखे बिना चटपटी लागति, कछू मूँड़ पढ़ि परज्यौ ।
को बकि मरै सखी री मेरैं, सूर स्याम कैं थर ज्यौ ॥
॥२३४७॥२९६५॥

राग नटनारायन

नैना कह्यौ मानत नाहिं ।
आपनैं हठ जहाँ भावत, तहाँ कौं ये जाहिं ॥
लोक लज्जा वेद-मारग, तजत नाहिं डराहिं ।
स्याम-रस मैं रहत पूरन, पुलकि अंग न माहिं ॥
पियहि के गुन गुनत उर मैं, दरस देखि सिहाहिं ।
बदत हमकौं नैंकु नाहीं, मरहिं जौ पछिताहिं ॥
धरनि मन बच धरी ऐसी, कर्मना करि ध्याहिं ।
सूर प्रभु-पद-कमल-अलि ह्वै, रैनि दिन न भुलाहिं ॥
॥२३४८॥२९६६॥

राग आसावरी

परी मेरैं नैननि ऐसी बानि ।
जब लगि मुख निरखत तब लगि, सुख सुंदरता की खानि ॥
ये गीधे बीधे न रहत सखि, तजी सबनि की कानि ।
सादर श्री मुख चंद बिलोकत, ज्यौं चकोर रति मानि ॥
अतिहिं अधीर नीर भरि आवत, सहत न दरसन-हानि ।
कीजै कहा बाँधि कै सौंपी, सूर स्याम कैं पानि ॥
॥२३४९॥२९६७॥

राग जैतश्री

नैननि ऐसी बानि परी ।
लुब्धे स्याम-चरन-पंकज कौं, मोकौं तजी खरी ॥

घूँघट ओट किये राखति ही, अपनी सी जु करी।
गए पेरि ताकौं नहिं मान्यौ, देखौ ज्यौं निदरी॥
गए सु गए फेरि नहिं बहुरे, कह धौं जियहिं धरी।
सुनहु सूर मेरे प्रतिपाले, ते बस किये हरी॥
॥२३५०॥२९६८॥

राग सारंग

नैननि हौं समुझाइ रही।
मानत नहीं कह्यौ काहू कौ, कठिन कुटेव गही॥
अनजानतहीं चितै बदन-छबि, सनमुख सूल सही।
मगन होत बपु स्याम-सिंधु मैं, कहूँ न थाह लही॥
तनु बिसरयौ कुलकानि गँवाई, जग उपहास दही।
एते पर संतोष न मानत, मरजादा न गही॥
रोम रोम सुंदरता निरखत, आनँद उमँगि ढही।
सूरदास इन लोभिनि कैं सँग, बन बन फिरति बही॥
॥२३५१॥२९६९॥

राग रामकली

नैना कहैं न मानत मेरे।
हारि मानि कै रही मौन ह्वै, निकट सुनत नहिं टेरे।
ऐसे भए मनौ नहिं मेरे, जबहिं स्याम-मुख हेरे।
मैं पछिताति जबहिं सुधि आवति, ज्यौं दीन्हौ मोहिं देरे॥
एते पर कबहूँ जब आवत झरपत लरत घनेरे।
मोहूँ बरबस उतहिं चलावत, दूत भए उन केरे॥
लोक-वेद कुलकानि न मानत, अतिहीं रहत अनेरे।
सूर स्याम धौं कहा ठगौरी, लाइ कियौ धरि चेरे॥
॥२३५२॥२९७०॥

राग कल्याण

कबहुँ कबहुँ आवत ये, मोहिं लेन माई।
आवतहीं यहै कहत, स्याम तोहिं बुलाई॥
नैंकुहूँ न रहत बिरमि, जात तहाँ धाई।
मानौ पहिचानि नहीं, ऐसैं बिसराई॥

उनकौं सुख देत, मोहिँ दहिबे कौं पाई।
सूर स्याम संगहिँ-सँग, बासर-निसि जाई ॥
॥२३५३॥२९७१॥

राग बिहागरौ

मेरे नैननिहीं सब दोष।
त्रिनही काज और कौं सजनी, कत कीजै मन रोष ॥
जद्यपि हौं अपनैं जिय जानति, अरु बरजै सब घोष।
तद्यपि वा जसुमति के सुत बिनु, कहूँ न सुख संतोष ॥
कहि पचिहारि रही निसि-बासर, और कंठ करि सोष।
सूरदास अब क्यौं बिसरत है, मधु-रिपु कौ परितोष ॥
॥२३५४॥२९७२॥

राग सोरठ

मेरे नैना दोष भरे।
नंद-नँदन सुदर वर नागर, देखत तिनहिँ खरे ॥
पलक-कपाट तोरि कै निकसे, घूँघट ओट न मानत।
हाहा करि, पाइनि परि हारी, नैंकहुँ जौ पहिचानत ॥
ऐसैं भए रहत ये मोपर, जैसैं लोग बटाऊ।
सोऊ तौ बूझे तैं बोलत, इनमैं यह निठुराऊ ॥
ये मेरे अब होहिँ नहीं सखि, हरि-छबि बिगरि परे।
सुनहु सूर ऐसे जन जग मैं, करता करनि करे ॥
॥२३५५॥२९७३॥

राग रामकली

नैना मोकौं नहीं पत्याहिँ।
जे लुबधे हरि-रूप-माधुरी, और गनत वे नाहिँ ॥
जिनि दुहि धेनु औटि पय चाख्यौ, ते क्यौं निरसे छाकैं।
क्यौं मधुकर मधु-कमल-कोस तजि, रुचि मानत है आकैं ॥
जे षटरस-सुख भोग करत हैं, ते कैसैं खरि खात।
सूर सुनहु लोचन हरि-रस तजि, हम सौं क्यौं तृपितात ॥
॥२३५६॥२९७४॥

राग देव गंधार

मेरे नैननिहीं सब खोरि।
स्याम-बदन-छवि निरखि जु अटके, बहुरे नहीं बहोरि॥
जउ मैं कोटि जतन करि राखति, घूँघट ओट अगोरि।
तउ उड़ि मिले बधिक के खग ज्यौं, पलक पींजरा तोरि॥
बुधि बिवेक बल बचन चातुरी, पहिलेहि लईं अँजोरि।
अति आधीन भईं सँग डोलति, ज्यौंऽब गुडी बस डोरि॥
अब धौं कौन हेतु हरि हमसौं, बहुरि हँसत मुख मोरि।
सुनहु सूर दोउ सिंधु सुधा भरि, उमँगि मिले मिति फोरि॥
॥२३५७॥२९७५॥

राग गौरी

यह सब नैननिहीं कौ लागै।
अपनैंहीं घर भेड़ि करी इन, बरजत हीं उठि भागे॥
ज्यौं बालक जननी सौं अटकत, भोजन कौं कछु माँगे।
त्यौंहीं ये अतिहीं हठ ठानत, इकटक पलक न त्यागे॥
कहत देहु हरि-रूप-माधुरी, रोवत हैं अनुरागे।
सूर स्याम धौं कहा चखायौ, रूप माधुरी पागे॥
॥२३५८॥२९७६॥

राग धनाश्री

लोचन टेक परे सिसु जैसैं।
माँगत हैं हरि रूप माधुरी खोज परे हैं नैसैं॥
बारंबार चलावत उतहीं, रहन न पाऊँ बैसें।
जात चले आपुनहीं अब लौं, राखे जैसैं तैसैं॥
कोटि जतन करि-करि परमोधति, कह्यौ न मानहिं कैसैं।
सूर कहूँ टग मूरी खाई, व्याकुल डोलत ऐसैं॥
॥२३५९॥२९७७॥

राग जैतश्री

इन नैननि की टेव न जाइ।
कहा करौं बरजतहीं चंचल, लागत हैं उठि धाइ॥

बाट-घाट जहँ मिलत मनोहर, तहँ मुख चलति छपाइ।
गाँधे हेम चोर ज्यौं आतुर, वह छबि लेत चुराइ॥
मनहुँ मधुप मधु-कारन लोभी, हरि-मुख-पंकज पाइ।
घूँघट-बस, जल हीन मीन ज्यौं, अधिक उटत अकुलाइ॥
निलज भए कुलकानि न मानत, तिनसौं कहा बसाइ।
सूर स्याम सुंदर-मुख देखैं, बिनु री रह्यौ न जाइ॥
॥२३६०॥२९७८॥

राग सोरठ

जाकी जैसी टेव परी री।
सो तौ टरै जीव के पाछैं, जो-जो धरनि धरी री॥
जैसैं चोर तजै नहिं चोरी, बरजैं वहै करी री।
बरु ज्यौं जाइ, हानि पुनि पावत, बकतहिं बकत मरी री॥
जद्यपि ब्याध बधै मृग प्रगटहिं, मृगिनी रहै खरी री।
ताहू नाद-बस्य ज्यौ दीन्हौ, संका नहीं करी री॥
जद्यपि मैं समुझावति पुनि-पुनि, यह कहि-कहि जु लरीरी।
सूर स्याम दरसन तैं इकटक, टरत न निमिष घरी री॥
॥२३६१॥२९७९॥

राग सारंग

ये नैना मेरे ढीठ भए री।
घूँघट-ओट रहत नहिं रोकैं, हरि-मुख देखत लोभि गए री॥
जउ मैं कोटि जतन करि राखे, पलक-कपाटनि मूँदि लए री।
तउ ते उमँगि चले दोउ हठ करि, करौं कहा मैं जान दए री॥
अतिहिं चपल, बरज्यौ नहिं मानत, देखि बदन तन फेरि नए री।
सूर स्यामसुंदर-रस अटके, मानहुँ लोभी उहँइ छए री॥
॥२३६२॥२९८०॥

राग नट

नैना ढीठ अतिहीं भए।
लाज-लकुट दिखाइ त्रासी, नैंकुहूँ न नए॥
तोरि पलक-कपाट घूँघट-ओट मेटि गए।
मिले हरि कौं जाइ आतुर, हैं जु गुननि मए॥

मुकुट, कुंडल, पीत पट कटि, ललित वेष ठए।
जाइ लुब्धे निरखि वा छवि, सूर नंद जए॥
॥२३६३॥२९८१॥॥

राग बिलावल

नैना झगरत आइ कै मोसौं री माई।
घूँट धरत हैं धाइके चलि स्याम-दुहाई॥
मैं चकित ह्वै ठगि रहौं, कछु कहत न आवै।
आपुन जाइ मिले रहैं अब मोहिं बुलावैं॥
गए दरस जो देहिं वै, तहँ अपनी छाया।
और कछूवै है नहीं, री उनकी माया॥
कपटिनि के ढँग ये सखी, लोचन हरि कैसे।
सूर भली जोरी बनी, जैसे कौं तैसे॥
॥२३६४॥२९८२॥

राग सूही

नैननि कौ मत सुनहु सयानी।
निसि-दिन तपत सिरात न कबहूँ जद्यपि उमँगि चलत पल पानी।
हौं उपचार अमित उर आनति, खल भई लोक लाज कुलकानी।
कछु न सुहाइ, दहत दरसन दव, बारिज-बदन-मद-मुसुकानी॥
रूप-लकुट अभिमान निडर ह्वै, जग उपहास न सुनत लजानी।
बुधि बिबेक बल बचन-चातुरी, मनहुँ उलटि उन माँझ समानी॥
आरज-पथ गुरु-ज्ञान गुप्त करि, बिकल भई तनु दसा हिरानी।
जाचत सूर स्याम-अजन कौं, वह किसोर छवि जीव हितानी॥
॥२३६५।२९८३॥

राग सारंग

नैननि भलौ मतौ ठहरायौ।
जबहीं मैं बरजति हरि-संगहिं, तबहीं तब बहरायौ॥
जरत रहत एते पर निसि दिन, छिनु बिनु जनम गँवायौ।
ऐसी बुद्धि करन अब लागे, मोकौं बहुत सतायौ॥
कहा करौं मैं हारि धरी जिय, कोटि जतन समुझायौ।
लुब्धे हेम चोर की नाइँ, फिरि फिरि उतहीं धायौ॥

मौसौं कहत भेद कछु नाहीं, अपनोइ उदर भरायौ।
सूरदास ऐसे कपटिनि कौ, विधना साथ छुड़ायौ॥
॥२३६६॥२९८४॥

राग बिहागरौ

मेरे नैना अटकि परे।
सुंदर स्याम-अंग की सोभा निरखत भटकि परे॥
मोर-मुकुट लट घूँघरवारी, तामैं लटकि परे।
कुंडल-तरनि-किरनि-तैं-उज्ज्वल-चमकनि चटकि परे॥
चपल नैन मृग-मीन कंज-जित, अलि ज्यौं लुब्धि परे।
सूर स्याम-मृदु-हँसनि लुभाने, हम तैं दूरि परे॥
॥२३६७॥२९८५॥

राग बिहागरौ

नैनन साधै ई जु रही।
निरखत वदन नंद नंदन कौ, भूलि न तृप्ति गही॥
पचिहारे उनकी रुचि कारन, परमिति तौ न लही।
मगन होत अब स्याम-सिंधु मैं, कतहुँ न थाह थही॥
रोम-रोम सुंदरता निरखत, आनँद उमँग वही।
सुख सुख सूर विचार एक करि, कुल-मरजाद ढही॥
॥२३६८॥२९८६॥

राग नट

नैननि साध नहीं सिराई।
जदपि निसि-दिन संग डोलत, तदपि नाहिं अघाई॥
पलक नहिं कहुँ नैकु लागति, रहति इकटक हेरि।
तऊ कहुँ तृपितात नाहीं, रूप रस की ढेरि॥
ज्यौं अगिनि घृत-तृप्ति नाहीं, तृषा नाहिं बुझाइ।
सूर-प्रभु अति रूप-दानी, नैन लोभ न जाइ॥
॥२३६९॥२९८७॥

राग कल्यान

स्याम-अंग निरखि नैन कबहूँ न अघाहीं।
एकहि टक रहे जोरि, पलक नाहिं सकत तोरि, जैसैं चंदा चकोर,
तैसी इन पाहीं॥

अपबस करि इनकौं हरि लीन्हौ, मो तन फेरि पठायौ।
जो कछु रही सपदा मेरैं, सुधि-बुधि चोरि लिवायो॥
ये धाए आए निधरक साँ, लै गए संग लगाइ।
सूर स्याम ऐसे हैं माई, उलटी चाल चलाइ॥
॥२३७७॥२९९५॥

राग सारंग

नैननि प्रान चोरि लै दीने।
समुझत नहीं बहुरि समुझाए, अति उतकंठ नवीने॥
अतिहीं चतुर, चातुरी जानत, सकल कला जु प्रवीने।
लोभ-लिये परवस भए माई, मीन ज्यौं बंसी भीने॥
कहा कहौं कहिबे लायक नहिं, मते रहत नर हीने।
आपु बँधाइ पूँजि लै सौंपी, हरि रस रति के लीने॥
ज्यौं डोरैं बस गुडी देखियत, डोलत संग अधीने।
सूरदास प्रभु-रूप-सिंधु मैं, मिले सलिल-गुन कीने॥
॥२३७८॥२९९६॥

राग नट

ये लोचन लालची भए री।
सारँग-रिपु के रहत न रोक, हरि स्वरूप गिधए री।
काजर-कुलुफ मेलि मैं राखे, पलक-कपाट दए री।
मिलि मन-दूत पैज करि निकसे, हरि पै दौरि गए री॥
ह्वै आधीन पंच तैं न्यारे, कुल-लज्जा न नए री।
सूर स्यामसुदर-रस अटके, मानो वहँइ छए री॥
॥२३७९॥२९९७॥

राग बिहागरौ

लोचन लोभ ही मैं रहत।
फिरत अपने काजही कौं, धीर नाहीं गहत।
देखि मृपनि कुरंग धावत, तृप्त नाहीं होत।
ये लहत लै हृदय धारत, तऊ नाहीं ओत॥
हठी लोभी लालची इनतैं, नहीं कोउ और।
सूर ऐसे कुटिल कौं छबि, स्याम दीन्हौ ठौर॥
॥२३८०॥२९९८॥

राग रामकली

लोचन मानत नाहिंन बोल।
ऐसे रहत स्याम के आगैं, मनु हैं लीन्हे मोल॥
इत आवत दै जात दिखाई, ज्यौं भौंरा चकडोर।
उततैं सूत्र न टारत कतहूँ, मोसौं मानत कोर॥
नीके रहे सदा मेरैं बस, जाइ भए ह्वाँ जोर।
मोहन सिर मोहिनी लगाई, जब चितए उन ओर॥
अब मिलि गए स्याम मनमाने, निसि-बासर इक ठौर।
सूर स्याम के चोर कहावत, राखे हैं करि गौर॥
॥२३८१॥२९९९॥

राग रामकली

नैना उनही देखैं जीवत।
सुंदर-बदन-तड़ाग-रूप-जल, निरखनि-पुट भरि पीवत॥
राखे रहत और नहिं पावै, उन मानी परतीति।
सूर स्याम इनसौं सुख मानत, देखैं इनकी प्रीति॥
॥२३८२॥३०००॥

राग गूजरी

नैना नाहिंन कछू बिचारत।
सनमुख समर करत मोहन सौं, जद्यपि हैं हठि हारत॥
अवलोकत, अलसात, नवल-छवि, अमित तोष अति-आरत।
तमकि-तमकि तरकत मृगपति ज्यौं, घूँघट-पटहिं बिदारत॥
बुधि-बल, कुल-अभिमान, रोष-रस, जोवत भँवहिं निवारत।
निदरे व्यूह समूह स्याम-अँग, पेषि पलक नहिं पारत॥
स्रमित सुभट सकुचत, साहस करि, पुनि पुनि सुखहिं सम्हारत।
सूर स्वरूप मगन झुकि व्याकुल, टरत न इकटक टारत॥
॥२३८३॥३००१॥

राग बिहागरौ

स्याम-रंग नैना राँचे री।
सारँग-रिपु तैं निकसि निलज भए, ह्वै परगट नाचे री॥

मुरली नाद मृदंग, मृदंगी अधर बजावनहारे।
गायन घर घर घेर चलावन, लोभ नचावनहारे॥
चंचलता निर्तनि, कटाच्छ रस, भाव बतावत नीके।
सूरदास रिझए गिरिधारी, मन माने उनहीं के॥
॥२३८४॥३००२॥

राग रामकली

नाचत नैन नचावत लोभ।
यह करनी इन नई चलाई, मेटि सकुच कुल-छोभ॥
घूँघट घर त्याग्यौ इन मन क्रम, नाचहिं पर-मन मान्यौ।
घर-घर-घेर मृदंग-सब्द करि, निलज काछनी बान्यौ॥
इंद्री मन समाज-गायन ये, ताल धरे रहैं पाछैं।
सूर प्रेम भावनि सौं रीझे, स्याम चतुर वर आछैं॥
॥२३८५॥३००३॥

राग धनाश्री

नैननि सिखवत हारि परी।
कमल नैन मुख बिनु अवलोकैं, रहत न एक घरी॥
हौं कुलकानि मानि सुनि सजनी, घूँघट-ओट करी।
वे अकुलाइ मिले हरि लै मन, तन की सुधि बिसरी॥
तब तैं अंग अंग छवि निरखत, सो चित तैं न टरी।
सूर स्याम मिलि लोक वेद की, मरजादा निदरी॥
॥२३८६॥३००४॥

राग बिलावल

इन नैननि सौं री सखी, मैं मानी हारि।
सॉट-सकुच नहिं मानहीं, बहु बारनि मारि॥
डरत नहीं फिरि-फिरि अरैं हरि दरसन-काज।
आपु गए मोहूँ कहूँ, चलि मिलि ब्रजराज॥
घूँघट-घर मैं नहिं रहैं, करि रही बुझाइ।
पलक-कपाट बिदारि कै, उठि चले पराइ॥
तब तैं मौन भई रही, देखत ये रंग।
सूरज प्रभु जहँ जहँ रहैं, तहँ तहँ ये संग॥
॥२३८७॥३००५॥

राग बिलावल

इन नैननि सौं मानी हारि।
अनुदिनहीं उपरांत आन रुचि, बाढ़ी सब लोगनि सौं रारि ॥
तदपि निडर चलि जात चपल दोउ, घूँघट सघन कपाट उघारि ॥
निगम-ज्ञान-प्रतिहार-महाबल, लाज लकुट कर करत निवारि ॥
श्री गोपाल कौतुक मन अरप्यौ, तब तैं चतुरनि भई चिन्हारि।
सूरदास लोभिनि के लीने, सिर पर सही जगत की गारि ॥
॥२३८८॥३००६॥

राग गूजरी

नैना बहुत भाँति हटके।
बुधि-बल-छल-उपाइ करि थाकी, नैंकु नहीं मटके।
इत चितवत, उतहीं फिरि लागत, रहत नहीं अटके।
देखतहीं उड़ि गए हाथ तैं भए बटा नट के।
एकहिं परनि परे खग ज्यौं, हरि-रूप-माँझ लटके।
मिले जाइ हरदी चूना ज्यौं, फिरि न सूर फटके ॥
॥२३८९॥३००७॥

राग जैतश्री

बहुत भाँति नैना समुझाए।
लंपट तदपि सकोच न मानत, जद्यपि घूँघट-ओट दुराए ॥
निरखि नवल इतराहिं जाहिं मिलि, जनु बिधि खंजन अंजन पाए।
स्याम कुँवर के कमल बदन कौं, महामत्त मधुकर ह्वै धाए ॥
घूँघट-ओट तजी सरिता ज्यौं, स्याम-सिंधु कैं सन्मुख आए।
सूर स्याम मिलि कढ़ि पलकनि सौं, बिनु मोलहिं हठि भए पराए ॥
॥२३९०॥३००८॥

राग सोरठ

नट के बटा भए ये नैन।
देखति हौं पुनि जात कहाँ धौं, पलक रहत नहिं ऐन ॥
स्वाँगी से ये भए रहत हैं छिनहिं और छिन और।
ऐसे जात रहत नहिं रोकें, हमहूँ तैं अति दौर ॥

गए सु गए गए अब आए, जात लगी नहिं बार ।
सूर स्याम-सुंदरता चाहत, जाकौ वार न पार ॥
॥२३९१॥३००९॥

राग बिहागरौ

मोतैं नैन गए री ऐसैं ।
जैसैं बधिक-पींजरा तैं मृग, छूटि भजत हैं, तैसैं ॥
सकुच फंद मैं फँदे रहत हे, ते धौं तोरे कैसैं ।
मैं भूली इहिं लाज भरोसैं, गारनि ही ये वैसैं ॥
स्याम-रूप-बन-माँझ समाने, मोपै रहैं अनैसैं ।
सूर मिले हरि कौं आतुर ह्वै, ज्यौं सुरभी सुत तैसैं ॥
॥२३९२॥३०१०॥

राग जैतश्री

लोचन भए पराए जाइ ।
सनमुख रहत टरत नहिं कबहूँ, सदा करत सेवकाइ ॥
हाँ तौ भए गुलाम रहत हैं, मोसौं करत ढिठाइ ।
देखति रहति चरित इनके सब, हरिहिं कहौंगी जाइ ॥
जिनकौं मैं प्रतिपाल बड़े किये, ये तुम बस करि पाइ ।
सूर स्याम सौं यह कहि लैहौं, अपनैं बल पकराइ ॥
॥२३९३॥३०११॥

राग टोड़ी

अब मेहूँ इहिं टेक परी ।
राखौं अटकि जान नहिं पावैं, क्यौं मोकौं निदरी ॥
मौन भई मैं रही आजु लौं, अपनोइ मन समुझाऊँ ।
येऊ मिले नैनहीं हरि के, देखति इनहुँ भगाऊँ ॥
सुनि री सखी मिले ये कब के, इनहीं कौं यह भेद ।
सूरदास नहि जानी अब लौं, वृथा करति तनु खेद ॥
॥२३९४॥३०१२॥

राग धनाश्री

नैना भए पराए चेरे ।
नंदलाल कैं रंग गए रँगि, अब नाहिन बस मेरे ।

जद्यपि जतन किये जोगवति ही, स्यामल सोभा घेरैं।
त्यौं मिलि गए दूध पानी ज्यौं, निवरत नहीं निवेरैं॥
कुल-अंकुस आरज-पथ तजिकै, लाज सकुच दिए डेरैं।
सूर स्याम कैं रूप लुभाने, कैसैंहुँ फिरत न फेरैं॥
॥२३९५॥३०१३॥

राग रामकली

जाकी जैसी वानि परी री।
कोऊ कोटि करै नहिं छूटै, जो जिहिं धरनि धरी री॥
वारे ही तैं इनके ये ढँग, चंचल चपल अनेरे।
वरजतहीं वरजत उठि दौरे, भए स्याम के चेरे॥
ये उपजे ओछे नछत्र के, लंपट भए वजाइ।
सूर कहा तिनकी संगति, जे रहे पराएँ जाइ॥
॥२३९६॥३०१४॥

राग आसावरी

नैननि कौं री यहै सुहाइ।
लुब्धे जाइ रूप मोहन कैं चेरे भए वजाइ॥
फूले फिरत गनत नहिं काहूँ, आनँद उर न समाइ।
यहै वात कहि सवनि सुनावत, नैंकहुँ नहीं लजाइँ॥
निसि दिन सेवा करि प्रतिपाले, वड़े भए जब आइ।
तब हमकौं ये छाँड़ि भगाने, देखौ सूर सुभाइ॥
॥२३९७॥३०१५॥

राग कान्हरौ

देखत हरि के रूपहिं नैना, हारैं हार न मानत।
भए भटकि वलहीन छीन-तन, तउ अपनी जय जानत॥
टुरत न पट की ओट, प्रगट ह्वै, वीच पलक नहिं आनत।
छुटि गए कुटिल कटाच्छ अलक मनु, टूटि गए गुन तानत॥
भाल-तिलक भुव चाप आपु लै, मोइ संधान सँधानत।
मन क्रम वचन समेत सूर-प्रभु, नहिं अपवल पहिचानत॥
॥२३९८॥३०१६।

राग सूही

हारि जीति दोऊ सम इनकैं।
लाभ हानि काकौं कहियतु है, लोभ सदा जिय मैं जिनकैं॥
ऐसी परनि परी री जिनकैं लाज कहा ह्वै है तिनकैं।
सुंदर स्याम रूप मैं भूले, कहा वस्य इन नैननि कैं॥
ऐसे लोगनि कौं सत्र मानत, जिनकी घर-घर हैं भनकैं।
लुब्धे जाइ सूर के प्रभु कौं, सुनत रही स्रवननि भनकैं॥
॥२३९९॥३०१७।

राग घनाश्री

आँख-समय के पद

अँखियनि यहई टेव परी।
कहा करौं बारिज-मुख-ऊपर, लागति ज्यौं भ्रमरी॥
चितवति वहति चकोर चंद ज्यौं बिसरति नाहिं घरी।
जद्यपि हटकि हटकि राखति हौं तद्यपि होति खरी॥
गड़ि जु रहीं वा रूप-जलधि मैं, प्रेम-पियूष भरी।
सूर तहाँ नग-अंग परस रस, लूटति हैं सिगरी॥
॥२४००॥३०१८॥

राग घनाश्री

अँखियाँ निरखि स्याम-मुख भूलीं।
चकित भई मृदु हँसनि चमक पर, इंदु कुमुद ज्यौं फूलीं॥
कुल-लज्जा, कुल धर्म, नाम कुल, मानति नाहिंन एकौ।
ऐसैं ह्वै ये भजीं स्याम कौं, बरजत सुनति न नैकौ॥
ये लुब्धीं हरि-अंग-माधुरी, तनु की दसा बिसारीं।
सूर स्याम मोहिनी लगाई, कछु पढ़िकै सिर डारी॥
॥२४०१॥३०१९॥

राग जैतश्री

अँखियाँ हरि कैं हाथ बिकानीं।
मृदु मुसुकानि मोल इनि लीन्हीं, यह सुनि सुनि पछितानीं॥
कैसैं रहति रहीं मेरैं बस, अब कछु औरै भाँति।
अब वै लाज मरति मोहिं देखत, बैठीं मिलि हरि-पाँति॥

सपने की सी मिलनि करति हैं, कब आवतिं कब जाहिं।
सूर मिलीं ढरि नंद-नँदन कौं, अनत नहीं पतियातिं ॥
॥२४०२॥३०२०॥

राग बिहागरौ

अँखियन ऐसी धरनि धरी।
नंद-नँदन देखैं सुख पावैं, मोसौं रहतिं डरी ॥
कबहूँ रहतिं निरखि मुख-सोभा, कबहुँ देह-सुधि नाहीं।
कबहूँ कहतिं कौन हरि, को हम, यौं तन्मय ह्वै जाहीं ॥
अँखियाँ ऐसैं भजीं स्याम कौं, नाहिं रह्यौ कछु भेद।
सूर स्याम कैं परमभावतीं, पलक न होत बिछेद ॥
॥२४०३॥३०२१॥

राग रामकली

अँखियनि स्याम अपनी करी।
जैसेहीं उनि मुँह लगाई, तैसेहीं ये ढरीं ॥
इनि किये हरि हाथ अपनैं, दूरि हमतैं परीं।
रहतिं बासर-रैनि इकटक, घाम छाहँनि खरी।
लोक लज्जा, निकसि, निदरी, नहीं काहूँ डरीं।
ये महा अति चतुर नागरि, चतुर नागर हरी ॥
रहतिं डोलति संग लागी, छाहँ ज्यौं नहिं टरीं।
सूर जब हम हटकि हटकतिं, बहुत हम पर लरीं ॥
॥२४०४॥३०२२॥

राग बिहागरौ

अँखियनि तब तैं बैर धर्‍यौ।
जब हम हटकीं हरि-दरसन कौं, सो रिस नहिं बिसर्‍यौ ॥
तबहीं तैं उनि हमहिं भुलायौ, गईं उतहि कौं धाइ।
अब तौ तरकि तरकि ऐंठति हैं, लेनी लेतिं बनाइ ॥
भईं जाइ वै स्याम सुहागिनि, बड़भागिनि कहवावैं।
सूरदास वैसी प्रभुता तजि, हम पै कब वै आवैं ॥
॥२४०५॥३०२३॥

राग जैतश्री

धन्य धन्य अँखियाँ बडभागिनि।
जिनि बिनु स्याम रहत नहिं नैंकहुँ कीन्ही बनै सुहागिनि॥
जिनकौं नहीं अग तैं टारत, निसि-दिन दरसन पावैं।
तिनकी सरि कहि कैसैं कोई, जे हरि कैं मन भावैं॥
हमहीं तैं ये भईं उजागर, अब हम पर रिस मानैं।
सूर स्याम अति बिबस भए हैं, कैसे रहत लुभाने॥
॥२४०६॥३०२४॥

राग बिलावल

ये अखियाँ बढभागिनी, जिनि रीझे स्याम।
अँग तैं नैंकु न टारहीं, बासर अरु जाम॥
ये कैसी हैं लोभिनी, छवि धरतिं चुराइ।
और न ऐसी करि सकै, मरजादा जाइ॥
यह पहिलैं मनहीं करी, सब तौ पछितात।
उनके गुन गुनि गुनि भुरै, याहूँ न पत्यात॥
इंद्री सब न्यारी परीं, सुख लूटति आँखि।
सूरदास जे सँग रहैं, तेऊ मरैं झाँखि॥
॥२४०७॥३०२५॥

राग बिलावल

अँखियनि तैं री स्याम कौं, प्यारी नहिं और।
जिनकौं हरि अँग अग मैं, करि दीनौ ठौर॥
जो सुख पूरन इनि लह्यौ, कह जानै और।
अबुज-हरि-मुख चारु कौं, दोउ भौंरी जोर॥
इहिं अंतर स्रवननि परी, मुरली की रोर।
सूर चकित भईं सुदरी, सिर परी ठगौर॥
॥२४०८॥३०२६॥

राग बिहागरौ

अँखियनि की सुधि भूलि गईं।
स्याम अधर मृदु सुनत मुरलिका, चकित नारि भईं॥

जो जैसैं सो तैसैं रहि गई, सुख दुख कह्यौ न जाइ।
लिखी चित्र की सी सब ह्वै गईं इकटक पल बिसराइ॥
काहू सुधि, काहू सुधि नाहीँ, सहज मुरलिका गान।
भवन रवन की सुधि न रही तनु, सुनत सब्द वह कान॥
अँखियनि तैं मुरली अति प्यारी, वै बैरिनि यह सौति।
सूर परस्पर कहतिँ गोपिका, यह उपजी उद्‌भौति॥
॥२४०९॥३०२७॥

राग सारंग

आवतहीँ याके ये ढंग।
मन मोहन बस भए तुरतहीँ, ह्वै गए अंग त्रिभंग॥
मैं जानी यह टोना जानति, करिहै नाना रंग।
देखौ चरित भए हरि कैसे, या मुरली कैं संग॥
बातनि मैं कह ध्वनि उपजावति, सिरजति तान तरंग।
सूरदास इंदूर सदन मैं, पैठ्यौ बड़ौ भुजंग॥
॥२४१०॥३०२८॥

मान-लीला तथा दंपति-विहार *राग गूजरी*

स्यामा स्याम कैं उर बसी
रैनि नृत्यत रिझै पिय-मन, तड़ित तैं छबि लसी॥
स्याम ता रस मगन डोलत, सब तियनि मैं जसी।
कोक-कला-प्रबीन सुंदरि, कंत-गुन करि कसी॥
करति सदन सिँगार बैठी, अँग-अँग-प्रति रसी।
सूर-प्रभु आए अचानक, देखि तिनकौं हँसी॥
॥२४११॥३०२९॥

राग रामकली

पियहि निरखि प्यारी हँसि दीन्हौ।
रीझे स्याम अंग-अँग निरखत, हँसि नागरि उर लीन्हौ॥
आलिंगन दै अधर दसन खँडि, कर गहि चिबुक उठावत।
नासा सौं नासा लै जोरत, नैन नैन परसावत॥
इहिं अंतर प्यारी उर निरख्यौ, झझकि भई तब न्यारी।
सूर स्याम मोकौं दिखरावत, उर ल्याए धरि प्यारी॥
॥२४१२॥३०३०॥

राग टोडी

अब जानी पिय बात तुम्हारी।
मोसौं तुम मुख ही की मिलवत, भावति है वह प्यारी ॥
राखे रहत हृदय पर जाकौं, धन्य भाग हैं ताके।
ऐसी कहूँ लखी नहिं अब लौं, वस्य भए हौ जाके ॥
भली करी यह बात जनाई, प्रगट दिखाई मोहिं।
सूर स्याम यह प्रान पियारी, उर मैं राखी पोहि ॥
॥२४१३॥३०३१॥

राग धनाश्री

सुनत स्याम चकित भए बानी।
प्यारी पिय-मुख देखि कछुक हँसि, कछुक हृदय रिस मानी ॥
नागरि हँसत हँसी उर-छाया, तापर अति झहरानी।
अधर कंप रिस भौंह मरोर्‌यौ, मनहीं मन गहरानी ॥
इकटक चितै रही प्रतिबिंबहिं, सौति-साल जिय जानी।
सूरदास प्रभु तुम बड़भागी, बड़भागिनि जिहिं आनी ॥
॥२४१४॥३०३२॥

राग धनाश्री

प्यारी साँच कहति की हाँसी।
काहे कौं इतनौ रिस पावति, कत तुम होहु उदासी ॥
पुनि-पुनि कहति कहा तबहीं तैं कहा ठगी सी ठाढ़ी।
इकटक चितै रहो हिरदय-तन, मनौ चित्र लिखि काढ़ी ॥
समुझी नहीं कहा मन आई, मदन त्रसै तुव आगे।
सूर स्याम भए काम आतुरे, भुजा गहन पिय लागे ॥
॥२४१५॥३०३३॥

राग धनाश्री

मोहि छुवौ जनि दूर रहौ जू।
जाकौं हृदय लगाइ लयौ है, ताकी बाहँ गहौ जू ॥
तुम सर्वज्ञ और सब मूरख, सो रानी अरु दासी।
मैं देखत हिरदय वह बैठी, हम तुमकौं भई हाँसी ॥

चाहँ गहत कछु सरम न आवति, सुख पावत मन माहीँ।
सुनहु सूर मो तन वह इकटक, चितवति, डरपति नाहीँ॥
॥२४१६॥३०३४॥

राग बिलावल

कहा भई धनि बावरी, कहि तुमहिँ सुनाऊँ।
तुम तैँ को है भावती जिहिँ हृदय बसाऊँ॥
तुमहिँ स्रवन, तुम नैन हौ, तुम प्रान अधारा।
वृथा क्रोध तिय क्योँ करौ, कहि बारंबारा॥
भुज गहि ताहि बतावहू, जेहि हृदय बतावति।
सूरज प्रभु कहैँ नागरी, तुम तैँ को भावति॥
॥२४१७॥३०३५॥

राग नट

माधौ नाहिँ दुरति जो हृदय बसति।
ऐसी ढीठि मेरैँ जान, तुमहीँ कीन्ही है कान्ह, मोसौँ सनमुख नाहि देखत त्रसति॥
झुके तैँ झुकति, भाल भृकुटी, कुटिल किये, रूखे रूखी ह्वै रहति, हँसे तैँ हँसति।
तबहीँ तैँ इकटक चितवति, डहिँ जकि, उर तैँ नैकहुँ इत-उत न धँसति।
जाही सौँ लगत नैन, ताही सौँ खगत बैन, नख सिख लौँ है सब गातनि ग्रसति॥
जाके हरि राँचे रंग, सोई है अंतर संग काँच की करौती के सुजल ज्यौँ लसति।
बिहँसि बोले गुपाल, सुनि हो ब्रज की बाल, उछँगहिँ लेत कत धरनि खसति।
अपनी छाया निहारि, काहे कौँ करति आरि, काम की कसौटी सूर संक तैँ कसति॥२४१८॥३०३६॥

राग कान्हरौ

काहे कौँ हौ बात बनावत।
अब तुमकौँ पिय मैँ पत्याति हौँ, छाहँ आपनी धरनि बतावत॥

करि आई हरि सौं परतिज्ञा, कहा कहै वृषभानु-जई।
सूर स्याम सौं मान कर्यौ है, आजुहिं ऐसी कहा भई॥

॥२४२७॥३०४४॥

राग नट

सखियनि संग तहाँ गई।
दूतिका मुख निरखि राधा, हृदै जानि लई॥
अति चतुर वृषभानु तनया, सहज बोलि लई।
सहज बचन प्रकास कीन्हौ, कहा कृपा भई॥
तुरतहीं यह कहि सुनायौ, स्याम बोले तोहिं।
सूर प्रभु बन बोलि पठई, तोहिं कारन मोहि॥

॥२४२७॥३०४५॥

राग टोडी

काहे कौं बन स्याम बुलाई। याही तैं तुम आईं धाई॥
कहा कहौं तोकौं री माई। तुमहुँ भली अरु भले कन्हाई॥
अब इक नई मिली है आई। ताही कौं अब लेहिं बुलाई॥
ताकौं राखी हृदय दुराई। तौकौं ह्वाँ तैं टारि पठाई॥
सूर स्याम ऐसे गुन राई। उनकी महिमा कही न जाई॥

॥२४२८॥३०४६॥

राग धनाश्री

आजु कछू घर-कलह भयौ री।
तबै आजु अनमनी बत्यानी, यह कछु मान ठयौ री॥
मोकौं कछू कह्यौ नहिं मोहन, सहज पठाई लैन।
कहा पुकार परी हरि आगैं, चलौ न देखौ नैन॥
तेरौ नाम लेत हरि आगैं, कहत सुनाइ सुनाइ।
सूर सुनहु काकौ-काकौ गथ, तैं धौं लियो छुड़ाइ॥

॥२४२९॥३०४७॥

राग सूही

वृंदावन हरि बैठे धाम।
काहे कौं गथ हर्यौ सबनि कौ, काहैं अपनौ कियौ कुनाम॥

डारि देहु कह लियौ परायौ, मेरौ कह्यौ मानि री वाम।
तवहीं तैं उन सोर लगायौ, तोकौं वोली है इहिं काम॥
चलै तुरत जनि भेर लगावहु, अवहीं आइ करौ विस्राम।
सूर स्याम तेरी घॉ झगरत, तू काहैं तिनसौं करै ताम॥
॥२४३०॥३०४८॥

राग जैतश्री

यह कछु नोखी वात सुनावति।
काकौ गथ धौं मैं लीन्हौ है वार-वार वन मोहिं बुलावति॥
मेरी घॉ हरि लरत कौन सौं, इती मया मोहिं कीन्ही।
जैसे हैं हरि तेरे माई, मैं नीकैं करि चीन्ही॥
की वैठौ, की जाहु भवन कौं, मैं उनपै नहिं जाउँ।
सूरदास प्रभु कौ री सजनी, जनम न लैहौं नाउँ॥
॥२४३१॥३०४९॥

राग गौरी

मैं कह तोहिं मनावन आई?
प्रगट लिये सवकौ व्रज वैठी, कहा करति अधिकाई॥
जाइ करौ ह्वॉ वोध सवनि कौ, मोपर कत सतरानी।
स्याम लरत तवहीं तैं उनसौं, तिनपर अतिहिं रिसानी॥
वार वार तू कहा कहति री, व्रज काकौ मैं लीन्हौ।
सूरदास राधा, सहचरि सौं, ज्वाव निदरि करि दीन्हौ॥
॥२४३२॥३०५०॥

राग सोरठ

तैं कछु नहिं काहू कौ लीन्हौ।
प्रगट कहौं तवहीं मानैगी, ज्वाव निदरि मोहिं दीन्हौ॥
तव वदिहौं ऐसैं हि ह्वॉ कैहै, जहँ वैठे सव वैरी।
मेरे कहैं वहुत रिस पावति, संपति सवकी लै री॥
इक-इक करि सव तोहिं दिखाऊँ, कहि आवहु वन जाइ।
की दीजौ, की पुनि सव लीजौ, सूर स्याम पै आइ॥
॥२४३३॥३०५१॥

राग सूही

जिनि जिनि जाइ स्याम के आगैं, तेरी चुगली बहुत करी।
बार-बार तिनसौं हरि खीझे, तेरी घाँ ह्वै महूँ लरी॥
स्याम भेद करि मोहिं पठाई, तू मोहीं पर खरी परी।
जाइ करौ रिस बैरिनि आगैं, जाके-जाके गथहिं हरी॥
धरनि, अकास, बनहुँ तैं आए, देखत तिनकौं अतिहिं डरी।
सूर स्याम बिनु न्याउ चुकै क्यौं, तिन पर तू अतिहीं झहरी॥
॥२४३४॥३०५२॥

राग धनाश्री

ते जु पुकारे हरि पै जाइ।
जिनकी यह सब सौंज राधिका, तुव तनु लई छँडाइ॥
इंदु कहै हौं बदन बिगोयौ, अलकनि अलि - समुदाइ।
नैननि मृग, बचननि पिक लूटे, बिलपत हरिहिं सुनाइ॥
कमल, कीरि, केहरि, कपोत, गज, कनक, कदलि दुख पाइ।
बिद्रुम, कुंद, भुजंग संग मिलि, सरन गए अकुलाइ॥
अति अनीति किय जानि सूर-प्रभु, पठई मोहि रिसाइ।
बोली है ब्रजनाथ बेगि चलि, अब उत्तर दै आइ॥
॥२४३५॥३०५३॥

राग कल्यान

चलि राधे हरि रसिक बुलाई।
कमल नयन कछु मरम कह्यौ है, मोहन-बचन करन-पुट लाई॥
अँग अँग सर्बस हरन लगी री, रचि बिरचि तुव बनक बनाई।
अब जु पुकार करत तेरैं तन, जिन-जिनकी सब सोभ चुराई॥
माँग उडु नव तरनि तर्‍यौना, तिलक भाल ससि की ससिताई।
भ्रकुटी सुर-धनु, सुधा बचन बर, सुरपुर परी है मदन-दुहाई॥
दाड़िम, बज्र पक्ति, पंकज दल, दामिनि घन, दुति रदन दुराई।
कबु कपोत कठ, निसिबासर बाहु बली करि कज लताई॥
उर भय मेप, सेप अवर जनु, मनु छवि कटि मृगराज सुहाई।
हास पुकार करत सरज प्रभु, दीन बधु हौं लेन पठाई॥
॥२४३६॥३०५४॥

राग कान्हरौ

मान करौ तुम और सवाई।
कोटि करौ एकै पुनि ह्वै हौ, तुम अरु मोहन माई॥
मोहन सो सुनि नाम स्रवनहीं, मगन भई सुकुमारी।
मान गयौ, रिस गई तुरतहीं, लज्जित भई मन भारी॥
धाइ मिली दूतिका कंठ सौं, धन्य-धन्य कहि बानी।
सूर स्याम वन धाम जानिकै, दरसन कौं अतुरानी॥
॥२४३७॥३०५५॥

राग बिलावल

हँसि कै कह्यौ दूतिका आगैं, स्यामहिं सुख दै जाइ।
करि असनान, अभूषन अँग भरि, आवति पाछैं धाइ॥
यह सुनि हरष भई अतिहीं सखि, गई तहाँ जहँ स्याम।
अति व्याकुल तनु की सुधि नाहीं, बिह्वल कीन्हौ काम॥
की वन मैं की घरहीं बैठे, की वासर की जाम।
सूर स्याम रसना रट लागी, राधा-राधा नाम॥
॥२४३८॥३०५६॥

राग रामकली

स्याम नारि कैं बिरह भरे।
कबहुँक बैठत कुंज द्रुमनि तर, कबहुँक रहत खरे॥
कबहुँक तनु की सुरति बिसारत, कबहुँक तनु-सुधि आवत।
तब नागरि के गुनहिं बिचारत, तेई गुन गनि गावत॥
कहूँ मुकुट, कहुँ मुरलि रही गिरि, कहुँ कटि पीत पिछौरी।
सूर स्याम ऐसी गति भीतर, आई दूतिका दौरी॥
॥२४३९॥३०५७॥

राग बिलावल

स्याम भुजा गहि दूतिका, कही आतुर बानी।
काहे कौं कदरात हौ, मैं राधा आनी॥
बिरह दूरि करि डारियै, सुख करौ कन्हाई।
त्रिया नाम स्रवननि सुन्यौ, चितये अकुलाई॥

मिले दूतिका अंक दै, लोचन भरि आए।
प्यारी-प्यारी बोलि कै, जुवतहिं उर लाए॥
तब बोली हँसि दूतिका, पिय आवति नारी।
सूर स्याम सुनि बोल वै, हरषे घनवारी॥

॥२४४०॥३०५८॥

राग गूजरी

धीर धरौ प्यारी अब आवति।
मैं जु गई परतिज्ञा करिकै, सो कहि बात जनावति॥
मन-चिंता अब दूरि करौ जू, कहौ न कह मोहिं देहौ।
बनि आवति वृषभानु नंदिनि, भुज भरि अंकम लेहौ॥
यह सुंदरता और नहीं कहुँ, बड़भागी सो पावै।
सूर स्याम दूतिका-बचन सुनि, कर जुग जोरि मिलावै॥

॥२४४१॥३०५९॥

राग जैतश्री

यह सुनि कै मन स्याम सिहात।
पुलकित अंग रहे नहिं धीरज, पुनि पुनि पथ निहारत जात॥
कुंज-भवन कुसुमनि की सज्या, अपने हाथ निवारत पात।
जे द्रुम लता लटकि तनु लागतिं, ते ऊँचे धरैं पुलकित गात॥
प्यारी-अँग अति कोमल जानत, सेज कली चुनि डारत।
सूर स्याम रीझत मनहीं मन, सुधि करि छबिहि निहारत॥

॥२४४२॥३०६०॥

राग कल्यान

दूतिका हँसति हरि चरित हेरै।
कबहुँ कर आपनैं रचत सुमननि सेज, कबहुँ मग निरखि कहै भयौ केरै॥
काम-आतुरि भरे, कबहुँ बैठत खरे, कबहुँ आगैं जाइ रहत ठाटे।
चतुर सखि देखि पुनि राधिका पै गई, और क्यौं करति, बन कत चाटे॥
सुनत प्यारी हँसी, पिया कैं मन बसी, रूप गुन करि जसी, प्रेम-रासी।
सूर प्रभु नाम सुनि, मदन तनु बल भयौ, अंग प्रति छबि निरखि रमा-दासी॥२४४३॥३०६१॥

राग धनाश्री

धनि वृषभानु सुता बड़ भागिनि ।
कहा निहारति अंग-अंग-छबि, धन्य स्याम-अनुरागिनि ॥
और त्रिया नख-सिख सिंगार सजि, तेरैं सहज न पूरैं ।
रति, रंभा, उरबसी, रमा सी, तोहिं निरखि मन झूरैं ॥
ये सब कंत सुहागिनि नाहीं, तू है कंत पियारी ।
सूर धन्य तेरी सुंदरता, तोसी और न नारी ॥
॥२४४४॥३०६२॥

राग धनाश्री

सहज रूप की रासि राधिका भूषन अधिक बिराजै ।
मुख सौरभ संमिलित सुधानिधि, कनक-लता पर छाजै ॥
चंदन-बिंदु धारि मिलि सोभित, धम्मिल नीर अगाध ।
मनहुँ-बाल रबि रस्मिनि-संकित, तिमिर कूट ह्वै आध ॥
मानिक मध्य, पास चहुँ मोती-पंगति, झलक-सिंदूर ।
रँग्यौ जनु तम तट तारागन, ऊगत घेरयौ सूर ॥
की मनमथ-रथ-चक्र, कि तरिवन, रवा रचित सहसाज ।
स्रवन-कूप की रहँट-घंटिका, राजत सुभग समाज ॥
नासा-नथ-मुक्ता, बिंबाधर प्रतिबिंबित असमूच ।
बाँध्यौ कनक-पास सुक सुंदर, करक-बीज गहि चूँच ॥
कहँ लगि कहौं भूषननि भूषित, अंग अंग के रूप ।
सूर सकल सोभा श्रीपति कैं, राजिव-नैन अनूप ॥
॥२४४५॥३०६३॥

राग कान्हरौ

बिराजति राधा रूप निधान ।
सुंदरता की पुंज प्रगट ही, को पटतर तिय आन ॥
सिंदुर सीस, माँग मुक्तावलि, कच कमनीय बिनान ।
मनहुँ चंद्र-मुख कोपि हन्यौ, रिपु राहु बिषम बलवान ॥
तरल तिलक ताटंक गंड पर, झलकत कल बिबि कान ।
मानहुँ ससि सहाय करिबे कौं, रन बिरचे द्वै भान ॥
दीरघ नैन नासिका बेसरि, अरुन अधर छबिवान ।
खंजन सुक न बिंब समता कौं, लज्जित भए अजान ॥

को कहि सकै उरोजनि की छवि, कंचन मेरु लजान।
श्रीफल सकुचि रहे दुरि कानन, सिखर हियौ विहरान ॥
रोमावली त्रिवली छवि छाजति, जनु कीन्ही विधि ठान।
कृस कटि सबल दंड बंधन मनु, यह दीन्ही बंधान ॥
अंग अंग आभूषन की छवि, कापै होइ बखान।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि, बिलसहु स्याम सुजान ॥
॥२४४६॥३०६४॥

राग सारंग

राजत तेरैं बदन ससी री।
किरनि कटाच्छ बान बर साधे, भौंह कलंक कमान कसी री ॥
पीन पयोधर सघन उनत अति, तातर रोमावली लसी री।
चक्रवाक खग चंचुपुटी तैं, मनु सैवल मंजरी खसी री ॥
ज्यौं नाभी-सर एक नाल नव, कनक कमल विवि रहे बसी री।
सूरज श्री गोपाल (यमुना)-पियारी, मेरुनि अध तम-धार धँसी री ॥
॥२४४७॥३०६५॥

राग गूजरी

सुनि राधे तेरे अंगनि ऊपर, सुंदरता न बची।
लोक चतुर्दस नीरस लागत, तू रस रासि सँची ॥
नख-सिख कुसुम-बिसिष की सेना, कौतुक अवधि रची।
सहज माधुरी रोमनि वर्षति, रति-रन कीच मची ॥
पद-नख की छवि निरखि-निरखि कै, कमला आइ लची।
तोसी नारि स्याम से नायक विधि वेकाज पची ॥
तुव अँग अँग छवि की पटतर कौं, कविअनि बुद्धि नची।
सूर सुमेरु कूट की सरवरि, क्यौं पूजै घुँघुची ॥
॥२४४८॥३०६६॥

राग नट

राधे देखि तेरौ रूप।
पठई हौं हरि सकि, मनु दल सज्यौ मनसिज भूप ॥
चाल गज, शृंखला नूपुर, नीवि नव-रुचि ढाल।
किंकिनि-घंटा-घोष, माधौ भए भय-बेहाल ॥

कंचुकी-भूपन कवच सजि, कुच कसे रनवीर।
अँचल ध्वज अवलोकि, नाहीं धरत पिय मन धीर॥
भौंह चाप चढ़ाइ कीन्हौ, तिलक सर संधान।
नैन की तक देखि गिरिधर, तज्यौ है मद मान॥
चँवर चिकुर, सुदेस घूँघट छत्र, सोभित छाहँ।
ज्यौं कहौ त्यौंहीं मिलाऊँ, दै दयालुहिं बाहँ॥
राधिका अति चतुर सुंदरि, सुनि सुवचन बिलास।
सूर रुचि-मनसा जनाई, प्रगटि मुख मृदु हास॥
॥२४४९॥३०६७॥

राग कल्याण

आजु अंजन दियौ राधिका नैन कौं।
मीन गुन-हीन, मृग लजित, खंजन चकित, अधिक चंचल सरस
स्याम सुख दैन कौं॥
लसत दाड़िम दसन, भौंह मन्मथ फंद, सुलप लट लटकि रही,
रहत नहिं चैन कौं।
कसनि कंचुकि बंद, उर मुकुत-माल, मुख निरखि उड़राज तजि
गयौ सुर-ऐन कौं।
रुनित नूपुर चरन, छुद्र कटि घंटिका, कनक-तन-गोर-छबि उमँगि
उपरैन कौं।
सूर सुनि स्रवन उठि, नवल गिरिधर सेज, चली गज गति मनौ
मदन-गढ़ लैन कौं॥२४५०॥३०६८॥

राग टोड़ी

रसिक सिरोमनि ढोरि लगावत, गावत राधा राधा नाम।
कुंज-भवन बैठे मनमोहन, बोलत मुख तेरोई गुन-ग्राम॥
स्रवन सुनत प्यारी पुलकित भई, रोम रोम सुख रासी वाम।
सूरदास-प्रभु गिरिवरधर कौं, चली मिलन गज-गति-वन-धाम॥
॥२४५१॥३०६९॥

राग देवगंधार

चलौ किन मानिनि कुंज-कुटीर।
तुव बिनु कुँवर कोटि बनिता तजि, सहत मदन की पीर॥

गदगद स्वर सभ्रम अति आतुर, स्रवत सुलोचन नीर।
कासि कासि बृषभानु-नंदिनी, बिलपत बिपिन अधीर॥
बसी त्रिसिप, माल ब्यालावलि, पंचानन पिक कीर।
मलयज गरल, हुतासन मारुत, साखामृग-रिपु चीर॥
हिय मैं हरषि प्रेम अति आतुर, चतुर चली पिय-तीर।
सुनि भयभीत बज्र के पिंजर, सूर सुरति-रनधीर॥
॥२४५२॥३०७०॥

राग कल्यान

नवेली सुनि नवल पिय नव निकुँज है री।
भावते लाल सौं, भावती केलि करि, भावती, भाव तैं रसिक रस लै री॥
त्यागि अभिमान, गुन रूप-सौभाग-रति, मानिनी, मान हरि मैन सुख दै री।
एक ब्रजबास, आवत जात देखियत, आपनी जाति पति पैंड कौ बैरी॥
ललित उद्दार हित पीर करि, कीर-मति-धीर तनु, मेटि मनमत्थ कौ भै री।
कला चौसट्ठि, संगीत सिंगार रस, कोक-बिधि-बॅद प्रगटि भेद सै सै री॥
सुरति संगर साजि, स्रवत जस-रस लाजि, अग अनुकूल रति-राज रन जै री।
काम-सर कनक-कुच प्रगट भृगी चिह्न दागि, मेलै कत आपनौ कै री॥
जासु आलाप सुनि, दारु सोउ पल्लवै, पुहुप, मधु धार फल भार भरि नै री।
मुरलिका-गान-तुव नाम मधुराधुनि, सुधा-गुन सिंधु नहि गनति निज मैं री॥
हीन-जल मीन ज्यौं दरस बिनु कलमलै प्रान, प्रीतम नहीं धीरज धरै री।
प्रीति की रीति गति-प्रान चचल करति, निरखि नागर नयन चुवकऽस्मैरी॥

अधर मधु लोभ पंथान चितवत चकित, कमल-गुल्लाल-दल तल्प बिरचै री।
अरुन सीतल मृदुल पाद तल सरि करत सेज चढ़ि, दलमलहि री बरन बैरी॥
तुव काम केलि कमनीय कामिनी बृंद .चंद्र, चकोर, चातक, स्वाति तैं री।
सूर सुनि स्रवन, तजि भवन कियो गवन, मनरवन तन, तबहिं कलहंस गति गै री ॥२४५३॥३०७१॥

राग कान्हरौ

मनौं गिरिवर तैं आवति गंगा।
राजति अति रमनीक राधिका, इहिं बिधि अधिक अनूपम अंगा।
गौर-गात दुति बिमल बारि-बिधि, कटि-तट त्रिबली तरल तरंगा।
रोम राजि मनु जमुन मिली अध, भँवर परत मानौ भ्रुव भंगा॥
भुज जुग पुलिन पास मिलि बैठे, चार चक्कवै उरज उतंगा।
मुख लोचन, पद, पानि पंकरुह, गुरु गति, मनहुँ मराल बिहंगा॥
मनिगन भूषन रुचिर तीर वर, मध्य धार मोतिनि-मय मंगा।
सूरदास मनु चली सुरसरी, श्रीगुपाल सागर सुख संगा॥
॥२४५४॥३०७२॥

राग सूही

नाहिंन नैन लगे निसि इहि डर।
जब तैं जाइ कह्यौ हँसि हरि सौं, समर-सोच उनकैं जिय घर-घर॥
भौंह कमान, तिलक भलुका करि, रचि सुदेस सीमंत सुरँग सर।
वलय ताटंक चक्र, नख नेजा, दामिनि से चमकत रद असि वर॥
गज उरोज, वर बाजि बिलोचन, वंकट, बिसद, बिसाल, मनोहर।
लाल ढाल अंचल चंचल गति, चँवर चिकुर राजत ता ऊपर॥
अंग-अंग-सजि सुभट सहायक, बने बिबिध भूषन बाने वर।
कामिनि आजुहिं आनि रहैगी, काम-कटक ले कुंज भँडा तर॥
चरन हनित नूपुर रन-तूरा, सुनत स्रवन काँपहिंगे थर-थर।
तब जानिबी किसोर जोर रुपि, रहौ जीति करि खेत सबै फर॥
ऐंचि करी जौ कहौं किसोरी, वै जु भीत ह्वै रहे बैठि घर।
यहै मतो, मुख जोर होतहीं, करहु पार लै पकरि पियहिं कर॥

सहचरि चतुर तुरत लै आई, बाहँ बोल दै करिकै बहु छर।
रोप-सुरत-रन मिली अंक भरि, लै लटकी दै दंत पियाऽधर ॥
जुरत-सुरत-संग्राम मच्यौ, छवि छूटि-छूटि कच, टूटि हार लर।
अति सनेह दुहुँ बिसरि देह भिरि, मैन मल्ल मुरझाइ गिरे धर ॥
विविध विलास-कला बस कीन्हे, राधा नारि नंद-नंदन वर।
निगमनि नेति कह्यौ निर्गुन, सो कह गुनाधि बरनिहै सूर नर ॥
॥२४५५॥३०७३॥

राग टोडी

फूलनि के महल, फूलनि सेज, फूले कुंज बिहारी, फूली राधा प्यारी।
फूले वै दंपति नवल मगन फूले फूले करैं केलि न्यारीयै न्यारी ॥
फूली लता बेलि, बिविध सुमन फूले फूले आनन दोऊ हैं सुखकारी।
सूरदास-प्रभु प्यारी पर वारत हरषि, फूले फूल चंपक बेल निवारी ॥२४५६॥३०७४॥

राग धनाश्री

आजु रँग फूले कुँवर कन्हाई।
कबहुँक अधर दसन भरि खंडत, चाखत सुधा मिठाई ॥
कबहुँक कुच कर परसि कठिन अति तहाँ बदन परसावत।
मुख निरखति सकुचति सुकुमारी, मनहीं मन अति भावत।
तब प्यारी कर गहि मुख टारति, नैंकु लाज नहिं आवत।
सूरदास प्रभु काम-सिरोमनि, कोक-कला दिखरावत ॥
॥२४५७॥३०७५॥

राग बिहागरौ

देखे सात कमल इक ठौर।
तिनकौं अति आदर दैबे कौं, धाइ मिले द्वै और ॥
मिलत मिले फिरि चलत न बिछुरत, अवलोकत यह चाल।
न्यारे भए बिराजत हैं सब अपने सहज सनाल ॥
हरि तिनि स्याम निसा निसि-नायक, प्रगट होत हँसि बोले।
चिबुक उठाइ कह्यौ अब देखौ, अजहूँ रहत अबोले ॥

इतने जतन किये नँदनंदन, तब वह निठुर मनाई।
भरि कै अंक सूर के स्वामी, पर्यँक पर ह्वाँ आई॥
॥२४५८॥३०७६॥

राग केदारौ

पिय-भावती राधा नारि।
उलटि चुंबन देति रसिकिनि, सकुच दीन्ही डारि॥
परस्पर दोउ भरे स्रम-जल, फूँकि-फूँकि झुरात।
मनहुँ बुझी अनंग-ज्वाला, प्रगट करत लजात॥
बहुरि उठे सम्हारि भट ज्यौं, अँग अनंग सम्हारि।
सूर प्रभु वन धाम विहरत, बने दोउ वर नारि॥
॥२४५९॥३०७७॥

राग रामकली

विहरत दोउ मन एक करे।
एक भाव इक भए लपटि कै, उर-उर जोरि धरे॥
मनहुँ सुभट रन एक संग जुरि, करि बल नहीँ डरे।
अधर दसन छत, नख छत उरपर, घायनि फरहिं परे॥
इहिं सुख, इहिं उपमा पटतर को, रति संग्राम लरे।
सूर सखी निरखति अंतर भई, रतिपति-काज सरे॥
॥२४६०॥३०७८॥

राग रामकली

आजु अति सोभित हैं घनस्याम।
मानहुँ हैं जीते नँद-नंदन, मनसिज सौं संग्राम॥
मुकुलित कच न समात मुकुटमैं, रोप-अरुन दोउ नैन।
स्रम सूचत गति, भाँति अलस बस, बोलत बनत न बैन॥
नख छत स्रोनि, प्रस्वेद गात तैं, चंदन गयौ कछु छूटि।
मदन सुभट के सर सुदेस मनु, लगे कवच पट फूटि॥
दसन-बसन पर प्रगट पीक मनु, सनमुख सहे प्रहार।
सूरदास प्रभु परम सूरमा, जाने नंदकुमार॥
॥२४६१॥३०७९॥

राग कल्यान

सकुचि मन परस्पर वसन लीन्हें।
प्यारि पिय निपुन दोउ कोक गुन कला मैं, उनि धनहिं उनि कंत अवल कीन्हे।
स्वेद कन गंड मंडलनि नासानि तट, पिय निरखि, पीत पट पोंछ डाऱ्यो।
निरखि प्यारी पोंछि वैसेंही पिय-वदन, कछु सकुचि कछु हरषि कै निहाऱ्यौ॥
नागरी डरनि पिय पीत पट उर धरे, वहुरि जिनि अपनी छाहँ देखै।
सूर-प्रभु-स्वामिनी, अंग-छवि-दामिनी, झलक प्रतिविव पर मान भेषै॥२४६२॥३०८०॥

राग रामकली

सँग राजति वृषभानु कुमारी।
कुंज-सदन कुसुमनि सेज्यापर, दंपति सोभा भारी॥
आलस भरे मगन रस दोऊ, अंग अंग प्रति जोहत।
मनहुँ गौर स्यामल ससि नव तन, बैठे सन्मुख सोहत॥
कुंज-भवन राधा-मनमोहन, चहूँ पास व्रजनारी।
सूर रहीं लोचन इकटक करि, डारति तन मन वारी॥
॥२४६३॥३०८१॥

राग नट

इकटक रहीं नारि निहार।
कुंज-घर श्री स्याम स्यामा, वैठे करत विहार।
नैन सैन कटाच्छ सौं मिलि, करत रंग विलास।
नहीं सोभा पार पावत, वचन मुख सुख हास॥
तरुनि श्री वृषभानु-तनया, तरुन नंद-कुमार।
सूर सो क्यौं वरनि गावै, रूप-रस-सुख-सार॥
॥२४६४॥३०८२॥

राग विलावल

देखौ सोभा सिंधु समात।
स्यामा स्याम सकल निसि, रस वस जागे होत प्रभात॥

लै पाहन-सुत कर सन्मुख दै, निरखि-निरखि मुसुकात ।
अचरज सुभग वेद जल-जातक, कनक नील मनि गात ॥
उदित जराउ पंच तिय रवि ससि किरन तहाँ सु दुरात ।
चंचल खग वसु, अष्ट कंज-दल, सोभा वरनि न जात ॥
चारि कीर पर पारस, विद्रुम, आनि अलीगन खात ।
सुख की रासि जुगल मुख ऊपर, सूरदास वलि जात ॥
॥२४६५॥३०८३॥

राग रामकली

देखि सखि पाँच कमल, द्वै संभु ।
एक कमल व्रज ऊपर राजत, निरखत नैन अचंभु ॥
एक कमल प्यारी कर लीन्हे, कमल सुकोमल अंग ।
जुगल कमल सुत कमल बिचारत, प्रीति, न कबहूँ भंग ॥
पट जु कमल मुख सन्मुख चितवत, वहु विधि रंग तरंग ।
तिन मैं तीनि सोम, वंसी वस तीन सु कस्यप भ्रंग ॥
जेइ कमल सनकादिक दुरलभ, जिनहीं निकसी गंग ।
तेई कमल सूर तित चितवत, निपट निरंतर संग ॥
॥२४६६॥३०८४॥

राग नट

देखि सखि चारि चंद्र इक जोर ।
निरखि वैठि नितविनि पिय सँग, सार सुता की ओर ॥
द्वै ससि स्याम नवल घन सुंदर, द्वै विधु की छवि गोर ।
तिनकै मध्य चारि सुम राजक, द्वै फल, आठ चकोर ॥
ससि ससि सग प्रवाल, कुंद कलि, अरुझि रह्यौ मन मोर ।
सूरदास प्रभु अति रति-नागर, वलि वलि जुगल किसोर ॥
॥२५ ७॥३०८५॥

राग नट

देखि री प्रगट द्वादस मीन ।
पट इंदु, द्वादस तरनि सोभित, विमल उडुगन तीन ॥
पट अष्ट अंबुज, कीर पट मुख कोकिला सुर एक ।
दस दोइ विद्रुम, दामिनी पट, तीनि व्याल विसेप ॥

पट त्रिवलि श्रीफल पट, बिराजत परसपर बर नारि।
ब्रज कुँवरि, गिरिधर कुँवर पर है, सूर जन बलिहारि॥
॥२४६८॥३०८६॥

राग देसगधार

देखि सखि तीस भानु इक ठोर।
ता ऊपर चालीस बिराजत, रुचि न रही कछु और॥
धर तैं गगन तैं, धरती, ता बिच कियौ बिस्तार।
गुन निर्गुन सागर की सोभा, बिनु रबि भयौ भिनुसार॥
कोटिनि कोटि तरगिनि उपजति जोग जुगति चित लाउ।
सूरदास प्रभु अकथ-कथा को, पडित भेद बताउ॥
॥२४६९॥३०८७॥

राग ललित

सघन कुंज तैं उठे भोरहीं स्यामा स्याम खरे।
जलद नवीन मिली मनु दामिनि, बरषि निसा उसरे॥
सिथिल-बसन तन नील पीत-दुति, आलस जुत पहिरे।
स्रमजल बुंद कहूँ-कहुँ उडगन, बदरनि मैं निकरे॥
भूषन बिबिध भाँति मँडवारी, रति-रस उमँगि भरे।
काजर अधर, तमोल नैन रँग, अँग-अँग झोल परे॥
प्रेम-प्रबाह चली मनु सरिता, टूटी माल गरे।
सोभा अमित बिलोकि सूर-प्रभु, क्यौ सुख जात तरे॥
॥२४७०॥३०८८॥

राग नट

दंपति कुंज द्वार खरे।
सिथिल अँग मरगजे अबर, अतिहि रूप भरे॥
सुरतहीं सब रैनि बीती, कोक प्रन रग।
जलद दामिनि संग सोहत, भरे आलस अग॥
चकृत है ब्रजनारि निरखतिं, मनौ चद चकोर।
सूर-प्रभु बृषभानु-तनया, बिलसि रति पति जोर॥
॥२४७१॥३०८९॥

राग बिलावल

राजत दोउ निकुंज खरे।
स्यामा नव किसोर, पिय नव रँग, अति अनुराग भरे॥
अति सुकुमारि सुभग चंपक-तनु, भूषन भृंग अरे।
मरकत-कमल-सरीर सुभग हरि, रति पिय-बेप करे॥
चर्चित चारु कमल-दल मानौ, पिय के दसन समात।
मुख-मयंक-मधु पियत करनि कसि, ललना तउ न अघात॥
लाजति वदन दुराइ मधुर, मृदु, मुसुकनि मन हरि लेत।
छूटी अलक भुवंगिनि कुच तट, पैठी त्रिवलि-निकेत॥
रिस रुचि रंग वरह के मुख लौं, आने सोम समेत।
प्रेम पियूष पूरि पोंछत पिय, इत उत जान न देत॥
वदन उघारि निहारि निकट करि, पिय के आनि धरे।
बिप संका नख रहत मुदित मन, मनसिज ताप हरे॥
जुगल किसोर चरन रज वंदौं, सूरज सरन समाहिं।
गावत सुनत स्रवन सुखकारी, बिस्व-दुरित दुरि जाहिं॥
॥२४७२॥३०९०॥

राग नट

जो सुख स्याम प्रिया सँग कीन्हौ। सो जुवतिनि अपनौ करि लीन्हौ॥
दुविधा हृदय कछू नहिं राख्यौ। अति आनंद वचन मुख भाष्यौ॥
यहै कहति तब की अब नीकैं। सकुचि हँसी नागरि सँग पीकैं॥
नैन कोर पिय हृदय निहारयौ। उन पहिलेहिं पीतांबर धारयौ॥
सूरदास यह लीला गावै। हरि-पद-सरन अछै फल पावै॥
॥२४७३॥३०९१॥

राग नट

धनि ब्रज-सुंदरी धनि स्याम।
धन्य धनि वृपभानु-तनया, राधिका जिहिं नाम॥
गेह गेहनि गईं तरुनी, स्याम गए नँद धाम।
भवन गई वृपभानु-तनया, कोक-कला-सुजान॥
करत मनकामना पूरन, एक निसि सब वाम।
सूर प्रभु जा सदन जात न, सोइ करति तनु ताम॥
॥२४७४॥३०९२॥

ंडिता-प्रकरण

राग बिलावल

नाना रँग उपजावत स्याम। कोउ रीझति, कोउ खीझति बाम॥
ाहू कैं निसि घसत बनाइ। काहू मुख छ्वै आवत जाइ॥
हु नायक ह्वै बिलसत आपु। जाकौं सिव पावत नहिं जापु॥
ाकौं ब्रजनारी पति जानैं। कोउ आदरैं, कोउ अपमानैं॥
ाहू सौं कहि आवन साँझ। रहत और नागरि-घर माँझ॥
कबहुँ रैनि सब संग बिहात। सुनहु सूर ऐसे नँद तात॥
॥२४७५॥३०९३॥

राग बिलावल

अब जुवतिनि सौं प्रगटे स्याम।
अरस परस सबहिनि यह जानी, हरि लुबधे सबहिनि कैं धाम॥
जा दिन जाकैं भवन न आवत, सो मन मैं यह करति बिचार।
आजु गए औरहिं काहू कैं, रिस पावति, कहि बड़े लबार॥
यह लीला हरि क मन भावत, खडित बचन कहत सुख होत।
साँझ बोल दै जात सूर-प्रभु, ताकैं आवत होत उदोत॥
॥२४७६॥३०९४॥

राग रामकली

ठाढ़े नंद द्वार गुपाल।
बोलि लीन्हे देखि ललिता सैन दै ततकाल॥
हँसत गए हरि गेह ताकैं कोउ न जानत और।
मिली हरि कौं लाइ उर भरि चापि कुचनि कठोर।
कह्यौ मेरैं धाम कबहूँ क्यौं न आवत स्याम।
सूर-प्रभु कही आजु नागरि आइहैं हम जाम॥
॥२४७७॥३०९५॥

राग बिलावल

ललिता कौं सुख दै गए स्याम।
आजु बसैंगे रैनि तिहारैं, प्रान-पियारी हौ तुम बाम॥
यह कहि कै अनतहिं पगुधारे, बहुनायक के भेद अपार।
साँझ समय आवन कहि आए सौंह बहुत करि नंदकुमार।

वह बैठी मारग-द्वार जोवति, इक इक पल बीतत इक जाम ।
सूर स्याम आवन की आसा, सेज सँवारति व्याकुल काम ॥
॥२४७८॥३०९६॥

राग गौरी

साँझहिं तैं हरि-पंथ निहारै ।
ललिता रुचि करि धाम आपनैं सुमन सुगंधनि सेज सँवारै ॥
कबहुँक होति वारनैं ठाढ़ी, कबहुँक गनति गगन के तारे ।
कबहुँक आइ गली मग जोवति, अजहुँ न आए स्याम पियारे ॥
वै बहुनायक अनत लुभाने, और बाम कैं धाम सिधारे ।
सूर स्याम बिनु बिलपति बाला, तमचुर जहँ तहँ सब्द पुकारे ॥
॥२४७९॥३०९७॥

राग गौरी

ललिता तमचुर-टेर सुन्यौ ।
वै बहुनायक अनत लुभाने, नहिं आए जिय कहा गुन्यौ ॥
बिनु कारन दै आस गए पिय, बार-बार तिय सीस धुन्यौ ।
सेज सँवारि पंथ निसि जोवति अस्त आनि भयौ चंद पुन्यौ ॥
तब बैठी मन मारि आपनौ, कछु रिस कछु मन सोच पर्‌यौ ।
सूर स्याम यातैं नहिं आए, मातु-पिता कौ त्रास धर्‌यौ ॥
॥२४८०॥३०९८॥

राग जैतश्री

सोच पर्‌यौ नागरि मन माहीं ।
की कहुँ अनत लुभाने, की पितु मातु त्रास चित माहीं ॥
वै निसि बसे महल सीला कैं, सुख सब रैनि गँवाई ।
उठे अकुलाइ भोर भयौ जान्यौ, तब नागरि-सुधि आई ॥
सहज चले गोपी सौं कहि कै, जिय सकुचत अति भारी ।
सूर स्याम ललिता-गृह आए, चितै रही मुख प्यारी ॥
॥२४८१॥३०९९॥

राग ललित

प्यारी चितै रही मुख पिय कौ ।
अंजन अधर, कपोलनि बंदन, लाग्यौ काहू त्रिय कौ ॥

तुरत उठी दर्पण कर लीन्हैं देखौ वदन सुधारौ।
अपनौ मुख उठि प्रात देखि कै, तब तुम कहूँ सिधारौ॥
काजर वदन, अधर कपोलनि, सकुचे देखि कन्हाई।
सूर स्याम नागरि-मुख जोवत, वचन कह्यौ नहिं जाई॥

॥२४८२॥३१००॥

राग आसावरी

दर्पन लै प्यारी मुख-आगैं, कहति पिया छवि हेरौ जू।
मेरी सौंहा कहि पुनि-पुनि, उत काहैं मुख फेरौ जू॥
सकुचत कहा बोल के साँचे, मेरैं गृह तौ आए जू॥
रैनि नहीं तौ अब जु कृपा भई, धनि जिनि स्वाँग कराए जू॥
मेरी कही विलगि जनि मानौ, मैं तुव करत वडाई जू।
सूर स्याम सन्मुख नहिं चितवत, रहे धरनि सिर नाई जू॥

॥२४८३॥३१०१॥

राग ललित

क्यौं मोहन दर्पन नहिं देखत।
क्यौं धरनी पग-नखनि करोवत, क्यौं हम तन नहिं पेषत॥
क्यौं ठाढ़े बैठत क्यौं नाहीं, कहा परी हम चूक।
पीतांबर गहि कह्या वैठियै, रहे कहाँ ह्वै मूक॥
उघरि गयौ उर तैं उपरैना, नख-छत, विनु गुन माल।
सूर देखि लटपटी पाग पर, जावक की छवि लाल॥

॥२४८४॥३१०२॥

राग ईमन

ऐसी कहौ रँगीले लाल।
जावक सौं कहँ पाग रँगाई, रँगरेजिनी मिली कोउ वाल॥
वदन रंग कपोलनि दीन्हौ अरुन अधर भए स्याम रसाल।
जिनि तुम्हरी मन-इच्छा पुरई, धनि वनि पिय वनि धनि वह वाल॥
माला कहाँ मिली विनु गुन की, उर-छत देखि भई बेहाल।
सूर स्याम छवि सबै विराजी, यहै देखि मोकौं जजाल॥

॥२४८५॥३१०३॥

राग गुडमलार

काहैं सकुचत दृष्टि न जोरत, मोहन रूप विहारी।
निकसे समाचार सब सोवत, घूमति आँखि तिहारी॥
नैन जगैं पल लगे जात हैं, पौढ़हु तल्प हमारी।
विविध कुसुम रचना रचि पचि कै, अपनैं हाथ सँवारी॥
कहत सूर उर तप्यौ भोर भयौ, हम बैठीं रखवारी॥
॥२४८६॥३१०४॥

राग बिलावल

ज्वाब नहीं पिय आवई, क्यौं कहा ठगाने।
मैं तबही की बकति हौं, कछु आजु भुलाने॥
हाँ नाहीं नहिं कहत हौ, मेरी सौं काहै।
आए क्यौं चक्रित भए, मोकौं रिस दाहै॥
कहाँ रहे कासौं बन्यौ तहँई पगु धारौ।
सूर स्याम गुन रावरे, हिरदय न बिसारौं॥
॥२४८७.३१०५॥

राग बिलावल

काहे कौं कहि गए आइहैं, काहैं झूठी सौंहैं खाए।
ऐसे मैं नहिं जाने तुमकौं, जे गुन करि तुम प्रगट दिखाए॥
भली करी यह दरसन दीन्हे, जनम जनम के ताप नसाए।
तब चितए हरि नैंकु तिया-तन, इतनैं हि सब अपराध छमाए॥
सूरदास सुंदरी सयानी, हँसि लीन्हे पिय अंकम लाए॥
॥२४८८॥३१०६॥

राग बिलावल

नैन कोर हरि हेरि कै, प्यारी बस कीन्ही।
भाव कह्यौ आधीन कौ, ललिता लखि लीन्ही॥
तुरत गयौ रिस दूरि ह्वै, हँसि कंठ लगाए।
भली करी मनभावते, ऐसैंहु मैं पाए॥
भवन गई गहि बाहँ लै, निसि जागे जाने।
अंग सिथिल निसि स्रम भयौ, मनहीं मन भाने॥

ऑंग सुगंध मर्दन कियौ, तुरतहिँ अन्हवाए।
अपनैं कर ऑंग पौंछि कै, मन-साध पुराए॥
चीर अभूषन अंग दै, बैठे गिरिधारी।
रुचि भोजन पिय कौं दियौ, सूरज बलिहारी॥
॥२४८९॥३१०७॥

राग कल्यान

कियौ मन-काम नहिँ रही बाकी।
प्रिया रिस दूरि कै, रस पूरि कै, अनँग बल दूरि कै गोपजा की॥
नंद-सुत लाडिले, प्रेम के चॉड़िले सहृदै कहत हैं नारि आगैं।
तुम परम भावती प्रानहूँ तैं खरी, सुख नहीँ लहत मैं तुमहिं त्यागैं॥
तुमहिं धन तुमहिं तन तुमहिं मनहीँ बसौ, और तिय नहीँ मो मनहिं भावै।
सूर प्रभु चतुर वर, चतुर नागरिनि के, चतुरई वचन कहि मन चुरावै॥२४९०॥३१०८॥

राग भैरव

यहै भाव सब जुवतिनि सौं।
ऐसेइ बचन कहत सब आगैं, भूलि रहति मन मोहन सौं।
बिनु देखैं रिस भाव बढ़ावतिँ मिलत आइ दै सौंहनि सौं।
मुख देखत दुख रहत नहीँ तनु, चितवतिँ मुरि दोउ भौंहनि सौं॥
और तिया ऑंग चिह्न बिराजत, रिस मनहीँ मन छोहति सौं।
सूर स्याम सब गोप-कुमारी टरति नहीँ कहुँ गोहनि सौं॥
॥२४९१॥३१०९॥

राग बिलावल

ललिता कौं सुख दै चले, अपनैं निजधाम।
बीच मिली चंद्रावली, उन देखे स्याम॥
मोर मुकुट कछनी कछे, नटवर गोपाल।
रही वदन तनु हेरि कै, अति हित ब्रजबाल॥
गली साँकरी, कोउ नहीँ, आतुर मिली धाइ।
कहाँ-कहाँ पिय रहत हौ, हमकौं बिसराइ॥

स्याम कह्यौ हँसि वाम सौं, तुम्हरैं निसि वास ।
सूर हृदय की कल्पना सुनि, भई हुलास ॥
॥२४९२॥३११०॥

राग आसावरी

स्याम वाम कौं सुख दै बोले, रैनि तुम्हारैं आऊँगौ ।
मातु पिता जिय त्रास धरत हौं, तऊ आइ सुख पाऊँगौ ॥
तुम मिलिबे की साध, भुजा भरि, उर सौं कुच परसाऊँगौ ।
नैन बिसाल भाल उर पैठे, ते तुव हाथ कढ़ाऊँगौ ॥
तुव तनु परसि काम-दुःख मेटौं, जीवन सफल कराऊँगौ ।
सुनहु सूर अधरनि रस अँचवौं, दुहुँ-मन-तृषा बुझाऊँगौ ॥
॥२४९३॥३१११॥

राग गूजरी

सुनि सुनि बचन नारि मुसुकानी ।
गई सदन अति ह्वै उतावली, आनँद सहित लजानी ॥
फूली फिरति कहति नहिं काहू, मीन मिल्यौ जनु पानी ।
बारंबार स्याम रति रस की, कही प्रगट करि बानी ॥
बासर कल्प समान, न बीतत, कैसैंहु रैनि तुलानी ।
सूर देखि गति गत पतंग की, अवधि जानि हरपानी ॥
॥२४९४॥३११२॥

राग कल्यान

राधिका गेह हरि देह-बासी । और तिय घरनि घर तनु-प्रकासी ॥
ब्रह्म पूरन द्वितिय नहीं कोऊ । राधिका सबै, हरि सबै वोऊ ॥
दीप सौं दीप जैसैं उजारी । तैसैं ही ब्रह्म घर घर बिहारी ॥
खंडिता बचन हित यह उपाई । कबहुँ कहुँ जात, कहुँ नहिं कन्हाई ॥
जन्म कौ सुफल हरि यहै पावैं । नारि रस बचन स्रवननि सुनावैं ॥
सूर-प्रभु अनतहीं गमन कीन्हौ । तहाँ नहिं गए जहँ बचन दीन्हौ ॥
॥२४९५॥३११३॥

राग टोडी

स्याम गए सुखमा कैं धाम । देखत हरप भई मन बाम ॥
आतुर मंदिर गए समाइ । प्यारी प्रेम उठी भहराइ ॥

स्याम-भामिनी परम उदार । कोक-कला-रस करति बिचार ॥
बोलत पिय, नहिं आवति पास । गदगद बानी कहति उदास ॥
धाइ जाइ पति अंकम लाइ । हा हा कहि कहि लेत बलाइ ॥
अति आतुर पति कैं गति काम । कहा प्रकृति पाई यह बाम ॥
बाहँ गहत कीन्हौ धनि मान । तब हरि कीन्हौ एक सयान ॥
उन प्यारी-चरननि सिर धारी । काम व्यथा जान्यौ सुकुमारी ॥
अल्प हँसी, मुख हेरि लजानी । सूरज-प्रभु तिय-मन की जानी ॥
॥२४९६॥३११४॥

राग गुडमलार

स्याम कर भामिनी मुख सँवार्‍यौ ।
बसन तनु दूरि करि, सबल भुज अक भरि, काम-रिस बस बाम निदरि धार्‍यौ ।
अधर दसननि भरे, कठिन कुच उर लरे, परे सुख सेज मनु मुरछि दोऊ ॥
मनौ कुम्हिलाइ रहे मैन सौं मल्ल दोउ, कोक-परबीन घटि नहीं कोऊ ॥
अंग बिह्वल भए, नैन नैननि नए, लजित रति अंत तिय कत भारी ।
सूर धनि धन्य सुखमा-नारि-बस स्याम, जाम जुग भई पति तैं न न्यारी ॥२४९७॥३११५॥

राग बिहागरौ

चंद्रावली स्याम-मग जोवति ।
कबहुँ सेज कर झारि सँवारति, कबहुँ मलय-रज भोवति ॥
कबहुँ नैन अलसात जानिकै, जल लै पुनि पुनि धोवति ॥
कबहुँ भवन, कबहूँ आँगन ह्वै, ऐसैं रैनि बिगोवति ।
कबहुँक बिरह जरति अति व्याकुल, आकुलता मन मोवति ।
सूर स्याम बहु-रवनि रवन पिय, यह कहि-कहि गुन तोवति ॥
॥२४९८॥३११६॥

राग ललित

ऐसैं हि ऐसैं रैनि बिहानी ।
चद्र मलीन चिरैया बोली, सुनी काग की बानी ॥

वै लुब्धे अनतहिँ काहू कैं, मन की आस भुलानी।
कपटी कुटिल कूर कह जानै, स्याम-नाम जिय आनी॥
कोकिल स्याम, स्याम अलि देखौ, स्याम रंग है पानी।
स्याम जलद, अहि स्याम कहावत, सूर स्याम सोइ वानी॥
॥२४९९॥३११७॥

राग गुंडमलार

वाम सँग स्याम त्रय जाम जागे।
कोक-विद्या निपुन, सकल गुन मैं सँपन, सुरत-संग्राम जुरि नहीँ भागे॥
अंग आलस भरे, नैन निद्रा ढरे, नैंकु सज्या परे निसा वीती।
सूर-प्रभु नंद-सुत चले अकुलाइ कै, गए ता धाम रस-काम जीती॥
॥२५००॥३११८॥

राग बिास

चंद्रावलि-धाम स्याम भोर भएँ आए।
इत रिस करि रही वाम, रैनि जागि चारि जाम, देख्यौ जो द्वार
स्याम, ठाढ़े सुखदाए॥
मंदिर तैं रही निहारि, मनहीं मन देति गारि, ऐसे कपटी कठोर,
आए निसि वीते।
रिस नहीँ सकी सम्हारि, वैठी चढ़ि द्वार वारि, ठाढ़े गिरिधारि
निरखि, छवि नख सिख ही तैं।
विनु गुन वनी हृदय-माल, ता विच नख-छत रसाल, लोचन दोउ
दरस लाल जिय सौं रिस वाढ़ी।
जावक रँग लग्यौ भाल, वंदन भुज पर विसाल पीक पलक अधर
झलक वाम प्रीति गाढ़ी॥
क्यौं आए कौन काज, नाना करि अंग साज, उलटे भूपन सिँगार,
निरखत हौं जाने।
ताही कैं जाहु स्याम, जाकैं निसि वसे धाम मेरैं गृह कहा काम
सूरदास गाने॥२५०१॥३११९॥

राग बिलावल

तहँइ जाहु जहँ रैनि वसे हौ।
काहे कौं दाहन हौं आए, अँग अँग चिह्न लसे हौ॥

अरगज अग मरगजी माला, बसन सुगंध भरे हो।
काजर अधर, कपोलनि चंदन लोचन अरुन धरे हो॥
पलकनि पीक, मुकुर लै देखो, ये कोनहीं करे हो।
सूरदास प्रभु पीठि वलय गडे, नागरि अग भरे हो॥
॥२५०२॥३१२०॥

राग बिलावल

तहँइ जाहु जहँ निसा बसे हो।
जानति हौं पिय चतुर-सिरोमनि, नागरि-जागर-राग रसे हो॥
घूमत हौ मनु प्रिया-उरगिनी, नव-विलास स्रम-सेज डसे हो।
काजर अधरनि प्रगट देखियत, नागबेलि रँग निपट लसे हो॥
स्याम उरस्थल पर नख-रेखा, मनहुँ गगन ससि उदित दिसे हो।
लटपटि पाग महावर के रँग, मानिनि-पग पर सीस घसे हो॥
बिगलित बसन, मरगजी माला, पीठि वलय के चिह्न लसे हो।
सूरदास प्रभु प्रिया-बचन सुनि, नागर नगधर नैंकु हँसे हो॥
॥२५०३॥३१२१॥

राग बिलावल

तहँइ जाहु जहँ रैनि हुते।
काह दुराव करत मनमोहन, मिटे चिह्न नहिं अग जुते॥
बिनहीं गुन उर हार बिराजत, परम चतुर हिय लाइ सुते।
बिथुरी अलक, अटपटे भूषन, काम कुटिल कुच-बिच जु गुते॥
दसन दाग, नख-रेख बनी है, भामिनि भवन भले भुगुते।
सूर सुदेस अधर मधु फीके, लोचन अलस उनींद उते॥
॥२५०४॥३१२२॥

राग बिलावल

तहँइ जाहु जहँ रैनि गँवाई।
काहे कौं मुँह परसन आए, जानति हौं चतुराई॥
वाके गुन मन तैं नहिं टारत, बोलत नाहीं बैन।
या छवि पर मैं तन मन वारौं, पीक बिराजत नैन॥
भली करी यह दरस दिखायौ, तातैं नैन सिराने।
सूर स्याम निसि कौ सुख लूट्यौ, हमकौं भया बिहाने॥
॥२५०५॥३१२३॥

राग सुघरई

आए लाल ललित भेष किये ।
पीक कपोल, अधर पर काजर, जावक भाल दिये ॥
चंदन खौरि मेटि अब आए, कुंकुम रंग हिये ।
पीतांबर कहँ डारि कौन कौ, नीलांबरहिं लिये ॥
लाली दै, पीरी लै आए, देखत पुलक जिये ।
सूरदास प्रभु नवल रसीले, वेऊ नवल त्रिये ॥
॥२५०६॥३१२४॥

राग सूही

जागे हौ जु रावरे ये नैना क्यौं न खोलौ ।
भए हौ तिया कैं वस, जागे निसि सरवस, भोर भएँ उठि आए
भूले कहाँ डोलौ ॥
चंदन मिटाए तन, अतिहीं अलस मन, नागरी की पीक लीक
लागी है कपोलौ ।
पीतांबर भूलि आए, प्यारी जी कौ पट ल्याए, भोर भए उठे सूर
किये आए दोलौ ॥२५०७॥३१२५॥

राग बिलावल

पीतांबर पट कहा भयौ ।
नीलांबर ओढ़े हौ आए, अति डहडहौ नयौ ॥
तैसोइ अंग, वसन रँग तैसोइ कहा कहौं यह सोभा ।
तैसियै बनी मरगजी केसर, ता तिय के मन लोभा ॥
एते पर क्यौं बोलत नाहीं, कहा खोइ से आए ।
सूर स्याम यह अब मैं जानी, नागरि चित्त चुराए ॥
॥२५०८॥३१२६

राग भैरव

हा हा हो पिय बात कहौ ।
आपु कछू जिय तरक गहत हौ, तौ तुम मोसौं मौन गहौ ॥
कहा चूक हमकौं पिय लागी, रूसि रहे हौ काहे जू ।
तबहीं तैं वैसेहि हो ठाढ़े, मो तन कौं नहिं चाहे जू ॥

अब हमकौं अपराध छमौगे, कृपा करौ मुख बोलौ जू।
सूर स्याम अब तजौ निठुरई, गाँठि हृदय की खोलौ जू॥
॥२५०९॥३१२७॥

राग बिलावल

रूसे हौ पिय रूसे हौ।
उत्तर कौ उत्तर न देत तुम, हित तैं हीन कछू से हौ॥
वह चितवनि न होइ नैननि की, बैननि हूँ उत हूँसे हौ।
वह मुख कमल बिकास नहीं, रति सायक-सिसिर बिदूसे हौ॥
की छुटि गई सपदा कर तैं, की ठग ठगे कछू से हौ।
मेरैं जान सूर प्रभु साँचैं, मदन चोर मिलि मूसे हौ॥
॥२५१०॥३१२८॥

राग बिलावल

मदन चोर सौं जानि मुसायौ।
अपनी लाली खोइ, पीक की लाली पलकनि पायौ॥
ह्याँ तैं गए चतुरई लीन्हे, सो सब उनहिं छपायौ।
आलस-अबल जम्हात अंग, ऐंडात गात दरसायौ॥
कचन खोइ काँच लै आए, बिडतौ भलौ फबायौ।
सूर कहूँ पर घर मन माहीं, जैसैं हाल करायौ॥
॥२५११॥३१२९॥

राग काफी

लाल उनीँदे लोइननि, आलस भरि आए।
अरुझि काम की बेलि सौं, कौनैं बिरमाए॥
सिथिल पाग दस्तार की, जावक रँग भीने।
पाइ परे, अपबस करे, तब सरबस दीने॥
लाली मेरे लाल की, सब ही तन ढीले।
लाली लै लालन गए आए मुख पीले॥
बिनु गुन माल हियैं लसै, पिय प्रीति-निसानी।
सखि रसाल हमकौं दई, तुम देहु बिरानी॥
पग डगमग इत कौं, धरौ उन कौं दृग धाए।
हम अंतर अतर बसैं, पिय मो मन भाए॥

उलटि तहाँ पग धारियै, जासौं मन मान्यौ।
छपद कंज तजि बेलि सौं, लटि प्रेम न जान्यौ॥
तब हँसि बोले स्याम जू, तुम तैं को प्यारी।
तुम बिनु कल मोकौं नहीं, अतिहीं सुखकारी॥
बचन चतुरई छाँड़ियै, कहँ तैं पढ़ि आए।
सूर स्याम गुन रासि हौ, नीकैं प्रगटाए॥
॥२५१२॥३१३०॥

राग सुघरई

आए (लाल) जामिनि जागे भोर।
नील कलेवर, कोमल उर पर, गड़ि गए कुच जु कठोर॥
निसि बसि रहे मानिनी कैं गृह, अब आए इहिं ओर।
सूरदास प्रभु बचन बनावत, चोरत हौ मन मोर।
॥२५१३॥३१३१॥

राग सुघरई

मैं जानी जिय जहँ रति मानी।
तुम आए हौ लालन मेरैं, जब चिरियाँ चुचुहानी॥
मुख की बात कहा कहौं ठानी, बातनि ही पहिचानी।
एते पर अँखियाँ रस-सानी, अरु पगिया लपटानी॥
भलहि जावक-रंग बनानी, अधरहिं अंजन जानी।
बिनु गुन बनी माल, सब अंगनि उलटी सकल निसानी॥
धनि त्रिय तुमकौं जो सुखदानी, जागत रैनि बिहानी।
सूरदास प्रभु गुन निधान हौ, अंतर की सब जानी॥
॥२५१४॥३१३२॥

राग बिभास

मैं जानी पिय बात तुम्हारी।
भोर भए मेरैं गृह आए, ऐसे भोरे भारी॥
ह्याँ आए मुख परसन मेरौ, हृदय टरति नहिं प्यारी।
कपट चतुरई दूरि करौ जू, अपजस लेतऽस गारी॥
कहा साँच मैं खोवत कर तैं, झूठैं कहा फबावत!
सूर स्याम नागर नागरि वह, हम तुम्हरैं मन आवत?
॥२५१५॥३१३३॥

राग काफी

रैनि रीझ की बात कह्यौ ।
काहे कौं सकुचत मनमोहन, ठाढ़े क्यों न रहौ ॥
पीतांबर कह भयौ तुम्हारौ, कीधौं लियो गहौ ।
नीलांबर पहिरावनि पाई, सन्मुख क्यों न चहौ ॥
तब हसि चले स्याम मंदिर तन, कछु जिय लाज गहौ ।
सूर स्याम ह्वाँई अब रहिये, अति पुनीत तुम हौ ॥
॥२५१६॥३१३४॥

राग बिलावल

तुम रीझे की उनहिँ रिझाए ।
हा हा पिय यह प्रगट सुनावौ, कोटिक सौंह दिवाए ।
जावक-भाल-चिह्न, मैं जान्यौ, हठ करि पाइ लगाए ।
नैननि पीक मया उन कीन्ही, अजन अधरनि लाए ॥
बिनु-गुन माल मिली कहँ तुमकौं, कंकन पीठि दिखावहु ।
सूर स्याम हम तो यौं जानति, तुमहूँ कहि न सुनावहु ॥
॥२५१७॥३१३५॥

राग बिलावल

माधौ नीकी बिधि सौं आए ।
नख रेखा उर मंडित यौं, मनु द्वितिया-चद उगाए ॥
बिगलित बसन, धरतपग डगमग, किहिं यह चाल चलाए॥
निसा आन कैं बसे साँवरे, भोर इहाँ उठि धाए ।
रस बस अनत रहे सूरज-प्रभु, तउ मेरैं मन भाए ।
पाउँ धारिये बाम-धाम जहँ, चारौं जाम गँवाए ॥
॥२५१८॥३१३६॥

राग बिलावल

आजु हरि पायौ है मुँह माँग्यौ ।
जब तैं हम सौं बिचारयौ मनसिज, दै सिलवान्यौ त्याग्यौ ।
कहूँ जावक कहुँ बने तँबोल रँग, कहुँ अँग सेंदुर दाग्यौ ।
मानौ रन छूटे घायल कौं, जहँ तहँ स्रोनित लाग्यौ ॥

नख मनु चंद्र बान सजि कै, भ्रमकार उठ्यौ उर आग्यौ ।
सूरदास मानिनि रन जीत्यौ, समर संकि नहिँ भाग्यौ ॥
॥२५१९॥३१३७॥

राग बिलावल

आजु हरि रैनि उनींदे आए ।
अंजन अधर ललाट महाउर, नैन तमोर खवाए ॥
त्रिगुन माल बिराजति उर पर, चंदन भाल लगाए ।
मगन देह, सिर पाग लटपटी, भृकुटी चंदन लाए ।
हृदय सुभग नख-रेख बिराजति, कंकन पीठि बनाए ।
सूरदास प्रभु यहै अचंभौ, तीनि तिलक कहँ पाए ॥
॥२५२०॥३१३८॥

राग बिलावल

आजु हरि आलस-रंग भरे ।
कबहुँक बाहँ जोरि ऐंड़ावत, कबहुँ जम्हात खरे ॥
बैठौगे की पाउ धारियै, देखत नैन सिराने ।
साँझ आइ इक दरसन दीन्हौ, की अब होत बिहाने ॥
कब के द्वार भए पिय ठाढ़े, भोरे बड़े कन्हाई ।
सूर स्याम ह्वाँ सुरति करति वह, ह्याँ तुम भेर लगाई ॥
॥२५२१॥३१३९॥

राग बिलावल

सौँह करन कौँ भोरहीँ, तुम मेरैँ आए ।
रैनि करत सुख अनतहीँ, ताकैँ मन भाए ॥
अँग-अँग भूषन और से, माँगे कहुँ पाए ।
देखि थकित इहिँ रूप कौँ, लोचन अरुनाए ॥
पाग लटपटी सोहई, जावक रँग लाए ।
मान कियौ उहिँ मानिनी, धनि पाइ पराए ॥
यह चतुराई कहँ पढ़ी, उनहीँ समुझाए ?
सूरदास प्रभु साँचिलै, उपमा कवि गाए ॥
॥२५२२॥३१४०॥

राग गौरी

तुमकौं कमल नयन कवि गावत ।
बदन कमल उपमा यह साँची, ता गुन कौं प्रगटावत ॥
सुंदर कर कमलनि की सोभा, चरन कमल कहवावत ।
और अंग कहि कहा बखानौं, इतनैं हि कौ गुन गावत ॥
स्याम नाम अद्भुत यह बानी, स्रवन सुनत सुख पावत ।
सूरदास प्रभु ग्वाल-सँघाती, जानी जाति जनावत ॥
॥२५२३॥३१४१॥

राग बिलावल

तुम न्याय कहावत कमल नैन ।
कमल चरन कर, कमल बदन-छबि अरु जु सुनावत मधुर बैन ॥
प्रात प्रगट रति रबिहिं जनावत, हुलसत आवत अंक दैन ।
निसि दै द्वार कपाट सदल, बधु-मधुपनि प्यावत परम चैन ॥
मिलिबे माँझ उदास अनत चित, बसत सदा जल एक ऐन ।
सूर कपट फल तबहिं पाइहौ, अपनी अरप जब दहै मैन ॥
॥२५२४॥३१४२॥

राग भैरव

धीर धरहु फल पावहुगे ।
अपनेहीं सुख के पिय चाँड़े, कबहूँ तौ बस आवहुगे ॥
हम सौं कहत और की औरै, इन बातनि मन भावहुगे ।
कबहुँ राधिका मान करैगी, अंतर बिरह जनावहुगे ॥
तब चरित्र हमहीं देखैंगी, जैसैं नाच नचावहुगे ।
सूर स्याम अति चतुर कहावत, चतुराई बिसरावहुगे ॥
॥२५२५॥३१४३॥

राग देवगंधार

यह कहि प्यारी भवन गई ।
रीझे स्याम देखि वा छबि पर, रिस मुख सुदरई ॥
द्वार कपाट दियौ गाढ़ै करि, कर आपनैं बनाइ ।
नैंकु नहीं कहुँ संधि बचाई, पौढ़ि रही तब जाइ ॥

इहिँ अंतर, हरि अतरजामी,—जो कछु करै सु होइ।
जहाँ नारि मुख मूँदि पौढ़ि रही, तहाँ संग रहे सोइ॥
जो देखै ह्याँ संग बिराजत, चली तिया झहराइ।
एक स्याम आँगनहीँ देखे, इक गृह रहे समाइ॥
उत कौँ वै अति विनय करत हैँ, इत अंकम भरि लीन्ही।
सूर स्याम मनहरनि कला बहु, मन हरि कै बस कीन्ही॥
॥२५२६॥३१४४॥

राग कल्यान

तब नागरि रिस भूलि गई।
पुलकि अंग अँगिया उर दरकी, अंग अनंग जई॥
अंकम भरि पिय प्यारी लीन्ही, निसि-सुख बासर दीन्ह।
मान छिंड़ाय हुलास बढ़ायौ, सुफल मनोरथ कीन्ह॥
तब निज धाम स्याम पगुधारे, तहाँ सहचरी आइ।
सूरज प्रभु रस-भरी नागरी, देखि रही मन लाइ॥
॥२५२७॥३१४५॥

राग आसावरी

चंद्रावली हरष सौँ बैठी, तहाँ सहचरी आई (हो)।
औरै बदन, और अँग सोभा, देखि रही चख लाई (हो)॥
कहा आजु अति हरषित बैठी, कहा लूटि सी पाई (हो)।
क्यौँ अँग सिथिल, मरगजी सारी, यह छबि कही न जाई हो)॥
मोसौँ कहा दुराव करति है, कहा रही सिर नाई (हो)।
मैं जानी तोहि मिले सूर-प्रभु जसुमति-कुँवर कन्हाई (हो)॥
॥२५२८॥३१४६॥

राग आसावरी

चंद्रावली करति चतुराई सुनत बचन मुख मूदि रही।
ज्वाब नहीँ कछु देति सखी कौँ, हाँ, नाहीँ कछुवै न कही॥
गूँगे-गुर की दसा गई ह्वै, पूरन स्याम-सुहाग भरी।
वहै ध्यान हरि कैँ अनुरागी वह लीला चित तैँ न टरी॥
तब बोली मोसौँ कछु बूझति, कहा कहौँ मुख बनै नहीँ।
सूर स्याम-जुवती-मन-मोहन, तिनके गुन नहि परत कही॥
॥२५२९॥३१४७॥

राग बिलावल

हा हा कहि चंद्रावलि मोसौं, हरि के गुन मैं हूँ सुनि लेहुँ।
स्रवननि मग सुनि हृदय प्रकासौं, पुनि-पुनि री तोहिं उत्तर देउँ॥
की तोहि मिले तीर जमुना कैं, की तोहिं मिले भवनहीं माँझ।
कहौ तोहिं मेरैं गृह आए, मानौ अस्त होत रवि साँझ॥
काहु घाम कैं धाम बसे निसि, भोर सदन गए मेरैं आइ।
सूर स्याम जो चरित उपायौ, कहन चहौं मुख कह्यौ न जाइ॥
॥२५३०॥३१४८॥

राग गौरी

अब तौ कहँ बनैगी माई।
कहा स्याम अचरज सो कीन्हौ, कहत कह्यौ नहिं जाई॥
कैसैं लाल अनत तैं आए, कैसैं तेरैं गेह।
कैसैं मान कियो, क्यौं मिटि गयौ, कैसैं बढ्यौ सनेह॥
तब गदगद बानी मुख प्रगटी, सुनि सजनी दै कान।
सूरज प्रभु के चरित सुनाऊँ, जैसैं बिसर्यौ मान॥
॥२५३१॥३१४९॥

राग गौरी

मैं हरि सौं हो मान कियौ री।
आवत देखि आन बनिता रत, द्वार कपाट दियौ री॥
अपनैं हीं कर साँकर सारी, संधिहिं संधि सियौ री।
जौ देखौं तौ सेज सुमूरति काँप्यौ रिसनि हियौ री॥
जब झुकि चली भवन तैं बाहिर, तब हटि लौटि लियौ री।
कहा कहौं कछु कहत न आवै, तहँ गोबिंद बियौ री।
बिसरि गई सब रोष, हरष मन, पुनि फिरि मदन जियौ री।
सूरदास प्रभु अतिरति नागर छलि मुख अमृत पियौ री॥
।२५३२॥३१५०॥

राग बिलावल

तबहीं तैं भयौ हरष हिये री।
सदन पैठि मन चोरि लियौ उन, ऐसे चरित किए री॥

अंग वाम-छवि-सेप देखि कै, रिस उपजी जिय भारी।
क्रोध गयौ उर आनँद उमग्यौ, सुख तनु दसा बिसारी॥
ऐसे चरित कौन कौं आवैं, जे कीन्हे गिरिधारी।
सूर स्याम रति पति के नायक, सब लायक बनवारी॥
॥२५३३॥३१५१॥

राधा का मान

राग भैरव

नंदनँदन सुखदायक हैं।
नैन सैन दै हरत नारि-मन, काम काम-तनु दायक हैं॥
कबहूँ रैनि बसत काहू कैं, कबहुँ भोर उठि आवत हैं।
काहू को मन आपु चुरावत, काहू कैं मन भावत हैं॥
काहू कैं जागत सगरी निसि, काहू बिरह जगावत हैं।
सुनहु सूर जोइ जोइ मन भावै, सोइ सोइ रँग उपजावत हैं॥
॥२५३४॥३१५२॥

राग बिलावल

अनतहिं रैनि रहे कहुँ स्याम। भोर भए आए निज धाम॥
नागरि सहज रही मन माहिं। नंद-सुवन निसि अनत न जाहिं॥
महर सदन की मेरैं गेह। हिरदय है तिय यहै सनेह॥
आए स्याम रही मुख हेरि। मन मन करन लगी अवसेरि॥
रति-रस-चिह्न नारि के जानि। सूर हँसी राधा पहिचानि॥
॥२५३५॥३१५३॥

राग रामकली

आजु बने पिय रूप अगाध।
पर उपकार काज तनु धारयौ, पुरवत सब-मन साध॥
धर्म-नीतियह कहा पढ़ी जू, हमहूँ बात सुनावहु।
कहाँ कहाँ, काकौ सुख दीन्हौ, काहैं न प्रगट बतावहु॥
धनि उपकार करत डोलत हौ, आजु बात यह जानी।
सूर स्याम गिरिधर गुन-नागर, अंग निरखि पहिचानी॥
॥२५३६॥३१५४॥

राग गूजरी

पिय छवि निरखि हँसति तिय भारी।
कहा महाउर पाग रँगाई, यह सोभा इक न्यारी॥

अरुन नैन अलसात देखियत, पलक पीक लपटानौ।
अधर दसन-छत, वंदन राजत, बंधुक पर अलि मानौ ॥
हृदय रुचिर मोतिनि की माला, नख-रेखा तिहिं तीर।
बिनु गुन माल सूर के स्वामी, कुकुम स्याम सरीर ॥
॥२५३७॥३१५५॥

राग बिलावल

धन्य आजु यह दरस दियौ।
धन्य धन्य जासौं अनुरागे, तव जान्यौ नहिं और बियौ ॥
भले स्याम वह भली भावती, भले भली मिलि भली करी।
यह मेरैं जिय अतिहिं अचंभौ, तौ बिछुरत क्यौं एक घरी ॥
जाहु तहीं, सुख दीन्हौ मोकौं, वै सुनिकै रिस पावैंगी।
सूर स्याम अति चतुर कहावत, बहुरौ मन न मिलावैंगी ॥
॥२५३८॥३१५६॥

राग बिलावल

क्यौं आए उठि भोर इहाँ।
काहे कौं इतनौ सरमाने, रैनि रहे फिरि जाहु तहाँ ॥
हमकौं कहा इती गरुआई, उनहीं क्यौं न सम्हारौ जू।
उन आए ह्याँ नाहीं जान्यौ, अजहूँ लौं पग धारौ जू ॥
हमहूँ बोलि उहाँई लीजौ, डर उनकौ हमहूँ कौं है।
सूर स्याम तिनहीं सुख दीजै, जो बिलसै सँग तुमकौं लै ॥
॥२५३९॥३१५७॥

राग रामकली

उनहीं कौ मन राखैं काम।
ह्याँ तुम जौ आए वा नाहीं, बात सुनत हौ नाहीं स्याम ॥
देखौ अंग अंग-प्रति सोभा, मैं तौ भूली हौं इहिं रूप।
धनि पिय धने, बनी बेऊ हैं, एक एक तैं रूप अनूप ॥
सो छबि मोहिं दिखावन आए, माया करी बहुत हरि आजु।
सूरदास प्रभु रसिक-सिरोमनि, वेउ रसिकिनी बन्यौ समाजु ॥
॥२५४०॥३१५८॥

राग बिलावल

रसिक रसिकई जानि परी।
नैननि तैं अब न्यारैं हूजै, तबहीं तैं अति रिसनि मरी॥
तुम जोबन अरु सो नवजोबनि, एते पर सब गुननि भरी।
लाज नहीं मेरैं गृह आवत, जाहु जाहु करि तिय झहरी॥
अंजन अधर, कपोलनि वदन, पीक पलक छबि देखि डरी।
सूर स्याम रति-चिह्न दिखावन, मेरैं आए भलैं हरी॥
॥२५४१॥३१५९॥

राग धनाश्री

स्याम तिया सन्मुख नहिँ जोवत।
कबहुँ नैन की कोर निहारत, कबहुँ वदन पुनि गोवत॥
मन-मन हँसत त्रसत तनु परगट, सुनत भावती बात।
खंडित वचन सुनत प्यारी के, पुलक होत सब गात॥
यह सुख सूरदास कछु जानै, प्रभु अपने कौ भाव।
श्रीराधा रिस करति,निरखि मुख तिहिँ छबि पर ललचाव॥
॥२५४२॥३१६०॥

राग धनाश्री

पिय कौ सुख प्यारी नहिँ जानै।
जोइ आवत सोइ सोइ कहि डारति, जाहु-जाहु तुम गानै॥
काहे कौं मोहिँ डाहन आए, रैनि देत सुख वाकौं।
भली नवेली नोखी पाई, जो जाकौं सो ताकौं॥
चंदन, वंदन, तिय अँग-कुंकुम, लेप लिये ह्याँ आए।
सूर स्याम यह तुमहिँ बड़ाई, औरनि को सरमाए॥
॥२५४३॥३१६१॥

राग बिलावल

औरनि कौं छबि कहा दिखावत।
तुमहीं कौं भावति मन मोहन, हम देखत रिस पावत॥
आपुन कौं भई बड़ी प्रतिष्ठा, जावक भाल लगाएँ।
याको अरथ नहीं कोउ जानत, मारत सबनि लजाएँ॥

पुष्प-गंध-लोभ भौंर, उड़ि न सकत फिरि, फिरि बैठत ता समीप
कीरत रति गावत ।
सूरदास पिय प्यारी, रस बस कीन्हे भारी, मुख की मिलाइ तुम
हमहिं बतावत ॥२५५२॥३१७०॥

राग कान्हरौ

जाके रस रैनि आजु जागे हौ लाल जाइ ।
जावक तिलक भाल, दिए हौ जू नंदलाल, बिन गुन बनी माल,
कहौ बातैं बनाइ ॥
अधर अंजन दाग, मिट्यौ है पीक पराग, और मेटि आए लाल
वदन की ललाई ।
अंग अंग सिथिलित भए प्रेम पैंड़ैं परि, सूर के स्वामी की मिटि
गई चंचलताई ॥२५५३॥३१७१॥

राग कान्हरौ

रंग भरि आए लाल बातैं कहौ अटपटी ।
अति अलसात जँम्हात प्रिय प्रगट त्रिय प्रताप छूटत्रि नहि
अंतर की गटी ॥
यह चतुराई अधिकाई कहाँ पाई स्याम, वाके प्रेम की गढ़ी पढ़े
हौ तुम पटी ।
सूरदास गिरिधर बहुनायक जानी मैं तुम्हें तन मन नैन लखी
चटपटी ॥२५५४॥३१७२॥

राग ईमन

डोलत महल महल इहिं टहलनि, जानतिं तुम बहु नायक पीय ।
आए सुरति किएँ, टाटक रस, लिएँ सकसकी धकधकी हीय ॥
बंदन छुटे पाग के बंधन, लटपट पेँच अटपटे दीय ।
सूरदास प्रभु हौ बहुनायक, मेरैं पग धारे भली कीय ॥
॥२५५५॥३१७३॥

राग ईमन

महल महल अब डोलत हौ ।
इहै काम तैं धाम बिसारयौ, बूझैं काहैं न बोलत हौ ॥

बहुनायकी आजु मैं जानी, कहा चतुरई तोलत हो।
निसि रस कियौ, भोर पुनि अँटके, सिथिल अंग सब डोलत हौ॥
टटके चिह्न पाछिले न्यारे, धकधकात उर जोलत हौ।
जाहु चले गुन प्रगट सूर-प्रभु, कहा चतुरई छोलत हौ॥
॥२५५६॥३१७४॥

राग ईमन

अँग अँग रँग भरि आए हौ।
रँग भरी पाग, भाल रँग सोभा, रँग रँग नैन पगाए हौ॥
रँग कपोल, रँग पलकनि सोभा, अधरनि स्याम रँगाए हौ।
नख छत रँग, चारु उर रेखा, रति रंग रैनि जगाए हौ॥
कंकन वलय पीठि गड़ि लागे, उर उर-छाप बनाए हौ।
सूर स्याम बामा-रँग पागे, अनुरागे मन भाए हौ॥
॥२५५७॥३१७५॥

राग बिलावल

बार बार मैं कहति हौं, पिय तहाँ सिधारौ।
आए हौ मन हरन कौं, हरि नाम तिहारौ॥
भली बनी छबि आजु की, क्यौं लेत जम्हाई।
रैनु आजु सोए नहीं, रति काम जगाई॥
वह रति तुम रतिनाथ हौ, हम कैसैं भावैं।
सूर स्याम ते बहुगुनी, जे तुमहिं रिझावैं॥
॥२५५८॥३१७६॥

राग सोरठ

सकुचत स्याम कहत मृदु बानी।
किनि देख्यौ, किनि कही बात यह, मो हजूर कहै आनी।
यातैं बचन बोलि नहिं आवत, रिस पावत हौं भारी।
जोरि कहति बातैं तुम आगैं, खोटी ब्रज की नारी॥
तुमहूँ तैं ऐसी को प्यारी, सौंह करौ जो मानौ।
सुनहु सूर जो बूझति मोकौं, मैं काहुँ न पहिचानौ॥
॥२५५९॥३१७७॥

राग कान्हरौ

दूती मन अवसेरि करे।

स्याम मनावन मोहिं पठाई, वह कतहूँ चितवै, न टरै॥
तब कहि उठी मान अति कीन्हौ, वहुत करी हरि, कहा करौ।
ऐसैं बिनु वै नहीं जानि हैं, अब कबहूँ जनि उनहिं ढरौ॥
मैं आवति जमुना-तट तैं ब्रज, सखी एक यह बात कही।
सुनहु सूर मैं रहि न सकी गृह, कहा स्याम की प्रकृति सही॥
॥२५६७॥३१८५॥

राग बिहागरौ

अब द्वारे तैं टरत न स्याम।

अब पर घर की सौंह करत हैं भूलि करौं नहिं ऐसे काम॥
अब तू मान तजै जनि उनसौं यहै कहन आई तेरैं धाम।
अब समुझी, औरौ समुझैबे ? हम जब कहैं करै तब ताम॥
अब मोकौं यह जानि परी है, काहू कैं न बसैं कहुँ जाम।
सूरदास दूती की बानी सुनति, धरति मन हीं मन काम॥
॥२५६८॥३१८६॥

राग सूहौ

जब दूती यह बचन कह्यौ।

तब जाने हरि द्वारैं ठाढ़े, उर उमँग्यौ रिस नहीं रह्यौ॥
काहे कौं हरि द्वार खरे हैं किनि राख्यौ कहि जीभ गरै।
मौन गह्यौ मैं हीं कहि आऊँ, तू काहे कौं रिसनि जरै॥
चतुर दूतिका जानि लई जिय, अब बोली गयौ मान सबै।
सूर स्याम पै आतुर आई कहति आन की आन फबै॥
॥२५६९॥३१८७॥

राग सारंग

नैंकु निकुंज कृपा करि आइयै।

अति रिस कृस ह्वै रही किसोरी, करि मनुहारि मनाइये॥
कर कपोल अंतर नहिं पावत, अति उसास तन ताइये।
छूटे चिहुर बदन कुम्हिलानौ, सुहथ सँवारि बनाइयै॥

इतनौ कहा गाँठि कौ लागत, जौ बातनि सुख पाइयै।
रूठेहिं आदर देत सयाने, यहै सूर जस गाइयै॥
॥२५७०॥३१८८॥

राग केदारौ

काहि मनाऊँ स्यामलाल जू बाल न नैकहुँ दीठि।
मुखहूँ जौ बोलै तौ लहिए, मन की ऐस तुम्हारी ढीठि॥
अपनी सी मैं बहुत कही पै, बारू बूँद कहा करे बसीठि।
सूरदास प्रभु आपुहिं जैयै, जैसी बयारि तैसी दीजै पीठि॥
॥२५७१॥३१८९॥

राग केदारौ

लालन आजु तुम्हारी प्यारी, कोटि मनायैंहू नहिं मानति।
बूझि न परति जानि का बैठी, अति रिस किऐं तुव औगुन गानति॥
भरि भरि नैन लेति, नहिं ढारति, अधर फरकि करि भृकुटी तानति।
सूरदास-प्रभु रसिक-सिरोमनि, आपुहिं चलियै तौ भली आनति॥
॥२५७२॥३१९०॥

राग पूरबी

कैसें कै ल्याऊँ हौं तौ मरम न पाऊँ स्याम, वाकौ मान गाढ़ौ आजु मानौ गढ़वै भयौ।
कंचन गिरि प्रगट तनु तामैं कोट रच्यौ बसन अंचल ड्योढ़ी सघन ओट दयौ।
बैन पौरिया न खोलै मुख पौरि भौंह धनु नैन रिस बान नाहीं जाइ निकट गयौ।
सूरदास-प्रभु तुम चतुर कहावत हौ, आपुहिं चलीजै जौ पै तुमहूँ जाइ लयौ॥
॥२५७३॥३१९१॥

राग केदारौ

बैठी मानिनी गहि मौन।
मनौ सिद्ध समाधि सेवत सुरनि साधे पौन।

राग केदारौ

नैंकु नहीं भावत न्यारे री, नैन सुहावन तेरे।
पलक ओट तैं प्रान जात हैं, चख चितवनि पर चेरे॥
कमल, कुरंग, मधुप उपमा नहिं, चंचल रहत चितेरे।
सूरदास-प्रभु की तुम जीवन, कतहिँ करति तिय फेरे॥
॥२५८१॥३१९९॥

राग आसावरी

बनत नहिं राधे मान किये।
नंदलाल आरति करि पठई, सौंह करति हौं सीस छिये॥
जाके पद कमला कर लीन्हे, मन-बच क्रम चित उन्हैं दिये।
ता प्रभु की पठई आई हौं, तू जु गर्व की मोट लिए॥
हरि-मुख-कमल सच्यौ रस, सजनी अति आनंद पियूष पिये।
सूरजदास सकल सुख हरि सँग, कृपा बिमुख का कल्प जिये॥
॥२५८२॥३२००॥

राग नट

पिय की बात सुनहि किन प्यारी।
जो कछु भयौ सो कहिहौं तुम सन, होहु सखिन तैं न्यारी॥
तब जु बियोग सोक अति उपज्यौ, काम देह तिन जारी।
भेषज अधर-सुधा है तुम पै, चलि दै बिथा निवारी॥
कठिन परे जु कुसल रिपु पूछे, मन की कहा बिचारी।
सूरदास प्रभु हिरदय तेरे, मानहु सार पुछारी॥
॥२५८३॥३२०१॥

राग मारू

जब जब तेरी सुरति करत।
तब तब डबडबाइ दोउ लोचन, उमँगि भरत॥
जैसैं मीन कमल दल कों चलि अधिक अरत।
पलक कपाट न होत, तबहिँ तैं निकसि परत॥
आँसु परत टरि टरि उर, मुक्ता मनहु झरत।
सहज गिरा बोलत न बनत हित हरि हरत॥

राधा । नैन-चकोर बिना-मुख-चंद्र जरत ।
सूर स्याम तव दरस बिना नहिं धीर धरत ॥
॥२५८४॥३२०२॥

राग सारंग

चितै, चलि, ठिठुकि रहत ।
तव पद चिह्न परसि रस-बस, अध वचन कहत ॥
किसलय कुसुम पराग अब पै फेन अहत ।
कंटक जनु भू कठिन जानियत कष्ट लहत ॥
कमल कोस कोमल बिभाग अनुराग वहत ।
सूरदास सुंदर अति सीतल मृदु बेउ न सहत ॥
॥२५८५॥३२०३॥

राग सारंग

हरि तोहिं बारंबार सँम्हारैं ।
कहि कहि नाम सकल जुवतिनि के, नहिं रुचि जिहिं उर धारैं ॥
कबहुँक आँखि मूँदि करि चाहत, चित्त धरि ठौर तिहारैं ।
तव प्रसिद्ध लीला-बन बिहरत, अब नहिं तुमहिं बिसारैं ॥
जो जाकौं जैसैं करि जानै, सो तैसैं हित मानै ।
उलटी रीति तुम्हारी सुनिकै, सब अचरज करि जानैं ॥
क्यौं पतिया पठवै नहिं उनकौं, बाँचि समुझि सुख पावैं ।
सूर स्याम हैं कुंज-धाम मैं, अनत न मन बिरमावैं ॥
॥२५८६॥३२०४॥

राग सारंग

राधे हरि तेरौ नाम बिचारैं ।
तुम्हरेइ गुन ग्रंथित करि माला, रसना-कर सौं टारैं ॥
लोचन मूँदि ध्यान धरि, दृढ़ करि, पलक न नैंकु उघारैं ।
अंग अंग प्रति रूप माधुरी, उर तैं नहीं बिसारैं ॥
ऐसौ नेम तुम्हारौ पिय कैं, कह जिय निठुर तिहारैं ।
सूर स्याम मनकाम पुरावहु, उठि चलि कहै हमारैं ॥
॥२५८७॥३२०५॥

को को न करत मान, तोसौं तिय पै न आन, हठ दूरि करि धरि,
मेरे कहैं, अरी।
सूरदास प्रभु तेरौ पथ जोवैं, तोहिं तोहिं रट लागी मदन दहत
तनु भारी ॥२५९५॥३२१३॥

राग मलार

तऊ गँवारि अहीरी।
तोसौं कछु नंद-नंद हँसि कही, इतने कौं, कबकी न बोलति, न
मानै कही री।
स्याम हँसि हँसि देत, सुनि सुनि कान कानि करति न, इक टक
ग्वारि रही री।
कहा कहौं हरि सौं ऽब तोसी कौं मुँह लगाई, वारौं तोहिं पिय
इक रोम पै ही री।
सूरदास प्रभु कौं ऽब, कहा कहि बरनौं जु, एती तौ कबहुँ काहू की
न सही री ॥२५९६॥३२१४॥

राग नट

एक तौ लालन लाड़ लडाई, दूजैं जोबन करी बावरी।
उनक गरब भूलि जनि रहि री, होत अधिक दिन चारि चाव री ॥
मेरौ कह्यौ मानि तू माई, इनै त्रियनि कौ यह सुभाव री।
सूर स्याम सौं हिलि मिलि रहियै, उठत बैस कौ इहै दावँ री ॥
॥२५९७॥३२१५॥

राग कान्हरौ

रहि री मानिनि मान न कीजै।
यह जोबन अँजुरी कौ जल है, ज्यौं गुपाल माँगै त्यौं दीजै ॥
छिनु छिनु घटति, बढ़ति नहिं रजनी, ज्यौं ज्यौं कला चद्र की छीजै।
पूरब पुन्य सुकृत फल तेरौ, काहँ न रूप नैन भरि पीजै ॥
सौंह करति तेरे पाँइनि की, ऐसी जियनि दसौ दिन जीजै।
सूर सु जीवन सुफल जगत कौ, वैरी बाँधि बिबस करि लीजै ॥
॥२५९८॥३२१६॥

राग कान्हरौ

सुनि प्यारी राधिका सुजान।
कहि धौं कौन काज सरिहै री, इहिं झूठैं अभिमान।

जिनकैं चरन रमा नित लालति, सब गुन-रूप-निधान ।
तिनके मुख के वचन मनोहर, सो तू करति न कान ॥
परम चतुर सुंदर सुखकारी, तोसी तिया न आन ।
कीजै कहा कृपन की संपति, बिना भोग, बिनु दान ॥
ऐसी व्यथा होत निसि हरि कौं, जनि हठि करौ बिहान ।
नाहिंन कढ़त और के काढ़ैं, सूर मदन के बान ॥

॥२५९९॥३२१७॥

राग रामकली

आजु हठि बैठी मान किये ।
महा क्रोध रस अंसु तपत मिलि, मनु विष विषम पिये ॥
अध मुख रहति बिरह-व्याकुल, सिख-मूरि मंत्र नहिं मानै ।
मूक न तजै सुमिरि जाती ज्यौं, सुधि आएँ तनु जानै ॥
एक लीक वसुधा पर काढ़ी, नभ तन गोद पसारी ।
जनु बोहित-तजि तकै परन कौं, दधि ज्यौं अवनि निहारी ॥
ज्यौं अति दीन दुखी सबही अँग, कतहूँ सांति न पावै ।
त्यौं बिनु पियहिं तिया प्रातहिं तौं एकै बात मनावै ॥
कबहुँक धुकति धरनि स्रम-जल भरि, महा सरद रवि सास ।
त्राटक भई चित्र पूतरि ज्यौं, जीवन की नहिं आस ॥
तब उपचार कियौ मैं करकस, लै रस पान्यौ कान ।
मुर्छा जगी, नहीं मुख बोली, लै बैठी फिरि मान ॥
हौं तौ थकी करति बहु जतननि, जी की बिथा न पाई ।
बूझहु लाल नवल नागर तुम, एकै सैन बताई ॥
सिव आकार दिखायौ कछु इक, भाव दोष रस नाहीं ।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि, लै मेली पग छाहीं ॥

॥२६००॥३२१८॥

राग देवगधार

प्रिया पिय नाहिं मनायौ मानै ।
श्रीमुख बचन मधुर मृदु मादक, कठिन कुलिस तैं जानै ॥
सोभित सहित सुगंध स्याम कच, कल कपोल अरुझाने ।
मनौं विधुंतुद ग्रस्यौ कलानिधि, तजत नहीं बिनु दाने ॥

बाल-भाव अनुसरति, भरति दृग, अग्र अंसु-कन आने।
जनु खँजरीट जुगल जठरातुर, लेत सुभष अकुलाने॥
नैन निकट ताटक गंड मंडल पर, कबिनि बखाने।
जनु खद्योत चमक चलि सकत न, निसि-गत-तिमिर हिराने॥
यह सुनि कै अकुलाइ चले हरि, कृत अपराध छमाने।
सूरदास प्रभु मिले परस्पर, मानिनि मिलि मुसुकाने॥
॥२६०१॥३२१९॥

राग धनाश्री

मानि मनायौ मोन रही।
सकुच समेत चली उठि आतुर, घन की गैल गही॥
बिधु-मुख निरखि, बिमुख करि लोचन, पुनि बिधु बदन चही।
दरस परस तदरूप आजु निल, भू नख लेखि कही॥
पुहुप सुरँग सारँग-रिपु-ओट दिखावत चतुर लही।
पानि सु परसत सीस, परस्पर मुसुकाने तबही॥
तृन तोर्‌यौ गुनि जात जिते गुन, काढति रेख मही।
सूर स्याम बहुरो मिलि बिलसहु, जाति अवधि अबही॥
॥२६०२॥३२२०॥

राग सारंग

चलो बन मौन मनायौ मानि।
अचल ओट पुहुप दिखरायौ, धर्‌यौ सीस पर पानि॥
ससि-तन चितै, नैन दोउ मूँदे, मुख महँ अँगुरी आनि।
यह तौ चरित गुप्त की बातैं, मुसुकाने जिय जानि॥
रेखा तीनि भूमि पर खाँची, तृन तोर्‌यौ कर तानि।
सूरदास प्रभु रसिक-सिरोमनि, बिलसहु स्याम सुजान॥
॥२६०३॥३२२१॥

राग गुंड

सैन दै कह्यो बन-धाम चलियै स्याम, यहै करि नाम तहँ आनि मिलिहौं।
भाव ही कह्यौ मन-भाव दृढ राखिबौ, देउँ मुख तुमहिं सँग रंग रलिहौं॥

जानि पिय अतिहिँ आतुर नारि आतुरी, गई वन-तीर तनु सुद्ध हेती।
सूर प्रभु हरष भए, कुंज वन तहँ गए, सजत रति सेज जे निगम नेती ॥'
॥२६०४॥३२२२॥

राग गुड मलार

स्याम वन धाम मग-वाम जोवैँ।
कवहुँ रचि सेज अनुमान जिय जिय करत लता-संकेत-तर कवहुँ सोवैँ॥
एक छिनु इक घरी, घरी इक जाम सम, जाम वासरहु तैँ होत भारी।
मनहि मन साध पुरवत अंग भाव करि, धन्य भुज, धनि हृदै मिलै प्यारी॥
कवहिँ आवै साँझ, सोचि अति जिय माँझ, नैनखग-इंदु ह्वै रहे दोऊ।
सूर प्रभु भामिनी वदन पूरन चंद रस परस मनहिँ अकुलात वोऊ ॥
॥२६०५॥३२२३॥

राग नटनारायनी

दूती संग हरि कैँ रही।
स्याम अति आधीन ह्वै कै, जाहु तासौँ कही॥
वेगि आनि मिलाइ मोकौँ, परम प्यारी नारि।
देखि हरि-तन काम-व्याकुल, चली मनहिँ विचारि॥
गई तहँ जहँ करति राधा, अंग अंग सिँगार।
सूर के प्रभु नवल-गिरिधर-संग, जानि विहार॥
॥२६०६॥३२२४॥

राग विहागरौ

राधा सखी देखि हरषानी।
आतुर स्याम पठाई याकौँ, अंतरगत की जानी॥
वह सोभा निरखत अँग-अँग की, रही निहारि-निहारि।
चकित देखि नागरि मुख वाकौ, तुरत सिँगारनि सारि॥

ताहि कह्यौ सुख दै चलि हरि कौं, मैं आवति हौं पाछैं।
वैसैं हि फिरी सूर के प्रभु पैं, जहाँ कुंज गृह काछैं॥

॥२६०७॥३२२५॥

राग केदारौ

दूती देखि आतुर स्याम।

कुंज-गृह तैं निकसि धाए, काम कीन्हौ नाम॥
बोलि उठी रसाल बानी, धन्य तुव बड़ भाग।
अबहिं आवति बनी बाला, किये मन अनुराग॥
कहा बरनौं अंग-सोभा, नैन देखौ आजु।
सूर प्रभु धरि नैंकु धीरज, करौ पूरन काजु॥

॥२६०८॥३२२६॥

राग ईमन

बड़े भाग्य के मोटे हौ।

ऐसी तिया और को पावै, बने परस्पर जोटे हौ॥
वैसिय नारि सुंदरी छोटी, तैसेंइ तुम बलि छोटे हौ।
पूरब पुन्य सुकृत फल की वह, आपु गुननि करि घोटे हौ॥
परम सुसील सुलच्छन नारी, तुमहिं त्रिभंगी खोटे हौ।
सूर स्याम उनके मन तुमहीं, तुम बहुनायक कोटे हौ॥

॥२६०९॥३२२७।

राग कान्हरौ

सुनि मोहन तेरी प्रान-प्रिया कौं, बरनौं नंदकुमार।

जौ तुम आदि अंत मेरौ गुन, मानहु यह उपकार॥
चंद्रमुखी, भौंहैं कलंक बिच, चंदन तिलक लिलार।
मनु बेनी भुवंगिनी परसत, स्रवत सुधा की धार॥
नैन मीन, सरवर आनन मैं, चंचल करत बिहार।
मानौ कर्नफूल चारा कौं, रवकत बारंबार॥
बेसरि बनी सुभग नासा पर, मुक्ता परम सुढार।
मनु तिल-फूल, अधर बिंबाधर, दुहुँ बिच बूँद-तुषार॥
सुठि सुठान ठोढ़ी अति सुंदर, सुंदरता कौ सार।
चुवतहि चुवत सुधा-रस मानौ, रहि गई बूँद मँझार॥

कंठसिरी उर पदिक बिराजत, गज मोतिनि के हार ।
दहिनावर्त देति मनु ध्रुव कौं, मिलि नछत्र की मार ।।
कुच जुग कुंभ, सुढि रोमावलि, नाभि सु ह्रद आकार ।
जनु जल सोखि लियौ सैसवता, जोबन गज मतवार ।
रत्न-जटित गजरा, बाजूबंद, सोभा भुजनि अपार ।
फूँदा सुभग फूल फूले मनु, मदन बिटप की डार ।।
छीन लंक नीवी किंकिनि धुनि, बाजति अति झनकार ।
मौर बाँधि बैठ्यौ जनु दूलह मन्मथ आसन तार ।।
जुगल जंघ जेहरि जराव की, राजति परम उदार ।
राजहंस गति चलति कृसोदरि, अति नितंब कैं भार ।।
छिटकि रह्यौ लहँगा रँग तनसुख-सारी तन सुकुमार ।
सूर सु अंग सुगंध समूहनि, भँवर करत गुंजार ।।
।।२६१०।।३२२८।।

राग नट

आजु राधिका रूप अन्हायौ ।
देखत बनै कहत नहिं आवै, मुख छबि-उपमा अंत न पायौ ।।
अवली अलक, तिलक केसरि कौ, ता बिच सेंदुर बिंदु बनायौ ।
मानौ पून्यौ चंद्र खेत चढ़ि, लरि स्वरभानु सौं घायल आयौ ।।
काननि की बीरैं अति राजतिं मनहुँ मदन रथ चक्र चढ़ायौ ।
सीसफूल, मनि-नाग सीस धरि, मनु सुहाग कौ छत्र तनायौ ।।
चकित भौंह, चपल अति लोचन, बेसरि रस मुकुताहल छायौ ।
मानौ मृगनि अमी भाजन भरि, पियत न बन्यौ दुहूँ ढरकायौ ।।
दसन-बसन, दसनावलि राजति, चिबुक चारु तिल ताकि बनायौ ।
मनहुँ देखि रबि कमल प्रकासित, तापर भृंगी-सावक स्वायौ ।।
कंचुकि स्याम सुगंध सँवारी, चौकी पर नग बन्यौ बनायौ ।
मानौ दीपक उदित भवन मैं, तिमिर सकुच सरनागत आयौ ।।
भूषन-भुजा ललित-लटकन बर, मनहुँ मिल्यौ अलि-पुंज सुहायौ ।
एतेहूँ पर रूठ सूर प्रभु, लै दूती दरपन दिखरायौ ।।
।।२६११।।३२२९।।

राग बिलावल

देखत नवल किसोरी सजनी, उपजत अति आनंद ।
नवसत सजे माधुरी अँग-अँग, बस कीन्हे नँद-नंद ।।

कंबु कंठ ताटंक गंड पर, मंडित वदन-सरोज ॥
मोहन कैं मन बाँधन कौं, मनु पूरी पास मनोज ॥
नासा परम अनूपम सोभित, लज्जित कीर विहंग ।
मनु विधि अपनैं कर बनाइ किये, तिल प्रसून के अंग ॥
भुज-विलास, कर ककन सोभित, मिलि राजत अवतंस ।
तीनि रेख कंचन के मानो, बहु बनाइ पिय अंस ॥
कुकुम कुचनि कंचुकी-अतर, मंगल कलस-अनग ।
मधु पूरन राखे पिय कारन, मधुर मधुप के अग ॥
कीरति विसद विमल स्यामा की, श्रीगुपाल अनुराग ।
गावत सुनत सुखद्-कर मानो, सूर दुरे दुख-भाग ॥
॥२६१२॥३२३०॥

राग जैतश्री

नव नागरि हो । (सकल) गुन-आगरि हो ।
हरि भुज ग्रीवा हो । सोभा सीवा हो ॥
स्याम छबीली भावती । गौर स्याम छवि पावती ॥
सैसवता मैं हे सखी, जोवन कियो प्रवेस ।
कहा कहौं छवि रूप की, नख-सिख अग सुदेस ॥
श्रीपति-केलि-सरोवरी सैसव-जल भर-पूर ॥
प्रगटी कुच - उच्चस्थली, सोख्यौ जोवन-सूर ॥
छुटे केस मज्जन समय, देखि विरुव अहि मोर ।
मोर-कुहू-निसि मेरु तैं, उतरि चले उहिं ओर ॥
सीस सचिक्कन केस कैं, बिच सीमत सँवारि ।
मानहुँ किरनि-पतंग तैं, भयो दुआ तम हारि ॥
केसरि-आड लिलाट हो, बिच सेंदुर को विंदु ।
चक्र तरयोना, नैन मृग, रथ बैठ्यो जनु इदु ॥
नैननि ऊपर कह कहौं, ज्यौं राजत भ्रुव भग ।
जुवा बनावत चद्रमा, चपल होत मारग ॥
चपकली सी नासिका, राजति अमल अदोम ।
तापर मुक्ता यौं बन्यौ, मनो भोर कन ओम ॥
मुक्ता आपु बिकाइ कैं, उर मैं छिद्र कराइ ।
अधर-अमृत हित तप करै, अव मुख, उरव पाइ ॥

अधरनि की छवि कह कहौं, सदा स्याम अनुकूल।
बिंब पँवारे लाजहीं, हरषत बरखत फूल॥
कांति पाँति दसनावली, रही तमोल रँग भीज।
बदन स्यौं ससि मैं बए, मनु सौदामिनि बीज॥
गुंजा की सी छवि लई, मुक्ता अति बड़भाग।
नैननि की लई स्यामता, अधरनि कौ अनुराग॥
बेसरि के मुक्ता मनिनि, धनि नासा ब्रजनारि।
गुरु, भृगु-सुत बिच भौम ह्वै, ससि समीप ग्रह चारि॥
खुँटिला सुभग जराइ के, मुक्ता मनि छवि देत।
प्रगट भयौ घन-मध्य तैं, मनु ससि नखत समेत॥
सुंदर सुघर कपोल द्वौ, रहे तमोर भरि पूर।
कंचन-संपुट-द्वैपला, मानहुँ भरे सिंदूर॥
चिबुक डिठौना जब दियौ, मो मन धोखैं जात।
निकस्यौ अलि सिसु कंज तैं, मनहुँ जानि परभात॥
जिहिं मारग बन-बाटिका निकसति आनि सुभाइ।
मधुप कमल-बन छाँड़ि कै, चलत संग लपटाइ॥
जहाँ जहाँ तू पग धरै, तहाँ-तहाँ मन साथ।
अति अधीन पिय ह्वै रहै, तन मन दै तव हाथ॥
देखि बदन के रूप कौं, मोहन रह्यौ लुभाइ।
इकटक रह्यौ चकोर ज्यौं, दृष्टि न इत-उत जाइ॥
तोहिं स्याम सौं है सखी, बढ़ी निरंतर प्रीति।
तू तन मन धन स्याम कैं, तैं हरि पाए जीति॥
मन मोहनि तू बस करे, अति प्रबीन नँदलाल।
सूरदास गावै सदा, कीरति बिसद बिसाल॥

॥२६१३॥३२३१॥

राग नट

राधा सग ललिता लिये।

स्याम आतुर जानि बाला, गवन आतुर किये॥
किंकिनी-धुनि स्रवन सुनि हरि, अनिहिं पुलकित हिये।
नारि आवत जानि गिरिधर, नहीं धीरज जिये॥

चले आतुर धाइ आगैं, संग सहचरि लिये।
सूर प्रभु रति रग राँचे, देखि रीझी त्रिये॥
॥२६१४॥३२३२॥

राग नट

पिय छवि निरखत नागरी, अँग दसा भुलानी।
अतरगत आनँद भरी ललिता हरषानी॥
सहचरि सौं कहि सुमन लै, हरि फँट भराए।
अति अधीन पिय ह्वै रहे, वस परे डराए॥
मारग सुमन बिछावहीं, पग निरखि निहारैं।
फूले फूले धर धरैं, कलियाँ चुनि डारैं॥
ऐसे बस पिय वाम कैं, सुख सूरज जानै।
जो जिहिं भावनि हरि भजै, तिहिं तैसेंइ मानै॥
॥२६१५॥३२३३॥

राग पूरवी

पाछैं ललिता आगैं स्यामा, आगैं पिय फूल बिछावत जात।
कठिन कठिन दलि बीनि करति न्यारी, प्यारी पग गडिबैंहि डरात॥
दीरघ लता करनि निरवारत, लै डारत द्रुम वेली पात।
सूरदास प्रभु की अधीनता देखत, मेरे नैन सिरात॥
॥२६१६॥३२३४॥

राग कान्हरौ

वडे वडे वार जु एँड़िनि परसत, स्यामा अपनैं अचल मैं लिए।
वेनी गूथन फूल सुगध भरे, डोलत हरि वोलत न सकुच हिए॥
कुसुभी सारी अलक झलक मनो, अहि-कुल वदन सौं पूजा किए।
सूरदास प्रभु नैन प्रान सुख, चितए मिलि प्रिया कनखियनि दिए॥
॥२६१७॥३२३५॥

राग रामकली

वरन वरन वन फूलि रह्यौ।
हरषित ह्वै वृषभानु-नदिनी, सँग सब सखिनि कह्यौ॥

कुसुम कली देखत रुचि उपजति, यह कहि तिनहिँ सुनावति।
आपुन चुनति गोद लै धारति, जुवतिनि कहति चुनावति॥
हँसत परस्पर दै-दै तारी, स्याम लिये कर बाहीँ।
सूरदास-प्रभु काम आतुरे, और ध्यान चित नाहीँ॥
॥२६१८॥३२३६॥

राग रामकली

डोलत बाँकी कुंज गली।

ब्रज बनिता मृग सावक-नयनी, बीनति कुसुम-कली॥
कमल-बदन पर बिथुरि रहीँ लट कुंचित मनहुँ अली।
अधर बिंब, नासिका मनोहर, दामिनि दसन छली॥
नाभि-परस रोमावलि राजति, कुच जुग बीच चली।
मनहुँ बिवर तैँ उरग रिँग्यौ, तकि गिरि की संधि-थली॥
पृथु नितंब, कटि छीन, हंस गति, जघन सघन कदली।
चरन महावर नूपुर मनिमय, बाजत भाँति भली॥
ओट भए अवलोकि, परस्पर, बोलति अली-अली।
सूर सु मोहनलाल रसिक सँग, बन घन माँझ रली॥
॥२६१९॥३२३७॥

राग पूरबी

सखियनि के सँग कुँवरि राधिका, बीनति कुसुमनि-कलियाँ।
एक बहिक्रम एकहिँ बानक, एक रूप-गुन अलियाँ॥
सुंदर स्याम लाल के सोहत, करनि रँगीली डलियाँ।
एक अनूपम माल बनावति, भ्राजति कुंजनि गलियाँ॥
एक परस्पर बेनी गूँथति, मन भावति रँग रलियाँ।
सूरदास प्रभु सँग मिलि हरषित, प्यारी अंकम भरियाँ॥
॥२६२०॥३२३८॥

राग कल्यान

लै गए धाम-बन स्याम प्यारी।

रहे लपटाइ, दोउ भुजनि पलटाइ कै कह्यौ पिय बचन हौ
निठुर नारी॥

बिहँसि वृषभानु तनया कहति, हम निठुर, तुम सुहृद बात जनि चलावौ।
निठुर अरु सुहृद सो मनहि मन जानिहै, कहा उहि कथा की सुरति ध्यावौ॥
परसपर हँसे, दोउ रसे रति रंग मैं, करत मन काम-फल पुरुष नारी।
सूर प्रभु कोक-गुन मैं निपुन हैं बडे, काम-बल तोरि रस रह्यौ भारी॥२६२१॥३२३९॥

राग सूही बिलावल

गिरिधर नारि अबल अति कीन्ही।
सबल भुजा धरि अकम भरि-भरि, चापि कठिन कुच (उर पर) लीन्ही॥
कोक अनागत क्रीड़ा पर रुचि, दूर करत तनु-सारी।
कमल करनि कुच गहत, लहत पुट, देखौ यह छवि न्यारी॥
बार-बार ललचात साध करि, सकुचति पुनि-पुनि बाला।
सूर स्याम यह काम करौ जनि, धनि-धनि मदन गोपाला॥
॥२६२२॥३२४०॥

राग रामकली

सुता-दधि, पति सौं क्रोध भरी।
अंबर लेत भई खिझ बालहिं, सारँग संग लरी॥
तब श्रीपति अति बुद्धि बिचारी मनि लै हाथ धरी।
वै अति चतुर नागरी नागरि, लै मुख माँझ करी॥
चापत चरन सेस चलि आयौ, उदयाचलहिं डरी।
सूरदास स्वामी लीला डरि, अकम लगि उबरी॥
॥२६२३॥३२४१॥

राग रामकली

सकुचि तन उदधि-सुता मुसुकानी।
रवि-सारथी-सहोदर ता पति, अबर लेत लजानी॥
सारँग पानि मूँदि मृगनैनी, मनि मुख माँझ समानी।
चरन चापि महि प्रगट करी पिय, सेस सीस सहिदानी॥

सूरदास तब कह करै अबला, जब हरि यह मति ठानी।
भुज अंकम भरि, चापि कठिन डरि, स्याम कंठ लपटानी ॥
॥२६२४॥३२४२॥

राग बिलावल

वह छवि अंग निहारत स्याम।
कबहुँक चुंबन देत उरज धरि, अति सकुचति तनु बाम ॥
सनमुख नैन न जोरति प्यारी, निलज भए पिय ऐसे।
हा हा करति चरन कर टेकति, कहा करत ढँग नैसे ॥
बहुरि काम-रस भरे परस्पर, रति बिपरीत बढ़ाई।
सूर स्याम रतिपति बिह्वल करि, नारि रही मुरझाई ॥
॥२६२५॥३२४३॥

राग बिलावल

पिय प्यारी तनु स्रमित भए।
सकुचि उठी नागरि पट लीन्हौ, स्याम लजाइ गए ॥
सावधान रति-अंत भए पिय, प्यारी-तन नहिं हेरत।
नागरि कुटिल कटाच्छनि हेरति, भृकुटी बंकट फेरत ॥
ऐसे गुन किनि तुमहिं सिखाए, तिरनी कटि कसि दीन्ही।
सूर कहति पिय सौं तिय बातैं, आजु तुमहिं मैं चीन्ही ॥
॥२६२६॥३२४४॥

राग धनाश्री

हरषि स्याम तिय बाँह गही।
अपनैं कर सारी अँग साजत, यह इक साध कही ॥
सकुचति नारि बदन मुसुकानी, उतकौं चितै रही।
कोक-कला परिपूरन दोऊ, त्रिभुवन और नहीं ॥
कुंज-भवन सँग मिलि दोउ बैठे, सोभा एक चही।
सूर स्याम स्यामा सिर बेनी, अपनैं करनि गुही ॥
॥२६२७॥३२४५॥

राग धनाश्री

मोहन मोहिनि-अंग सिंगारत।
बेनी ललित ललित कर गूँथत, सुदर माँग सँवारत ॥

बिनु गुन बनी माल, पीक कपोलनि लाल, जावक तिलक भाल,
कीन्हे रस बस अंग।
सूरदास प्रभु कित रजनी बिहाइ आए, भोर भए मेरैं धाम, तुम
जीति कै अनंग ॥२६३५॥३२५३॥

राग बिलावल

भोरहिं आए मुखहिं लजाने।
रति की केलि बेलि सुख सींचत, सोभित अरुन नैन अलसाने॥
काजर रेख बनी अधरनि पर, नैन कपोल पीक लपटाने।
मनहुँ कंज ऊपर अलि बैठे, उड़ि न सकत मकरंद लुभाने॥
है हिय हार अलंकृत बिनु गुन, आए रति-रन जीति सयाने।
सूरदास प्रभु पाइ धारियै जानति हौं पर हाथ बिकाने॥
॥२६३६॥३२५४॥

राग बिलावल

जानति हौं जिहिं गुननि भरे हौ।
काहैं दुराव करत मनमोहन, सोइ कहौ तुम जाहिं ढरे हौ॥
निसि के जागे नैन अरुन दुति, अरु स्रम आलस अंग भरे हौ।
बंदन तिलक कपोलनि लाग्यौ काम केलि उर नख उघरे हौ॥
अब तुम कुटिल किसोर नंद-सुत, कहौ कौन के चित्त हरे हौ।
एते पर ये समुझि सूर प्रभु, सौंह करन कौं होत खरे हौ॥
॥२६३७॥३२५५॥

राग सारंग

अरुन उदय बेला अरु नैन।
निसि जागे अलसात स्याम धौं मोहनि बोलत मधुरे बैन॥
आनन जल प्रसेव गत चलि यौं, आए मधुकन माधुरि लैन।
बार-बार रजनी सुख सूचत, उमँगि उमँगि रस प्रीति सु दैन॥
क्रीडत सघन कुंज बृंदावन, बंसीबट जमुना कैं ऐन।
सूरदास प्रभु सब बिधि नागर, पीवत हौ रस परम सचैन॥
॥२६३८॥३२५६॥

राग बिहागरौ

आजु निसि कहाँ हुते हौ प्यारे।
तुम्हरी सौं कछु कहि न जाति छबि, अरुन नैन रतनारे॥

मेचक अधर, निमेष पीक रुचि, देखियत चिह्न तुम्हारे।
हृदय हार बिनु गुनहिं अलंकृत, मृग मद तिलक लिलारे।
बोल के साँचे, आए भोर भए, प्रगटित काम कला रे॥
दसन बसन पर छापि दृगनि छबि, दई वृषभानु-सुता रे।
अरु देखौ मुसुकाइ इते पर, सर्बस हरत हमारे।
सूर स्याम चतुरई प्रगट भई, आगे तैं होहु न न्यारे॥
॥२६३९॥३२५७॥

राग बिहागरौ

कहौ स्याम कहँ रैनि गँवाई।
अब ये चिन्ह प्रगट देखियत हैं, मोसौं कौन करत चतुराई॥
लटपटी पाग, अलक जो बिथुरीं, बात कहत आवत अलसाई।
तुमसौं चतुर सुजान नागरी, जाकैं रस तुम रहे लुभाई।
सूरदास प्रभु तहँहिं सिधारौ, नौतन प्रीति जहाँ उपजाई॥
॥२६४०॥३२५८॥

सुखमा के घर सखियों का आगमन *राग बिभास*

सुनत सखी तहँ दौरि गईं।
सुने स्याम सुखमा कैं आए, धाईं तरुनि नई॥
कोउ निरखति मुख, कोउ निरखति अँग, कोउ निरखति रँग और।
रैनि कहूँ फँग परे कन्हाई, कहतिं सबै करि रौर॥
तब कहि उठी नारि सुखमा यह, भाग हमारैं आए।
सूर स्याम धनि धाम तुम्हारी, जिनि निसि बस करि पाए॥
॥२६४१॥३२५९॥

राग सारंग

क्यौं ऽब दुरत हैं प्रगट भए।
कहत हैं नैन निसा के जागे, मानौ सरसिज अरुन नए॥
जावक भाल, नागरस लोचन, मसि रेखा अधरनि जु ठए।
वलया पीठि, वचन अलसौंहैं, बिनु गुन कंठ हार बनए॥
भुज ताटंक, ग्रीव सिर-चंदन, चिन्ह कपोल दसन ग्रसए।
आलिंगन चंदन कुच चर्चित, मानौ द्वै ससि उरहिं उए॥

राग ललित

आजु अति रैनि उनींदे लाल।
तुम पौढ़ौ मैं चरन पलोटौं, पिय जनि जानौ ख्याल॥
सुमन सुगंध सेज है डासी, देखत अग विहाल।
मेरे कहैं न्हाहु, कछु भोजन, करौ न मदन गुपाल॥
निसि स्रम भयौ पीर मोहिं आवति, सुनतिं परस्पर बाल।
सूर स्याम सुनि बचन कपट तिय, भरि लीन्ही अँकमाल॥
॥२६५०॥३२६८॥

राग बिलावल

स्यामहिं सुख दै राधिका निज धाम सिधारी।
चित तैं कहुँ उतरत नहीं श्रीकुंजबिहारी॥
रैनि बिपिन रति-रस रह्यौ सो मनहि बिचारै।
पिय सँग के अँग-चिह्न जे दरपनहि निहारै॥
इहिं अंतर चंद्रावली राधा-गृह आई।
अंग सिथिल छबि देखि कै जहँ तहँ भरमाई॥
कह्यौ चहति कहत न बनै मन-मन अनुमानै।
सूर स्याम-सँग निसि बसी, निहचै इह जानै॥
॥२६५१॥३२६९॥

राग आसावरी

चंद्रावलि सखियनि सँग लीन्हे, राधा कैं गृह आई (हो)।
आजु अंग सोभा कछु औरै, हरि-सँग रैनि बिहाई (हो)॥
अब तौ नहीं दुराव रह्यौ कछु कहौ साँच हम आगै (हो)।
अधर दसन-छत, उरजनि नख-छत, पीक पलक दोउ पागे (हो)॥
हम जानी तुम कहौ प्रगट करि स्याम संग सुख माने (हो)।
सुनहु सूर हम सखी परस्पर, क्यौं न रैनि-जस गाने (हो)॥
॥२६५२॥३२७०॥

राग बिलावल

कहति सखिनि सौं राधिका, तुम कहति कहा री।
मेरी सौं, का हँसति हौ, सुनि चकित महा री॥

पीक कपोलनि यौं लग्यौ, मुख पोंछन लागी।
कहाँ स्याम कहँ मैं रही, कब धौं निसि जागी॥
उरज करज निज करज कौं, गर हार सँवारत।
सहज कछुक निसि मैं जगी, बचननि सर मारत॥
कहति और की औरई, मैं तुमहिं दुरैहौं?
सूर स्याम सँग जौ मिलौं, तुम सौं नहिं कैहौं?

॥२६५३॥३२७१॥

राग बिलावल

आजु बनी नव रंग किसोरी। रसिक कुँवर मोहन सँग जोरी॥
बिथुरी अलक सिथिल कटि डोरी। कनक लता मनु पवन झकोरी॥
अधर दसन-छत कछु छबि छोरी। दरपन लै देखौ मुख गोरी॥
सुख लूटत अतिहीं भई भोरी। सूर सखी डारति तृन तोरी॥

॥२६५४॥३२७२॥

राग टोडी

आजु बनी वृषभानु-कुमारी। गिरिधर वर, राधा तू नारी॥
हम सौं करति दुराव बृथा री। इनि बातनि तू लहति कहा री॥
आलस अंग, मरगजी सारी। ऐसी छबि कहि काल्हि कहाँ री?
सूरदास छबि पर बलिहारी। धन्य-धन्य तुम दोउ बरनारी॥

॥२६५५॥३२७३॥

राग सारंग

बनक बनी वृषभानु किसोरी॥
नख सिख सुंदर जिन्ह सुरति के, अरु मरगजी पटोरी।
उर भुज नील कंचुकी फाटी, प्रगटे हैं कुच कोरी।
नव घन मध्य देखियत मानहुँ, नव ससि की छबि थोरी॥
आलस नैन सिथिल कज्जल, बलि, मनि ताटंकनि मोरी।
मानहुँ खंजन, हंस कंज पर, लरत चंचु-पुट तोरी॥
बिथुरी लट लटकी भृकुटी, पर, माँग सु मनि नग रोरी।
मानहुँ कर-कोदंड काम अलि-सैन, कमल हित जोरी॥
अति अनुराग पियत पियूष हरि, अधर सिंधु हद फोरी।
सूर सखी निसि संग स्याम के, प्रगट प्रात भई चोरी॥

॥२६५६॥३२७४॥

राग सारंग

राधे तू अति रंग भरी।
मेरैं जान मिली मोहन सौं, अचल पीक परी॥
छूटी लट, टूटी नकबेसरि, मोतिनि की दुलरी।
हौं जानति हौं फौज मदन की, लूटि लई सगरी॥
अरुन नैन, मुख सरद निसाकर, कुसुम गलित कबरी।
सूरदास प्रभु गिरिधर कैं सँग, सुरति समुद्र तरी॥
॥२६५७॥३२७५॥

राग नट

मैं जानी तेरे जिय की बात सांइ, गात चिन्हहु कहे देत माई।
आलस तन मोरै, भुजनि जँभाइ जोरै, लागत सुहाई पिय मन भाई।
बैन, ऐन, नैन-सैन देखिए सिँगार बार बिथुरे रति देत जनाई।
सूरदास-प्रभु की सु नजरि उदित अंग, हिलनि मिलनि तुव प्रीति प्रगटाई॥२६५८॥३२७६॥

राग सूही

नहिंन दुरत हरि पिय को परस।
उपजत है मन कौं अति आनँद, अधरनि रँग नैननि कौ अरस॥
अचल उड़त अधिक छबि लागति, नख रेखा उर बनी बरस।
मनु जलधर-तर बाल कलानिधि, कबहुँ प्रगटि दुरि देत दरस॥
बिथुरी अलक सुदेस देखियति, स्रम-जल तैं मिट्यौ तिलक सरस।
सूर सखी बूझेहुँ न बोलति, सो कहि धौं तोहि कौन तरस॥
॥२६५९॥३२७७॥

राग बिलावल

तोहिं छबि राजै ब्रजराज सग जागे की।
कर सौं कर जोरि कै जम्हाति ऐंडात गात, दुरि मुरि रही लसि अलक जु आगे की।
कबहूँ पुनि पलक झपकि मन भावत, अति अँखियाँ अरुन भई प्रेम पागे की॥
सूरदास-प्रभु सुख प्रगट उमँगि रह्यौ, देखत बनति छबि स्याम उर लागे की॥२६६०॥३२७८॥

राग देवसाक

(अरी मैं जानि) पाए चिह्न दुरैं न दुराए।
अति अलसाति जम्हाति पियारी, स्याम काम बनधाम पुराए ॥
कहा दुराव करति री प्यारी, कोटि करै मुख नैन भुराए।
सुमन-हार सी मरगजि डारी, पिय प्यारैं रँग-रैनि जगाए।
प्रगट नहीँ तू करति, डरति किहिँ, सुरति-सेज रति काम लजाए ॥
सूर स्याम तोहिँ रस-बस कीन्ही, जात नहीँ मन तैं बिसराए ॥
॥२६६१॥३२७९॥

राग सारंग

काहे कौँ दुरावति नैन नागरी।
जानति हौं नँदलाल रसिक पिय, मिलि सब रजनी जाग री ॥
सुरति समै के मुख तमोर मिलि, लोचन परसत लाग री।
मनहुँ सरद बिधु भए पद्म जुग, मुकुलित लहि अनुराग री ॥
उरज करज मानौ, सिव सिर पर ससि-सारंग सुभाग री।
अरुन कपोल अंक अलकैं मिलि, उरग कामिनी आग री ॥
हरि पुनि चतुर, चतुर अति कामिनि, कै तू रूप की आगरी।
सूरदास-प्रभु बस करि लीन्हे, धनि तिय तेरो सुहाग री ॥
॥२६६२॥३२८०॥

राग टोडी

लालन सौं रति मानी जानी, कहे देत नैना रँग-भोए।
चंचल अंचल कतहिँ दुरावति, मानहुँ मीन महाउर धोए ॥
पीक कपोलनि तरिवन कैं ढिग, झलमलाति मोतिनि छवि जोए।
सूरदासप्रभु-छवि पर रीझे, जानति हौं निसि नैंकु न सोए ॥
॥२६६३॥३२८१॥

राग बिलावल

भामिनि सोभा अधिक भई री।
सुपक बिंब सुक-खंडित, मंडित-अधर सुधा मधु लाल लई री ॥
राजित रुचिर कपोल माहिँ वर रद-मुद्रावलि, नाह-दई री।
मनहुँ पीक दल, सीँचि स्वेद जल, आलवाल रति-बेलि बई री ॥

कंचुकि-बँद बिगलति सुललित छबि, उच्च कुचनि नख रेख नई री।
मनहुँ सिंदूर-पूर-दुति दरसित, कंचन कुंभ दरार लई री॥
आलस भृकुटी, अलक छुटी मनु टुटी पनच सत जूझ जई री।
नैन सु ऐन कटाच्छ लगे, सर, सिथिल भई मति, मैन दई री॥
ढीली नीवी, गोरी भोरी, पिय कैं सँग रँग-राग रई री।
सूरज श्रीगोपाल बिलासिनि, चंद्रबदनि आनंदमई री॥
॥२६६४॥३२८२॥

राग बिलावल

दोउ कर जोरि लेति जँमुहाई।
सोभा कहत बनति नहिं मो पैं, आजु सखी पिय सँग तैं आई॥
सोइ आभा पुनि फेरि फबति है, बिधि आपुन-रुचि रचित बनाई।
मानहुँ कुमुदिनि कनक-मेरु चढ़ि, ससि सनमुख मुद सहित सिधाई॥
सोभित चिकुर ललाट, बदन पर, कुंचित कुटिल अलक बिथुराई।
नाग-बधू मनु अमी-कोप तैं, कै मधु-पान भ्रमर ह्वै आई॥
झुकि झुकि परति प्रेम-मदमाती, उमँगि-उमँगि तनु देत दिखाई।
सूरदास प्रभु सखी सयानी, चुटुकिनि देत न उहिं लखि पाई॥
॥२६६५॥३२८३॥

राग धनाश्री

आलस भरि सोभित सुभामिनी॥
राजत सुभग नैन रतनारे हरि संग जागत गई जामिनी॥
बाहँ उचाइ जोर जँमुहानी, ऐंड़ानी कमनीय कामिनी।
भुज छूटैं छबि यौं लागी, मनु टूट भई द्वै टूक दामिनी॥
कुच उतंग बर रचित कंचुकी, बिलसति त्रिबली उदर छामिनी।
देखियति मनहुँ मदन-नृप-तन हरि रस जीते राधिका नामिनी॥
बिथुरी अलक, सिथिल कटि-डोरी, नखछत-छुरित, मराल गामिनी।
दुगुन सुरति सजि श्रीगुपाल भजि, प्रमुदित सूरजदास स्वामिनी॥
॥२६६६॥३२८४॥

राग नट

खंजन नैन सुरँग रस माते।
अतिसय चारु बिमल, चंचल ये, पल पिंजरा न समाते॥

बसे कहूँ सोइ बात सखी, कहि रहे इहाँ किहिं नातैं ?
सोइ संज्ञा देखति औरासी, बिकल उदास कला तैं ॥
चलि-चलि जात निकट स्रवननि के सकि ताटंक फँदाते ।
सूरदास अंजन गुन अटके, नतरु कबै उडि जाते ॥
॥२६६७॥३२८५॥

राग बिलावल

भोरहिं सोभा सिर सिंदूर ।
जुगल पाटि घन-घटा, बीच मनु उदय कियौ नव सूर ॥
मन्मथ-रथ आनंद कंद मुख, चंद-कला परिपूर ।
चक्र तटंक, निसंक सुदृग मृग, जनु रन तम सम जूर ॥
सुंदर वर नासिका-देस पर, बेसरि-मुक्ता रूर ।
किधौं तूल तिल मूलनि कर-कन, किधौं असुर-गुरु-चूर ॥
रद सद दामिनि, अधर-सुधा मधु, रूप झपा-झकझूर ।
बचन रचन माधुरी सधर पर, कौन कोकिला कूर ॥
उच्च उरोज, मनोज-नृपति के, जोबन-कोट कँगूर ।
हरि-सरि कटि-तट लरकि जाइ, जिमि बिसद-नितंब-गरूर ॥
कदली जंघ, मराल मद गति, रूप अनूप समूर ।
सूरदास-स्वामिनि सोभा पर, वारति सखि तृन तूर ॥
॥२६६८॥३२८६॥

राग रामकली

मोसौं कहा दुरावति प्यारी ।
नंदलाल-सँग रैनि बसी री, कोक-कला-गुन भारी ॥
लोचन-पलक पीक अधरनि की, कैसैं दुरत दुराए ।
मनौ इंदु पर अरुन रहे बसि, प्रेम परस्पर भाए ॥
अधर दसन-छत की अति सोभा, उपमा कही न जाइ ।
मनौ कीर फल बिंब चोंच दै, भख्यौ न, गयौ उड़ाइ ॥
कुच नख-रेख धनुष की आकृति, मनु सिव सिर ससि राजै ।
सुनत सूर प्रिय बचन सखी मुख, नागरि हँसि मन लाजै ॥
॥२६६९॥३२८७॥

राग धनाश्री

प्यारी सुनत सखी-मुख बानी, हँसि मुसुकाइ रही ।
नैननि रही लजाइ, मुदित चित, मानी बात सही ॥

तोसौं कहा दुराव करौंगी, तू प्राननि तैं प्यारी।
कहा कहौं वह मिलनि स्याम की, क्रीडा कहति उघारी ॥
रति-सुख-अंत रची इक लीला, कहौं कि धरौं दुराइ।
सूरदास प्रभु के गुन आली, चितहीं रहे समाइ ॥

॥२६७०॥३२८८॥

राग सोरठ

राधा अब जनि कछू दुरावै।
हा हा करि चरननि सिर नावति, अपनी सौंह दिवावै ॥
वहै कथा मोसौं कहि प्यारी, चरित कहा हरि कीन्हो।
जा रस मैं तू मगन भई है, कौन अंग सुख दीन्हो ॥
उछलित भयौ सुधा उर घट तैं, मुख मारग न सम्हारै।
सूर स्याम रस-छकी राधिका, कहत न बनै बिचारै ॥

॥२६७१॥३२८९॥

राग गुडमलार

स्याम रति-अंत रस यहै कीन्हौ।
कहत पुनि पुनि कहा अंग अंबर सजहु, मैं रही सकुचि, गहि आप लीन्हौ ॥
कियौ तब मैं कहा, लरी सारंग सौं, सारँगधर वरति तब चरन चाँपी।
सेष सहसौ फननि मननि की ज्योति अति, त्रास तैं कंठ लपटाइ काँपी।
रही उनकी टेक, चलै मेरी कहा, धरनि गिरिराज-भुज-सबल-धारी।
सूर-प्रभु के सखी, सुनहु गुन रैनि के, वै पुरुष मैं कहा करौं नारी।

॥२६७२॥३२९०॥

राग नट

आजु हौं अधिक हँसी मेरी माई।
काम बिबस मोसौं रति बाढी, अवलोकत मम झाँई ॥

रवि-ससि-कांति सु उग्र भवन मैं, ठाढ़ी ही इकठाईं।
बिस्मय बढ़्यौ प्रतिबिंब प्रतिहिं प्रति, अंक दई जदुराई॥
कर अंचल मुख मूँदि रही हौं दीन देखि हँसी आई।
सूरदास प्रभु निहचै जानी, तबहिं उलटि उर लाई॥
॥२६७३॥३२९१॥

राग आसावरी

धन्य धन्य वृषभानु-कुमारी, गिरिवरधर बस कीन्हे (री)।
जोइ जोइ साध करी पिय रस की, सो सब उनकौं दीन्हे (री)॥
तोमी तिया और त्रिभुवन मैं, पुरुप स्याम से नाहीं (री)।
कोक कला पूरन तुम दोऊ, अब न कहूँ हरि जाहीं (री)॥
ऐसे बस तुम भए परस्पर, मोसौं प्रेम दुरावै (री)।
सूर सखी आनँद न सम्हारति, नागरि कंठ लगावै (री)॥
॥२६७४॥३२९२॥

वृंदा-गृह गमन *राग बिलावल*

स्याम गए उठि भोरहीं, वृंदा कैं धाम।
कामा कैं गृह निसि बसे, पुरयौ मन काम॥
साँझ गए कहि आइहैं, बहुनायक नाम।
सेज सँवारति आस लै, ऐसैं हि गई जाम॥
अरुन उदै द्वारैं खरे, देखत भई ताम।
रिसनि रही झहराइ कै, मनहीं मन बाम॥
चिह्न और अँग नारि के, बिनु गुन उर दाम।
सूरदास-प्रभु गुन भरे, आलस तनु झाम॥
॥२६७५॥३२९३॥

राग बिलावल

लालन आए रैनि गँवाइ।
निसि भई छीन, बोले तमचुर खग, ग्वालनि ढीली गाइ॥
अरुन-किरन-सुख पंकज बिगसित, मधुप लियौ रस जाइ।
चद्र मलीन भयौ, दिनमनि तैं कुमुद गए कुँभिलाइ॥
चारि जाम जागत मोहिं बीते, तुम बिनु कछु न सुहाइ।
सूर स्याम या दरस परस बिनु, निसि गई नींद हिराइ॥
॥२६७६॥३२९४॥

राग बिलावल

नीकैं आए गिरिधर नागर।
तुम्हरी चिंता अरुन नैन भए, सकल निसा के जागर॥
रति के समाचार लिखि पठए, सुभग कलेवर कागर।
जिय की कृपा तबहिं हम जानी, भोर खुलाई आगर॥
बलि-बलि गई मुखारबिंद की, सुरति-सिंधु, रस सागर।
जाकैं रस-बस भए सूर-प्रभु, ऐसी कौन उजागर॥
॥२६७७॥३२९५॥

राग बिभास

तुम्हरे पूजियै पिय पाइ।
बहुत बात उपजति है तुमकौं, कहत बनाइ-बनाइ॥
अधरा अरुन स्याम भए कैसैं, आए पट पलटाइ।
चारु कपोल पीक कहँ लागी, उरज पत्र लिखवाइ॥
नंदकुमार जहाँ निसि जागे, तहँ सुख देखौ जाइ।
सूरदास सब भाँति अटपटी, अब मन क्यौं पतियाइ॥
॥२६७८॥३२९६॥

राग बिलावल

मोहन काहे कौं लजियात।
मूँदि कर मुख रहे, सनमुख कहि न आवति बात॥
अहि-लता-रँग मिट्यौ अधरनि, लग्यौ दीपक-जात।
रुचिर कुसुम बँधूक मानौ, समय गए कुम्हिलात॥
नैन मुद्रित सकुचैं, जैसैं, उदय-ससि जलजात।
जुगल पुतरी जनु निकसि चल, अलि उरझि अध गात॥
चारि जाम जु निसि उनींदे, अलस बसहि जम्हात॥
सूर ऐसी मदन मूरति, निरखि रति मुसुकात॥
॥२६७९॥३२९७॥

राग बिलावल

सकल निसि जागे के से नन।
जानति हौं अति किये कोकनद, आन-रमनि-सुख चैन।

लटपटी पाग, चाल गति उलटी, रसन अटपटे बैन।
लगति पलक उघरति न उघारैं, मनु खंडित रस-ऐन॥
तमचुर टेरत ही उठि धाए, अब दूनौ दुख दैन।
जानी प्रीति सूर-प्रभु अब हम, सुरति भई गत-मैन॥
॥२६८०॥३२९८॥

राग बिलावल

आजु और छवि नंद किसोर।
मिलि रस-रुचि लोचन भए रोचन, चितवत चित्त पराई ओर॥
सोभित पीठि प्रगट कर कंकन, सोभित हार हियैं बिनु डोर।
सोभित पीत बसन दोउ राते, अधरनि अंजन, नैन तमोर॥
नख सिख लौं सिगार अटपटे, पाए मनहुँ पराए चोर।
फूले फिरत दिखावत, औरनि, निडर भए दै हँसनि अँकोर॥
देखत बनै कहत नहिं आवै, बैसँधि बरनत कबिनि कठोर।
अचरज क्यौं न होत इनि बातनि, सूर-ग्रहन देखैं बिनु भोर॥
॥२६८१॥३२९९॥

राग सूही बिलावल

अतिहिं अरुन हरि नैन तिहारे।
मानहुँ रति रस भए रँगमगे, करत केलि पिय पलक न पारे॥
मंद मंद डोलत संकित से, सोभित मध्य मनोहर तारे।
मनहुँ कमल-संपुट महँ बीधे, उड़ि न सकत चंचल अलि बारे॥
झलमलात रति रैनि जनावत, अति रस-मत्त भ्रमत अनियारे।
मनहुँ सकल जुवती जीतन कौं, काम-बान खरसान सँवारे॥
अटपटात, अलसात पलक-पट, मूँदत कबहूँ करत उघारे।
मनहुँ मुदित मर्कतमनि-आँगन, खेलत खंजरीट चटकारे॥
बार बार अवलोकि कनखियनि, कपट नेह मन हरत हमारे।
सूर स्याम सुखदायक लोचन, दुखमोचन, रोचन रतनारे॥
॥२६८२॥३३००॥

राग बिलावल

नहिंन दुरत नैना रतनारे।
मनहुँ बँधूक कुसुम पर सोभित, सुंदर स्याम सिलीमुख तारे॥

अधरनि पर काजर बन्यौ, बहुरग कहाए।
बंदन त्रिदुली भाल की, भुज आप बनाए॥
यह मोसौं तुमहीं कहौ, उर छत अरुनाए।
सूर स्याम जस-रासि हौ, धनि तिया हँसाए॥
॥२६८९॥३३०७॥

राग भैरव

जाहु तहीं कह सोचत हौ।
जा सँग रैनि बिहात न जानी, भोर भए तिहिं मोचत हौ॥
औरनि कौं छिनु जुग बीतत है तुम निहचीते नागर हौ।
झूमत नैन, जम्हात बारही, रति-सग्राम-उजागर हौ॥
मैं अब कहति तिहारे हित की, ताही कैं गृह सोइ रहौ।
सूर स्याम वैसी तिय को है, वह रस वाही बिनु न लहौ॥
॥-६९०॥३३०८॥

राग भैरव

हमहीं पर पिय रूसे हौ।
बोलत नहीं मूक क्यौं ह्वै रहे, अँग रँग हीन कछू से हौ॥
तब निरखत औरहि हित हमसौं, कीधौं कहुँ तुम दूसे हौ।
तब हँसि मिलत आजु कछु औरहि, भए निठुरई पूसे हौ॥
डगमगात पग उतहि परत हैं, चित चचल उत हूसे हौ।
सूरदास प्रभु साँच भाषिये, तिया कौन बल मूसे हौ॥
॥२६९१॥३३०९॥

राग बिलावल

हरपि स्याम तिय बाहँ गही।
चूक परी हमकौं यह बकसौ, आवन कौं कहि गए सही॥
रिसनि उठी झहराइ, झटकि भुज, छुवत कहा पिय सरम नहीं।
भवन गई आतुर ह्वै नागरि, जे आई सुख सबै कहीं॥
मेरैं महल आजु तैं आवहु, सौंह नद की कोटिक हीं।
सूर स्याम जब लौं जग जीवौं, मिलौं नहीं बरु काम दहीं॥
॥२६९२॥३३१०॥

राग नट नारायन

नागरी निठुर मान गह्यौ।
पीठि दै रिस-काँपि बैठी, फिरि न उतहिं चह्यौ॥
स्याम मन अनुमान कीन्हौ, रिसनि व्याकुल नारि।
तनकहीं रिस छोइ डारौं, यह प्रतिज्ञा धारि॥
सखी एक सुभाव अपनैं, गए ताकैं गेह।
यह चरित सब कह्यौ तासौं, चतुर लख्यौ सनेह॥
गई आतुर नारि ताकैं, लख्यौ नैननि कोर।
चकृत बाला नंद-सुत बिनु, लह्यौ हठ कौ छोर॥
भुजा गहि कही कियौ का रिस, सही ब्रज की ग्वारि।
सूर-प्रभु सौं मान कीन्हौ, हृदय देखि बिचारि॥
॥२६९३॥३३११॥

राग कान्हरौ

बाहँ गही कही आँगन ल्याई।
बहुनायक उनकौं नहिं जानति, बड़ी चतुर हौ माई॥
मैं जु कहति स्रवननि सुनि, चित धरि, जोबन धन सपने कौ।
चलि गहि भुजा मिलै किन हरि सौं, कहा निठुर अपने कौं॥
तू ही गहति न बाहँ जाइ कै, मोसौं बाहँ गहावति।
सुनहु सूर मैं सौंह करी है, तू मोहिं तिनहिं मिलावति॥
॥२६९४।३३१२॥

राग कान्हरौ

कहा कहति तू मिलिहि रही है।
मोसौं करति कहा चतुराई, उनि यह भेद कही है॥
जौ हठ कर्‌यौ भली नहिं कीन्ही, ये दिन ऐसे नाहिं।
कै इहँई पिय कौं न बुलावै, कै तहँई चलि जाहि॥
वै सब गुन लायक, तू नागरि, जोबन दिन द्वै चारि।
सूर स्याम कौं मिलि सुख लेहि न, पुनि पछितैहै नारि॥
॥२६९५॥३३१३॥

राग कान्हरौ

बहुरि पछितैहै री ब्रजनारि।
देखि जाइ ठाढ़े मग जोवत, सुंदर स्याम मुरारि॥

ऐसी निठुर नैंकु नहिं चितवति, चंचल नैन पसारि।
कहा गर्व या झूठे तन कौ, देखि हाथ लै वारि॥
तजि अभिमान मानि री मानिनि, मैं जु करति मनुहारि।
सूर हंस स्वाती-सुत-धोखैं, कबहुँक खात जुवारि॥
॥२६९६॥३३१४॥

राग केदारो

मानि न मानि री लाल मनाइहै, तेरी आँखिन मैं पैयत है।
कत सकुचति मैं तौ सब जानति, ऐसी प्रीति क्यौं दुरैयत है॥
मेरौ बिलग मानति यह जानति, इनि बातनि मैं कछु पैयत है।
सूर स्याम न्यारे न बूझिये, काहे कौं री अनखैयत है॥
॥२६९७॥३३१५॥

राग बिलावल

बहुरि मिलैगी कालिही, चित समुझि सयानी।
मेरौ कह्यौ न क्यौं करै, क्यौं भई अयानी॥
अनलहि औषधि अनल है, सब जानि रही हौ।
काहे कौं हठ करति हौ, बेकाज बही हौ॥
धरनीधर व्याकुल खरे, री गर्ब गहेली।
सूर कह्यौ सुनि मानि लै, मैं कहति सहेली॥
॥२६९८॥३३१६॥

राग सोरठ

स्याम धर्यौ तिय-मोहन रूप।
दूती प्रिया संग इक लीन्हे, अंग त्रिभंग अनूप॥
अंतरद्वार आइ भए ठाढे, सुनत तिया की बातैं।
सरस बचन जु कहति सखि आगैं, कहा मिलौं किहिं नातैं॥
कपटी, कुटिल, क्रूर कहि आवत, यह सुनि सुनि मुसुकात।
सूरदास प्रभु हैं बहुनायक, तुहीं कहति यह बात॥
॥२६९९॥३३१७॥

राग मलार

जौ लौं माई हौं जीवन भरि जीवौं।
तौ लौं मदनगुपाल लाल कैं, पंथ न पानी पीवौं॥

करौं न अंजन, धरौं न मरकत, मृगमद तनु न लगाऊँ।
हस्त वलय, कटि ना पट मेचक, कंठ न पोत बनाऊँ॥
सुनौं न स्रवननि अलि-पिक-बानी, नैन न नव घन देखौं।
नील कमल कर धरौं न कबहूँ, स्याम सरीखे लेखौं॥
इतनी कहत आइ गए मोहन, लियैं प्रिय दूती संग।
छूटि गई रिस-टेक मान की, निरखि रसिक के अंग॥
अति रति लीन भई भामिनि सँग, तब कर गहि कर लीन्हौ।
सूरदास-प्रभु रसिक सिरोमनि, मिलि जु सुधा-सुख दीन्हौ॥

॥२७००॥३३१८॥

राग धनाश्री

कवि गावत हरि मोहन नाम।
गाढ़ो मान दूरि करि डार्‌यो, हरष भई मन बाम॥
ऐसे चरित और को जानै, धन्य धन्य नँदलाल।
जौ ये गुन तौ हरत तियनि मन, अति हरषित भई बाल॥
मिट्यौ काम-तनु-ताम तुरतहीं, रिझई मदनगुपाल।
सूर स्याम रस-बस करि लीन्ही, यहै रच्यौ इक ख्याल॥

॥२७०१॥३३१९॥

राग मलार

सखी री कठिन मान गढ़ टूट्यौ।
श्रीगुपाल बिहँसनि बल आतस, चल्यो अतिहिं गोलनि कौ जूट्यौ॥
करि प्रतिहार तज्यौ सुर गोपुर, तब कंचुकी कोट सन फूट्यौ।
काम अग्नि उपजी उर अंतर, मौन सुभट कौ तब रन छूट्यौ॥
कुच लोचन दोउ लरे सौंह ह्वै, भौंह-कमान-कुटिल - सर छूट्यौ।
विद्याचारि गुपाल लाल की, सूरदास तजि सर्बस लूट्यौ॥

॥२७०२॥३३२०॥

राग गुंडमलार

स्याम गुन-रासि मानिनी मनाई।
रह्यौ रस परस्पर मिट्यौ तनु-बिरह-झर भर्‌यो आनंद तिय उर न माई॥

कबहुँ रति सहज, कबहूँ करत बिपरीत, बासरहिं तैं सबै रैनि बीती।
स्रमित दोउ अँग भए, अतिहिं बिह्वल परे सेज रति-पति जीति बढ़ी प्रीती॥
भोर भए चले निजु सदन पितु मातु कैं, सकुचे देखि नंद द्वारैं।
सूर-प्रभु स्याम गए सकुचि प्रमुदा-धाम कहति ये गुन भले हरि तुम्हारे॥

॥२७०३॥३३२१॥

वृंदा के धाम से प्रमुदा के धाम गमन *राग गुंडमलार*

कहाँ हे स्याम, कहँ गमन कीन्हौ।
कहाँ तुम रहत, कबहूँ दरस देत नहि, धोखैं गए आइ हम मानि लीन्हौ॥
नैन आलस भरे, चरन जुग लरखरे, कहा हो डरे, सो कहौ मोसौं॥
रैनि कहँ बसे, तिय कौन सौं रसे हौ, उर करज कसे, सो कहौ मोसौं।
भले जू भले नँदलाल बेऊ भली, चरन जावक पाग जिनहि रगी।
सूर-प्रभु देखि अँग-अंग बानक कुसल, मैं रही रीझि वह नारि बगी॥

॥२७०४॥३३२२॥

राग कल्यान

सुनत हँसि चले हरि सकुच भारी।
यह कह्यौ आजु हम आइहैं गेह तुव, तरकि जनि कहौ हम समुझि डारी॥
नारि आनँद भरी, रॉंग सी ह्वै ढरी, द्वार अपनैं खरी, प्रेम पुलकी।
गए कहि सूर-प्रभु रैनि बसिहैं आजु, सजति शृंगार कछु सकुच कुल की॥

॥२७०५॥३३२३॥

राग कल्यान

अंग शृंगार सुंदरि बनावै।
मिलौंगी स्याम निजु करि धाम आजुही, रैनि बिलसौं काम मन मनावै॥
सरस सुमना-जात सीस कर सौं करति, सीमंत अलक पुनि-पुनि सँवारै।
माँग सूवी पारि निरखि दरपन रहति, ग्रथित कबरीहिं पाटी निहारै॥
कमल, खंजन, मृगज, मीन लोचन जिते लेति, सारंग-सुत तहाँ आँजै।
हार उर धरति, नख-सिखहु भूषन भरति, सूर-प्रभु मिलन हित नारि राजै॥२७०६॥३३२४॥

राग कान्हरौ

बिधु बदनी अरु कमल निहारे।
सुमना-सुत लै कमलनि मञ्जति, धनपति धाम को नाम सँवारै॥
तरनि तात-बनिता सुत ता छवि, कमलनि रचि-रचि ग्रंथिन चारै।
कमल कमल पर रेख बनावति, सारँग-रिपु पाहन गति ढारै॥
उर हारावलि मेलति कमलनि, मनहुँ इंदु पारस ढिग पारै।
सूर स्याम के नामहिं जीतन, कमला-पति कैं पदहिं विचारै॥
॥२७०७॥३३२५॥

राग आसावरी

अंग शृंगार सँवारि नागरी, सेज रचति हरि आवैंगे।
सुमन सुगंध रचत तापर लै, निरखि आपु सुख पावैंगे॥
चंदन अगरु कुमकुमा मिस्रित, स्रम तैं अंग चढ़ावैंगे।
मैं मन-साध करौंगी सँग मिलि, वै मन-काम पुरावैंगे॥
रति-सुख-अंत-भरौंगी आलस, अकम भरि उर लावैंगे।
रस भीतर मैं मान करौंगी, वै गहि चरन मनावैंगे॥
आतुर जब देखौं पिय नैननि, बचन रचन समुझावैंगे।
सूर स्याम जुवती-मनमोहन, मेरे मनहिं चुरावैंगे॥
॥२७०८॥३३२६॥

राग बिलावल

नंद-सुवन बहुनायकी, अनतहिँ रहे जाई।
वह अभिलाष करति रही, ताकौं बिसराई॥
बासर ऐसैंहीं गयौ, निसि जाम तुलानी।
नारि परी अति सोच मैं, बिरहा अकुलानी॥
आवन कहि गए साँझहीं, अजहूँ नहिँ आए।
कीधौं कतहूँ रमि रहे, फँग परे पराए॥
वेई हैं बहुनायकी, लायक गुन भारे।
सूर स्याम कुमुदा-भवन, सुधि करि पगु धारे।

॥२७०९॥३३२७॥

राग केदारौ

रहे हरि रैनि कुमुदा गेह।
परसपर दोउ प्रेम भीजे, बढ्यौ अतिहिँ सनेह॥
एक छिन इक जाम बितवति, काम रस बस गात।
ताहि बीतत जाम जुग सम, गनत तारा जात॥
उनहिँ वैसैं, याहि ऐसैं, रजनि गई भयौ भोर।
सूर मोसौं करि चतुरई, गए नंद-किसोर॥

॥२७१०॥३३२८॥

राग नट

कुटिलाई करी हरि मोसौं।
चित्त चिंता भरी सुंदरि, करति मन गोसौं॥
कहि गए निसि आइहैं हरि, अनत बिरमे जाइ।
रैनि बीती, उदित दिनकर, देखि तिय मुरझाइ॥
भवनहीं मन मारि बैठी, सहज सखि इक आइ।
देखि तन अति बिरह ब्याकुल, कहति बचन सुनाइ॥
बोलि ढिग बैठारि ताकौं, पोंछि लोचन लोर।
सूर प्रभु कैं बिरह ब्याकुल, सखि लखी मुख-ओर॥

॥२७११॥३३२९॥

राग गौरी

आज बिनु आनँद कौ मुख तेरौ।
कहा रही मन मारि भोरहीं, अति ब्याकुल मन मेरौ॥

मोसौं गोप करै जनि सुंदरि, नहिं पावति वह भाव।
सुनौं बात कैसी उपजी है, कछु, जनि करै दुराव॥
तब बोली मधुरी बानी सौं, कहा कहौं री तोहि।
तेरे स्याम भले गुन नागर, कपटी कुटिल कठोहिं॥
निसि बसिबे की अवधि बदी मोहिं. साँझ गए कहि आवन।
सूर स्याम अनतहिं कहुँ लुबधे, नैन भए दोउ सावन॥
॥२७१२' ३३३०॥

राग सोरठ

ऐसे गुन हरि के री माई।
मैं पहिचानि रही हौं नीकैं, कुटिल, सिरोमनि-राई॥
अब मोसौं उनसौं कहि बनिहै, कछु मैं गई बुलावन।
आपुहिं कालि कृपा यह कीन्ही, अजिर गए करि पावन।
तोकौं मिलैं कहूँ मेरी सौं, तिनसौं यह तू कहियै।
सूरदास-प्रभु बोल न साँचे, लाज कछू जिय गहियै॥
॥२७१३॥३३३१॥

राग बिहागरौ

सखी री और सुनहु इक बात।
आजु गुपाल हमारैं आए, उठि करि इहिं मिस प्रात॥
कहुँ तैं रैनि-उनींदे मोहन, अपनैं गृह तन जात।
आगैं द्वार नंद हे ठाढ़े, तातैं गए न सकात॥
डगमगात मग धरत परत पग, आलसवंत जम्हात।
मानहुँ मदन दंड दै छाँड़े, चुटुकी दै दै गात॥
जौ मैं कह्यौ कहाँ रहे मोहन, तौ सनमुख मुसुकात।
तातैं कछू न उत्तर आयौ, सूर स्याम सकुचात॥
॥२७१४॥३३३२॥

राग केदारौ

तब हरि यह चतुरई करी।
कह्यौ मेरैं धाम आवन, टार दै गए हरी॥
आपुहीं श्रीमुख गए कहि, सही कैसी परी।
सेज रचि सब रैनि जागी, तब रिसनि हौं जरी॥

स्याम देखे द्वार ठाढ़े, मनहिँ मन झरहरी।
कहति सूर सुनाइ हरि कौं, धन्य यह सुभ घरी॥
॥२७१५॥३३३३॥

राग बिलावल

यहै कही कहि मौन रही।
मन-मन कहति दरस अब दीन्हौ, निसि बस बिरह डही॥
मधुरे बचन सुनाइ सखी सौं, रिस बस भरे कही।
आए कहाँ जाहिं ताही कैं, चतुर तिया ढिग ही॥
वा बिनु उनकौं कौन मिलैगी, नहिं कोउ फिरति वही।
सूरज प्रभु इत कौं जनि आवैं, पग धारैं उनहीं॥
॥२७१६॥३३३४॥

राग बिलावल

सखी निरखि अँग-अंग स्याम के।
कहुँ चंदन, कहुँ बंदन-रेखा, कहुँ काजर छबि लखति बाम के।
आलस भरे नैन रतनारे, चतुर-नारि-सँग जगे जाम के।
अपनैं मन यह सोच करत हरि, परी तिया फँग कठिन ताम के॥
मान कियौ मोतन फिरि बैठी, आए हैं यह सुनत नाम के।
सूर स्याम इक बुद्धि बिचारी, मनमोहन रति सहित काम के॥
॥२७१७॥३३३५॥

राग सूही

स्याम सैन दै सखी बुलाई।
यह कहि चली जाउँ गृह अपनैं, तू तौ मान कियौ री माई॥
अतर जाइ भए हरि ठाढे, सखी सहज निकसी तहँ जाई।
मुख निरखत दोउ हँसे परस्पर, भवन जाहु मैं लेउँ मनाई॥
अग दिखाइ गई हँसि प्यारी, सुरत चिह्न नीकी सुघराई।
सूरज-प्रभु-गुन-पार लहै को, जानि बूझि कीन्ही रिसहाई॥
॥२७१८॥३३३६॥

राग गौरी

सखी गई कहि लेउ मनाई।
ज्ञानिनि मनि, विद्या मनि, गुन मनि, चतुरनि मनि चतुराई।

प्रिया हृदय यह बुद्धि उपाई, ह्याँ तौ नहीं कन्हाई।
चातुर चली जमुन-जल खोरन, काहूँ संग न लाई॥
पहुँची जाइ तरनि-तनया-तट, न्हाइ चली अतुराई।
सूर स्याम मारग भए ठाढ़े, बालक मोहनराई॥
॥२७१९॥३३३७॥

राग बिलावल

पाँच बरस के लाल ह्वै, तिय मोहन आए।
नागरि आगैं ह्वै गई, तब बोल सुनाए॥
कह्यौ कहाँ री जाति है, काकी तू नारी।
मोहिं पठाई स्यामलैं, जाकी तू प्यारी।
यह सुनि नारि चकित भई, आपुन तहँ आए।
तब कर सौं कर गहि लियौ, देखत मन भाए॥
अगम चरित प्रभु सूरके, ते लखै न कोई।
स्याम-नाम स्रवननि परयौ, हरषी सुख जोई॥
॥२७२०॥३३३८॥

राग रामकली

हरषी निरखि रूप अपार।
गह्यौ कर सौं सदन ल्याई, जानि गोप-कुमार॥
स्याम मोकौं बोलि पठई, कहत है यह लाल।
भवन लै इनि भेद बूझौं, सुनौं बचन रसाल।
हृदय आनँद भई बाला, प्रेम-रस बेहाल।
कुवँरि अंतःपुर गई लै, रच्यौ हरि तहँ ख्याल॥
तरुन ह्वै कर उरज परसे, दियौ अंचल डारि।
सूर-प्रभु हँसि लई प्यारी, भुजनि अंकम धारि॥
॥२७२१॥३३३९॥

राग टोड़ी

सुख निरखत तिय चकित भई।
जो देखै अति तरुन कन्हाई, यह को लखै दई॥
छाँडि देहु ऐसे मनमोहन, हँसि मन लजित भई।
ऐसे छन्द रचन पिय धनि धनि, कीन्हीं करनि नई॥

अंकम भरि तिय कंठ लगाई, कुच उर चाँपि लई।
सूर स्याम मानिनि-मनमोहन, रति-रस सौं भिगई॥

॥२७२२॥३३४०॥

राग बिलावल

स्याम मनाई मानिनी, हरषित भई अंग।
रैनि-बिरह तनु को गयौ, जे करे अनंग॥
सुता महर वृषभानु की, सुधि कीन्ही स्याम।
ताकौं सुख दे हरि चले, प्यारी कैं धाम॥
प्यारी आवत पिय लखे चितई मुसुकाइ।
जिय हरषे मोहिं देखि कै मुख कह्यौ न जाइ॥
अब न पियहिं उचटाइहौं, मोकौं सरमात।
त्रास करत मेरी जिती आवत सकुचात॥
आनि द्वार ठाढ़े भए, नायक बहु नाम।
सूरज प्रभु अँग सहजहीं, निरखति रुचि बाम॥

॥२७२३॥३३४१॥

राग गुंडमलार

स्याम उर-धाम निज धाम आए।
इतहिं प्रमुदा-धाम सखी सहजहिं गई, अंग के चिह्न कछु और पाए॥
देखि हरषी नारि, सकुच दीन्ही टारि, अतिहिं आनंद भरी स्याम रंगी।
सखी बूझति ताहि, हँसति ता मुख चाहि, स्याम कौं मिली री बनी चंगी॥
कहन लागी, कहा कहति तू आजु मोहिं नाहिं नाहीं करत दुरत कैसैं।
मिले प्रभु-सूर तोहिं, जानी यह चतुरई तहाँ तू करति नहिं लखति जैसैं॥२७२४॥३३४२॥

राग गूजरी

नैन रँगीले चिहुर छबीले, काजर पीक आरसी देख।
सरगजे बसन अधर दसननि छत नीकी लागी बदन-रेख॥

काहे कौं तू मोहिँ दुरावति, जानी अरस-परस छवि सेष।
सूरदास-प्रभु नंदसुवन-सँग अबहि, सुरति रँग कौ सौ भेष॥
॥२७२५॥३३४३॥

राग बिलावल

अब तू कहा दुरावैगी।
मोहि कहति नहिं, काहि कहैगी, कब लौं बात लुकावैगी॥
मोसी और कौन प्रिय तेरैं, जासौं प्रेम जनावैगी।
मेरी सौं, उनकी सौं तोकौं, कहा दुराएँ पावैगी॥
औरनि सी मोहूँ कौं जानति, मो तैं बहुरि रमावैगी।
सूर स्याम तोहिं बहुरि मिलैहौं, आखिर तौ प्रगटावैगी॥
॥२७२६॥३३४४॥

राग बिलावल

प्रमुदा अति हरषित भई, सुनि बात सखी की।
रोम रोम पुलकित भई, उपजी रुचि ही की॥
कहति अबहिं ह्याँ तैं गए, नँद सुवन कन्हाई।
चरित कहा उनके कहौं, मुख कह्यौ न जाई।
साँझ गए कहि आइहैं, मोसौं री आली।
अनत बिरमि कतहूँ रहे, बहुनायक ख्याली॥
रैनि रही मैं जागि कै, भोरहिं उठि आए।
मान कियौ रिस पाइ कै, पल माहिँ छुड़ाए॥
अगनित गुन प्रभु सूर के, कहि तोहिं सुनाऊँ।
अबहि चरित करिकै गए, तेई गुन गाऊँ॥
॥२७२७॥३३४५॥

राग रामकली

आजु सखी जमुना-मग मोहन, मोहिं छँदी छँद लाइ।
को तू आहि, कौन की बनिता, बात एक सुनि आइ॥
बिहँसि कह्यौ मोहिं स्याम पटायौ, सुनत बिरह-गति भूली।
रति-जल-जलज हियौ हुलस्यौ, मनु पुलक-पाँखुरी फूली॥
जानि कुमार गह्यौ कर सौं कर, ल्याई भवन बुलाइ।
नैन मूँदि, अंचल गहि डार्‌यौ, मैं मावौ मिलि आइ॥

छैल छुयौ उर, बदन बिलोक्यौ, सकुचि रही मुसुकाइ।
छाँडहु सूर स्याम यह तुम्हरी, आवनि जानि न जाइ॥
॥२७२८॥३३४६॥

राग धनाश्री

आवत ही मैं तोहिं लख्यौ री।
तुमहुँ भली, उनकौं मैं जानति, बिबहिं कीर भख्यौ री॥
अँग मरगजी पटोरी देखी, उर नख-छत छबि भारी।
धनि वै नंद-सुवन, धनि नागरि, कियौ सुरति नहि हारी॥
हँसत गई सखि भवन आपनैं, मन आनद बढ़ाए।
सूर स्याम राधिका-धाम के, द्वारैं सीस नवाए॥
॥२७२९॥३३४७॥

राग सारग

राधिका स्याम-निरखि मुसुक्यानी।
हार बिनु-गुन बन्यौ, अधर काजर-रेख, नैन तमोर, तुतरात बानी॥
पाग लटपटी बनी, उरह छूटी तनी, अग की गति देखि मन लजानी।
उपटि कंकन पीठि, बक्र बिह्वल डीठ, चतुरई चतुरभुज अधिक ठानी॥
पानि पल्लव अधर दसन सौं गहि रहे, अरध बोलत बचन, हार मानी।
सूर-प्रभु अंक भरि प्रानपति नागरी नवल नागर उरहिं घालि सानी॥२७३०॥३३४८॥

राग बिलावल

भली करी पिय ऐसेहूँ, मेरैं गृह आए।
लीन्हे कठ लगाइ कै, बडभागनि पाए॥
कहा सोच जिय करत हौ, भुज गहि कर लीन्हौ।
गई भवन भीतर लिये, तहँ बैठक दीन्हौ॥
स्याम सकुचि अँग हेरहीं, नागरि पहिचानी।
चिह्न निहारत डर कहा, आवत हीं जानी।

या छवि पर उपमा कहौं, जौ त्रिभुवन होई।
तुम जानत इहिं रूप कौं, अरु लखै न कोई॥
चंदन, वंदन, पान रँग, अधरनि काजर-छवि।
सूर स्याम-उर-करज कौं, को बरनि सकै कवि॥
॥२७३१॥३३४९॥

राग बिलावल

काहे कौं पिय सकुचत हौ।
अब ऐसौ जनि काम करौ कहुँ, जौ अतिहीं जिय अकुचत हौ॥
अब की चूक नहीं जिय मेरैं, और दिननि कौं जानि रहौ।
सौंह करौ मेरी मो आगैं, डर डारौ, जनि मौन गहौ।
यह सुनि स्याम हरषि कुच परसे, बार-बार सिव-सौंह करी।
सूर स्याम गिरिधर गुन-नागर, बात आजु तैं सही परी॥
॥२७३२॥३३५०॥

राग गुंड मलार

स्याम सौंह कुच परसि कियौ।
नंद सदन तैं अबहीं आवत, और तियनि कौ नेम लियौ॥
ऐसी सपथ करौ काहे कौं, जो कछु आजु करी सु करी।
अब जु काल्हि तैं अनत सिधारौ, तब जानौगे तुमहिं हरी॥
मैं सति भाव मिली हँसि तुमकौं, कहा आजु की सौंह करौ।
सूर स्याम जु भई सु भई जू अब तैं सबकौ नेम धरौ॥
॥२७३३॥३३५१॥

राग गुंड मलार

अहो राजति राजीव-नैन-छवि, उरग-लता-रँग लाग।
जिहिं बनिता रस-बस कीन्हे निसि, प्रगट होत अनुराग॥
सिथिल अंग अरु, सिथिल पाग बनी, सिथिल चरन गति आज।
मनहुँ सेज-रेवा-ह्रद तैं उठि, आवत है गजराज॥
भाल मध्य जावक-रँग देखत, लागति है मोहिं लाज।
तुम अपनैं जिय यौं जानत हौ, तिलक लोक-त्रय राज॥
हस बंधु-बर-लोचनि ललना, मिलिन, निसा-कृत-काज।
बदन चंद बिय सधि जानि नहिं बढ़त किरन मन लाज॥

भवन-जीव-सुत लग्यौ अधर पर, यह छवि कही न जाइ।
मनु बंधूक-सुमन ऊपर बिय, अलि-सुत बैठे आइ॥
कुच-कुंकुम-अवलेप तरुनि किये, सोभित स्यामल गात।
गत-पतंग, राकाससि बिय सँग, घटा सघन सोभात॥
स्याम-हृदय लाछन, ता ऊपर लगी करज-कृत रेप।
मनहुँ बसत-राज-रुचि-कीरति, अरुन-किसल-तरु-वेप॥
काम बान बर लिये पंच चितवत प्रति अँग-अँग लाग।
अब न जान गृह देउँ पियारे, जब आए तब भाग॥
ता दिन तैं बृषभानु-नदिनी, अनत जान नहिं दीन्हे।
सूरदास प्रभु प्रीति पुरातन, इहिं बिधि रस बस कीन्हे॥
॥२७३४॥३३५२॥

बड़ी मान लीला *राग बिलावल*

सखियनि सँग लै राधिका, निकसी ब्रज-खोरी।
चली जमुन अस्नान कौं, प्रातहि उठि गोरी॥
नद-सुवन जा गृह बसे, तिहिं बोलन आई।
जाइ भई द्वारैं खरी, तब कढे कन्हाई॥
औचक भेंट भई तहाँ, चकित भए दोऊ।
ये इत तैं वै उतहि तैं, नहिं जानत कोऊ॥
फिरी सदन कौं नागरी, सखि निरखतिं ठाढी।
स्नान दान की सुधि गई, अति रिस तनु बाढी॥
स्याम रहे मुरझाइ कै, ठगमूरी खाई।
ठाढ़े जहँ के तहँ रहे, सखियन समुझाई॥
इतने ही के ह्वै गए, गहि बाँह लिवाई।
सूरज-प्रभु कौं लै तहाँ, राधा दिखराई॥
॥२७३५॥३३५३॥

राग रामकली

राधेहि स्याम देखी आइ।
महा मान दृढाइ बैठी, चितै कापै जाइ॥
रिसहिं रिस भई मगन सुदरि, स्याम अति अकुलात।
चकित ह्वै जकि रहे ठाढे, कहि न आवै बात॥

देखि ब्याकुल नंद-नंदन, सखी करति बिचार।
सूर दोउ मिलैं जैसैं करौ सोइ उपचार॥
॥२७३६॥३३५४॥

राग कान्हरौ

सखि इक गई मानिनि पास।
लखति नहिं कछु भाव ताकौ, मिटी मन की आस॥
कहौं कासौं कौन सुनिहै, रिसनि नारि अचेत।
बुद्धि सोचति तिया ठाढ़ी, नैंकु नाहिं सुचेत॥
स्याम ब्याकुल अतिहिं आतुर, इहिं कियौ दृढ़ मान।
सूर सहचरि कहति राधा, बड़ी चतुर सुजान॥
॥२७३७॥३३५५॥

राग कान्हरौ

नाहिंन तेरौ अति हठ नीकौ।
मेरौ कह्यौ सुनै री सुंदरि, मान मनायौ नागर पी कौ॥
सोइ अति-रूप सुलच्छनि नारी, रीझै जाहि भावतौ जीकौ।
प्यासे प्रान जाइँ जौ जल बिनु, पुनि कह कीजै सिंधु अमी कौ॥
तौ जौ मान तजहुगी भामिनि, रबि की रस्मि काम-फल फीकौ।
कीजै कहा समय बिनु सुंदरि, भोजन पीछैं अचवन घी कौ॥
सूर स्वरूप गरब जोबन कैं, जानति ही अपनैं सिर टीकौ।
जाकैं उदय अनेक प्रकासत, ससिहिं कहा डर कुमुद-कली कौ॥
॥२७३८॥३३५६॥

राग सारंग

चितई चपल नैन की कोर।
मन्मथ-बान दुसह अनियारे, निकसे फूटि हियैं उहिं ओर॥
अति ब्याकुल धुकि धरनि परे, जिमि तरुन तमाल पवन कैं जोर।
कहुँ मुरली, कहुँ लकुट मनोहर, कहुँ पट, कहूँ चंद्रिका-मोर॥
खन बूड़त, खनहीं खन उछरत, बिरह-सिंधु कैं परे झकोर।
प्रेम-सलिल भीज्यौ पीरौ पट फट्यौ निचोरत अंचल-छोर॥
फुरै न बचन, नैन नहिं उघरत, मानहुँ कमल भए बिनु भोर।
सूर सु अधर सुधारस सींचहु मेटहु मुरछा-नंदकिसोर॥
॥२७३९॥३३५७॥

समुझि चली वृषभानु-नंदिनी, आलिंगन गोपाल पियारी।
विद्यमान कलहंस जात गलि, सूरदास अपनौ तनु वारी॥
॥२७४६॥३३६४॥

राग सोरठ

राधे हरि-रिपु क्यौं न छिपावति।
मेरु-सुता-पति ताकैं पति-सुत ताकौं क्यौं न मनावति॥
हरि-बाहन ता बाहन उपमा, सो तैं धरे दृढ़ावति।
नव अरु सात बीस तोहि सोभित, काहैं गहरु लगावति॥
सारँग बचन कह्यौ करि हरि सौं, सारँग वचन न भावत।
सूरदास प्रभु दरस बिना तुव, लोचन नीर बहावत॥
॥२७४७॥३३६५॥

राग नट

राधे हरि-रिपु क्यौं न दुरावति।
सैल-सुता-पति तासु-सुता-पति, ताकैं सुतहिं मनावति॥
हरि-बाहन सोभा यह ताकी, कैसैं धरे सुहावति।
द्वै अरु चार छहौं वै बीते, काहैं गहरु लगावति॥
नव अरु सात ये जु तोहिं सोभित, ते तू काह दुरावत।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे मिलन कौं, सारँग भरि भरि आवत॥
॥२७४८॥३३६६॥

राग सारंग

राधे हरि-रिपु क्यौं न दुरावत।
सारँग-सुत-बाहन की सोभा, सारँग-सुत न बनावत॥
सैल सुता-पति ताकैं सुत-पति ताकैं सुतहिं मनावत।
हरि-बाहन के मीत तासु पति ता पति तोहिं बुलावत॥
राकापति नहिं कियौ उदौ, सुनि या समये नहिं आवत।
विविध बिलास अनद रसिक सुख, सूर स्याम गुन गावत॥
॥२७४९॥३३६७॥

राग सारंग

राधा तैं बहु लोभ कर्‌यौ।
लावन-रथ ता पति आभूषन, आनन-ओप हर्‌यौ॥

मृग कोदंड, अवनिधर, चपला, विद्रुम जु कीर अरयौ।
पिक, मृनाल-अरि ता अरि रूपहिं तैं वपु आपु धरयौ॥
जलचर, गज, मृगराज सकुचि जिय, सोचनि जाई परयौ।
सूरदास-प्रभु कौं मिलि भामिनि, निसि सब जाति टरयौ॥
॥२७५०॥३३६८॥

राग गौरी

राधे यामैं कहा तिहारौ।
मुख हिमकर, तनु हाटक, बेना सो पन्नग अँग-कारौ॥
गति मराल, केहरि कटि, कदली जुगल जंघ अनुहारौ।
नैन कुरग, बचन कोकिल के, नासा सुक कहँ गारौ॥
विद्रुम अधर, दसन दारिम-कन, करौ न तुम निरवारौ।
सूरदास-प्रभु त्रिभुवन-पति कौं, एक न उनहिं उबारौ॥
॥२७५१॥३३६९॥

राग विहागरौ

तोहि किन रूठन सिखई प्यारी॥
नवल वैस नव नागरि स्यामा, वे नागर गिरिधारी॥
सिगरी रैनि मनावत बीती, हा हा करि हौं हारी।
एते पर हठ छाँड़ति नाहीं, तू वृषभानु-दुलारी॥
सरद-समय-ससि-दरस समर सर, लागै उन तन भारी।
मेटहु त्रास दिखाइ बदन-बिधु, सूर स्याम हितकारी॥
॥२७५२॥३३७०॥

राग ईमन

आजु तेरे तन मैं, नयौ जोवन ठौर ठौर, पिय मिलि मेरे मन काहैं रूसी री है बेकाज॥
अधिक राखे बड़ाई, तोहिं तोहिं करै माई त्रियनि मैं अधिकाई भाग सुहाग बिराज।
रिस दूरि करि कह्यौ मानि मेरौ, छिया मान छाँड़ मेरे कहैं तोहिं रूसन न आवै लाज।
सूर प्रभु अवसेर अतिहिं भई अबेर बेगि चलि री, सिंगार काढ़ि माढ़ि आई साज॥२७५३॥३३७१॥

राग पूरबी

देखि री कमल-नैन, मधुर मधुर बैन, हँसि हँसि कब के करत मनुहारि।
जब हरि चितवत, भरि भरि अँखियनि, लाडिली वारि तू मान की रिसि निवारि॥
अतिहिँ आसक्त जानि, मोहन सुजान मानि रीझि मन मान दान दै प्रीति बिचारि।
सूरदास प्रभु के री चरननि पूजि आली, क्यौं न रहै प्रेम उमँगि अँसुवा ढारि॥२७५४॥३३७२॥

राग ईमन

अनबोली न रहै री आली, आई मोसन बात बनावन॥
बहुत सही हाँ घर आए तैं, लागी पाछिलि सुरत दिवावन॥
वे अति चतुर प्रवीन कहा कहौं, जिन पटई तोकौं बहरावन।
काँच करौती जल ज्यौं जानति, सूरदास-प्रभु कहा जनावन॥
॥२७५५॥३३७३॥

राग कान्हरौ

तू आई है बात बनावन।
जाइ न ह्वाँ तैं बैठि रही है, आई मोहिँ मनावन॥
आरि करति, कहि मोहिँ सुनावति, जाइ रहै नहि ताकैं।
को उनकी ह्वाँ बात चलावै, इतनौ हित है काकैं॥
इक रिस जरति मनहिँ मन अपनैं, तोही कौं वै भावत।
सूरदास दरसन ता गृह कौ, उहै ध्यान मन आवत॥
॥२७५६॥३३७४॥

राग केदारौ

यह कहि क्रोध-मगन भई।
रही इकटक साँस बिनु, तनु बिरह-बिवस भई॥
बार बारहिँ सखि बुलावति, कहा भई दई।
नारि नौमी दसा पहुँची, ह्वै अचेत गई॥
स्याम ब्याकुल धरनि मुरछे, तिया रोप-हई।
सूर प्रभु गए तीर जमुना काम जरनि टई॥
॥२७५७॥३३७५॥

राग कान्हरौ

रिस मैं रस की बात सुनाई ।
चतुर सखिनि यह बुधि उपाइ तिय क्रोधहिं मगन जगाई ।।
उमधि गई, तन-सुरति सँभारी, फिरि बैठी लै मान ।
कान्ह गए जमुना-तट व्याकुल, यह गति देखि अजान ।।
काहे कौं विपरीत बढ़ावति, यह कहि गई हरि पास ।
देखे जाइ सूर के स्वामी, कुंज - द्रुमनि - तर बास ।।
।।२७५८।।३३७६।।

राग बिहागरौ

हरि-मुख राधा-राधा बानी ।
धरिनी परे अचेत नहीं सुधि, सखी देखि अकुलानी ।।
बासर गयौ, रैनि इक बीती, बिनु भोजन बिनु पानी ।
बाहँ पकरि तब सखिनि जगायौ, धनि-धनि सारँगपानी ।।
ह्याँ तुम बिवस गए हौ ऐसे, ह्वाँ तौ वै बिवसानी ।
सूर बने दोउ नारि पुरुष तुम, दुहुँ की अकथ कहानी ।।
।।२७५९।।३३७७।।

राग अड़ानौ

लाल अनमने कतहिं होत हौ तुम देखौ धौं देखौ कैसें, कैसैं करि तिहि ल्याइहौं ।
जलहिं निकट की बारू जैसें, ऐसी कठिन त्रिया की प्रकृतिहिं कर ही कर पघिलाइहौं ।
रिस अरु रुचि हौं समुझि देखि वाकी, वाके मन की ढरनि देखि पुनि भावति घात चलाइहौं ।
सूरदास प्रभु तुमहिं मिलैहौं, नैकु न ह्वैहौ न्यारे, जैसें, पानी रंग मिलाइहौं ।।२७६०।।३३७८।।

राग भैरव

सखी गई हरि कौं सुख दै ।
व्याकुल जानि चतुरई कीन्ही, अब आवति प्यारी कौं लै ।।
आतुर गई मानिनी आगैं, जाइ कह्यौ अजहूँ रिस है ।
मोहन रहे मुरछि द्रुम कैं तर, त्रिभुवन मैं ह्वैहै जै जै ।।

अजहूँ कह्यौ मानि री मानिनि, उठि चलि मिलि पिय कौं जिय कै।
सूर मान गाढ़ौ तिय कीन्हौ, कहे बात कोउ कोटि कलै॥
॥२७६१॥३३७९॥

राग सारंग

तू चलि री बन बोली स्याम।
कमल-नैन कैं तू अति बल्लभ, सुरति करी हरि आतुर काम॥
मुरली मैं तव नाम प्रकासत, तेरैं हित कौं सुनि री बाम।
कोमल करनि सुमन बहु तोरत, रुचि सौं सेज रचत गृह काम॥
मन क्रम बचन सपथ चरननि की, बिसरत नहीं तुम्हारौ नाम।
सूरदास प्रभु कौं मिलि भामिनि, जौ पायौ चाहति बिस्राम॥
॥२७६२॥३३८०॥

राग रामकली

रसिक राधे बोली नदकुमार।
दरसन कौं तरसत हरि लोचन, तू सोभा की बार॥
खंजरीट, मृग, मीन, मधुप मिलि, रभा रुचि अनुसार।
गौरि सकुच, ससि बिरथ कियौ रथ, मेरु लुक्यौ बड़िनार॥
कौन हेत तैं मिल्यौ सितासित, बिछुरी कौन बिचार।
मदाकिनि माला सिर धरि कै, रुद्रनि करी पुकार॥
राख्यौ मेलि पीठि तैं पर धन, हर जु कियौ बिनु हार।
सूरदास-प्रभु सौं हठ कीन्हौ, उठि चलि क्यौं न सवार॥
॥२७६३॥३३८१॥

राग सारंग

बोलत हैं तोहिं नदकिसोर।
मान छाँडि सखि नैकु चितै री, पइयाँ लागौं, करौं निहोर॥
तरिवन, तिलक, धरी नक-बेसरि, चख काजर सुरँग तमोर।
सबै सिंगार बन्यौ जोबन पर, लै मिलि मदन गुपाल अँकोर॥
लता भवन मैं सेज बिछाई, बोलत सकल बिहगम मोर।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं ज्यौं दामिनि घन चद-चकोर॥
॥२७६४॥३३८२॥

राग केदारो

राधे बोलत नंद किसोर।
ललित त्रिभंग स्याम सुंदर घन, नाचत ज्यौं बन-मोर॥
छिनु-छिनु बिलँब करति है सुंदरि, क्यौंऽब रहत मन तोर।
आनँद-कंद चद-बृंदावन, तू करि नैन चकोर॥
कहा कहौं महिमा सुभाग की, पुन्य गनत नहिं ओर।
सूरदास प्रभु पै चलि नागरि, लै मिलि प्रान अँकोर॥
॥२७६५॥३३८३॥

राग सारंग

मानिनि मानि मनायौ मोर।
हौं आई पठई है तो पै, तेरे प्रीतम नंद किसोर॥
तेरैं बिरह वृषभानु नंदिनी, मोहन बहरावत है डोर।
तान तरँग मुरली मैं गावत, लै लै नाम बुलावत तोर॥
चलि तोहिं जाउँ बेगि लै मिलऊँ, स्याम सरोज, वदन तुव गोर।
सूरदास-प्रभु-दृष्टि सुधानिधि, चरन कमल कमला-चित-चोर॥
॥२७६६॥३३८४॥

राग सारंग

मानिनि नैंकु चितै इहिं ओर।
नासत तिमिर, प्रकास-बदन तैं, ज्यौं राजत रवि भोर॥
तुव मुख कमल, मधुप उनकौ मन, विंध्यौ नैन की कोर।
बंक बिलोकनि, मधुरी, मुसुकनि, भावति है प्रिय तोर॥
अंतर दूरि करौ अंचल कौ, होइ मनोरथ मोर।
सूर परस्पर रहौ प्रेम बस, दोउ मिलि नवल किसोर॥
॥२७६७॥३३८५॥

राग नट

कहि पठई हरि बात सुचित दै, सुनि राधिके सुजान।
तैं जु बदन झाँप्यौ झुकि अंचल, यहै न दुख मौं मान॥
इहिं पै दुसह जु इतनेहिं अंतर, उपजि परै कछु आन।
सरद सुधा ससि की नव कीरति, सुनियत अपनै कान॥

खंजरीट, मृग, मीन, मधुप, पिक, कीर करत हैं गान।
बिद्रुम अरु बंधूक, बिंब मिलि, देत कबिनि छबि-दान ॥
दाड़िम, दामिनि, कुंदकली मिलि, बाढ्यौ बहुत बखान।
सूरदास उपमा नछत्रगन, सब सोभित, बिनु भान ॥
॥२७६८॥३३८६॥

राग सारंग

रही दै घूँघट-पट की ओट।
मनौ कियौ फिरि मान मवासो, मन्मथ-बंकट कोट ॥
नहसुत कील, कपाट सुलच्छन, दै दृग-द्वार अगोट।
भीतर भाग कृष्न भूपति कौ, राखि अधर मधु मोट ॥
अंजन, आड तिलक, आभूषन सजि आयुध बड छोट ॥
भ्रकुटी सूर गही करि सारँग, करत कटाच्छनि चोट ॥
॥२७६९॥३३८७॥

राग बिलावल

तैं जु नीलपट-ओट दियौ री।
सुनि राधिका स्यामसुंदर सौं, बिनहिं काज अति रोष कियौ री ॥
जल-सुत-बिंब मनहुँ जल राजत, मनहुँ सरद ससि राहु लियौ री।
भूमि-बिसन किधौं कनक-खंभ चढ़ि, मिलि रस ही रस अमृत पियौ री ॥
तुम अति चतुर सुजान राधिका, कत राख्यो भरि मान हियौ री।
सूरदास-प्रभु-अँग-अँग नागरि मनहुँ काम कियौ रूप बियौ री ॥
॥२७७०॥३३८८॥

राग बिलावल

सारँग-रिपु की ओट रहे दुरि, सुदर सारँग चारि।
ससि, मृग, फनिग, ध्वनिग, द्वै अँग-सँग सारँग की अनुहारि ॥
तामैं एक और सुत सारँग, बोलत बहुरि बिचारि।
परकृत एक नाम है दोउ, किधौं पुरुष किधौं नारि ॥
ढाँकति कहा प्रेम हित सुंदरि, सारँग नैकुं उघारि।
सूरदास प्रभु मोहे रूपहिं, सारँग बदन निहारि ॥
॥२७७१॥३३८९॥

राग बिलावल

इहिँ तेरैं बृंदावन बाग ।
सुनि राधिका कदंब बिटप की साखा, एक अमी फल लाग ॥
स्याम अरुन कछु अधिक पीत छबि, बरनि जाइ नहिँ अंग-
बिभाग ।
अति सुपक मुरली कैं परसत, चुइ चुइ परत उमँगि रस राग ॥
ब्रज-बनिता बर बारि कनक मय, रोके रहतिँ सुरासुर नाग ।
तुव प्रताप छुइ सकत न सुंदरि, सुर मुनि मर्कट, कोकिल, काग ॥
मैँ मालिनि जतननि जल जुगयौ, सींचत स्वहथ, परे कर-दाग ।
सूर सु स्रम उठि भेँटि परस्पर, पिउ पियूष पाए बड़भाग ॥
॥२७७२॥३३९०॥

राग सोरठ

राधे सो रस बरनि न जाइ ।
जा रस कौँ स्वरभानु सीस दियौ, सु त पियै अकुलाइ ॥
पचिहारे सब कोटि कला करि, चंद न ठिक ठहराइ ।
अजहुँ कबंध फिरत तिहिँ लालच, सुंदरि सैन बुझाइ ॥
मोहन तैँ न रूप रस आगरि, कटति न जानी काइ ।
सूरजदास पपीहा कैँ मुख, कैसैँ सिंधु समाइ ॥
॥२७७३॥३३९१॥

राग सारंग

देखि स्याम कौ बदन री माई, मोहिँ अपनपौ भूल्यौ ।
विद्यमान या दृष्टि-सरोवर, मोहन बारिज फूल्यौ ॥
करि सु अगाध सघन बृंदाबन, चंचल लता तरंग ।
निमि मृनाल, सुमृति पत्रावलि, गावत मुनि-जन-भृंग ॥
सुरभी सुभग हंस, गो, खग, मृग, जलचर जीव अनंत ।
सूर कछू यह ह्याँ री अद्भुत, लीला कमलाकंत ॥
॥२७७४॥३३९२॥

राग बिलावल

अब राधे नाहिँन ब्रज नीति ।
नृप भयौ कान्ह काम अधिकारी, उपजी है ज्यौँ कठिन कुरीति ॥

राग अडानौ

मोहन नीकौ री अति नीकौ।
तासौं न रूसन कीजै, हित कै मनाइ लीजै, हँसत-हँसत दूरि करै रिस जी कौ॥
अतिहिं मानिनी जे जे तेऊ मैं मनाइ दई, अतिहिं कठिन हठ देख्यौ री तो तौ कौ॥
दूसरी जामिनि गई, त्यौं त्यौं तू हठीली भई, सूरज निरखि मुख देखै प्यारी पी कौ॥२७८२॥३४००॥

राग बिहागरौ

और सखी इक स्याम पठाई।
हरि कौ बिरह देखि भई व्याकुल, मान मनावन आई॥
बैठी आइ चतुरई काछे, वह कछु नहीं लगार।
देखति हौं कछु और दसा तुव, बूझति बारबार॥
मन-मन खिझति मानिनी, याकौं कौनैं इहाँ पठाई।
सूर सखनि कछु मान मनायौ, सो सुनिकै यह आई॥
॥२७८३॥३४०१॥

राग बिहागरौ

अजहूँ मान तजति नहिं प्यारी।
मदन नृपति बर सैन साजि कै, घेरे आनि बिहारी॥
इतने कटक देखि मन मोहन, भीत भए भय भारी।
कुसुम-बान जित तित तैं छूटत, खग, रव घटा सँवारी॥
पल्लव पट-निसान, भँवरा भट मजरि साल बिपारी।
सूरदास-प्रभु के सहाय कौं, उठि चलि बेगि हँकारी॥
॥२७८४॥३४०२॥

राग सारग

बेगि चलौ बलि कुँवरि सयानी।
समय बसत, बिपिन रथ, हय, गय, मदन-सुभट नृप-फौज पलानी॥
चहुँ दिसि चाँदनि, निसा चमू चलि, मनौ धवल धर-धूरि उडानी।
सोरह-कला छपाकर की छबि, माभिन मीस छत्र सिर-तानी॥
बोलत हँसत चपल बदीजन, मनहुँ प्रमसत, पिक बर बानी।
धीर समीर रटत बर अलिगन, मनहुँ कमोदिक मुरलि सुठानी॥

कुसुम सरासन अधिक विराजत, कठिन मान-गढ़ अति अभिमानी।
सूरदास-प्रभु की है यह गति, करहु सहाइ राधिका रानी॥
॥३७८५॥३४०३॥

राग मलार

सुनि री सयानी तिय हसिबे कौ नेम लियौ, पावस दिननि
कोऊ ऐसौ है करत री।
दिसि दिसि घटा उठी मिलि री पिया सौं रूठी निडर हियौ है
तेरौ नैंकु न डरत री॥
चलिए री मेरी प्यारी, मोकौं मान देन हारी, प्रानहूँ तें प्यारे पति
धीर न धरत री।
सूरदास प्रभु तोहिं दियौ चाहै हित-चित, हँसि क्यौं न मिलै तेरौ
नेम है टरत री॥२७८६॥३४०४॥

राग मलार

सेज रचि पचि साज्यौ सघन निकुंज, कुंज चित चरननि
लाग्यौ छतिया धरकि रही।
हा हा चलि प्यारी, तेरौ प्यारौ चौंकि चौंकि परै, पात की खरक
पिय हिय मैं खरकि रही॥
बात न धरति कान, तानति है भौंह बान, तऊ न चलति बाम
अँखिया फरकि रही।
सूरदास मदन दहत पिय प्यारी सुनि, ज्यौं ज्यौं कह्यौ त्यौं त्यौं
बरु उतकौं सरकि रही॥२७८७॥३४०५॥

राग मलार

(तू तौ मो सौं) बात न कहति माई चलैगी कहाँ तैं।
काहे कौं गहरु कीजै, बिनु थर कहा लीजै, दीजै जाइ उत्तर मैं,
आइ हौं जहाँ तैं॥
अनोखी मानिनी नई, पाहन-पूतरी भई, बैन न बदति और जरति
महाँ तैं।
जात न परत पाइ, आई हौं सपथ खाइ, जातैं सूरदास-प्रभु, नवल
पहाँ तैं॥२७८८॥३४०६।

राग सारंग

उत तैं पठावत वे, इत तैं न मानत ये, हौं तौ हौं दुहुनि बीच चक-
डोरी कीनी।
क्रोध भेष मुख, नैन-छवि नहिं कहि आवै, आतुर ह्वै उठि धाई
रावरेहिं लीनी॥
तामरस लोचननि हाव भाव बिनु करे, मानति न मानिनी है मान
रंग भीनी।
सूरदास प्रभु हौ रसिकराइ सिरोमनि आपु, चलि देखौ क्यों न
नायिका नवीनी॥२७८९॥३४०७॥

राग सारंग

हौं तौ गई ही मान छुड़ावन हो पिय, रीझी आई।
ऐसी छवि राजति है मोपै, सो बरनी नहिं जाई॥
आपु न चलियै, वदन देखियै, जौ लौं रहै निठुराई।
सूर स्याम प्यारी अति राजति, मोहिं रावरी दुहाई॥
॥२७९०॥३४०८॥

राग कल्यान

मैं तौ तुम्हैं हँसतऽरु खेलतहिं छाँडि गई, आइ अब न्यारे
अनबोले रहे दोऊ।
इत तुम रूखे गिरिधर उत अनमनी, अचल सुमुख जब लाइ
रही बोऊ॥
नीची दृष्टि करि नख बरनी करोवति है इक टक घूँघटहिं चितै
रही सोऊ।
सूरदास प्रभु प्यारी आँकौं भरि जाइ लीजै, छाँडो छाँडो कहै देहु
माने नहिं कोऊ॥२७९१॥३४०९॥

राग ईमन

अजहूँ रयनि परी प्यारे तीनि जाम है जू काहे कौं हरबरी
निहारै उर स्याम है जू।
कैहौं बात प्रकृति लै, जौ पै रिस देखिहौ तौ लागिहै धरीक
लाडिलो निहारो बामज है॥

पैज किये जाति, ताहि अब लिये आवति हौं, सुख तौ तिहारैं सुख और
कहा काम है जू।
सुनहु सूरज-प्रभु अब कैं मनाइ ल्याऊँ, बहुरि रुठाइ हौ तौ, मेरी राम
राम है जू ॥२७९२॥३४१०॥

राग सारंग

माधौ, तहाँ बुलाई राधे, जमुना-निकट सुसीतल छहियाँ।
आछी नीकी कुसुँभी सारी गोरैं तन, चलि हरि पिय पहियाँ॥
दूती एक गई मोहिनि पै, जाइ कह्यौ यह प्यारी कहियाँ।
सूरदास सुनि चतुर राधिका, स्याम रैनि वृंदाबन महियाँ॥
॥२७९३॥३४११॥

राग सूही

झूँमक सारी तन गोरैं हो।
जगमग रह्यौ जराइ कौ टीकौ, छवि की उठति झकोरैं हो॥
रत्न जटित के सुभग तर्‍यौना, मनहुँ जात रवि भोरैं हो।
दुलरी कंठ निरखि पिय इक टक, दृग भए रहँ चकोरैं हो।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे मिलन कौं, रीझि-रीझि तृन तोरैं हो॥
॥२७९४॥३४१२॥

राग ईमन

बेरस कीजै नाहिं भामिनी, रस मैं रिस की बात।
हौं पठई तोहिं लेन साँवरैं, तोहिं बिनु कछु न सुहात॥
हा हा करि तेरे पाइँ परति हौं, छिनु छिनु निसि घटि जात।
सूर स्याम तेरौ मग जोवत, अति आतुर अकुलात॥
॥२७९५॥३४१३॥

राग बिलावल

उठि राधे कत रैनि गँवावै।
महि-सुत-गति तजि, जल सुत-गति तजि, सिंधु सुता-पति भवन
न भावै॥
अलि-वाहन कौ प्रीतम बाला ता वाहन रिपु ताहि सतावै।
सो निवारि चलि प्रान पियारी धर्म-सु नहैं मति भाव न पावै॥

सैल-सुता सुत-वाहन सजनी ता रिपु ता मुख सब्द सुनावै।
सूरदास-प्रभु पंथ निहारत, तोहिं ऐसी हठ क्यौं बनि आवै॥
॥२७९६॥३४१४॥

राग बिहागरौ

उत्तर न देति मोहिं मोहिनी रही ह्वै मौन, सुनि सब मेरी बात नैंकहूँ न मटकी री।
अब धौं चलैगी कब, रजनी गई री सब, ससि वाहन की घरनी वै देखि लटकी री॥
नैना री करे अलोल, धरे री पानी कपोल, भुव नख लिखै तिलहू न कछु भटकी री।
मुगुध बधू री सठ, काहे कौं परी है हठ, परम भावती है तू नागर सु नट की री॥
धुरुव समान आए री जु कहूँ सप्तरिषि, बहुरि तौ बेर ह्वैहै तमचुर रट की री।
सूर सखि जाइ बलि, राधिका कुँवरि चलि आजु छबि नीकी तेरे आछे नील पट की री॥२७९७॥३४१५॥

राग सारंग

जनि हठ करहू सारँग-नैनी।
सारँग ससि सारँग पर सारँग ता सारँग पर सारँग बैनी॥
सारँग रसन, दसन गुनि सारँग, सारँग सुत दृग निरखनि पैनी।
सारँग कहौ सु क्यौं न बिचारौ सारँग-पति सारँग रची सैनी॥
सारँग सदनहिं ले जु बरुनि गई, अजहुँ न मानति गत भई रैनी।
सूरदास प्रभु तुव मग जोवैं, अंधक रिपु ता रिपु-सुख-दैनी॥
॥२७९८॥३४१६॥

राग बिहागरौ

आजु सर्बरी सर्ब बिहान, तोहिं मनावत राधा रानी।
लागे उदय होन सुक, जागे तमचुर ढरि आई जु मृगानी॥
प्रफुलित कमल, गुजार करत अलि, पहु फाटी, कुमुदिनि कुम्हिलानी।
सूर स्याम बन मुरछि परे हैं, मान निवारौ, क्यौं भहरानी॥
॥२७९९॥३४१७॥

राग बिहागरौ

स्यामा प्यारी बोलन लागे तमचुर, घटि गई रजनी।
री वै मनमोहन ठाढ़े, ब्रजनायक सुनि सजनी॥
ठाढ़े हैं हरि कुंज-द्वारैं, ललित बेनु बजाइ हो।
सुनत कैसैं रहित, कैसैं तोहिं भवन सुहाइ हो॥
तुम कुँवरि वृषभानु की, कछु नेह प्रीति न जानहू।
बोलि पठई तोहिं हरि, काहैं न चित कछु आनहू॥
नंद-नंदन कह्यौ ऐसैं, सुंदरी ह्यॉं आइ हो।
और नहिं कछु काज बन मैं, नकु मधुरैं गाइ हो॥
सूर-प्रभुहिं बिचारि मन मैं, प्रीति सौं उर लाइयै॥
यहै पुनि पुनि कहति मैं, मनबानछित फल पाइयै॥
॥२८००॥३४१८॥

राग केदारौ

मोहन तेरैं आधीन भए री एती रिस कब तैं कीजति है
री गुन-आगरि-नागरी।
तेरे अनउत्तर सुनि सुनि री देत स्याम हँसि, नैंकु चितै इत तू
अति भागनि आगरी॥
तेरोइ भाग सुहाग, तेरोई, अनुरागहु तेरे ही माथैं तू रति रूप-
उजागरी॥
सूरदास-प्रभु तेरौ मग जोवत जुहीं तुहीं रट लागी जैसैं मृगिनो
भूली बागरी॥२८०१॥३४१९॥

राग नट

कौन कुमति आई री जो कह्यौ न मानति।
छाँड़ि मान सुनि बात सयानी कत हरि सौं हट ठानति॥
यह निसि वृथा बिहाइ पिया बिनु सोच नहीं उर आनति।
बोउच स्याम स्याम दामिनि कौ मनो सरद रितु जल घटत न।
जानति॥
धनुष कला सु सही सब सिखि कै, भई सयानी गानति।
सूर स्याम सुंदरी आपुहीं, कह तू सर संधानति॥
॥२८०२॥३४२०॥

राग नट

तू सुनि कान दै री मुरली धुनि, तेरे गुन गावैं स्याम कुंज भवन।
सनमुख ह्वै ताही कौं अंक भरैं, तेरौ तन परसि जो आवत पवन॥
तेरौ स्वरूप आनि उर अंतर, नैन मूँदि रहे करत न गवन।
सूरदास प्रभु कैं तू रमि रही, यातैं नाम राधिका रवन॥
॥२८०३॥३४२१॥

राग केदारौ

प्यारी, प्रीतम आरति करतु।
तुम्हारैं कारन कुँवरि राधिका, मेरैं पाइँनि परतु॥
बरही-मुकुट लुठत अवनी पर, नाहिंन निज भुज भरतु।
बारबार रहँट के घट ज्यौं, भरि-भरि लोचन ढरतु॥
अति आधीन मीन ज्यौं जल बिनु, नाहिंन धीरज धरतु।
सूर सुजान सखी सुनु तुम बिनु, मन्मथ पावक जरत॥
॥२८०४॥३४२२॥

राग मारू

मृग नैनी तू अंजन दै।
नवल निकुंज कलिंद-सुता-तट, पी कौं सर्वसु लै॥
सोभित तिलक रुचिर मृगमद कौ, भौंहनि बंक चितै॥
हाटक-घटनि सुधा पीवन कौं, नागिनि लट लटकै॥
नैन निरखि अँग अंग निरखि यौं, अनख प्रिया जु तजै।
चादर-बसन उतारि बदन यौं, चंदा ज्यौं न छपै॥
खंज-मीन अंजन दै सकुचे, कवि सो काह गनै।
सूर स्याम कौं बेगि दरस दै, कामिनि मदन दहै॥
॥२८०५॥३४२३॥

राग नट

राधे कत रिस सरसतई।
निठुति जाइ बारबारनि पै होति अनीति नई॥
नित तुव जरनि सिंधु-सुत मानत मृगमद स्याम दई।
जल थल खगनि सुमन गुरु दोउ दुज दुति किरनि भई॥
बिहरत कुंज बिलासनि पद्मिनि सकुचनि मैन कई।
दुखी दुरे फल त्राहि बिरहिनी, को अपराध बई॥

अब तुम जाहु निकुंज भामिनी, ना तरु करत खई।
परसे सूर चतुर चिंतामनि, विपुल - विलास - मई ॥
॥२८०६॥३४२४॥

राग देवगंधार

मानिनि मानति क्यौं न कह्यौ।
प्रथम स्याम-मन चोरि नागरी, अब क्याँ मान गह्यौ ॥
जानत कहा रीति प्रीतम की, बन-जन जोग मह्यौ।
रुद्र, बिरंचि, सेस, सहसानन, तिन्हुँ न अंत लह्यौ ॥
बैठे नवल कुंज-मंदिर मैं, सो रस जात बह्यौ।
सूर सखी मोहन-मुख निरखहु, धीरज नाहिं रह्यौ ॥
॥२८०७॥३४२५॥

राग नट

कुंज भवन मैं ठाढ़े देखौं, अँखियनि भरि तब मैं जाऊँ बलि।
मो पैं देखि न परैं अकेले, नैकु होइ ठाढ़ी तू ढिग चलि ॥
तेरौ बदन प्रफुल्लित अंबुज, हरि जू के नैना अति आतुर अलि।
सूर न्यारे नँद-नंद न कीजै, हा हा दूरि करौ मानैं मलि ॥
॥२८०८॥३४२६॥

राग केदारौ

तेरैं मानिबेहू तैं री मान नीकौ लागत है, ऐसैं ही रहि हौं
लालहिं जौ लौं लै आऊँ।
औरनि कैं हासी-खेल, तिहारी रुखाई माई, बिरस मैं यह रस मैं आनि
दिखाऊँ।
उलटि पिया पैं जाऊँ, नूतन चोप बढ़ाऊँ, सोरह कला कौ ससि कुहु
बिगसाऊँ।
सूरदास-प्रभु गिरिधरन सौं हिलि मिलि, यह मिलिबे कौ सुख अनुपम
पाऊँ ॥२८०९ ३४२७॥

राग बिहागरौ

कहति स्याम सौं जाइ मनायौ न मानै जू।
कहा रही मन घालि न कछु अनुमानै जू ॥

कहा मन मैं घालि बैठी, भेद मैं नहिं लखि सकी।
आपु ह्याँ वह उहाँ बैठी, जाति आवति हौं थकी॥
नैंकुहूँ जो कह्यौ मानै, कोटि भाँतिनि हौं कही।
हाहा करी, मनुहार करि-करि, सुनतहीं अति रिस गही॥
कहा बैठे चलौं बनिहै आपहूँ नहिं मानिहौ।
तुम कुँवर घर ही के बाढ़े, अब कछू जिय जानिहौ।
बेगि चलिये अनखिहै, तुम इहाँ वह उहँ जगति है।
वाकैं जिय कछु और हैहै, कपट करि हठ बगति है॥
राधिका अति चतुर जानौ, जाउ ता ढिगहीं रहौ।
कहा जो मुख फेरि बैठी, मधुर मधुर बचन कहौ॥
सूर प्रभु अब बनै नाचौं, काछ जैसी तुम कछ्यौ।
कहियै गुननि प्रबीन राधा, क्रोध बिष काहैं भख्यौ॥

॥२८१०॥३४२८॥

राग बिहागरौ

सुनि यह स्याम बिरह भरे।
बार बारहिं गगन निरखत, कबहुँ होत खरे॥
मानिनी नहिं मान मोर्‌यौ, दूसरी निसि आजु।
तब परे मुरझाइ धरनी, काम कर्‌यौ अकाजु॥
सखिनि तब भुज गहि उचाए, कहा बावरे होत।
सूर-प्रभु तुम चतुर मोहन, मिले अपनैं गोत॥

॥२८११॥३४२९॥

राग बिलावल सूहौ

स्याम चतुरई कहाँ गँवाई।
अब जाने घर के बाढ़े हौ, तुम ऐसैं कह रहे मुरझाई॥
बिना जोर अपनी जोबनि के, कैसैं सुबस कीन्हौ तुम चाहत।
आपुन रहत अचेत भए क्यौं, उन मानिनि मन काहैं दाहत॥
उहँई रहौ कहैंगी तुमकौं, कतहूँ जात रहे बहुनायक।
सूर स्याम मनमोहन कहियत, तुम हौ सबही गुन के लायक॥

॥२८१२॥३४३०॥

राग रामकली

तब हरि रच्यौ दूती रूप।
गए जहँ मानिनी राधा, त्रिया स्वाँग अनूप॥

जाइ बैठे कहत मुख यह, तू इहाँ बन स्याम ?
मैं सकुचि तहँ गई नाहीं, फिरी कहि पति बाम ॥
सहज बातैं कहति मानौ, अब भई कछु और ।
तू इहाँ वै उहाँ बैठे, रहत एकहिं ठौर ॥
कह्यौ मोसौं कहा उपजी, वै रटत तुम नाम ।
सुनति है कछु बचन राधा, सूर-प्रभु बन-धाम ॥
॥२८१३॥३४३१॥

राग रामकली

राधे तैं अति मान करयौ ।
यह कहि हरि पछितात मनहिं मन, पूरब पाप परयौ ॥
पहिली अपनी कथा चलाई, जब तिय-भेष धरयौ ।
तब तिहिं रूप अनूप सुमुखि सुनि, त्रिभुवन-चित्त हरयौ ॥
मोहे असुर महा मद माते, सुर मुख अमृत भरयौ ।
सिव गन सहित समेत महामुनि, को ब्रत तैं न टरयौ ॥
ता तन की छबि निरखि सूर सिव, छत ज्यौं ज्ञान गरयौ ।
जिहिं जारयौ जग काम सु माधौ तेरैं हठ जात जरयौ ॥
॥२८१४॥३४३२॥

राग बिहागरौ

इतौ स्रम नाहिंन तबहि भयौ ।
सुनि राधिके जितौ स्रम मोकौं, तैं इहिंमा न दयौ ॥
धरनि धरि, बिधि बेद उधारयौ, मधु सौं सत्रु हयौ ।
द्विज नृप कियौ, दुसह दुख मेट्यौ, बलि कौ राज लियौ ॥
तोरयौ धनुप स्वयंबर कीन्हौ, रावन अजित जयौ ।
अघ, बक, बच्छ, अरिष्ट, केसि मथि, दावानल अँचयौ ॥
गुरु-सुत मृतक काज निजु आए, सागर सोध लयौ ।
तिय-बपु धरयौ, असुर सुर मोहे, को जग जो न द्रयौ ॥
जानौं नहीं कहा या रस मैं, जिहिं सिर सहज नयौ ।
सूर सुबल अब तोहि मनावत, मीहिं सब बिसरि गयौ ॥
॥२८१५॥३४३३॥

राग मलार

समुझि री नाहिंन नई सगाई ।
सुनि राधिके तोहिं माधो सौं, प्रीति सदा चलि आई ॥

जब जब मान कियौ मोहन सौं, बिकल होत अधिकाई ।
बिरहानल सब लोक जरत हैं, आपु रहत जल-साईं ॥
सिंधु मथ्यौ, सागर-बल बाँध्यौ, रिपु रन जीति मिलाई ।
अब सो त्रिभुवन-नाथ नेह-बस, बन बाँसुरी बजाई ॥
प्रकृति पुरुष, श्रीपति, सीतापति, अनुक्रम कथा सुनाई ।
सूर इती रस रीति स्याम सौं, तैं ब्रज बसि बिसराई ॥
॥२८१६॥३४३४॥

राग बिहागरौ

राधिका तजि मान मया करु ।
तेरैं चरन सरन त्रिभुवन-पति, मेटि कलप तू होहि कलपतरु ॥
जिनके चरन-कमल मुनि बंदत, सो तेरौ ध्यान धरै धरनी-धरु ।
अहो बावरी कह तैं कीन्हौ, प्रीतम पठै दियौ बैरिनि घरु ॥
तुम नागरि, वै श्रीनागरवर, तुम सुंदरि, वै श्रीसुंदरवरु ।
वै हरि तौ दुख हरत सबनि कौ, तू बृषभानु-सुता हरि कौ हरु ॥
जो कछु कछुक कह्यौ चाहति हौ, उनहिं जानि सखि मोहीं सौं लरु ।
तबहीं सूर निरखि नैननि भरि, आयौ उबरि लाल-ललिता-छरु ॥
॥२८१७॥३४३५॥

राग बिलावल

स्याम चतुरई जानति हौं ।
ये गुन तुम अजहूँ नहिं छाँड़त, इन छंदनि मैं मानति हौं ॥
तुम रस-बाद करन अब लागे, जे सब तेउ पहिचानति हौं ।
वै बातैं अब दूरि गईं जू, ते गुन गुनि-गुनि गानति हौं ॥
यह कहि बहुरि मान गहि बैठी, जिय ही जिय अनुमानति हौं ।
सूर करौ जाइ-जोइ मन भावै, यहै बात कहि भानति हौं ॥
॥२८१८॥३४३६॥

राग बिहागरौ

यह कहि बहुरि मान कियौ ।
रिसनि बर बर होति बाला, जोग नेम लियौ ॥
कहति मन-मन बहुरि मिलि हौं, अब न करौं बिलास ।
ध्यान धरि बिधि कौं मनावति, लेति उरध स्वास ॥

तिया कौ जनि जनम पाऊँ, जनि करै पति नारि।
जनम तौ पाषान माँगौं, सूर गोद पसारि॥
॥२८१९॥३४३७॥

राग बिलावल

स्याम चले पछिताइ कै, अति कीन्हौ मान।
व्याकुल रिस तन देखि कै, सब गयौ सयान॥
बैठे साँस नवाइ कै, बिनु धीरज प्रान।
दूती तुरत बुलाइ कै, पठई दै आन॥
बिरहा कैं बस हरि परे, तिय कियौ अनुमान।
धीर धरौ मैं जाति हौं, करियै कछु ज्ञान॥
सावधान करिकै गई, दूतिका सुजान।
सूर महा वह मानिनी, मानौ पाषान॥
॥२८२०॥३४३८॥

राग धनाश्री

प्यारी अंस परायौ दै री।
मेरी सिख सुनि रसिक राधिका, मन मैं न्याउ चितै री॥
आपु आपनी तिथि वा इंदुहिं, अँचवत अमर सबै री।
हर, सुरेस, सुर, सेस, समुझि जिय, क्यौ प्रभु पान करै री॥
वह जूठौ ससि जानि, वदन-बिधु, रच्यौ बिरंचि यहै री।
सौंप्यौ सुपत बिचारि स्याम हित, सु तू रही लटि लै री॥
जाकी जहाँ प्रतीति सूर सो, सर्वस तहाँ सँचै री।
सुद्ध सुधानिधि अर्पि अबहिं उठि बिबि पुनि पुनि न पचै री॥
॥२८२१॥३४३९॥

राग बिहागरौ

राधिका हरि अतिथि तुम्हारैं।
रति-पति असन-काल गृह आए, उठि आदर करि कहैं हमारैं॥
आसन आधौ सेज सरकि दै, सुख पैहै पद हरषि पखारैं।
अर्घ्यादिक आनंद अमृत मय ललित-लोल-लोचन जल धारैं॥
धूप सुवास ततच्छन बस करि, मन मोहन हँसि दीप उजारैं।
बचन रचन, भ्रुव भंग और अँग, प्रेम-मधुर-रस परुसि निन्यारैं॥

उचित केलि कटु तिक्त त्यागि, पट अमल उलटि, अक्रम हठि हारि।
नख-छत छार, कसाय कुच-ग्रह, चुंबन सर्पि समर्पि सँवारि॥
अधर - सुधा - उपदंस - सींक सुचि, बिधु-पूरन-मुखबास सँचारि।
सूर सुकृत संतोषि स्याम कौं, बहुत पुन्य यह व्रत प्रतिपारि॥
॥२८२२॥३४४०॥

राग धनाश्री

अब मोहिं जानिये सो कीजै।
सुनि राधिका कहत माधौ यौं, जो बूझिये दंड सो लीजै॥
उर उर चाँपि, बाँधि भुज बंधन, नख नाराच मरम तकि दीजै।
भौंह चढ़ाइ, अधर दसननि डँसि, अधर सुधा अपनैं मुख पीजै।
अब जनि करि बिलंब भामिनी, सोइ करौ जिहिं गात पसीजै॥
ग्रंथि गुननि गहि गूढ़ गाँठि दै, छूटै न कबहूँ स्रम जल भीजै।
सुनि सखि सुमुखि पाइ लागनि हौं, नाहीं मान महारस छीजै॥
सूर सु जीवन सफल इसौं दिसि, बैरी बस करि जो जग जीजै॥
॥२८२३॥३४४१॥

राग गुंडमलार

रह्यौ दृढ़ मान बृषभानु-बारी।
टरै बरु स्वर्ग सुरपति सहित, सुरनि ज्यौं टरै कंचन-मेरु, उहिं निहारी॥
रैनि रबि उवै, बासर चंद होइ बरु, टरैं सब नखत, यह हठ भारी।
धरनि पलटै तजै सिंधु मरजाद कौं, सेस सिर टरै, नहिं मान नारी॥
बाँझ सुत जनै, उकठौ काठ पल्लवै, बिफल तरु फलै, बिनु मेघ पानी।
सूर-प्रभु बरु अचल होइ चल, चल थकै, मनहिं मन दूतिका कहति बानी॥
॥२८२४॥३४४२॥

राग कान्हरौ

दूती यह अनुमान करै।
स्यामौं कहौं, सुनै को मेरी, कैसैं रह्यौ परै॥

हरि पठई मोकौं आतुर करि, यह जिय सोच धरै।
कैसैं बचन कहौं या आगैं, यह अनुमानि डरै॥
चतुर चतुरई फबै न यासौं, सुनि रिस अतिहि भरै।
सूर स्याम कह्यौ सहज मनैयै, सो यह गहरु करै॥
॥२८२५॥३४४३॥

राग मलार॥

मानि मनायौ राधा प्यारी।
दहियत मदन मदन नायक है, पीर प्रीति की न्यारी॥
तू जु झुकति ही औरनि रूसत, अब कहि कैसैं रूसी।
बिनहीं सिसिर तमकि तामस तैं, तू मुख-कमल बिदूषी॥
सुनियत बिरद रूप-रस-नागरि, लीन्ही पलट कछू सी।
तेरैं हुती प्रेम-संपति सखि, सो संपति किहिं मूसी॥
इन तन चितै, आपु तन चितवहु, अहो रूप की रासी।
पिय अपनौ नहिं होइ तऊ, जो ईस सेइयै कासी॥
तू तौ प्रान प्रानवल्लभ कैं, वै तुव चरन उपासी।
सुनिहै कोऊ, चतुर नारि, कत करति प्रेम की हाँसी॥
ज्यौं ज्यौं मौन गही तुम, उनकैं बाढ़ी आतुरताई।
कान्ह आन-बनिता-रत, सुनि कै जिय पैठी निठुराई॥
हियैं कपाट जोरि जड़ता के, बोलति नहीं बुलाई।
हा राधा, राधा रट लागी, चित-चातकी-कन्हाई॥
जौ पै मान तौ भाँवरि नाहीं, भाँवरि मान न होई।
हिय तैं बाढ़ि प्रेम रितवति हौ, अंत भाव तौ सोई॥
जौ गोरी पिय नेह गरब तौ, लाख कहै किन कोई।
काहू लियौ प्रेम कौ परचौ, चतुर नारि है सोई॥
कत ह्वै रही नारि नीची करि, देखति लोचन फूले।
मानौ कुमुद रूठि उडुपति सौं, सकुचि अधोमुख फूले॥
वै तुव हित बृषभानु-नंदिनी, सेवत जमुना-कूले।
तेरैं तनक मान मोहन के, सबै सयानप भूले॥
अहो इंदु-बदनी सुनि सजनी, कत पलकनि पल जोरै।
तुव मुख-दरस-आस के प्यासे, हरि के नैन चकोरै॥
तेरैं बल भामिनी बदत नहि उपजत काम-हिलोरे।
कहियत हुते चतुर नागर ते, तनक मान भए भोरे॥

तब दूती फिरि गई स्याम पैं, स्याम उहाँ पग धरियै ।
जिहिं हठ तजै प्रान प्यारी सो, जतन सवारैं करियै ॥
वै वैसैं, तुम ऐसैं वैसे, कहौ काज क्यौं मरियै ।
कीजै कहा चाड़ अपनी कत, इहाँ मसूसनि मरियै ॥
अपनी चोप आप उठि आए, ह्वै रहे आगैं ठाढ़े ।
भूलि गयौ सब चतुर सयानप, हुते जो बहु गुन गाढ़े ॥
डोलत नहिं, बोलत न बुलाएँ, मनहुँ चित्र लिखि काढ़े ।
पर्‍यौ न काम नारि नागर सौं, हैं घरहीं के बाढ़े ॥

दूती-वचन राधा के प्रति

निबह्यौ सदा औरहीं को हठ यह जो प्रकृति तुम्हारी ।
आपुनहीं अधीन ह्वै ठाढे, देखि गोवर्धन - धारी ॥
प्रान प्रियहिं रूसनौ कहि कैसौ, सुनि वृषभानु-दुलारी ।
कहूँ न भई, सुनी नहिं देखी, रहे तरँग जल न्यारी ॥
रिस रूसनौ, मिलन पलकनि को, अति कुसुम-रँग जैसौ ।
रहै न सदा, छुटत छिनु भीतर, प्रात ओस कन तैसौ ॥
वे हैं परम मलीन किये मन, उठि कहि मोहन वैसो ।
घर आए आदर न चूकियै, बैठौ दूब अँचै सो ॥
वै तौ भँवर भावते वन के, और बेलि को तैसी ।
कीन्हौ मान मदन-मोहन सौं, कीन्ही बात अनैसी ॥
तुम जानहु कै लाल तुम्हारो, तुमहिं उनहिं है जैसी ।
याही तैं अति गर्व भरी हौ, वै ठाढे तुम वैसी ॥
जोवन जल वर्षा की सरि ज्यौं, चारि दिना कौं आवै ।
अत अवधि हीं लौं नातो जड़, कोटिक लहर उठावै ॥
वल्लभ को वल्लभ कौं मिलिबौ तुमहिं कौन समुझावै ।
लै चलि भवन भावतेहिं भुज गहि,को कहि गारि दिवावै ॥

राधा-वचन

झुकि बोली ह्याँ तें ह्वै द्दानी, कौनें सिखै पठाई ।
लै किनि जाहि भवन अपनें, ह्याँ लगन कौन सौं आई ॥
काँपति रिसनि, पीठि दै बैठी, सहचरि और बुलाई ।
कछु सीरी, कछु तातो बानी, कान्हहिं देत दुहाई ॥

कबहुँक लै धरि दर्पन मोहन, ह्वै रहै आगैं ठाढ़ौ।
पट अंतर नहिं चित्र निहारति, इतौ मान मन गाढ़ौ॥
तलफत फिरै, धरै नहिं धीरज, विरह अनल कौ डाढ़ौ।
इत नागरी उतहिं वै नागर, इन बातनि कौ चाढ़ौ॥

दूती-वचन

बड़ौ बड़ाई कौं प्रतिपालै, बड़ौ बड़ाई छीजै।
ताकै बड़ौ बड़ी सरनागत, बैर बड़े सौं कीजै॥
तू वृषभानु बड़े की बेटी, तेरे ज्याएँ जीजै।
जद्यपि बैर हिएँ मैं है री, बैरिहिं पीठि न दीजै॥
भामिनि और भुजंगिनि कारी, इनके विषहिं डरैयै।
रॉचेहू, विरचैं सुख नाहीं, भूलि न कबहुँ पत्यैयै॥
इनकैं बस मत परैं मनोहर, बहुत जतन करि पैयै।
कामी होइ काम आतुर तिहिं, कैसैं कै समझैयै॥
जे जे प्रेम छके मैं देखे, तिनहिं न चातुरताई।
तेरैं मान सयान सखी तोहिं, कैसैं कै समुझाई॥
परिहै क्रोध-चिनगि-भॉवरि मैं, बुझिहै नहीं बुझाई।
हौं जु कहति तैं बादि बावरी, तृन तैं आगि उठाई॥

दूती रूप में कृष्ण-वचन

बहुरै भए सहचरी मोहन, ताकि आपनी घातैं।
लागे कान सखी के धोखैं, कहत कुंज की बातैं॥
सुधि करि देखि हँसनौ उनकौ, जब खाई हा हा तैं।
आपु पीर पर पीर न जानति, भूली जोबन नातैं॥
कबहुँ न भयौ, सुन्यौ नहिं देख्यौ, तनु तैं प्रान अबोले।
होत कहा है आलसहूँ मिस, छिनु घूँघट-पट खोले॥
पावति कहा मान मैं तू री, कहॉ गँवावति बोले।
काल्हिहिं प्राननाथ तुम प्यारी, फिरिहौ कुंजनि डोले॥
कहा रही अति क्रोध हियैं धरि, नैकु न दया दयानी।
प्रगटे जानि, मदनमोहन सौं, बात घात अधिकानी॥
हिन की कहैं अनख लागति है, समुझहु भलैं सयानी।
मन की चोप मान कीजत कइ, थोरैं हीं गरबानी॥

रही मूँदि पट सौं हठि भामिनि नैकु न बदन उघारै।
हरि-हित-बचन रसाल, कठिन पाहन ज्यौं बूँद उतारै॥
धरे ग्रीव पट सन्मुख ठाढे, नैंकु न कोप निवारै।
जिहिं आधीन देव सुर नर मुनि, सो दीनता पुकारै॥
खन गावै खन बेनु बजावै, कमल-भृंग की नाईं।
खन पाँइनि तन हाथ पसारै, छुवन न पावै छाईं॥
खन हीं लेहि बलाइ बाम की, लालच करि ललचाईं।
कहै आन की आन सौंह दै, खन खन हा हा खाईं॥
कबहुँ निकट बैठि कुसुमावलि, अपनैं कर पहिरावै।
जोइ जोइ बात भावतिहि भावै, सोइ सोइ बात चलावै॥
जितहि-जितहि रुख करै लडैती, तितहीं आपु न आवै।
नाचत जाकैं डर त्रिभुवन, तिहिं नैंकुहुँ मान नचावै॥
जिन नैननि देखत दुख भूलै, ते दुख नैन समोवै।
जो मुख सकल सुखनि कौ दाता, सो मुख नेकु न जोवै॥
जिहिं ललाट त्रिभुवन कौ टीकौ, सो पाइनि तन मोवै।
राँचहि जाहि सनक अरु संकर, बिरुचे ताहि बिगोवै॥
एते मान भए बस मोहन, बोलत कटुक डराई।
दीपक प्रेम क्रोध मारुत छिनु, परसत जनि बुझि जाई॥
तातैं करि हरि छल दूती कौ, कहत बात सकुचाई।
कपटी कान्ह पत्याहि न राधे, तौ हिं बृषभानु दुहाई॥
पठई मोहि देइ उर माला, जहाँ कहूँ रतिमानी।
हौं बहराइ इतहि आई री, आली तोहिं डरानी॥
काहू कौं रसनौ बचौ है, मोसौं कही कहानी।
नवनागर पहिचानि राधिका, इहिं छल अधिक रिसानी॥
जानिय कहा कौन अपराधिनि आनि कान है लागी।
सुनि-सुनि उठी सुदर कैं जिय, प्रगट कोप की आगी॥
जद्यपि रसिक रसाल रसीली, प्रेम पियूषनि पागी।
कितौ दई सिख मत्र सवारैं, तउ हठ लहरि न भागी॥
कहियै कहा नदनदन सौं, जेमैं लाड लडाई।
कौन न भई मानिनी उनसौं, एतै मान मनाई॥

राधा-वचन

नव नागर तबहीँ पहिचानी, नागरि-नागरताई।
इन छँद बंदनि छंदै पैये, प्रेम न पायौ जाई॥
हारे बल अबला सौं मोहन, तजति न पानि कपोलै।
मानहुँ पाहन की प्रतिमा सी नैंकु न इत उत डोलै॥

दूती-वचन

इन घोसनि रूसनौ करति है, करिहै कबहि कलोलै?
कहा दियौ पढ़ि सीस स्याम कैं, खौंचि आपनौ सो लै॥
तोहिं हठ पर्‌यौ प्रानवल्लभ सौं, छूटत नहीं छुड़ायौ।
देखहु मुरछि पर्‌यौ मनमोहन, मनहुँ भुअंगिनि खायौ॥
काहे कौं अपराध लेति है, करति काम कौ भायौ।
नैंकु निरखि उठि कुँवरि राधिका, जौ चाहत है न्यायौ॥
बहुरौ लियौ जगाइ मनोहर, जुवतिनि जतन उपायौ।
बिरह ताप बर दाप हरन कौं, सरस सुगंध चढ़ायौ॥
जिते करै उपचार मनहु लै जरत माँझ घृत नायौ।
काम अग्नि तैं बिना कामिनी, कहि कौनैं सचु पायौ॥
जिनकैं हित तू त्रिभुवन गाई, ठकुराइनि करि पूजी।
जिनके अंग संग सुख बिलसति, बननायक ह्वै कूजी॥
अनुदिन-काम बिलास बिलासिनि, वै अलि तू अंबूजी।
ऐसैं पिय सौं मान करति है, तो सी मुग्ध न दूजी॥
मेरौ कह्यौ मानती नाहिंन, ह्याँ अरु कौन कहैगौ।
राखत मान तिहारौ मोहन, एतौ कौन सहैगौ॥
जानहुगी तब मानहुगी मन, तब तनु काम दहैगौ।
करिहौ मान मदनमोहन सौं, मानैं हाथ रहैगौ॥

राधा-वचन

नख लिखि कहौ जाहु तहँई उठि, जाकैं हाथ बिकाने।
राँचे रहत रैनि दिन माधव, हरद-चून ज्यौं साने॥
सुनत मेरौ ही मान मनावत, मन अनतहिं रुचि माने।
गावत लोग बिरद साँचोई, हरि हित कौन सिराने॥

कृष्ण-वचन

तुम मम तिलक, तुमहिं मम भूषन, तुमहिं प्रान धन मेरैं।
हौं सेवक सरनागत आयो, जानहु जतन घनेरैं॥
तेरी सौं वृषभानु-नंदिनी, एक गाँठि सो फेरैं।
हित सौं बैर, नेह अनहित सौं, इहै न्याउ है तेरैं॥

राधा-वचन

पर-धन-रमन, दमन दावागिनि, डोलनि कुंजनि माहीं।
चारन धेनु, फेन मथि पीवन, जीवन भयौ वृथाहीं॥
डासन काँस, कामरी ओढ़न, बैठन गोप-सभाहीं।
भूषन मोर-पखोवनि, मुरली, तिनकैं प्रेम कहाँ हीं॥

मोहन-वचन

प्रेम पतंग परे पावक मैं, प्रेम कुरंग बँधे से।
चातक रटै, चकोर न सोवै, मीन बिना जल जैसे॥
जहाँ प्रेम तहँ मान न मानिनि, प्रेम न गनियै ऐसे।
प्रेम माहिं जो करहिं रूसनो, तिनहिं प्रेम कहि कैसे?
काँपति रिसनि, पीठि दै बैठी, मनि माला तन हेरी।
निरखि आपु-आभास सयानी, बहुरि नैन रुख फेरी॥
लिये फिरत उर माँझ दुराए, जानत लोग अँधेरी।
एते मान भावती तो कत, मान मनावत मेरी॥
तेरी सौं आभास तिहारो, इहाँ और को नो है।
दै दरपन मनि धर्यौ पाइ तर, देखि दुहुनि मैं को है॥
बिनु अपराध दास कौं त्रासै, ठाकुर को मत मोहै।
निरखि-निरखि प्रतिबिंब वहै तन, नैन-नैन मिलि मोहै।
नैकु भौंह मुसुकात जानि, मनमोहन मन सुख आन्यौ।
मानौ दव द्रुम जरत आस भए, उनयौ अंबर पान्यौ॥
जो भाई सो सौंह दिवाई, तब सबै मन मान्यौ।
दियौ नगार हाथ अपनैं करि, तब हरि जीवन जान्यौ॥

राधा-माधव-मिलन

हँसि करि रायौ, चलो हरि कुंजनि, हौं आवति हौं पाछैं।
जो न पत्याहु जाहु मुरली धरि, हमहिं तुमहिं है साछैं॥

लकुटी, मुकुट, पीत उपरैना, लाल काछनी काछै।
गो दोहन की वेर जानि सँग, लिये वछरुवा आछै ॥
सघन कुंज अलि पुंज तहाँ हरि, किसलय सेज वनाई।
आतुर जानि मदनमोहन तन, काम-केलि, चलि आई ॥
हँसि गोपाल अंक भरि लीन्ही, मनहुँ रंक निधि पाई।
अति रस रीति प्रीति-पिय-प्यारी, छूटत नहीं छुटाई ॥
आलिंगन, चुंवन, परिरंभन, दियो सुरति रस पूरो।
छिटकि रहीं स्रम-बूँद वदन पर, अरु पाँइनि खुभि-चूरो ॥
मुख के पवन परस्पर सुखवत, गहे पानि पिय जूरो।
वुझन जानि मन्मथ-चिनगी फिरि, मानौ देत मरूरो ॥
आलस मगन, वदन कुम्हिलानौ, वाला निर्वल कीनी।
थकित जानि मनमोहन, भुज भरि तिया अंक गहि लीनी ॥
गोरे गात मनोहर उरजनि, लसति कंचुकी भीनी।
मनु मधु-कलस स्यामताई को, स्याम छाप सी दीनी ॥
इत नागरी नवल नागर उत, भिरे सुरति-रन दोऊ।
नैन-कटाच्छ वान, असि वर नख, वरषि सिराने वोऊ ॥
टूटे हार, कंचुकी दरकी, घायल मुरे न कोऊ।
प्रगट्यो तरनि वीच करिवे कौं लाज लजाने दोऊ ॥
इहिं डर रहत पितंवर ओढ़े, कहा कहौं चतुराई।
अव जनि कहै, हिये मैं को है, वहुरि परै कठिनाई ॥
भुर्यो काम, प्रेमहूँ भुर्यो, भुरई वैसभुराई।
पति अरु प्रिया प्रगट प्रतिविंवित, ज्यों दरपन मैं झाई ॥
कर जोरे विनती करै मोहन, कहौ पाँइ सिर नाऊँ।
तेरी सौं वृषभानु-नंदिनी, अनुदिन तुव गुन गाऊँ ॥
हौं सेवक निज प्रानप्रिया को, कहौ तौ पत्र लिखाऊँ।
अव जनि मान करो तुम मोसौं, यहै मौज करि पाऊँ ॥
हँसि करि उठि प्यारी उर लागी, मान मैं न दुख पायौ ?
तुम मन दियौ आनि वनिता तौ, मैं मन मान लगायौ ॥
ले वलाइ, उर लाइ अंक भरि, पछिलो दुख विसरायौ।
स्याम मान है प्रेम-कसौटी, प्रेमहिं मान सहायौ ॥
छूटे वंद, छुटीं अलकावलि, मरगजे नन के वागे।
अंजन अधर, भाल जावक रँग, पीक कपोलनि पागे ॥

बिनु गुन माल, पीठि गडे कंकन उपटि परे, उर लागे।
रसिक राधिका के सुख कौ सुख, बिलसे स्याम सभागे ॥
नवल गुपाल, नवेली राधा, नए नेह बस कीने।
प्राननाथ सौं प्रानपियारी, प्रान पलटि से लीने ॥
बिबिध बिलास-कला-रस की बिधि, उभय अग परबीने।
अति हित मानि मान तजि मानिनि, मनमोहन सुख दीने ॥
राधा कृष्ण केलि-कौतूहल, स्रवन सुनै, जो गावै।
तिनकै सदा समीप स्याम, नितहीं आनद बढावै ॥
कबहुँ न जाहिं जठर पातक, जिनकौं यह लीला भावै।
जीवन मुक्त सूर सो जग मैं, अत परम पद पावै ॥
॥२८२६॥३४४४॥

राग गुडमलार

राधिका बस्य करि स्याम पाए।
बिरह गयो दूरि, जिय हरष हरि कै भयौ, सहस मुख निगम जिहिं नेति गायौ ॥
मान तजि मानिनी मैन कौ बल हर्यौ, करत तनु कत जो त्रास भारी।
कोक बिद्या निपुन, स्याम स्यामा बिपुल, कुज - गृह - द्वार ठाढे मुरारी ॥
भक्त-हित हेत अवतारि लीला करत, रहत प्रभु तहाँ निजु ध्यान जाकैं।
प्रगट प्रभु सूर ब्रजनारि कैं हित बँधे देत मन-काम-फल संग ताकैं ॥
॥२८२७॥३४४५॥

दूसरी गुरु मान लीला *राग बिलावल*

सखिनि बृषभानु - किसोरी। चली न्हान प्रातहिं उठि गोरी ॥
जाकैं घर निसि बसे कन्हाई। ता घर ताहि बुलावन आई ॥
ठाढी भई द्वार पर जाई। कढे तहाँ तैं कुँवर कन्हाई ॥
औचक मिले न जानत कोऊ। रहे चकित इत उत तैं दोऊ ॥
फिरी सदन कौं तुरतहिं प्यारी। न्हान जान की सुरति बिसारी ॥
भई बिकल तन रिस अति बाढी। रहि गई सखी निरखि सब ठाढी ॥
रहि गए ठाढे स्याम ठगे से। सकुचाने उर सोच पगे से ॥

जब देखे हरि अति मुरझाए। तब सखियनि गहि भुज समुझाए॥
उलटि भईं सब हरि की बाईं। दै कै बाहँ तिया जहँ ल्याईं॥
देखी स्याम आइ जहँ राधा। बैठी मान दृढ़ाइ अगाधा॥
रिसही कैं रस मगन किसोरी। भई स्याम मति देखत भोरी॥
ठाढ़े चकित चित्त अकुलाहीं। मुख तैं बचन कहे नहिं जाहीं॥

ब्याकुल देखि नँदलाल कौं, सखियन कियो बिचार।
अब दोऊ जैसें मिलैं, करियै सो उपचार॥
अति रिस नारि अचेत, को सुनिहै कासौं कहैं।
इत ये धरत न चेत, परी रुठावन-बानि इन॥

प्यारी निकट गईं सब आली। ठाढ़े पौरि रहे बनमाली।
कहति मान कीन्हो तैं प्यारी। न्हान जान तैं फिरी कहा री॥
तोहिं लखत ही री गिरधारी। अतिहिं डरे तन-सुरति बिसारी॥
मुरछि परे धरनी अकुलाई। तरु तमाल जनु गयो झुराई॥
तैं ऐसें चितयो कछु बिनकौं। नेंकुहुँ चैन रह्यो नहिं तिनकौं॥
तेरे नैन अरी अनियारे। किधौं बान खरसान सँवारे॥
भौंह कमान तानि यौं मारे। क्यौं करि राखें प्रान पियारे॥
घायल जिमि मूर्छित गिरधारी। अमी-बचन अब सींचि पियारी॥
बहुनायक वे तू नहिं जानै। तिनसौं कहा इतो दुख मानै॥
बाहँ गहैं हरि कौं ढिग ल्यावैं। अब वै निज अपराध छमावैं॥
गहति बाहँ तुमही किन जाई। मोसौं बाहँ गहावन आई॥
कालिहहि सौंह मोहिं उनि दीनी। आजुहिं यह करनी पुनि कीनी॥

देखि चुकी उनके गुननि, निज नैननि सुख पाइ।
तिन्है मिलावति मोहिं अब, बाहँ गहावति आइ॥
मिलौं न तिनसौं भूल, अब जौलौं जीवन जियौं।
सहौं बिरह की सूल, बरु ताकी ज्वाला जरौं॥

मैं अब अपनें मन यह ठानी। उनकें पंथ न पीवौं पानी॥
कबहूँ नैंन न अंजन लाऊँ। मृगमद भूलि न अंग चढ़ाऊँ॥
हस्त-बलय पट नील न धारौं। नैननि कारे घन न निहारौं॥
सुनौं न स्रवननि अलि-पिक-बानी। नील जलज परसौं नहिं पानी॥
सुनत प्रिया की बात सुहाई। हरषत ठाढ़े पौरि कन्हाई॥
सखी कहति यौं हठ नहिं लीजै। हरि सौं ऐसो मान न कीजै॥
तू है नवल नवल गिरिधारी। यह जोबन है री दिन चारी॥

छिनु छिनु ज्यौं कर कौं जल छीजै। सुनि री याकौ गर्ब न कीजै॥
नँदनदन-मुख ससि सुखकारी। तू करि नैन चकोर पियारी॥
हुतौ प्रेम धन तौ यह भारी। सो अब कहि तैं कियौ कहा री॥
कहति हुती रूसौं नहिं कबहीं। सो अब रूसति है जब तबहीं॥
सुनिहै सुघर नारि जो कोई। करिहै हँसी प्रेम की सोई॥

मान कियौ जिहिं भावतैं, सो न भावतौ होइ।
उर तौ रितवत प्रेम कत, अंत भावतौ सोइ॥
लाख कहौ किनि कोइ, पिय सनेह जो गोइहै।
चतुर नारि है सोइ, लियौ प्रेम-परचौ किनहु॥

तुम वै एक न दोइ पियारी। जल तैं तरग होइ नहिं न्यारी॥
रिस-रूसनौ ओस-कन जैसो। सदा न रहै चाहियै तैसो॥
तजि अभिमान मिलहि पिय प्यारी। मानि राधिका कही हमारी॥
चुप न रहति कह करति मनावन। तुम आई हौ बात बनावन॥
बहुत सही घर आई यातैं। सुरति दिवावति पिछली बातैं॥
मोसौं बात कहति हौ काकी। जाहु घरनि अब कछु है बाकी॥
को उनकी ह्याँ बात चलावत। हैं वै अब तुमहीं कौं भावत॥
तुम पुनीत अरु वै अति पावन। आई हौ सब मोहिं मनावन॥
यह कहि रही रोप भरि भारी। गई सखी तब जहँ बनवारी॥
कह्यौ जाइ हरि सौं हरुवाई। आजु चतुरई कहाँ गँवाई॥
बिनु निज जंघनि चलहिं ललारे। कैसैं चहत कियौ सुख प्यारे॥
हौ मनमोहन तुम बहुनायक। नागर नवल सकल-गुन लायक॥
तब बोले हरि दोउ कर जोरी। तेरी सौं वृषभानु-किसोरी॥
तू ही हित चित जीवन मोकौं। सदा करत आराधन तोकौं॥
तू मम तिलक तुही आभूपन। पोपन तेरे वचन पियूपन॥
तेरोइ गुन मैं निसि दिन गाऊँ। अब तजि मान हृदय सुख पाऊँ॥
कर जोरे बिनती करि भाष्यौ। कहत सीस चरननि पर राख्यौ॥
यह सुनि कछु प्यारी मुसुक्यानी। तब बोली उठि सखी सयानी॥
सुनहु स्याम तुम हौ रस-सागर। रूप-सील-गुन-प्रीति-उजागर॥
तुम तैं प्रिया नैंकु नहिं न्यारी। एक प्रान द्वै देह तुम्हारी॥
प्यारी मैं तुम तुम मैं प्यारी। जैसै दरपन छाँह बिहारी॥
रस मैं परै बिरस जहँ आई। होइ परनि तहँ अति कठिनाई॥
अबकैं हम सब देति मनाई। परसौ प्यारी-चरन कन्हाई॥

अब रुठाइहौ जौ गिरिधारी। राम राम तौ बहुरि हमारी ॥
जब परसे प्यारी-चरन परम-प्रीति नँदनंद।
छुट्यौ मान हरषी प्रिया मिट्यो बिरह-दुख-द्वंद ॥
उर आनंद बढ़ाइ प्रेम-कसौटी कसि पियहिँ।
अवगुन मन बिसराइ मिली प्रिया उठि स्याम सौं ॥
हरषि मिले दोउ प्रीतम प्यारी। भई सखी सब निरखि सुखारी ॥
तब दोउ उबटि सखी अन्हवाए। रुचिर सिंगार सिँगारि बनाए ॥
मधुर मिष्ट भोजन मन भाए। दोउनि एकै थार जिमाए ॥
दिये पान अँचवन करवाए। सुमन-सुगंध-माल पहिराए ॥
लै बीरी अपनैं कर प्यारी। दीन्ही बिहँसि बदन गिरिधारी ॥
तबहिं सुफल हरि जीवन जान्यौ। परम हरष उर अंतर आन्यौ ॥
मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी। तब सखियनि आरती उतारी ॥
अति आनंद भरे दोउ राजैं। अरस परस निरखत छबि छाजैं ॥
पाए बस करि कुंजबिहारी। बिहँसि कह्यौ तब पिय सौं प्यारी ॥
सुनहु स्याम बरषा रितु आई। रचहु हिंडोरौ सुभ सुखदाई ॥
है मन पिय यह साध हमारैं। सब मिलि झूलहिं संग तुम्हारैं ॥
सुनि तिय बचन स्याम सुख पायौ। ऐसैं करि हरि मान छुड़ायौ ॥

छंद

तिय मान हरि ऐसैं छुड़ायौ भक्त हित लीला करी।
कहै निगम नेति अपार-गुन सुख सिंधु नट नागर हरी ॥
यह मान चरित पवित्र हरि कौ प्रेम सहित जु गावहीं।
सब करहि आदर मान तिनकौ संत जन सुख पावहीं ॥

दोहा

राधा रसिक गुपाल कौ कौतूहल रस-केलि।
ब्रजबासी प्रभु-जननि कौं सुखद काम तरु-बेलि ॥
सुफल जन्म है तासु, जे अनुदिन गावत सुनत।
तिनकौं सदा हुलासु, सूरदास-प्रभु की कृपा ॥
॥२८२८॥३४४६॥

झूलन राग मारू

वृंदावन स्यामलवन नारि संग सोहैं (जू)।
ठाढ़े नव कुंजनि तर, परम चतुर गिरिधर बर, राधा पति राधा
अरस परस मोहैं (जू) ॥

राग राज्ञी मलार

नीप-छाहँ जमुन-तीर, ब्रज-ललना-सुभग भीर, पहिरे-अँग विविध चीर, नव सत सब साजे।
बार-बार पुनि विनय करति, मुख निरखति पाँइ परति, पुनि पुनि कर धरति, हरति पिय के मन काजे॥
बिहँसति प्यारी समीप, घन-दामिनि-संग-रूप, कंठ गहति कहति कंत, झूलन की साधा।
जमुन-पुलिन अति पुनीत, पिय इहाँ हिँडोर रचौ, सूरज-प्रभु हँसत कहति ब्रज-तरुनी राधा॥
॥२८२९॥३४४७॥

हिंडोर हरि सँग झूलिये (हो) अरु पिय कौ देहि झुलाइ।
गई बीति ग्रीषम सरद-हित रितु, सरस बरषा आइ॥
अब यहै साध पुरावहू हो, सुनहु त्रिभुवन-राइ।
गोपांगना गोपाल जू सौं, कहति गहि-गहि पाइ॥
अब गढ़नहार हिंडोरना कौ, ताहि लेहु बुलाइ।
हम रमकि हिंडोरै चढ़ैं, अरु तुमहिं देहु झुलाइ॥
बन बननि कोकिल कंठ निरखति, करत दादुर सोर।
घन घटा कारी, स्वेत बग-पंगति, निरखि नभ ओर॥
तैसीयै दमकति दामिनी, तैसोइ अंबर घोर।
तैसोइ रटत पपीहरा, तैसोइ बोलत मोर॥
तैसीयै हरियरि भूमि बिलसति होति नहिँ रुचि थोरि।
तैसीयै रंग सुरंग बिधि-बधु लेति है चिन चोरि॥
तैसीयै नन्ही बूँद बरषति, झमकि झमकि झकोरि।
तैसीयै भरि सरिता सरोवर, उमँगि चली मिति फोरि॥
सुनि विनय श्रीपति बिहसि, बोले बिसकरमा सुत-धारि।
खचि खंभ कंचन के रुचिर, रचि रजत मरुव मयारि॥
पटुली लगे नग नाग बहु रँग, बनी डाँडी चारि।
भँवरा भँवैं भजि केलि भूले, नगर-नागर-नारि॥
सब पहिरि चुनि-चुनि चीर, चुहि चुहि चूनरी बहुरंग।
कटि नील लहँगा, लाल चोली, उबटि केसरि अंग॥
नवसात सजि नई नागरी, चली झुंड-झुंडनि संग।
मुख-स्याम पूरन-चंद कौं, मनु उमँगि उदधि तरंग॥

तहँ त्रिविध मंद सुगंध सीतल, पवन गवन सुभाइ।
उर उड़त अंचल उघरि मुख, मिलि नैन-नैन ललाइ॥
तैसोइ जमुना पुलिन परम पुनीत, सब सुखदाइ।
तैसियै गोपी कंठ गावतिँ, मोहि मोहनराइ॥
गिरिराज धारन गोपिकनि मिलि, करत कौतुक केलि।
भूलत झुलावत, कंठ लावत, बढ़ी आनँद-बेलि॥
कबहूँक रहसत, मचकि, लै-लै एक-एक सहेलि।
झकझोरि झमकतिँ, डरति प्यारी, पिया अंकम मेलि॥
तिहिँ समय सकुचि मनोज तकि छबि जक्यौ धनु सर डारि।
अंबर बिमाननि सुमन बरषत, हरषि सुर सँग नारि॥
मोहे सुगन गंधर्ब किन्नर, रहे लोक बिसारि।
सुनि सूर स्याम सुजान सुंदर, सबनि के हितकारि॥

॥२८३०॥३४४८॥

राग सारंग

सुरँग हिंडोरना माई, झूलत स्यामा स्याम।
द्वै खंभ बिसकर्मा बनाए, काम-कुंद चढ़ाइ॥
हरित चूनी, जटित नग सब, लाल हीरा लाइ।
बहुत बिद्रुम, बहुत मुक्ता, ललित लटके कोर॥
बहुरंग रेसम-बरुहा, होत राग झकोर।
स्याम स्यामा संग झूलत, सखी देतिँ झुलाइ॥
सबै सरस सिँगार कीने, रूप बरनि न जाइ।
लाल सारी नील लहँगा, स्वेत अँगिया अंग॥
रोम-अवली मनौ जमुना, त्रिबलि तरल तरंग।
कहूँ जूथनि जुवति ठाढ़ीँ, कहूँ ठाढ़े ग्वाल॥
कहूँ तरुनी गीत गावैँ, कहुँ करैँ सब ख्याल।
कहूँ दादुर, कहूँ पपिहा, कहूँ बोलैँ मोर॥
चकित चितै चकोर रहि गए, देखि री इहिँ ओर।
दसन दाड़िम दमक बिकसी, हँसी जब मुसुकाइ॥
दमकि दामिनि निरखि लज्जित, गई बहुरि छिपाइ।
मीन खंजन कंज मानौ, उड़त नाहिँ न भौंर॥
बिंब कैं ढिग कीर बैठे, गहत नाहिंन ठौर॥

देखि सखी उरोज-कंचन, संभु धरे बनाइ।
नाहिँ श्रीफल सुदरी कैँ, कमल-कली सुहाइ॥
बीच मुकुता-हार जनु, सुरसरी उतरी धाइ।
वार चकई, पार चकवा, दिनहुँ मिलत न आइ॥
लंक कह्यौ न जाइ सखि री. अग देखि बिचारि।
भृंग भ्रमि भ्रमि बन गयौ, कढ़ि गयौ केहरि हारि॥
चाल देखि मराल लज्जित, गए सर तजि गेह।
मानि कै अपमान, गज सिर अजहुँ डारत खेह॥
राग रागिनि मेलि गावैँ, सुघर गुड मलार।
सुही, सारँग, टोडी, भैरव, सोरठी, केदार॥
मालवाई राग गौरी अरु असावरि राग।
कान्हरौ, हिँडोल कौतुक, तान बहु बिधि लाग॥
देखि सखि री एक अचरज, राहु ससि इक ठौर।
उलटत अचल लटकै बेनी, दपट झपटै मोर॥
कनक जटित जराइ बीरे, कवि जु उपमा पाइ।
सूर ससि द्वै एक ब्रज मैँ, उगे मानौ आइ॥
।२८३१॥३४४९॥

राग मलार

जमुना-पुलिनहिँ रच्यौ, रंग सुरग हिँडोलनौ।
रमत राम स्याम सँग ब्रज-बालक, सुख पावत हँसि बोलनौ॥
द्वै खभ कचन के मनोहर, रत्ननि जटित सुहावनौ।
पटुली बिच-बिच बिद्रुम लागे, हीरा लाल खचावनौ॥
सुदर डाँडि चुनी बहु लायौ, कोटिक मदन लजावनौ।
मरुव मयारि पिरोजा लटकत, सुदर सुढर ढरावनौ॥
मोतिनि झालरि झुमका राजत, बिच नीलम बहु भावनौ।
पँच रँग पाट कनक मिलि डोरी, अतिही सुघर बनावनौ॥
स्फटिक सिंहासन मध्य बिराजत, हाटक सहित सजावनौ।
हीरा-लाल-प्रबालनि पगति, बहु मनि पचित पचावनौ॥
मानौँ सुर-पुर तैँ तिहिँ सुरपति, पठइ जु दियौ पठावनौ।
बिसकर्मा सुतहार श्रुती धरि, सुरलभ सिलप दिखावनौ॥
तिहिँ देखेँ त्रिताप तन नासै, ब्रज-बधूनि मन भावनौ।
स्यामा नवसत सजि सखि लै, कियौ बरसाने तैँ आवनौ॥

जब आवत बलरामहिं देख्यौ, मधु मंगल तन हेरनौ।
तब मधुमंगल कही ग्वाल सौं, गैया है भैया फेरनौ॥
उठे सँकर्षन करी सृंग बेनु धुनि, धौरी कजरी टेरनौ।
गैया गई बगराइ सघन बन, बंसी बट-तट घेरनौ॥
पहिरे चीर सुरंग सारी, चुह चुह चूनरि बहु रंगनौ।
नील लहँगा लाल चोली कसि, केसरि अंग सुरंगनौ॥
नवसत साजि सिँगार नागरी, मनिमय भूपन मंगनौ।
सादर मुख गोपाल लाल कौ, चित चकोर रस संगनौ॥
स्यामा स्याम मिले ललितादिहिं, सुख पावत मनमोहनौ।
गावत राग मलार रागिनी गिरिधरन-लाल-छवि सोहनौ॥
पंच रंग बर पाट-पवित्रा, बिच बिच फोंदा गोहनौ।
नाचति सखी सँगीत परस्पर, पहिरि पवित्रा सोहनौ॥
माथैं मोर चंद्रिका राजै, बैजंती माल प्रसावनौ।
कुंडल लोल कपोलनि ढिग, मनु रवि-परकास करावनौ॥
अधर अरुन-छवि बज्र दंत दुति, ससि गुन रूप समावनौ।
मनिमय भूपन कँठ मुक्तावलि, कोटि अनंग लजावनौ॥
सखी हरपि वृपभानु नंदिनी, झूलै सँग नँदलालनौ।
मनिमय नूपुर कुनित किंकिनी, कल कंकन झनकारनौ॥
ललिता बिसाखा वृज-बधू झुलावैं, सुरुचि सार कौ सारनौ।
गौर स्याम मिलि नील-पीत छवि, घन दामिनि संचारनौ॥
नान्ही-नान्ही बूँदनि बरपै, मधुर मधुर धुनि घोरनौ।
तैसिहि हरी-हरी भूमि सुहावनि मोर-सुख नहिं थोरनौ॥
जहँ त्रिबिधि मंद सुगंध सीतल, पवन सु गवन सुहावनौ।
तहँ उठत बिहरत सुवास बहु, उड़त मधुप गन भावनौ॥
चढ़ि बिमान सुर सुमन जु बरपैं, जै-जै-धुनि नभ पावनौ।
स्यामा स्याम बिहार वृँदावन, सुर-ललना ललचावनौ॥
सुक सेप सारद नारदादिक, बिधि सिव ध्यान न पावनौ।
सूरज स्याम प्रेम हिय उमग्यौ, हरि-जस-लीला गावनौ॥
॥२८३२॥३४५०॥

राग गुंड मलार

हिँडोरनौ (माई) झूलत गोकुल चंद।
संग राधा परम सुंदरि, सखनि करत अनंद॥

द्वै खंभ कंचन के मनोहर, रतन जटित सुरंग।
चारि डाँड़ी परम सुंदर, निरखि लजत अनंग॥
पटुली पिरोजा लाल लटकत, झूमका बहु रंग।
मरुवे सौं मानिक चुनी लागी, बीच हीर तरंग॥
कल्पद्रुम-तर छाहँ सीतल, त्रिविध बहति समीर।
बर लता लटकतिं भार कुसुमनि, परसि जमुना नीर॥
हंस, मोर, चकोर, चातक, कोकिला, अलि, कीर।
नव नेह नवल किसोर राधा, नवल गिरिधर धीर॥
ललिता बिसाखा देहिं झोंटा, रीझि अंग न माति।
अति लाडिली सुकुमारि डरपति स्याम उर लपटाति॥
गौर स्यामल अंग मिलि दोउ, भए एकहिं भाँति।
नील-पीत-दुकूल दुति, घन दामिनी दुरि जाति॥
कुंज पुंज झुलाइ झूलति, सहचरी चहुँ ओर।
मनो कुमुदिनि कमल फूले, निरखि जुगल किसोर॥
ब्रज-बधू तृन तोरि डारतिं, देतिं प्रान अँकोर।
जन सूर कौं ब्रज-बास दीजै, नवल नंद किसोर॥
॥२८३३॥३४५१॥

राग राजी श्रीहठी

हिंडोरैं झूलत स्यामा स्याम।
ब्रज-जुवती मंडली चहूँघा निरखत बिथकित काम॥
कोउ गावति, कोउ हरषि झुलावति, सब पुरवतिं मन साध।
कोउ सँग मचति, कहति कोउ मचिहौं उपज्यौ रूप अगाध॥
कोउ डरपति, हा हा करि बिनवति प्यारी अंकम लाइ।
गाढ़ैं गहति पियहिं अपनैं भुज, पुलकत अंग डराइ॥
अब जनि मचौ पाइ लागति हौं, मोकौं देहु उतारि।
यह सुनि हँसत मचत अति गिरिधर, डरत देखि अति नारि॥
प्यारी टेरि कहति ललिता सौं, मेरी सौं गहि राखि।
सूर हँसतिं ललिता चंद्रावलि, कहा कहति प्रिय भाखि॥
॥२८३४॥३४५२॥

राग राजी रामगिरी

हिंडोरा (माई) झूलत हैं गोपाल।
संग राधा परम सुंदरि, चहूँघा ब्रज बाल॥

सुभग - जमुना - पुलिन मोहन, रच्यौ रुचिर हिंडोर।
लाल डाँड़ी फटिक पटुली, मनिनि मरुवा धौर॥
भँवरा मयारिहिँ नीलमनि, खँचे पाँति अपार।
सरल कंचन-खंभ सुंदर, रच्यौ काम सुतार॥
भाँति-भाँतिनि पहिरि सारी, तरुनि नव सत अंग।
सुंदरी वृषभानु - तनया, नैन चपल कुरंग॥
हँसति पिय सँग लेति झूमक लसति स्यामल गात।
मनौ घन मैं दामिनी छवि, अंग मैं लपटात॥
कबहुँ पुलकति, कबहुँ डरपति, कबहुँ निरखति नारि।
सूर-प्रभु के संग कौ सुख, बरनि कापैं जाइ।
अमर बरषत सुमन अंबर, विविध अस्तुति गाइ॥

॥२८३५॥३४५३॥

राग राग़ी मलार

जमुना-पुलिन रच्यौ हिंडोर।
घोष-ललना संग तरुनी, तरुन नंद-किसोर॥
एक सँग लै मचति मोहन, एक देति झुलाइ।
एक निरखति अंग-माधुरि, इक उठति कछु गाइ॥
स्याम सुंदर गोपिका - गन, रहीं घेरि बनाइ।
मनु जलद कौं दामिनी गन, चहत लेन लुकाइ॥
नारि सँग बनवारि गावत, कोकिला छवि थोर।
डुलत झूलत मुकुट सिर पर, मनौ नृत्यत मोर॥
सुभग मुख दुहुँ पास कुंडल, निरखि जुवती भोर।
चक्रवाक चकोर लोचन, करि रहीं हरि ओर॥
थकित सुर ललना-सहित नभ, निरखि स्याम-विहार।
हरषि सुमन अपार बरषत, मुखहिं जै-जैकार॥
करत मन-मन यहै बांछा, भए न बन द्रुम डार।
देह धरि प्रभु-सूर विलसत, ब्रह्म-पूरन सार॥

॥२८३६॥३४५४॥

राग केदारौ

हिंडोरनैं हरि सँग झूलन आई।
पँचरंग-बरन पाट की डाँड़ी, अतिहीं सौंज बनाई॥

झूलति जुवती नंद-लालन-सँग, एक बर्स इकठाई ।
सूरदास प्रभु मोहन नागर, आपुन झूलि झुलाई ॥
॥२८३७॥३४५५॥

राग ईमन

झूलन आई रंग हिंडोरैं ।
पँचरँग-बरन कुसुमी सारी, कंचुकि सौं बँध बोरैं ॥
मुकुता-माल ग्रीव लर छूटी, छबि की उठति झकोरैं ।
सूरदास-प्रभु-मन हरि लीन्हौ, चपल नैन की कोरैं ॥
॥२८३८॥३४५६॥

राग बिहागरौ

ललना झूलैं हिंडोरैं सोभा तनु गोरैं ।
नील पीत पट घन दामिनी कौ ओरैं ॥
सोभा सिंधु मन बोरैं गोपी चहुँ ओरैं ।
नैननि नैन जोरैं झूलैं थोरैं थोरैं ॥
पवन गवन आवै सौंधे की झकोरैं ।
तन मन वारैं या छबि पर तृन तोरैं ।
सूर-प्रभु चित चोरैं नैकु अँग मोरैं ।
सुनि मुरलि बोरैं सुर-बधू सीस ढोरैं ॥
॥२८३९॥३४५७॥

राग मलार

झूलत स्याम स्यामा संग ।
निरखि दंपति अंग सोभा लजत कोटि अनंग ॥
मंद त्रिबिध समीर सीतल, अंग अंग सुगंध ।
मचत उडत सुबास सँग, मन रहे मधुकर बंध ॥
तैसियै जमुना सुभग जहँ, रच्यौ रंग हिंडोल ।
तैसियै ब्रज-बधू बनि, हरि चितै लोचन कोर ॥
तसोई वृंदा-बिपिन-घन-कुंज द्वार-बिहार ।
बिपुल गोपी, बिपुल बन गृह, रवन नंदकुमार ॥
नित्य लीला, नित्य आनँद, नित्य मंगल गान ।
सूर सुर मुनि मुखनि अस्तुति, धन्य गोपी कान्ह ॥
॥२८४०॥३४५८॥

राग मलार

(हिंडोरैं) हरि सँग झुलहिं घोष कुमारि।
ब्रज-वधू विधि क्यौं न कीन्हीं, कहति सब सुर-नारि॥
मरुआ लगे नग ललित लीला, सुविधि सिलप सँवारि।
वज्र कीलैं लगीं सुठि, सुभग सोभा कारि॥
खंभ जंबू नग सु विद्रुम रची रुचिर मयारि।
मनु सुता रवि कौं दिखावति, भुजा जुगल पसारि॥
मनि लाल मानिक जटित भँवरा, सुरँग रंग-रसार।
सुक, सेस, नारद, सारदा, उपमा कहै को पार॥
डाँड़ी खची पचि पाचि मरकतमय, सुपाँति सुढार।
मनु उवत रवि रथ तैं धँसी, जमुना धरे त्रिविधार॥
त्रिविधार धारा धँसी अध कौं, स्फटिक-पटुली-संग।
वहि निकसि तिरछी बीच ह्वै मिली, गगन तैं जनु गंग॥
ढिग जरित भरि मंजीर इत उत, चरन पंकज-रंग।
प्रतिबिंब झलमल झलक मनु सरसुती आनि त्रिनंग॥
बन महल के द्वारैं रच्यो, नव रंग रग-हिंडोर।
मनु कोटि-मनमथ-मोद मोहन तरुनि तरुन किसोर॥
बदन-नन चितचोरि चितवत झलक लोचन-कोर।
सरद बिधु मधु लुब्ध मनु उड़ि मिलत तहाँ चकोर॥
उड़ि मिलत तहाँ चकोर अति छवि, ललित चलित सुबैनि।
मनहुँ अंबुज-बास कौं सँग, मिलित मधुकर स्रैनि॥
झमकि झूमक लेति दै, दुमची मचै रुचि कैन।
गावति सुकंठ सुराग नागरि, गिरिधरैं जति लैन॥
कनक नूपुर, कुनित कंकन, किंकिनी झनकार।
तहँ कुँवरि वृषभानु कैं सँग, सौहैं नंदकुमार॥
नील पीत दुकूल स्यामल-गौर-अंग-विकार।
मनहु नौतन घन-घटा मैं, तड़ित तरल-अकार॥
अनिमेष दृग दिये देखहीं सुख मंडली वर नारि।
मानहु सिंगार नवीन-तरु प्रति रची कंचन वारि॥
हँसि हाव भाव कटाच्छ, घूँघट गिरत लेति सम्हारि।
मन-हरन सुनि सोभा सु लै, रति काम डारत वारि॥

अध उरध झमकि झकोर इत उत, झलक मोतिनि माल।
रितु समै सावन जानि मनु बग-पाँति, उड़ति बिसाल॥
श्री सीसफूल, अमोल तरिवन, तिलक सुंदर भाल।
सारी सुरँग मिलि नील लहँगा, सोभा कंचुकि लाल॥
मन मुदित मोदित मानिनी मुख, माधुरी मुसुकानि।
ढरहरति ढरति हिंडोर डाँडी, डरति धरि दुहुँ पानि॥
उर उड़त अंचल-छोर-छबि, दुति-पीत-पट फहरानि।
कहै सूर सो उपमा नहीं कहुँ, नेति निगमहु गानि॥
॥२८४१॥३४५९॥

राग मलार

गोपी गोबिंद कौं हिंडोरैं झूलन आइ।
रँग महल मैं जहँ नंदरानी, खेलैं तीज सुहाइ॥
श्रीखंड खंभ मयारि सहित, सुसमर मरुव बनाइ।
तापर कितिक जु भ्रमत भँवरा, डाँडी जटित जराइ॥
सुठि हेम पटुली मध्य हीरा, पूलि रोचन लाइ।
सखी बिबिध बिचित्र राग मलार मंगल गाइ॥
नँदलाल पावस-काल, दामिनि नागरी नव संग।
बोलत जु दादुर अरु पपीहा, करत कोकिल रंग॥
तहँ बर्हि निर्तत बचन मुखरित, अलि चकोर बिहंग।
बलभद्र सहित गुपाल झूलत, राधिका अरधंग॥
जल भरित सरवर, सघन तरुवर, इंद्र-धनुष सुदेस।
घन स्याम मध्य सुपेद बग जुरि, हरित मही चहुँदेस॥
तहँ गगन गरजत, बीजु तरपत, मधुर मेह असेस।
झूलत बिट्ठल स्याम स्यामा, सीस मुकुलित केस॥
ताटंक तिलक सुदेस झलकत, रचित चूनी लाल।
नव छकन बिकुन बदन प्रहसित, कमल नयन बिसाल॥
करज मुद्रिका किंकिनी कटि, चाल गज गति बाल।
सूर सुर रिपु संग रंग, सखी सहित गुपाल॥
॥२८४२॥३४६०॥

बसंत-लीला *राग बिलावल*

नित्य धाम बृंदाबन स्याम। नित्य रूप राधा ब्रज-बाम॥

नित्य रास, जल नित्य विहार। नित्य मान, खंडिताऽभिसार ॥
ब्रह्म रूप येई करतार। करन हरन त्रिभुवन येइ सार ॥
नित्य कुंज-सुख नित्य हिंडोर। नित्यहिँ त्रिविध-समीर झकोर ॥
सदा वसंत रहत जहँ वास। सदा हर्ष, जहँ नहीँ उदास ॥
कोकिल कीर सदा तहँ रोर। सदा रूप मन्मथ चित-चोर ॥
विविध सुमन घन फूले डार। उन्मत मधुकर भ्रमत अपार ॥
नव पल्लव घन सोभा एक। विहरत हरि सँग सखी अनेक ॥
कुहू कुहू कोकिला सुनाई। सुनि सुनि नारि परम हरषाईँ ॥
बार बार सो हरिहिँ सुनावतिँ। ऋतु वसंत आयौ समुझावतिँ ॥
फागु-चरित-रस साध हमारेँ। खेलहिं सब मिलि संग तुम्हारेँ ॥
सुनि सुनि सूर स्याम मुसुकाने। ऋतु वसंत आयौ हरखाने ॥
॥२८४३॥३४६१॥

राग वसंत

राधे जू आजु बन्यौ वसंत।
मनहुँ मदन-विनोद विहरत, नागरी-नवकंत ॥
मिलत सनमुख पटल पाटल भरति मानहि जुही।
वेलि प्रथम-समाज-कारन, मेदिनी कंचन गुही ॥
केतकी कुच-कलस-कंचन, गरे कंचुकि कसी।
मालती मद-चलित लोचन, निरखि मुख मृदु हँसी ॥
विरह-ब्याकुल मेदिनी कुल, भई वदन विकास।
पवन-परिमल सहचरी, पिक-गान हृदय हुलास ॥
उत सखा चंपक चतुर अति, कुंद मनु तन-माल।
मधुप मनि-माला मनोहर, सूर श्री गोपाल ॥
॥२८४४॥३४६२॥

राग वसंत

ऐसौ पत्र पठायौ वसंत। तजहु मान मानिनी तुरंत ॥
कागद नव दल अंबनि पाय। देति कमल ममि भँवर सुगात ॥
लेखिनि काम बान कै चाप। लिखि अनंग कसि दीन्ही छाप ॥
मलयानिल चर पठयौ विचारि। बाँचत सुक पिक सुनि सब नारि ॥
सूरदास क्यौँ होइ आन। भजि हरि गोपी तजहु सयान ॥
॥२८४५॥३४६३॥

राग बसंत

वेगि चलहु, प्रिय चतुर सयानी।
समय-बसंत बिपिन रथ-हय-गज, मदन सुभट नृप फौज पलानी॥
चहूँ दिसा चाँदनी, चमू चलि मनहुँ धवल सोइ धूरि उडानी।
सोरह कला छपाकर की छबि सोभित मनहुँ छत्र सिर तानी॥
बोलत-हँसत चपल बंदीजन मनहुँ प्रसंसत पिक बर बानी।
धीर समीर रटत बन अलि-गन, मनहुँ काम कर मुरलि सुठानी॥
कुसुम-सरासन बान बिराजत, मनहुँ मान-गढ़ अनु-अनु भानी।
सूरदास प्रभु की वेई गति, करहु सहाइ राधिका रानी॥
॥२८४६॥३४६४॥

राग बसंत

देखौ बृंदावन कमल नैन। मनु आयौ मदन गुन गुदरि दैन॥
भए नव द्रुम सुमन अनेक रंग। प्रति ललित लता सकुलित संग॥
कर धरे धनुष कटि कसि निषंग। मनु बने सुभट सजि कवच अंग॥
जहँ नव सुमन्न बहै मलय बात। अति राजत रुचिर बिलोल पात॥
धपि धाइ धरत मनु तुरे गात। गति तेज बसन बाने उडात॥
कोकिल कूजत कल हंस मोर। रथ सैल सिला पद चर चकोर॥
घर ध्वज पताक तरु तार केरि। निर्झर निसान डफ भवर भेरि॥
सुनि सूरदास इमि बदत बाल। करि काम कृपन सिव क्रोध काल॥
हँसि चितै चारु लोचन बिसाल। तिहिं अपनैं करि थपियै गुपाल॥
॥२८४७॥३४६५॥

राग बसंत

कोकिल बोली, बन बन फूले, मधुप गुँजारन लागे।
सुनि भयौ भोर, रोर बंदिनि कौ, मदन-महीपति जागे॥
ते दूने अंकुर द्रुम पल्लव जे पहिले दव दागे।
मानहुँ रति, पति रीझि जाचकनि, बरन बरन दए बागे॥
नई प्रीति, नई लता, पुहुप नए, नयन नए रस पागे।
नए नेह नव नागरि हरषित सूर सुरँग अनुरागे॥
॥२८४८॥३४६६॥

राग बसंत

देखौ बृंदावन खेलहिं गोपाल। सब बनि ठनि आईं ब्रज की बाल॥

नव वल्ली सुंदर नव नव तमाल। नव कमल महा नव नव रसाल॥
अपनैं कर सुंदर रचित माल। अवलंबित नागर नंदलाल॥
नव केसरि-अरगजा घोरि। छिरकति नागर कहँ नव किसोरि॥
नव-गोप वधू राजहीं संग। गज-मोतिनि सुंदर लसति मंग॥
गोपी गुवाल सुंदर सुदेस। छिरकत सुगंध भए ललित भेस॥
श्री नंद-नंदन कैं भुव विलास। आनंदित गावत सूरदास॥
॥२८४९॥३४६७॥

राग वसंत

पिय देखौ वन छवि निहारि। वार-वार यह कहति नारि॥
नव पल्लव वहु सुमन रंग। द्रुम-वेली-तनु भयौ अनंग॥
भँवरा भँवरी भ्रमत संग। जमुन करति नाना तरंग॥
त्रिविध पवन मन हरष दैन। सदा वहत नहिं रहत चैन॥
सूरज-प्रभु करि तुरत गैन। चले नारि-मन सुखद-मैन॥
॥२८५०॥३४६८॥

राग वसंत

आयौ आयौ पिय ऋतु वसंत। दंपति मन सुख विरह अंत॥
फागु खेलावहु संग कंत। हा हा करि तृन गहति दंत॥
तुरत गए हरि लै मनाइ। हरपि मिले उर कंठ लाइ॥
दुख डार्यौ तुरतहिं भुलाइ। सो सुख दुहुँ कैं उर न माइ॥
रितु वसंत आगमन जानि। नारिन राखी मान-वानि॥
सूरदास-प्रभु मिले आनि। रस राख्यौ रति रंग ठानि॥
॥२८५१॥३४६९॥

राग वसंत

आयौ जान्यौ हरि वसंत। ललना सुख दीन्हौ तुरंत॥
फूले वननि सुमन पलास। ऋतु नायक सुख कौ विलास॥
संग नारि चहुँ-आस पास। मुरली अंमृत करति भास॥
स्यामा स्याम विलास एक। सुखदायक गोपी अनेक॥
तजत नहीं काहू छनेक। अकल निरंजन विविध भेष॥
फाग-रंग-रस करत स्याम। जुवतिनि पूरन करन काम॥
धासरहूँ सुख दैन जाम। सूर स्याम प्रभु निकट-वाम॥
॥२८५२॥३४७०॥

राग बसंत

देखत बन ब्रजनाथ आजु, अति उपजत है अनुराग।
मानहुँ मदन बसंत मिले दोउ, खेलत फूले फाग॥
झाँझ झिल्ली निर्झर निसान डफ, भेरि भँवर-गुंजार।
मानहुँ मदन मंडली रचि पुर-बीथिनि बिपिन बिहार॥
द्रुम-गन-मध्य पलास मंजरी, उदित अगिनि की नाईं।
अपनैं अपनैं मेरनि मानौ, होरी हरषि लगाईं॥
केकी, कोक, कपोत और खग, करत कुलाहल भारी।
मानहुँ लै लै नाउँ परस्पर, देत दिवावत गारी॥
कुंज-कुंज प्रति कोकिल कूजति, अति रस बिमल बढ़ी।
मनु कुल बधू निलज भईं, गृह-गृह गावतिं अटनि चढ़ी॥
प्रफुलित लता जहाँ जहँ देखत तहाँ तहाँ अलि जात।
मानहुँ बिट सबहिनि अवलोकत, परसत गनिका गात॥
लीन्हे पुहुप-पराग पवन कर, क्रीडत चहुँ दिसि धाइ।
रस अनरस संजोगिनि बिरहिनि, भरि छाँडत मन भाइ॥
बहु बिधि सुमन अनेक रंग छबि, उत्तम भाँति धरे।
मनु रति-नाथ हाथ सौं सबहीं, लै लै रंग भरे॥
और कहाँ लगि कहौं रूप निधि, बृंदा-बिपिन बिराज।
सूरदास-प्रभु सब सुख क्रीडत, स्याम तुम्हारे राज॥

॥२८५३॥३४७१॥

राग बसंत

सुंदर बर सँग ललना बिहरति, बसँत सरस ऋतु आई।
लै लै छरी कुमारि राधिका, कमलनैन पर धाई॥
सरिता सीतल बहति मंद गति, रबि उत्तर दिसि आयौ।
अति रस-भरी कोकिला बोली, बिरहिनि बिरह जगायौ॥
द्वादस बन रतनारे देखियत, चहुँ दिसि टेसू फूले।
मौरे अँबुआ अरु द्रुम बेली, मधुकर परिमल-भूले॥
इत श्री राधा उत श्री गिरिवर, इत गोपी उत ग्वाल।
खेलत फागु रसिक ब्रज बनिता, सुंदर स्याम तमाल॥
चोवा चंदन अबिर कुमकुमा छिरकत भरि पिचकारी।
उडत गुलाल अबीर, जोति रबि दिसि दीपक उजियारी॥

ताल मृदंग बीन, बाँसुरी डफ, गावत गीत सुहाए।
रसिक गुपाल नवल-ब्रज वनिता, निकसि चौहटैं आए॥
झूम झूम झूमक सब गावतिं, बोलतिं मधुरी बानी।
देतिं परस्पर गारि मुदित मन, तरुनी बाल सयानी॥
सुर-पुर-नर-पुर नाग-लोक, जल थल क्रीड़ा-सुख पावै।
प्रथम-बसंत-पंचमी लीला, सूरदास जस गावै॥
॥२८५४॥३४७२॥

राग बसंत

कुसुमित बन देखन चलहु आजु। जहँ प्रगट भयौ रितु-रंग-राज॥
अति विविध कुसुम परिमल बहाइ। बन सुवा सहित पंचम सुहाइ॥
केकी बोलत पिक-सुर-सनेहि। जुवती मन अति आनंद देहि॥
श्री मदन मोहन सुंदरता पुंज। श्री राधा सँग राजत निकुंज॥
गावैं सुर गन दंपति-बिलास। तहँ सदा रहै मन सूरदास॥
॥२८५५॥३४७३॥

राग होरी

पिय प्यारी खेलैं जमुन-तीर। भरि केसरि कुमकुम अरु अबीर॥
घसि मृगमद चंदन अरु गुलाल। रँग भीने अरगज बख माल॥
कूजत कोकिल कल हँस मोर। ललितादिक स्यामा एक ओर॥
वृंदादिक मोहन लई जोर। बाजै ताल मृदंग रबाब घोर॥
प्रभु हँसि कै गेंदुक दई चलाइ। मुख पट दै राधा गई बचाइ॥
ललिता पट-मोहन गह्यौ धाइ। पीतांबर मुरली लई छिड़ाइ॥
हौं सपथ करौं छाड़ौं न तोहिं। स्यामा जू आज्ञा दई मोहिं॥
इक निज सहचरि आई बसीठि। सुनि री ललिता तू भई ढीठि॥
पट छाँडि दियौ तब नव किसोर। छवि रीझि सूर तृन दियौ तोर॥
॥२८५६॥३४७४॥

राग होरी

बाल गोपाल लाल सँग खेलैं, मुख मूँदे हिय खोलैं।
चिकने चिकुर छुटे बेनी तैं, मिले बसन मैं डोलैं॥
मानौ कुटुंब सहित कालिंदी, कालौ करत कलोलैं।
नासा की बेसरि अति राजति, लागे नग अनमोलैं॥

मानौ मदन मंजरी लीन्हे, कीर करत मलगोलै।
सूरदास सब चाँचरि खेलैं, अपने अपने टोलैं।।

।।२८५७।।३४७५।।

राग बसंत

खेलत नवलकिसोर किसोरी।
नंद-नँदन बृषभानु सुता चित लेत परस्पर चोरी।।
औरौ सखी-जाल बनि सोभित, सकल ललित तन गोरी।
तिनकी नख-सोभा देखत हीँ, तरनिनाथ-मति भोरी।।
एक गुपाल अबीर लिये कर, इक चंदन इक रोरी।
उपरा उपरि छिरकि रस-सर भरि, कुल की परिमित फोरी।।
देति असीस सकल ब्रज-जुवती, जुग-जुग अबिचल जोरी।
सूरदास उपमा नहिं सूचत, जो कछु कहौं सु थोरी।।

।।२८५८।।३४७६।।

राग श्रीहठी

तेरैं आवैंगे आजु सखी हरि, खेलन कौं फागु री।
सगुन सँदेसौ हौं सुन्यौं, तेरैं आँगन बोलै काग री।।
मदनमोहन तेरैं बस माई, सुनि राधे बडभाग री।
बाजत ताल मृदग झाँझ डफ, का सोवै, उठि जाग री।।
चोवा चंदन लै कुमकुम अरु केसरि पैयाँ लाग री।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस कौं, राधा अचल सुहाग री।।

।।२८५९।।३४७७।।

राग कान्हरौ

हरि-सँग खेलति हैं सब फाग।
इहिं मिस करति प्रगट गोपी, उर अतर कौ अनुराग।।
सारी पहरि सुरँग, कसि कंचुकि, काजर दै-दै नैन।
घनि-बनि निकसि निकसि भई ठाढी, सुनि माधौ के बैन।।
डफ, बाँसुरी रुज अरु महुअरि, बाजत ताल मृदग।।
अति अनंद मनोहर बानी, गावत उठति तरग।।
एक कोध गोबिंद ग्वाल सब, एक कोध ब्रज-नारि।
छाँडि सकुच सब देति परस्पर, अपनी भाई गारि।।

मिलि दस पाँच अली चली कृष्नहिं, गहि लावतिं अचकाइ।
भरि अरगजा अबीर कनक-घट, देतिं सीस तैं नाइ॥
छिरकतिं सखी कुमकुमा केसरि, भुरकतिं बंदन-धूरि।
सोभित हैं तनु साँझ समै-घन, आए हैं मनु पूरि॥
दसहूँ दिसा भयौ परिपूरन, सूर सुरंग प्रमोद।
सुर-बिमान कौतूहल भूले, निरखत स्याम-बिनोद॥
॥२८६०॥३४७८॥

राग आसावरी

जमुना कैं तट खेलति हरि-सँग, राधा लिये सब गोपी।
नंदलाल गोबर्धनधारी, तिनकैं नेहनि ओपी॥
चलहु सखी जाइयै तहाँ चलि, छिनु जियरा न रहाइ।
बेनु-सब्द करि मन हरि लीन्हौ, नाना राग बजाइ॥
सजल-जलद-तन पीतांबर-छवि, कर मुख मुरली धारि।
लटपट पाग बने मनमोहन, ललना रहीं निहारि॥
नैन सौं नैन मिले कर सौं कर, भुजा दए हरि ग्रीव।
मधि नायक गोपाल बिराजत, सुंदरता की सींव॥
करत केलि कौतूहल माधौ, मधुरी बानी गावै।
पूरन चंद सरद की रजनी, संतनि सुख उपजावै॥
सकल सिंगार कियौ ब्रज-बनिता, नख सिख लौं भल ठानि।
लोक बेद-कुल धर्म-केतकी, नैंकु न मानतिं कानि॥
बलि बलि बल के बीर त्रिभंगी, गोपिन के सुखदाइ।
सकल बिथा जु हरी या तन की, हरि हँसि कंठ लगाइ॥
माधव नारि, नारि माधव कौं, छिरकत चोवा-चंदन।
ऐसौ खेल मच्यौ उपरापरि, नँद-नंदन जग-बंदन॥
ब्रह्मा इंद्र देव गन-गंध्रब, सबै एकरस बरषैं।
सूरदास गोपी बड़भागिनि, हरि-क्रीड़ा सुख करषैं॥
॥२८६१॥३४७९॥

राग गौरी

मानौ ब्रज तैं करिनि चलि मदमाती हो।
गिरिधर गज पै जाइँ, ग्वालि मदमाती हो॥

कुल अंकुस मानै नहीं, मदमाती हो।
साँकर-बेद तुराइ, ग्वालि मदमाती हो॥
अवगाहैं जमुना नदी, मदमाती हो।
करतिं तरुनि जल-केलि, ग्वालि मदमाती हो॥
चहुँ दिसि तैं मिलि छिरकहीं, मदमाती हो।
सुंड दंड-भुज पेलि ग्वालि मदमाती हो॥
बृंदावन वीथिनि फिरैं, मदमाती हो।
संग मदन-गजपाल, ग्वालि मदमाती हो॥
कबहुँ नैन कर दै मिलैं, मदमाती हो।
तैसियै गज-गति चाल, ग्वालि मदमाती हो॥
नाग बेलि चाबति फिरैं मदमाती हो।
मोदक माँझ कपूर ग्वालि मदमाती हो॥
सुगँध पुढ़े स्रवननि चुवै, मदमाती हो।
मंडित माँग सिंदूर, ग्वालि मदमाती हो॥
केसरि लाई सानि कै, मदमाती हो।
घुँघुरू घट घुमाइ, ग्वालि मदमाती हो॥
उर पर कुच जुग घट से, मदमाती हो।
मुक्ता-माल रुराइ, ग्वालि मदमाती हो॥
अंचल उड़त बखानियै, मदमाती हो।
मनु बैरख फहराइ ग्वालि मदमाती हो॥
जुगल हार मनु सुरसरी मदमाती हो।
जुगल प्रवाह बहाइ ग्वालि मदमाती हो॥
अँग अँग छिरकैं स्याम कौं, मदमाती हो।
कुंकुम चंदन गारि, ग्वालि मदमाती हो॥
सूरदास-प्रभु क्रीडहीं, मदमाती हो।
सँग गोकुल की नारि, ग्वारि मदमाती हो॥
॥२८६२॥३४८०॥

राग काफी

खेलत हैं अति रसमसे, रँगभीने हो।
अति रस केलि बिलास, लाल रँगभीने हो॥
जागत सब निसि गत भई, रँग भीने हो।
भले जु आए प्रात, लाल रँगभीने हो॥

ओलत घोल प्रतीति के, रँगभीने हो।
सुंदर स्यामल गात, लाल, रँगभीने हो ॥
अति लोहित दृग रँगमँगे, रँगभीने हो।
मनहु भोर जलजात, लाल रँगभीने हो ॥
पिया अधर-मधु-पान-मत्त रँगभीने हो।
कहौ कहुँ की कहुँ बात, लाल रँगभीने हो ॥
केस सिथिल, वेसहु सिथिल, रँगभीने हो।
ससि मुख सिथिल जँभात, लाल रँगभीने हो ॥
अंग अंग अलसात, लाल रँगभीने हो ॥
सकुचत हो कत लाड़िले रँगभीने हो।
दुरत न उर-नख-घात लाल रँगभीने हो ॥
सूरदास प्रभु नंद-कुँवर रँगभीने हो।
बहुनायक विख्यात लाल रँगभीने हो ॥

॥२८६३॥३४८१॥

राग गौरी

गोकुल सकल गुवालिनी, घर-घर खेलत फाग ॥
मनोरा झूम करो ॥
तिनमें राधा लाड़िली, जिनको अधिक सुहाग। म० ॥
झुंडनि मिलि गावति चलीं, झूमक नंद-दुवार। म०।
आजु परब हँसि खेलियै, मिलि सँग नंद-कुमार। म० ॥
मोहन दरस दिखावहू, दुरहु तो नँद की आन। म०।
रसिकराइ सुंदर बरन, राधा-जीवन-प्रान। म० ॥
प्रगट प्रीति गोकुल भई, कैसे करत दुराउ। म० ॥
हम न दरस बिनु जीवहीं, कोउ कछु करौ उपाउ म०।
जसुमति सुत, चित चुभि रही, वह तुम्हरी मुसुकानि। म।
अब न अनत रुचि ऊपजै, सहज परी यह बानि। म० ॥
दुरत स्याम धरि पाइयो, राधा भरि अँकवारि। म०।
कनक-कलस केसरि भरे, लै आईं ब्रज-नारि। म० ॥
भरहु भरहु सखि स्यामहीं, पीत पिछौरी पाग। म०।
देह-गेह-सुधि बीसरी, नंद नँदन-अनुराग। म० ॥
छूटे केस बँद कंचुकी, टूटी मोतिन माल। म०।

चोवा चंदन अरगजा, उडत अबीर गुलाल। म० ॥
कर करताल बजावहीं, छिरकतिं सब ब्रजनारि। म०।
हँसि हँसि हरि पर डारहीं, अरुन नैन फुलवारि। म० ॥
गगन बिमाननि मौं छयो, आनँद बरषे फूल। म०।
जै जै सब्द उचारहीं सुर मुनि कौतुक भूल। म० ॥
सूर गुपाल कृपा बिना, यह रस लहै न कोउ। म०।
श्रीबृषभानु कुमारिका, स्याम मगन मन होउ। म० ॥

॥२८६४॥३४८२॥

राग सारंग

(आली री) नंद-नंदन बृषभानु कुँवरि सौं बाढ्यो अधिक सनेह।
दोउ दिसि पै आनँद बरषत ज्यौं भादौं को मेह ॥
सब सखियाँ मिलि गईं महरि पै, मोहन माँगे देहु।
दिना चारि होरी के अवसर, बहुरि आपनो लेहु ॥
झुकि झुकि परति हैं कुँवरि राधिका, देतिं परस्पर गारि।
अब कह दुरे साँवरे ढोटा, फगुआ देहु हमारि ॥
हँसि हँसि कहति जसोदा रानी, गारी मति कोउ देहु।
सूरजदास स्याम के बदले, जो चाहो सो लेहु ॥

॥२८६५॥३४८३॥

राग सारंग

निकसि कुँवर खेलन चले, रँग होरी।
मोहन नंद-किसोर, लाल रँग होरी ॥
कंचन माँट भराइ कै, रँग होरी।
सौंधे भर्यो कमोर, लाल रँग होरी ॥
झाँझ ताल सुर मंडले, रँग होरी।
बाजत मधुर मृदंग, लाल रँग होरी ॥
तिन में परम सुहावनी, रँग होरी।
महुवरि बाँसुरि चंग, लाल रँग होरी ॥
खेलन रँगीले लाल जू, रँग होरी।
गए बृषभानु की पौरि, लाल रँग होरी ॥
जे ब्रज हुती किसोरिका, रँग होरी।
ते सब आईं दौरि, लाल रँग होरी ॥

सखि मुख देखन कारनै, रँग होरी।
गाँठि दुहुनि की जोरि, लाल रँग होरी॥
फगुआ दियौ न जाइ जौ, रँग होरी।
लागौ राधा पाइँ, लाल रँग होरी॥
यह सुख सबकैं मन बसौ, रँग होरी।
सूरदास बलि जाइ, लाल रँग होरी॥

॥२८६६॥३४८४॥

राग टोड़ी

या गोकुल के चौहटैं रँगभीजी ग्वालिनि।
हरि-सँग खेलैं फाग, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि॥
डरति न गुरुजन-लाज कौं रँगभीजी ग्वालिनि।
मोहन कैं अनुराग, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि॥
दुंदुभि बाजै गहगही, रँगभीजी ग्वालिनि।
नगर कुलाहल होइ, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि॥
उमह्यौ मानुष-घोष यौं, रँगभीजी ग्वालिनि।
भवन रह्यौ नहिं कोइ, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि॥
डफ बाँसुरी सुहावनी, रँगभीजी ग्वालिनि।
ताल मृदंग उपंग, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि॥
झाँझ झालरी किन्नरी, रँगभीजी ग्वालिनि।
आउझ बर मुहचंग, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि॥
उतहिं संग सब ग्वाल, लिये रँगभीजी ग्वालिनि।
सुंदर नंद-कुमारु, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि॥
इत स्यामा नव जोबना, रँगभीजी ग्वालिनि।
अंबुज लोचन चारु, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि॥
टेसू कुसुम निचोइ कै, रँगभीजी ग्वालिनि।
भरे परस्पर आनि, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि॥
चोवा चंदन अरगजा, रँगभीजी ग्वालिनि।
चूका बंदन सानि, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि॥
रत्न जटित पिचकारियौं रँगभीजी ग्वालिनि।
कर लिये गोकुलनाथ नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि॥
छिरकहिं मृगमद कुंकुमा, रँगभीजी ग्वालिनि।

जो राधे कैं साथ, नैन सलोनी री रँगराँची ग्वालिनि ॥
सुरँग पीत पट रँगि रह्यौ, रँगभीजी ग्वालिनि।
सुभग साँवरैं अंग, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि ॥
नील वसन भामिनि बनी रँगभीजी ग्वालिनि।
कंचुकि कुसुम सुरंग, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि ॥
अरुन नूत पल्लव धरे रँगभीजी ग्वालिनि।
कूजित कोकिल कीर, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि ॥
नृत्य करत अलिकुल मिले, रँगभीजी ग्वालिनि।
अति आनंद अधीर, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि ॥
चढ़ि बिमान सुर देखहीं, रँगभीजी ग्वालिनि।
देह-दसा बिसराइ, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि ॥
राधा रसिक रसज्ञ की, रँगभीजी ग्वालिनि।
सूरदास बलि जाइ, नैन सलोने री रँगराँची ग्वालिनि ॥

॥२८६७॥३४८५॥

राग गौरी

हो हो हो हो हो हो होरी।
खेलत आत सुख प्रीति प्रगट भई, उत हरि इतहिं राधिका गोरी।
बाजत ताल मृदग झाँझ डफ, बीच-बीच बाँसुरि-धुनि थोरी ॥ हो० ॥
गावत दै दै गारि परस्पर, उत हरि इत वृषभानु किसोरी।
मृगमद साख जवादि कुमकुमा, केसरि मिलै मिलै मथि घोरी ॥ हो० ॥
गोपी ग्वाल गुलाल उडावत, मत्त फिरैं रति-पति मनु धोरी।
भरित रग रति नागरि राजति, मनहुँ उमँगि वेला बल फोरी ॥ हो० ॥
छुटि गई लोक-लाज कुल संका, गनति न गुरु गोपिनि कौ कोरी।
जैसैं अपने मेर मते मैं, चोर भोर निरवत निसि-चोरी ॥ हो० ॥
उन पट पीत किये रँग राते, इन कंचुकी पीत रँग बोरी।
रही न मन मरजाद अधिक रुचि सहचरिसकति गाँठि गहिजोरी। हो०॥
बरनि न जाइ बचन-रचना रचि, वह छबि झकझोरा झकझोरी।
सूरदास सारदा सरल-मति, सो अवलोकि भूलि भई भोरी ॥ हो० ॥
हो हो हो हो हो हो होरी ॥२८६८॥३४८६॥

राग गूजरी

ब्रज की बीथिनि बीथिनि डोलत।
मदनगुपाल सखा सँग लीन्हे, हो हो हो हो बोलत ॥

ताल मृदंग बीन डफ बाँसुरि, बाजत गावत गीत।
पहिरे बसन अनेक बरन तन, नील अरुन सित, पीत॥
सुनि सब नारि निकसि ठाढ़ी भईँ, अपनैँ अपनैँ द्वारि।
नवसत सजे प्रफुल्लित आनन, जनु कुमुदिनी कुमारि॥
चपल नैन, अति चतुर चारु तन, जनु फुलवारी लाई।
देखत ह्वाँ नँद-नंद परम सुख, मिलत मधुप लौँ धाई॥
राखति गहि भुज-बल चहुँदिसि जुरि, अतिहि प्रेम अकुलात।
मानहुँ कमल कोप अभिअंतर, भ्रमत भ्रमत बिनु प्रात॥
छाँड़ति भरि भायौ अपनौ करि, राजत अंग-बिभाग।
मानहुँ उड़ि जु चले हैं अलि-कुल, आस्रित अंग-पराग।
अंतर कछु न रह्यौ तिहिँ औसर, अति आनद प्रमाद।
मानहुँ प्रेम-समुद्र सूर बल, उमँगि तजी मरजाद॥
॥२८६९॥३४८७॥

राग गौरी

ऊँचौ गोकुल नगर, जहाँ हरि खेलत होरी।
चलि सखि देखन जाहिँ, पिया अपने की खोरी॥
बाजत ताल, मृदंग, और किन्नरि की जोरी।
गावतिं दै-दै गारि, परस्पर भामिनि भोरी॥
बूका सुरँग अबीर उडावत, भरि-भरि झोरी।
इत गोपिनि कौ झुंड, उतहिं हरि-हलधर-जोरी॥
नवल छबीले लाल, तनी चोली की तोरी।
राधा चली रिसाइ, ढीठ सौँ खेलै कोरी॥
खेलत मैँ कस मान, सुनहु वृषभानु किसोरी।
सूर सखी उर लाइ हँसति, भुज गहि झकझोरी॥
॥२८७०॥३४८८॥

राग धनाश्री

होरी खेलन ब्रज खोरिनि मैँ, ब्रज बाला बनि बनि घनवारी।
डफ की धुनि सुनि बिकल भई सब, कोउ न रहति घर घूँघटवारी॥
जाहि अबीर देत आँखिनि मैँ, ताही कौँ छिरकत पिचकारी।
सोँधे तेल अबीर अरगजा, तैसी जरद केसरि चटकारी॥

उड़त गुलाल लाल भए बादर, रँगि गए सिगरे अटा अटारी।
सूरदास वारी छवि ऊपर, कल न परति छिनु बिनु गिरिधारी॥
॥२८७१॥३४८९॥

राग सारंग

कर लिये डफहिं बजावै, हो हो हो सनाक खेलार होरी की।
संग सखा सब बनि-बनि आवत, छबि मोहन हलधर जोरी की॥
ताल मृदंग बजावत गावत, भावनि धुनि मुरली थोरी की।
लाल गुलाल समूह उड़ावत, फेंट कसे अबीर ओरी की॥
खेलत फाग करत कौतूहल, मत्त फिरैं मन्मथ धोरी की।
बरन बरन सिर पाग चौतनी, कछ कटि छबि चंदन खोरी की॥
इतहिं सुनत बृषभानु सुता लई, तरुनि बोलि सब दिन थोरी की।
नीलांबर कचुकि सुरंग तनु, अति राजति राधा गोरी की॥
मनु दामिनि घन मध्य रहति दुरि, प्रगट हसनि चितवनि भोरी की।
नख सिख सजि सिंगार ब्रज जुवती, तनु इँडिया कुँसुभी बोरी की॥
पान भरे मुख चमकत चौका, भाल दिये बेंदी रोरी की।
कनक-कलस कोटिक कर लीन्हे, भरि फुलेल रँग रँग बोरी की॥
जुवति बृंद ब्रजनारि संग लै, जाइ गहनि ब्रज की खोरी की।
घर घर तैं धुनि सुनि उठि धाईं, जे गुरुजन पुर जन चोरी की॥
हाथनि लै भरि भरि पिचकारी नाना रंग सुमन बोरी की।
कोउ मारति, कोउ दाउँ निहारति, अरस-परस दौरा-दौरी की॥
इतहिं सखा कर जेरी लीन्हे, गारी देहिं सकुच थोरी की।
इतहिं सखी कर बाँस लिये बिच, मार मची भोरा-भोरी की॥
पाछे तैं ललिता चंद्रावलि, हरि पकरे भुज भरि कोरी की।
ब्रज जुवती देखतहीं धाईं, जहाँ तहाँ तैं चहुँ ओरी की॥
इक पट पीतांबर गहि झटक्यो, इक मुरली लई कर मोरी की।
इक मुख सौं मुख जोरि रहति, इक अंक भरति रतिपति ओरी की।
तब तुम चीर हरे जमुना तट, सुधि बिसरे माखन-चोरी की।
अब हम दाउँ आपनो लैहैं, पाउ परौ राधा गोरी की॥
अपने अपने मन सुख कारन, मच मिलि झकझोरा झोरी की।
नीलांबर पीतांबर सौं लै, गाँठि दई कसि कै डोरी की॥
कनक कलस केसरि भरि ल्याईं ढारि दियौ हरि पर दोरी की।
अति आनंद भरीं ब्रज-जुवतीं, गावति गीत सबै होरी की॥

अमर विमान चढ़े सुख देखत, पुहुप वृष्टि जै धुनि गोरी की।
सूरदास सो क्यौं करि बरनै, छवि मोहन-राधा जोरी की॥
॥२८७२॥३४९०॥

राग श्रीहठी

हरि सँग खेलन फागु चलीं।
चोवा चंदन अगरु अरगजा, छिरकतिं नगर गलीं॥
राती पीरा अँगिया पहिरे, नव तन झूमक सारी।
मुख तमोर, नैननि भरि काजर, देहिं भावती गारी॥
रितु बसंत आगम रति-नायक, जोबन-भार-भरीं।
देखन रूप मदनमोहन कौ, नंद-दुवार खरीं॥
कहि न जाइ गोकुल की महिमा, घर घर बीथिनि माहीं।
सूरदास सो क्यौं करि बरनै, जो सुख तिहुँ पुर नाहीं॥
॥२८७३॥३४९१॥

राग गौरी

ठाढ़ौ हो ब्रज-खोरी ढोटा कौन कौ।
(लटिहि) लकुट त्रिभंगी एक पद (री) मानो मन्मथ गौन कौ॥
मोर-मुकुट कछनी कसे (री) पीतांबर कटि सोभ।
नैन चलावै फेरि कै (री) निरखि होत मन लोभ॥
भौंह मरोरै मटकि कै (री) रोकत जमुना-घाट।
चितै मंद मुसुकाइ कै (री) जिय करि लेइ उचाट॥
हँसत दसन चमकाइ कै (री) चकचौंधी सी होति।
बग-पंगति नव जलद मैं (री) उर माला गज-मोति॥
पिचकारी रतननि जरित (री) तकि तकि छिरकत अंग।
टेसू कुसुम निचोड कै (री) अरु केसरि कौ रंग॥
फेंट गुलाल भराइ कै (री) डारत नैननि ताकि।
एते पर मन हरत है (री) कहा कहौं गति वाकि॥
पुनि हा हा करि मिलत है (री) नाना रंग बनाइ।
नंद-सुवन के रूप पर (री) सूरदास बलि जाइ॥
॥२८७४॥३४९२॥

राग श्रीहठी

साँवरौ ढोटा को है माई, वारिज-नैन बिसाल।
अधर धरे मुख मुरलि बजावत, गावत राग रसाल॥

मंद मंद मुसुकनि सरोज मुख, सोभा बरनि न जाइ।
बाँकी भौंहैं, तिरछी चितवनि, चित वित लियौ चुराइ॥
अति लोने सोने के कुंडल, कौनैं रचे सँवारि।
मनौ काम किल फंद बनाए, फँदीं मीन-ब्रजनारि॥
सिर पगिया, बीरा मुख सोहै, सरस रसीले बोल।
अति आधीन भईं ब्रज-बनिता, बस कीन्हौ बिनु मोल॥
कहा करौं देखे बिनु सजनी, कल न परै पल प्रान।
ग्वालनि संग रंग भर्‌यौ आवत, गावत आछी तान॥
तातैं और कौन हितु मेरैं, सखि चलि नैंकु दिखाइ।
मदनमोहन की चरन रेनु पर सूरदास बलि जाइ॥

॥२८७२॥३४९३॥

राग नट नारायण

खेलत स्याम ग्वालनि संग।
एक गावत, एक नाचत, इक करत बहुत बहु रंग॥
बीन मुरज उपंग मुरली, झाँझ, झालरि ताल।
पढ़त होरी बोलि गारी, निरखि कै ब्रज-बाल॥
कनक-कलसनि घोरि केसरि, कर लिये ब्रजनारि।
जबहि आवत देखि तरुनी, भजत दै किलकारि॥
दुरि रही इक खोरि ललिता, उत तैं आवत स्याम।
धरे भरि अँकवारि औचक, धाइ आईं बाम॥
बहुत ढीठौ दै रहे हौ, जानवी अब आजु।
राधिका दुरि हँसति ठाढ़ी, निरखि पिय मुख लाज॥
लियौ काहूँ मुरलि कर तैं, कोउ गह्यौ पट पीत।
सीस बेनी गूँथि, लोचन आँजि, करी अनीत॥
गए कर तैं छुटकि मोहन, नारि सब पछिताति।
सीस धुनि कर मींजि बोलतिं, भली लै गए भाँति॥
दाउँ हम नहिं लैन पायौ, बसन लेतीं लाल।
सूर-प्रभु कहँ जाहुगे अब, हम परीं इहिं ख्याल॥

॥२८७३॥३४९४॥

राग काफी

मोहन गए, आजु तुम जाहु डाँव हम लेहिंगी हो।
लालन हमहि करे बेहाल, वहै फल देहिंगी हो॥

आजुहिं दाँव आपनो लेतीं, भले गए हो भागि।
हा हा करते पाइनि परते, लेहु पितंबर माँगि॥
बेनी छोरत हँसत सखा सँग, कहत लेहु पट जाइ।
सौंह करत हौं नंद बबा की, अपनी अपति कराइ॥
जौ मैं लेहुँ पितांबर अबहीं, कहा देहुगे मोहिं।
इत उत जुवती चितवन लागीं, रहीं परस्पर जोहिं॥
एक सखा हरि तिया-रूप करि, पठै दियौ तिन पास।
गयौ तहाँ मिलि संग तियनि कैं, हँसत देखि पट-बास॥
मोहिं देहु राखौं दुराइ कै, स्यामहिं जनि लै देहु।
लियौ दुराइ गोद मैं राख्यौ, दाँव आपनौ लेहु॥
पितांबर जनि देहु स्याम कौं, यह कहि चमक्यौ ग्वाल।
सूर स्याम पट फेरत कर सौं, चकित निरखि ब्रज-बाल॥
॥२८७७॥३४९५॥

राग गौरी

चकित भईं हरि की चतुराई। हमहिं छली इन कुँवर कन्हाई॥
कहा ठगोरी देखत लाई। खिरवति हैं कहि भलो बनाई॥
एक सखी हलधर-बपु काछौ। चली नील पट ओढ़े आछौ॥
स्याम मिलन ताकौं तहँ आए। अग्रज-कानि चले अतुराए॥
मिले साँकरी ब्रज की खोरी। ढूकी रहीं जहाँ तहँ गोरी॥
गह्यौ धाइ भुज दोउ लपटानी। दौरि परी सब सखी सयानी॥
निरखि निरखि तरुनी मुसुकानी। एक निलज, इक रही लजानी॥
कहा रही करि सकुच दिवानी। अब इनकी जनि राखौ कानी॥
गारि नारि सब देहिं सुहानी। नंद महर लौं जाति बखानी॥
उतर्‍यौ सूर स्याम-मुख-पानी। गईं लिवाइ जहँ राधा रानी॥
॥२८७८॥३४९६॥

राग श्रीहठी

(ब्रज-जुवती मिलि) नागरि, राधा पै मोहन लै आई।
लोचन आँजि, भाल बेंदी दै, पुनि पुनि पाइ पराई॥
बेनी गूँथि, माँग सिर पारी, बधू-बधू कहि गाई।
प्यारी हँसनि देखि मोहन-मुख जुवती बने बनाई॥

स्याम-अंग कुसुमी नई सारी, अपनैं कर पहिराई ।।
कोउ भुज गहति, कहति कछु कोऊ, कोउ गहि चिबुक उठाई ।।
एक अधर गहि सुभग अँगुरियनि, बोलत नहीं कन्हाई ।
नीलांबर गहि खूँट चूनरी, हँसि-हँसि गाँठि जुराई ।।
जुवती हँसति देति कर तारी, भई स्याम मन-भाई ।
कनक कलस अरगजा घोरि कै, हरि कैं सिर ढरकाई ।।
नंद सुनत हँसि महरि पठाई, जसुमति धाई आई ।
पट मेवा दै स्याम छुडायौ, सूरदास बलि जाइ ।।
।।२८७९।।३४९७।।

राग श्रीमलार

छैल छबीलो मोहना, (री) घूँघरवारे केस ।
मोर-मुकुट कुंडल लसैं, (री) कीन्हे नटवर भेस ।।
राखे भौंह मरोरि कै, (री) सुंदर नैन बिसाल ।
निरखि हँसनि मुसुकानि की, (री) अतिहीं भई बिहाल ।।
कीर लजावन नासिका, (री) अधरबिंद तैं लाल ।
दसन चमक दामिनिहुँ तैं, (री) स्याम-हृदय बनमाल ।।
चिबुक चित्त कौ हरन है (री) राजत ललित कपोल ।
मारग गहि ठाढ़ौ रहै (री) बोलत मीठे बोल ।।
चंदन खौरि बिराजई (री) स्यामल भुजा सुचारु ।
ग्वाल सखा सब सँग लिये, (री) करत गुलालनि मारु ।।
इक भाजत, इक भरत है, (री) कुसुम-बरन रँग घोरि ।
सौंधै कीच मची भली, (री) खेलत ब्रज की खोरि ।।
सुनत चलीं सब धाइ कै (री) देखन नंद-कुमार ।
फागु साँझ सी ह्वै रही, (री) उडि उडि गगन अपार ।।
मिलीं तरुनि तहँ जाइ कै, (री) जहँ बिहरत गोपाल ।
सूर स्याम-मुख देखिकै, (री) बिसर्यौ तनु तिहिं काल ।।
।।२८८०।।३४९८।।

राग गौरी

घर घर तैं सुनि गोपी, हरि-मुख देखन आईं ।
निरखि स्याम ब्रजनारि, हरषि सब निकट बुलाईं ।।

सुनत नारि मुसुकाइ, बाँस लीन्हे कर धाईं।
ग्वालनि जेरी हाथ, गारि दै तियनि सुनाईं॥
सीला नामक ग्वालि, अचानक गहे कन्हाई।
सखिनि बुलावति टेरि, दौरि आवहु री माई॥
एक सुनत गई धाइ, बीस तीसक तहँ आईं।
टूटि परीं चहुँ पास, घेरि लीन्हौ बल-भाई॥
इक पट लीन्हौ छीनि, मुरलिया लई छिड़ाई।
लोचन काजर आँजि, भाँति सौं गारी गाई॥
जबहिं स्याम अकुलात, गहति गाढ़ैं उर लाई।
चंद्रावलि सौं कह्यौ, गूँथि कच सौंह दिवाई॥
हा हा करियै लाल, कुँवरि के पाइ छुवाई।
यह सुख देखत नैन, सूर जन बलि बलि जाई॥

॥२८८१॥३४९९॥

राग होरी

हम तुम सौं विनती करैं, जनि आँखिनि भरौ गुलाल।
सह्यौ परत हम पै नहीं, तेरौ निपट अनोखौ ख्याल॥
दरसन तैं अंतर परै, हो करहु अबीर-अबीर।
तुमहिं कहौ कैसैं जियैं, जहँ मीन न पावै नीर॥
स्याम तुम्हारैं रँग रँगी हैं, और न रंग सुहाइ।
नितही होरी खेलियै हो, तुम सँग जादवराइ॥
यह फगुवा हम पावहीं, हो चितवनि मृदु मुसुकान।
सूर स्याम ऐसैं करौ जू, तुम हौ जीवन-प्रान॥

॥२८८२॥३५००॥

राग काफी

लालन प्रगट भए गुन आजु, त्रिभंगी लालन ऐसे हौ।
रोकत घाट बाट गृह बनहूँ निबहति नहिं कोउ नारि॥
भली नहीं यह करत साँवरे, हम दैहैं अब गारि।
फागुन मैं तो लखत न कोऊ, फबति अचगरी भारि॥
दिन दस गए, दिना दस औरौ, लेहु साध सब सारि।
पिचकारी मोकौं जनि छिरकौ, नकि उठौ मुसुकाइ॥
सासु ननद मोकौं घर बैरिनि, तिनहिं कहौं कह जाइ।

हा हा करि, वही नंद-दुहाई, कहा परी यह बानि।
तासौं बिरहु तुमहिं जो लायक, इहिं हेरनि मुसुकानि॥
अनलायक हम हैं, की तुम हौ, कहौ न बात उघारि।
तुमहूँ नवल, नवल हमहूँ हैं, बड़ी चतुर हौ ग्वारि॥
यह कहि स्याम हँसे, बाला हँसी, मनहीं मन दोउ जानि।
सूरदास-प्रभु गुननि भरे हौ, भरन देहु अब पानि॥
॥२८८३॥३५०१॥

राग काफी

(अरी माई) मेरौ मन हरि लियौ नंद ढुटौना।
चितवनि मैं वाके कछु टौना॥
निरखत सुंदर अंग सलौना। ऐसी छबि कहुँ भई न होना॥
कालिह रहे जमुना-तट जौना। देख्यौ खोरि साँकरी तौना॥
बोलत नहीं रहत वह मौना। दधि लै छीनि खात रह्यौ दौना॥
घर-घर माखन-चोरत जौना। बाटनि घाटनि लेत है दौना॥
खेलत फागु ग्वाल सँग छौना। मुरलि बजाइ बिसारै भौना॥
मो देखत अबहीं कियौ गौना। नटवर अँग सुभ सजे सजौना॥
त्रिभुवन मैं बस कियौ न कौना। सूर नंद-सुत मदन-लजौना॥
॥२८८४॥३५०२॥

राग काफी

माई मोहन मूरत साँवरौ नंदनँदन जिहिं नाँवरौ।
अबहिं गए मेरे द्वारैं ह्वै, कहत रहत ब्रज-गाँवरौ॥
मैं जमुना-जल भरि घर आवति, मौंहिं करि लागौ ताँवरौ।
ग्वाल सखा सँग लीन्हे डोलत, करत आपनौ भावरौ॥
जसुमति कौ सुत, महर ढुटौना, खेलत फागु सुहावरौ।
सूर स्याम मुरली-धुनि सुनि री, चित न रहत कहुँ ठाँवरौ॥
॥२८८५॥३५०३॥

राग काफी

(अरी माई) साँवरौ सलौनौ अति, नंद कौ कुँवर री।
चंदन की खौरि भाल, भौंहैं हैं जबरे री॥

कुंतल-कुटिल-छवि, राजत भ्रवरै री।
लोचन चपल तारे, रुचिर भँवरै री॥
मकर-कुँडल डड, झलमल करै री॥
मनहुँ मुकुर बीच, रवि छवि वरै री॥
नासिका परम लोनी, बिंबाधर तरैं री।
तहाँ धरी मुरली सौं, नाना रंग भरैं री॥
जमुना कैं तीर ग्वाल-संगहिं बिहरै री।
अबहीं मैं देखि आई, बंसीबट तरैं री॥
पिचकारी कर लिये, धाइ अंग धरै री।
नैननि अबीर मारैं, काहू सौं न डरै री॥
बातनि हरत मन, राग ह्वै कै ढरै री।
सूरज कौ प्रभु आली; चित्त तैं न टरै री॥

॥२८८६॥३५०४॥

राग काफी

नंद के नँदन आली, मोहिं कीन्ही बावरी।
कहा करौं, चित्त क्यौं हूँ, रहत न ठाँव री॥
बिहरत हरि जहाँ, तहाँ तुहूँ आव री।
निसिहूँ बासर आली, मोकौं यहै चाव री॥
जमुना भरन जल जाइँ, यहै दाँव री।
गुरु-पुर-जननि सौं, और न उपाव री॥
काफी राग मुख गावै, मुरली बजाइ री।
धुनि सुनि तनु भूली, अति ही सुहाइ री॥
चंदन कपूर चूर, फेंटनि भराइ री।
सौंधैं भरि पिचकारी, मारत है धाइ री॥
आतुर ह्वै चलि, और जाइ कि न जाइ री।
चित न रहत ठौर, और न सुहाइ री॥
मिलि प्रभु सूरज कौं, सकुच गँवाइ री।
लाज डारि, गारी खाइ, कुल बिसराइ री॥

॥२८८७॥३५०५॥

राग कल्याण

खेलत हरि ग्वाल संग, फागु-रंग भारी।
इक मारत इक तारत, इक भाजन इक गाजत, इक धावत इक पावत, इक आवत मारी॥
इक हरपत इक लरखत, इक परखत घातहिँ कौं, लोचननि गुलाल डारि, सौंधे ढरकावैं।
एक फिरत संग संग, इक इक न्यारे बिहरत, डरत दाँव दीवे कौं, वे ज्यौं नहिँ पावैं॥
इक गावत इक भावत, इक नाचत इक रॉचत, इक कर मिरदंग ताल, गति-जति उपजावैं।
इक बीना इक किन्नरि, इक मुरली इक उपंग इक तुंबुर इक रवाब, भाँति सौं बजावैं॥
एक पटह इक गोमुख, इक आउझ इक झल्लरि, एक अमृत कुंडली, इक डफ कर धारैं।
सूरज-प्रभु बल मोहन, संग सखा बहु गोहन, खेलत वृपभानु पौरि लिये जात टारे॥ २८८८॥३५०६॥

राग आसावरी

सुनतहिं वृपभानु-सुता जुवति सब बुलाईं।
आए बलराम स्याम, आईं तजि काम वाम, धाम धाम तैं आतुर, मातनव बनाईं॥
हरपत सब ग्वाल बाल, अरस परस करत ख्याल, इक मारत, इक भाजत राजति बहु जोरी।
उततैं निकसी कुमारि, संग लिये बिपुल नारि, कोउ कोउ नव जोबन भरी, कोउ कोउ दिन थोरी॥
इत उत मुख दरस भयौ, पिय पूरन काम कियौ, मानौ ससि उदै भयौ, आनँदित चकोरी।
उत जेरी धरे ग्वार बाँसनि इत परी मार, इहिं छबि नहिं वार पार, सोर झोर झोरी॥
उत होरी पढ़त ग्वार, इत गारी गावत ये, नंद नाहिं जाये तुम, महरि गुननि भारी।
कुलटी उनतें को है, नंदादिक मन मोहै, बाबा वृपभानु की वै, सूर सुनहु प्यारी॥२८८९॥३५०७॥

राग गुंड मलार

(खेलत रंग रह्यौ) एक ओर ब्रज-सुंदरि एक ओर मोहन ।
रन वरन ग्वाल वने, महर-नंद गोप जने, इक गावत इक नृत्यत
एक रहत गोहन ॥
ाजत मिरदंग तार, अरस परस करैं विहार, सोभा नहिं वार
पार, इक इक दै सौंहन ।
कनक-लकुट करनि लिये, धाईं सब हरषि हिये, ब्रज-ललना
सूरज प्रभु मन मन मिलि मोहन ॥२८९०॥३५०८॥

राग सारंग

हो हो हो हो होरी, करत फिरत ब्रज खोरी, मोहन हलधर
जोरी, सुवन नंद को री ।
ग्वाल सखा सँग ढोरी, लिये अबीर कर झोरी, मारि भाजत
जिहिं जोरी, दाँव लेत दौरी ॥
इक गावत है धमारि, इक एकनि देत गारि, दई सबनि लाज
डारि, वाल पुरुष तोरी ।
सौंधे अरगजा कीच, जहाँ तहाँ गलिनि वीच, एक एक ऊँच नीच
करत रंग झोरी ॥
इक उघटति इक नृत्यति, एक तान लेति उपज, इक दै करताल
हरषि गावति है गोरी ।
सूरदास-प्रभु कौं सुख निरखि हरष ब्रज-ललना सुर-ललना सुरनि
सहित विथकित भईं बौरी ॥२८९१॥३५०९॥

राग बिलावल

खेलत मोहन फाग भरे रँग । डोलत सखा समूह लिये सँग ॥
नंदराइ सौं विनती कीनी । स्याम एक कौ आज्ञा लीन्ही ॥
अगनित तब पिचकारि गढ़ाईं । कंचन रतन धावा पै पाई ॥
मन सहसक केसरि लै दीन्ही । असित सुगंध अरगजा लीन्ही ॥
गोपनि वैठि ओसरे कीन्हे । गाइ चरावन कौं सँग लीन्हे ॥
तनहिं अनंत सखागन साजे । सकल सँवारि संग लिये बाजे ॥
घर घर ध्वजा पताका बाँनी । तोरन वारन वासौं ठानी ॥
घरन पचासक अबिर सँवारे । बीथिनि छिरकि तहाँ बिस्तारे ॥
मोहन चरन धरत तहँ आवैं । द्वारैं जुरि जुवती मिलि गावैं ॥

निरखि भरन कौं सब मिलि धावैं। मोहन इततैं सखा सिखावैं॥
नाहिं गात, बिस्तर नहिं राखैं। भरि नीकैं करि मुख कछु भाखैं॥
बैठे जहाँ गोप सब राजैं। आवत देखि सबै उठि भाजैं॥
मोहन पै कोउ जान न पावै। महा मत्त गजबर ज्यौं धावै॥
सब मिलि बोलत हो हो होरी। छिरकत चंदन बंदन रोरी॥
एक द्यौस गोपी जुरि आईं। घरही मैं घेरे हरि जाई॥
इक भीतर इक रही दुवारैं। एक जाइ लागीं पिछवारैं॥
एक इहाँ चहुँ दिसि तैं घेरें। एक पैठि मंदिर मैं हेरें॥
एक लिये कर कमल बिराजैं। पसरैं किरनि कोटि ससि भ्राजैं॥
एक लिये सिर सौंधे गागरि। फेंट अबीर भरे बहु नागरि॥
सारी सुभग काछ सब दिये। पाटंबर गाती सब हिये॥
एकनि जाइ दुरे हरि पाए। सैन देइ राधिका बताए॥
करत कुलाहल हरि गहि ल्याईं। फूलीं ज्यौं निधनी धन पाईं॥
एक गहे कर दोऊ हरि के। हलधर देखि उनहिं कौं सरके॥
केसरि अरु गुलाल मुख लायौ। पूरन चंद उदै करि आयौ॥
पति अरुन रँग नाए सिर तैं। चली धातु मनु साँवर गिर तैं॥
एक भरे पिचकारी ताके। देत स्रवन मैं नंदलला के॥
ब्रज-जन सकल सुधा रस पीते। ऐसी भाँति पहर द्वै बीते॥
देखी निकट राधिका प्यारी। तब हरि लीला और बिचारी॥
तब हरि जाइ दुरे उपबन मैं। चलीं नाइका कुंज-सदन मैं॥
करतिं कुलाहल ब्रज की नारी। देखत चढे कदंब बिहारी॥
कबहुँक मुरली मधुर बजावैं। स्रवन सुनत जितहीं तित धावैं॥
जब हरि जानी निकटहिं आईं। डर तैं तब वे रहे लुकाई॥
कुंज कुंज कोकिल ज्यौं टेरैं। सुनि सुनि नाद मृगी त्यौं हेरैं॥
कबहूँ फिरि आपुस मैं खेलनि। सकल सुगंध परस्पर मेलनि॥
भुके बचन कहतीं बिनु पाए। कहति कछू राधिका लगाए॥
करिनि भाज बर-बन भय जैसैं। जाइ डुलति बन बन मै तैसैं॥
तब हरि भेष धर्‌यौ जुवती कौ। सुंदर परम भाबतो जी कौ॥
सारी कंचुकि केसरि टीकौ। करि सिंगार सब फूलनि ही कौ॥
कर राजित कंदुक नवला सी। छूटी दामिनि दंपद हाँसी॥
सकल भूमि बन सोभा पाई। सुंदरता उमँगी न समाई॥

व्रजनारी ता सोभा सौं ही। रहीं ठगी सी रूप-विमोही॥
एक कहति हरि के से नैना। एक कहति वैसेई बैना॥
बूझति एक कौन की नारी। विधि की सृष्टि नहीं तू न्यारी॥
तब हरि कहत सुनहु ब्रजबाला। बोलत हँसि हँसि वचन रसाला॥
हम तुम मिलि खेलहिं सब जानतिं। राधा आली मोहिं पहिचानति॥
मैं हूँ सँग तिहारैं खेली। जानति हौं हूँ जान सहेली॥
अबहीं कीरति महरि पठाई। राधा इकली खेलन आई॥
अब इक बात कहौं हौं जी की। हौं जानति हौं छल हरि पी की॥
सघन बिपिन ऐसैं कहँ पावहु। सब मिलि एक संग जनि धावहु॥
सुनत सोर कत रहिहैं नेरैं। कोटि करौ पावहु नहिं हेरैं॥
द्वै द्वै न्यारी न्यारी डोलहु। तनक मूँदि कर मुख जनि बोलहु॥
जाइ अचानकहीं गहि ल्यावहु। सखी एक ज्यौं त्यौं करि पावहु॥
राधा कौं भुज गहि कै लीन्ही। ऐसैं सब कौ द्वै द्वै कीन्ही॥
मौन किये प्रवेस कियौ वन मैं। हरि कौ रूप राखि निज मन मैं॥
और सखी खोजति सब कुंजनि। राधा हरि विहरत सुख पुंजनि॥
राधा आवति देखि अकेली। तवहिं वहुरि सब वैठि सकेली॥
तब बूझति वृषभानु-दुलारी। सखी संग की कहाँ विसारी॥
अति गह्वर मैं जाइ परीं हम। सूर्य न सूझत भयौ निसा तम॥
ता ठाहर तैं हौं भई न्यारी। फिरि आई डरपी हिय भारी॥
पुहुप वाटिका हौं फिरि आई। मुकुट दीठि तहँ हौं इत धाई॥
ता ठाहर जौ ठाढ़े पावहिं। चलौ जाइँ धाइ गहि ल्यावहिं॥
नारी वात सुनत ही धाईं। घेरि लिये कोकिल सुर गाईं॥
जाहु कहाँऽव अकेले पाए। सकल सुगध सीस तैं नाए॥
एक रूप-माधुरी निहारहि। एक कटाच्छ नैन-सर मारहि॥
एक सुमन लै ग्रंथति माला। सोभित सुंदर हृदय विसाला॥
खेलत आए पुलिन सुहाए। वैठे तहँ मंडली वनाए॥
मोहन नव ससि मध्य विराजैं। देखि सूर कोटिक छवि छाजैं॥
॥२८९२॥३५१०॥

राग काफी

खेलत फागु कुँवर गिरिधारी।
अग्रज, अनुज, सुबाहु, श्रीदामा, ग्वाल बाल सब सखाऽनुसारी॥

इत नागरि निकसीं घर घर तैं, दै आगैं वृषभानु-दुलारी।
नव सत सजि ब्रजराज-द्वार मिलि, प्रफुलित बदन भीर भई भारी॥
दुंदुभि ढोल पखावज आवझ, बाजत डफ मुरली रुचिकारी।
मारति बाँस लिये उन्नत कर, भाजत गोप त्रियनि सौं हारी॥
एक गोप इक गोपी कर गहि, मिलि गए हलधर सौं भुज चारी।
मिटि गई लाज, सम्हार न कुचपट, बहुत सुगंध लियौ सिर ढारी॥
बाँह उचाइ कहत हो हो री, लै लै नाम देत प्रभु गारी।
इतहिं राधिका निकसि जूथ तैं सन्मुख पिय छाँडति पिचकारी॥
इतहिं राधिका निकसि जूथ तैं, सन्मुख-पिय छाँडति पिचकारी॥
इक गोपी गोपाल पकरि कै, लै चलीं अपनैं मेर उसारी।
आँजति आँखि मनावति फगुआ, हँसति हँसावति दै करतारी॥
सुर बिमान नभ कौतुक भूले, कोटि मनोज जाइ बलिहारी।
सूरदास आनंद-सिंधु मैं, मगन भए ब्रज के नर-नारी॥
॥२८९३॥३५११॥

राग काफी

नंद-नंदन वृषभानु किसोरी, मोहन राधा खेलत होरी।
श्रीबृंदावन अतिहिं उजागर, बरन बरन नव दंपति भोरी॥
एकनि कर है अगर कुमकुमा, एकनि कर केसरि लै घोरी।
एक अर्थ सौं भाव दिखावति, नाचति तरुनि बाल ब्रज भोरी॥
स्यामा उतहिं सकल ब्रज-बनिता, इतहिं स्याम रस रूप लहौ री।
कंचन की पिचकारी छूटति, छिरकत ज्यौं सचुपावैं गोरी॥
अतिहिं ग्वाल दधि गोरस माते, गारी देत कहौ न करौ री।
करत दुहाई नंदराइ की, लै जु गयौ कल बल छल जोरी॥
भुइनि जोरि रही चंद्रावलि, गोकुल मैं कछु खेल मच्यौ री।
सूरदास-प्रभु फगुआ दीजै, चिरजीवौ राधा बर जोरी॥
॥२८९४॥३५१२॥

राग श्रीहठी

मोहन कै खेलन मैं रस रह्यौ, स्यामा परी बिकाइ।
खेलन चले करत अति तरकैं, मारत पीक पराइ॥
पेलि चली जोबन मदमाती, अधर-सुधा-रस प्याइ।
खेलत बने दोउ रँगभीने, स्यामा स्याम खिलाइ॥

इत लिये कनक-लकुटिया नागरि, उत जेरी धरे ग्वार।
इत है रंग रँगीली राधा, उत श्री नंद-कुमार॥
खेलत मैं रिस ना करि नागरि, स्यामहिं लागै चोट।
मोहन है अति माधुरि-मूरति, राखियै अंचल ओट॥
मारि डगं जब फिरि चली सुंदरि, वेनी रुरै सु-अंग।
वदन-चंद के मनहुँ सुधा कौं, उड़ि उड़ि लगत भुजंग॥
रुंज मुरज डफ झाँझ झालरी, जत्र पखावज तार।
मदनभेदि अरु राइ-गिरिगिरी, सुरमंडल झनकार॥
एक जु आई आन गावँ तैं, सुंदर परम सुजान।
यह ढोटा धौं आहि कौन कौ, मारत मनसिज वान॥
जमुना-कूल मूल वंसीवट, गावत गोप धमारि।
लै लै नाउँ गाउँ बरसानो, देत दिवावत गारि॥
खेलि फाग मिलि कै मनमोहन, फगुवा दियौ मँगाइ।
हरषित भई सकल ब्रज वनिता, सूरदास बलि जाइ॥
॥२८९५॥३५१३॥

राग नट नारायन

हो हो हो हो लै लै बोलैं। गोरस केरे माते डोलैं॥
ब्रज के लरिकनि सँग लिये जो लैं। घर घर केरे फरके खोलैं॥
गोपी ग्वाल मिले इक-सारी। बचत नहीं बिनु दीन्हे गारी॥
आनि अचानक अँखियाँ मींचैं। चंदन वंदन ऊपर सींचैं॥
जो कोउ जाइ रहे घर वैसे। करि बरियाइ तहाँहू पैसें॥
हाथनि लिये कनक-पिचकारी। तकि-तकि छिरकत मोहन-प्यारी॥
कुमकुम-कीच मची अति भारी। उड़ति अबीरनि रँगी अटारी॥
अति आनंद भरे सब गावैं। नाना गति कौतुक उपजावैं॥
मोहन गहि आने मिलि धाइ। फगुआ हमकौं देहु मँगाइ॥
भागत कुसुम-हार उर टूटे। पीतांबर गहने दै छूटे॥
सोभा सिंधु बीबढ़्यौ अति भारी। छबि पर कोटि काम बलिहारी॥
सूरदास प्रभु कौ रस होरी। बरनौं कहँ लगि मो मति थोरी॥
॥२८९६॥३५१४॥

राग बिलावल

सौंधे की उठति झकोर, मोहन रंग भरे।

चोवा चंदन अगरु कुकुमा, सो हैं माट भरे॥
रतन जटित पिचकारी कर गहे, बालक बृंद खरे।
भरि पिचकारी प्रेम सौं डारी, सो मेरे प्रान हरे॥
सब सखियनि मिलि मारग रोक्यौ, जब मोहन पकरे।
अंजन आँजि दियौ अँखियनि मैं, हा हा करि उबरे॥
फगुवा बहुत मँगाइ साँवरे, कर जोरे अरज करे।
धनि धनि सूर भाग ताके, प्रभु जाकैं सँग बिहरे॥
॥२८९७॥३५१५॥

राग काफी

राधा मोहन रंग भरे हैं खेल मच्यौ ब्रज-खोरी।
नागरि संग नारि गन सोहैं स्याम ग्वाल सँग जोरि॥
हरि लिये हाथ कनक-पिचकारी सुरँग कुकुमा घोरि।
उतहिं माट कंचन रँग भरि भरि, लै आईं तिय जोरि॥
आतुर ह्वै धाईं उत नागरि, इत बिचले सब ग्वाल।
घेरि लईं सब खोरि साँकरी, पकरे मदन गुपाल॥
गह्यौ धाइ चंद्रावलि हँसि कै, कहाँ भले हो लाल।
जनि चल करौ नैंकु रहौ ठाढ़े, जुरि आईं ब्रज बाल॥
आईं हँसति कहति हरि येई, बहुत करत हे गाल।
क्यौं जू खबरि कहौ यह कीन्ही, करत परस्पर ख्याल॥
काहू तुरत आइ मुख चूम्यौ, कर सौं छुयौ कपोल।
कोउ काजर कोउ बदन माँडति, हरषहिं करहिं कलोल॥
कोउ मुरली लै लगी बजावन, मन भावन-मुख हेरि।
किनहूँ लियौ छोरि पट-कटि तैं वारत तन पर फेरि॥
स्रवननि लागि कहति कोउ बातैं, बसन हरे तेइ आप।
तान्हि कहाँ करिहौ यह मेरौ, प्रगट भयौ सोइ पाप॥
कोउ नैननि सौं नैन जोरि कै, कहति न मोतन चाहौ।
अब ही तुम अकुलात कहा हौ, जानहुगे मन लाहौ॥
चेरि रहीं सखा की नाईं, करति सब मन लाह।
इक कुचनति, इक चिबुक उठावति, बस पाए हरि नाह॥
पीतांबर मुरली लै नबहीं, जुवती स्वाँग बनाइ।
देखत सखा दूरि भए ठाढ़े, निरखत स्याम लजाइ॥

नख-छत-छाप बनाइ पठाए, जानि मानि गुन येहु।
सूर स्याम हम कौं जनि बिसरौ, चिन्ह यहै तुम लेहु॥
॥२८९८॥३५१६॥

रागिनी टोड़ी

ग्वाल हँसे मुख हेरि कै, अति बने कन्हाई।
हलधर कौं लियौ टेरि, आजु अति बने कन्हाई॥
हा हो करि करि कहत हैं, अति बने कन्हाई।
रहे चहूँघा घेरि, आजु अति बने कन्हाई॥
ऐसेहिं चलियै नंद पै, अति बने कन्हाई।
बल की सौंह दिवाइ, आजु अति बने कन्हाई॥
भुजा गहे तहँ लै गए, अति बने कन्हाई।
वह छबि बरनि न जाइ, आजु अति बने कन्हाई॥
इत जुवती-मन हरत हैं, अति बने कन्हाई।
उतहिं चले है भोर, आजु अति बने कन्हाई॥
और सखी आईं तहाँ, अति बने कन्हाई।
करि करि नैन चकोर, आजु अति बने कन्हाई॥
महर हँसे छबि देखि कै, अति बने कन्हाई।
सुनि जननी तहँ आइ, आजु अति बने कन्हाई॥
हँसि लीन्हौ उर लाइ कै, अति बने कन्हाई।
आनँद उर न समाइ, आजु अति बने कन्हाई॥
कछुक खीझि कछु हँसि कह्यौ, अति बने कन्हाई।
किन यह कीन्हौ हाल, आजु अति बने कन्हाई॥
लेति बलैया वारि कै, अति बने कन्हाई।
ये ऐसियै ब्रजबाल, आजु अति बने कन्हाई॥
रँग रँग पहिरावनि दई, अति बने कन्हाई।
जुवतिनि महर बुलाइ, आजु अति बने कन्हाई॥
यह सुख प्रभु कौ देखि कै, अति बने कन्हाई।
सूरदास बलि जाइ, आजु अति बने कन्हाई॥
॥२८९९॥३५१७॥

राग कल्याण

ब्रजरान लड़ैतौ गाइयै (मन) मोहन जाकौ नाउँ।
खेलत फागु सुहावनौ, (रँग) भीजि रह्यौ सब गाउँ॥

ताल पखावज बाजहीं, (हो) डफ सहनाई भेरि।
स्रवन सुनत सब सुंदरी, (हो) कुंडनि आईं घेरि॥
इतहिं गोप सब राजहीं, (हो) उत सब गोकुल नारि।
अति मीठी मन-भावती, (हो) देहिं परस्पर गारि॥
चोवा चंदन छिरकहीं, (हो) उड़त अबीर गुलाल।
मुदित परस्पर खेलहीं, (हो) हो हो बोलत ग्वाल॥
सब गोपिनि हलधर पकरि, (हो) छाँड़े पाइ लगाइ।
दाऊ आजु भले बने, (हो) आए आँखि अँजाइ॥
बहुरि सिमिटि ब्रजसुंदरी, (हो) पकरे गोकुलनाथ।
नव कुमकुम मुख माँडि कै, (हो) बेनी गूँथी माथ॥
तब नँदरानी बीच कियौ, (बहु) मेवा दिये मँगाइ।
पट भूषन दियौ सबनि कौं (हो) निरखि सूर बलि जाइ॥

२५००॥३५१८॥

राग गौरी

ग्वालिनि जोबन-गर्ब गहेली। राधे कैं सँग फिरत सहेली॥
कुमकुम उबटि कनक-तन गोरी। अंग सुगंध चढ़ाइ किसोरी॥
दच्छिन चीर तिपाइ कौ लहँगा। पहिरि बिबिध पट मोलनि महँगा॥
कबरी कुसुम माँग मोतियनि मनि। केसरि-आड़ ललाट, भ्रकुटि बनि॥
कज्जल-रेख नैन अनियारे। खंजन मीन मधुप मृग हारे॥
स्रवननि कुंडल रबि सम ज्योती। नकबेसरि लटकैं गज-मोती॥
दसन अनार अधर बिंब जानौ। चिबुक चारु मृग्यौ मधु मानौ॥
कंठ कपोत मुक्तावलि हार। जनु जुग गिरि-बिच सुरसरि धार॥
उच चकवा, मुख-ससि भ्रम भूले। बैठे बिछुरि दुहूँ अनुकूले॥
कर पल्लव चूरा गजदंती। नग मंडित मनि मानिक-कंती॥
नाभी हद, तन हाटक-बरनी। कटि मृगराज, किंकिनि करनी॥
कदली जंघ, चरन कल नूपुर। गवन मराल करति धरनी पर॥
भूषन अंग सजे सब गोरी। गावति फाग नंद की पौरी॥
सुनि सुंदर वर बाहिर आए। हलधर ग्वाल गुपाल बुलाए॥
इत बन नर उत बन भईं नारी। खेल मच्यौ ब्रज के बिच भारी॥
कुमकुम चंदन अरगज घोरे। हाथनि पिचकारी लै दौरे॥
कैधौं गोप [illegible] झकझोरें। अंचल गाँठि परस्पर जोरे॥

उड़त गुलाल अरुन भए अंबर। कुमकुम-कीच मची धरनी पर॥
चंग मृदंग बाँसुरी बाजै। पकरत एक एक भरि भाजै॥
राधा मिलि इक मंत्र उपायौ। हलधर अपनी भीर बुलायौ॥
कान लागि स्यामा समुझायौ। संकर्षन गहि स्यामहिं ल्यायौ॥
हरि के हाथ गहे चंद्रावलि। कज्जल लै आई संभ्रावलि॥
ललिता लोचन आँजन लागी। चंद्रभगा मुरली लै भागी॥
इक लै लावति हरद कपोलनि। इक लै पोंछति ललित पटोलनि॥
इक अवलंबति, इक अवलोकति। चुंबन दान देति इक दंपति॥
मगन भईं अप बपु न सम्हारति। लालन भुज अपनैं उर धारतिं॥
गुरुजन खरे सबै मिलि देखैं। तिनकौं तरुनी तृन सम लेखैं॥
एक कहै पिय कौ मुख माँडै। एक कहैं फगुआ लै छाँड़ै॥
एक लियौ पट पीत छुड़ाई। राधा राखति कृष्ण-बड़ाई॥
सिमटे सखा छुड़ावन आए। उन लियौ ढेल न मोहन पाए॥
घाँसनि मार मची कर आड़े। ग्वाल टिके पग एक न छाँडे॥
बल कियौ बीच ग्वाल समुझाए। मोहन मेवा मोल मँगाए॥
फगुआ लै लालन छिटकाए। हँसत गुपाल ग्वाल तहँ आए॥
तब मोहन हलधर पकराए। करहु तरुनि अपने मन-भाए॥
नाक नयन मुख काजर लायौ। हरद कलस हलधर सिर नायौ॥
बहुत भरे बलराम सबनि गहि। धौलागिरि मनु धातु चलीं बहि॥
न्हान चले जमुना कैं कूल। गोपी गोप भए अनकूल॥
जो रस बाढ़्यौ खेलत होरी। सारद का बरनै मति भोरी॥
सूरदास सो कैसैं गावै। लीला-सिंधु पार नहिं पावै॥
॥२९०१॥३५१९॥

राग गौरी

गारी होरी देन दिवावत। ब्रज मैं फिरत गोप-गन गावत॥
दूध दही के माते डोलैं। काहे न हो हो हो हो बोलैं॥
बगलनि मैं दाबे पिचकारी। बाँधत फेटैं पाग सँवारी॥
रुकि गए बाटनि नारे पैंड़े। नव केसरि के माट उलैंड़े॥
छज्जनि तैं छूटति पिचकारी। रँगि गई बाखरि महल अटारी॥
नाना रंग गए रँगि बागे। बलदाऊ इत उत ह्वै भागे॥
न्हान चले जमुना कैं तीर। मनमोहन हलधर दोउ बीर॥

सूरदास-प्रभु सब सुखदायक। दुर्लभ रूप देखिबैं लायक॥

॥२९०२॥३५२०॥

राग श्रीहठी

ऋतु बसंत के आगमहिं, मिलि झूमक हो।
सुख सदन मदन को जोर, मिलि झूमक हो॥
कोकिल बचन सुहावनो, मिलि झूमक हो।
हित गावत चातक मोर, मिलि झूमक हो॥
वृंदावन घन तरु लता, मिलि झूमक हो।
सब फूलि रहीं बन राइ, मिलि झूमक हो॥
जमुना पुलिन सुहावनो, मिलि झूमक हो।
बहै त्रिविध पवन सुखदाइ, मिलि झूमक हो॥
जहाँ निवारी, सेवती, मिलि झूमक हो।
बहु पाडल विपुल गँभीर, मिलि झूमक हो॥
खूभौ, मरुवौ, मोगरौ, मिलि झूमक हो।
कुल केतकि, करनि, कनीर, मिलि झूमक हो॥
बेलि, चमेली, माधवी, मिलि झूमक हो।
मृदु मंजुल बकुल, तमाल, मिलि झूमक हो॥
नव-बल्ली-रस बिलसहीं, मिलि झूमक हो।
मनु मुदित मधुप की माल, मिलि झूमक हो॥
ताल पखावज बाजहीं, मिलि झूमक हो।
बिच डफ मुरली की घोर, मिलि झूमक हो॥
चलहु अली तहँ जाइये, मिलि झूमक हो।
जहँ खेलत नंदकिसोर, मिलि झूमक हो॥
जूथनि जूथनि सुंदरी, मिलि झूमक हो।
जिनि जोवन लजत अनंग, मिलि झूमक हो॥
चोवा चंदन अरगजा, मिलि झूमक हो।
मथि लै निकसीं इक संग, मिलि झूमक हो॥
प्रति अँग भूषन साजि कै, मिलि झूमक हो।
लिये कनक-कलस भरि रंग, मिलि झूमक हो।
जाइ परस्पर छिरकहीं मिलि झूमक हो।
प्रिय स्यामल सुंदर अंग, मिलि झूमक हो।

इततैं गईं ब्रज सुंदरी, मिलि झूमक हो।
उत मोहन नवल अहीर, मिलि झूमक हो॥
बाँस धरे, जेरी धरे, मिलि झूमक हो।
बिच मार मची भई भीर, मिलि झूमक हो॥
इक सखि निकसी झुंड तैं, मिलि झूमक हो।
तिनि पकरि लिये हरि हाथ, मिलि झूमक हो॥
बहुरि उठीं दस बीस मिलि, मिलि झूमक हो।
धरि लिये आइ ब्रजनाथ, मिलि झूमक हो॥
इक पट पीतांबर गह्यौ, मिलि झूमक हो।
इक मुरली लई छँड़ाइ, मिलि झूमक हो॥
इक मुख मींड़हि कुमकुमा, मिलि झूमक हो।
इक गारी दै उठी गाइ, मिलि झूमक हो॥
प्यारी कर काजर लियौ, मिलि झूलक हो।
हँसि आँजति पिय की आँखि, मिलि झूमक हो॥
इहिँ बिधि हरि कौं घेरि रहीं, मिलि झूलक हो।
ज्यौं घेरि रहीं मधु-माखि मिलि झूमक हो॥
अब तौ घात भली बनी, मिलि झूमक हो।
तब चीर हरे, जल-तीर मिलि झूमक हो॥
सो परिहस हम सारिहैं मिलि झूमक हो।
सुनि लेहु ललन बलबीर, मिलि झूमक हो॥
अब हम तुमहिं नँगाइहैं, मिलि झूमक हो।
मुसुकात कहा जदुराइ, मिलि झूमक हो॥
कै हमसौं हा हा करौ, मिलि झूमक हो।
कै परहु कुँवरि कैं पाइ, मिलि झूमक हो॥
बंक बिलोकनि मन हर्‌यौ, मिलि झूमक हो।
ठगि तुमहिं रहीं ब्रज-बाल, मिलि झूमक हो॥
फगुआ बहुत मँगाइ लियौ मिलि झूमक हो।
मधु मेवा मधुर रसाल, मिलि झूमक हो॥
कहि मोहन ब्रज-सुंदरी, मिलि झूमक हो।
तब धाइ धरे बल घेरि, मिलि झूमक हो॥
संक सकुच सब छाँड़ि कै, मिलि झूमक हो।
चहुँ पास रहीं मुख हेरि, मिलि झूमक हो॥

कनक-कलस भरि कुमकुमा, मिलि झूमक हो।
धरि ढारि दिये सिर आनि, मिलि झूमक हो॥
चंदन बंदन अरगजा, मिलि झूमक हो।
सब छिरकतिं करतिं न कानि मिलि झूमक हो॥
खेलि फाग अनुराग बढ़्यौ, मिलि झूमक हो।
फिरि चले जमुन जल न्हान, मिलि झूमक हो॥
द्वितीया बैठि सिंहासनैं, मिलि झूमक हो।
दोउ देत रतन-मनि-दान, मिलि झूमक हो॥
इहिं बिधि हरि-सँग खेलहीं, मिलि झूमक हो।
गन-गोकुल-नारि अनंत, मिलि झूमक हो॥
सूर सबनि कौं सुख दियौ, मिलि झूमक हो।
रमि रसिक राधिका-कंत, मिलि झूमक हो॥

॥२९०३॥३५२१॥

राग आसावरी

डफ बाजन लागे हेली।
चलहु चलहु जैयै तहँ री, जहँ खेलति स्याम सहेली॥
जहँ घन सुंदर साँवरौ, नहिं मिस देखन-दाउँ।
ये गुरुजन बैरी भए, कीजै कौन उपाउ॥
आवहु बछरा मेलियै, बन कौं देहि बिडारि।
वै देहैं हमकौं पठै, देखैं रूप निहारि॥
औंजत गागरि ढारियै, जमुना-जल कैं काज।
इहिं मिस बाहिर निकसि कै, जाइ मिलैं ब्रजराज॥
राग रंग रँगि सँगि रह्यौ नंदराइ दरबार।
गावतिं सकल गुवालिनी, नाचत सकल गुवार॥
घरी-घरी आनंद करि जीवन जानि असार।
खाइ खेलि हँसि लीजियै, फाग बड़ौ त्यौहार॥
मुरली मुकुट बिराजहीं, कटि पट राजत पीत।
सूरज-प्रभु आनंद सौं गावत होरी गीत॥

॥२९०४॥३५२२॥

राग आसावरी

नंदलाल राजकुमार छबीले हो ललना। (टेक)
धनि धनि नंद जसोमती, धनि धनि गोकुल गाउँ।

धन्य कुँवर दोउ लाड़िले, बल मोहन जिन नाउँ ॥
सखा नाम लै बोलहीं, सुबल तोष श्रीदाम।
जहाँ तहाँ तैं उठि चले, बोलत सुंदर स्याम ॥
गिरिवरधारी रस भरे, मुरली मधुर बजाइ।
स्रवन सुनत गोपी सबै, घर घर तैं चलीं धाइ ॥
बेप बिचित्र बनाइ कै, भूपन बसन सिँगारि।
मंदिर तैं सब सजि चले, बालक बल बनवारि ॥
एक ओर जुवती जुरीं, एक ओर बलबीर।
धाँसनि मार मची मनो, रूपे सुभट रनधीर ॥
सकिलि बधू आईं सबै अपनैं अपनैं टोल।
भूमक सेती गावहीं नैंकु बिच बिच मीठे बोल ॥
एक सखी तब सैन दै, लीन्हौ सुबल बुलाइ।
हा हा क्यौं हूँ भाँति कै, मोहन कौं पकराइ ॥
बहुरि उलटि ब्रज सुंदरी, मोहन लीन्हे घेरि।
नैननि काजर दै चलीं, हँसत बदन-तन हेरि ॥
रुंज मुरलि डफ दुंदुभि, बाजैं बहु बिधि साज।
बिच बिच भेरी भिमझिमी, सब्द सुघोष समाज ॥
इहिं बिधि होरी खेलहीं, सकल घोष सुखदाइ।
गिरिवरधारी-रूप पर, सूरज जन बलि जाइ ॥

॥२९०५॥३५२३॥

राग काफी

(मन मोहन ललना मन हर्‌यो हो ।)

गृह गृह तैं सुंदरि चलि देखन, श्रीब्रजराज कुमार।
देखि बदन बिथकित भईं, मोहन ठाढ़े सिंह दुवार ॥
डिमडिम पटह, ढोल, डफ, बीना, मृदँग चंग अरु तार।
गावत प्रभृति सहित श्रीदामा, बाढ़्यौ रंग अपार ॥
इत राधिका सहित चंद्रावलि, ललिता घोष अपार।
उत मोहन हलधर दोउ भैया, खेल मच्यौ दरबार ॥
रत्न-जटित पिचकारी कर लिये, छिरकतिं घोष-कुमारि।
मदन मोहन पिय रँग रस माती, कछुव न अंग सम्हारि ॥
मोहन प्यारी सैन दै हलधर, पकराए तिन्ह जाइ।
आपुन हँसत पीत पट लुब्ध दिए आए आँखि अँजाइ ॥

बहुरि सिमिटि ब्रज-सुंदरि, छल करि, मोहन पकरे जाइ।
करति अधर-रस पान पिया कौ, मुरली लई छँड़ाइ॥
परिवा सिमिटि सकल ब्रजवासी, चले जमुन-जल न्हान।
वारि कुँवर पर पट नँदरानी, दियैं विप्रनि बहु दान॥
द्वितिया पाट सिंहासन बैठे, चमर छत्र सिर ढार।
सूरज-प्रभु पर सकल देवता, बरषत सुमन अपार॥
॥२९०६॥३५२४॥

राग श्रीहठी

स्याम संग खेलन चलीं स्यामा, सब सखियन कौं जोरि।
चंदन अगर कुमकुमा केसरि, बहु कंचन-घट घोरि॥
खेलत मोहन रंग भरे हो, संग बाल ब्रज-बासि।
लाल पियारौ रूप उजारौ, सुंदर सब सुख-रासि॥
फूलनि के कंदुक नौलासी, कनक लकुटिया हाथ।
जाइ गही ब्रज खोरि राधिका, कोटिक जुवती साथ॥
उत तैं हरि आए जब खेलत, हो हो होरी संग।
कान परी सुनियै नाहीं, बहु बाजत ताल मृदंग॥
पहिलैं सुधि पाई नाहीं तब घिरे साँकरी खोरि।
अब हलधर उलटहु काहैं तुम, धावहु ग्वालनि जोरि॥
धरत भरत भाजत राजत, गेंदुक नौलासी मार।
रसन बसन छूटत न सँभारत, टूटत हैं उर हार॥
जब मोहन न्यारे करि पाए, पकरे चहुँ दिसि घेरि।
बोलहु जू अब आनि छुड़ावैं, बल भैया कौं टेरि॥
आजु हमारैं बस्य परे हो, जैहौ कहा छुँड़ाइ।
की बल छूटहु अपनैं, की अब जसुमति माइ बुलाइ॥
एक गहै कर, एक फेंट पीतांबर लियौ, छँड़ाइ।
राधा हँसति दूर भई ठाढ़ी, सखियन देति सिखाइ॥
एक स्रवन मैं कहि कछु भाजति एक भरति अँकवारि।
एक निहारति रूप माधुरी, एक अपुन पौ वारि।
एक चिबुक गहि बदन उठावति, हम तन लाल निहारि।
एक नैन की सैन मिलावति, एक उठति दै गारि॥
आईं भूमि सकल ब्रज-बनिता हरि देखी चहुँ ओर।
राधा दृष्टि परैं बिनु, मोहन ललकत नैन चकोर॥

हरि तव अपनें कर वर सौं, घूँघट पट कीन्हौ दूरि।
हँसत प्रकास भयो चहुँ दिसि मैं, सुधा किरनि भरि पूरि ॥
आँखि दिखावत हौ जु कहा तुम, करिहौ कहा रिसाइ।
हम अपनौ भायौ करि लैहैं, छुवहु कुँवरि के पाइ ॥
तव तुम अंवर हरे हमारे, कीन्हें कौन उपाइ।
अव तौ दाउँ पर्यौ धरि पाए, छाँड़हिं तुमहिं नँगाइ ॥
मुख की कहत सवै झूठी, मनहीं मन वहुत सनेहु।
कूट करैंगे वल भैया अव, हमहिं छाँड़ि किनि देहु ॥
तुम जो फगुवा देहु कहा वलि, वोलहु साँचे वोल।
की हमसौं हाहा करियै, को देहु श्रीदामा ओल ॥
हँसि हँसि कहत, सहत सवही की आभूपन सव लेहु।
नासा को मुक्ता अरु मुरली, पीतांवर मोहिं देहु ॥
एक वनाइ देति वीरी, कर पल्लव छुवति कपोल।
धन्य-धन्य वड़ भाग सवनि के, वस कीन्हें विनु मोल ॥
उड़त गुलाल अवीर कुमकुमा, छवि छाई जनु साँझ।
नाहीं दृष्टि परत राधा मुख-चंद निलांवर माँझ ॥
खेलि फाग अनुराग वढ़्यौ, घर मची अरगजा-कीच।
व्रज-वनिता कुमुदिनि सी फूलीं, हरि ससि राजत वीच ॥
अष्ट सिद्धि, नव निधि, व्रज-वीथिनि डोलति घर-घर वार।
सदा वसंत वसत वृंदावन, लता लता द्रुम-डार ॥
देखि देखि सोभा-सुख-संपति, जिय मैं करतिं विचार।
व्रज-वनिता हम क्यौं न भईं यौं कहति सकल सुर-नार ॥
फाग खेलि अनुराग वढ़ायौ, सवकैं मन आनंद।
चले जमुन अस्नान करन कौं सखा, सखी, नँद नंद ॥
दुष्टनि-दुख, संतनि-सुख-कारन, व्रज-लीला अवतार।
जै जै ध्वनि सुमननि सुर वरपत, निरखत स्याम विहार ॥
जुगल-किसोर-चरन-रज माँगौ, गाऊँ सरस धमारि।
श्रीराधा गिरिवरधर ऊपर, सूरदास वलिहारि ॥

॥२९०७॥३५२५॥

राग नट नारायन

खेलन फागु कहत हो होरी।
उत नागरी समाज विराजत, इत मोहन हलधर की जोरी ॥

बाजत ताल मृदंग, झाँझि, डफ, रुंज, मुरज, बाँसुरि-धुनि थोरी।
स्रवन सुहाई गारि दै गावतिँ, ऊँची तान लेतिँ प्रिय गोरी॥
कोटि मदन दुरि गयौ देखि छवि, तेऊ मोहे जिन मति भोरी।
मोहन नंद-नँदन रस बिथकित, क्योँहूँ दृष्टि जाति नहिँ मोरी॥
कुमकुम रंग भरी पिचकारी हरि तन, छिरकति नवलकिसोरी।
इहिँ विधि उमँगि चल्यौ रँग जहँ तहँ, मनु अनुराग सरोवर फोरी॥
कबहुँक मिलि दस बीसक धावतिँ, लेतिँ छिँडाइ मुरलि झकझोरी।
जाइ श्रीदामा लै आवत तब, दियेँ मानौँ बहु भाँति पटोरी॥
भरि कर-कमल अबीर उड़ावति, गोविंद निकट जाइ दुरि चोरी॥
मनहुँ प्रचंड बात-हत पंकज-धूरि, गगन सोभित चहुँ ओरी॥
कनक कलस कुमकुम भरि लीन्हौ, कस्तूरी तामैँ घसि घोरी।
खेल परस्पर कीच मची घर, अधिक सुगंध भई ब्रज-खोरी॥
ग्वाल बाल सब संग मुदित मन, जाइ जमुन जल न्हाइ हिलोरी।
नए बसन आभूषन पहिरत, अरुन, सेत पाटंबर फोरी॥
दुइज समाज समेत करत द्विज तिलक, दूब-दधि रोचन रोरी।
सूर स्याम बिप्रनि, बंदीजन, देत रतन कंचन की बोरी॥
॥२९०८॥३५२६॥

राग सारंग

बनी रूप रँग राधिका, तातेँ अधिक बने ब्रजनाथ।
ललिता अरु चंद्रावली, मिलि बन्यौ छबीलौ साथ॥
ताल पखावज बाजहीँ, संग डफ मुरली को घोर।
नंद-द्वार औसर रच्यौ, दोउ राजत नवलकिसोर॥
एक कोँध ब्रज सुंदरी, इक कोँध गुवाल गोबिंद।
सरस परस्पर गावहीँ, दै गारि नारि बहु बृंद॥
आवहु री हम दूरि रहैँ, बलभद्र, कृष्न गहि देहिँ।
लोचन उनके आजहीँ, अरु अधरनि कौ रस लेहिँ॥
सीला नाम गुवालिनी, तिहिँ गहे कृष्न धपि धाइ।
उपरैना मुरली लई, मुख निरखि हरषि मुसुकाइ॥
गहे अचानक राधिका, तब रही कंठ भुजलाइ।
मन के सब सुख भोगए, जब परसे जादवराइ॥
कोटि कलस भरि बारुनी, दई बहुत मिठाई पान।
राधा माधौ रस रह्यौ, सब चले जमुन जल न्हान॥

द्वितिया सकल समाज सौं, पट बैठे आनँदकंद।
दान देत ब्रज-सुंदरी, नग भूषन नवनिधि नंद॥
वन वीथिनि अरु पुर गलिनि, उमँग्यौ रंग अपार।
सूर सु नभ सुर थकित, रहे निरखत प्रान-अधार॥
॥२९०९॥३५२७॥

राग सारंग

स्यामा स्याम खेलत दोउ होरी। फागुन मच्यौ अति ब्रज की खोरी॥
इतहिं बनी वृषभानु-किसोरी। सँग ललिता चंद्रावलि जोरी॥
ब्रज-जुवती सँग राजति भोरी। बनि सिंगार श्री राधा गोरी॥
उतहिं स्याम हलधर दोउ जोरी। वारौं कोटि-काम-छबि थोरी॥
ग्वाल अबीरनि की लिये झोरी। सुरँग गुलाब अरगजा रोरी॥
गावति सबै मधुर सुर गोरी। तान लेति दै दै झकझोरी॥
राधा सहित चंदावलि दौरी। औचक लीन्ही पीत पिछौरी।
देखत ही लै गई अँजोरी। डारि गई सिर-स्याम ठगोरी॥
ग्वाल देत होरी की गारी। बैर कियौ हम सौं तुम भारी॥
हँसति परस्पर जोवन चोरी। लै आईं हरि पीत पिछौरी॥
घात करति मन मुरली कौं री। अधरनि तैं नहिं टारति जो री॥
भली करी तुम सब हम सौं री। सावधान अब होहु किसोरी॥
स्याम चितै राधा मुख-ओरी। नैन-चकोर चंद दरस्यौ री॥
पिय कौं पिया मोहिनी लाई। इहि अंतर गोपी हँसि धाई॥
गह्यौ हरषि भुज ललिता जाई। गई स्याम की सब चतुराई॥
मनमानी सब करतिं बड़ाई। राधा-मोहन गाँठि जुराई॥
करति सबै रुचि की पहुनाई। नंद महर कौं गारी गाई॥
फगुवा हमकौं देहु मँगाई। पँचरँग सारी बहुत दिवाई॥
तुरत सबै जुवतिनि पहिराई। लीन्ही जो जाकैं मन भाई॥
खेलत फागु रह्यौ रस भारी। वृद्ध किसोर बाल अरु नारी॥
अति स्रम जानि गए जल-तीरा। ग्वाल ग्वालि हलधर हरि बीरा॥
परम पुनीत जमुन-जल-रासी। क्रीड़त जहाँ ब्रह्म अविनासी॥
धन्य धन्य सब ब्रज के बासी। विहरत हैं हरि सँग करि हाँसी॥
जल क्रीड़ा तरुनिनि मिलि कीन्हौ। ब्रज नर-नारिनि कौं सुख दीन्हौ॥
करि अस्नान चले ब्रज-बामा। करे सबनि के पूरन कामा॥
जो सुख नंद जसोदा पायौ। सो सुख नाहीं प्रगट बतायौ॥

सुर बनिता यह साध विचारैं। कैसैं हरि-सँग हमहुँ विहारैं॥
धन्य धन्य ये ब्रज की बाला। धन्य धन्य गोकुल के ग्वाला॥
सूर स्याम जिनके सुखदाई। भुव प्रगटे हरि हलधर भाई॥
॥२९१०॥३५७८॥

राग सारंग

करत जदुनाथ जलधि-जल केलि।
अबलनि-कर लिये, अबु अमृत किये, दिये नव नव सुख खेलि॥
यौं राजत तिहिं काल लाल, ललना रसाल रस रंग।
मानहुँ न्हात मदन-धुजिनी-गज, सजनी गजिनी संग॥
स्रवत सलिल सिर विदित अलक इव, राहु वदन-विधु दमत।
मनहुँ पान करि मौजनि सौं अलि, पियो कमल-रस वमत॥
धुनि न करत, उर डरत सिंधु अति, तरँग रह्यौ ठहराइ।
पूजे कृष्न उजागर सागर, बेरा गर पहिराइ॥
भवन गवन यौं नंदसुवन तब, निकसि चढ़े रथ कूल।
निरखत बरखत कुसुम त्रिदस, जन सूर सुमति मन फूल॥
॥२९११॥३५७९॥

राग बसंती

जदुपति जल क्रीडत जुवति संग।
सागर सकुचित तजियत तरंग॥
षोडस सहस्र सत अष्ट नारि।
तिन मैं अति सोभित श्री मुरारि॥
उडगन समेत ससि सिंधु वारि।
मनु पुनि आयौ चित-हित विचारि॥
मृगमद मलयज केसरि कपूर।
कुमकुमा कलित कृत अगरु चूर॥
छूटत कटाच्छ सर भ्रकुटि पूर।
मनु धनुष-निपुन, संग्राम सूर॥
चंचल मलयानिल चलत सीर।
अरु जलद बृंद छिति भिन समीर॥
वर वदन निकट कच चुवत नीर।
मकरंद निमित मधुकर अधीर॥

जहँ नारदादि मुनि करत गान।
जग पूरत हरि-जस-सुचि-बितान॥
सुर सुमन सुघन बरषत बिमान।
जै जै सूरज-प्रभु सुख-निधान॥
॥२९१२॥३५३०॥

राग कल्यान

जमुना तैं हौं बहुत रिझायौ।
अपनी सौंह दिये नंद-दुहाई, ऐसौ सुख मैं कबहुँ न पायौ॥
मिले मातु पितु बंधु स्वजन सब, सखनि संग बन बिहरन आयौ।
अज अनत भगवंत धरनि धर, सुबस कियौ प्रिय गान सुनायौ॥
भयौ प्रसन्न प्रेम हित तेरे, कलिमल हरे जु इहिं जल न्हायौ।
अब जिय सकुच कछू मति राखहि, माँगि सूर अपनौ मन भायौ॥
॥२९१३॥३५३१॥

राग गौरी

कछु दिन ब्रज औरौ रहौ, हरि होरी है।
अब जिनि मथुरा जाहु, अहो हरि होरी है॥
परब करौ घर आपनैं, हरि होरी है।
कुसल छेम निरबाहु, अहो हरि होरी है॥
पंद्रह तिथि भरि बरनिहौं, हरि होरी है।
सारद कृपा समाज, अहो हरि होरी है॥
फागुन मदन महीपती, हरि होरी है।
करियै इहिं बिधि राज, अहो हरि होरी है॥
परिवा पिय चलियै नहीं, हरि होरी है।
सब सुख कौ फल फाग, अहो हरि होरी है॥
प्रगट करौ यह जानि कै, हरि होरी है।
अंतर कौ अनुराग, अहो हरि होरी है॥
गनहु द्वैज दिन सोधि कै, हरि होरी है।
भूपति ह्वैहै काम, अहो हरि होरी है॥
ससि रेखा सिर तिलक दै, हरि होरी है।
सब कोउ करै प्रनाम, अहो हरि होरी है॥

कनक-सिंहासन बैठिहै, हरि होरी है।
जुवतिनि के उर आनि अहो हरि होरी है॥
चिकुर चौंर अचल धुजा, हरि होरी है।
घूँघट आतप तानि, अहो होरी है।
तजि तिहूँ पुर प्रगटि है, हरि होरी है।
अपनी आन नरेस, अहो हरि होरी है॥
सुनि पग पग डफ डिमडिमी, हरि होरी है।
सोइ करि है सब देस, अहो हरि होरी है॥
चौथि चहूँ दिसि चालिहै, हरि होरी है।
यह अपनी इक नीति, अहो हरि होरी है॥
करै भावतो नृपति को, हरि होरी है।
छाँडि सकुच कुल रीति, अहो हरि होरी है॥
पाँचै परिमिति परिहरै, हरि होरी है।
चलै सकल इक चाल, अहो हरि होरी है॥
नारि पुरुष मादर करैं हरि होरी है।
वचन-प्रीति-प्रतिपाल, अहो हरि होरी है॥
छठि छ राग रस रागिनी, हरि होरी है।
ताल तान बयान, अहो हरि होरी है॥
चटुल चरित रतिनाथ के, हरि होरी है।
सीखत है अवधान, अहो हरि होरी है॥
सुनि सातैं सब सजग ह्वै हरि होरी है।
सबनि मत्यौ मन एक, अहो हरि होरी है॥
नृपति कहै सोइ कीजियै, हरि होरी है।
क्यौं रागियै बिबेक, अहो हरि होरी है॥
आठैं सुनि सब सजि भए, हरि होरी है।
राजा की रुचि जानि, अहो हरि होरी है॥
करहु क्रिया तैसी सबै, हरि होरी है।
आयसु माथैं मानि, अहो हरि होरी है॥
नवमी नवसत साजि कै, हरि होरी है।
करि सुगंध उपहार, अहो हरि होरी है॥
मनहुँ चली मिलि मेलि कै, हरि होरी है।
मनमिन-भवन जुहार, अहो हरि होरी है॥

दसमी दस दिसि सोधि कै, हरि होरी है।
बोले राजा राह, अहो हरि होरी है॥
काज करहु रुचि आपनी, हरि होरी है।
तौ यह काज सिराइ, अहो हरि होरी है॥
सुनि आयसु एकादसी, हरि होरी है।
बोले सब सिर नाइ: अहो हरि होरी है॥
जग जीतहु बल आपनैं, हरि होरी है।
ज्ञान बिराग छँड़ाइ, अहो हरि होरी है॥
देखि भले भट आपने, हरि होरी है।
द्वादस दिवस बिचारि, अहो हरि होरी है॥
करहु क्रिया तैसी सबै, हरि होरी है।
है निसंक नर नारि, अहो हरि होरी है॥
ढोल भेरि डफ बाँसुरी, हरि होरी है।
बाजै पटह निसान, अहो हरि होरी है॥
मिलहु लोक-पति छाँड़ि कै, हरि होरी है।
उबरौ नहीं निदान, अहो हरि होरी है॥
राते कवच बरात सजि, हरि होरी है।
खरनि भए असवार, अहो हरि होरी है॥
धूरि धातु रँग घट भरे, हरि होरी है।
धरे यंत्र हथियार, अहो हरि होरी है॥
जहाँ तहाँ सेना चली, हरि होरी है।
मुक्त काछ सिर केस, अहो हरि होरी है॥
आपौ पर समुझैं नहीं, हरि होरी है।
राजा रंक अबेस, अहो हरि होरी है॥
जे कबहूँ देखी नहीं, हरि होरी है।
कबहूँ सुनीं न कान, अहो हरि होरी है॥
ते कुल नारि निडर भईं, हरि होरी है।
लागे लोग परान, अहो हरि होरी है॥
भस्म भरैं, अंजन करैं, हरि होरी है।
छिरकैं चंदन बारि. अहो हरि होरी है॥
मरजादा राखै नहीं, हरि होरी है।
कटि-पट डारैं फारि, अहो हरि होरी है॥

जहाँ सुनहिं तप-सजमी, हरि होरी है।
धर्म धीर-आचार, अहो हरि होरी है॥
छिरकहिं तहीं निसंक ह्वै, हरि होरी है।
पकरहिं तोरि किवार, अहो हरि होरी है॥
सठ पडित वेस्या बधू, हरि होरी है।
सबै भए इकसारि अहो हरि होरी है॥
तेरसि चौदस दिवस द्वै, हरि होरी है।
जनु जीते जग भार, अहो हरि होरी है॥
पून्यौ प्रगट प्रताप तें, हरि होरी है।
दूरि मिले पालागि, अहो हरि होरी है॥
जहाँ तहाँ होरी जरै, हरि होरी है।
मनहुँ मवासें आगि, अहो हरि होरी है॥
सब नाचहिं गावहिं सबै, हरि होरी है।
सबै उडावहिं छार, अहो हरि होरी है॥
साधु असाधु न समुझहीँ, हरि होरी है।
बोलहिं वचन विकार, अहो हरि होरी है॥
अति अनीति-मिति देखि कै, हरि होरी है।
परिवा प्रगटी, आनि, अहो हरि होरी है॥
विमल बसन तन साजहीं, हरि होरी है।
मरजादा की कानि, अहो हरि होरी है॥
आवत ही आदर करैं, हरि होरी है।
हँसि जोरहिं उठि हाथ, अहो हरि होरी है॥
बरन धर्म मिति राखहीं, हरि होरी है।
कृपा करी रति-नाथ, अहो हरि होरी है॥
सुनि विनती रितुराज की, हरि होरी है।
प्रभु समुझे मन माँहिं, अहो हरि होरी है॥
जाइ धर्म अपने रहो, हरि होरी है।
छमा हमारी बाँहिं, अहो हरि होरी है॥
और कहाँ लौं बरनियै, हरि होरी है।
मनसिज के गुन ग्राम, अहो हरि होरी है॥
सुनहु स्याम या मास मैं, हरि होरी है।
कियौ जु कारन काम, अहो हरि होरी है॥

सूर रसिक मनि राधिका, हरि होरी है।
कहि गिरिधर सौं बात, अहो हरि होरी है॥
स्याम कृपा करि ब्रज रहौ, हरि होरी है।
बरजति मधुबन जात, अहो हरि होरी है॥

॥२९१४॥३५३२॥

राग धनाश्री

कछु इक दिन औरौ रहौ, अब जिनि मथुरा जाहु।
परब करहु घर आपने, कुसल छेम निरबाहु॥
आठैं उर उनमानि कै, सबनि कियौ मत एक।
रितुराजहिं देखन चलीं, फूलत कुसुम अनेक॥
नवैं नवल नव नागरी, नव जोबन, नव भूप।
नयौ नेह नित नाह सौं, नवसत सजे अनूप॥
दसै दसौं दिसि घोष मैं, घर-घर करहिं अनंद।
नर नारी मिलि गावहीं, जस बृंदाबन चंद॥
एकादसि इक प्रीति सौं, चलीं जमुन कैं तीर।
बरन-बरन बनि बनि चलीं, पीत अरुन तन चीर॥
द्वादस अभरन द्वादसी, साजि चलीं ब्रजनारि।
हरि हलधरहिं सुनावहीं देहिं नंद कौं गारि॥
तेरसि तन्मय तिय भईं, खेलत प्रीतम संग।
भरत भरावत लाजहीं, लज्जित कोटि अनंग॥
चौदस चतुर सखी मिलीं, हलधर पकरे धाइ।
मुख माड़ैं छाड़ैं नहीं, काजर देहिं बनाइ॥
पून्यौ पूरन प्रीति करि, हरि आए हरुआइ।
बल भैया कौं छाँड़हू, फगुआ देउँ मँगाइ॥
मोहन पकरे करि मतौ, मुरली लई छँड़ाइ।
राधा सौं करि बीनती, दीजै हमहिं मँगाइ।
नंद छुड़ावहु स्याम कौं, या जग मैं जस लेहु।
जसुमति घरि बृषभानु कैं, फगुआ हमरौ देहु॥
जसुमति हँसि सब सखिनि स्यौं, राधे लीन्ही बोल।
मेवा मिश्री बहु रतन, दई सबनि भरि ओल॥
होरी हरषि हनाइ कै, मोहन झूलैं डोल।
गावतिं सखी निसंक ह्वै, कहि कहि अंमृत बोल॥

पाट सिंहासन वैठि कै, अरु अभिषेक कराइ।
राज करहु नित लाडिले, सूरदास वलि जाइ॥
॥२९१५॥३५३३॥

राग सारंग

होरी खेलत जमुना कैं तट, कुंजनि तर वनवारी।
इत सखियनि कौ मडल जोरे, श्रीवृषभानु-दुलारी॥
होडा होडी होति परस्पर, देत हैं आनँद-गारी।
भरे गुलाल कुमकुमा केसरि, कर कंचन पिचकारी॥
बाजत वीन बाँसुरी महुवरि, किन्नरि औ मुहचग
अमृत कुडली औ सुर मंडल, आउझ सरस उपग।
ताल मृदंग झाँझ डफ बाजे, सुर की उठति तरग
हँसत हँसावत करत कुतूहल, छिरकत केसरि-रंग।
तब मोहन सब सखा बुलाए, मिलि कै मतौ बतायौ
रे भैया तुम चौकस रहियौ, जिनि कोउ होहु गहायौ।
जौ काहू कौं पकरि पाइहैं, करिहैं मन कौ भायौ
तातैं सावधान ह्वै रहियौ मैं तुमकौं समुझायौ।
राधा गोरी नवल किसोरी, इनहूँ मतौ जु कीन्हौ
सखि इक वोलि लई अपनैं ढिग, भेष जु वल कौ कीन्हौ।
ताकौं मिलन चले उठि मोहन, काहूँ सखा न चीन्हौ
नैंसुक वात लगाइ साँवरैं, पाछे तैं गहि लीन्हौ॥
आईं सिमिटि सकल व्रज-सुंदरि, मोहन पकरे जबहीं
हम माँगति हीं यह विधिना पै, दाँव पाइहैं कबहीं॥
तब तुम चीर हरे जु हमारे, हा हा खाई सबहीं।
अब हम बसन छीनि करि लैहैं, हा हा करिहौ अबहीं॥
एक सखी कहै वदन उठावहु, हमहूँ देखन पावैं।
श्रीमुख कमल-नैन मेरे मधुकर, तन की तृषा बुझावैं॥
एक सखी कहै आँखि आँजि कै, माथैं वेंदा लावैं।
एक सखी कहै इनहिं नचावहु, हम सब ताल बजावैं॥
एक सखी आइ पाछे तैं, मोरपच्छ गहि लीन्यौ।
एक सखी त्यौं आइ अचानक, पीतांबर धरि छीन्यौ॥
एकै आँखि आँजि, मुख माँड्यौ ऊपर गुलचा दीन्यौ।
आनँद कौन फाग मैं प्रभुता मन भायौ सो कीन्यौ॥

एक कहै बोलौ बल भैया, तुमकौं आइ छुड़ावैं।
सखा एक पठवौ कोउ घर कौं, जसुमति कौं लै आवै॥
जानत हौ कल बल कै छूटैं, सो नहिं छूटन पावैं।
राधा जू सौं करौ बीनती, वै बलि तुमहिं छुड़ावैं॥
दूरहिं तैं देख्यौ बल आवत, सखी बहुत उठि धाईं।
कल बल छल जैसें तैसें करि, उनहूँ कौं गहि ल्याईं॥
किये आनि ठाढ़े इक ठौरहिं, बल मोहन दोउ भाई।
उनहुँ की आँखि आँजि मुख मॉड्यौ, राधा सैन बुझाई॥
देखि देखि ब्रह्मा सिव नारद, मनहीं मन पछिताहीं।
बड़े भाग हैं श्रीगोकुल के, हम मुख कहे न जाहीं॥
जाके काज ध्यान धरि देख्यौ, ध्यानहु आवत नाहीं।
वे अब देखे बनितनि आगैं, ठाढ़े जोरे बाहीं॥
हँसि हँसि कहत सु मोहन प्रीतम, मन मानौ सुख कीजै।
छाँड़ि देहु गृह जाउँ आपनैं, पीतांबर मोहिं दीजै॥
कर जोरे गिरिवरधर ठाढ़े, अज्ञा हमकौं दीजै।
जो कछु इच्छा होइ तिहारी, सो सब फगुवा लीजै॥
तब गिरिवरधर सखा बुलाए, फगुवा बहुत मँगायौ।
जोइ जोइ बसन जाहि मन मान्यौ, सोइ सोइ तिहिं पहिरायौ॥
राधामोहन जुग जुग जीवो, सब कोउ भलौ मनायौ।
बाढ़ौ बंस नंद बाबा कौ, सूरदास जस गायौ।
॥२९१६॥३५३४॥

राग जैजैवंती

माई फूले फूले फूलत, श्री राधा कृष्न हैं झूलत, सरस रसहि फूल डोल।
फूले फूलनि जोरत, फूले निमिष न मोरत, संतनि हित फूल डोल॥
फूल फटिक खंभ रचित, कंचन ही फूल खचित, सरस रस ही फूल डोल।
पटुली नव रतन पचित, हीरा लाल मोती जटित, संतनि हित फूल डोल॥
मरुवा मयारी ढरोल, झूमका प्रवाल ओल, सरस रसही फूल डोल।
डाँड़ि हेम चारु गोल, चुनिन फूल लगे लोल, संतनि हित फूल डोल॥

फूले बृंदावनऽनुकूल, सघन लता फूले फूल सरस रसही फूल डोल।
फूले श्री जमुन कूल, बिबिध रंग फूले फूल, संतनि हित फूल डोल॥
फूले चंपक चमेलि, फूलि लवग लता बेलि, सरस रस ही फूल डोल।
फूली निवारी एलि, मोगरौ सेवति सुबेलि, सतनि हित फूल डोल॥
तहाँ मौरे अंब फूले, निबुआ जहँ सदा फर फूले, सरस रसही फूल डोल।
तहाँ कमल केवरा फूले, केतकी कनेल फूले, संतनि हित फूल डोल॥
फूली मधु मालती रेलि, फूले मधुप करत केलि, सरस रसही फूल डोल।
फूले फले आनँद बेलि, फूले पिवत सुरस पेलि, सतनि हित फूल डोल॥
फूलनि के सौंधे भार, मानौ मधुप-छबि अपार, सरस रसही फूल डोल।
फूलनि के हिय हैं हार, सुरसरि मनु धरे धार, सतनि हित फूल डोल॥
माथे मुकुट रचित फूल, फूलनि के सीसफूल, सरस रसही फूल डोल।
फूलनि की बेंदि लिलार, फूलनि नख सिख सिंगार, सतनि हित फूल डोल॥
फूले धेनु ग्वाल बाल, फूले नंद जू के लाल, सरस रसही फूल डोल।
फूली तरुनि बृद्ध बाल, फूली करति बिबिध ख्याल, सतनि हित फूल डोल॥
फूली रोहिनि जसुदा रानि, फूली देखि राजधानि, सरस रसही फूल डोल।
नँद संकर्षन सुख मानि, फूले सब गोकुल आनि, सतनि हित फूल डोल॥
फूले बजावैं, मृदंग, महुवरि डफ ताल चंग, सरस रसही फूल डोल।
फूले बजावैं बाँसुरी संग, अमृत-कुंडली उपंग, संतनि हित फूल डोल॥
फूले बजावैं किनरि तार, सुरमंडल झनतकार सरस रसही फूल डोल।
(फूले) बजावैं गिरगिरी गार, भेरी घहरैं अपार, संतन हित फूल डोल॥

(फूले) बजावैं मुरुंज, रुंज, झाँझ, झालरीनि पुंज, सरस रसहि फूल डोल।
(फूले) बजावैं दुंदुभि गुंज, कूजत कोकिल निकुंज, संतन हित फूल डोल॥
ब्रज जन लखि डोल फूले, गोपी झुलावति कान्ह झूलै, सरस रसहि फूल डोल।
(फूले) मुदित मनोहर तूले, रसिक रसिकिनी फूले, संतन हित फूल डोल॥
(फूले) हरषि परस्पर गावैं, मीठे बोल बुलावैं, सरस रसहिं फूल डोल।
(फूली) मुदित मनोहर भावैं, लालन लाड़ लड़ावैं, संतन हित फूल डोल।
(फूली) चंदन वंदन रोरी, केसरि मृगमद घोरी, सरस रसहि फूल डोल।
(फूली) छिरकतिं नवल किसोरी, अबिर गुलाल भरे झोरी संतन हित फूल डोल।
(फूली) नाचतिं जोवन भोरी, जूथनि जूथनि जोरी, सरस रसहि फूल डोल।
(फूले) करत कुलाहल खोरी, पुर नर नारि किसोरी, संतन हित फूल डोल॥
(फूले) फगुआ दियौ रस रास्यौ, पट भूषन नहिं (रह्यौ) काख्यौ सरस रहहिं फूल डोल।
(फूले) हरि हँसि अंमृत भाख्यौ, सबही कौ मन राख्यौ, संतन हित फूल डोल॥
(फूले) नारदादि करत गान, रिष, मुनि सिव धरत ध्यान सरस रसहि फूल डोल।
(फूले) बीना हरि जस बखान, (कंस मारि) फेरौं उग्रसेन आन संतन हित फूल डोल॥
(फूले) कही हरि सुनि कहौं जाइ, तुरत मोहिं लै बुलाइ सरस रसहि फूल डोल।
(फूले) रजधानी-असुर आइ, जमुना मैं देउँ बहाइ संतन हित फूल डोल॥

(फूले) उग्रसेन छत्र धाइ, मथुरा आनँद बढ़ाइ सरस रसहिं
फूल डोल ।
(फूले) पितु माता मिलौं धाइ, दुख नसि सुख देउँ जाइ संतनि
हित फूल डोल ॥
(फूले) सुनि सुनि ज्ञान हरषाइ, भूमि ब्रज रतन छाइ सरस
रसहि फूल डोल ।
(फूल) सुरपति सुर-सची आइ, नभ चढ़ि सुमन बरषाइ संतन
हित फूल डोल ॥
(फूले) हरषत होरी खिलाइ, मुनि गण बैकुंठ सिधाइ सरस
रसहि फूल डोल ।
(फूले) हरषहिं हरि सुजस गाइ, पूछन सुर, कहि न जाइ संतन
हित फूल डोल ॥
पढ़ैं पढ़ावैं सुनैं सुनावैं, ते बैकुंठ परम पद पावैं सरस रसहि फूल डोल ।
सूरदास कैसें करि गावैं, लीलासिंधु पार नहि पावै संतन हित
फूल डोल ॥२९१७॥३५३५॥

राग रामगिरी

हरि पिय तुम जानि चलन कहौ ।
यह जानि मोहिं सुनावहु प्रीतम, जनि यह गहनि गहौ ॥
जब चलियौ तबहीं कहियौ, अब जनि काहे उरहिं दहौ ।
जौ चलिये तौ अबहीं चलिये, प्राननि लै निबहौ ॥
प्रान गएँ घरु भलौ मानिहैं, यह जनि प्रान सहौ ।
प्रान औरहू जनम मिलत है, तुम पुनि मिलत न हौ ॥
जानराइ जिय जानि मानि सुख, अब की बार रहौ ।
सूरदास-प्रभु कौ लालच, उन कबहूँ जनि उमहौ ॥
॥२९१८॥३५३६॥

राग कल्यान

गोकुलनाथ बिराजत डोल ।
संग लिये वृषभानु-नंदिनी, पहिरे नील निचोल ॥
कंचन खचित लाल मनि मोती, हीरा जटित अमोल ।
झुलवहिं जूथ मिलि ब्रज-सुंदरि हरषित करति कलोल ॥

खेलतिं, हँसतिं परस्पर गावतिं, बोलतिं मीठे बोल।
सूरदास-स्वामी, पिय-प्यारी, झूलत हैं झकझोल॥
॥२९१९॥३५३७॥

राग गौरी

डोल देखि ब्रज-बासी फूलैं। गोपि झुलावैं गोविंद झूलैं॥
नंद-नँदन गोकुल मैं सोहैं। मुरलि मनोहर मन्मथ मोहैं॥
कमल-नैन को लाड़ लड़ावैं। प्रमुदित गीत मनोहर गावैं॥
रसिक सिरोमनि आनँद-सागर। सूरदास मन मोहन नागर॥
॥२९२०॥३५३८॥

राग कल्यान

झूलत नंदनंदन डोल।
कनक-खंभ जराइ पटुली, लगे रतन अमोल॥
सुभग सरल सुदेस डाँड़ी, रची बिधना गोल।
मनौ सुरपति सुर-सभा तैं, पठै दियौ हिंडोल॥
जबहिं झंपत तबहिं कंपति, बिहँसि लगति उरोल।
त्रिदस पति सजि चढ़ि बिमाननि, निरखि दै दै ओल॥
थके मुख कछु कहि न आवै, सकल मप कृत झोल।
सखी नवसत साज कीन्हे, बदति मधुरे बोल॥
थक्यौ रतिपति देखि यह छबि, भयौ बहु भ्रम भोल।
सूर यह सुख गोप गोपी, पियत अमृत कलोल॥
॥२९२१॥३५३९॥

अक्रूर-ब्रज-आगमन *राग बिलावल*

फागु रंग करि हरि रस राच्यौ। रह्यौ न मन जुवतिन के काच्यौ॥
सखा संग सबकौं सुख दीनौ। नर-नारी मन हरि हरि लीनौ॥
जो जिहिं भाव ताहि हरि तैसैं। हित कौं हित नैसनि कौं नैसैं॥
महरि नंद पितु मातु कहाए। तिनही के हित तनु धरि आए॥
जुग जुग यह अवतार धरत हरि। हरता-करता बिस्व रहे भरि॥
धरनी पाप-भार भइ भारी। सुरनि लिये सँग जाइ पुकारी॥
त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी। राखि लेहु मोहि सरन उबारी॥

ऐसी कहि बैकुंठ सिधारे, कष्ट निसा बिकराइ।
सूर स्याम कृत की बैं इच्छा, मुनि मन इहै उपाइ॥
॥२९२३॥३५४१॥

राग सोरठ

नृपति मन इहै बिचार पर्‍यौ।
क्यौं मारौं दोउ नंद ढुटौना, ऐसी अरनि अर्‍यौ॥
कबहुँक कहत आपु उठि धावौं, यहै बिचार कर्‍यौ।
सात दिवस मैं बधी पूतना, यह गुनि मनहिं डर्‍यौ॥
पुनि साहस जिय-जिय करि गरब्यौ, ताकौ काल सर्‍यौ।
सूर स्याम बलराम हृदय तैं, नैंकु नहीं बिसर्‍यौ॥
॥२९२४॥३५४२॥

राग सारंग

मथुरा-निकट चरति हैं गाइ।
दुष्ट कंस भय करत मनहि मन, सुनें कृष्ण प्रभुताइ॥
सीस धुनै नृप रिसनि, मनहि मन, बहुत उपाइ करै।
घर बैठें ही दसन अधर धरि चपै, स्वास भरै॥
समुझे बचन कहे जे देवी, पहिलैं अकास परै।
नारद गिरा सँभारी पुनि पुनि, सिर धुनि आपु सरै॥
काल रूप देवकि कौ नंदन, प्रगट्यौ बसुधा माहिं।
कासौं कहौं सूर अंतर की, सुफलक सुत कौं चाहिं॥
॥२९२५॥३५४३॥

राग सोरठ

महर ढुटौना सालि रहे।
जन्महिं तैं अपडाउ करत हैं, गुनि गुनि हृदय कहे॥
दनुज-सुता पहिलैं संघारी, पय पीवत दिन सात।
गयौ प्रतिज्ञा करि कागासुर, आइ गिर्‍यौ मुरछात॥
बिना सकट छिन मैं सँवार्‍यौ, केसी हत्यौ प्रचारि।
जे जे गए बहुरि नहि देखे, सबही डारे मारि॥
ज्यौं-त्यौं करि इन दुहुनि सँवारौं, बात नहीं कछु और।
सूर नृपति अति सोच पर्‍यौ जिय, यहै करत मन दौर॥
॥२९२६॥३५४४॥

राग रामकली

नँद-सुत सहज बुलाइ पठाऊँ।
स्याम राम अति सुंदर कहियत, देखत काज मँगाऊँ।
जैहै कौन प्रेम करि ल्यावै, भेद न जानै कोइ।
महर महरि सौं हित करि ल्यावै, महा चतुर जो होइ॥
इहिं अंतर अक्रूर बुलायौ, अति आतुर महराज।
सूर चल्यौ मन सोच बढ़ाये, कौन है ऐसौ काज॥
॥२९२७॥३५४५॥

राग धनाश्री

अति आतुर नृप मोहिं बुलायौ।
कौन काज ऐसौ अटक्यौ है, मन मन सोच बढ़ायौ॥
आतुर जाइ पौरि भए ठाढ़े, कह्यौ पौरिया जाइ।
सुनत बुलाइ महल ही लीन्हौ, सुफलक सुत गए धाइ॥
कछु डर कछु धीरज मन कीन्हौ, गयौ नृपति के पास।
सूर सोच मुख देखि डरानौ, ऊरध लेत उसाँस॥
॥२९२८॥३५४६॥

राग मारू

सोच मुख देखि अक्रूर भरमे।
माथ तर नाइ, कर जोरि दोऊ रहे, बोलि लीन्हौ निकट वचन नरमे॥
आपुही कंस तहँ दूसरो कोउ नहिं, त्रास अक्रूर जिय कहा कैहै।
नृपति जिय सोच जान्यौ हृदय आपनैं, कहत कछु नाहिं धौं प्रान लैहै॥
निकट बैठारि सब बात तेई कही, जे गए भापि नारद सवारैं।
सूर सुत नंद के हियैं सालत सदा, मंत्र यह उनहिं अब घनै मारैं॥
॥२९२९॥३५४७॥

राग मारू

सुनै अक्रूर यह बात साँची कहौं, आजु मोहिं भोर तैं चेत नाहीं।
स्याम बलराम यह नाम सुनि ताम मोहिं, काहि पठवहुँ जाइ तिनहि पाहीं॥

प्रीति करि नंद सौं सहज बातैं कहैं, तुरत ल्यावै तहाँ, नृपति बोले।
देखिबे की साध सुनि गुन बिपुल, अतिहिं सुदर सुने दोउ अमोले॥
कमल जल तें उरग पीठि ल्यावे सुने, यहै धकसीस अब उनहिं देहौं।
सूर प्रभु स्याम बलराम को डर नाहीं, बचन उनके सुनत हर्ष पैहौं॥
॥२०३०॥३५४८॥

राग सोरठ

यह बानी कहि कंस सुनाई।
अब अक्रूर हियैं भयौ धीरज, डर डार्यौ बिसराई॥
मन मन कहत कहा चित बैठो, सुनि सुनि बैरी बानी।
अपनौ काल आपुहीं बोल्यौ, इनकी मीच तुलानी॥
हरषि बचन अक्रूर कहे तब, तुरत काज यह कीजै।
सूर जाहि आयसु करि पाऊँ, भार यहै तिहिं दीजै॥
॥२०३१॥३५४९॥

राग बिलावल

तब अक्रूर कहत नृप आगैं, धन्य धन्य नारद मुनि ग्यानी।
धरे सत्रु ब्रज में दोउ हमकौं, सुनहु देव नीकी हित बानी॥
महाराज तुम सरि को ऐसो, जाकी जग यह चलति कहानी।
अब नहिं बचैं काज नृप कीन्हौ, जैसें छनकि तवा ज्यौं पानी॥
यह सुनि हर्ष भयौ गरबानौ, जबहिं कही अक्रूर सयानी।
काल्हि बुलाइ सूर नंद मारौं, बार बार भाषत यह बानी॥
॥२०३२॥३५५०॥

राग बिलावल

यहै मंत्र अक्रूर सौं, नृप रैनि बिचारि।
प्रात नंद-सुत मारिहौं, यह कर्यौ प्रचारि॥
धरि बिचारि जुग जाम लौं महलहिं पधारि।
कह्यौ, जाहु अक्रूर सौं सब आगम सँभारि॥
तुरत जाइ पौरि धरा पर्यौ, पलकनि लपटानौ।
स्याम राम सुपने भए, तहँ लगि अगानौ॥

अति कठोर दोउ काल से, भरम्यौ अति झझक्यो ।
जागि पर्यौ तहँ कोउ नहीं, जियहीं जिय ससक्यौ ॥
चौंकि पर्यो सँग नारि के, रानी सब जागीं ।
उठीं सबै अकुलाइ कै, तब बूझन लागीं ॥
महाराज झझके कहा, सपने कह ससके ।
सूर अतिहिं व्याकुल भये, धर धर उर धरके ॥

॥२९३३॥३५५१॥

राग बिलावल

महाराज क्यौं आजहीं, सपने झझकाने ।
पौढ़े जबहीं आनि कै, देखे बिलखाने ॥
कहा सोच ऐसौ पर्यौ, ऐसौ पुहुमी कौ ।
काकी सुधि मन मैं रही, कहियै आप जी कौ ॥
रानी सब व्याकुल भईं, कछु भेद न पावैं ।
तब आपुन सहजहिं कह्यौ, वह नहीं जनावैं ॥
सावधान करि पौरिया, प्रतिहार जगायौ ।
सूर त्रास बल-स्याम कैं, नहिं पलक लगायौ ॥

॥२९३४॥३५५२॥

राग बिलावल

उत नंदहि सपनौ भयौ, हरि कहूँ हिराने ।
बल-मोहन कोउ लै गयौ, सुनि कै बिलखाने ॥
ग्वाल सखा रोवत कहैं, हरि तौ कहुँ नाहीं ।
संगहि सँग खेलत रहे, यह कहि पछिताहीं ॥
दूत एक संग लै गयौ, बलराम कन्हाई ।
कहा ठगौरी सी करी, मोहिनी लगाई ॥
वाही के दोउ ह्वै गए, हम देखत ठाढ़े ।
सूरज प्रभु वै निठुर ह्वै, अतिहीं गए गाढ़े ॥

॥२९३५॥३५५३॥

राग सोरठ

व्याकुल नंद सुनत यह बानी ।
धरनि मुरछि परी अति व्याकुल, बिबस जसोदा रानी ॥

व्याकुल गोप ग्वाल सब व्याकुल, व्याकुल ब्रज की नारि।
व्याकुल सखा स्याम बल के जे, व्याकुल तन न सँभारि॥
धरनी परत, उठत, पुनि धावत, इहिं अंतर नँद जागे।
धकधकात उर, नैन स्रवत जल, सुत अँग परसन लागे॥
सिसकत सुनि जसुमति अतुराई, कहा महर भ्रम पायौ।
सूर नंद घरनी के आगैं, यह भ्रम नहीं सुनायौ॥
॥२९३६॥३५५४॥

राग कल्यान

एक जाम नृप कौं निसि, जुग तैं भइ भारी।
आपुनहूँ जाग्यौ, सँग जागीं सब नारी॥
कबहूँ उठत, बैठत पुनि, कबहूँ सेन सोवै।
करै अजिर ठाढ़ौ ह्वै, ऐसैं निसि खोवै॥
बार बार जोतिक सौं, निसि घरी बुझावै।
एक जाइ पहुँचै नहीं, अरु एक पठावै॥
जोतिक जिय त्रास पर्यौ, कहा प्रात करिहै।
सूर क्रोध भर्यौ नृपति, काकैं सिर परिहै॥
॥२९३७॥३५५५॥

राग कल्यान

व्याकुल ह्वै टेरै निकट, बूझै घरी ताकौं।
इक इक छिन, जाम जाम, ऐसी गति ताकौं॥
को जैहै ब्रज कौं, मन करै, किहि पठाऊँ।
तासौं कहि नंद सुवन, आजुहीं मँगाऊँ॥
अब नहिं राखौं उठाइ, बैरी नहिं नान्हौ।
मारौं गज पै खँदाइ, मन यह अनुमानौ॥
पठवौं अक्रूर, और वैसौ नहिं कोऊ।
सूर जाइ गोकुल तैं, ल्यावै सँग दोऊ।
॥२९३८॥३५५६॥

राग बिलावल

कंस रथ चढ़ि प्रातहीं, अक्रूर बुलाए।
आतुर गयौ प्रतिहार सौं इक सुनि सो धाए॥

सोवत जाइ जगाइयौ, चलियै नृप पासा।
उहै मंत्र मन जानि कै, उठि चले उदासा॥
नृपति द्वार ह्वाँ पै खरौ, देखत सिर नायौ।
कहि खवास कौं सैन दै, सिरोपाव मँगायौ॥
अर्पन कर लै करि दियौ, सुफलक-सुत लीन्हौ।
लै आवहु सुत नंद के, यह आयसु दीन्हौ॥
मुख अक्रूर हरषित भयौ, हिरदय बिलखानौ।
असुर त्रास अति जिय परयौ, यह कहै सयानौ॥
तुरतहिं रथ पलनाइ कै, अक्रूरहिं दीन्हौ।
आयसु सिर पै मानि कै, आतुर होइ लीन्हौ॥
बिलम करौ जनि नैकुहूँ, अबहीं ब्रज जाहू।
सूर काज करि आवहू, जनि रैनि बसाहू॥

॥२९३९॥३५५७॥

राग बिलावल

कंस नृपति अक्रूर बुलाये।
बैठि इकंत मंत्र दृढ़ कीन्हौ, दोऊ बंधु मँगाये॥
कहूँ मल्ल, कहुँ गज दै राखे, कहूँ धनुष, कहुँ बीर।
नंद महर के बालक मेरे, करषत रहत सरीर॥
इनहिं बुलाइ बीच ही मारौं, नगर न आवन पावैं।
सूर सुनत अक्रूर कहत, नृप मन-मन मौज बढ़ावैं॥

॥२९४०॥३५५८॥

राग कल्यान

तुम बिनु मेरे हितू न कोऊ।
सुनि अक्रूर, पुरत नृप भाषत, नंद महर-सुत ल्यावहु दोऊ॥
सुनि रुचि बचन राम हरषित तनु, प्रेम पुलकि मुख कछु न बोल्यौ।
यह आयसु पूरब सुकृत बस, सो काहू पै जाहि न तोल्यौ॥
मौन देखि परिहस नृप भाष्यौ, मनहुँ सिंह गो आइ तुलानौ।
बहिक्रम बिनु द्वै सुत अहीर के, रे कातर कत मन संकानौ॥
आयसु पाइ तुरत रथ कर गहि, अनुपम तुरँग साज धृत जोह्यौ।
सूर स्याम की मिलनि सुरति करि, मनु निरधन निधि पाइ बिमोह्यौ॥

॥२९४१॥३५५९॥

राग बिलावल

सुनहु देव इक बात जनाऊँ।
आयसु भयो तुरत लै आवहु, तातैं फेरि सुनाऊँ।
बल मोहन बन जात प्रातहीं, जौ उनकौं नहिं पाऊँ॥
रहिहौं आजु नंद गृह बसि कै, कालिह प्रात लै आऊँ।
यह कहि चल्यौ, नृपतिहू मान्यौ, सुफलक सुत रथ हाँक्यौ।
सूरदास-प्रभु ध्यान हृदय धरि, गोकुल तन कौं ताक्यो॥

॥२९४२॥३५६०॥

राग टोडी

सुफलक सुत मन पर्‍यो बिचार। कंस निबंस होइ हत्यार॥
नगर माँझ रथ कीन्हौ ठाढ़ौ। सोच पर्‍यौ मन मैं अति गाढ़ौ॥
मंत्र कियो निसि मेरैं साथ। मोहिं लेन पठयौ ब्रजनाथ॥
गज, मुष्टिक, चानूर निहार्‍यौ। ब्याकुल नैन नीर दोउ ढार्‍यौ॥
अति बालक बलराम कन्हाई। कैसैं आनि देउँ मैं जाई॥
कहा करौं नहिं कछू बसाई। मौं देखत मारे दोउ भाई॥
मारै मोहिं बदि लै मेलै। आगे कौं रथ नैंकु न ठेलै॥
सूरदास प्रभु अंतरजामी। सुफलक-सुत-मन पूरन कामी॥

॥२९४३॥३५६१॥

राग कल्यान

सुफलक-सुत हृदय ध्यान, कीन्हौ अबिनासी।
हरन करन समरथ वै, सब घट के बासी॥
धन्य-धन्य कंसहिं कहि, मोहिं जिन पठायौ।
मेरौ करि काज, मीच आपु कौं बुलायौ॥
यह गुनि रथ हाँकि दियौ, नगर पर्‍यौ पाछैं।
कछु सकुचत, कछु हरषत, चल्यौ स्वाँग काछैं॥
बहुरि सोच पर्‍यौ, दरस दच्छिन मृगमाला।
हरष्यौ अक्रूर सूर, मिलिहैं गोपाला॥

॥२९४४॥३५६२॥

राग टोडी

दच्छिन दरस देखि मृगमाला। अति आनंद भयौ तिहिं काला।

अबहीं बन मिलिहौं गोपाला। स्याम जलद तनु अंग रसाला॥
ता दरसन तें होउँ निहाला। बहु दिन के मेटौं जंजाला॥
मुख ससि नैन चकोर विहाला। तन त्रिभंग सुंदर नँदलाला॥
विविध सुमन हिरदै सुभ माला। सारसहू तें नैन बिसाला॥
निसचय भयौ कंस कौ काला। सूरज-प्रभु त्रिभुवन प्रतिपाला॥
॥२९४५॥३५६३॥

राग आसावरी

दाहिनैं देखियत मृग माल।
मानौं इहि सकुन अबहिं इहिं बन आजु, इनहिं भुजनि भरि भेंटौं गो गोपाल॥
निरखि तनु त्रिभंग, पुलक सकल अंग, अंकुर धरनि जिमि पावसहिं काल।
परिहौं पाइनि जाइ भेंटिहैं अंकम लाइ, मूल तें जमी ज्यौं बेलि चढ़ति तमाल॥
परसि परमानंद, सींचि कै कामना कंद, करिहैं प्रगट प्रीति प्रेम के प्रवाल।
बचन रचन हास सुमन सुख निवास, करहिं फलिहै फल अभय रसाल॥
स्फुरित सुभ सुबाहु, लोचन मन उछाहु, फूलि कै सुकृत फल फलै तिहिं काल।
निगम कहत नेति, सिव सकल चेति, हृदय लगाइ सूर लैहौं ता दयाल॥२९४६॥३५६४॥

राग कान्हरौ

आजु वे चरन देखिहौं जाइ।
जे पद कमल प्रिया श्री उर तें नैकु न सकै भुलाइ॥
जे पद कमल सकल मुनि दुरलभ, मैं देखौं सति भाइ।
जे पद कमल पितामह ध्यावत, गावत नारद चाइ॥
जे पद कमल सुरसरी परसे, तिहूँ भुवन जस छाइ।
सूर स्याम पद कमल परसिहौं, मन अति बढ़्यौ उछाह॥
॥२९४७॥३५६५॥

राग कान्हरौ

आजु जाइ देखौं वे चरन ।
सीतल सुभग सकल सुखदाता दुसह दोष दुख हरन ॥
अंकुस कुलिस कमल धुज चिन्हित, अरुन कंज के रंग ।
गो चारत बन जाइ पाइहौं, गोप सखिन के संग ॥
जाकौ ध्यान धरत मुनि नारद, सुर बिरंचि अरु ईस ।
तेई चरन प्रगट करि परसौं, इन कर अपने सीस ॥
लखि सरूप रथ रहि नहिं सकिहौं, तिन धरिहौं धर धाइ ।
सूरदास प्रभु उभय भुजा धरि हँसि भेंटिहैं उठाइ ॥
॥२९४८॥३५६६॥

राग नट

जब सिर चरन धरिहौं जाइ ।
कृपा करि मोहिं टेकि लैहैं, करनि हृदय लगाइ ॥
अंग पुलकित, बचन गदगद, मनहिं मन सुख पाइ ।
प्रेम घट उच्छलित ह्वैहै, नैन अंसु बनाइ ॥
कुसल बूझत कहि न सकिहौं, बार बार सुनाइ ।
सूर प्रभु के ध्यान अटक्यौ, गयौ पथ भुलाइ ॥
॥२९४९॥३५६७॥

राग बिलावल

मथुरा तैं गोकुल नहिं पहुँचे, सुफलक-सुत कौ साँझ भई ।
हरि अनुराग देह सुधि बिसरी, रथ बाहन की सुरति गई ॥
कहाँ जात, किन मोहिं पठायौ, को हौं मैं, इहिं सोच पर्‌यौ ।
दसहूँ दिसा स्याम परिपूरन, हृदय हरष आनंद भर्‌यौ ॥
हरि अंतरजामी यह जानी, भक्तबछल बानौ जिनिकौ ।
सूर मिले जो भाव भक्त के, गहरु नहीं कीन्हौ तनिकौ ॥
॥२९५०॥३५६८॥

राग कल्यान

बृंदावन ग्वालनि सँग, गइया हरि चारैं ।
अपने जन हेत काज, ब्रज कौं पगु धारैं ॥

जमुना करि पार गाइ, स्याम देत हेरी ।
हलधर सँग सखा लिए, सुरभी गन घेरी ॥
धेनु दुहन सखनि कह्यौ, आपु दुहन लागे ।
वृंदावन गोकुल विच, जमुना के आगे ॥
भक्त हेत श्री गोपाल, यह सुख उपजायौ ।
सूरदास प्रभु कौ दरस, सुफल-सुत पायौ ॥
॥२९५१॥३५६९॥

राग कल्यान

सुफलक-सुत हरि दरसन पायौ ।
रहि न सक्यौ रथ पर सुख-व्याकुल, भयौ वहै मन भायौ ॥
भू पर दौरि निकट हरि आयौ, चरननि चित्त लगायौ ।
पुलक अंग, लोचन जल-धारा, श्रीपद सिर परसायौ ॥
कृपासिंधु करि कृपा मिले हँसि, लियौ भक्त उर लाइ ।
सूरदास यह सुख सोइ जानै, कहौं कहा मैं गाइ ॥
॥२९५२॥३५७०॥

राग गुंडमलार

हरि अक्रूर हरि हृदय लायौ ।
मिले तिहिं भाव जो भाव चेत्यौ चित्त, भक्तवच्छल नाम तव कहायौ ॥
कुसल बूझत प्रस्न, बचन अंमृत रसन, स्रवन सुनि पुलक अँग अंग कीन्हौ ।
चितै आनन चारु बुद्धि उर विस्तार, दनुज अव दलौ यह ब्वाब दीन्हौ ॥
भेद ही भेद सब दैत बानी कही, तुरत बोले हेत इहै वाकैं ।
सूर भुज फरकि, मन नैन उत्साह लै, धरनि उद्धार हित चली नाकैं ॥२९५३॥३५७१॥

राग बिलावल

स्याम इहै कहि कै उठे, नृप हमहिं बुलाए ।
अतिहिं कृपा हम पर करी, जो काल्हि मँगाए ॥

संग सखा यह सुनत ही, चकित मन कीन्हौ।
कहा कहत हरि सुनत हो, लोचन भरि लीन्हौ ॥
स्याम सखनि मुख हेरि कै, तब करी सयानी।
कालिह चलौ नृप देखिये, संका जनि आनी ॥
हरष भये हरि यह कहैं, मन मन दुख भारे।
सूर संग अक्रूर के, हरि ब्रज पग धारे ॥

॥२९५४॥३५७२॥

राग रामकली

अति कोमल बलराम कन्हाई।
दुहुनि गोद अक्रूर लिए हँसि, सुमनहु तैं हरुवाई ॥
ग्वाल संग रथ लीन्हे आए, पहुँचे ब्रज की खोर।
देखत गोकुल लोग जहाँ तहँ, नद उठे सुनि सोर ॥
निसि सुपने कौं त्रस्त भए अति, सुन्यो कंस को दूत।
सूर नारि नर देखन धाये, घर-घर सोर अकूत ॥

॥२९५५॥३५७ ॥

राग गुंडमलार

कंस नृप अक्रूर ब्रज पठाये।
गए आगैं लैन नंद उपनंद मिलि, स्याम बलराम उन हृदय लाए ॥
उतरि स्यंदन मिल्यौ देखि हरष्यौ हियौ, सोच मन यह भयौ कहा आयौ।
राज के काज कौं नाम अक्रूर यह, किधौं कर लैन कौं नृप पठायौ ॥
कुसल तिहिं बूझि लै गए ब्रज निज धाम, स्याम बलराम मिलि गए वाकौं।
चरन पखराइ कै सुभग आसन दियौ, विविध भोजन दियौ तुरत ताकौं ॥
कियौ अक्रूर भोजन दुहुँनि संग लै, नर नारि ब्रज लोग सबै देखैं।
मनौ आए सग, देखि ऐसे रंग, मनहिं मन परस्पर करत मेषैं ॥
सारि ज्योंनार कै कै आचमन सुद्ध भये दियौ तबोर नँद हरष आगे।
सेज बैठारि अक्रूर सौं जोरि कर, कृपा कह करी तब कहन लागे ॥
स्याम बलराम कौं कंस बोले हैत, नद लै सुतनि हम पास आवैं।
सूर-प्रभु दरस की साध अतिही करत, आजु ही कही जनि गहरु लावैं ॥२९५६॥३५७४॥

राग कान्हरौ

सुन्यौ ब्रज लोग कहत यह बात।
चकित भए नारि-नर ठाढ़े पाँच न आवै सात॥
चकित नंद जसुमति भइ चकित, मन ही मन अकुलात।
दै दै सैन स्याम बलरामहिं, सबै बुलावत जात॥
पारब्रह्म अविगत अविनासी, माया रहित अतीत।
मानौं नहीं पहिचानि कहूँ की, करत सबै मन भीत॥
बोलत नहीं नैकु चितवत नहिं, सुफलक सुत सौं पागे।
सूर हमैं हित करि नृप बोले, यहै कहत ता आगैं॥
॥२९५७॥३५७५॥

राग बिहागरौ

ब्याकुल भए ब्रज के लोग।
स्याम मन नहिं नैकु आनत, ब्रह्मपूरन जोग॥
कौन माता, पिता को है, कौन पति, को नारि।
हँसत दोउ अक्रूर सँग कैं, नवल नेह बिसारि॥
कोउ कहत यह कहा आयौ, क्रूर याकौ नाम।
सूर-प्रभु लै प्रात जैहै, और सँग बलराम॥
॥२९५८॥३५७६॥

गोपिकाओं की उद्विग्नता *राग बिहागरौ*

चलत चलत स्याम कहत, लैन कोउ आयौ।
नंद भवन भनक सुनि, कंस कहि पठायौ॥
ब्रज की नारि गृह बिसारि, ब्याकुल उठि धाईं।
समाचार बूझन कौं, आतुर ह्वै आईं॥
प्रीति जानि, हेत मानि, बिलखि बदन ठाढ़ीं।
मानहु वे अति बिचित्र, चित्र लिखी काढ़ीं॥
ऐसी गति ठौर-ठौर, कहत न बनि आवै।
सूर स्याम बिछुरैं, दुख बिरह काहि भावै॥
॥२९५९॥३५७७॥

राग कान्हरौ

चलन जानि चितवतिं ब्रज जुवतीं, मानहु लिखीं चितेरैं।
जहाँ सु तहाँ एकटक रहि गईं, फिरत न लोचन फेरैं॥

बिसरि गईं गति भाँति देह की, सुनति न स्रवननि टेरैं।
मिलि जु गईं मानौ पै-पानी, निबरति नाहिं निबेरैं॥
लागीं संग मतंग मत्त ज्यौं, घिरति न कैसैंहु घेरैं।
सूर प्रेम आसा अंकुस जिय, वे नहिं इत उत हेरैं॥
॥२९६०॥३५७८॥

अब देखि लै री स्याम कौ मिलनौ परी दूरि।
मधुबन चलत कहत हैं सजनी, इन नैननि की मूरि॥
ठाढ़ी निरखौं छाहँ कदम की, जात न रथ की धूरि।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, बिरह रह्यौ भरपूरि॥
॥२९६१॥३५७९॥

राग सारंग

अब गुरहानी री चलिबे की सुनत भनक।
गोपी-ग्वाल नैन जल ढारत, गोकुल ह्वै रह्यौ गूँग चनक॥
बसन मलीन, हीन देखियत तन, एक रहति ज्यौं बली बनक।
जाके हैं प्रिय कमलनैन से, बिछुरे कैसैं रहत छिनक॥
गह अक्रूर कहाँ तैं आयौ, दाहन लाग्यौ देह कनक।
सूरदास-स्वामी के बिछुरत, घट नहिं रहिहैं प्रान जनक॥
॥२९६२॥३५८०॥

राग रामकली

अनल तैं बिरह-अगिनि अति ताती।
माधव चलत कहत मधुबन कौं, सबै तपति अति जाती॥
ब्याकुलहिं नागरि नारि बिरह बस, जरति दिया ज्यौं बाती।
जे जरि मरीं प्रगट पावक परि, ते तिय अधिक सुहातीं॥
ढरति नीर नयन भरि भरि सब, ब्याकुलता मदमाती।
सूर बिथा सोई पै जानै, स्याम सुभग-रँग राती॥
॥२९६३॥३५८१॥

राग आसावरी

स्याम गए सखि प्रान रहैंगे?
अरस परस ज्यौं बातैं कहियत, तैसैं बहुरि कहैंगे?

इंदु बदन खग नैन हमारे, जानति और चहैंगे ?
बासर-निसि कहुँ होत न न्यारे, बिछुरनि हृदय सहैंगे ?
एक कहौ तुम आगैं जानी, स्याम न जाहिं, रहैंगे ।
सूरदास-प्रभु जसुमति कौं तजि, मथुरा कहा लहैंगे ? ॥
॥२९६४॥

राग

हरि मोसौं गौन की कथा कही ।
मन गह्वर मोहिं उत्तर न आयौ, हौं सुनि सोचि रही ॥
सुनि सखि सत्य भाव की बातैं, बिरह बेलि उलही ।
करवत चिह्न कहे हरि हम सौं, ते अब होत सही ॥
आजु सखी सपने मैं देख्यौ, सागर पालि ढही ।
सूरदास-प्रभु तुम्हरौ गवन सुनि, जल ज्यौं जात बही ॥
॥२९६५॥

रा

बहुत दुख पैयत है इहिं बात ।
तुम जु सुनत हौ माधौ, मधुबन सुफलक सुत सँग जात ॥
मनसिज बिथा दहति दावानल, उपजी है या गात ।
सूधौं कहौ तब कैसैं जीहैं, निजु चलिहौ उठि प्रात ॥
जौ पै यहै कियौ चाहत हे, मीचु बिरह-सर-घात ।
सूर स्याम तौ तब कत राखी, गिरि कर लै दिन सात ॥
॥२९६६॥

राग र

देखि अक्रूर नर-नारि बिलखे ।
धनुभंजन जग्य हेत बोले इन्हैं, और डर नहीं सब कहि मे
महरि ब्याकुल दौरि पाइँ गहि लै परी, नंद उपनंद सँग जाहु
राज कौ अंस लिखि लेहु दूनौ देहुँ, मैं कहा करौं सुत दुहुँनि
कहति ब्रज नारि नैननि नीर ढारि कै, इन्हनि कौ काज मथुरा क
सूर नृप क्रूर अक्रूर क्रूरै भए, धनुष देखन कह्यौ कपटी मह
॥२९६७॥

राग सारंग

(मेरे) कमलनैन प्राननि तैं प्यारे।
इन्हैं कहा मधुपुरी पठाऊँ, राम कृष्न दोऊ जन बारे॥
जसुदा कहै सुनौ सुफलक-सुत, मैं इन बहुत दुखनि सौं पारे।
ये कहा जानैं राज सभा कौं, ये गुरुजन बिप्रहु न जुहारे॥
मथुरा असुर-समूह बसत हैं, कर-कृपान, जोधा हत्यारे।
सूरदास ये लरिका दोऊ, इन कब देखे मल्ल-अखारे॥
॥२९६८॥३५८६॥

राग सारंग

ब्रजबासिनि के सरबस स्याम।
यह अक्रूर क्रूर भयौ हमकौं, जिय के जिय मोहन बलराम॥
अपनौ लाग लेहु लेखौ करि, जो कछु राज अंस कौ दाम।
और महर लै संग सिधारौ, नगर कहा लरिकन कौं काम॥
तुम तौ साधु परम उपकारी, सुनियत बड़ौ तिहारौ नाम।
सूरदास-प्रभु पठै मधुपुरी, को जीवै छिन बासर जाम॥
॥२९६९॥३५८७॥

राग मलार

सखी री हौं गोपालहिं लागी।
कैसे जियैं बदन बिनु देखे, अनुदित छिन अनुरागी॥
गोकुल कान्ह कमलदल लोचन, हरि सबहिनि के प्रान।
कौन न्याव, तुम कहत जो इनकौं मथुरा कौं लै जान।
तुम अक्रूर बड़े के ढोटा, अति कुलीन मति-धीर॥
बैठन सभा बड़े राजनि की, जानत हौ पर पीर।
लीजै लाग इहाँ तैं अपनौ, जो कछु राज कौ अंस।
नगर बोलि ग्वालनि के लरिका, कहा करैगौ कंस॥
मेरे बलरामै धन माई, माधौई सब अंग।
बहुरि सूर हौं कापै माँगौं, पठै पराएँ संग॥
॥२९७०॥३५८८॥

राग रामकली

मेरौ माई निधनी कौ धन माधौ।
बारबार निरखि सुख मानति, तजति नहीं पल आधौ॥

छिनु-छिनु परसति अंकम लावति, प्रेम प्रकृत ह्वै बाँधौ।
निसिदिन, चंद-चकोरी अँखियनि, मिटै न दरसन साधौ॥
करिहै कहा अक्रूर हमारौ, दैहैं प्रान अबाधौ।
सूर स्यामघन हौं नहिं पठवौं, अबहिं कंस किन बाँधौ॥
॥२९७१॥३५८९॥

राग सोरठ

नहिं कोउ स्यामहिं राखै जाइ।
सुफलक सुत बैरी भयौ मोकौं, कहति जसोदा माइ॥
मदनगोपाल बिना घर आँगन, गोकुल काहि सुहाइ।
गोपी रहीं ठगी सी ठाढ़ी, कहा ठगौरी लाइ॥
सुंदर स्याम राम भरि लोचन, बिनु देखैं दोउ भाइ।
सूर तिन्हैं लै चले मधुपुरी, हिरदै सूल बढ़ाइ॥
॥२९७२॥३५९०॥

राग सोरठ

जसोदा बार-बार यौं भाषै।
है कोउ ब्रज मैं हितू हमारौ, चलत गुपालहिं राखै,॥
कहा काज मेरे छगन मगन कौं, नृप मधुपुरी बुलायौ।
सुफलक-सुत मेरे प्रान हरन कौं, काल रूप ह्वै आयौ॥
बरु यह गोधन हरौ कंस सब, मोहि बंदि लै मेलौ।
इतनोई सुख कमल-नयन मेरी अँखियनि आगैं खेलौ॥
बासर बदन बिलोकत जीवौं, निसि निज अंकम लाऊँ।
तिहिं बिछुरत जौ जियौं कर्मबस, तौ हँसि काहि बुलाऊँ॥
कमलनयन गुन टेरत-टेरत, अधर बदन कुम्हिलानी।
सूर कहाँ लगि प्रगटि, जनाऊँ, दुखित नंद जु की रानी॥
॥२९७३॥३५९१॥

यशोदा-बचन श्रीकृष्ण के प्रति राग सोरठ

(गोपाल राई) किहिं अवलंबन रहिहैं प्रान।
निठुर बचन कठोर कुलिसहुँ तैं, कहत मधुपुरी जान॥
क्रूर नाम, गति क्रूर, क्रूर मति, काहैं गोकुल आयौ।
कुटिल कंस नृप बैर जानि कै, हरि कौं लैन पठायौ।

जिहिं मुख तात कहत ब्रजपति मोँ, मोहिँ कहत है माइ।
तेहिं मुख चलन सुनत जीवति हौं, विधि सों कहा बसाइ॥
को कर-कमल मथानी धरिहै, को माखन अरि खैहै।
बरपत मेघ बहुरि ब्रज ऊपर, को गिरिवर कर लैहै॥
हौं बलि बलि इन चरन-कमल की, ह्याइँ रहो कन्हाई।
सूरदास अवलोकि जसोदा, धरनि परी मुरझाई॥
॥२९७४॥३५९२॥

राग सोरठ

मोहन इतौ मोह चित धरियै।
जननी दुखित जानि कै कबहूँ, मथुरा गवन न करियै॥
यह अक्रूर क्रूर कृत रचिकै, तुमहि लेन है आयौ।
तिरछे भए करम-कृत पहिलै, विधि यह ठाट बनायौ॥
बार बार जननी कहि मोसौं, माखन माँगत जौन।
सूर तिनहिं लैबे कौं आए, करिहैं सूनौ भौन॥
॥२९७५॥३५९३॥

राग सूही

सुफलक सुत के संग तैं हरि होत न न्यारे।
बार बार जननी कहै, मोहिं तजि न दुलारे॥
कहा ठगौरी इन करी, मेरौ बालक मोह्यौ।
हा हा करि मैं मरति हौं, मो तन नहिँ जोह्यौ॥
नंद कह्यौ परबोधि कै, मैं सँग लै जइहौं।
धनुप-जज्ञ दिखराइ कै, तुरतहिँ लै अइहौं॥
घर घर गोपनि सौं कह्यौ, कर-भार जुरावहु।
सूर नृपति के द्वार कौं, उठि प्रात चलावहु॥
॥२९७६॥३५९४॥

नंद-वचन, यशोदा के प्रति *राग मलार*

भरोसौ कान्ह कौ है मोहिं।
सुनहि जसोदा कंस नृपति-भय, तू जनि व्याकुल होहि॥
पहिलैं पूतना कपट रूप करि, आई स्तननि विप पोहि।
वैसी प्रबल सु छै दिन बालक, मारि दिखायौ तोहिं॥

अघ, बक, धेनु, तृनाव्रत, केसी को बल देख्यौ जोहि।
सात दिवस गोवरधन, राख्यौ, इंद्र गयौ द्रप छोहि॥
सुनि-सुनि कथा नद-नंदन की, मन आयौ अवरोहि।
जोइ जोइ करन चहैं सूरज-प्रभु, सो आवै सब सोहि॥
॥२९७७॥३५९५॥

राग बिहागरी

जसुमति अति हीं भई बिहाल।
सुफलक-सुत यह तुमहिं बूझियत, हरत हमारे बाल!
ये दोउ भैया जीवन हमरे, कहति रोहिनी रोइ।
धरनी गिरति, उठति अति व्याकुल कहि राखत नहिं कोइ॥
निठुर भए जब तैं यह आयौ, घरहू आवत नाहिं।
सूर कहा नृप पास तुम्हारौ, हम तुम बिनु मरि जाहिं॥
॥२९७८॥३५९६॥

राग सोरठ

कन्हैया मेरी छोह बिसारी।
क्यौं बलराम कहत तुम नाहीं, मैं तुम्हरी महतारी॥
तब हलधर जननी परबोधत, मिथ्या यह संसारी।
ज्यौं सावन की बेलि फैलि कै, फूलति है दिन चारी॥
हम बालक तुमकौं कह सिखवैं, हम तुमहीं तैं जात।
सूर हृदय धीरज अब धारौ, काहे कौं बिलखात॥
॥२९७९॥३५९७॥

राग सोरठ

यह सुनि गिरी धरनि झुकि माता।
कहा अक्रूर ठगौरी लाई, लिये जात दोउ भ्राता॥
बिरध समय की हरन लकुटिया, पाप पुन्य डर नाहीं।
कछू नफा है तुमकौं यामैं, सोचौ धौं मन माहीं॥
नाम सुनत अक्रूर तुम्हारौ, क्रूर भए हौ आइ।
सूर नंद घरनी अति व्याकुल, ऐसैं हि रैनि बिहाइ॥
॥२९८०॥३५९८॥

गोपिका वचन परस्पर *राग रामकली*

सुने हैं स्याम मधुपुरी जात।
सकुचनि कहि न सकति काहू सौं, गुप्त हृदय की बात॥
सकित वचन अनागत कोऊ, कहि जु गयौ अधरात।
नींद न परै, घटै नहिं रजनी, कब उठि देखौं प्रात॥
नंद नँदन तौ ऐसे लागे, ज्यौं जल पुरइनि पात।
सूर स्याम सँग तैं बिछुरत हैं, कब ऐहैं कुसलात॥
॥२९८१॥३५९९॥

राग भैरव

भोर भयौ ब्रज लोगन कौं।
ग्वाल सखा सब व्याकुल सुनि कै स्याम चलत हैं मधुबन कौं॥
सुफलक-सुत स्यदन पलनावत, देखें तहँ बल मोहन कौं।
यह सुनि घर घर तैं उठि धाईं, नंद-सुवन मुख जोहन कौं॥
रोर परी गोकुल मैं, जहँ-तहँ, गाइ फिरतिं पै दोहन कौं।
सूर बरष कर भार सजावत, महर चले हरि गोहन कौं॥
॥२९८२॥३६००॥

राग रामकली

चलन कौं कहियत हैं हरि आज।
अबहीं सखी देखि आई है, करत गवन कौ साज॥
कोउ इक कस कपट करि पठयौ, कछु सँदेस दै हाथ।
सु तौ हमारौ लिये जात है, सरवस अपनैं साथ॥
सो यह सूल नाहिं सुनि सजनी! सहियै धरि जिय लाज।
धीरज जात, चलौ अबहीं मिलि, दूरि गएँ कह काज।
छाँडौ जग जीवन की आसा, अरु गुरुजन की कानि।
विनती कमल नयन सौं करियै, सूर समै पहिचानि॥
॥२९८३॥३६०१॥

राग रामकली

चलत हरि धिक जु रहत ये प्रान।
कहँ वह सुख, अब सहौं दुसह दुख, उर करि कुलिस समान॥

कहँ वह कंठ स्याम सुंदर भुज, करतिं अधर-रस पान।
अँचवत नैन चकोर सुधा बिधु, देखत मुख छबि आन॥
जाकौं जग उपहास कियौ तब, छाँड़्यौ सब अभिमान।
सूर सुनिधि हमतैं है बिछुरत, कठिन है करम-निदान॥
॥२९८४॥३६०२॥

राग कल्यान

स्याम चलन चहत कह्यौ सखी एक आई।
बल मोहन बैठे रथ, सुफलक सुत चढ़न चहत, यह सुनि कै भई चकित- बिरह-दव लगाई॥
धुकि धुकि सब धरनि परीं, ज्वाला झर लता गिरीं, मनौ तुरत जलद बरपि सुरति नीर परसीं।
आईं सब नंद-द्वार, बैठे रथ दोउ कुमार, जसुमति लोटतिं भुव पर, निठुर रूप दरसीं॥
कौन पिता कौन मात, आपु ब्रह्म जगत धात, राख्यौ नहिं कछू नात, नैकुँ चित्त माहीं।
आतुर अक्रूर चढ़े, रसना हरि नाम रढ़े, सूरज प्रभु कोमल तनु, देखि चैन नाहीं॥२९८५॥३६०३॥

राग सारंग

बिनु परबहि उपराग आजु हरि, तुम है चलन कह्यौ।
को जानै उहिं राहु रमापति! कत ह्वै सोध लह्यौ॥
वह तकि बीच नीच नयननि मिलि, अंजन रूप रह्यौ।
बिरह-संधि बल पाइ मनौ हठि, है तिय बदन गह्यौ॥
दुसह दसन मनु धरत स्रमित अति, परस परत न सह्यौ।
देखौ देव अमृत अंतर तैं, ऊपर जात बह्यौ॥
अब यह ससि ऐसौ लागत, ज्यौं बिनु माखनहिं मह्यौ।
सूर सकल रसनिधि दरसन बिनु, मुख-छबि अधिक दह्यौ॥२९८६॥३६०४॥

राग धनाश्री

हरि की प्रीति उर माहिं करकै।
आइ अक्रूर चले लै स्यामहिं, हित नाहीं कोउ हरकै॥

कंचन कौ रथ आगैं कीन्हौ, हरहिं चढाये बर के।
सूरदास-प्रभु सुख के दाता, गोकुल चले उजरि कै॥
॥२९८७॥३६०५॥

राग सारंग

सब ब्रज की सोभा स्याम।
हरि के चलत भई हम ऐसी, मनहु कुसुम निरमायल दाम॥
देखियत हौ तुम क्रूर विषम से, सुन्यौ सूर अक्रूरहिं नाम।
बिचरत हौ न आन गृह-गृह क्यौं, सिसु लायक नृप कौ कह काम॥
॥२९८८॥३६०६॥

यशोदा-विलाप *राग बिलावल*

गोपालहिं राखहु मधुबन जात।
लाज किऐ कछु काज न सरिहै, पल बीते जुगसात॥
सुफलक-सुत के सँग न दीजियै, सुनौ हमारी बात।
गोकुल की सोभा सब जैहै, बिछुरत नँद के तात॥
रथ आरूढ़ होत बल-केसव, ह्वै आयौ परभात।
सूरदास कछु बोल न आयौ, प्रेम पुलक सब गात॥
॥२९८९॥३६०७॥

राग बिलावल

मोहन नैंकु बदन-तन हेरौ।
राखौ मोहिं नात जननी कौ, मदनगुपाल लाल मुख फेरौ॥
पाछैं चढ़ौ बिमान मनोहर, बहुरौ ब्रज मैं होत अँधेरौ।
बिछुरन भेंट देहु ठाढ़े ह्वै, निरखौं घोष जनम कौ खेरौ॥
समदौ सखा स्याम यह कहि कहि, अपने गाइ ग्वाल सब बेरौ।
गए न प्रान सूर ता अवसर, नंद जतन करि रहे घनेरौ॥
॥२९९०॥३६०८॥

कृष्ण-वचन नंद के प्रति *राग बिहागरौ*

अब नँद गाइ लेहु सँभारि।
जो तुम्हारैं आनि बिलमे, दिन चराई चारि॥

दूध दही खवाइ कीन्हे, बड़े अति प्रतिपारि।
ये तुम्हारे गुन हृदय तैं डारि हौं न बिसारि॥
मातु जसुदा द्वार ठाढ़ी, चलै आँसू ढारि।
कह्यौ रहियौ सुचित सौं, यह ज्ञान गुर उर धारि॥
कौन सुत, को पिता-माता, देखि हृदै बिचारि।
सूर के प्रभु गवन कीन्हौ, कपट कागद फारि॥
॥२९९१॥३६०९॥

राग सोरठ

जबहीं रथ अक्रूर चढ़े।
तब रसना हरि नाम भाषि कै, लोचन नीर बढ़े॥
महरि पुत्र कहि सोर लगायौ, तरु ज्यौं धरनि लुटाइ।
देखति नारि चित्र सी ठाढ़ीं, चितये कुँवर कन्हाइ॥
इतनें हि मैं सुख दियौ सबनि कौं, दीन्ही अवधि बताइ।
तनक हँसे, हरि मन जुवतिन कौं, निठुर ठगौरी लाइ॥
बोलति नहीं रहीं सब ठाढ़ी, स्याम-ठगीं ब्रज-नारि।
सूर तुरत मधुबन पग धारे, धरनी के हितकारि॥
॥२९९२॥३६१०॥

राग बिहागरौ

चलत हरि फिरि चितये ब्रज पास।
इतनोहि धीरज दियौ सबनि कौं, गए अवधि दै आस।
नंदहिं कह्यौ तुरत तुम आवहु, ग्वाल सखा लै साथ।
माखन मधु मिष्टान महर लै, दियौ अक्रूर कैं हाथ॥
आतुर रथ हाँक्यौ मधुबन कौं, ब्रजजन भए अनाथ।
सूरदास-प्रभु कंस-निकंदन, देवनि करन सनाथ॥
॥२९९३॥३६११॥

राग नट

रहीं जहाँ सो तहाँ सब ठाढ़ीं।
हरि के चलत देखियत ऐसी, मनहु चित्र लिखि काढ़ी।
सूखे बदन, स्रवति नैननि तैं जल-धारा उर बाढ़ी।
कंधनि बाँह धरे चितवति मनु, द्रुमनि बेलि दव दाढ़ी॥

नीरस करि छाँड़ो सुफलक-सुत, जैसैं दूध बिनु साढ़ी।
सूरदास अक्रूर कृपा तैं, सही बिपति तन गाढ़ी॥
॥२९९४॥३६१२॥

राग सारंग

चलतहुँ फेरि न चितये लाल।
नीकैं करि हरि-मुख न बिलोक्यौ, यहै रह्यौ उर साल॥
रथ बैठे दूरिहि तैं देखे, अंबुज-नैन बिसाल।
मीड़त हाथ सकल गोकुल जन, बिरह बिकल बेहाल॥
लोचन पूरि रहे जल महियाँ, दृष्टि परी जिहिं काल।
सूरदास-प्रभु फिरि नहि चितयौ, अंबुज-नैन-रसाल॥
॥२९९५॥३६१३॥

राग बिलावल

बिछुरत श्री ब्रजराज आजु, इनि नैननि की परतीति गई।
उड़ि न गए हरि संग तबहिं तैं, ह्वै न गए सखि स्याममई॥
रूप रसिक लालची कहावत, सो करनी कछुवै न भई।
साँचे क्रूर कुटिल ये लोचन, वृथा मीन-छवि छीन लई॥
अब काहैं जल-मोचत, सोचत, समौ गए तैं सूल नई।
सूरदास याही तैं जड़ भए, पलकनिहूँ हठि दगा दई॥
॥२९९६॥३६१४॥

राग धनाश्री

केतिक दूरि गयौ रथ माई।
नद-नँदन के चलत सखी हौं, हरि कौं मिलन न पाई॥
एक दिवस हौं द्वार नंद के, नाहि रहति बिनु आई।
आजु बिधाता मति मेरी हरी, भवन-काज बिरमाई॥
जब हरि ऐसौ साज करत हे, काहु न बात चलाई।
ब्रज हौं बसत बिमुख भइ हरि सौं, सूल न उर तैं जाई॥
सोवत ही सुपने की संपति, रही जियहिं सुखदाई।
सूरदास-प्रभु बिनु ब्रज बसिबौ, एकौ पल न सुहाई॥
॥२९९७॥३६१५॥

राग मलार

सखी री वह देखौ रथ जात।
कमल-नयन काँधे पर, न्यारौ पीत बसन फहरात॥
लये जात जब ओट अटनि की, बचन-हीन कृत गात।
छिति परकंप, कनक कदली कहँ, मानौ पवन बिहात॥
मधु छँड़ाइ सुफलक सुत लै गए, ज्यौं माखी बिललात।
सूर सुरूप-नीर-दरसन बिनु, मनहु मीन जलजात॥
॥२९९८॥३६१६॥

राग सारंग

पाछैं ही चितवत मेरे लोचन, आगे परत न पायँ।
मन लै चली माधुरी मूरति, कहा करौं ब्रज जाय॥
पवन न भईं पताका अंबर, भई न रथ के अंग।
धूरि न भईं चरन लपटातीं, जातीं उहँ लौं संग॥
ठाढ़ी कहा, करौ मेरी सजनी, जिहिं बिधि मिलहिं गुपाल।
सूरदास-प्रभु पठै मधुपुरी, मुरझि परीं ब्रजबाल॥
॥२९९९॥३६१७॥

राग सारंग

कान्ह धौं हम सौं कहा कह्यौ।
निकसे बचन सुनाइ सखी री, नाहीं परत रह्यौ॥
मैं मतिहीन मरम नहिं जान्यौ, भूली मथति दह्यौ।
कीजै कहा कह्यौ अब लै निधि, दून दूरि निबह्यौ॥
सबै अजान भईं तिहिं औसर, काहु रथ न गह्यौ।
सूरदास-प्रभु बृथा लाज करि, दुसह बियोग लह्यौ॥
॥३०००॥३६१८॥

राग नट

तब न बिचारी ही यह बात।
चलत न फेंट गही मोहन की, अब ठाढ़ी पछितात॥
निरखि-निरखि मुख रही मौन ह्वै, थकित भई पल-पात।
जब रथ भयौ अदृस्य अगोचर, लोचन अति अकुलात॥

सबै अजान भईं उहि औसर, ढिगहिं जसोमति मात।
सूरदास स्वामी के बिछुरैं, कौड़ी भर न बिकात॥
॥३००१॥३६१९॥

राग सारंग

अब वे बातैं ई ह्यॉं रहीं।
मोहन मुख मुसकाइ चलत कछु, काहूँ नहीं कही॥
सखि सुलाज बस समुझि परस्पर सन्मुख सूल सही।
अब वे सालति हैं उर महियॉं, कैसेंहु कढ़तिं नहीं॥
ज्यौं त्यौं सल्य करन कौं सजनी, काहैं फिरति बही।
हरि चुंबक जहँ मिलहिं सूर-प्रभु मौं लै जाहु तहीं॥
॥३००२॥३६२०॥

राग नट

मेरी बज्र की छाती किन, बिदरि बिदरि जाति।
हरिहिं चलत चितवति मग, ठाढ़ी पछिताति॥
विद्यमान बिरह-सूल, उर मैं जु समाति।
प्राननाथ बिछुरे सखि, जीवत न लजाति॥
ज्यौं ठग निधि हरत, रच गुर दै किहुँ भॉंति।
इमि फिरि मुसकानि सूर, मनसा गई माति॥
॥३००३॥३६२१॥

राग गौरी

आजु रैनि नहिं नींद परी।
जागत गिनत गगन के तारे, रसना रटत गोविंद हरी॥
वह चितवनि, वह रथ की बैठनि, जब अक्रूर की बॉंह गही।
चितवति रही ठगीसी ठाढ़ी, कहि न सकति कछु काम दही॥
इते मान ब्याकुल भइ सजनी, आरज पंथहुँ तैं बिडरी।
सूरदास-प्रभु जहॉं सिधारे, कितिक दूर मथुरा नगरी॥
॥३००४॥३६२२॥

राग सारग

हरि बिछुरत फाट्यौ न हियौ।
भयौ कठोर बज्र तैं भारी, रहि कै पापी कहा कियौ॥

चोरि हलाहल सुनि री सजनी, तिहिं अवसर काहैं न पियौ।
मन सुधि गई सँभार न तन की, पूरौ दाँव अक्रूर दियौ॥
कछु न सुहाइ गई निधि जब तैं, भवन-काज कौ नेम लियौ।
निसि-दिन रटत सूर के प्रभु बिनु मरिबौ, तऊ न जात जियौ॥
॥३००५॥३६२३॥

राग नट

हरि बिछुरत प्रान निलज्ज रहे री।
पिय समीप-सुख की सुधि आवै, सूल सरीर न जात सहे री॥
निसि-बासर ठाढ़ी मग जोवति, ये दुख हम न सुने न चहे री।
गवन करत देखन नहिं पाए, नैन नीर भरि बहसि बहे री॥
वै बातैं बसि रहीं हिये मैं, उलटि अवधि के बचन कहे री।
सूर स्याम बिनु परब बिरह बस, मानहुँ रबि ससि राहु गहे री॥
॥३००६॥३६२४॥

राग अडानौ

सुँदर बदन सुख सदन स्याम कौ, निरखि नैन मन थाक्यौ।
बारक इनि बीथिनि ह्वै निकसे, उझकि झरोखा झाँक्यौ॥
उन इक कछू चतुरई कीन्ही, गेंद उछारि जु ताक्यौ।
धारौं लाज भई मोहिं बैरिनि, मैं गँवारि मुख ढाँक्यौ॥
कछु करि गये तनिक चितवनि मैं, रहत प्रान मद छाक्यौ।
सूरदास-प्रभु सरबस लै गए, हँसत-हँसत रथ हाँक्यौ॥
॥३००७॥३६२५॥

राग सारंग

री मोहिं भवन भयानक लागै, माई स्याम बिना।
काहि जाइ देखौं भरि लोचन, जसुमति कैं अँगना॥
को संकट सहाइ करिबे कौं मेटै बिघन घना।
लै गयौ क्रूर अक्रूर साँवरौ, ब्रज कौ प्रानधना॥
काहि उठाइ गोद करि लीजै, करि करि मन मगना।
सूरदास मोहन दरसन बिनु, सुख संपति सपना॥
॥३००८॥३६२६॥

राग मलार

सब कोउ कहत गुपाल दोहाई ।
गोरस बेचन गई ब्रज की सों, मथुरा तैं आई ॥
जब तैं गए मोहन सुकंस सुनि, जियत मृतक करि लेखौ ।
जागत सोवत असुर दिवस निसि, कृष्न कला सब देखौ ॥
करत अवज्ञा प्रजा लोग सब, नृप की संक न मानैं ।
ठकुराइत केसो गिरिधर की, सूरदास जन जानैं ।
॥३००९॥३६२७॥

राग धनाश्री

है कोउ ऐसी भाँति दिखावै ।
किंकिनि सब्द चलत धुनि, रुनझुन ठुमुकि ठुमुकि गृह आवै ॥
कछुक बिलास बदन की सोभा, अरुन कोटि गति पावै ।
कंचन मुकुट कंठ मुक्तावलि, मोर पखा छवि छावै ॥
धूसर - धूरि अंग अँग लीन्हे, ग्वाल बाल सँग लावै ।
सूरदास - प्रभु कहति जसोदा, भाग बडे तैं पावै ॥
॥३०१०॥३६२८॥

राग सोरठ

कहा हों ऐसे ही मरि जैहों ।
इहिं आँगन गोपाल लाल को, कबहुँ कि कनिया लैहों ॥
कब वह मुख बहुरो देखौंगी, वह वैसो सचु पैहौं ।
कब मोपै माखन माँगैंगे, कब रोटी धरि देहौं ॥
मिलन आस तन-प्रान रहत हैं, दिन दस मारग ज्वैहौं ।
जो न सूर आइहैं इते पर, जाइ जमुन धँसि लैहौं ॥
॥३०११॥३६२९॥

अक्रूर-कृत-श्रीकृष्ण-स्तुति *राग गुडमलार*

मनहिं मन अक्रूर सोच भारी ।
जननि कौं दुखित करि इनहिं मैं लै चल्यौ, भई व्याकुल सबै घोष-
नारी ॥
अतिहिं ये बाल हैं भोरी नवनीत के जानि लीन्हे जात दनुज पासा ।
कुवलया, मल्ल मुष्टिक चानूर से, कियौ मैं कर्म यह अति
उदासा ॥

फेरि लै जाउँ ब्रज स्याम बलराम कौं, कंस लै मोहिं तब जीव मारै।
सूर पूरन ब्रह्म निगम नाहीं गम्य, तिनहिं अक्रूर मन यह बिचारै॥
॥३०१२॥३६३०॥

राग गुंडमलार

इहै सोच अक्रूर परयौ।
लिये जात इनकौं मैं मथुरा, कंसहिं महा डरयौ॥
धिक मोकौं, धिक मेरी करनी, तबहीं क्यौं न मरयौ।
मैं देखौं इनकौं वह हतिहै, अति ब्याकुल इहरयौ॥
इहिं अंतर जमुना-तट आए, स्यंदन कियौ खर्‌यौ।
सूरदास-प्रभु अंतरजामी, भक्त सँदेह हर्‌यौ॥
॥३०१३॥३६३१॥

राग धनाश्री

सुफलक-सुत दुख दूरि कर्‌यौ।
जमुना-तीर कियौ रथ ठाढ़ौ, आपुहिं प्रगट हर्‌यौ॥
तिनहिं कह्यौ तुम स्नान करौ ह्याँ, हमहिं कलेऊ देहु।
भूख लगी भोजन हम करिहैं नेम सारि तुम लेहु॥
तब लौं नंद, गोप सब आवैं, संग मिले सब जैहैं।
सूरदास प्रभु कहत हैं पुनि, तब अतिहीं सुख पैहैं॥
॥३०१४॥३६३२॥

राग गुँडमलार

सुनत अक्रूर यह बात हरषे।
स्याम बलराम कौं तुरत भोजन दियौ, आपु असनान कौं नीर परसे॥
गए कटि नीर लौं नित्य संकल्प करि, करत अस्नान इक भाव देख्यौ।
जैसेइ स्याम बलराम स्यंदन चढ़े, वहै छवि कुंभ रस माझ पेख्यौ॥
चकित भये कबहुँ तीर पुनि जल निरखि, घोप अक्रूर जिय भयौ भारी।
सूर-प्रभु चरित मैं थकित अतिहीं भयौ, तहाँ दरमि नित-थल-बिहारी॥३०१५॥३६३३॥

राग कान्हरौ

कमल पर वज्र धरति उर लाइ।
राजति रमा कुभ रस अंतर, पति निज-थल जल-साइ॥
वैनतेय संपुट सनकादिक, जय अरु विजय सखाइ।
औसर-बाग-बिसारद नारद, हाहा जित गुन गाइ॥
कनक-दंड सारंग विविध रव, निगम सिद्ध सुर ध्याइ।
तिनके चरम-सरोज सूर दरसन, गुरु कृपा सहाइ॥
॥३०१६॥३६३४॥

राग धनाश्री

हरप अक्रूर हिरदै न माइ।
नेम भूल्यौ, ध्यान स्याम बलराम कौ, हृदै आनद मुख कहि न जाइ॥
ब्रह्म पूरन अकल, कला तैं रहित ये, हरन करन समर्थ और नाहीं।
कहा बपुरा कंस, मिट्यौ तब मन सस, करत है गस निरवंस जाहीं॥
हाँकि रथ चलौ चढ़ि, बिलम अब कहा प्रभु, गयो संदेह अक्रूर जी कौ।
नंद उपनद सँग ग्वाल बहु भार लै, आइ स्यंदन मिले सूर पी कौ॥
॥३०१७॥३६३५॥

राग कल्यान

बार-बार स्याम राम अक्रूरहिं गानैं।
अबहीं तुम हरष भए, तबहीं मन मारि रहे, चले जात रथहिं
बात बूझत है वानैं॥
कहौ नहीं साची सो हमसौं जनि गोप करौ, सुनिकै अक्रूर विमल
अस्तुति मुख भानै।
सूरज प्रभु गुन अथाह, धनि-धनि श्री प्रिया नाह, निगम कौ
अगाह, सहस-आनन नहिं जानै॥३०१८॥३६३६॥

राग बिलावल

बार-बार मोसौं कह बूझत, तुम परब्रह्म गुसाईं।
तुम हरता करता एकै हौ, अखिल भुवन के साईं॥
कहा मल्ल चानूर कुबलया, त्रास नहीं तिन नैकौं।
सूरदास-प्रभु कंस निपातहु, गहरु न करौ वैसैं कौं॥
॥३०१९॥३६३७॥

राग धनाश्री

बूझत हैं अक्रूरहिं स्याम ।
तरनि किरनि महलनि पर झाईं, इहै मधुपुरी नाम ॥
स्रवननि सुनत रहत है जाकौं, सो दरसन भए नैन ।
कंचन कोट कँगूरनि की छवि, मानौ बैठे मैन ॥
उपवन बन्यौ चहूँघा पुर के, अतिहीं मोकौं भावत ।
सूर स्याम बलरामहिं पुनि पुनि, कर पल्लवनि दिखावत ॥
॥३०२०॥३६३८॥

राग कल्यान

बार-बार बलराम कौं, मधुपुरी बतावत ।
छज्जनि महलनि देखि कै, मन हरष बढ़ावत ॥
जन्म-थान जिय जानि कै, तातैं सुख पावत ।
बन उपवन छाये सघन, रथ चढ़े जनावत ॥
नगर सोर अकनत स्रवन, अति रुचि उपजावत ।
सुनत सब्द घरियार कौ, नृप द्वार बजावत ॥
बरन बरन मंदिर बने, लोचन ठहरावत ।
सूरज-प्रभु अक्रूर सौं कहि देखि सुनावत ॥
॥३०२१ ३६३९॥

राग कल्यान

श्री मथुरा ऐसी आजु बनी ।
जैसें पति कौ आगम सुनि कै, सजनी सिंगार बनी ।
कोट मनौ कटि कसी किंकिनी, उपवन बसन सुरंग ॥
भूपन भवन विचित्र देखियत, सोभित सुंदर अंग ।
सुनत स्रवन घरियार घोर धुनि, पाइनि नूपुर बाजत ॥
अति संभ्रम अंचल चंचल गति, धामनि धुजा बिराजत ।
ऊँच अटनि पर छत्रनि की छवि, सीसफूल मनौ फूली ।
कनक कलस कुच प्रगट देखियत, आनँद कंचुकि भूली ॥
विद्रुम-फटिक रचित परदनि पर, जालरंध्र की रेख ।
मनहु तुम्हारे दरसन कारन, भूले नैन-निमेष ॥
चित दै अवलोकहु नँदनंदन, पुरी परम रुचि रूप ।
सूरदास-प्रभु कंस मारि कै, होहु इहाँ के भूप ॥
॥३०२२॥३६४०॥

राग कल्यान

मथुरा हरषित आजु भई।
ज्यौं जुवती पति आवत सुनि के, पुलकित अंग मई ॥
नवसत साजि सिगार सुंदरी, आतुर पथ निहारति।
उड़ति धुजा तनु सुरति बिसारे, अंचल नहीं सँभारति ॥
उरज प्रगट महलनि पर कलसा, लसति पास घन सारी।
ऊँचे अटनि छाज की सोभा, सीस उचाइ निहारी ॥
जालरध्र इकटक मग जोवति, किंकिन कंचन दुर्ग।
बेनी लसति कहाँ छबि ऐसी, महलनि चित्रे उर्ग ॥
बाजत नगर बाजने जहँ तहँ, और बजत घरियार।
सूर स्याम बनिता ज्यौं चंचल, पग नूपुर झनकार ॥
॥३०२३॥३६४१॥

राग गुण्डमलार

नगर के पास जब स्याम आए।
देखि रथ चढ़े बलराम अरु स्याम कौं, गए अक्रूर तिन लए आए ॥
कंस के दूत जहँ तहाँ तैं देखि कै, गए नृप पास आतुर सुनाए।
नंद के बाल गोपाल बलराम दोउ, सुनत यह सुभट निकटहिं बुलाए ॥
उठ्यौ दलकारि कर ढाल खड्गहिं लिए, रगरनभूमि कै महल बैठौ।
कुबलया मल्ल मुष्टिकऽरु चानूर सौं होहु तुम सजग कहि सबनि ऐंठौ ॥
एक पठवत, एक कहत है आइ कै, एक सौं कहत धौं कहाँ आए।
सूर-प्रभु सहर पैठार पहुँचे आइ, धनुष के पास जोधा रखाए ॥
॥३०२४॥३६४२॥

राग धनाश्री

मथुरा पुर मैं सोर पर्‌यौ।
गरजत कंस बंस सब साजे, मुख कौ नीर हर्‌यौ ॥
पीरौ भयौ, फेफरी अधरनि, हिरदै अतिहिं डर्‌यौ।
नंद महर के सुत दोउ सुनि कै, नारिनि हर्ष भर्‌यौ ॥
कोउ महलनि पर कोउ छज्जनि पर, कुल लज्जा न कर्‌यौ।
कोउ धाईं पुर गलिन-गलिन ह्वै, काम-धाम बिसर्‌यौ ॥

इंदु बदन नव जलद सुभग तनु, दोउ खग नयन कर्‍यौ।
सूर स्याम देखत पुर-नारी, उर-उर प्रेम भर्‍यौ॥
॥२०२५॥३६४३॥

राग गौरी

ढोटा कौन कौ यह री।
स्त्रुतिमंडल मकराकृत कुंडल, कंठ कनक-दुलरी।
घन तन स्याम, कमल दल लोचन, चारु चपल तुल री।
इंदु-बदन, मुसुकानि माधुरी, अलकैं अलि-कुल री॥
उर मुक्ता की माल, पीत पट, मुरली सुर गवरी।
पग नूपुर मनि जटित रुचिर अति, कटि किंकिनि-रव री॥
बालक-बृंद मध्य राजत हैं, छबि निरखत भुल री।
सोइ सजीवनि सूरदास की, महरि रहे उर री॥
॥२०२६॥३६४४॥

राग गौरी

ढोटा नंद को यह री।
नाहिं जानति बसत ब्रज मैं, प्रगट गोकुल री॥
धर्‍यौ गिरिवर बाम कर जिहिं, सोइ है यह री।
दैत्य सब इनहीं सँहारे, आपु-भुज-बल री॥
ब्रज घरनि जो करत चोरी, खात माखन री।
नंद-घरनी जाहि बाँध्यौ, अजिर ऊखल री॥
सुरभि-ठान लिये बन तैं आवत, सबहि गुन इन री।
सूर-प्रभु ये सबहि लायक, कंस डरै जिन री॥
॥२०२७॥३६४५॥

राग गौरी

जसुमति को सुत यहै कन्हाई। इनहिं गुबर्धन लियौ उठाई॥
इंद्र पर्‍यौ इनहीं कैं पाई। इनही की ब्रज चलति बड़ाई॥
बकी पियावन इनहीं आई। जोजन एक परी मुरझाई॥
इनहिं तृना लै गयौ उड़ाई। पटक्यौ द्वार सिला पर आई॥
केसी असुर इनहिं संहार्‍यौ। अघा-बकासुर इनहीं मार्‍यौ॥
स्याम बरन तन, पीत पिछौरी। मुरली राग बजावत गौरी॥

देखि रूप चकित भई बाला। तन की सुधि न रही तिहिँ काला॥
सूर स्याम कौं जानति नीकैं। मगन भई, पूछति सुख जी कैं॥
॥३०२८॥३६४६॥

राग रामकली

रथ पर देखि हरि-बलराम।
निरखि कोमल-चारु मूरति, हृदय मुक्ता-दाम॥
मुकुट कुंडल पीत पट छबि, अनुज भ्राता स्याम।
रोहिनी-सुत एक कुंडल, गौर तनु सुख-धाम॥
जननि कैसैं धरयौ धीरज, कहतिं सब पुर बाम।
बोलि पठयौ कंस इनकौं, करै धौं कह काम॥
जोरि कर बिधि सौं मनावतिं, असिष दै दै नाम।
न्हात बार न खसै इनकौ, कुसल पहुँचैं धाम॥
कंस कौ निरबंस ह्वैहै, करत इन पर ताम।
सूर-प्रभु नँद-सुवन दोऊ, हंस-चाल उपाम॥
॥३०२९॥३६४७॥

राग मलार

देखु वै आवत हैं बनमाली।
घन तन स्याम सुदेस पीत पट, सुंदर नैन बिसाली॥
जिन पहिलैं पलना पौढ़े, पय पिवत पूतना घाली।
अघ बक बच्छ अरिष्ट केसि मथि, जल तैं काढ़यौ काली॥
जिन हति सकट प्रलंब तृनावृत, इंद्र प्रतिज्ञा टाली।
एते पर यह समुझत नाहीं, कपटी कंस कुचाली॥
अब बिधु-बदन बिलोकि सुलोचन, स्रवन सुनत ही आली।
धन्य सु गोकुल-नारि सूर-प्रभु, प्रगट प्रीति प्रतिपाली॥
॥३०३०॥३६४८॥

राग भैरव

एइ माधौ जिन मधु मारे री।
जन्मत ही गोकुल सुख दीन्हौ, नंद दुलार बहुत सारे री॥
केसी तृनावर्त, बृषभासुर, हती पूतना जब बारे री।
इंद्र-कोप बरषत गिरि धारयौ, महा प्रलय ब्रज के टारे री॥

बल समेत नृप कंस बुलाए, रचे रंग-रन अति भारे री।
सूर असीस देतिं सब सुंदरि, जीवहिं अपनी माँ-प्यारे री॥
॥३०३१॥३६४९॥

राग बिहागरौ

भए सखि नैन सनाथ हमारे।
मदनगोपाल देखतहिं सजनी, सब दुख सोक बिसारे॥
पठये हे सुफलक-सुत गोकुल, लैन सो इहाँ सिधारे।
मल्ल जुद्ध प्रति कंस कुटिल मति, छल करि इहाँ हँकारे॥
मुष्टिक अरु चानूर सैल सम, सुनियत हैं अति भारे।
कोमल कमल समान देखियत, ये जसुमति के बारे॥
होवे जीति बिधाता इनकी, करहु सहाइ सबारे।
सूरदास चिर जियहु दुष्ट दलि, दोऊ नंद-दुलारे॥
॥३०३२॥३६५०॥

अक्रूर प्रत्यागमन (संक्षिप्त) *राग मारू*

जमुना तट आइ अक्रूर न्हाए।
स्याम बलराम कौ रूप जल मैं निरखि, बहुरि रथ देखि आचरज पाए॥
किधौं यह बिंब प्रतिबिंब जल देखियत, किधौं निज रूप दोउ हैं सुहाए।
चकित ह्वै नीर मैं बहुरि बुड़की दई, सहित सुर सिद्ध तहँ दरस पाए॥
दोउ कर जोरि करि बिनय बहु बिधि करी, लियौ जल रूप तब हरि दुहाई।
निकसि कै नीर तैं तीर आयौ बहुरि, ताहि ढिग बोलि, बोले कन्हाई॥
कहा हम ओर देखत हुते तात तुम, कह्यौ सब जगत तुमहीं भुलायौ।
गति तुम्हारी न जानै कोऊ तुम बिना, राखि प्रभु राखि मैं सरन आयौ॥
हरि कह्यौ चलौ मथुरापुरी देखियै, सहित अक्रूर पुनि तहाँ आए।
सूर प्रभु कियौ बिश्राम निसि बसि तहाँ, बोधि अक्रूर निज गृह पठाये॥
॥३०३३॥३६५१॥

श्रीकृष्ण का मथुरा आगमन *राग भैरव*

भोर भयौ जागे नँदलाल।
नंदराइ निरखत मुख हरषे, पुनि आए सब ग्वाल॥
देखि पुरी अति परम मनोहर, कंचन कोट बिसाल।
कहन लगे सब सूरज-प्रभु सौं, होहु इहाँ भूपाल॥
॥३०३४॥३६५२॥

राग परज

हरि बल सोभित इहिं अनुहार।
ससि अरु सूर उदै भए मानौ, दोऊ एकहिं बार॥
ग्वाल बाल सँग करत कुतूहल, गवने पुरी मझार।
नगर-नारि सुनि देखन धाईं, सुत, पति, गेह बिसार॥
उलटि अंग आभूषन साजत, रही न देह सँभार।
सूरदास - प्रभु दरस देखि, भईँ, चकित करतिं बिचार॥
॥३०३५॥३६५३॥

राग धनाश्री

वे देखौ आवत दोऊ जन।
गौर स्याम नट नील पीत पट, मनहु मिले दामिनि-घन॥
लोचन बंक बिसाल कमल-दल, चितवत, चितै हरत सबकौ मन।
कुंडल स्रवन कनक मनि भूषित, जटित लाल अति लोल मीन तन॥
चंदन चित्र बिचित्र अंग पर, कुसुम सुबास धरे नँदनंदन।
बलि बलि जाउँ चलैं जिहिं मारग, संग लगाइ लेत मधुकर गन॥
धनि यह भूमि जहाँ पगु धारे, जीतहिंगे रिपु आज रंग-रन।
सूरदास वे नगर नारि सब, लेतिं बलाइ वारि अंचल सन॥
॥३०३६॥३६५४॥

रजक-वध *राग रामकली*

नृपति-रजक अंबर नृप धोवत।
देखे स्याम राम दोउ आवत, गर्व सहित तिन जोवत॥
आपुस ही मैं कहत हँसत है, प्रभु हिरदै येइ सालत।
तनक तनक से ग्वाल छोहरनि, कंस अबहिं बँधि घालत॥

तृनावर्त प्रभु आहि हमारौ, इनही मार्‍यौ ताहि।
बहुत अजगरी इहिं करि राखी, प्रथम मारिहैं याहि॥
जोको नाम स्याम सोइ खोटौ, तैसेइ हैं दोउ बीर।
सूर नंद बिनु पुत्र कहाए, ऐसे जाए हीर॥
॥३०३७॥३६५५॥

राग बिलावल

अंतरजामी जानि कै, सब ग्वाल बुलाए।
परखि लिए पाछैन कौं, तेऊ सब आए॥
सखा वृंद लै तहँ गए, बूझन तिहिं लागे।
नृपति पास हम जाहिंगे, अंबर कछु माँगे॥
हँसे स्याम मुख हेरि कै, धोवत गरवानौ।
मारत मारत सात के, दोउ हाथ पिरानौ॥
अबहीं दैहैं आइ कै, कछु हम लै रैहैं।
पहिरावनि जो पाइहैं, सो तुमहूँ दैहैं॥
की पहिलैं ही लैहुगे, हम इहौ बिचारैं।
देहु बहुत गुन मानिहैं, आधीन तुम्हारैं॥
मारु मारु कहि गारि दै, धिक गाइ चरैया।
कंस पास ह्वै आइयै, कामरी ओढ़ैया॥
बहुरि अरस तैं आइकै, तब अंबर लीजौ।
धोइ धरी करि राखिहैं, भावै सो कीजौ॥
अरस नाम है महल कौ, जहँ राजा बैठे।
गारी दै दै सब उठे, भुज निज कर ऐंठे॥
पहिरावनि कौं जुरि चले, पैहौ मल्लनि सौं।
सूर अजा के भोग ये, सुनि लेहु न मोसौं॥
॥३०३८॥३६५६॥

राग बिलावल

हम माँगत हैं सहज सौं, तुम अति रिस कीन्हौ।
कहा करै तौ जाहिंगे, तुम हमहिं न दीन्हौ॥
रिस करियत क्यौं सहजहीं, भुज देखत ऐसे।
करि आए नट स्वाँग से, मोकौं तुम वैसे॥

हमहिं नृपति सों नात है, तातैं हम माँगैं।
बसन देहु हमकों सबै, कहिहैं नृप आगैं॥
नृप आगैं लौं जाहुगे, बीचहिं मरि जैहौ।
नैंकु जियन की आस है, ताहू बिनु ह्वैहौ॥
नृप काहे कौं मारिहै, तुमहीं अब मारत।
गहरु करत हमकों कहा, मुख कहा निहारत॥
सूर दुहुनि में मारिहौं, अति करत अचगरी।
बसत तहाँ बुधि तैसियै, वह गोकुल नगरी॥
॥३०३९॥३६५७॥

राग बिलावल

स्याम गह्यौ भुज सहजहीं, क्यों मारत हमकौं।
कंस नृपति की सौंह है, पुनि पुनि कहि तुमकौं॥
पहुँचा कर सौं नहिं रहे, जिय सकट मेल्यौ।
डारि दियौ तिहिं सिला पर, बालक ज्यौं खेल्यौ॥
तुरत गयौ उड़ि स्वर्ग कौं, ऐसे गोपाला।
जनम मरन तैं रहि गयौ, वह कियौ निहाला॥
रजक भजे सब देखिकै, नृप जाइ पुकार्‌यौ।
सूर छोहरनि नंद के, नृप सेठिहिं मार्‌यौ॥
॥३०४०॥३६५८॥

राग गौरी

यह सुनि कै नृप त्रास भर्‌यौ।
सबनि सुनाइ कही यह बानी, यह नँद-नंद कर्‌यौ॥
मारौं स्याम राम दोउ भाई, गोकुल देउँ बहाइ।
आगैं दै कै रजक मरायौ, स्वर्गहिं देउँ पठाइ॥
दिन दिन इनकी करौं बड़ाई, अहिर गए इतराइ।
तो मैं जो वाही सौं कहिकै, उनकी खाल कढाइ॥
सूर कंस यह करत प्रतिज्ञा, त्रिभुवन नाथ कहाइ॥
॥३०४१॥३६५९॥

राग बिलावल

रजक मारि हरि प्रथम हीं, नृप बसन लुटाए।
रंग रंग बहु भाँति के, गोपनि पहिराए॥

आए नगर लगार कौं, सब बने बनाए।
इकटक रहीं निहार कै, तरुनिनि मन भाए॥
जैसी जाकैं कल्पना, तैसेइ दोउ आए।
सूर नगर नर-नारि के, मन चित्त चुराए॥
॥३०४२॥३६६०॥

राग बिलावल

एइ दोउ बसुदेव के ढोटा।
गौर स्याम नट नील पीत पट, कल हंसनि के जोटा॥
कुंडल एक बाम स्रुति जाकैं, सो रोहिनि कौ अंस।
उर बनमाल देवकी कौ सुत, जाहि डरत है कंस॥
लै राखे ब्रज सखा नंद गृह, बालक भेष दुराइ।
सम बल ये सिरात द्रग देखत, अब प्रगटे हैं आइ॥
केसी, अघ, पूतना, निपाती, लीला गुननि अगाध।
सूरदास प्रभु प्रगट हरन खल, अभय करन सुर साध॥
॥३०४३॥३६६१॥

राग रामकली

एह कहियत बसुदेव-कुमार।
कस त्रास मन मानि पठाए, कीन्हे नंद दुलार॥
प्रथम पूतना इनहिं निपाती, काग मरत उठि भाज्यौ।
सकटा, तृना इनहिं संहार्‌यौ, काली इनहिं निवार्‌यौ॥
अवा, बका संहारन एई, असुर सँहारन आए।
सूरज-प्रभु हित हेत भाव के, जसुमति बाल कहाए॥
॥३०४४॥३६६२॥

राग नट

वै हैं रोहिनी-सुत राम।
गौर अंग सुरंग लोचन, प्रलय जिनके नाम॥
एक कुंडल स्रवन-धारी, पीत दरसी प्राम।
नील अंबर अंग-धारी, स्याम पूरन काम॥
महा जे खल तिनहु वे अति, तरन हैं इक नाम।
पूतनहारन सकल स्वामी, रहे ब्रज निज धाम॥

ताल बन इन धेनुक मार्यौ, ब्रह्म पूरन काम।
सूर प्रभु आकरषि तातैं, संकरषन है नाम॥
॥३०४५॥३६६३॥

राग रामकली

ये ई देवकी-सुत स्याम।
मुकुट सिर सुभ स्रवन कुंडल, करत पूरन काम॥
महा जे खल तिनहुँ तैं अति, तरत हैं इक नाम।
ब्रह्म पूरन सकल स्वामी, रहे ब्रज निज धाम॥
नंद पितु माता जसोदा, बाँधि ऊखल दाम।
लकुट लै लै त्रास कीन्हौ, कर्यो इन पर ताम॥
ताहि मान्यौ हेत करि, इन हँसति ब्रज की बाम।
सूर धनि नँद धन्य जसुमति, धन्य गोकुल ग्राम॥
॥३०४६॥३६६४॥

राग मारू

धनुषसाला चले नंदलाला।
सखा लिए संग प्रभु रंग नाना करत, देव नर कोउ न लखि सकत ख्याला॥
नृपति के रजक सौं भेंट मग मैं भई, कह्यौ दे बसन हम पहिरि जाहीं।
बसन ये नृपति के जासु की प्रजा तुम, ये बचन कहत मन डरत नाहीं॥
एक ही मुष्टिका प्रान ताके गए, लए सब बसन कछु सखनि दीन्हे।
आइ दरजी गयौ बोलि ताकौं लयौ, सुभग अँग साजि इन बिनय कीन्हे॥
पुनि सुदामा कह्यौ गेह मम अति निकट, कृपा करि तहाँ हरि चरन धारे।
धोइ पद-कमल पुनि हार आगैं धरे, भक्ति दै, तासु सब काज सारे॥
लिए चंदन बहुरि आनि कुबिजा मिली, स्याम अँग लेप कीन्हौ बनाई।
रीझि तिहिं रूप दियौ, अंग सूधौ कियौ, बचन सुभ भाषि निज गृह पठाई॥

पुनि गए तहाँ जहँ धनुष, बोले सुभट, हँसि जनि मन करौ न बन-
बिहारी।
सूर-प्रभु छुवत धनु टूटि धरनी पर्‌यौ, सोर सुनि कंस भयौ भ्रमित
भारी ॥३०४७॥३६६५॥

धनुष-भंग लीला *राग गुंडमलार*

स्याम बलराम गए धनुपसाला।
लियौ रथ तैं उतरि रजक मार्‌यौ जहाँ, कंदरा तैं निकसि सिंघ
बाला॥
नंद उपनंद सँग सखा इक थल राखि, कोउ बने आवैं बीर जोटा।
असुर सैना खरे देखि कै वै डरे, धनुष चहुं पास रिपु घटा घोटा॥
घेरि लीन्हे स्याम बलराम कौं तहाँ, बोलि सब उठे हरि धनुष
तोरौ।
सूर तुमकौं सुने भुजनि बल बड़ अति, हँसत हरि कह्यौ यह बैर
जोरौ॥३०४८॥३६६६॥

राग बिहागरौ

हमकौं नृप इहि हेत बुलाए?
कहाँ धनुष, कहँ हम अति बालक, कहि आचरज सुनाए॥
ठाढ़े सूर बीर अवलोकत, तिनिसौं कह्यौ न तोरैं।
हमसौं कह्यौ खेल कछु खेलैं, यह कहि कहि मुख मोरैं॥
कंस एक तहँ असुर पठायौ, यहै कहत वह आयौ।
बनै धनुष तोरैं अब तुमकौं, पाछैं निकट बुलायौ॥
बालक देखि गहन भुज लाग्यौ, ताहि तुरत हीं मार्‌यौ।
तोरि कोदंड मारि सब जोधा, तब बल भुजा निहार्‌यौ॥
जाकैं अस्त्र तिनहिं तेहि मार्‌यौ, चले सामुहीं खोरी।
सूर कूबरी चंदन लीन्हे, मिली स्याम कौं दौरी॥
॥३०४९॥३६६७॥

राग धनाश्री

प्रभु तुमकौं मैं चंदन ल्याई।
गह्यौ स्याम कर अपने सौं, लिए सदन कौं आई॥

धूप दीप नैवेद साजि कै, मंगल करे बिचारि।
चरन पखारि लियौ चरनोदक, धनि धनि कहि दैतारि॥
मेरी जनम कल्पना ऐसी, चंदन परसौं अंग।
सूर स्याम जन के सुखदायक, बँधे भाव रजु रंग॥
॥३०५०॥३६६८॥

राग गुंडमलार

कूबरी नारि सुंदरी कीन्ही।
भाव मैं वास बिनु भाव नहिं पाइयै, जानि हिरदै हेत मानि लीन्ही॥
ग्रीव कर परसि पग पीठि तापर दियौ, उरबसी रूप पटतरहिं दीन्ही।
चित वाकैं इहै स्याम पति मिलैं मोहिं, तुरत सोइ भई नहिं जाति चीन्ही॥
ताहि अपनी करी चले आगैं हरी, गए जहँ कुबलया मल्ल द्वारैं।
बीच माली मिल्यौ, दौरि चरननि पर्‍यौ, पुहुप-माला स्याम कंठ धारे॥
कुसल प्रश्नहिं कहे, तुरत मनकाम लहि, भक्तवत्सल नाम भक्त गावैं।
ताहि सुख दै चलै, पौरिहीं ह्वै खरे, सूर गजपाल सौं कहि सुनावैं॥
॥३०५१॥३६६९॥

कुबलया-वध *राग कान्हरौ*

सुनिहि महावत बात हमारी।
बार-बार संकर्षन भाषत, लेत नहिं ह्याँ तैं गज टारी॥
मेरौ कह्यौ मानि रे मूरख, गज समेत तोहिं डारौं मारी।
द्वारैं खरे रहे हैं कबके, जनि रे गर्व करहि जिय भारी॥
न्यारौ करि गयंद तू अजहूँ, जान देहि कै आपु सँभारी।
सूरदास-प्रभु दुष्ट निकंदन, धरनी भार उतारनकारी॥
॥३०५२॥३६७०॥

राग गुंडमलार

बार बार संकरषन भाषत बारन बनि बारन करि न्यारौ।
बारन छाँडि देत किन हमकौं, तू जानत मतंग मतवारौ॥

बाहिर खरे बात सुनि मेरी, त्रिभुवनपति जनि जानहि बारौ।
बादिहिं मरि जैहै पलभीतर, कहे देत नहिं दोष हमारौ॥
बात सुनत रिस भर्‍यौ महावत, तुमहिं कहा इतनौ रे गारौ।
बादत बड़े सूर की नाईं, अबहिं लेत हौं प्रान तिहारौ॥
॥२०५३॥३६७१॥

राग गुंडमलार

बार नहिं करौं बारन सहित फटकिहौं, बावरे बात कहि मुख सँभारौ।
बादि मरि जाइगौ, बार नहिं छाँड़ि दै, बदत बलराम तोहिं बार बारौ॥
बात मेरी मानि गर्व बोल कहा, काल किन देखि, इतरात का रे।
बाम कर गहि मुड डारिहौं अमरपुर, हाँक दै तुरत गज कौ हँकारे।
बाज सौं टूटि गजराज हाँकत पर्‍यौ मनौ गिरि चरन धरि लपकि लीन्हौ॥
बार बाँधे बीर चहूँधा देखहीं, बज्र सम थाप बल कुंभ दीन्हौ॥
कूक पार्‍यौ लपकि खींच गज डार्‍यौ मद, गंड मधि रंध्र भरिबौ सुखार्‍यौ।
क्रोध गजपाल कैं ठठकि हाथी रह्यौ, देत अंकुस मसकि कह सकार्‍यौ॥
बहुरि तातौ कियौ, डारि तिन पै दियौ, आइ लपटे सुतहु नंद केरे।
सूर प्रभु स्याम बलराम दोउ दुहूँधा, बीच करि नाग इत उतहिं टेरे॥
॥२०५४॥३६७२॥

राग गुंड मलार

क्रोध गजराज, गजपाल कीन्हौ।
गरजि घुमरात मदभार गंडनि स्रवत, पवन तैं बेग तिहिं समय चीन्हौ॥
चक्र सौं भ्रमत चकित भए देखि सब, चहूँधा देखियै नंद-ढोटा।
चमकि गए बीर सब चकाचौंधी लगी, चितै डरपे असुर घटा घोटा॥
नील अंबर धौल बरन बलराम बनि, पीत अंबर स्याम अंग सोभा।
सूर-प्रभु-चरित पुर-नारि देखत, महल-महल पर आसिषा देति लोभा॥२०५५॥३६७३॥

राग गुंडमलार

कहत हलधर कह्यौ मानि मेरौ।
अखिल ब्रह्मांड के नाथ ह्याँ हैं खरे गज मारि जीव अब लेउँ तेरौ ॥
यह सुनत रिस भर्‌यो, दौरिबे कौं पर्‌यौ, सूँडि झटकत पटकि क्रूक पार्‌यौ।
घात मन करत लै डारिहौं दुहुनि पर, दियौ गज पेलि आपुन हँकार्‌यौ ॥
लपकि लीन्हौ धाइ, दबकि उर रहे दोउ, भ्रम भयौ गजहिं कहँ गए वे धौं।
अर्‌यौ दै दसन धरनि कढे बीर दोउ, कहत अबहीं याहि मारि केधौं ॥
खेलिहैं संग दै हाँक ठाढे भए, स्याम पाछे राम भए आगे।
उतहिं वे पूँछ गहि जात ये सुंडि छ्वै, फिरत गज पास चहुँ हँसन लागे।
नारि महलनि खरीं सबै अति हीं डरीं, नंद के नंद दोउ गज खिलावैं।
सूर-प्रभु स्याम बलराम देखतिं त्रसित, बचैं ये कुँवर विधि सौं मनावैं ॥३०५६॥३६७४॥

राग कल्यान

खेलत गज रंग कुँवर स्याम राम दोऊ।
क्रोध दुरद ब्याकुल अति, इनकौं रिस नैंकु नहीं, चकित भए जोधा तहँ देखत सब कोऊ ॥
स्याम झटकि पूँछ लेत, हलधर कर सूँडि देत, महल महल नारि चरित देखतिं यह भारी।
ऐसे आतुर गुपाल, चपल नैन मुख रसाल, लिए करनि लकुट लाल मनो नृत्यकारी ॥
सुरगन ब्याकुल विमान, मन मन सब करत ज्ञान, बोलत यह बचन अजहुँ मार्‌यौ नहि हाथी।
सूरज-प्रभु स्याम राम, अखिल लोक के बिस्राम, सुरनि करन पूर्न काम, नाम लेत साथी ॥३०५७॥३६७५॥

राग सोरठ

तब रिस कियौ महावत भारि।
'जौ नहि आज मारिहौं इनकौं, कंस डारिहै मारि ॥

आँकुस राखि कुंभ पर करष्यौ, हलधर उठे हँकारि।
धायौ पवनहुँ तैं अति आतुर, धरनी दंत सँभारि॥
तब हरि पूँछ गह्यौ दच्छिन कर, कँदुक फेरि सिर वारि।
पटक्यौ भूमि, फेरि नहिं मटक्यौ, लीन्हौ दंत उपारि॥
दुहुँ कर दुरद दसन इक इक छवि, सो निरखतिं पुरनारि।
सूरदास प्रभु सुर सुखदायक, मार्‍यौ नाग पछारि॥
॥३०५८॥६७६॥

राग मारू

हस्ती वध (सचित्र)

नवल नंद-नंदन रंग द्वार आए।
तड़ित से पीत पट, काछनि कसे कटि, खौरि चंदन किए मुख सुहाए॥
निरखि यौं रूप जिन, भयौ सोई मगन, मातु पितु कौं पुत्र भाव आयौ।
ब्रह्म पूरन मुनिनि, परमसुंदर त्रियनि, काल कौ रूप सुभटनि जनायौ॥
पील कौ देखि हरि कह्यौ यौं बिहँसि करि, पंथ तैं टारि गज कौं महावत।
दियौ खटकारि उन धारि अभिमान मन, सुंड तैं दौरि गयौ ताहि आवत॥
दंत जुग बिच, जुग चरन भीतर निकसि, जुग करनि पूछ कौं गह्यौ जाई।
महा करि सिंह भेंटत, महा उरग कौं महाबल गरुड़ ज्यौं गहत धाई॥
कबहुँ लै जात उत इतै ल्यावत कबहुँ, भ्रमत व्याकुल भयौ पील भारी।
गेंद ज्यौं गयंद कौं पटकि हरि भूमि सौं, दंत दोउ लिए निज कर उपारी॥
भभकि कै दंत तैं रुधिर धारा चली, छींट छवि बसन पर भई भारी।
केसरी चीर पर अबिर मानौ पर्‍यौ, खेलतैं फागु डार्‍यौ खिलारी॥
पील तजि प्रान कौं गयौ निरबान कौं, सिद्ध गंधर्ब जै जै उचारैं।
देखि लीला ललित सूर के प्रभू की, नारि नर सकल तन प्रान वारैं॥
॥३०५९॥६७७॥

राग नट

नवल नंद-नंदन रंगभूमि आए।
संग बलराम अभिराम ससि सूर ज्यौं, आपनी आप छबि सौं सुहाए॥
द्वार गजराज लखि पीतपट कटि कसत, मंद मृदु हँसत अति लसत भारी।
कछु न कहि परत तब जबहिं फिरि हेरि कै, पेंच दै छबीली पगिया सँवारी॥
गर्व को गिरि मानो चलन पाइनि तैसैं कुबलया प्रबल रिस सहित धायो।
बाल गन बच्छ ज्यौं पूँछ धरि खेलिये, तैसैं हरि हाथ हाथी गिरायो॥
पटकि गहि पुहुमि पर नैंकु नहिं मटकियो, दंत दोउ नाल से ऐंच लीन्हे।
कंध धरि चले दोउ बीर नीके बने, निरखि पुर-जन प्रान वारि दीन्हे॥
सैल से मल्ल वै धाइ आए सरन, कोउ भूले, गोड थरथराने।
कंस के प्रान भयभीत पिंजरा मनो, नव बिहंगम भरत फरफराने॥
मधुपुरी की जुवति सब कहतिं अति रति भरी, देखि री देखि अँग अँग लुनाई।
सुनत स्रवननि रही देखी री अब सही, मधुर मूरति सु रतिपति न पाई॥
निपट असमर दोऊ, निरखि देखि री सखि, बिधि बडो कूर किधौं हम अभागी।
धन्य ब्रजपाल नँदलाल गिरिधरन कौं, नित्य निरखन रहतिं प्रेम पागी।
अबल सौं अबल भए सबल सों सबल भए, ललित तन ज्योति अतिहीं प्रगासी।
ज्ञान करि, ध्यान करि मानि जैसी लई, सूर प्रभु दुःख डारैं निनासी॥३०६०॥३६७८॥

राग बिलावल

देखौ री आवत वे दोऊ।
मनि कंचन की रासि ललित अति, यह उपमा नहिं कोऊ॥

कोधौं प्रात मानसरवर तैं, उड़ि आए दोउ हंस।
इनकौं कपट करै मथुरापति, तौ ह्वै है निरवंस॥
जिनके सुने करत पुरुषारथ, तेई हैं की और।
सूर निरखि यह रूप माधुरी, नारि करतिं मन डोर॥

॥३०६१॥३६७९॥

राग कान्हरौ

(सजनी) येई हैं गोपाल गुसाईं।
नंद महर के ढोटा, जिनकी, सुनियत बहुत बड़ाई॥
यह सुरूप नैननि भरि देखौ, बड़े भाग निधि पाई।
चंद चकोर, मेघ चातक लौं, अवलोकौ मन लाई॥
सुंदर स्याम सुदेस पीतपट, चंदन चर्चित कीन्हे।
नटवर वेष धरे मन मोहन, कंध दसन-गज लीन्हे॥
नूपुर चारु चरन, कटि किंकिनि, बनमाला उर सोहै।
कर कंकन मणि कंठ मनोहर, जुवती जन मन मोहै॥
कुंडल स्रवन, सरोज विलोकनि, कुटिल अलक अलिमाल।
चंद वदन अँचवतिं जु अमी-रस, धन्य धन्य ब्रज-बाल॥
चंद चकोर स्वाति चातक ज्यौं, अवलोकतिं सत भाए।
सूरदास-प्रभु दुष्ट-विनासन, माधव मथुरा आए॥

॥३०६२॥३६८०॥

राग बिलावल

एई सुत नंद अहीर के।
मार्‍यौ रजक बसन सब लूटे, संग सखा बल बीर के।
कांधे धरि दोउ जन आए, दंत कुवलयापीर के।
पसु पति मंडल मध्य मनौ, मनि छीरधि नीरधि नीर के॥
उड़ि आए तजि हंस मात मनु, मानसरोवर तीर के।
सूरदास-प्रभु ताप निवारन, हरन संत दुख पीर के।

॥३०६३॥३६८१॥

राग कल्यान

हँसत हँसत स्याम प्रबल, कुवलया सँहार्‍यौ।
तुरत दंत लिए उपारि, कंधनि पर चले धारि, निरखत नर नारि
मुदित, चकित गज मार्‍यौ॥

अतिहीं कोमल अजान, सुनत नृपति जिय सकान, तनु बिनु जनु भयो प्रान, मल्लनि पै आए।
देखत हीं रुकि गए, काल गुनि बिहाल भए, कंस डरहि घेरि लए, दोउ मन मुसुकाए॥
असुर बीर चहूँ पास, जिनकैं बस भू अकास, मल्ल करत गाँस नास, ब्रह्म को बिचारैं।
सबै कहत भिरहु स्याम, सुनत रहत सदा नाम, हारि जीति घरही की, कौन काहि मारैं॥
हँसि बोले स्याम राम, कहा सुनत रहे नाम, खेलन कौं हमहिं काम बालक सँग डोलैं।
सूर नंद के कुमार, यह है राजस बिचार, कहा कहत बार बार, प्रभु ऐसे बोलैं॥३०६४॥३६८२॥

राग कल्यान

रंगभूमि आए अति नंद-सुवन बारे
निरखति ब्रज-नारि नेह उर तैं न बिसारे।
देखौ री मुष्टिक चानूर, इन हँकारे।
कैसे ये बचैं नाथ साँस उरध डारे॥
रजक धनुप जोधा हति दंत गज उपारे।
निरदय यह कंस इनहिं चाहत है मारे॥
कहाँ मल्ल, कहाँ अतिहिं कोमल ये भारे।
कैसी जननी कठोर कीन्हे जिन न्यारे॥
बार-बार इहै कहति भरि भरि दोउ तारे।
सूरज प्रभु बल मोहन नर तैं नहिं टारे॥
॥३०६५॥३६८३॥

राग गुंडमलार

बोलि लीन्हौ कंस मल्ल चानूर कौं, कहा रे करत, क्यौं बिलँब कीन्हौ।
बस निरबस करि डारिहौं छिनक मैं, गारि दै दै ताहि त्रास दीन्हौ॥
सत्रु नान्हौ जानि रहे अबलौं बैठि, जनक आपने कौं मारि डारौ।
दुरद को दंत उपटाइ तुम लेत हे वहै बल आजु काहैं न सँभारौ॥

भली नहिं करी तुम राखि राख्यौ इनहिं, यहै कहि तुरत वाकौं पठायौ।
क्रोध कछु, त्रास कछु, सोच कछु, सोक कछु, साहस करत रंग-भूमि आयौ॥
परस्पर कही सबनि नृपति त्रास्यौ मोहिं सुनहु रे वीर अबलौं न मान्यौ।
की मरौ, की मारि डारौ दुहूनि कौं, होइ सो होइ यह कहत रान्यौ।
निरखि दोउ बीर तन डरे दोउ मनहिं मन, यहै बुधि कन्यौ ज्यौं नास कीजै।
लखतिं पुर नारि प्रभु सूर दोउ मारिहैं कहति हैं नृपति पै सुजस लीजै॥३०६६॥३६८४॥

राग धनाश्री

कहतिं पुर नारि यह मन हमारैं।
रजक मार्‍यौ, धनुष तोरि द्वै खंड करि, हत्यौ गजराज, त्यौं इनहुँ मारैं॥
त्रसतिं अति नारि सब मल्ल ज्यौं-त्यौं कहैं, लरत नहिं स्याम हम संग काहैं।
परस्पर मत करत मारि डारौ इनहिं, लखत ये चरित मुख दुहुनि चाहैं॥
कहा द्वै हैं दई होन चाहत कहा, अबहिं मारत दुहुनि हमहिं आगैं।
सूर कर जारि अंचल छोरि बीनवैं, बचैं ये आज विधि यहै माँगैं॥
॥३०६७॥३६८५॥

राग कल्यान

देखौ री मल्ल इन्हैं मारन कौं लोरै।
अतिहीं सुंदर कुमार, जसुमति रोहिनी बार, बिलखतिं यह कहति सबै लोचन जल ढोरैं॥
कैसेहुँ ये बचैं आजु, पठए धौं कौन काज, निठुर हियौ बाम ताकौ लोभहीं पठाए।
ए तौ बालक अजान, देखौ इनकौ सयान, कहा कियौ ज्ञान, इहाँ काहे कौं आए॥

कहाँ मल्ल मुष्टिक से चानूर सिला-भंजन, कहत भुजा गहि पटकन,
नद सुवन हरषैं।
नगर नारि व्याकुल जिय जानतिं प्रभु-सूर स्याम गरव हतन नाम,
ध्यान करि करि वे परखैं ॥३०६८॥३६८६॥

श्रीकृष्ण-वचन मल्लों के प्रति *राग गुडमलार*

सुनौ हो वीर मुष्टिक चानूर सबै, हमहिं नृप पास नहिं जान देहौ।
घेरि राखे हमैं नहीं बूझै तुम्हैं, जगत मैं कहा उपहास लैहौ ॥
सबै यहै कैहै भली मति तुम पै है, नद के कुँवर दोउ मल्ल मारे।
यहै जस लेहुगे, जान नहिं देहुगे, खोजहीं परे अब तुम हमारे ॥
हम नहीं कहैं तुम मनहिं जौ यह बसी, कहत हौ कहा तौ करौ तैसी।
सूर हम तन निरखि देखियै आपुकौं, बात तुम मनहिं यह बसी नैसी ॥
॥३०६९॥३६८७॥

राग टोड़ी

जबहीं स्याम कही यह बानी। सो सुनि कै जुवती बिलखानीं ॥
मल्लनि कह्यौ हमहिं तुम देखौ। अपनौ बल, अपनौ तनु पेखौ ॥
चितयै मल्ल नदसुत कोधा। काल रूप वज्रागी जोधा ॥
भुजा ऐंठि रज अग चढ़ायौ। गाँस धरे हरि ऊपर आयौ ॥
स्याम सहज पीतांबर बाँधे। हलधर निरखत लोचन आधे ॥
तब चानूर कृष्न पर धायौ। भुज भुज जोरि अग बल पायौ ॥
प्रथम भए कोमल तन ताकौं। सिथिल रूप मन मेलत वाकौं ॥
तब चानूर गर्व मन लीन्हौ। दुर्ग प्रहार कृष्न पर कीन्हौ ॥
फूलहु तैं अति सम करि मान्यौ। तेहिं अपनैं जिय मान्यौ जान्यौ ॥
हरष्यौ मल्ल मारि भयौ न्यारौ। कहन लाग्यौ मुख अहौ बिचारौ ॥
हँसत स्याम जब देख्यौ ठाढ़ौ। सोच परथौ तब प्राननि गाढ़ौ ॥
फिरि-फिरि कहि हरि मल्ल हँकार्‍यौ। मनहुँ गुफा तैं सिंह पुकार्‍यौ ॥
हाँक सुनत सब कौंड़ भुलानौ। थरथराइ चानूर सकानौ ॥
सूर स्याम महिमा तब जान्यौ। निहचै मृत्यु आपनी मान्यौ ॥
॥३०७०॥३६८८॥

राग धनाश्री

भिर्‍यौ चानूर सौं नदसुत बाँधि कटि, पीतपट फैंट रन रंग राजैं।
द्विप दंत कर कलित भेष नटवर ललित, मल्ल उर सल्ल तल ताल
बाजैं ॥

पीन भुज लीन जय लच्छि रंजित हृदय, नील घन सीत तनु, तुंग छाती।
देखि रहीँ भेष अति प्रेम नर नारि सब, वदति तजि भीर रति-रीति-राती॥
मत्त मातंग बल अंग दंभोलि दल, काछनी लाल गल-माल सोहै।
कमल दल नैन मृदु बैन वदित मदन, देखि सुरलोक नरलोक मोहै॥
बाहु सौँ बाहु उर जानु सौँ जानुनी, चरन सौँ चरन धरि प्रगट पेलैँ।
परस्पर भिरत जब स्याम अरु मल्ल दोउ, देखि पुर नारि-नर मष्ट झेलैँ॥
घूम दै घूँघरनि वै उभय बधु जन, सुभट पद पानि धरि धरनि मेले।
चित्त सौँ चित्त मनिबंध मनिबंध सौँ, दृष्टि सौँ दृष्टि नहिँ सूर डोले॥
॥३०७१॥३६८९॥

राग भैरव

स्याम बलराम रँगभूमि आए।
मल्ल लघु रूप सुंदर परम देखि, पुनि प्रबल बल जानि मन मैँ सकाए।
कह्यौ गज कुबलया हते भयौ गर्व तुम, जानि परिहै भिरत सँग हमारैँ।
काल सौँ भिरैँ हम कौन तुम बापुरे, पै हृदै धर्म रहियौ बिचारे॥
स्याम चानूर, बलबीर मुष्टिक भिरे, सीस सौँ सीस, भुज भुज मिलावैँ।
वै उन्हैँ गहत वै दौरि उनकौँ गहत, करत बल छल नहीँ दावँ पावैँ॥
धरि पछान्यौ दुहूँ बीर दुहूँ मल्ल कौँ, हरपि कह्यौ हते ये नँद दुहाई।
सूर प्रभु परस लहि, लह्यौ निरबान पद, सुरनि आकास जय धुनि सुनाई॥३०७२॥३६९०॥

राग गुंडमलार

गह्यौ कर स्याम भुज मल्ल अपने धाइ, झटकि लीन्हौ तुरत पटकि धरनी।
भटकि अति सब्द भयौ, खटक नृप के हियैँ, अटकि प्राननि पर्‍यौ चटक करनी॥

हृदय बनमाल, नूपुर चरन लाल, चलत गज चाल, अति बुधि बिराजैं।
हंस मानौ मानस अरुन अंबुज सुभर निरखि आनंद करि हरषि गाजैं॥
कुवलया मारि चानूर मुष्टिक पटकि, बीर दोउ कंध गज दंत धारे।
जाइ पहुँचे तहाँ कंस बैठ्यौ जहाँ, गए अवसान प्रभु कै निहारे॥
ढाल तरवारि आगैं धरी रहि गई, महल कौ पंथ खोजत न पावत।
लात कैं लगत सिर तैं गयौ मुकुट गिरि, केस गहि लै चले हरि खसावत॥
चारि भुज धारि तेहिं चारु दरसन दियौ, चारि आयुध चहूँ हाथ लीन्हे।
असुर तजि प्रान निवारन पद कौं गयौ, विमल मति भई प्रभु रूप चीन्हे॥
देखि यह पुहुप वर्षा करि सुरनि मिलि, सिद्ध गंधर्व जय धुनि सुनाई।
सूर प्रभु अगम महिमा न कछु कहि परति सुरनि की गति तुरत असुर पाई॥२०७८॥३६९६॥

राग मारू

देखि नृप तमकि हरि चमक तहँई गए दमकि लीन्हौ गिरह बाज जैसैं।
घमकि मार्‌यौ घाव, गुमकि हिरदै रह्यौ, झमकि गहि केस ले चले ऐसैं॥
ठेलि हलधर दियौ, झेलि तब हरि लियौ, महल के तरैं धरनी गिरायौ।
अमर जय धुनि भई धाक त्रिभुवन गई, कंस मार्‌यौ निदरि देवरायौ॥
धन्य बानी गगन, धरनि पाताल धनि, धन्य हो वसुदेव-ताता।
धन्य अवतार सुर धरनि उपकार कौं, सूर प्रभु धन्य बलराम-भ्राता॥२०७९॥३६९७॥

राग बिलावल

जै जै धुनि तिहुँ लोक भई ।
मार्यौ कंस धरनि उद्धार्यौ, ओक-ओक आनंदमई ॥
रजक मारि कोदंड विभंज्यौ, खेल करत गज प्रान लियौ ।
मल्ल पछारि असुर संहारे, तुरत सबनि सुरलोक दियौ ॥
पुर-नर-नारिनि कौं सुख दीन्हौ, जो जैसो फल सोइ लह्यौ ।
सूर धन्य जदुवंस उजागर, धन्य धन्य धुनि घुमरि रह्यौ ॥
॥२०८०॥३६९८॥

राग धनाश्री

देखि री नंद-कुल के उधारी ।
मातु पितु-दुरित-उद्धरन, ब्रज-उद्धरन, धरनि-उद्धरन सिर-मुकुट धारी ॥
पतित उद्धरन, निज भगत-उद्धरन, जन-दीन-उद्धरन, कुंडलनि धारी ।
पूतना-उद्धरन, दनुज-कुल-उद्धरन, तृना-उद्धरन, मुख-मुरलि धारी ।
सकट-उद्धरन, केसी-प्रलँब-उद्धरन, बका उद्धरन, गिरि-अँगुरि-धारी ॥
अघा-उद्धरन,' गो-ग्वाल के उद्धरन, वृपन-उद्धरन, बनमाल-धारी ।
बच्छ-उद्धरन, ब्रह्म-उद्धरन, येइ प्रभु जदपति, जज्ञ पतिनी-उधारी ॥
कालि-उद्धरन, फन-फन-सहित-उद्धरन, दवा-उद्धरन, अँग मलय धारी ।
ग्राह-उद्धरन, गजराज-उद्धरन, ये सिला-उद्धरन, पट-पीत-धारी ॥
पंडु-कुल-उद्धरन, द्रौपदी-उद्धरन, रुक्मिनी उद्धरन, लकुट धारी ।
सिंधु-उद्धरन, सीता-प्रिया-उद्धरन, जै-बिजै-उद्धरन, धनुप धारी ॥
त्रास-उद्धरन, प्रहलाद के उद्धरन, प्रबल नरसिंह'अवतार धारी ।
हिरन कस्यप हिरन्याच्छ के उद्धरन, वेद उद्धरन, बल-भुजा-धारी ॥
धरम-उद्धरन, येइ कर्म-उद्धरन प्रभु, सुभग कटि काछनी पीन-धारी ।
सूर-उद्धरन, सुरलोक-उद्धरन हरि, कंस-उद्धरन, येई मुरारी ॥
॥२०८१॥३६९९॥

राग गुडमलार

हरष नर-नारि मथुरा-पुरी के ।
सोच सबकौ गयौ, दनुज कुल सब हयौ, तिहुँ भुवन जै जयौ, हरष ही के ॥
निदरि मार्‍यौ कंस, प्रगट देखत सबै, अतिहिं अलप के, नंद ढोटा ।
नैन दोउ ब्रह्म से, परम सोभा लगे, भक्त कौं जसे सुभ हंस जोटा ॥
देव दुंदुभि बजी, अमर आनंद भए, पुहुप गन बरपहीं चैन जान्यौ ।
सूर बसुदेव सुत रोहिनी नंद धनि, धनि मिट्यौ भुव भार अखिल जान्यौ ॥३०८२॥३७००॥

राग रामकली

निदरि मार्‍यौ कंस देवनाथा ।
निदरि मारे कंस पूतना आदि दै, धरनि पावन करी भइ सनाथा ॥
लोक लोकनि बिदित कथा तुरतहि गई, करन अस्तुति जहाँ तहाँ आए ।
देव दुंदुभि पुहुप बृष्टि जय धुनि करैं, दुष्ट इन मारि सुर पुर पठाए ॥
केस गहि करषि जमुना धार डारि दए, सुन्यौ नृप-नारि पति मार्‍यौ ।
भईं ब्याकुल सबै हेत रोवन लगीं, मरन को तुरत जौहर बिचार्‍यौ ।
गए तहँ स्याम बलराम बोधी सबै, कहत तब नारि तुम करी नैसी ।
सुनहु नृप-बाम यह काम ऐसोइ रह्यौ, जानि यह बात क्यौं कहतिं ऐसी ॥
मरतिं काहैं कहा तुमहिं कौं यह भई, जानि अज्ञान तुम होतिं काहैं ।
सूर नृप-नारि हरि-बचन मान्यौ सत्य, हरष ह्वै स्याम मुख सबनि चाहे ॥३०८३॥३७०१॥

राग कल्यान

रानिनि परबोधि स्याम महल-द्वार आए ।
कालनेमि बस उग्रसेन सुनत धाए ॥

चरननि धुकि परयौ आइ त्राहि त्राहि नाथा।
बहुतै अपराध परे छमहु मैं सनाथा॥
महाराज श्री मुख कहि लियौ उर लगाई।
हमकौं अपराध छमौ करी हम ढिठाई॥
तबहीं सिंघासन पै उग्रसेन धारे।
छत्र सिर धराइ चँवर अपने कर ढारे॥
ठाढ़े आधीन भए, देव देव भाषे।
अपने जन कौ प्रसाद, सादर सिर राखे॥
मोकौं प्रभु इती कहा बिस्व-भरन स्वामी।
घट घट की जानत हौ तुम अंतरजामी॥
तौ फिरि नृप कहत कहा तुमकौं यह केती।
सेवा तुम जेती करी दैहौं पुनि तेती॥
रजक धनुप गज मल्लनि कंस मारि काजा।
सूरज प्रभु कीन्हौ तब उग्रसेन राजा॥

॥३०८४॥३७०३॥

राग बिलावल

उग्रसेन कौं दियौ हरि राज।
आनँद मगन सकल पुरवासी, चँवर डुलावत श्री ब्रजराज॥
जहाँ तहाँ तैं जादव आए, कंस डरनि जे गए पराइ।
मागध सूत करत सब अस्तुति, जै जै जै श्री जादवराइ॥
जुग जुग बिरद यहै चलि आयौ, भए बलि के द्वारैं प्रतिहार।
सूरदास प्रभु अज अबिनासी, भक्तनि हेत लेत अवतार॥

॥३०८६॥३७०२॥

राग बिलावल

मथुरा लोगनि बात सुनी यह, उग्रसेन कौं राज दियौ।
सिंहासन बैठारि कृपा करि, आपु हाथ सौं चँवर लियौ॥
मातु पिता कौ संकट मेट्यौ, देवनि जै धुनि सब्द कियौ।
रानी सबै मरत तैं राखी, उननैं प्रभु नहिं और बियौ॥
अबहीं सुनि बसुदेव देवकी, हरषित ह्वै ह्वै दुहिनि हियौ।
सूरदास प्रभु आए मथुपुरी, दरसन तैं सब लोग जियौ॥

॥३०८६॥३७०४॥

राग रामकली

मथुरा के लोगनि सुख पाए।
नटवर भेष कछे नँदनंदन, सँग अक्रूर के आए॥
प्रथमहिं रजक मारि अपनैं कर, गोप बृंद पहिराए।
तोरि धनुष लीला नटनागर, तब गज खेल खिलाए॥
रंगभूमि मुष्टिक चनूर हति, भुज बल ताल बजाए।
नगर नारि दै गारि कंस कौं अजगुत जुद्ध बनाए॥
बरषहिं सुमन अकास महा धुनि, दुंदुभि देव बजाए।
चढ़ि चढ़ि अमर बिमान परम सुख, कौतुक अंबर छाए॥
कंस मारि सुरराज काज करि, उग्रसेन सिर नाए।
माता पिता बंदि तैं छोरे, सूर सुजस जग गाए॥
॥३०८७॥३७०५॥

राग रामकली

मथुरा घर घरनि यह बात।
रजक धनुष गज मल्ल मारे, तनक से नँद तात॥
धन्य माता पिता धनि है, धन्य धनि वह गाति।
जब लियौ अवतार धरती, धन्य धनि सो भाँति॥
हंस केसे जोट दोऊ, असुर कियौ निपात।
सूर जोधा सबै मारे, कहा जानन घात॥
॥३०८८॥३७०६॥

वसुदेव-दर्शन

राग कल्यान

सुन्यौ वसुदेव दोउ नँदसुवन आए।
त्रिया सौं कहत कछु सुनत है री नारि, रातिहूँ सपन कछु ऐसे पाए॥
गए अक्रूर तिनि नृपति माँगे बोलि, तुरत आए, आइ कंस मारे।
कहा पिय कहत सुनिहै बात पौरिया, जाइ कैहै, रहौ मष्ट धारे॥
दिए लोचन ढारि नारि पति परस्पर, कहा हम पाप करि जनम लीन्हौ।
सात देखत बधे एक दुरि ब्रज बच्यौ, इते पर बाँधि हम पगु कीन्हौ॥

मारि डारे कहा बंदि कौ जिवन धिक, मीच हमकौं नहीं मीच भूल्यौ।
मारे कंस, निरबंस बिधना करे, सूर क्यौंहू होइ वह निमूल्यौ॥
॥३०८९॥३७०७॥

राग जैतश्री

यहै कहत बसुदेव त्रिया जनि रोवहु हो।
भाग्य बिबस सुख दुःख सकल जग जोवहु हो॥
जल दीन्हे कर आनि कहत मुख धोवहु नारी।
कहियत हैं गोपाल हरन दुख गर्व-प्रहारी॥
कबहुँ प्रगट वे होइँगे, कृष्न तुम्हारे तात।
आजु कालिह हरि आइहैं, यह सपने की बात॥
अब जानि होहि अधीर, कंस की आयु तुलानी।
देखत जाइ बिलाइ, भार तिनका करि जानी॥
ऐसौ सुपनौ मोहिं भयौ, त्रिया सत्य करि मानि।
त्रिभुवन-पति तेरौ सुमन है, तोहिं मिलैगौ आनि॥
इहिं अंतर हरि कह्यौ, मातु पितु कहाँ हमारे।
तहँ लै गए अक्रूर स्याम बलराम पधारे॥
वज्र सिला द्वारैं दियौ, दरसन तैं गइ छूटि।
सहज कपाट उघरि गए, ताला कुंजी टूटि॥
जो देखै बसुदेव, कुँवर दोउ काके आए।
दरस दियौ तिहिं प्रेम, प्रथम जो दरस दिखाए॥
धाइ मिले पितु मातु कौं यह कहि मैं निजु तात।
मधुरैं दोउ रोवन लगे, जिन सुनि कंस डरात॥
तुरत बंदि तैं छोरि, कह्यौ मैं कंसहिं मार्‌यौ।
जोधा सुभट सँहारि, मल्ल कुबलया पछार्‌यौ॥
जिय अपनैं जनि डर करौ, मैं सुत तुम पितु मात।
दुख बिसरौ अब सुख करौ, तुम काहैं पछतात॥
निहचै जननी जानि कंठ धरि रोवन लागी।
तब बोले बलराम, मातु तुम तैं को भागी॥
बार बार देखै फहै गोद खिलाए नाहिं।
द्वादस बरस कहाँ रहे, मातु पिता बलि जाहिं॥

पुनि पुनि बोधत कृष्न लिख्यौ मेटै नहिं कोई।
जोइ जोइ मन की साध कहौ करिहौं मैं सोई॥
जे दिन गए सुतौ गए अब सुख लूटहु मातु।
तात नृपति रानी जननि, जाके मोसौ तात॥
जो मन इच्छा होइ तुरत देखौ मैं करिहौं।
गगन धरनि पाताल जात कतहूँ नहि डरिहौं॥
मातु हृदय की कही तब, मन बाढ्यौ आनंद।
महर सुवन मै तो नहीं, मैं बसुदेव कौ नंद॥
राज करौ दिन बहुत जानि कै है अब तुमकौं।
अष्ट सिद्धि नव निद्धि देउँ मथुरा घर घर कौं॥
रमा सेवकिनि देउँ करि, कर जोरे दिन जाम।
अब जननी जनि दुख करौ, करौ न पूरन काम॥
धनि जदुबंसी स्याम चहूँ जुग चलति बडाई।
सेष रूप-मय राम कहत नहिं बात बनाई॥
सूरज प्रभु दनुकुल-दहन, हरन करन मसार।
ते पाए सुत तुमहिं करि, करौ न सुख बिस्तार॥

॥३०९०॥३७०८॥

राग रामकली

तब बसुदेव हरषित गात।
स्याम रामहिं कठ लाए, हरषि देवै मात॥
अमर दिवि दुंदुभी दीन्ही, भयौ जैजैकार।
दुष्ट दलि सुख दियौ संतनि, ये बसुदेव कुमार॥
दुख गयौ बहि हर्ष पूरन, नगर के नर-नारि।
भयौ पूरब फल सँपूरन, लह्यौ सुत दैत्यारि॥
तुरत बिप्रनि बोलि पठये, धेनु कोटि मँगाइ।
सूर के प्रभु ब्रह्मपूरन, पाइ हरषे राइ॥

॥३०९१॥३७०९॥

राग काफी

आजु हो निसान बाजै बसुदेव राइ कैं।
मथुरा के नर-नारि उठे, सुख पाइ कै॥

अमर विमान सब कहैं हरषाइ कै।
फूले मात पिता दोऊ आनँद बढ़ाइ कै ॥
कंस कौ भँडार सब देत हैं लुटाइ कै।
धेनु जे सँकल्प राखीं लई ते गनाइ कै ॥
ताँबे, रूपे सोने सजि राखीं वै बनाइ कै।
तिलक विप्रनि वंदि, दईं वै दिवाइ कै ॥
मागध मंगन जन लेत, मन भाइ कै।
अष्ट सिद्धि नवो निद्धि आगे ठाढ़ीं आइ कै ॥
सब पुर नारि आईं मंगलनि गाइ कै।
अंबर भूषन दए उन्हें पहिराइ कै ॥
अखिल भुवन जन कामना पुराइ कै।
बहु पुर-जन धन देत हैं लुटाइ कै ॥
सूर जन दीन द्वारैं ठाढ़ौ भयौ आइ कै।
कछु कृपा करि दीजै मोहूँ कौं दिवाइ कै ॥
॥३०९२॥३७१०॥

यज्ञोपवीत-उत्सव *राग बिलावल*

बसुद्यौ कुल-व्यौहार बिचारि।
हरि हलधर कौं दियौ जनेऊ, करि षटरस ज्यौनारि ॥
जाके स्वास-उसाँस लेत मैं प्रगट भए श्रुति चार।
तिन गायत्री सुनी गर्ग सौं प्रभु गति अगम अपार ॥
बिधि सौं धेनु दई बहु बिप्रनि, सहित सर्वअलंकार।
जदुकुल भयौ परम कौतूहल, जहँ तहँ गावतिं नार ॥
मातु देवकी परम मुदित ह्वै, देति निछावरि वारि।
सूरदास की यहै आसिषा, चिर जियौ नंद कुमार ॥
॥३०९३॥३७११॥

राग धनाश्री

आजु परम दिन मंगलकारी।
लोक लोक कौ टीकौ आयौ, मुदित सकल नर-नारी ॥
सिव सुरेस सेष औरौ बहु, चतुरानन कर थारी।
हर कर पाटबंध, न्यौछावरि करत रतन पट सारी ॥

बाजत ढोल निसान, संख रव होत कुलाहल भारी।
अपने अपने लोक चले सब सूरदास बलिहारी॥

॥३०९४॥३७१२॥

राग बिलावल

जब जदु-कुल-पति कंसहि मार्‍यौ। तिहूँ भुवन भयौ सोर पमार्‍यौ॥
तुरत मंच तैं धरनि गिरायौ। ऐसैं हि मारत बिलँब न लायौ॥
केस गहे पुहुमी घिसटायौ। डारि जमुन के बीच बहायौ॥
जा कंसहिं तिहुँ भुवन डराई। ताकौं मार्‍यौ हलधर भाई॥
जाकैं धनुष टँकोरत हाथा। आसन डारि भजे सुरनाथा॥
मारत ताहि बिलब न कीन्हौ। उग्रसेन कौं राजस दीन्हौ॥
जै हो जै बसुदेव कुमारा। जै हो जै तुम नंद दुलारा॥
सुरदेवी देवै धनि मैया। धनि जसुमति त्रिभुवन-पति वैया॥
धन्य अक्रूर मधुपुरी ल्याए। सुर अंबर जै जै धुनि गाए॥
दनुज बंस निरबंस कराए। धरनी सिर तैं भार गँवाए॥
मातु पिता बंदि तैं छुडाए। यह बानी सुर-लोकनि गाए॥
जो जैसौ तैसैं तिहिं भाए। सूरज प्रभु सबकौं सुखदाए॥

॥३०९५॥३७१३॥

राग धनाश्री

मथुरा दिन दिन अधिक बिराजै।
तेज, प्रताप राइ केसौ कैं, तीनि लोक पर गाजै॥
पग पग तीरथ कोटिक राजैं, मधिविश्रात बिराजै।
करि अस्नान प्रात जमुना कौ, जनम मरम भय भाजै॥
बिट्ठल बिपुल बिनोद बिहारन, ब्रज कौ बसिबौ छाजै।
सूरदास सेवक उनहीं कौ, कृपा सु गिरिधर राजै॥

॥३०९६॥३७१४॥

राग मलार

जय जय जय मथुरा सुखकारी।
चक्र सुदरसन ऊपर राजति, केसव जू की प्यारी॥
हाटक कोट कँगूरा राजत, हीरा रतन जरे।
मनिमय भवन उतुग सुहाए, नवधा भक्ति भरे॥

घर घर मंगल महा महोच्छव, हरि रस माते लोग।
मधु मेवा पकवान मिठाई, खटरस व्यंजन भोग॥
दही दूध के ढेरनि जित तित, सुरभी सबै सुदेस।
अष्ट महा सिधि वीथिनि वीथिनि, सुमन गुहे सुर केस॥
परम धाम बैकुंठ तैं आगर, श्री वाराह बखानी।
भक्ति मुक्ति के बाजन बाजैं, क्रीड़त सारँगपानी॥
तीरथ सकल मधुपुरी सेवत सुर नर मुनि जन आवैं।
सदा प्रीति हित कान्ह बिराजैं, नारदादि गुन गावैं॥
अखिल भुवन की सोभा मथुरा, महिमा कही न जाइ।
धनि धनि मथुरा, पुरी सिरोमनि, निज मुख करी बड़ाइ॥
अगतिन की गति श्री मथुरा, हरि-दरसन की रजधानी।
मथुरा छोड़ि अनत रति करिऐ, यातैं और न हानी॥
मथुरा निकट कबहुँ नहिं देखैं, ते मतिमंद अभागे।
जननी बोझ बृथा कत मारी, जम के कागर दागे॥
निमिष एक मथुरा को बासी, जननी जठर न आवै।
जे बड़भागी रहैं निरंतर, तिनकी कौन चलावै॥
मथुरा सरन सदा मोहिं राखौ, बिनती करौं मो दीजे।
सूरदास द्वारै ह्वै गावै, कृष्न चरन रति कीजै॥

॥३०९७॥३

मथुरा बाजति आजु बधाई।
चोवा, चंदन, अगर, कुमकुमा, कुबिजा चरचन आई।
कंसराइ के मल्ल पछारे, जीत्यौ कुँवर कन्हाई।
उग्रसेन कौ राज तिलक दियौ, मोहन जदुपति राई॥
हरष देव बसुदेव देवकी, जिनकी बंदि छुड़ाई।
सूरदास-प्रभु भक्तबछल की, ब्रज मैं फिरी दुहाई॥
॥३०९८॥३

राग ६

कंस मारि सुर काज कियौ।
माता पिता बंदि तैं छोरे, दुख बिसर्‍यौ आनंद हियौ

उग्रसेन कौं धाइ मिले हरि अभय अचल करि राज दियौ।
असुर बंस निरबंस छिनक मैं, ऐसौ नहिं कोउ और बियौ॥
मिली कूबरी चंदन लै कै, ऐसें हि हरि कौ नाम लियौ।
सुनहु सूर नृप पास जाति ही, बीच सुकृत अति दरस दियौ॥
॥३०९९॥३७१७॥

राग रामकली

कुबरी पूरब तप करि राख्यौ।
आए स्याम भवन ताही कैं, नृपति महल सब नाख्यौ॥
प्रथमहिं धनुष तोरि आवत हे, बीच मिली यह धाइ।
तिहिं अनुराग बस्य भए ताकैं, सो हित कह्यौ न जाइ॥
देव-काज करि आवन कहि गए, दीन्हौ रूप अपार।
कृपा दृष्टि चितवतहीं श्री भइ, निगम न पावत पार॥
हम तैं दूरि दीन के पीछैं, ऐसे दीनदयाल।
सूर सुरनि करि काज तुरतहीं, आवत तहाँ गोपाल॥
॥३१००॥३७१८॥

राग रामकली

कियौ सुर काज गृह चले ताकैं।
पुरुष औ नारि को भेद भेदा नहीं, कुलिन अकुलिन अवतर्‌यौ काकैं॥
दास दासी कौन प्रभु निप्रभु कौन है, अखिल ब्रह्मांड इक रोम जाकैं।
भाव साँचौ हृदय जहाँ, हरि तहाँ है, कृपा प्रभु की माथ भाग वाकैं॥
दास दासी स्याम भजनहु तैं जिये, रमा सम भई सो कृष्न-दासी।
मिली वह सूर प्रभु प्रेम चंदन चरचि, कियौ जप कोटि, तप कोटि कासी॥
॥३१०१॥३७१९॥

राग रामकली

भक्तबछल श्रीजादवराइ।
गेह कुबरी कैं पग धारे, जाति पाँति बिसराइ॥

पूरन भाग मानि तिन अपने, चरन गहे उठि धाइ।
सुरति रही नहिं देह गेह की, आनँद उर न समाइ॥
प्रभु गहि बाँह पास बैठारी, सो सुख कह्यौ न जाइ।
सूरदास-प्रभु सदा भक्त बस, रंक गनत नहिं राइ॥
॥३१०२॥३७२०॥

राग नट

कुबिजा सदन आए स्याम।
कृपा करि हरि गए प्रथमहिं, भई अनुपम बाम॥
प्रीति कैं बस दीनबंधू, भक्तबत्सल नाम।
मिली मारग मलय लै कै, भई पूरन काम॥
उरबसी पटतरहिं नाहीं, रमा कैं मन ताम।
सूर-प्रभु महिमा अगोचर, बसे दासी धाम॥
॥३१०३॥३७२१॥

राग धनाश्री

कुबिजा हरि की दासी आहि।
जैसैं आपु भाजि गोकुल रहे, तैसैं राखी ताहि॥
रूप-रतन दुराइ कै राख्यौ, जैसैं नली कपूर।
जैसैं छीप अमोल रतन भरि, कह जानै जो कूर॥
वैसहि रही कूबरी दासी, अबिनासी की आहि।
सूरदास-प्रभु कंस मारि कै लई आनि तिहि चाहि॥
॥३१०४॥३७२२॥

राग धनाश्री

मथुरा के नर-नारि कहैं।
कहाँ मिली कुबिजा चंदन लै, कहा स्याम तिहिं कृपा चहैं॥
कहा तपस्या करि इहिं राखी, जहाँ तहाँ पुर रहै चले॥
कहूँ नहीं आवत हरि देखी, इहै कहौ प्रभु हेत भले॥
तबहिं कृपा करि सुंदरि कीन्ही, महिमा यह कहत न आवै॥
सूरदास भाग कूबरी कौ, कौन ताहि पटतर पावै॥
॥३१०५॥३७२३॥

राग धनाश्री

कुब्जा सी भागिनि को नारि

कसहिं चंदन लिए जाति ही, बीच मिले ताकौं दैत्यारि ॥
हरि करि कृपा करी पटरानी, वाको डार्‌यौ कुब्ज मिटारि।
यहै बात मधुपुरी जहाँ तहँ, दासी कहत डरत जिय भारि ॥
कुब्जा भूलि कहत जौ कोऊ, ताहि उठत दै दै सब गारि।
सुनहु सूर रानी सुनि पावै, त्रास होत जनि डारै मारि ॥
॥३१०६॥३७२४॥

राग धनाश्री

कुब्जा तौ बडभागी है।

करुना करि हरि जाहि निवाजी, आपु रहे तहँ राजी है ॥
पूरब तप-फल बिलसन लागी, मन के भाव पुराबति है।
मथुरा नर नारिनि मुख बानी, रह्यो जहाँ तहँ जै जै है ॥
दैत्य बिनासि तुरत तहँ आए, यह लीला जानैं पै वै।
सूरदास-प्रभु भावहि कैं बस, मिलत कृपा करि अति सुख है ॥
॥३१०७॥३७२५॥

राग रामकली

हरि की कृपा जापर होइ।

ताहि कछु यह बहुत नाहीं, हृदय देखौ जोइ ॥
कहा संसौ करत याकौ, कितिक है यह बात।
असुर सैन सँहारि डारे, भक्त-जन सौं नात ॥
हरन, करन समर्थ एई, कहौं बारंबार।
सूर हरि की कृपा तैं, खल तरि गए संसार ॥
॥३१०८॥३७२६॥

राग बिलावल

कृष्न कृपा सबही तैं न्यारी। कोटि करै तप, नहीं मुरारी ॥
भाव भजन कुब्जा भइ प्यारी। दनुज भाव बिनु डारे मारी ॥
प्रथमहिं रजक मारि पुर आए। धनुप-जज्ञ कौं कंस बुलाए ॥
तोरि कोदंड वीर सब मारे। हित कुब्जा कैं धाम सिधारे ॥

रूप-रासि-निधि ताकौं दीन्हौ। आवन कह्यौ गवन तब कीन्हौ॥
तहाँ कुबलया राख्यौ द्वारैं। जात स्याम बलराम बिचारे॥
माली मिल्यौ माल पुहुपनि लै। लीन्हौ कंठ स्याम अति रुचि कै॥
मन कामना तुरत फल पायौ। कोटि कोटि मुख अस्तुति गायौ॥
आतुर गए कुबलया पासा। सूरज चंद धरनि परगासा॥
बालक देखि महावत हरष्यौ। कर धरि पुच्छ तुच्छ करि करष्यौ॥
कौतुक करि मतंग मतवारौ। गहि पटक्यौ, तन नैंकु न टारौ॥
दुहुनि एक-एक दंत उपार्‍यौ। जहाँ मल्ल तहँ कौं पग धार्‍यौ॥
देखत रूप त्रास जिय आन्यौ। मन मन काल आपनौ जान्यौ॥
तब कोमल दरसे जदुराई। तुरत गए आगैं सब धाई॥
मारे मल्ल एक नहिं उबरे। पटकत धरनि स्रवन नृप घुमरे॥
क्रोध सहित तब कंस प्रचार्‍यौ। ताहि प्रगटि तुरतहिं तेहिं मार्‍यौ॥
अमर नाग नर कहि कहि भाषैं। सदा आपने धन कौं राखैं॥
राजा उग्रसेन कहवाए। मातु पिता बंदि तैं छुड़ाए॥
इतनौ काज किए हरि नीकैं। कुबिजा-प्रेम बँधे हरि ही कैं॥
आतुर हरि ताकैं घर आए। रानिनि बोधि महल नहिं भाए॥
चितवत मंदिर भए अवासा। महल महल लागे मनि पासा॥
जबहिं सुने कुबिजा हरि आए। पाटंबर पाँवड़े डसाए॥
कुबिजा तैं भइ राजकुमारी। रूप कहा कहौं कृष्न-पियारी॥
टेढ़ी तैं हरि सूधी कीन्ही। लच्छन अंग अंग प्रति दीन्ही॥
राजा हरि कुबिजा पटरानी। मथुरा घर घर सबहीं जानी॥
गोप सखा यह सुनत न माने। त्रासहिं मैं सब रहत सकाने॥
मार्‍यौ कंस सुनत सब सके। बन मोहन आए नहिं ढंके॥
ब्रज तैं चले भए पट जामा। व्याकुल महरि होति लै नामा॥
प्रजा जानि मन मन डरपाहीं। कैसैं बल मोहन ब्रज जाहीं॥
इहिं अंतर हरि आए तहँई। नंद गोप सब राखे जहँई॥
नृप ऊधव अक्रूरहिं लीन्हौ। तहाँ गवन सूरज-प्रभु कीन्हौ॥
॥३१०९॥३७२७॥

राग बिलावल

जदुबंसी कुल उदित कियौ।
कंस मारि पुहुमी उद्धारी, सुरनि कियौ निर्भय जु हियौ॥

घर-घर नगर अनंद बधाई, मन बांछित फल सबनि लह्यौ।
निगड़ तोरि मिलि मातु पिता कौं, हर्ष अनल करि दुखहिं दह्यौ॥
उग्रसेन मथुरा करि राजा, ऐसे प्रभु रच्छक जन के।
कहुँ जनमे, कहुँ कियौ पान पय, राखि लेत भक्तनि पन के।
आपुन गए नंद जहँ बासा, हलधर अग्रज संग लिएँ।
सूर मिले नँद हरषवंत ह्वै, चलिहैं ब्रज अति हरष हिएँ॥
॥३११०॥३७२८॥

राग बिलावल

अरस-परस सब ग्वाल कहैं।
जब मारयौ हरि रजक आवतहिं, मन जान्यौ हम नहिं निबहैं॥
वैसौ धनुष तोरि सब जोधा, तिन मारत नहिं बिलँब कर्‌यौ।
मल्ल मतंग तिहूँ पुर-गामी, छिनकहि मैं सो धरनि पर्‌यौ॥
वैसे मल्लनि दाँव बिसार्‌यौ, मारि कंस निरबस कियौ।
सुनहु सूर ये हैं अवतारी, इनतैं प्रभु नहिं और बियौ॥
॥३१११॥३७२९॥

राग बिलावल

नंद गोप सब सखा निहारत, जसुमति सुत कौ भाव नहीँ।
उग्रसेन बसुदेव उपँगसुत सुफलक सुत, वैसैं सँग ही॥
जबहीं मन न्यारौ हरि कीन्हौ, गोपनि मन यह ब्यापि गई।
चालि उठे इहिं अंतर मधुरे, निठुर रूप जो ब्रह्म मई॥
अति प्रतिपाल कियौ तुम हमरौ, सुनत नंद जिय झझकि रहे।
सूरदास-प्रभु की बसुद्यौ सौं, की मोसौं ये बचन कहे॥
॥३११२॥३७३०॥

नंद बिदाई *राग बिलावल*

काहि कहत प्रतिपाल कियौ।
मोसौं कहत होइ जनि ऐसी, नैन ढरत नहिं भरत हियौ॥
संकित नंद त्रास बानी सुनि, बिलँब करत यह क्यौं न चलैं।
कंस मारि रजधानी दीन्ही, ब्रज तैं बहुरौ आनि मिलैं॥
मन ही मन ऐसी उपजावत, वै उत ब्रह्म ब्रह्मदरसी।
सूर पिता को, मातु कौन है, रहत सबनि मैं वै परसी॥
॥३११३॥३७३१॥

राग बिलावल

तब बोले हरि करि नंद सौं, मधुरैं बानी।
गर्ग बचन तुम सौं कही, नहिँ निहचै जानी॥
मैं आयौ संसार मैं, भुव-भार उतारन।
तिनकौ तुम धनि धन्य हौ, कीन्हौ प्रतिपारन॥
मातु पिता मेरैं नहीं, तुमतैं अरु कोऊ।
एक बेर ब्रज लोग कौं, मिलिहौं सुनौ सोऊ॥
मिलन हिलन दिन चारि कौ, तुम तौ सब जानौ।
मोकौं तुम अति सुख दियौ, सो कहा बखानौं॥
मथुरा नर-नारी सुनैं, व्याकुल ब्रज-बासी।
सूर मधुपुरी आइकै, ये भये अविनासी॥
॥३११४॥३७३२॥

राग टोडी

निठुर बचन जनि कहौ कन्हाई। अतिहीं दुसह सह्यौ नहिँ जाई॥
तुम हँसि कै बोलत ये बानी। मेरैं नैन भरत है पानी॥
अब ये बोल कबहुँ जनि बोलौ। तुरत चलहु ब्रज आँगन डोलौ॥
पंथ निहारति जसुमति ह्वै है। धाइ आइ मारग मैं लैहै॥
तब नंदहिँ हलधर समुझावत। कछु करि काज तुरत ब्रज आवत॥
जननि अकेली व्याकुल ह्वैहै। तुमहिँ गएँ कछु धीरज लैहै॥
बहुत कियौ प्रतिपाल हमारौ। जाइ कहौ उर ध्यान तुम्हारौ॥
व्याकुल होन जननि जनि पावैं। बार बार कहि कहि समुझावैं॥
व्याकुल नंद सुनत यह बानी। डसी मनौ नागिनी पुरानी॥
व्याकुल सखा गोप भए व्याकुल। अंतक दसा भए भय-आकुल॥
सूर स्याम सुख निरखत ठाढ़े। मनौ चितेरे लिखि सब काढ़े॥
॥३११५॥३७३३॥

राग सोरठ

गोपालराइ हौं न चरन तजि जैहौं।
तुमहिँ छाँड़ि मधुबन मेरे मोहन, कहा जाइ ब्रज लैहौं॥
कैहौं कहा जाइ जसुमति सौं, जब सन्मुख उठि ऐहै।
प्रात समय दधि मथत छाँड़ि कै, काहि कलेऊ दैहै।

बारह बरस दियौ हम ढीठौ, यह प्रताप बिनु जाने।
अब तुम प्रगट भए वसुद्यौ-सुत गर्ग बचन परमाने॥
रिपु हति काज सबै कत कीन्हौ, कत आपदा बिनासी।
डारि न दियौ कमल कर तैं गिरि, दबि मरते ब्रजबासी॥
बासर संग सखा सब लीन्हे, टेरि न धेनु चरैहौ।
क्यौं रहिहैं मेरे प्रान दरस बिनु, जब संध्या नहिं ऐहौ॥
ऊरध स्वाँस चरन गति थाकी, नैन नीर मरहाइ।
सूर नंद बिछुरत की बेदनि, मो पै कही न जाइ॥
॥३११६॥३७३४॥

राग बिलावल

बेगि ब्रज कौं फिरिए नँदराइ।
हमहिं तुमहिं सुत तात को नातौ, और पर्यौ है आइ॥
बहुत कियौ प्रतिपाल हमारौ, सो नहिं जी तैं जाइ।
जहाँ रहैं तहँ तहाँ तुम्हारे, डार्यौ जनि बिसराइ॥
जननि जसोदा भैंटि सखा सब, मिलियौ कंठ लगाइ।
साधु समाज निगम जिनके गुन, मेरैं गनि न सिराइँ॥
माया मोह मिलन अरु बिछुरन, ऐसैंहीं जग जाइ।
सूर स्याम के निठुर बचन सुनि, रहे नैन जल छाइ॥
॥३११७॥३७३५॥

राग नट

यह सुनि भए व्याकुल नंद।
निठुर बानी कही हरि जब, परि गए दुख फंद॥
निरखि मुख मुख रहे चक्रित, सखा अरु सब गोप।
चरित ए अक्रूर कीन्हे, करत मन मन कोप॥
धाइ चरननि परे हरि कैं, चलहु ब्रज कौं स्याम।
कंस असुर समेत मारे, सुरनि के करि काम॥
मोचि बंधन राज दीन्हौ, हरष भए वसुदेव।
सूर जसुमति बिनु तुम्हारैं, कौन जानै देव॥
॥३११८॥३७३६॥

राग सोरठ

नंद बिदा होइ घोष सिधारौ।
बिछुरन मिलन रच्यौ बिधि ऐसौ, यह संकोच निवारौ॥

कहियौ जाइ जसोदा आगैं, नैंन नीर जनि ढारौ।
सेवा करी जानि सुत अपनौ, कियौ प्रतिपाल हमारौ॥
हमैं तुम्हैं अंतर कछु नाहीं, तुम जिय ज्ञान विचारौ।
सूरदास प्रभु यह विनती है, उर जनि प्रीति बिसारौ।

॥३११९॥३७३७॥

राग सोरठ

(मेरे) मोहन तुमहिं बिना नहिं जैहौं।
महरि दौरि आगे जब ऐहै, कहा ताहि मैं कैहौं॥
माखन मथि राख्यौ ह्वै है, तुम हेत, चलौ मेरे बारे।
निठुर भए मधुपुरी आइ कै, काहैं असुरनि मारे॥
सुख पायौ बसुदेव देवकी, अरु सुख सुरनि दियौ।
यहै कहत नँद गोप सखा सब, बिदरत चहत हियौ॥
तब माया जड़ता उपजाई, निठुर भए जदुराइ।
सूर नंद परमोधि पठाए, निठुर ठगौरी लाइ॥

॥३१२०॥३७३८॥

राग नट

नंदहिं कहत हरि ब्रज जाहु।
कितिक मथुरा ब्रजहि अतर, जिय कहा पछिताहु॥
कहा व्याकुल होत अबिहीं, दूरि हौं कहुँ जात?
निठुर उर मैं ज्ञान बरत्यौ, मानि लीन्ही बात॥
नंद भए कर जोरि ठाढ़े, तुम कहैं ब्रज जाउँ।
सूर मुख यह कहत बानी, चित नहीं कहुँ ठाउँ॥

॥३१२१॥३७३९॥

राग देवगधार

मेरे माथैं राखौ चरन।
दीनदयाल कंस-दुख-भंजन, उग्रसेन दुख हरन॥
परम मुदित बसुदेव देवकी, आए पायनि परन।
मेरौ दोष मेटि करुनाकर, लै चलौ गोकुल घरन॥
ते जन पार भए मनमोहन, जे आए तुव सरन।
एई सूरदास के जीवन भव-जल नौका तरन॥

॥३१२२॥३७४०॥

राग बिलावल

तुम मेरी प्रभुता बहुत करी ।
परम गँवार ग्वाल पसुपालक, नीच दसा तैं उच्च धरी ॥
रोग दोष संताप जनम के, प्रगटत ही तुम सबै हरी ।
अष्ट महा सिधि और नवौ निधि, कर जोरैं मेरे द्वार खरी ॥
तीनि लोक अरु भुवन चतुर्दस, बेद पुराननि सही परी ।
सूरदास प्रभु अपने जन कौं, देत परम सुख घरी घरी ॥
॥३१७३॥३७९१॥

राग रामकली

उठे कहि माधौ इतनी बात ।
जिते मान सेवा तुम कीन्ही, बदलौ दयौ न जात ॥
पुत्र हेत प्रतिपार कियौ तुम, जैसैं जननी तात ।
गोकुल बसत हँसत खेलत मोहिं, द्यौस न जान्यौ जात ॥
होहु बिदा घर जाहु गुसाईं, माने रहियौ नात ।
ठाढ़ौ थक्यौ उतर नहिं आवै, लोचन जल न समात ॥
सब बल हीन खीन तन कंपित, ज्यौं बयारि बस पात ।
धकधकात हिय बहुत सूर उठि, चले नंद पछितात ॥
॥३१७४॥३७९२॥

राग नट

फिरि करि नंद न उत्तर दीन्हौ ।
रोम रोम भरि गयौ बचन सुनि, मनहु चित्र लिखि कीन्हौ ॥
यह तौ परंपरा चलि आई, सुख दुख लाभरु हानि ।
हम पर बचा मया किए रहियौ, सुत अपनौ जिय जानि ॥
जौ जलपै काके पल लागैं, निरखि बदन सिर नायौ ।
दुःख समूह हृदय परिपूरन, चलत कंठ भरि आयौ ॥
अब अब-पद सुब भई कोटि गिरि, जौ लगि गोकुल पैठौ ।
सूरदास ऐसे कठिन कुलिस तैं, अजहुँ रहत तनु बैठौ ॥
॥३१७५॥३७९३॥

राग धनाश्री

चले नंद ब्रज कौं समुहाइ ।
गोप सखा हरि बोधि पठाए, सब चले अकुलाइ ॥

काहू सुधि न रही तन की कछु, लटपटात परे पाइ।
गोकुल जात फिरत पुनि मधुवन, मन तिन उतहिं चलाइ ॥
बिरह सिंधु मैं परे चेत बिनु, ऐसैं हि चले बहाइ।
सूर स्याम बलराम छाँड़ि कै, ब्रज आए नियराइ ॥
॥३१२६॥३७४४॥

राग भैरव

बार बार मग जोवति माता। ब्याकुल बिनु मोहन बलभ्राता ॥
आवत देखि गोप नँद साथा। बिवि बालक बिनु भई अनाथा ॥
धाई धेनु बच्छ ज्यौं ऐसैं। माखन बिना रहे धौं कैसैं ॥
ब्रज-नारी हरषित सब धाईं। महरि जहाँ-तहँ आतुर आईं ॥
हरषित मातु रोहिनी आई। उर भरि हलधर लेउँ कन्हाई ॥
देखे नंद गोप सब देखे। बल मोहन कौं तहाँ न पेखे ॥
आतुर मिलन-काज ब्रज-नारी। सूर मधुपुरी रहे मुरारी ॥
॥३१२७॥३७४५॥

नंद-ब्रजागमन *राग सोरठ*

नंदहिं आवत देखि जसोदा, आगैं लैन गई।
अति आतुर गति कान्ह लैन कौं, मन आनंदमई ॥
कहँ नवनीत-चोर छाँड़े बिनु देखत नार नई।
तेहिं खन घोप सरोवर मानौ पुरइनि हेम हई ॥
गर्ग कथा तब कहि जो सुनाई, सो अब प्रगट भई।
सूर मोहि फिरि फिरि आवत गहि, झगरत नेति रई ॥
॥३१२८॥३७४६॥

राग कल्यान

स्याम राम मथुरा तजि, नंद ब्रजहिं आए।
बार बार महरि कहति, जनम धिक कहाए ॥
कहूँ कहति सुनी नहीं, दसरथ की करनी।
यह सुनि नँद ब्याकुल ह्वै, परे मुरछि धरनी ॥
टेरि टेरि पुहुमि परतिं ब्याकुल ब्रज-नारी।
सूरज-प्रभु कौन दोष, हमकौं जु बिसारी ॥
॥३१२९॥३७४७॥

राग सारंग

उलटि पग कैसैं दीन्हौ नंद।
छाँडे कहाँ उभै सुत मोहन, धिक जीवन मतिमंद॥
कै तुम धन-जोवन-मद-माते, कै तुम छूटे बंद।
सुफलक-सुत बैरी भयौ हमकौं, लै गयौ आनँदकंद॥
राम कृष्न बिनु कैसैं जीजै, कठिन प्रीति के फंद।
सूरदास मैं भई अभागिन, तुम बिनु गोकुलचंद॥
॥३१३०॥३७४८॥

राग मलार

दोउ ढोटा गोकुल-नायक मेरे।
काहैं नंद छाँडि तुम आए, प्रान-जिवन सब केरे॥
तिनकैं जात बहुत दुख पायौ, रोर परी इहिं खेरे।
गोसुत गाइ फिरत हैं दहुँ दिसि वै न चरैं तृन घेरे॥
प्रीति न करी राम दसरथ की, प्रान तजे बिनु हेरैं।
सूर नंद सौं कहति जसोदा, प्रबल पाप सब मेरैं॥
॥३१३१॥३७४९॥

राग नट

नंद कहौ हो कहँ छाँडे हरि।
लै जु गए जैसैं तुम ह्यातैं ल्याए किन वैसहिं आगैं धरि॥
पालि पोषि मैं किए सयाने, जिन मारे गज मल्ल कंस अरि।
अब भए तात देवकी बसुद्यौ, बाहँ पकरि ल्याये न न्याव करि॥
देखौ दूध दही घृत माखन, मैं राखे सब वैसैं ही धरि।
अब को खाइ नंदनंदन बिनु, गोकुल मनि मथुरा जु गए हरि॥
श्रीमुख देखन कौं ब्रजवासी, रहे ते घर आँगन मेरैं भरि।
सूरदास-प्रभु के जु सँदेसे, कहे महर आँसू गदगद करि॥
॥३१३२॥३७५०॥

राग बिहागरौ

यह मति नंद तोहिं क्यौं छाजी।
हरि रस बिकल भयौ नहि तिहिं छन, कपट कठोर कछू नहिं लाजी॥

राम कृष्न तजि गोकुल आए, छतिया क्षोभ रही क्यौं साजी।
कहा अकाज भयौ दसरथ को, लै जु गयौ अपनी जग बाजी॥
बातैं ई पै रहति कहन कौं, सब जग जात काल की खाजी।
सूर जसोदा कहति सो धिक मति, जो गिरिधरन-विमुख ह्वै भाजी॥
॥३१३३॥३७५१॥

राग सोरठ

जसुदा कान्ह कान्ह कै बूझै।
फूटि न गईं तुम्हारी चारौ, कैसैं मारग सूझै॥
इक तौ जरी जात बिनु देखे, अब तुम दीन्हौ फूँकि।
यह छतिया मेरे कान्ह कुँवर बिनु, फटि न भई द्वै टूक॥
धिक तुम धिक ये चरन अहो पति, अध बोलत उठि धाए।
सूर स्याम बिछुरन की हम पै, दैन बधाई आए॥
॥३१३४॥३७५२॥

राग सोरठ

नंद हरि तुमसौं कहा कह्यौ।
सुनि सुनि निठुर बचन मोहन के, कैसैं हृदय रह्यौ॥
छाँड़ि सनेह चले मंदिर कत, दौरि न चरन गह्यौ।
दरकि न गई बज्र की छाती, कत यह सूल सह्यौ॥
सुरति करति मोहन की बातैं, नैननि नीर बह्यौ।
सुधि न रही अति गलित गात भयौ, मनु डसि गयौ अह्यौ॥
उन्हैं छाँड़ि गोकुल कत आए, चाखन दूध दह्यौ।
तजे न प्रान सूर दसरथ लौं, हुतौ जन्म निबह्यौ॥
॥३१३५॥३७५३॥

राग सोरठ

मेरौ अति प्यारौ नँद-नंद।
आए कहा छाँड़ि तुम उनकौं, पोच करी मतिमंद॥
बल मोहन दोउ पीड़ नयन की, निरखत ही आनंद।
सरवर घोष, कुमोदिनि ब्रज-जन, स्याम बदन बिनु चंद॥

काहैं न पाइँ परे बसुद्यो के, घालि पाग गर फंद।
सूरदास-प्रभु अबकैं पठवहु, सकल लोक मुनि बंद ॥
॥३१३६॥३७५४॥

राग सारंग

कहाँ रह्यौ मेरौ मन मोहन।
वह मूरति जिय तैं नहिं बिसरति, अंग अंग सब सोहन ॥
कान्ह बिना गौवैं सब व्याकुल, को ल्यावै भरि दोहन।
माखन खात खवावत ग्वालनि, सखा लिए सब गोहन ॥
जब वै लीला सुरति करति हौं चित चाहत उठि जोहन।
सूरदास-प्रभु के बिछुरे तैं मरियत है अति छोहन ॥
॥३१३७॥३७५५॥

सखी-बचन, यशोदा-प्रति *राग रामकली*

तब तू मारिबोई करति।
रिसनि आगैं कहि जु आवति, अब लै भाँडे भरति ॥
रोस कै कर दाँवरी लै, फिरति घर-घर धरति।
कठिन यह करी तब जो बाँध्यौ, अब वृथा करि मरति ॥
नृपति कंस बुलाइ पठयौ, बहुत कै जिय डरति।
यह कछुक बिपरीति मो मन, माँझ देखि जु परति ॥
होनहारी होइ है सोइ, अब इहाँ कत अरति।
सूर तब किन फेरि राखे, पाइँ अब किहिं परति ॥
॥३१३८॥३७५६॥

यशोदा-विलाप *राग अडानो*

कह ल्यायौ तजि प्रानजिवन-धन।
राम कृष्न कहि मुरछि परी धर, जसुदा देखत ही पुर लोगन ॥
बिद्यमान हरि बचन स्रवन सुनि, कैसैं गए न प्रान छूटि तन।
सुनी न कथा राम दसरथ की, अहौ न लाज भई तेरैं मन ॥
मंद हीन मति भयौ नंद अति, होत कहा पछिताने छन-छन।
सूर नंद फिरि जाहु मधुपुरी, ल्यावहु सुत करि कोटि जतन घन ॥
॥३१३९॥३७५७॥

ब्रजवासी-वचन

कहौ नंद कहाँ छाँड़े कुमार ।
कैसैं प्रान रहे सुत बिछुरत, पूछत है
करुना करै जसोदा माता, नैननि
चितवत नंद ठगे से ठाढ़े, मानौ
मुरली धुनि नहिं सुनियत ब्रज मैं, सुर नर
सूरदास-प्रभु के बिछुरे तैं, कोउ न

आगत ग्वाल-वचन

ग्वारनि कही ऐसी जाइ ।
भए हरि मधुपुरी राजा, बड़े
सूत मागध वदत बिरदनि, बरनि
राज-भूषन अंग भ्राजत, अहिर
मातु पितु वसुदेव दैवै, नंद
यह सुनत जल नैन ढारत, मीँजि
मिली कुब्जिा मलै लै कै, सो
सूर-प्रभु बस भए ताकैं, करत

गोपी वचन परस्पर

कुबिजा मिली कह्यौ यह बात
मातु, पिता, बसुदेव देवकी, मन
सुंदरि भई अंग परसत हीं, करी
नृपति कान्ह कुबिजा पटरानी, हँसति
सौति साल उर मैं अति साल्यौ, नख
सूरदास-प्रभु ऐसेइ माई, कहति

आवन की आस मिटी, ऊरध सब स्वासा।
कुबिजा नृप दासी, हम, सब करी निरासा॥
लोचन जल-धार अगम, बिरह नदी बाढ़ी।
सूर स्याम-गुन सुमिरत, बैठी कोउ ठाढ़ी॥
॥३१४३॥३७६१॥

राग धनाश्री

कुबिजा स्याम सुहागिनि कीन्ही। रूप अपार जात नहिं चीन्ही॥
आपु भए पति वह अरधंगी। गोपनि नाँउ धर्‍यो नवरंगी॥
वै बहु-रवन, नगर की सोऊ। तैसोइ संग बन्यौ अब दोऊ॥
एक एक तैं गुननि उजागर। वह नागरि, वै तौ अति नागर॥
वह जो कहति स्याम सोइ मानत। निसि-दिन वाके गुननि-बखानत॥
जानि अनोखी मनहिं चुरावै। सूरज-प्रभु अब नहिं ब्रज आवैं॥
॥३१४४।३७६२॥

राग रामकली

कुबिजा नई पाई जाइ।
नवल आपुन वह नवेली, नगर रही खिलाइ॥
दास दासी भाव मिलि गयौ, प्रेम तैं भए एक।
निठुर होइ सखि गए हमतैं, जानि सहज अनेक॥
लैन जब अक्रूर आयौ, तुरत लाग्यौ कान।
नई कुब्जा उन सुहाई, सूर प्रभु मन मान॥
॥३१४५॥३७६३॥

राग धनाश्री

कैसें री यह हरि करिहैं।
राधा कौं तजिहैं मन मोहन, कंस-दासी धरिहैं॥
कहा कहति वह भइ पटरानी, वै राजा भए जाइ उहाँ।
मथुरा बसत लखत नहिं कोऊ, को आयौ, को रहत कहाँ॥
लाज बेंचि कूबरी बिसाही, संग न छाँडत एक घरी।
सूर जाहि परतीति न काहू, मन सिहात यह करनि करी॥
॥३१४६॥३७६४॥

राग धनाश्री

कुबिजा नहिं तुम देखी है ।
दधि बेचन जब जाति मधुपुरी, मैं नीकैं करि पेषी है ।
महल निकट माली की बेटी, देखत जिहिं नर-नारि हसैं ।
कोटि बार पीतरि जौ दाहौ, कोटि बार जो कहा कसैं ॥
सुनियत ताहि सुंदरी कीन्ही, आपु भए ताकौं राजी ।
सूर मिलै मन जाहि जाहि सौं, ताकौ कहा करै काजी ॥
॥३१४७॥३७६५॥

राग धनाश्री

कोटि करौ तनु प्रकृति न जाइ ।
ए अहीर वह दासी पुर की, बिधिना जोरी भली मिलाइ ॥
ऐसेन कौं मुख नाउँ न लीजै, कहा करौं कहि आवत मोहिं ।
स्यामहिं दोष किधौं कुबिजा कौं, यहै कहौ मैं बूझति तोहिं ॥
स्यामहिं दोष कहा कुबिजा कौं, चेरी चपल नगर उपहास ।
टेढ़ी टेकि चलति पग धरनी, यह जानै दुख सूरजदास ॥
॥३१४८॥३७६६॥

राग नट

हरि हौं करी कुबिजा ढीठ ।
टहल करती महल महलनि संग बैठी पीठ ॥
नैंकुहीं सुख पाइ भूली, अति गई गरबाइ ।
जात आवत नहीं कोऊ, यहै कहँ पठाइ ॥
वै दिना गए भूलि तोकौं, दिवस दस की बात ।
सूर-प्रभु दासी लुभाने, ब्रज बधू अनखात ॥
॥३१४९॥३७६७॥

राग नट

देखौ कूबरी के काम ।
अब कहावति पाटरानी, बड़े राजा स्याम ॥
कहत नहिं कोउ इनहिं दासी, वै नहीं गोपाल ।
वै कहावति राज कन्या, वै भए भूपाल ॥

पुरुष कौं री सबै सोहै, कूबरी किहिं काज।
सूर-प्रभु कौं कहा कहियै, बेचि ग्वाई लाज॥
॥३१५०॥३७६८॥

राग नट

यह सुनि हमहिं आवति लाज।
जाइ मथुरा कंस मार्‍यौ, कूबरी कैं काज॥
लोग पुर मैं बसत ऐसेइ, सबनि यहै सुहात।
कबहुँ कोऊ कहत नाहीं, स्याम आगैं बात॥
कहा चेरी नारि कीन्हीं, कहा आपुन होत।
तुम बड़े जदुबंस राजा, मिले दासी-गोत॥
अजहुँ कहै सुनाइ कोऊ, करै कुबिजा दूरि।
सूर डाहनि मरति गोपी, कूबरी के झूरि॥
॥३१५१॥३७६९॥

राग बिलावल

कंस बध्यौ कुबिजा कैं काज।
और नारि हरि कौं न मिली कहुँ, कहा गँवाई लाज॥
जैसैं काग हंस की संगति, लहसुन संग कपूर।
जैसैं कंचन काँच बराबरि, गेरू काम सिंदूर॥
भोजन साथ सूद्र बाम्हन के, तैसौ उनकौ साथ।
सुनहु सूर हरि गाइ चरैया, अब भए कुबिजा-नाथ॥
॥३१५२॥३७७०॥

राग गौरी

भामिनि कुबिजा सौं रँगराते।
राजकुमारि नारि जौ पवते, तौ कब अंग समाते॥
रीझि जाइ तनक चंदन लै, मधुबन मारग जाते।
ताकी कहा बड़ाई कीजै, ऐसैं रूप लुभाते॥
ए अहीर वह कंस की दासी, जोरी करी बिधातैं।
ब्रज बनिता त्यागीं सूरज-प्रभु बूझी उनकी बातैं॥
॥३१५३॥३७७१॥

राग आसावरी

वै कह जानैं पीर पराई ।
सुंदर स्याल कमल दल-लोचन, हरि हलधर के भाई ॥
मुख मुरली सिर मोर पखौवा, वन वन धेनु चराई ।
जो जमुना जल रंग रँगे हैं, अजहुँ न तजत कराई ॥
वहई देखि कूवरी भूले, हम सब गईं बिसराई ।
सूरज चातक बूँद भई है, हेरत रहे हिराई ॥
॥३१५४॥३७७२॥

तुम भली निबाही प्रीति, कमल नयन मन मोहन ।
तब कैसैं अति प्रेम सौं, हमैं खिलाई फाग ।
अब चेरी के कारनैं, कियौ निमिष मैं त्याग ॥
हम तौ सब गुन आगरी, कुबिजा कूबर बाढ़ि ।
कहौ तौ हमहूँ लै चलैं, पाछ कूबर काढ़ि ॥
जौपै तुम्हारी रीझ है, चेरनि सो अति नेहु ।
दृग द्युति दरस दिखाइ कै, हम चेरी करि लेहु ॥
बड़ी बड़ाई रावरी, बाढ़ी गोकुल गावँ ।
सब ब्रज बनिता ढूँढ़ि कै धर्यौ चिरियानौ नावँ ॥
अबहूँ चेरी परिहरौ, राजन् स्वामी मीत ।
या चेरी के कारनैं, सूर चले ब्रज गीत ॥
॥३१५५॥३७७३॥

राग जैतश्री

सखी री, काके मीत अहीर ।
काहे कौं भरि भरि ढारति हौ, नैननि कौ नीर ॥
आपुन पियत पियावत दुहि-दुहि, इन धेनुनि के छीर ।
निसि-वासर छिनि नाहिं बिछुरत, हे जो जमुना तीर ॥
मेरे हियैं लगति दव दाहत, जारत तन के चीर ।
सूरदास-प्रभु दुखित जानि कै, छाड़ि गए बेपीर ॥
॥३१५६॥३७७४॥

ब्रज दशा *राग धनाश्री*

तब तैं मिटे सब आनंद ।
या ब्रज के सब भाग संपदा, लै जु गए नँदनंद ॥

बिह्वल भई जसोदा डोलति, दुखित नंद उपनंद।
धेनु नहीं पय स्रवतिं रुचिर मुख, चरतिं नहीं तृण कंद॥
बिषम बियोग दहत उर सजनी, बाढ़ि रहे दुख दंद।
सीतल कौन करै री माई, नाहिं इहाँ ब्रज-चंद॥
रथ चढ़ि चले गहे नहिं काहू, चाहि रहीं मति-मंद।
सूरदास अब कौन छुड़ावै, परे बिरह कैं फंद॥

॥३१५७॥३७७५॥

राग कान्हरौ

अब वह सुरति होति कत राजनि।
दिन दस रहे प्रीति करि स्वारथ, हित रहे अपने काजनि॥
सबै अजान भईं सुनि मुरली, बधिक कपट की बाजनि।
अब मन थक्यौ सिंधु के खग ज्यौं, फिरि फिरि सरनि जहाजनि॥
वह नातौ ता दिन तैं टूट्यौ, सुफलक सुत सँग भाजनि।
गोपीनाथ कहाइ सूर-प्रभु, मारत अब कत लाजनि॥

॥३१५८॥३७७६॥

राग गौरी

ब्रजनारी मानौ अनाथ कियौ।
सुनि री सखी जसोदानंदन सुख संदेह दियौ॥
तब कृपा स्याम-सुंदर की, कर गिरि टेकि लियौ।
अरु प्रतिपाल गाइ ग्वारनि कौ, जल कालिंदि पियौ॥
यह सब दोष हमहिं लागत है, बिछुरत फट्यौ न हियौ।
सूरदास प्रभु नँदनंदन बिनु, कारन कौन जियौ॥

॥३१५९॥३७७७॥

राग केदारौ

अब हम निपटहिं भईं अनाथ।
जैसैं मधु तोरे की माखी, त्यौं हम बिनु ब्रजनाथ॥
अधर-अमृत की पीर मुईं हम, बाल दसा तैं जोरि।
सो छँडाइ सुफलक सुत लै गयौ, अनायास ही तोरि॥
जौ लगि पानि पलक मीडत रहीं, तौ लगि चलि गए दूरि।
करि निरधं निबहे दै माई, आँखिनि रथ-पद-धूरि॥

निसि दिन करी कृपन की संपति, कियौ न कबहूँ भोग।
सूर बिधाता रचि राख्यौ वह, कुबिजा के मुख जोग ॥
॥३१६०॥३७७८॥

परस्पर नंद यशोदा वचन *राग रामकली*

इक दिन नंद चलाई बात।
कहत सुनत गुन राम कृष्न कै ह्वै आयौ परभात ॥
वैसें हि भोर भयौ जसुमति कौ, लोचन जल न समात।
सुमिरि सनेह बिहरि उर अंतर, ढरि आवत ढरि जात ॥
जद्यपि वै वसुदेव देवकी, हैं निज जननी तात।
बार एक मिलि जाहु सूर-प्रभु धाई हू कैं नात ॥
॥३१६१॥३७७९॥

राग गौरी

चूक परी हरि की सेवकाई।
यह अपराध कहाँ लौं बरनौं, कहि कहि नंद-महर पछिताई।
कोमल चरन-कमल कंटक कुस, हम उन पै बन गाइ चराई।
रंचक दधि के काज जसोदा, बाँधे कान्ह उलूखल लाई ॥
इंद्र-प्रकोप जानि ब्रज राखे, बरुन फाँस तैं मोहिं मुकराई।
अपने तन-धन-लोभ, कंस-डर, आगैं कै दीन्हे दोउ भाई ॥
निकट बसत कबहुँ न मिलि आयौ, इते मान मेरी निठुराई।
सूर अजहुँ नातौ मानत हैं, प्रेम सहित करैं नंद-दुहाई ॥
॥३१६२॥३७८०॥

राग सोरठ

हरि की एकौ बात न जानी।
कहौ कंत कहँ तज्यौ स्याम कौं, कहति बिकल नँदरानी ॥
अब ब्रज सून भयौ गिरिधर बिनु, गोकुल मनि बिलगानी।
दसरथ प्रान तज्यौ छिन भीतर, बिछुरत सारँगपानी ॥
ठाढ़ी रहै ठगौरी डारी, बोलति गदगद बानी।
सूरदास-प्रभु गोकुल तजि गए, मथुरा ही मन मानी ॥
॥३१६३॥३७८१॥

राग सारंग

ले आवहु गोकुल गोपालहिं।
पाइँनि परि क्यौं हूँ विनती करि, छल बल बाहु विसालहिं॥
अब की बार नैंकु दिखरावहु नंद आपने लालहिं।
गाइनि गनत ग्वार गोसुत सँग, सिखवत बैन रसालहिं॥
जद्यपि महाराज सुख संपति, कौन गनै मनि लालहिं।
तदपि सूर वै छिन न तजत हैं, वा घुँघुची की मालहिं॥
॥३१६४॥३७८२॥

राग सोरठ

सराहौं तेरो नंद हियौ।
मोहन सौं सुत छाँडि मधुपुरी, गोकुल आनि जियौ॥
कहा कह्यौ मेरे लाल लडैतैं, जब तू बिदा कियौ।
जीवन-प्रान हमारे ब्रज को, वसुद्यौ छीनि लियौ॥
कह्यौ पुकार पारि पचिहारी, बरजत गवन कियौ।
सूरदास-प्रभु स्यामलाल धन, लै पर हाथ दियौ॥
॥३१६५॥३७८३॥

राग बिलावल

जद्यपि मन समुझावत लोग।
सूल होत नवनीत देखि मेरे, मोहन के मुख जोग॥
निसि-बासर छतिया लै लाऊँ, बालक लीला गाऊँ।
वैसे भाग बहुरि कब ह्वै हैं, मोहन मोद खवाऊँ॥
जा कारन मुनि ध्यान धरैं, सिव अंग बिभूति लगावैं।
सो बालक-लीला धरि गोकुल, ऊखल साथ बँधावैं॥
बिदरत नहीं वज्र को हिरदै, हरि-वियोग क्यौं सहिऐ।
सूरदास-प्रभु कमल नयन बिनु, कौनै बिधि ब्रज रहिऐ॥
॥३१६६॥३७८४॥

राग गौंड मलार

ब्रज तजि गए माधव कालि।
स्याम सुंदर कमल लोचन, क्यौं बिसारौं आलि॥

रैंठि निसि वासर बिसूरति, बिकल चहुँ दिसि भारि।
कह करौं कृत कर्म अपनौ, काहि दीजै गारि॥
तज्यौ भोजन भवन भूषन, अति वियोग विहाल।
हित नहीं कोउ काहि पठावौं, करि रही जिय लाल॥
धोख हीं धोखैं दगा दै, क्रूर गयौ रथ चालि।
सूर के प्रभु कहति जसुदा, कहा पायौ पालि॥

॥३१६७॥३७८५॥

राग कान्हरौ

नंद ब्रज लीजै ठौंकि बजाइ।
देहु बिदा मिलि जाहिँ मधुपुरी, जहँ गोकुल के राइ॥
नैननि पंथ कह्यौ क्यौं सूझयौ, उलटि दियौ जब पाइँ।
रघुपति दसरथ कथा सुनी ही, बरु मरते गुन गाइ॥
भूमि मसान बिदित यह गोकुल, मनहु धाइ कै खाइ।
सूरदास-प्रभु पास जाहिँ हम, देखहिँ रूप अघाइ॥

॥३१६८॥३७८६॥

राग सोरठ

माई हौं किन संग गई।
हौं ए दिन जानत ही बूड़ी, लोगनि की सिखई॥
मोकौं बैरी भए कुटुँब सब, फेरि फेरि ब्रज गाड़ी।
जौ हौं कैसैंहु जान पावती, तौ कत आवति छाँड़ी॥
अब हौं जाइ जमुन जल बहिहौं, कहा करौ मोहिँ राखी।
सूरदास वा भाइ फिरति हौं, ज्यौं मधु तोरैं माखी॥

॥३१६९॥३७८७॥

राग मलार

पै जैतौ माहौंई मथुरा ही हौं।
दासी ह्वै बसुदेव राइ की, दरसन देखत रैहौं॥
राखि राखि एते दिवसनि मोहिँ, कहा कियौ तुम नीकौ।
सोऊ तौ अक्रूर गए लै, तनक खिलौना जी कौ।
मोहिँ देखि कै लोग हसैँगे, अरु किन कान्ह हँसै।
सूर असीस जाइ दैहौं, जनि न्हातहु बार खसै॥

॥३१७०॥३७८८॥

राग सारंग

पथी इतनी कहियौ बात ।
तुम बिनु इहाँ कुँवर वर मेरे, होत जिते उतपात ॥
बकी अघासुर टरत न टारे, बालक बनहिं न जात ।
ब्रज पिंजरी रुधि मानौ राखे, निकसन कौं अकुलात ॥
गोपी गाइ सकल लघु दीरघ, पीत बरन कृस गात ।
परम अनाथ देखियत तुम बिनु, केहिं अवलंबे तात ॥
कान्ह कान्ह कै टेरत तब धौं, अब कैसैं जिय मानत ।
यह व्यवहार आजु लौं है ब्रज, कपट नाट छल ठानत ॥
दसहूँ दिसि तैं उदित होत हैं, दावानल के कोट ।
आँखिनि मूँदि रहत सनमुख ह्वै, नाम कवच दै ओट ॥
ए सब दुष्ट हते हरि जेते, भए एकहीं पेट ।
सत्वर सूर सहाइ करौ अब, समुझि पुरातन हेट ॥
॥३१७१॥३७८९

राग सारंग

कहियौ स्याम सौं समुझाइ ।
वह नातौ नहिं मानत मोहन, मनौ तुम्हारी धाइ ॥
एक बार माखन के काजैं, राखे मैं अटकाइ ।
वाकौ बिलग न मानौ मोहन, लागै मोहिं बलाइ ॥
बारहिं बार यहै लौ लागी, गहे पथिक के पाइँ ।
सूरदास या जननी कौ जिय, राखौ बदन दिखाइ ॥
॥३१७२॥३७९०॥

राग बिलावल

जद्यपि मन समुझावत लोग ।
सूल होत नवनीत देखि मेरे, मोहन के मुख जोग ॥
प्रात काल उठि माखन-रोटी, को बिनु माँगे दैहै ।
को मेरे वा कान्ह कुँवर कौं, छिनु छिनु अंकम लैहै ॥
कहियौ पथिक जाइ, घर आवहु, राम कृष्न दोउ भैया ।
सूर स्याम कत होत दुखारी, जिनके मो सी मैया ॥
॥३१७३॥३७९१॥

राग रामकली

मेरौ कहा करत ह्वै है ।
कहियौ जाइ वेगि पठवहिं गृह, गाइनि को द्वै है ॥
दीजै छाँड़ि नगर वारी सब, प्रथम ओर प्रतिपारौ ।
हमहूँ जिय समुझैं नहिं कोऊ तुम तैं हितू हमारौ ॥
आजुहिं आजु, कालि कालिहहिं करि, भलौ जगत जस लीन्हौ ।
आजुहिं कालि कियौ चाहत हौ, राज अटल करि दीन्हौ ॥
परदा सूर वहुत दिन चलतौ, दुहुनि फवती लूटि ।
अंतहु कान्ह आइहैं गोकुल, जन्म जन्म की ऊटि ॥
॥३१७४॥३७९२॥

राग सारंग

सँदेसौ देवकी सौं कहियौ ।
हौं तौ धाइ तिहारे सुत की, मया करत ही रहियौ ॥
जदपि टेव तुम जानतिं उनकी, तऊ मोहिं कहि आवै ।
प्रात होत मेरे लाल लड़ैतें, माखन रोटी भावै ॥
तेल उवटनौ अरु तातौ जल, ताहि देखि भजि जाते ।
जोइ जोइ माँगत सोइ सोइ देती, क्रम क्रम करि कै न्हाते ॥
सूर पथिक सुनि मोहिं रैनि दिन, वढ्यौ रहत उर सोच ।
मेरौ अलक लड़ैतौ मोहन, ह्वै है करत सँकोच ॥
॥३१७५॥३७९३॥

राग सोरठ

मेरे कान्ह कमल दल-लोचन ॥
अवकी वेर वहुरि फिर आवहु, कहा लगे जिय सोचन ॥
यह लालसा होति मेरैं जिय, वैठी देखत रैहौं ।
गाइ चरावन कान्ह कुँवर सौं, वहुरि न कवहूँ कैहौं ॥
करत अन्याव न वरजौं कवहूँ, अरु माखन की चोरी ।
अपने जियत नैन भरि देखौं, हरि हलधर की जोरी ॥
दिवस चारि मिलि जाहु साँवरे, कहियौ यहै सँदेसौ ।
अव की वेर आनि सुख दीजै, सूर मिटाइ अँदेसौ ॥

॥३१७६॥३७९४॥

अब कैं लाल होहु फिरि बारे।
कैसैं टेव मिटति मन मोहन आँगन डोलत फिरत उघारे॥
माखन कारन आरि करत जो, उठि पकरत दधि माट मकारे।
कछुक भाजि लै जात जु भावत, सुख पावत जब खात ललारे॥
जा कारन हौं भरमति विह्वल लै, कर लकुट फिरत गुनहारे।
सूरदास प्रभु तुम मनमोहन, भूप भए देखति हौं प्यारे॥
॥२१७७॥३७९५॥

पथी-वचन देवकी के प्रति *राग आसावरी*

हौं इहाँ गोकुल ही तैं आई।
देवकि माइ पाइँ लागति हौं, जसुमति मोहिं पठाई॥
तुमसौं महर जुहार कह्यौ है, पालागन नँद-नारी।
मेरैं हूतौ राम कृष्न कौ, भेंट्यो भरि अँकवारी॥
और एक सँदेस कह्यौ है, कहौ तौ तुम्हैं सुनाऊँ।
बारक बहुरि तुम्हारे सुत कौ कैसैं दरसन पाऊँ॥
तुम जननी जग विदित सूर-प्रभु, हम हरि की हैं धाइ।
कृपा करहु पठवहु इहि नातैं, जीवैं दरसन पाइ॥
॥२१७८॥३७९६॥

राग सारंग

जौ पै राखति हौ पहिचानि।
तौ अबकैं वह मोहनि मूरति, मोहिं दिखावहु आनि॥
तुम रानी वसुदेव गेहिनी, हम अहीर ब्रजबासी।
पठै देहु मेरे लाल लड़ैतैं, वारौं ऐसी हाँसी॥
भली करी कंसादिक मारे, सब सुर-काज किए।
अब इनि गैयनि कौन चरावै, भरि-भरि लेति हिए॥
खान पान परिधान राज सुख, जो कोउ कोटि लड़ावै।
तदपि सूर मेरौ बाल कन्हैया, माखन ही सचु पावै॥
॥२१७९॥३७९७॥

राग सोरठ

मेरे कुँवर कान्ह बिनु सब कुछ वैसहिं धर्‌यो रहै।
को उठि प्रात होत लै माखन, को कर नेति गहै॥

सूने भवन जसोदा सुत के, गुन गुनि सूल सहै।
दिन उठि घर घेरत हीं ग्वारिनि, उरहन कोउ न कहै॥
जो ब्रज मैं आनंद हुतौ, मुनि मनसा हू न गहै।
सूरदास स्वामी बिनु गोकुल, कौड़ी हू न लहै॥
॥३१८०॥३७९८॥

गोपी-विरह वर्णन

राग सारंग

चलत गुपाल के सब चले।
यह प्रीतम सौं प्रीति निरंतर, रहे, न अर्ध पले॥
धीरज पहिल करी चलिबे की, जैसी करत भले।
धीरज चलत मेरे नैननि देखे, तिहिं छिन आँसु हले॥
आँसु चलत मेरी वलयनि देखे, भए अंग सिथिले।
मन चलि रह्यौ हुतो पहिलैं हीं, चले सबै बिमले।
एक न चलै प्रान सूरज-प्रभु, असलेहु साल सले॥
॥३१८१॥३७९९॥

राग मलार

लोग सब कहत सयानी बातैं।
कहतहिं सुगम करत नहिं आवैं, सोचि रहति हैं तातैं॥
कहत आगि चदन सो सीरी, सती जानि उमहै।
समाचार ताते अरु सीरे, पाछैं जाइ लहै॥
कहत सबै सग्राम सुगम अति, कुसुम लता करवार।
सूरदास सिर देत सूरमा, सोइ जानै ब्यौहार॥
॥३१८२॥३८००॥

राग मलार

बातनि सब कोउ जिय समुझावै।
जिहि बिधि मिलनि मिलैं वै माधौ, सो बिधि कोउ न बतावै॥
जद्यपि जतन अनेक सोचि पचि, त्रिया मनहिं बिरमावैं।
तद्यपि हठी हमारे नैना, और न देख्यौ भावैं॥
बासर निसा प्रान-वल्लभ तजि, रसना और न गावै।
सूरदास-प्रभु प्रेमहिं लगि कै, कहिऐ जो कहि आवै॥
॥३१८३॥३८०१॥

राग सारंग

करि गए थोरे दिन की प्रीति।
कहँ वह प्रीति कहाँ यह बिछुरनि, कहँ मधुबन की रीति॥
अब की बेर मिलौ मनमोहन, बहुत भई बिपरीति।
कैसैं प्रान रहत दरसन बिनु, मनहु गए जुग बीति॥
कृपा करहु गिरिधर हम ऊपर, प्रेम रह्यौ तन जीति।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु भईं भुस पर की भीति॥
॥३१८४॥३८०२॥

राग धनाश्री

प्रीति करि दीन्ही गरैं छुरी।
जैसैं बधिक चुगाइ कपट कन, पाछैं करत बुरी॥
मुरली मधुर चेप काँपा करि, मोर चन्द्र फँदवारि।
बक बिलोकनि लगी, लोभ-बस, सकी न पंख पसारि॥
तरफत छाँड़ि गए मधुबन कौं, बहुरि न कीन्ही सार।
सूरदास प्रभु संग कलपतरु, उलटि न बैठी डार॥
॥३१८५॥३८०३॥

राग मलार

देखौ माधौ की मित्राइ।
आई उघरि कनक कलई सी, दै निजु गए दगाइ॥
हम जानैं हरि हितू हमारे, उनकैं चित्त ठगाइ।
छाँडी सुरति सबै ब्रज कुल की निठुर लोग भए माइ॥
प्रेम निबाहि कहा वै जानैं, साँचेई अहिराइ।
सूरदास बिरहिनी बिकल मति, कर मीँजैं पछिताइ॥
॥३१८६॥३८०४॥

राग कान्हरौ

ऐसे हम नहिं जाने स्यामहिं।
सेवा करत करी उनि ऐसी, गईं जाति कुल नामहिं॥
तन मन प्रीति लाइ जो तोरै, कौन भलाई तामहिं।
वै कह जानैं पीर पराई, लुब्ध आपने कामहिं॥

नगर नारि रति के रति-नागर, रते कूबिजा बामहिं।
अंतहुँ सूर सोइ पै प्रगटै, होइ प्रकृति जो जामहिं॥

॥३१८७॥३८०५॥

राग मलार

एकहिं बेर दई सब ठेरी।
तब कत डोरि लगाइ चोरि मन, मुरलि अधर धरि टेरी॥
बाट घाट बीथी-ब्रज घर बन, संग लगाए फेरी।
तिनकी यह करि गए पलक मैं, पारि बिरह दुख बेरी॥
जौ पै चतुर सुजान कहावत, गही समुझियौ मेरी।
बहुरि न सूर पाइहौ हम सी, बिनु दामन की चेरी॥

॥३१८८॥३८०६॥

राग नट

अब तौ ऐसेई दिन मेरे।
सुनि री सखी दोष नहिं काहूँ, हरि हित-लोचन फेरे॥
मृग मद मलय कपूर कुमकुमा, ये सब सत्य तचे रे।
मंद पवन ससि कुसुम सुकोमल, तेऊ देखियत करेरे॥
बन बन बसत मोर चातक पिक, आपुन दिए बसेरे।
अब सोइ बकत जाहि जोइ भावै, बरजे रहत न मेरे॥
जे द्रुम सींचि-सींचि अपने कर, किए बढ़ाइ बड़ेरे।
तेइ सुनि सूर किसल गिरिवर भए, आनि नैन मग घेरे॥

॥३१८९॥३८०७॥

राग ईमन

नाथ अनाथनि की सुधि लीजै।
गोपी, ग्वाल, गाइ, गोसुत सब, दीन मलीन दिनहिं दिन छीजै॥
नैननि जलधारा बाढ़ी अति बूड़त ब्रज किन कर गहि लीजै।
इतनी बिनती सुनहु हमारी, बारक हूँ पतिया लिखि दीजै॥
चरन कमल दरसन नव नवका, करुनासिंधु जगत जस लीजै।
सूरदास प्रभु आस मिलन की, एक बार आवन ब्रज कीजै॥

॥३१९०॥३८०८॥

राग सारंग

देखियति कालिंदी अति कारी।
अहो पथिक कहियो उन हरि सौं, भई बिरह जुर जारी ॥
गिरि-प्रजंक तैं गिरति धरनि धँसि, तरँग तरफ तन भारी।
तट बारू उपचार चूर, जल पूर प्रस्वेद पनारी ॥
बिगलित कच कुस काँस कूल पर, पंक जु काजल सारी।
भौंर भ्रमत अति फिरति भ्रमित गति, दिसि दिसि दीन दुखारी ॥
निसि दिन चकई पिय जु रटति है, भई मनौ अनुहारी।
सूरदास-प्रभु जो जमुना गति, सो गति भई हमारी ॥
॥३१९१॥३८०९॥

परेखौ कौन बोल कौ कीजै।
ना हरि जाति न पाँति हमारी, कहा मानि दुख लीजै ॥
नाहिंन मोर चंद्रिका माथैं, नाहिंन उर बनमाल।
नहिं सोभित पुहुपनि के भूषन, सुंदर स्याम तमाल ॥
नंद नँदन गोपी जन वल्लभ, अब नहिं कान्ह कहावत।
वासुदेव, जादवकुल-दीपक, बंदी जन बरनावत ॥
बिसर्‍यौ सुख नातौ गोकुल कौ, और हमारे अंग।
सूर स्याम वह गई सगाई, वा मुरली कैं संग ॥
॥३१९२॥३८१०॥

राग सारंग

सुनियत मुरली देखि लजात।
दूरिहिं तैं सिंहासन बैठे, सीस नाइ मुसकात ॥
मोर-पच्छ कौ ब्यजन बिलोकत, बहरावत कहि बात।
जौ कहुँ सुनत हमारी चरचा, चालत हीं चपि जात ॥
सुरभी लिखत चित्र की रेखा, सोचैं हू सकुचात।
सूरदास जो ब्रजहिं बिसार्‍यौ, दूध दही कत खात ॥
॥३१९३॥३८११॥

राग मलार

कह परदेसी कौ पतिआरौ।
प्रीति बढ़ाइ चले मधुबन कौं, बिछुरि दियौ दुख भारौ ॥

ज्यौं जल-हीन मीन तरफत, त्यौं व्याकुल प्रान हमारौ।
सूरदास-प्रभु के दरसन बिनु, दीपक भौन अँध्यारौ॥
॥३१९३॥३८१२॥

राग मलार

कह परदेसी को पतिआरौ।
पीछैं ही पछिताइ मिलौगे प्रीति बढ़ाइ सिधारौ॥
ज्यौं मृग नाद रीझि तन दीन्हौ, लाग्यौ बान बिषारौ।
प्रीतहिं लिएँ प्रान बस कीन्हौ, हरि तुम यहै बिचारौ॥
बलि अरु बालि सुपनखा बपुरी, हरि तैं कहा दुरायौ।
सूरदास-प्रभु जानि भले हौ, भऱ्यौ भराइ ढरायौ॥
॥३१९५॥३८१३॥

राग सारंग

सखी री हरिहिं दोष जनि देहु।
तातैं मन इतनौ दुख पावत, मेरोइ कपट सनेहु॥
बिद्यमान अपने इन नैननि, सूनौ देखति गेहु।
तदपि सखी ब्रजनाथ बिना उर, फटि न होत बड़ बेहु॥
कहि-कहि कथा पुरातन सजनी, अब नहि अंतहिं लेहु।
सूरदास तन यौंऽब करौंगी, ज्यौं फिरि फागुन मेहु॥
॥३१९६॥३८१४॥

राग मलार

अब कछु औरहि चाल चली।
मदन गुपाल बिना या ब्रज की सबै बात बदली॥
गृह कंदरा समान सेज भइ, सिंहहु चाहि बली।
सीतल चंद सुतौ सखि कहियत, तातैं अधिक जली॥
मृगमद मलय कपूर कुंकुमा, सींचति आनि अली।
एक न फुरत बिरह जुर तैं कछु, लागत नाहिँ भली॥
अंमृत बेलि सूर के प्रभु बिनु, अब बिष फलनि फली।
हरि बिधु बिमुख नाहिनै बिगसति, मनसा कुमुद कली॥
॥३१९७॥३८१५॥

अब वै बातैं उलटि गईं।
जिन बातनि लागत सुख आली, तेऊ दुसह भईं॥
रजनी स्याम स्याम सुंदर सँग, अरु पावस की गरजनि।
सुख समूह की अवधि माधुरी, पिय रस-बस की तरजनि॥
मोर पुकार गुहार कोकिला, अलि गुंजार सुहाई।
अब लागति पुकार दादुर सम, बिनही कुँवर कन्हाई॥
चंदन चंद समीर अगिन सम, तनहि देत दव लाई।
कालिंदी अरु कमल कुसुम सब, दरसन ही दुखदाई॥
सरद बसंत सिसिर अरु ग्रीषम, हित-रितु की अधिकाई।
पावस जरैं सूर के प्रभु बिनु, तरफत रैन बिहाई॥
॥३१९८॥३८१६॥

राग धनाश्री

अब वे मधुपुरी हैं माधौ।
जिनकौ बदन बिलोकत नैननि, जुग होतौ पल आधौ॥
जिहिं कारन आरिन गह घर तैं, जिय पद कमलनि बाँधौ।
हिय अंतर चित चाह दाह सौं, लाज महा वन दाधौ॥
सो सपनेहूँ दीठि न आवत, जो इहिं जतननि लाधौ।
सूरदास तिहिं देखत कारन, नैन मरत हैं साधौ॥
॥३१९९॥३८१७॥

राग सारंग

अब हौं कहा करौं री माई।
नंदनंदन देखैं बिनु सजनी, पल भरि रह्यो न जाई॥
घर के मात पिता सब त्रासत, इहिं कुल लाज लजाई।
बाहर के सब लोग हँसत हैं, कान्ह सनेहिनि आई॥
सदा रहत चित चाक चढ्यौ सो, गृह अँगना न सुहाई।
सूरदास गिरिधरन लाडिले, हँसि करि कंठ लगाई॥
॥३२००॥३८१८॥

राग सारंग

इहिं बिरियाँ बन तैं ब्रज आवत।
दूरिहिं तैं वह बेनु अधर धरि, बारंबार बजावत॥

कबहुँक काहूँ भाँति चतुर चित, अति ऊँचे सुर गावत।
कबहुँक लै-लै नाम मनोहर, धौरी धेनु बुलावत॥
इहिँ विधि वचन सुनाइ स्याम घन, मुरछे मदन जगावत।
आगम सुख उपचार विरह-जुर, बासर अंत नसावत॥
रचि रुचि प्रेम पियासे नैननि, क्रम क्रम बलहिँ बढ़ावत।
सूर सकल रसनिधि सुंदर घन, आनँद प्रगट करावत॥

॥३२०१॥३८१६॥

मोहन जा दिन बनहिँ न जात।
ता दिन पसु पच्छी द्रुम बेली, बिनु देखे अकुलात॥
देखत रूप निधान नैन भरि, तातैँ नहीँ अघात।
ते न मृगा तृन चरत उदर भरि, भए रहत कृस गात॥
जे मुरली धुनि सुनत स्रवन भरि, ते मुख फल नहिँ खात।
ते खग बिपिन अधीर कीर पिक, डोलत हैँ बिलखात॥
जिन बेलिन परसत कर पल्लव, अति अनुराग चुचात।
ते सब सूखी परतिँ बिटप ह्वै. जीरन से द्रुम पात॥
अति अधीर सब बिरह सिथिल सुनि, तन की दसा हिरात।
सूरजदास मदन मोहन बिनु, जुग सम पल इम जात॥

॥३२०२॥३८२०॥

राग सारंग

नहिँ बिसरति वह रति ब्रजनाथ।
हौँ जु रही हठि रूठि मौन धरि, सुख ही मैँ खेलत इक साथ॥
पचिहारे मैँ तऊ न मान्यौ, आपुन चरन छुए हँसि हाथ।
तब रिस धरि सोई उत मुख करि, झुकि ढाँप्यौ उपरैना माथ॥
रह्यौ न परै प्रेम आतुर अति, जानी रजनी जात अकाथ।
सूर स्याम हौँ ठगी महा निसि, कहति सुनाइ प्रीति की गाथ॥

॥३२०३॥३८२१॥

राग नट

ते गुन बिसरत नाहीं उर तैँ।
जे ब्रजनाथ किए सुनि सजनी, सोचि कहति हौँ धुर तैँ॥

मेघ कोपि ब्रज बरषन आयौ, त्रास भयौ पति सुर तैं।
विह्वल बिकल जानि नँद नंदन, करज धर्‌यौ गिरि तुरतैं॥
एक समै बन माँझ मनोहर, जाम रैनि रज जुर तैं।
पत्र भग सुनि सक स्याम घन, सैन दई कर दुरतैं॥
दैत्य महाबल बहुत पठाए, कंस बली मधुपुर तैं।
सूरदास-प्रभु सबै बधे रन, कछु नहिं सर्‌यौ असुर तैं॥

॥३२०४॥३८२२॥

राग बिलावल

इतने जतन काहे कौं किए।
अपने जान जानि नँदनंदन, बहुत भयनि सौं राखि लिए॥
अघ बक वृषभ बच्छ बधन तैं, व्याल जीति दावागि पिए।
इंद्र मान मेट्यौ गिरि कर धरि, छिन छिन प्रति आनंद दिए॥
हरि बिछुरन की पीर न जानी, बचन मानि हम बादि जिए।
सूरदास अब वा लालन बिनु, कह न सहत ए कठिन हिए॥

॥३२०५॥३८२३॥

राग सारंग

मिलि बिछुरन की बेदन न्यारी।
जाहि लगै सोई पै जानै, बिरह-पीर अति भारी॥
जब यह रचना रची बिधाता, तबहीं क्यौं न सँभारी।
सूरदास-प्रभु काहैं जिवाई, जनमत ही किन मारी॥

॥३२०६॥३८२४॥

बिछुरे स्याम बहुत दुख पायौ।
दिन दिन पीर होति अति गाढ़ी, पल-पल बरष बिहायौ॥
व्याकुल भईं सकल ब्रज-बनिता, नैंकु सँदेस न पायौ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन कौं, नैननि अति झर लायौ॥

॥३२०७॥३८२५॥

राग बिलावल

यह कुमया जौ तबहीं करते।
तौ इन पै कब जियत आजु लौं, गोकुल लोग उबरते॥

केसी तृनावर्त वृषभासुर, कहौ कौन बिधि मरते।
व्योम प्रलंब व्याल दावानल, हरि बिनु कौन निबरते॥
संखचूड़ बक बकी अघासुर, बरुन इंद्र क्यौं टरते।
सूर स्याम तौ घोष कहा, जौ इती निठुरई धरते॥

॥३२०८॥३८२६॥

राग मलार

हरि हम तब काहे कौं राखी।
जब सुरपति ब्रज बोरन लीन्हौ, दियौ क्यौं न गिरि नाखी॥
अब लौं हमारी जग मैं चलती, नई पुरानी साखी।
सो क्यौं झूठी होइ सखी री, गर्ग कथा जो भाषी॥
तौ हमकौं होती कत यह गति, निसि दिन बरषति आँखी।
सूर यौं भई फिरति ज्यौं, मधु दूहे की माखी॥

॥३२०९॥३८२७॥

राग सारंग

मधुबन तुम क्यौं रहत हरे।
बिरह बियोग स्याम सुंदर के ठाढ़े क्यौं न जरे॥
मोहन बेनु बजावत तुम तर, साखा टेकि खरे।
मोहे थावर अरु जड़ जंगम, मुनि जन ध्यान टरे॥
वह चितवनि तू मन न धरत है, फिरि फिरि पुहुप धरे।
सूरदास प्रभु बिरह दवानल, नख सिख लौं न जरे॥

॥३२१०॥३८२८॥

राग केदारौ

जौ सखि नाहिं नैं ब्रज स्याम।
बरष होत न एक पल सम, अब सु जुग बर याम॥
वहै गोकुल, लोग वेई, वहै जमुना ठाम।
वहै गृह जिहिं सकल संपति, घन भयौ सोइ धाम॥
वहै रति-पति अछत स्यामहिं, लै न सकतौ नाम।
सूर प्रभु बिनु अब कलेवर, दहन लाग्यौ काम॥

॥३२११॥३८२९॥

राग जैतश्री

हरि न मिले माइ जनम ऐसैं लाग्यौ जान।
चितवत मग दिवस निसा जाति जुग समान॥
चातक पिक बचन सखी, सुनि न परत कान।
चंदन अरु चंद किरनि मनौ अमल भान॥
भूषन तन तज्यौ रनहिं आतुर ज्यौं त्रान।
भीषम लौं सहत मदन अरजुन के बान॥
सोपति तन सेज सूर चल न चपल प्रान।
दच्छिन रवि अवधि अटक इतनी जिय आन॥

॥३२१२॥३८३०॥

राग नट

बिचार ही लागे दिन जान।
तुम बिनु नंद-सुवन इहिं गोकुल, निसि भइ कल्प समान॥
मुरलि सब्द, कल धुनि की गुंजनि, सुनियत नाहीं कान।
चलत न रथ गहि रही स्याम को, अब लागी पछितान॥
है कोउ जाइ कहै माधौ सौं, धीरज धरहिं न प्रान।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, फुरत नहीं औसान॥

॥३२१३॥३८३१॥

राग सारंग

अब यौं ही लागे दिन जान।
सुमिरत लाज लागति है, उर भयौ कुलिस समान॥
लोचन रहत बदन बिनु देखे, बचन सुने बिन कान।
हृदय रहत हरि पानि परस बिनु, छिदत न मनसिज बान॥
मानौ सखी रहे नहिं मेरे, वै पहिले तन प्रान।
बिधि समेत रचि चले नंदसुत, बिरह बिथा दै आन॥
बिधि बछ हरे और पुनि कीने, वैसेइ वेत बिपान।
सूरदास ऐसीयै कछु यह, समुझति हैं अनुमान॥

॥३२१४॥३८३२॥

राग धनाश्री

ऐसौ कोउ नाहिंनै सजनी जो मोहनहिं मिलावै।
बारक बहुरि नंदनंदन कौं, जो ह्याँ लौं लै आवै॥

पाइनि परि विनती करि मेरी, यह सब दसा सुनावै।
निसि निकुंज सुख केलि परम रुचि, रास की सुरति करावै॥
और कौनहू बात की सकुच न, किहुँ विधि की उपजावै।
पुनि-पुनि सूर यहै कहै हरि सौं, लोचन जरत बुझावै॥

॥३२१५॥३८३३॥

राग केदारौ

बहुरौ देखिबौ इहिं भाँति।
असन बाँटन खात बैठे, बालकन की पाँति॥
एक दिन नवनीत चोरत, हौं रही दुरि जाइ।
निरखि मम छाया भजे मैं दौरि पकरे धाइ॥
पोंछि कर मुख लई कनियाँ, तब गई रिस भागि।
वह सुरति जिय जाति नाहीं, रहे छाती लागि॥
जिन घरनि वह सुख विलोक्यौ, ते लगत अब खान।
सूर बिनु ब्रजनाथ देखे, रहत पापी प्रान॥

॥३२१६॥३८३४॥

कब देखौं इहिं भाँति कन्हाई।
मोरनि के चँदवा माथे पर, काँध कामरी लकुट सुहाई॥
बासर के बीतैं सुरभिन सँग, आवत एक महाछबि पाई।
कान अँगुरिया घालि निकट पुर, मोहन राग अहीरी गाई॥
क्यौंहुँ न रहत प्रान दरसन बिनु, अब कित जतन करै री माई।
सूरदास स्वामी नहिं आए, बदि जु गए अवध्यौऽब भराई॥

॥३२१७॥३८३५॥

राग सारंग

यह जिय हौंसै पै जु रही।
सुनि री सखी स्याम सुंदर हँसि, बहुरि न बाँह गही॥
अब वै दिवस बहुरि कब ह्वैहैं, ऐसी जात सही।
कहाँ कान्ह हैं कहँ री अब हम, कौन बयारि बही॥
कासौं कहौं कहत नहिं आवै, कहत न परै कही।
जो कछु हुती हमारी हरि की, हरि कैं सँग निबही॥

इतनी कहतहिं हिलकी लागी, गोविंद गुननि दही।
सूरदास काटे तरिवर ज्यौं, ठाढी रटति रही॥

॥३२१८॥३८३६॥

ब्रज मैं वै उनहार नहीं।
ब्रज सब गोप रहे, हरि बिनहीं, स्वाद न दूध दही॥
ज्यौं द्रुम डार पवन के परसे, दस दिसि परत बही।
बासर बिरह भरी अति ब्याकुल, कबहुँ न नींद लही॥
दिन दिन देह दुखी अति हरि बिनु, इहिं तन बहुत सही।
सूरदास हम तब न मुईं, अब ये दुख सहन रहीं॥

॥३२१९॥३८३७॥

राग जैतश्री

कहँ लौं मानौं अपनी चूक।
बिनु गुपाल सखि री यह छतिया, ह्वै न गई द्वै टूक॥
तन मन धन घर बन अरु जोबन, ज्यौं भुवंग को फूक।
हृदय जरत है दावानल ज्यौं, कठिन बिरह की ऊक॥
जाकी मनि सिर तैं हरि लीन्ही, कहा कहै अहि मूक।
सूरदास ब्रजबास बसीं हम, मनो सामुहैं सूक॥

॥३२२०॥३८३८॥

राग मलार

भलौ ब्रज भयौ धरनि तैं स्वर्ग।
तब इन पर गिरि, अब गिरि पर ये, प्रीति किधौं यह दुर्ग॥
सुर बासुर छल बोल बारि गढ़, अब अवधि भिति खूटी।
प्रिय-पति बिरह मदन गढ़ घेर्यौ, एकौ अलँग न टूटी॥
नैन तडाग, स्रवन मूरति मठ, जब सकत बर बानी।
रास केलि बन पौरि कोट मनु, देखि अमर रजधानी॥
गोरंभन गोला गर्जन, घन घूमिं दुदुभिनि रोकी।
कंटक रोम कंगूरनि प्रति मनौ, अपनी अपनी चौकी।
चढत त्रिभंगी सज साजि सत, धँसत नहीं पल आँखी।
देखहु सूर सनेह स्याम कौ, गगन मँडल हम राखी॥

॥३२२१॥३८३९॥

राग मलार

सखी री हरि बिनु है दुख भारी।
सिंहिका-सुत हर-भूषन ग्रसि ज्यौं सोइ गति भई हमारी॥
सिखर-बंधु-अरि क्यौं न निवारत, पुहुप धनुष कैं बिसेष।
चच्छुस्रवा उर-हार ग्रसी ज्यौं, छिनु दुतिया बपु रेख॥
घट-सुत-असन समय-सुत, आनन अमी गलित जैसैं मेत।
जलधर ब्यौम अंबु-कन, मुचत नैन होड़ बदि लेत॥
जदुपति प्रभु मिलि आनि मिलावहु, हरि-सुत आरत जानि।
जैसैं हरि करि बंधु प्रगट भए, तैसिय आरति मानि॥
षट-आनन-वाहन कानन मैं, घन रजनी तहँ बासी।
सूरदास-प्रभु चतुर सिरोमनि, सुनि चातक पिक त्रासी॥
॥३२२२॥३८४०॥

राग सोरठ

कहा दिन ऐसैं ही चलि जैहैं।
सुनि सखि मदन गुपाल आँगन मैं ग्वालनि संग न ऐहैं॥
कबहूँ जात पुलिन जमुना के, बहु बिरह बिधि खेलत।
सुरति होत सुरभी सँग आवत, पुहुप गहे कर झेलत॥
मृदु मुसकानि आनि राख्यौ जिय, चलत कह्यौ है आवन।
सूर सुदिन कबहूँ तौ ह्वैहै, मुरली सब्द सुनावन॥
॥३२२३॥३८४१॥

राग मलार

स्याम सिधारे कौनैं देस।
तिनकौ कठिन करेजौ सखि री, जिनकौ पिय परदेस॥
उन माधौ कछु भली न कीन्ही, कौन तजन कौ बेस।
छिन भरि प्रान रहत नहिं उन बिनु, निसि दिन अधिक अँदेस॥
अतिहिं निठुर पतियाँ नहिं पठई, काहू हाथ सँदेस।
सूरदास प्रभु यह उपजत है, धरिए जोगिनि बेस॥
॥३२२४॥३८४२॥

राग मलार

सखी री दिखरावहु वह देस।
कहा कहौं या ब्रज बसि हरि बिनु, लह्यौ न सुख कौ लेस॥

मुख मीठी अक्रूर जु दीन्ही, हम सिसु दीन्हो जान।
जानि न बधिक बिभेसौ मृग ज्यौं, हनत बिसासी प्रान॥
मैं मधु ज्यौं राखे सँचि मोहन, ते भृगी की रीति।
दै दृग-छाट अवधि लै गवने, सुनियत जहाँ अनीति॥
मोहन बिन हम बसत घोष महँ भई तीसरी साँझ।
सूरदास ये प्रान पतित अब कहा रहत घट माँझ॥
॥३२२५॥३८४३॥

राग मलार

गोपालहिं पावौं धौं किहिं देस।
सिंगी मुद्रा कर खप्पर लै, करिहौं जोगिनि भेस॥
कंथा पहिरि बिभूति लगाऊँ, जटा बँधाऊँ केस।
हरि कारन गोरखहिं जगाऊँ, जैसैं स्वाँग महेस॥
तन मन जारौं भस्म चढ़ाऊँ, बिरहा के उपदेस।
सूर स्याम बिनु हम हैं ऐसी, जैसैं मनि बिनु सेस॥
॥३२२६॥३८४४॥

राग केदारौ

फिरि ब्रज आइयै गोपाल।
नंद-नृपति-कुमार कहिहैं, अब न कहिहैं ग्वाल॥
मुरलिका धुनि सप्त दिसि दिसि, चलौ निसान बजाइ।
दिगविजय कौं जुवति-मंडल-भूप परिहैं पाइ॥
सुरभित सखा सु सैन भट सँग, उठैगी, खुर-रैन।
आतपत्र मयूर चंद्रिका, लसत है रवि-ऐन॥
मधुप बंदी जन सुजस कहि, मदन आयसु पाइ।
द्रुम-लता बन कुसुम बानक, बसन कुटी-बनाइ॥
सकल खग मृग पैक पायक, पौरिया, प्रतिहार।
सूर प्रभु ब्रज राज कीजै, आइ अबकी बार॥
॥३२२७॥३८४५॥

राग जैतश्री

फिरि ब्रज बसौ गोकुलनाथ।
अब न तुमहिं जगाइ पठवैं, गोधननि के साथ॥

बरजैं न माखन खात कबहूँ, दह्यौ देत लुटाइ।
अब न देहिं उराहनौ, नँद-घरनि आगैं जाइ॥
दौरि दावरि देहिं नहिं, लकुटी जसोदा पानि।
चोरी न देहिं उघारि कै, औगुन न कहिहैं आनि॥
कहिहैं न चरननि देन जावक, गुहन बेनी फूल।
कहिहैं न करन सिंगार कबहूँ, बसन जमुना-कूल॥
करिहैं न कबहूँ मान हम, हठिहैं न माँगत दान।
कहिहैं न मृदु मुरली बजावन, करन तुमसौं गान॥
देहु दरसन नंद-नंदन, मिलन की जिय आस।
सूर हरि के रूप कारन, मरत लोचन प्यास॥

॥३२२८॥३८४६॥

राग सारंग

काहैं पीठि दई हरि मोसौं।
तुमही पीठि भावते दीन्हौ, और कहा कहि कोसौं॥
मिलि बिछुरे की पीर सखी री, राम सिया पहिचाने।
मिलि बिछुरे की पीर सखी री, पय पानी उर आने।
मिलि बिछुरे की पीर कठिन है, कहैं न कोऊ मानै।
मिलि बिछुरे की पीर सखी री, बिछुर्‌यौ होइ सो जानै॥
बिछुरे रामचंद्र औ दसरथ, प्रान तजे छिन माहीं।
बिछुर्‌यौ पात गिर्‌यौ तरुवर तैं, फिरि न लगै उहि ठाहीं॥
बिछुर्‌यौ हंस काय घटहू तैं, फिरि न आव घट माहीं।
मैं अपराधिनि जीवत बिछुरी, बिछुर्‌यौ जीवत नाहीं॥
नाद कुरंग मीन, जल बिछुरे, होइ कीट जरि खेहा।
स्याम बियोगिनि अतिहिं सखी री, भई साँवरी देहा॥
गरजि गरजि बादर उनये हैं, बूँदनि बरषत मेहा।
सूरदास कहु कैसैं निबहै, एक ओर कौ नेहा॥

॥३२२९॥३८४७॥

राग जैतश्री

हरि से प्रीतम क्यौं बिसराहिं।
मिलन दूरि मन बसत चंद पर, चित चकोर पछिताहिं॥

जल मैं रहे जलहि तैं उपजै बिनु जलहीं कुम्हिलाहि।
जल तजि हंस चुगै मुकताहल, मीन कहाँ उडि जाहि॥
सोई गोकुल गोबरधन सोइ, कोन करै अब छाँहि।
प्रगट न प्रीति करै परदेसी, सुख किहिँ देस बसाहि॥
धरनी दुखित देखि बादर अति, बरषा रितु बरषाहि।
सूरदास प्रभु तुम दरसन बिनु, दुख क्यौं हृदय समाहि॥

॥३२३०॥३८४८॥

राग मलार

प्रीतम बिनु व्याकुल अति रहियत।
मधुबन जौ जाती हौं हरि सँग, कित एतौ दुख सहियत॥
काहैं काम कटुक अँग गरतौ, कित बसत रितु दहियत।
बिनु पावस अति नैन उमँगि जल, कित सरिता उर बहियत॥
जौ जानतीं बहुरि नहिं आवन, धाइ पीत पट गहियत।
सूरदास प्रभु के बिछुरे तैं, कहूँ नहीं सुख लहियत॥

॥३२३१॥३८४९॥

राग जैतश्री

बारक जाइयौ मिलि माधौ।
को जानै तन छूटि जाइगौ, सूल रहै जिय साधौ॥
पहुनैंहु नंद बबा के आवहु, देखि लेउँ पल आधौ।
मिलेंही मैं बिपरीत करी बिधि, होत दरस कौ बाधौ॥
सो सुख सिव सनकादि न पावत, जो सुख गोपिनि लाधौ।
सूरदास राधा बिलपति है, हरि कौ रूप अगाधौ॥

॥३२३२॥३८५०॥

राग मलार

बारक नैननि हीं मिलि जाहु।
कमलनैन घन स्याम राधिकहिं, परसत जौ न पत्याहु॥
जानत हौ कर कमल बिरोधी, बरन बिरोधी बाहु।
ससि मुख सत्रु पयोधर गिरि अति, तहँ तुम क्यौं ऽव समाहु॥
गज गति मद मराल बिरोधी, हेम सुरुचि रिपु दाहु।
जघ कदलि, कटि सिंघ बिरोधी, न्याय निरखि सकुचाहु॥

छीनि लए सब चोरि सकल अँग, एकौ सुपत न साहु ।
तदपि सूर उनकी रुचि राखौ, कत अधिकैऽब डराहु ॥
॥३२३३॥३८५१॥

राग मलार

सखी इन नैननि तैं घन हारे ।
बिनहीं रितु बरषत निसि बासर, सदा मलिन दोउ तारे ॥
ऊरध स्वास समीर तेज अति, सुख अनेक द्रुम डारे ।
बदन सदन करि बसे बचन-खग, दुख पावस के मारे ॥
दुरि दुरि बूँद परत कंचुकि पर, मिलि अंजन सौं कारे ।
मानौ परनकुटी सिव कीन्ही, बिबि मूरति धरि न्यारे ॥
घुमरि घुमरि बरषत जल छाँड़त, डर लागत अँधियारे ।
बूड़त ब्रजहिं सूर को राखै, बिनु गिरिवरधर प्यारे ॥
॥३२३४॥३८५२॥

राग मलार

नैना सावन भादौं जीते ।
इनहीं बिषय आनि राखे मनु समुदनि हूँ जल रीते ॥
वै झर लाइ दिना द्वै उघरत, ये न भूलि मग देत ।
वै बरषत सबके सुख कारन, ये नँदनंदन हेत ॥
वै परिमान पुजैं हद मानत, ये दिन धार न तोरत ।
यह बिपरीति होति देखति हौं, बिना अवधि जग बोरत ॥
मेर जिय ऐसी आवत, भइ चतुरानन की साँझ ।
सूर बिन मिलें प्रलै जानिबौ, इनहीं धौसनि माँझ ॥
॥३२३५॥३८५३॥

राग मलार

निसि दिन बरषत नैन हमारे ।
सदा रहति बरषा रितु हम पर, जब तैं स्याम सिधारे ॥
दृग अंजन न रहत निसि बासर, कर कपोल भए कारे ।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहूँ, उर बिच बहत पनारे ॥
आँसू सलिल सबै भइ काया, पल न जात रिस टारे ।
सूरदास-प्रभु यहै परेखौ, गोकुल काहैं बिसारे ॥
॥३२३६॥३८५४॥

राग सोरठ

तब तैं नैन अनाथ भए।
जब तैं मदन गुपाल हमारे, ब्रज तजि अनत गए॥
ता दिन तैं पावस दल साजत, जुद्ध निसान हए।
सुभट मोर सायक मुख मोचत दिन दुख देत नए॥
यह सुनि सोचि काम अबलनि के, तनु गढ आनि लए।
सूरदास जिन दए संग सुख, तिन मिलि बैर ठए॥
॥३२३७॥३८५५॥

राग सारग

नैननि नाध्यौ है भर।
ऊँचे चढ़ि टेरति आतुर सुर, कहि गिरिधर गिरिधर॥
फिरति सदन दरसन के काजैं, ज्यौं भख सूखे सर।
कौन-कौन की दसा कहौं सुनि, सब ब्रज तिनतैं पर॥
निसि दिन कलमलातिं सुनि सजनी, गाजत मनमथ अर।
सूरदास सब रहीं मौन ह्वै, अतिहिं मैन के भर॥
॥३२३८॥३८५६॥

राग सारंग

अति रस-लंपट मेरे नैन।
तृप्ति न मानत पिवत कमल मुख, सुदरता मधु-ऐन॥
दिन अरु रैनि दृष्टि रसना रस, निमिष न मानत चैन।
सोभा सिंधु समाइ कहाँ लौं, हृदय साँकरे ऐन॥
अब यह बिरह अजीरन ह्वै कै, बमि लाग्यौ दुख देन।
सूर वैद ब्रजनाथ मधुपुरी, काहि पठाऊँ लैन॥
॥३२३९॥३८५७॥

राग केदारौ

हरि दरसन कौ तरसतिं अँखियाँ।
झाँकतिं झखतिं झरोखा बैठी, कर मीडतिं ज्यौं मखियाँ॥
बिछुरीं बदन-सुधानिधि-रस तैं, लगतिं नहीं पल पँखियाँ।
इकटक चितवतिं उड़ि न सकतिं जनु, थकित भईं लखि सखियाँ॥

बार बार सिर धुनति बिसूरतिँ, बिरह-ग्राह जनु भखियाँ।
सूर सुरूप मिले तेँ जीवहिँ, काट किनारे नखियाँ॥
॥३२४०॥३८५८॥

राग सारंग

लोचन व्याकुल दोऊ दीन।
कैसैँ रहैँ दरस बिनु देखे, बिधि चकोर ज्यौँ लीन॥
बिबरन भए खंज ज्यौँ दाबे, बारिज ज्यौँ जल-हीन।
स्याम-सिंधु तैँ बिछुरि परे हैँ, तरफरात ज्यौँ मीन॥
ज्यौँ रितुराज बिमुख भृंगो की, छिन छिन बानी छीन।
सूरदास प्रभु बिनु गोपालहिँ, कत बिधना ये कीन॥
॥३२४१॥३८५९॥

राग सारंग

महा दुखित दोउ मेरे नैन।
जा दिन तैँ हरि चले मधुपुरी, नैकु न कबहूँ कीन्हौ सैन॥
भरे रहत अति नीर न निघटत, जानत नहिँ कब दिन कब रैन।
महा दुखित अतिही भ्रम माते, बिनु देखे पावत नहिँ चैन॥
जौ कबहूँ पलकौँ नहिँ खोलति, चाहन चाहति मूरति मैन।
छाँड़त छिन मैँ ये जो सरीरहिँ, गहि कै व्यथा जात हरि लैन॥
रसना यहई नेम लियौ है, और नहीँ भाषै मुख बैन।
सूरदास प्रभु जबतैँ बिछुरे, तब तैँ सब लोग दुख दैन॥
॥३२४२॥३८६०॥

राग सारङ्ग

अँखियाँ करति हैँ अति आरि।
सुंदर स्याम पाहुनैँ कै मिस, मिलि न जाहु दिन चारि॥
बाहँ थकी बायसहिँ उड़ावत, कब देखौँ उनहारि।
मैँ तौ स्याम स्याम करि टेरति, कालिंदी कैँ करार॥
कमल-बदन ऊपर द्वै खंजन, मानौ बूड़त बारि।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, सकैँ न पंख पसारि॥
॥३२४३॥३८६१॥

राग धनाश्री

लोचन लालच तैं न टरैं।
हरि मुख एक रंग सँग बाँधे दाधे, फेरि जरैं॥
ज्यौं मधुकर रुचि रच्यौ केतकी, कटक कोटि अरैं।
तैसैंइ लोभ तजत नहिं लोभी, फिरि फिरि फेरि फिरैं॥
मृग ज्यौं सहज सहत सर दारुन, सन्मुख तैं न टुरैं।
जानत आहिं हतै, तन त्यागत, तापर हितै करैं॥
समुझि न परै कौन सचुपावत, जीवत जाइ मरैं।
सूर सुभट हठ छाँड़त नाहीं, काटे सीस लरैं॥
॥३२४४॥३८६२॥

राग सारग

लोचन चातक ज्यौं हैं चाहत।
अवधि गएँ पावस की आसा, क्रम क्रम करि निरबाहत॥
सरिता सिंधु अनेक और सखि, सुत पति सजन सनेह।
ये सब जल जदुनाथ जलद बिनु, अधिक दहत हैं देह॥
जब लगि नहिं बरषत ब्रज ऊपर, नव घन स्याम सरीर।
तौ लगि तृषा जाइ किन सूरज, आन ओस कैं नीर॥
॥३२४५॥३८६३॥

राग केदारौ

(मेरे) नैना बिरह की बेलि बई
सींचत नैन-नीर के सजनी, मूल पताल गई॥
बिगसित लता सुभाई आपनैं, छाया सघन भई।
अब कैसैं निरवारौं सजनी, सब तन पसरि छई॥
को जानै काहू के जिय की, छिन छिन होत नई।
सूरदास स्वामी के बिछुरैं, लागी प्रेम जई॥
॥३२४६॥३८६४॥

राग देवगधार

ब्रज बसि काके बोल सहौं।
इन लोभी नैननि के काजैं, परबस भइ जो रहौं॥

विसरि लाज गइ सुधि नहिं तन की, अब धौं कहा कहौं।
मेरे जिय मैं ऐसी आवति, जमुना जाइ वहौं॥
इक बन ढूँढ़ि सकल बन ढूँढ़ौं, कहूँ न स्याम लहौं।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस कौं, इहिं दुख अधिक दहौं॥
॥३२४७॥३८६५॥

राग केदारौ

नैना अब लागे पछतान।
बिछुरत उमगि नीर भरि आए, अब न कछू अवसान॥
तब मिलि मिलि कत प्रीति बढ़ावत, अब सो भई बिष बान।
तब तौ प्रीति करी आतुर ह्वै, समुझी कछु न अजान॥
अब यह काम दहत निसि बासर, नाहीं मेरे मान।
भयौ बिदेस मधुपुरी हमकौं, क्यौंहूँ होत न जान॥
अति चटपटी देखिबैं चाहत, अब लागे अकुलान।
सूरदास-प्रभु दीन दुखित ये, लै न गए सँग प्रान॥
॥३२४८॥३८६६॥

राग आसावरी

हो, ता दिन कजरा मैं दैहौं।
जा दिन नंदनँदन के नैननि, अपने नैन मिलैहौं॥
सुनि री सखी यहै जिय मेरैं, भूलि न और चितैहौं।
अब हठ सूर यहै ब्रत मेरौ, कौंकिर खै मरि जैहौं॥
॥३२४९॥३८६७॥

राग गौरी

कहा इन नैननि कौ अपराध।
रसना रटत सुनत जस स्रवननि, इतनौ अगम अगाध॥
भोजन कहँ भूख क्यौं भाजति, बिनु खाएँ कह स्वाद।
इकटक रहत, छुटति नहिं कबहूँ, हरि देखन की साध॥
ये दृग दुखी बिना वह मूरति, कहौ कहा अब कीजै।
एक बेर ब्रज आनि कृपा करि, सूर सुदरसन दीजै॥
॥३२५०॥३८६८॥

राग सारंग

इतनी दूरि गोपालहिँ माई, नहिँ कबहूँ मिलि आई।
कहिए कहा, दोष किहिँ दीजै, अपनी ही जड़ताई॥
सोवन मैं सपनैं सुनि सजनी, ज्यौं निधनी निधि पाई।
गनतहिँ आनि अचानक कोकिल, उपवन बोलि जगाई॥
जौ जागौं तौ कहू उठि देखौं, बिकल भई अधिकाई।
नूतन किसलै कुसुम दसहुँ दिसि, मधुकर मदन दुहाई॥
बिछुरत तन न तज्यौं तेही छन, सँग न गई हठि माई।
समुझि न परी सूर तिहिँ अवसर, कीन्ही प्रीति हँसाई॥
॥३२५९॥३८७७॥

राग धनाश्री

अब ह्याँ हेत है कहाँ।
जहँ वै स्याम मदन मूरति, चलि मोहिँ लिवाइ तहाँ॥
कुटिल अलक, मकराकृत कुंडल, सुंदर नैन बिसाल।
अरुन अधर, नासिका मनोहर, तिलक तरनि ससिभाल॥
दसन ज्योति दामिनि ज्यौं दमकति, बोलत वचन रसाल।
उर बिचित्र बनमाल बनी ज्यौं, कंचन लता तमाल॥
घन तन पीत बसन सोभित अति, जनु अलि कमल पराग।
बिपुल बाहु भरि कृत परिरंभन, मनहु मलय-द्रुम नाग॥
सोवत ही सुपने मैं अति सुख, सत्य जानि जिय जागी।
सूरदास-प्रभु प्रगट मिलन कौं, चातक ज्यौं रट लागी॥
॥३२६०॥३८७८॥

राग मलार

सुपनैं हरि आए हौं किलकी।
नींद जु सौति भई रिपु हमकौं, सहि न सकी रति तिल की॥
जौ जागौं तौ कोऊ नाहीं, रोके रहति न हिलकी।
तन फिरि जरनि भई नख सिख तैं, दिया बाति जनु मिलकी॥
पहिली दसा उलटि लीन्ही है, त्वचा तचकि तनु पिलकी।
अब कैसैं सहि जाति हमारी, भई सूर गति सिल की॥
॥३२६१॥३८७९॥

राग कान्हरौ

मैं जान्यौ री आए हैं हरि, चौंकि परे तैं पुनि पछितानी।
इते मान तलफत तनु बहुत, जैसैं मीन तपति बिनु पानी॥
सखि सुदेह तौ जरति बिरह-जुर, जतननि नहिं प्रकृती ह्वै आनी।
कहा करौं अब अपथ भए मिलि बाढ़ी बिथा दुःख दुहरानी॥
पठवौं पथिक सब समाचार लिखि, बिपति बिरह बपु अति अकुलानी।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, कैसैं घटति कठिन यह कानी॥
॥३२६२॥३८८०॥

राग मलार

जौ जागौं तौ कोऊ नाहीं, अंत लगी पछितान।
जानौं साँच मिले मनमोहन, भूली इहिं अभिमान॥
नींदहिं मै मुरझाइ रही हौं, प्रथम पंच-संधान।
अब उर अंतर मेरी माई, स्वपन छुटे छल बान॥
सूर सकति जैसैं लछिमन तन, बिह्वल ह्वै मुरझान।
ल्याउ सजीवन मूरि स्याम कौं, तौ रहिहैं ये प्रान॥
॥३२६३॥३८८१॥

राग कल्यान

हरि बिछुरन निसि नींद गई री।
घन पिक, बरह, सिलीमुख मधुब्रत, बचननि हौं अकुलाइ लई री॥
वह जु हुती प्रतिमा समीप की, सुख संपत्ति दुरित चितई री।
तातैं सदा रहित सुनि सजनी, सेज सजल दृग-नीर भई री॥
अवधि अधार जु प्रान रहत हैं, इन सबहिन मिलि कठिन ठई री।
सूरदास-प्रभु सुधा दरस बिनु, भई सकल तन बिरह रई री॥
॥३२६४॥३८८२॥

राग केदारौ

बहुरौ भूलि आँखि लगी।
सुपनेंहू के सुख न सहि सकी, नींद जगाइ भगी॥
बहुत प्रकार निमेष लगाए, छुटी नहीं सठगी।
जनु हीरा हरि लियो हाथ तें, ढोल बजाइ ठगी॥

कर मीँड़ति पछिताति बिचारति, इहिँ बिधि निसा जगी।
वह मूरति वह सुख दिखरावे, सोई सर सगी ॥
॥३२६५॥३८८३॥

राग धनाश्री

अब सखी नींदौ तौ जु गई ।
भागी जिय अपमान जानि जनु सकुचनि ओट लई ॥
तब अति रस करि कंत विमोह्यौ, आगम अटक दई ।
सुपनैं हूँ संजोग सहति, नहिँ सहचरि सौति भई ॥
कहतहिँ पोच, सोच मनहीँ मन, करत न वनत खई ।
सूरदास तन तजैँ भलै बनै, बिधि बिपरीत ठई ॥
॥३२६६॥३८८४॥

सखी री काहे रहत मलीन ।
तन सिंगार कछू देखति नहिँ, बुधि बल आनँद-हीन ॥
मुख तमोर, नैननि नहिँ अंजन, तिलक ललाट न दीन ।
कुचिल बस्त्र, अलकैँ अति रूखी, दिखियत है तन छीन ॥
प्रेम-तृषा तीनौँ जन जानै बिरही, चातक, मीन ।
सूरदास बीतति जु हृदय मैँ, जिन जिय परवस कीन ॥
॥३२६७॥३८८५॥

राग मलार

हमकौँ सपनेहू मैँ सोच ।
जा दिन तैँ बिछुरे नँदनंदन, ता दिन तैँ यह पोच ॥
मनु गुपाल आए मेरैँ गृह, हँसि करि भुजा गही ।
कहा कहौँ बैरिनि भइ निद्रा, निमिष न और रही ॥
ज्यौँ चकई प्रतिबिंब देखि कै, आनंदै पिय जानि ।
सूर पवन मिलि निठुर बिधाता, चपल कियौ जल आनि ॥
॥३२६८॥३८८६॥

राग बिहागरौ

हरि बिनु बैरनि नींद बढ़ी ।
हौँ अपराधिनि चतुर बिधाता, काहैं बनाइ गढ़ी ॥

तन मन धन जोबन सुख संपति बिरहा अनल डढ़ी।
नंदनँदन कौ रूप निहारति, अह-निसि अटा चढ़ी॥
जिहिं गुपाल मेरैं बस होते, सो विद्या न पढ़ी।
सूरदास-प्रभु हरि न मिलैं तौ, घर तैं भली मढ़ी॥
॥३२६९॥३८८७॥

राग मलार

सुनहु सखी ते धन्य नारि।
जे आपने प्रान-बल्लभ की, सपनैं हूँ देखतिं अनुहारि॥
कहा करौं री चलत स्याम के, पहिलैंहिं नींद गई दिन चारि।
देखि सखी कछु कहत न आवै, झाँखि रही अपमाननि मारि॥
जा दिन तैं नैननि अंतर भए, अनुदिन अति बाढ़त है बारि।
मनहु सूर दोउ सुभग सरोवर, उमँगि चले मरजादा टारि॥
॥३२७०॥३८८८॥

राग मलार

हमकौं जागत रैनि बिहानी।
कमल नैन, जग जीवन की सखि, गावत अकथ कहानी॥
बिरह अथाह होत निसि हमकौं, बिनु हरि समुद समानी।
क्यौं करि पावहिं बिरहिनि पारहिं, बिनु केवट अगवानी॥
उदित सूर चकई मिलाप, निसि अलि जु मिलै अरबिंदहिं।
सूर हमैं दिन राति दुसह दुख, कहा कहैं गोबिंदहिं॥
॥३२७१॥३८८९॥

राग सोरठ

पिय बिनु नागिनि कारी रात।
जौ कहुँ जामिनि उवति जुन्हैया, डसि उलटी ह्वै जात॥
जंत्र न फुरत मंत्र नहिं लागत, प्रीति सिरानी जात।
सूर स्याम बिनु बिकल बिरहिनी, मुरि-मुरि लहरैं खात॥

॥३२७२॥३८९०॥

तिरिया रैनि घटे सचु पावै।
अंचल लिखति स्वान की मूरति, उड़गन पथहिं दिखावै॥

हँसत कुकोदिनि बिहँसत पदमिनि, भँवर निकट गुन गावै।
तजत भोग चकई चकवा जल, सारँग बदन छपावै॥
अपने सुख मरनि के काजैं, कस्यप मुनहिं मनावै॥
सूरदास ककन ग्याँ तबहीं, तमुचुर बचन सुनावै॥
॥३२७३॥३८९१॥

राग मलार

मोकौं माई जमुना जम ह्वै रही।
कैसैं मिलौं स्यामसुंदर कौं, बैरिनि बीच बही॥
कितिक बीच मथुरा अरु गोकुल, आवत हरि जु नहीं।
हम अबला कछु मरम न जान्यौ, चलत न फैंट गही॥
अब पछिताति प्रान दुख पावत, जाति न बात कही।
सूरदास-प्रभु सुमिरि-सुमिरि गुन, दिन-दिन सूल सही॥
॥३२७४॥३८९२॥

राग धनाश्री

नैन सलोने स्याम, बहुरि कब आवहिंगे।
वै जो देखत राते राते, फूलनि फूली डार॥
हरि बिनु फूलझरी सी लागत, झरि झरि परत अँगार॥
फूल बिनन नहिं जाउँ सखी री, हरि बिनु कैसे फूल।
सुनि री सखी मोहिं राम दुहाई, लागत फूल त्रिसूल॥
जब मैं पनघट जाउँ सखी री, वा जमुना कैं तीर।
भरि-भरि जमुना उमड़ि चलति है, इन नैननि कैं नीर॥
इन नैननि कै नीर सखी री, सेज भई घरनाउ।
चाहति हौं ताही पै चढ़ि कै, हरि जू कैं ढिग जाउँ॥
लाल पियारे प्रान हमारे, रहे अधर पर आइ।
सूरदास-प्रभु कुंज-बिहारी, मिलत नहीं क्यौं धाइ॥

॥३२७५॥३८९३॥

वे नहिं आए प्रान पियारे। मुरलि बजाइ मन हरे हमारे॥
तब तैं गोकुल गाँव बिसारे। जब लै क्रूर अक्रूर सिधारे॥
तब तैं ये तन परे जु कारे। जब तैं लागी हृदय दवा रे॥

सूरदास-प्रभु जग उजियारे। निसि दिन पपिहा रटत पुकारे ॥
॥३२७६॥३८९४॥

राग मलार

बहुरौ गोपाल मिलैं, सुख सनेह कीजै।
नैननि मग निरखि बदन, सोभा रस पीजै ॥
मदन मोहन हिरदै धरि, आसन उर दीजै।
परै न पलक आँखिनि की, देखि देखि जीजै ॥
मान छाँड़ि प्रेम भजन, अपनौ करि लीजै।
सूर सोइ सुहागि नारि, जासौं मन भीजै ॥
॥३२७७॥३८९५॥

राग केदारौ

सखी री हरि आवहिं किहिं हेत।
वै राजा तुम ग्वारि बुलावत, यहै परेखौ लेत ॥
अब सिर कनक छत्र राजत है, मोर पंख नहिं भावत।
सुनि ब्रजराज पीठि दै बैठत, जदुकुल बिरद बुलावत ॥
द्वारपाल अति पौरि बिराजत, दासी सहस अपार।
गोकुल गाइ दुहत दुख को लौं, सूर सहे इक बार ॥
॥३२७८॥३८९६॥

राग मलार

चलत न माधौ की गही बाहँ।
बार-बार पछितति तबहिं तैं, यहै सूल मन माहँ ॥
घर बन कछु न सुहाइ रैनि-दिन, मनहु मृगी दव दाहँ।
मिटति न तपति बिना घन स्यामहिं, कोटि घनी घन छाहँ ॥
बिलपति अति पछिताति मनहिं मन, चंद गहैं जनु राहँ।
सूरदास-प्रभु दूरि सिधारे, दुख कहियै किहिं पाहँ ॥
॥३२७९॥३८९७॥

राग सारंग

मन की मन ही माँझ रही।
जब हरि रथ चढ़ि चले मधुपुरी, सब अज्ञान भरी ॥

मति बुधि हरी परी धरनी पर, अति बेहाल खरी।
अंकुस अलक कुटिल भइ आसा, तातैं अवधि बरी॥
ज्यौं बिनु मनि अहि मूक फिरत है, बिधि बिपरीत करी।
मन तौ रह्यौ पंपि सूरज-प्रभु माटी रही धरी॥
॥३२८०॥३८९८

राग सारंग

मेरौ मन वैसीयै सुरति करै।
मृदु मुसकानि बंक अवलोकनि, हिरदै तैं न टरै॥
जब गुपाल गोधन सँग आवत, मुरली अधर धरे।
मुख की रेनु झारि अंचल सौं, जसुमति अंक भरै॥
संध्या समय बास की डोलनि, वह सुधि क्यौं बिसरै।
सूरदास प्रभु दरसन कारन, नैननि नीर ढरै॥
॥३२८१॥३८९९॥

कहँ लौं राखिय मन बिरमाई।
इक टक सिव धर नैन न लागत, स्याम-सुता सुत-धनि चलि आई॥
हरि-बाहन दिव-बास सहोदर, तिहिं मति उदित मुरछि महि जाई।
गिरजा-प्रति-रिपु नख सिख ब्यापत, बसत-सुधा प्रिय-कथा सुनाई॥
बिरहिनि बिरह आपु बस कीन्हौ, लेहु कमल जिनि पाइँ छुवाई।
बेगिहिं मिलौ सूर के स्वामी, उदधि सुता पति मिलिहै आई॥
॥३२८२॥३९००॥

राग धनाश्री

माधव बिलमि बिदेस रहे।
अमरराज सुत नाम रैन-दिन, चितवत नीर बहे॥
मारुत-सुत-पति नंद-गेह तजि, हरि-भख वचन कहे।
जल-रितु-नाम जान अब लागी, काके नेह नहे॥
कुंती-पति पितु तासु नारि-घर ता अरि अग दहे।
घट-सुत-रिपु-तनया-पति सजनी, उर अति कपट गहे।
सैल-सुता-पति ता सुत वाहन-बोल न जात सहे।
सूरदास यह बिपति स्याम सौं, को समुझाइ कहै॥
॥३२८३॥३९०१॥

राग नट नारायण

मन की मन ही मैं नहिं माति ।
सहियत कठिन सूल निसि-बासर कहैं कही नहिं जाति ॥
हरि के संग किए सुख जेते, ते अब रिपु भए गात ।
स्वाति बूंद इक सीप सु मोती, बिष भयौ कदली पात ॥
यहई ब्रज येई ब्रजसुंदरि, औरै अब रस-रीति ।
सूर कौन जानै यह बिपदा, जौ भरियत करि प्रीति ॥
॥३२८४॥३९०२॥

राग मारू

कमल नैन अपनैं गुन, मन हमार बाँध्यौ ।
लागत तौ जान्यौ नहिं, विषम बान साध्यौ ॥
कठिन पीर वेध्यौ सर, मारि गयौ माई ।
लागत तौ जान्यौ नहिं, अब न सह्यौ जाई ॥
मंत्र तंत्र केतिक करौ, पीर नाहिं जाई ।
है कोउ उपचार करै, कठिन दरद माई ॥
कैसेहुँ नँदलाल पाउँ, नैकु मिलौं धाई ।
सूरदास प्रेम फंद, तौन्यौ नहिं जाई ॥
॥३२८५॥३९०३॥

राग सोरठ

हरि जु हमसौं करी माई, मीन जल की प्रीति ।
कितिक दूरि दयालु, माधौ, गई अवधि बितीति ॥
तरफि कै उन प्रान दीन्हौ, प्रेम की परतीति ।
नीर निकट न पीर जानी, वृथा गए दिन बीति ॥
चलत मोहन कह्यौ हमसौं, आइहैं रिपु जीति ।
सूर श्री ब्रजनाथ कीन्ही, सबै उलटी रीति ॥
॥३२८६॥३९०४॥

राग धनाश्री

मति कोउ प्रीति कै फंग परै ॥
सादर सवति देखि मन मानै, पंछी प्रान हरै ॥
देखि पतंग कहा क्रम कीन्यौ जीव कौ त्याग करै ।
अपने मरिबे तैं न डरत है, पावक पैठि करै ॥

भौंरै सनेहो तोहिं बताऊँ, केतकि प्रेम धरै।
सारँग सुनत नाद रस मोह्यौ, मरिबे तैं न डरै॥
जैसैं चकोर चंद कौं चाहत, जल बिनु मीन मरै।
सूरदास प्रभु सौं ऐसैं करि, मिलै तौ काज सरै॥
॥३२८७॥३९०५॥

राग सारंग

प्रीति करि काहू सुख न लह्यौ।
प्रीति पतंग करी पावक सौं, आपै प्रान दह्यौ॥
अलि-सुत प्रीति करी जल-सुत सौं, संपुट माँझ गह्यौ।
सारंग प्रीति करी जु नाद सौं, सन्मुख बान सह्यौ॥
हम जो प्रीति करी माधव सौं, चलत न कछू कह्यौ।
सूरदास प्रभु बिनु दुख पावत, नैननि नीर बह्यौ॥
॥३२८८॥३९०६॥

हेली हिलग की पहिचानि।
जौ पै हिलग हिए मैं है री, कहा करै कुल-कानि॥
हिलग पतंग करी दीपक सौं, तन सौंप्यौ है आनि।
कसक्यौ नहीं जरत ज्वाला मैं, सही प्रान की हानि॥
हिलग चकोर करी है ससि सौं, पावक चुगत न मानि।
हिलगहि नाद स्वाद मृग मोह्यौ, बिध्यौ पारधी तानि॥
हिलग आनि बाँध्यौ सब गुन बिच, मधुप कमल हित जानि।
सोई हिलग लाल गिरधर सौं, सूरदास सुख-दानि॥
॥३२८९॥३९०७॥

राग मलार

प्रीति तौ मरिबौऊ न बिचारै।
निरखि पतंग ज्योति पावक ज्यौं, जरत न आपु सँभारै॥
प्रीति कुरंग नाद मगन मोहित, बधिक निकट ह्वै मारै।
प्रीति परेवा उड़त गगन तैं, गिरत न आपु सँभारै॥
सावन मास पपीहा बोलत, पिय पिय करि जु पुकारै।
सूरदास-प्रभु दरसन कारन, ऐसी भाँति बिचारै॥
॥३२९०॥३९०८॥

राग मलार

जनि कोउ काहू कैं बस होहि।
ज्यौं चकई दिनकर बस डोलत, मोहिं फिरावत मोहि॥
हम तौ रीझि लटू भईं लालन, महा प्रेम तिय जानि।
बंधन अवधि भ्रमति निसि-बासर, को सुरझावत आनि॥
उरझे संग अंग-अंगनि प्रति बिरह, बेलि की नाईं।
मुकुलित कुसुम नैन निद्रा तजि, रूप सुधा सियराई॥
अति आधीन हीन-मति व्याकुल, कहँ लौं कहौं बनाई।
ऐसी प्रीति रीति रचना पर, सूरदास बलि जाई॥
॥३२९१॥३९०९॥

राग नट

दिन ही दिन को सहै वियोग।
यह सरीर नाहिंन मेरौ सखि, इते बिरह जुर जोग॥
रचि स्रक कुसुम, सुगंध सेज सजि, बसन कुकुमा बोरि।
नलिनी दलनि दूर करि उर तैं, कंचुकि के बँद छोरि॥
बन-बन जाइ, मोर, चातक पिक, मधुपनि टेरि सुनाइ।
उदित चंद, चंदन चढ़ाइ उर, त्रिबिध समीर बहाइ॥
रटि मुख नाम स्याम सुंदर कौ, तोहिं सुनाइ-सुनाइ।
तो देखत तन होमि मदन मख, मिलौं माधवहिं जाइ॥
सूरदास स्वामी कृपालु भए, जानि जुवति रस-रीति।
तेहिं छिन प्रगट भए मनमोहन, सुमिरि पुरातन प्रीति॥
॥३२९२॥३९१०॥

बिथा माई कौन सौं कहियै।
हम तौ भईं जज्ञ के पसु ज्यौं, केतिक दुख सहियै॥
कामिनि भामिनि निसि अरु बासर, कहूँ न सुख लहियै।
मन मैं बिथा मथति लागै यौं, उर अंतर दहियै॥
कबहुँक जिय ऐसी उपजति है, जाइ जमुन बहियै।
सूरदास प्रभु हरि नागर बिनु, काकी ह्वै रहियै॥
॥३२९३॥३९११॥

राग मलार

बोलि सखी चातक पिक, मधुकर अरु मोर।
दिन ही दिन कौन सहै, बिरह बिथा घोर॥

सजि सुगंध सुमन सेज, ससि सौं कहि जाइ।
जैसैं यह बीर कर्म, देखैं सब आइ॥
लाउ मलय मारुत अरु रितु बसन्त सग।
पूजौं सखि कमल नैन, सनमुख रति रंग॥
नलिनीदल दूरि करै, मृगमद को पंक।
अब जनि तन राखि लेउँ, मनमिज सर संक॥
सूरदास प्रभु कृपालु कोमल चित गात।
ताही छन प्रगट भए, सुनत प्रिया बात॥
॥३२९४॥३९१२॥

राग धनाश्री

बहुरि न कबहूँ सखी मिलैं हरि।
कमल नैन के दरसन कारन, अपनो सो जतन रही बहुतै करि।
जेइ जेइ पथिक जात मधुबन तन, तिनसौं बिथा कहति पाइनि
पारि।
काहुँ न प्रगट करी जदुपति सौं, दुसह दुरासा गई अवधि टरि॥
धीर न धरत प्रेम व्याकुल चित, लेत उसाँस नीर लोचन भरि।
सूरदास तन थकित भई अब, इहिं बियोग-सागर न सकति तरि॥
॥३२९५॥३९१३॥

राग सारंग

ब्रज मैं दोउ बिधि हानि भई।
इक हरि गए कलपतरु, दूजे उपजी बिरह जई॥
जैसैं हाटक लै रसाइनी, पारहिं आगि दई।
जब मन लग्यौ दृष्टि तब बोल्यौ, सीसी फूटि गई॥
जैसैं बिनु मल्लाह सुंदरी, एक नाउ चढ़ई।
बूड़त देह थाह नहिं चितवत, मिलनहु पति न दई॥
लरि मरि झगरि भूमि कछु पाई, जस अपजस बितई।
अब लै सूर कहनि है उपजी, सब कररी करई॥
॥३२९६॥३९१४॥

पावस-प्रसंग *राग मलार*

ब्रज तैं पावस पै न टरी।
सिसिर बसंत सरद गत सजनी, बीती औधि करी॥

उनै उनै घन बरसत चख, उर सरिता सलिल भरी।
कुमकुम कज्जल कीच बहै जनु, कुच जुग पारि परी॥
तामैं प्रगट विषम ग्रीषम रितु, तिहिं अति ताप धरी।
सूरदास-प्रभु कुमुद-बंधु बिनु, बिरहा तरनि जरीं॥
॥३२९७॥३९१५॥

ये दिन रूसिबे के नाहीं।
कारी घटा पौन झकझोरै, लता तरुन लपटाहीं॥
दादुर मोर चकोर मधुप पिक बोलत अंमृत बानी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, बैरिनि रितु नियरानी॥
॥३२९८॥३९१६॥

राग मलार

अब बरषा कौ आगम आयौ।
ऐसे निठुर भए नँदनंदन, संदेसौ न पठायौ॥
बादर घोरि उठे चहुँ दिसि तैं, जलधर गरजि सुनायौ।
एकै सूल रही मेरैं जिय बहुरि नहीं ब्रज छायौ॥
दादुर मोर पपीहा बोलत, कोकिल सब्द सुनायौ।
सूरदास के प्रभु सौं कहियौ, नैननि है झर लायौ॥
॥३२९९॥३९१७॥

राग मलार

सँदेसनि मधुबन कूप भरे।
अपने तौ पठवत नहिं मोहन, हमरे फिरि न फिरे।
जिते पथिक पठए मधुबन कौं, बहुरि न सोध करे॥
कै वै स्याम सिखाइ प्रबोधे, कै कहुँ बीच मरे॥
कागद गरे मेघ, मसि खूटी, सर दव लागि जरे।
सेवक सूर लिखन कौ आँधौ, पलक कपाट अरे॥
॥३३०१॥३९१८॥

राग मलार

माई री ये मेघ गाजैं।
मनहु काम कोपि चढ़्यौ, कोलाहल कटक चढ़्यौ, बरहा पिक
चातक जय जय निशान बाजैं॥

दामिन करवार करनि, कंपत सब गात डरनि जलधर समेत सेन इंद्र धनुप साजैं।
अबलनि अकेली करि, अपनी कुल-नीति बिसरि, अवधि संग सकल सूर भहराइ भाजैं ॥३३०१॥३९१९॥

राग मलार

ब्रज पर बदरा आए गाजन ।
मधुबन कोप टए सुनि सजनी, फौज मदन लग्यौ साजन ॥
ग्रीवा रंध्र नैन चातक जल, पिक मुख बाजे बाजन ।
चहुँदिसि तैं तन बिरहा घेर्‌यौ, कैसैं पावति भाजन ॥
कहियत हुते स्याम पर पीरक, आए सकट काजन ।
सूरदास श्रीपति की महिमा, मथुरा लागे राजन ॥
॥३३०२॥३९२०॥

राग मलार

देखियत चहुँ दिसि तैं घन घोरे ।
मानौ मत्त मदन के हथियनि, बलि करि बंधन तोरे ॥
स्याम सुभग तन चुवत गंडमद, बरषत थोरे थोरे ।
रुकत न पवन महावतहू पै, मुरत न अंकुस मोरे ॥
मनौ निकसि बग-पंक्ति दंत, उर अवधि-सरोवर फोरे ।
बिनु बेला बल निकसि नयन जल, कुच कचुकि बँद बोरे ॥
तब तिहिं समय आनि ऐरावति, ब्रजपति सौं कर जोरे ।
अब सुनि सूर कान्ह-केहरि बिनु, गरत गात जैसैं ओरे ॥
॥३३०३॥३९२१॥

राग मलार

ब्रज पर सजि पावस दल आयौ ।
धुरवा धुध उठी दसहूँ दिसि, गरज निसान बजायौ ॥
चातक, मोर, इतर पैदर गन, करत अवाजैं कोयल ।
स्याम-घटा गज, असनि बाजि रथ, बिच बगपाँति सँजोयल ॥
दामिन कर करवाल, बूँद सर, इहिं बिधि साजे सैन ।
निधरक भयौ चल्यौ ब्रज आवत, अग्र फौजपति मैन ॥

हम अबला जानियै तुमहिं बल, कहौ कौन बिधि कीजै।
सूर स्याम अबकैं इहिं अवसर, आनि राखि ब्रज लीजै॥
॥३३०४॥३९२२॥

राग मलार

सखी री पावस सैन पलान्यौ।
पायौ बीच इंद्र अभिमानी, सूनौ गोकुल जान्यौ॥
दसहूँ दिशा सधूम देखियत, कंपति है अति देह।
मनौ चलत चतुरंग चमू, नभ धाढ़ी है खुर खेह॥
बोलत मोर सैल-द्रुम चढ़ि चढ़ि, बग जु उड़त तरु डारैं।
मनु सहिया फरहरा फिरावत, भाजन कहत पुकारैं॥
गरजत गगन गयंद गुंजरत, दल दादुर दलकार।
सूर स्याम अपने या ब्रज कौ, लागत क्यौं न गुहार॥
॥३३०५॥३९२३॥

राग मलार

बदरिया बधन बिरहिनी आई।
मारू मोर ररत चातक पिक, चढि नग टेर सुनाई॥
दामिनि कर करवाल गहैं, अरु सायक बूँद घनाई।
मनमथ फौज जोरि चहुँ दिसि तैं ब्रज, सन्मुख ह्वै धाई॥
नदी सुभर सँदेस क्यौं पठऊँ, घाट त्रिननहूँ छाई।
इक हम दीन हुतीं कान्हर बिनु, औ इनि गरज सुनाई॥
सूनौ घोष बैर तकि हमसौं, इंद्र निसान बजाई।
सूरदास-प्रभु मिलहु कृपा करि, होति हमारी धाई॥
॥३३०६॥३९२४॥

राग बिहागरौ

स्याम बिना उनए ये बदरा।
आजु स्याम सपने मैं देखे, भरि आए नैन ढरकि गयौ कजरा॥
चंचल चपल अतिहिं चित चोरै, निसि जागत मोकौं भयौ पगरा।
सूरदास-प्रभु कबहिं मिलौगे, तजि गए गोकुल मिटि गयौ झगरा॥
॥३३०७॥३९२५॥

राग मलार

बरु ए बदरौ बरषन आए।
अपनी अवधि जानि नँदनंदन, गरजि गगन घन छाए॥
कहियत हैं सुर-लोक बसत सखि, सेवक सदा पराए।
चातक पिक की पीर जानि कै, तेउ तहाँ तैं धाए॥
द्रुम किए हरित हरषि बेली मिलीं, दादुर मृतक जिवाए।
साजे निबिड़ नीड़ तृन सँचि सँचि, पछिनहूँ मन भाए॥
समुझतिं नहीं चूक सखि अपनी, बहुतै दिन हरि लाए।
सूरदास-प्रभु रसिक सिरोमनि, मधुबन बसि बिसराए॥
॥३३०८॥३९२६॥

राग मलार

बहुरि हरि आवहिंगे किहि काम।
रितु बसंत अरु ग्रीषम बीते, बादर आए स्याम॥
छिन मंदिर छिन द्वारैं ठाढी, यौं सूखति हैं घाम।
तारे गनत गगन के सजनी, बीतैं चारौ जाम॥
औरौ कथा सबै बिसराई, लेत तुम्हारौ नाम।
सूर स्याम ता दिन तैं बिछुरे, अस्थि रहे कै चाम।
॥३३०९॥३९२७॥

राग मलार

किधौं घन गरजत नहिं उन देसनि।
किधौं हरि हरषि इंद्र हठि बरजे, दादुर खाए सेषनि।
किधौं उहिं देस बगनि मग छाँडे, घरनि न बूँद प्रवेसनि।
चातक मोर कोकिला उहिं बन, बधिकनि बधे बिसेषनि॥
किधौं उहिं देस बाल नहिं झूलतिं गावतिं सखि न सुदेसनि।
सूरदास-प्रभु पथिक न चलहीं कासौं कहौं सँदेसनि॥
॥३३१०॥३९२८॥

राग मलार

बटा मधुबन पर बरषे जाइ।
हरि घनस्याम बिना सब बिरहिनि बेलि गई कुम्हिलाइ॥

उग्र तेज जनु भानु तपत ससि, व्याकुल मन अकुलाइ।
करैं कहा उपचार सखीरी, नैंकु न तपनि बुझाइ॥
कमल नयन की सुरति जु आवत, तबहिं उठति तन ताइ।
सूर सुमिरि गुन स्याम सुंदर के सखी रहीं मुरझाइ॥
॥३३११॥३९२९॥

राग मलार

देखौ माई स्याम सुरति अब आवै।
दादुर मोर कोकिला बोलैं, पावस अगम जनावै॥
देखि घटा घन चाप दामिनी, मदन सिँगार बनावै।
बिरहिन देखि अनाथ, नाथ बिनु चढ़ि-चढ़ि ब्रज पै आवै॥
कासौं कहौं जाइ को हरि पै, यह संदेस सुनावै।
सूरदास-प्रभु मिलौ कृपा करि, ब्रज-बनिता सचुपावै॥
॥३३१२॥३९३०॥

राग मलार

तुम्हारौ गोकुल हो ब्रजनाथ।
घेर्‌यौ है अरि मन्मथ लै, चतुरंगिनि सेना साथ॥
गरजत अति गंभीर गिरा मनु, मयगल मत्त अपार।
धुरवा धूरि उड़त रथ पायक, घोरनि की खुरतार॥
चपला चमचमाति आयुध, बग पंगति धुजा अकार।
परत निसाननि घाउ तमकि घन, तरपत जिहिं जिहिं वार॥
मारु मार करत भट दादुर, पहिरे बिबिध सनाह।
हरे कवच उघरे दिखियत है, बरहनि घाली धाह॥
कारे पट धारे चातक पिक, कहत भाजि जनि जाहु।
उनरि उनरि वै परत आनि कै, जोधा परम उछाहु॥
अति घायल धीरज दुबाहियाँ, तेऊ दुरजन दालि।
टूक टूक ह्वै सुभट मनोरथ, आने झोली घालि॥
रह्यौ अहंकार सुखेत सूरमा, सकति रही उर सालि।
हबकत हाथ परैं नाहीं गहि, रहे नाटसल भालि॥
निसि बासर कैं बिग्रह आयौ, अति संकेतहिं गाउँ।
कापै करौं पुकार नाथ अब, नाहिन तुम बिनु ठाउँ॥

नदकुमार स्याम घन सुंदर, कमलनयन सुख धाम।
पठवहुँ बेगि गुहार लगावन, सूरदास जिहिं नाम॥
॥३३१३॥३९३१॥

राग मलार

ऐसौ जो पावस रितु प्रथम सुरति करि माधौ जू आवहिं।
बरन बरन अनेक जलधर अति मनोहर बेष॥
तिहिं समय सखि गगन सोभा, सबहिं तैं सुबिसेष।
उड़त खग बग बृंद राजत, रटत चातक मोर॥
बहुत बिधि चित रुचि बढावत, दामिनी घन घोर।
धरनि तन तृन रोम पुलकित, पिय समागम जानि॥
द्रुमनि बर बल्ली बियोगिनि, मिलति पति पहिचानि।
हंस, सुक पिक सारिका, अलि गुंज नाना नाद।
मुदित मंडल-मेघ बरषत, गत बिहग बिषाद॥
कुटज, कुंद, कदंब कोबिद, करनिकार सुकंज।
केतकी, करबीर, बेला, बिमल बहु बिधि मंजु॥
सघन दल, कलिका अलंकृत, सुमन सुकृत सुबास।
निकट नैन निहारि माधौ, मन मिलन की आस॥
मनुज, मृग, पसु पच्छि परिमित, और अमित जु नाम।
सुमिरि देस, बिदेस परिहरि, सकल आवहिं धाम॥
यहै चित्त उपाय सोचतिं, कछु न परत बिचार।
कौन हित ब्रज बास बिसर्यौ, निकट नंद कुमार॥
परम सुहृद सुजान सुंदर, ललित गति मृदु हास।
चारु लोल कपोल कुंडल, डोल ललित प्रकास॥
बेनु कर बहु बिधि बजावत, गोप सिसु चहुं पास।
सुदिन कब जब आँखि देखैं, बहुरि बाल बिलास॥
बार बार सु बिरहिनी अति, बिरह ब्याकुल होति।
बात बेग बिलोल जैसैं, दीन दीपक जोति॥
सुनि बिलाप कृपालु सूरजदास करि परतीति।
दरस दै दुख दूरि कीजै, प्रेम की यह रीति॥
॥३३१४॥३९३२॥

राग मलार

आजु घनस्याम की अनुहारि।
आए उनइ साँवरे सजनी, देखि रूप की आरि॥
इंद्र धनुष मनु पीत वसन छवि, दामिनि दसन विचारि।
जनु बगपाँति माल मोतिनि की, चितवत चित्तनिहारि॥
गरजत गगन गिरा गोविंद मनु, सुनत नयन भरे वारि।
सूरदास गुन सुमिरि स्याम के, विकल भईं ब्रजनारि॥
॥३३१५॥३९३३॥

राग मलार

कैसे कैं भरि हैं री दिन सावन के।
हरित भूमि भरे सलिल सरोवर, मिटे मग मोहन आवन के॥
दादुर मोर सोर चातक पिक, सूही, निसा सिरावन के।
गरज चहूँ घन घुमड़ि दामिनी, मदन धनुष धरि धावन के॥
पहिरि कुसुम सारी कंचुकि तन, झुंडनि झुंडनि गावन के।
सूरदास-प्रभु दुसह घटत क्यौं, सोक त्रिगुन सिर रावन के॥
॥३३१६॥३९३४॥

राग मलार

वरषा रितु आई, हरि न मिले माई।
गगन गरजि घन दइ, दामिनी दिखाई॥
मोरन वन बुलाइ, दादुरहुँ जगाई।
पपिहा पुकार सखि, सुनतहिं विकलाई॥
इंद्र धनुष सायक, लै, छाँड़्यौ रिसाई।
विषम बूँद तातैं री, सहि नहिं जाई॥
पथिक लिखाइ पाति, वेगिहिं पहुँचाई।
सूर विथा जानैं तौ, आवैं जदुराई॥
॥३३१७॥३९३५॥

घन गरजत माधौ विनु माई।
इंद्र कोप करि पहिलें दाव लियौ, पावस रितु ब्रज खबरि जनाई॥
पिय पिय सब्द चातकहु बोल्यौ, मधुर बचन कोकिला सुनाई।
हरि सँदेस सुनि हमहिं निदरि पुनि, चमकि दामिनी देत दिखाई॥

बाल चरित्र भावते जी के, सुमिरि स्याम की सुरति जु आई।
सूरदास प्रभु बेगि मिलौ किन, बिरह सूल कैसैं करि जाई॥
॥३३१८॥३९३६॥

राग मलार

हरि सुत पावस प्रगट भयौ री।
मारुत सुत बंधू-पितु-प्रोहित, ता प्रतिपालन छाँड़ि गयौ री॥
हर-सुत बाहन-असन-सनेही, सो लागत अँग अनल मयो री।
मृगमद-स्वाद मोद नहिं भावत, दधि-सुत भानु समान भयौ री॥
वारिज-सुत-पति क्रोध कियौ सखि, मेटि सकार दकार ढयौ री।
सूरदास बिनु सिंधु-सुता-पति, कोपि समर कर चाप लयौ री॥
॥३३१९॥३९३७॥

राग मलार

ऐसे बादर ता दिन आए, जा दिन स्याम गोवर्धन धार्‌यौ।
गरजि-गरजि घन बरषन लागे, मानो सुरपति बैर सँभार्‌यौ॥
सबै सँजोग जुरे हैं सजनी, चाहत हठ करि घोष उजार्‌यौ।
अब को सात दिवस राखैगौ, दूरि गयौ ब्रज कौ रखवारौ॥
जब बलराम हुते या ब्रज मैं, काहू देव न ऐसो डार्‌यौ।
अब यह भूमि भयानक लागै, बिधना बहुरि कंस अवतार्‌यौ॥
अब वह सुरति करै को हमरी, या ब्रज मैं कोउ नाहिं हमारौ।
सूरदास अति बिकल बिरहिनी, गोपिनि पछिलौ प्रेम सँभार्‌यौ॥
॥३३२०॥३९३८॥

राग मलार

जो पै नंद-सुवन ब्रज होते।
तौ पै नृप पावस सुनि बिनती, कहत न डरतीं तोतैं॥
अब हम अबला जानि स्याम बिन, हय गय रथ वर जोते।
हम पर गरजि-गरजि घन पठवत, मदन मनावत पोते॥
जो पै गोकुल कर लागत है, लेत न सकल सबोते।
सूरदास-प्रभु सैल-धरन बिनु, कहा सिराइ अब मोतें॥
॥३३२१॥३९३९॥

राग मलार

अब ब्रज नाहिँन नंद-कुमार ।
इहै जानि अजान मघवा, करी गोकुल आर ॥
नैन जलद, निमेष दामिनि, आँसु बरषत धार ।
दरस रवि-ससि दुरयौ धीरज, स्वास पवन अकार ॥
उरज गिरि मैं भरत भारी, असम काम अपार ।
गरज विकल वियोग बानी, रहति अवधि अधार ॥
पथिक हरि सौं जाइ मथुरा, कहौ बात बिचार ।
सत्रु सेन सुधाम घेर्यौ, सूर लगौ गुहार ॥
॥३३२२॥३९४०॥

राग मलार

मानौ माई सबनि यहै है भावत ।
अब उहिँ देस स्याम सुंदर कहँ कोउ न समौ सुनावत ॥
धरत न बन नव पत्र फूल, फल, पिक बसंत नहिं गावत ।
मुदित न सर सरोज अलि गुंजत, पवन पराग उड़ावत ॥
पावस बिबिध बरन बर बादर, उमड़ि न अंबर छावत ।
दादुर मोर कोकिला चातक, बोलत बचन दुरावत ॥
ह्याँ ही प्रगट निरंतर निसि दिन, हठ करि बिरह बढ़ावत ।
सूर स्याम पर-पीर न जानत, कत सरज्ञ कहावत ॥
॥३३२३॥३९४१॥

राग मलार

सखि कोउ नई बात सुनि आई ।
यह ब्रजभूमि सकल सुरपति सौं, मदन मिलिक करि पाई ॥
घन धावन बगपाँति पटोसिर, बैरख तड़ित सुहाई ।
बोलत पिक चातक ऊँचे सुर, फेरत मनौ दुहाई ॥
दादुर मोर चकोर मधुप सुक, सुमन समीर सुहाई ।
चाहत बास कियौ बृंदावन, बिधि सौं कछु न बसाई ॥
साँव न चाँपि सक्यौ तब कोऊ, हुते बाल कुँवर कन्हाई ।
सूरदास गिरिधर बिनु गोकुल, ये करिहैं ठकुराई ॥
॥३३२४॥३९४२॥

राग मलार

बहुरि बन बोलन लागे मोर
करत सँभार नंद-नंदन की, सुनि बादर की घोर ॥
जिनके पिय परदेस सिधारे, सो तिय परीं निठोर।
मोहिं बहुत दुख हरि बिछुरे कौ, रहत बिरह कौ जोर ॥
चातक पिक दादुर चकोर ये, सबै मिले हैं चोर।
सूरदास-प्रभु बेगि न मिलहू, जनम परत है ओर ॥
॥३३२५॥३९४३॥

राग मलार

(इहिं बन) मोर बहीं ए काम बान।
बिरह खेत, धनु पुहुम, भृंग गुन, करि लतरैया रिपु समान ॥
लयौ घेरि मन मृग चहुँ दिसि तैं, अचुक अहेरी नहिं अज्ञान।
पुहुप सेज घन रचित जुगल बन, क्रीडत कैसो बन निधान ॥
महा मुदित मन मदन प्रेम रस, उमँग भरे मैमंत जान।
इहाँ अवस्था मिलैं सूर-प्रभु नाना गद दै जीव दान ॥
॥३३२६॥३९४४॥

राग मलार

आजु बन मोरनि गायौ आइ।
जब तैं स्रवन पर्‌यौ सुनि सजनी, तब तैं रह्यौ न जाइ ॥
ब्रज तैं बिछुरे मुरली मनोहर, मनहुँ ब्याल गयौ खाइ।
औषद बैद गरुडियौ हरि नहिं, मानै मंत्र दुहाइ ॥
चातक पिक दुख देत रैनि दिन, पिय पिय बचन सुनाइ।
सूरदास हम तौ पै जीवहिं, जौ मिलिहैं हरि आइ ॥
॥३३२७॥३९४५॥

राग मलार

सिखिन सिखर चढि टेर सुनायौ।
बिरहिन सावधान ह्वै रहियौ, सजि पावस दल आयौ ॥
नव बादर बानैत, पवन ताजी चढि, चुटक दिखायौ।
चमकत बीजु सेल्ह कर मंडित, गरज निसान बजायौ ॥
चातक, पिक, झिल्ली गन दादुर, सब मिलि मारू गायौ।
मदन सुभट कर बान पच लै, ब्रज सन्मुख ह्वै धायौ ॥

जानि विदेस नंदनंदन कौं, अबलनि त्रास दिखायौ।
सूर स्याम पहिले गुन सुमिरैं, प्रान जात बिरमायौ॥
॥३३२८॥३९४६॥

राग मलार

हमारे माई मोरवा बैर परे।
घन गरजत बरज्यौ नहिं मानत, त्यौं त्यौं रटत खरे॥
करि करि प्रगट पंख हरि इनके, लै लै सीस धरे।
याही तैं न बदत बिरहिनि कौं, मोहन ढीठ करे॥
को जानै काहे तैं सजनी, हमसौं रहत अरे।
सूरदास परदेस बसे हरि, ये बन तैं न टरे॥
॥३३२९॥३९४७॥

राग मलार

कोउ माई बरजै री इन मोरनि।
टेरत बिरह रह्यौ न परै छिन, सुनि दुख होत करोरनि॥
चमकत चपल चहूँ दिसि दामिनि, अंबर घन की घोरनि।
बरषत बूँद बान सम लागत, क्यौं जीवैं इन जोरनि॥
चंद किरनि नैननि भरि पीवत, नाहिंन तृप्ति चकोरनि।
सूरदास तौ ही पै जीवहिं, मिलिहैं नंद किसोरनि॥
॥३३३०॥३९४८॥

राग मलार

रहु रहु रे बिहंग बनवासी।
तेरैं बोलत रजनी बाढ़ति, स्रवननि सुनत नींदहू नासी॥
कहा कहौं कोउ मानत नाहीं, इक चंदन अरु चंद तरासी।
सूरदास-प्रभु जौ न मिलैंगे, तौ अब लैहौं करवट कासी॥
॥३३३१॥३९४९॥

राग मलार

बहुरि पपीहा बोल्यौ माई।
नींद गई चिंता चित बाढ़ी, सुरति स्याम की आई॥
सावन मास मेघ की बरषा, हौं उठि आँगन आई।
चहुँदिसि गगन दामिनी कौंधति, तिहिं जिय अधिक डराई॥

काहूँ राग मलार अलाप्यौ, मुरलि मधुर सुर गाई।
सूरदास बिरहिनि भइ व्याकुल, धरनि परी मुरझाई॥
॥३३३२॥३९५०

राग मल

सारँग स्यामहिं सुरति कराइ।
पौढ़े होहिं जहाँ नँदनंदन, ऊँचे टेरि सुनाइ॥
गई ग्रीषम पावस रितु आई, सब काहूँ चित चाइ।
तुम बिनु ब्रजबासी यौं डोलैं, ज्यौं करिया बिन नाइँ॥
तुम्हरौ कह्यौ मानिहैं मोहन, चरण पकरि लै आइ।
अब की बेर सूर के प्रभु कौं, नैननि आनि दिखाइ॥
॥३३३३॥३९५१

राग मला

सखी री चातक मोहिं जियावत।
जैसैंहि रैनि रटति हौं पिय पिय, तैसैंहि वह पुनि गावत।
अतिहिं सुकंठ, दाह प्रीतम कैं, तारू जीभ न लावत।
आपुन पियत सुधा-रस अमृत, बोलि बिरहिनी प्यावत॥
यह पंछी जु सहाइ न होतौ, प्रान महा दुख पावत।
जीवन सुफल सूर ताही कौ, काज पराए आवत॥
॥३३३४॥३९५२

राग सारं

चातक न होइ कोउ बिरहिनि नारि।
अजहूँ पिय पिय रजनि सुरति करि, झूठैं ही मुख माँगत बारि॥
अति कृस गात देखि सखि याकौ, अह-निसि बानी रटत पुकारि।
देखौ प्रीति बापुरे पसु की, आन जनम मानत नहिं हारि॥
अब पति बिनु ऐसौ लागत है, ज्यौं सरवर सोभित बिनु बारि।
त्यौं ही सूर जानियै गोपी, जौ न कृपा करि मिलहु मुरारि॥
॥३३३५॥३९५३॥

राग आसावरी

अब मेरी को बोलै साखि।
कैसैं हरि के संग सिधारैं, अब लौं यह तन राखि॥

प्रान-उदान फिरैं वन-वीथिनि अवलोकनि अभिलाष।
रूप रंग रस-रासि परान्यौ, वचन न आवै भाषि॥
सूर सजीवन मूरि मुकुंदहिं, लै आई ही आँखि।
अब सोइ अंजन देति सुरुचि करि, जिहिं जीजै मुख चाखि॥
॥३३३६॥३९५४॥

राग मलार

वहुत दिन जीवौ पपिहा प्यारौ।
वासर रैनि नाम लै वोलत, भयौ विरह जुर कारौ॥
आपु दुखित पर दुखित जानि जिय, चातक नाम तुम्हारौ।
देख्यौ सकल विचारि सखी जिय, विछुरन कौ दुख न्यारौ॥
जाहि लगै सोई पै जानै, प्रेम वान अनियारौ।
सूरदास-प्रभु स्वाति बूँद लगि, तज्यौ सिंधु करि खारौ॥
॥३३३७॥३९५५॥

राग मलार

(हौं तौ मोहन के) विरह जरी रे तू कत जारत।
रे पापी तू पंखि पपीहा पिय पिय करि अधराति पुकारत॥
करी न कछु करतूति सुभट की, मूठि मृतक अवलनि सर मारत।
रे सठ तू जु सतावत औरनि जानत, नहिं अपने जिय आरत॥
सब जग सुखी दुखी तू जल विनु, तऊ न उर की व्यथा विचारत।
सूर स्याम विनु ब्रज पर वोलत, काहैं अगिलौ जनम विगारत॥
॥३३३८॥३९५६॥

राग नट

जौ तू नैंकहूँ उड़ि जाहि।
कहा निसि वासर वकत घन, विरहिनी तन चाहि॥
विविध वचन सुदेस वानी, इहाँ रिझवत काहि।
पति विमुख पिक परुष पसु लौं इतौ कहा रिसाहि॥
नाहिनैं कोउ सुनत समुझत, विकल विरह-विथाहि।
राखि लै तनु वा अवधि लौं, मदन मुख जनि खाहि॥
तुहूँ तौ तन दग्ध देखियत, वहुरि कह समुझाहि।
करि कृपा ब्रज सूर-प्रभु विनु, मौन मोहिं विसाहि॥
॥३३३९॥३९५७॥

राग सारंग

कोकिल हरि को बोल सुनाउ।
मधुबन तैं उपहारि स्याम कौं, इहिं ब्रज कौं लै आउ॥
जा जस कारन देत सयाने, तन मन धन सब साज।
सुजस बिकात बचन के बदलैं, क्यौं न बिसाहतु आज॥
कीजै कछु उपकार परायौ, इहै सयानौ काज॥
सूरदास पुनि कहँ यह अवसर, बिनु बसंत रितुराज॥
॥३३४०॥३९५८॥

राग सारंग

सुनि री सखी समुझि सिख मेरी।
जहँ बसत जदुनाथ जगतमनि, बारक तहाँ आउ दै फेरी॥
तू कोकिला कुलीन कुसल मति, जानति बिथा बिरहिनी केरी।
उपबन बैसि बोलि बर बानी, बचन सुनाइ हमहिं करि चेरी॥
कहियौ प्रगट सुनाइ स्याम सौं, अबला आनि अनँग अरि घेरी।
तो सी नहीं और उपकारिनि, यह बसुधा सब बुधि करि हेरी॥
प्राननि के बदलैं न पाइयतु, सैंत बिकाइ सुजस की ढेरी।
ब्रज लै आउ सूर के प्रभु कौं, गाऊँगी कल कीरति तेरी॥
॥३३४१॥३९५९॥

राग मलार

अब यह बरषौ बीति गई।
जनि सोचहि, सुख मानि सयानी, भली रितु सरद भई॥
फूले सरोज सरोवर सुंदर, नव बिधि नलिनि नई।
उदित चारु चंद्रिका किरन, उर अंतर अमृत-मई॥
घटी घटा अभिमान मोह मद, तमिता तेज हई।
सरिता सजम स्वच्छ सलिल सब, फाटी काम कई॥
यहै सरद संदेस सूर सुनि, करुना कहि पठई।
यह सुनि सखी सयानी आईं, हरि-रति अवधि हई॥
॥३३४२॥३९६०॥

राग मारू

सरद समै हू स्याम न आए।
को जानै काहे तैं सजनी, किहिं बैरिनि बिरमाए॥

अमल अकास कास कुसुमित छिति, लच्छन स्वच्छ जनाए।
सर सरिता सागर जल-उज्ज्वल अति कुल कमल सुहाए॥
अहि मयंक, मकरंद कंज अलि, दाहक गरल जिवाए।
प्रीतम रंग संग मिलि सुंदरि, रचि सचि सींचि सिराए॥
सूनी सेज तुषार जमत चिर, बिरह सिंधु उपजाए।
अब गई आस सूर मिलिवे की, भए ब्रजनाथ पराए॥
॥३३४३॥३९६१॥

गोविंद बिनु कौन हरै नैननि की जरनि।
सरद निसा अनल भई, चंद भयौ तरनि॥
तन मैं सताप भयौ, दुऱ्यौ अनंद घरनि।
प्रेम पुलक बार बार, अँसुवन की ढरनि॥
वै दिन जौ सुरति करौं, पाइनि की परनि।
सूर स्याम क्यौं बिसारी, लीला बन करनि॥
॥३३४४॥३९६२॥

राग देसकार

सबै रितु औरै लागति आहि।
सुनि सखि वा ब्रजराज बिना सब, फीकौ लागत चाहि॥
वै घन देखि नैन बरषत हैं, पावस गऐ सिरात।
सरद सनेह मँचै सरिता उर, मारग ह्वै जल जात॥
हिम हिमकर देखे उपजत अति, निसा रहति इहिं जोग।
सिसिर बिकल काँपत जु कमल उर, सुमिरि स्याम रस भोग॥
निरखि बसंत बिरह बेली तन, वे सुख दुख ह्वै फूलत।
ग्रीषम काम निमिष छाँड़त नहिं, देह दसा सब भूलत॥
षट् रितु ह्वै इक ठाम कियौ तनु, उठे त्रिदोष जुरे।
सूर अवधि उपचार आजु लौं, राखे प्रान भुरे॥
॥३३४५॥३९६३॥

राग नट

मैं सब लिखि सोभा जु बनाई।
सजल जलद तन, बसन कनक रुचि, उर बहु दाम सुराई॥

उन्नत कँध, कटि खनी, विपद भुज, अंग अंग सुखदाई।
सुभग कपोल नासिका की छवि, अलक हिलत दुति पाई॥
जानति ही यह लोल लेख करि, ऐसैं हि दिन विरमाई।
सूरदास मृदु वचन स्रवन कौं, अति आतुर अकुलाई॥
॥३३४६॥३९६४॥

राग आसावरी

इक दिन मुरली स्याम बजाई।
मोहे सुर नर और सकल मुनि, उने बदरिया आई॥
जमुना नीर प्रवाह थकित भयो, चलै नहीं जु चलाई।
गाइनि के मुख दाँतनि तृन रहे, बच्छ न छीर पिवाई॥
द्रुम बेली अनुराग पुलकि तनु, ससि थकि निसि न घटाई।
सूरदास प्रभु मिलिबैं कारन चलीं सखी सुधि पाई॥
॥३३४७॥३९६५॥

मुरली कौन बजावै आज।
वै अक्रूर क्रूर करनी करि, लै जु गए ब्रजराज॥
कस केसि मुष्टिक संहार्‍यो, कियौ सुरनि कौ काज।
उग्रसेन राजा करि थापे, सबहिन के सिरताज॥
कृष्नहिं छाँडि नंद-गृह आए, क्यौंऽब जिऐं उन बाज।
सूरज-प्रभु विष मूरि खाइहैं, यहै हमारो साज॥
॥३३४८॥३९६६॥

राग सारंग

हरि बिनु मुरली कौन बजावै।
सुंदर स्याम कमल लोचन बिनु, को मधुरे सुर गावै॥
ये दोउ स्रवन सुधा-रस पोषै को ब्रज फेरि बसावै।
ऐसौ निठुर कियौ हरि जू मन, पथी पथ न आवै॥
छाँडी सुरति नंद-जसुमति की, हमरी कौन चलावै।
सूर स्याम कैं प्रीति पाछिली, को अब सुरति करावै॥
॥३३४९॥३९६७॥

माई बहुरि न बाजी बैन।
को ऐहै मेरे खरिक दुहावन, गाइनि, रहीं फिरि ऐन॥

सूनौ घर सूनी सुख सेज्या, जहाँ करत सुख सैन।
सूने ग्वाल बाल सब गोपी, नहीं कहूँ उन चैन॥
ब्रज की मनि, गोकुल कौ नायक, कियो मधुपुरी गैन।
सूरदास प्रभु के दरसन बिनु तृप्ति न मानत नैन॥
॥३३५०॥३९६८॥

चंद्रोपालंभ *राग कान्हरौ*

छूटि गई ससि सीतलताई।
मनु मोहिं जारि भसम कियौ चाहत, साजत सोइ कलंक तनु काई॥
याही तैं स्याम अकास देखियत, मानौ धूम रह्यौ लपटाई।
ता ऊपर दव देति किरनि उर, उडुगन कनी उचटि इत आई॥
राहु केतु दोउ जोरि एक करि, नींद समै जुरि आवहिं माई।
ग्रसे तैं न पचि जात तापमर्य, कहत सूर बिरहिनि दुखदाई॥
॥३३५१॥३९६९॥

राग केदारौ

यह ससि सीतल काहैं कहियत।
मीनकेत अंबुज आनंदित, तातैं ता हित लहियत॥
एक कलंक मिट्यौ नहिं अजहूँ, मनौ दूसरौ चहियत।
याही दुख तैं घटत बढ़त नित, निसा नींद रिपु गहियत॥
बिरहिनि अरु कमलिनि त्रासत कहुँ, अपकारी रथ नहियत।
सूरदास प्रभु मधुबन गौने, तौ इतनौ दुख सहियत॥
॥३३५२॥३९७०॥

राग केदारौ

सखि करि धनु लै चंदहिं मारि।
तब तो पै कछुवै न सिरैहै, जब अति जुर जैहै तनु जारि॥
उठि हरुवाइ जाइ मंदिर चढ़ि, ससि सनमुख दरपन बिस्तारि।
ऐसी भाँति बुलाइ मुकुर मैं, अति बल खंड खंड करि डारि॥
सोई अवधि निकट आई है, चलत तोहिं जो दई मुरारि।
सूरदास बिरहिनि यौं तलफति, जैसैं मीन दीन बिनु बारि॥
॥३३५३॥३९७१॥

राग सारंग

हर कौ तिलक हरि बिनु दहत।
वै कहियत उडुराज अमृत मय, तजि सुभाव सो मोहिं निबहत ॥
कत रथ थकित भयौ पच्छिम दिसि, राहु गहनि लौं मोहिं गहत।
छपौं न छीन होत सुनि सजनी, भूमि-भवन-रिपु कहाँ रहत ॥
सीतल सिधु जनम जा केरौ, तरनि तेज होइ कह धौं चहत।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु, प्रान तजति, यह नाहिं सहत ॥

॥३३५४॥३९७२॥

राग मारू

या बिनु होत कहा ह्याँ सूनौ।
लै किन प्रगट कियौ प्राची दिसि, बिरहिनि कौ दुख दूनौ ॥
सब निरदै सुर असुर सैल, सखि सायर सर्प समेत।
काहु न कृपा करी इतननि मैं, त्रिय तन बन दव देत ॥
धन्य कुहू, बरषा रितु, तमचुर, अरु कमलनि कौ हेत।
जुग जुग जीवै जरा बापुरी, मिलैं राहु अरु केत ॥
चितै चंद तन सुरति स्याम की, बिकल भई ब्रज-बाल।
सूरदास अजहूँ इहिं औसर, काहे न मिलत गुपाल ॥

॥३३५५॥३९७३॥

सिधु मथत काहैं बिधु काढौ।
गिरि अरु नाग असुर सुर मिलि कटि, गरजि-गरजि किन बाढौ ॥
टोटो हतौ रतन तेरह तौ, कियौ चौदहों पूरौ।
कला सौंपि दीन्ही अमरनि क्यौं, बिरहिनि पर भयौ सूरौ।
उपजत बैर जदपि काहू सौं, निकट आइ करि मारै ॥
रह नभ पर भूपर क्यौं चितकै उहहीं तैं अरि जारै ॥
दोष कहा सुनिकै बडवानल, असु जु बिष से भाई।
क्रोधी ईस सीस बैठाऱ्यौ, तातैं यह मति पाई ॥
मथुरा कौ प्रभु मोहन नागर, किए सगुन जग जातैं।
ताकी प्रिया सूर निसि बासर, सहति बिरह-दुख गातैं ॥

॥३३५६॥३९७४॥

राग मारू

दूरि करहि बीना कर धरिबौ ।
रथ थाक्यौ, मानौ मृग मोहे, नाहिँन होत चंद्र कौ ढरिबौ ॥
बीतै जाहि सोइ पै जानै, कठिन सु प्रेम पास कौ परिबौ ।
प्राननाथ संगहिँ तैं बिछुरे, रहत न नैन नीर कौ भरिबौ ॥
सीतल चंद अगिन सम लागत, कहिए धीर कौन बिधि धरिबौ ।
सूर सु कमलनयन के बिछुरैँ, झूठौ सब जतननि कौ करिबौ ॥
॥३३५७॥३९७५॥

राग केदारौ

बिधु बैरी सिर पर बसै, निसि नींद न परई ।
हरि सुरभानु सुभट बिना, इहिं को बस करई ?
गगन सिखर उतरै-चढ़ै, गर्बहिं जिय धरई ।
किरनि सकति भुज भरि हनै, उर तैं न निकरई ॥
उडु परिवार पिसुन-सभा, अपजसहिं न डरई ।
सोइ परपंच करै सखी, अबला ज्यौं बरई ॥
घटै-बढ़ै इहि पाप तैं, काप्लीना न टरई ।
सूरदास समुझावहीं, त्यौं त्यौं जिय खरई ॥
॥३३५८॥३९७६॥

राग मलार

कोउ माई बरजै री या चंदहिं ।
अति हीं क्रोध करत है हम पर, कुमुदिनि कुल आनदहिं ॥
कहाँ कहौं बरषा रवि तमचुर, कमल बलाहक कारे ।
चलत न चपल रहत थिर कै रथ, बिरहिनि के तन जारे ॥
निंदतिं सैल उदधि पन्नग कौं, श्रीपति कमठ कठोरहिं ।
देति असीस जरा देवी कौ, राहु केतु किन जोरहिं ॥
ज्यौं जल-हीन मीन तन तलफति, ऐसी गति ब्रजबालहिं ।
सूरदास अब आनि मिलावहु, मोहन मदन गुपालहिं ॥
॥३३५९॥३९७७॥

राग बिहागरौ

माई मोकौं चंद लग्यौ दुख दैन ।
कहँ वै स्याम कहाँ वै बतियाँ, कहँ वै सुख की रैन ॥

तारे गनत गनत हौं हारी, टपकन लागे नैन।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, बिरहिनि कौं नहिं चैन॥
॥३३६०॥३९७८॥

राग मलार

अब हरि कौनै सौं रति जोरी।
काके भए, कौन के ह्वै हैं बँधे कौन की डोरी॥
त्रेता जुग इक पतिनी व्रत कियौ, सोऊ बिलपत छोरी।
सूपनखा बन ब्याहन आई, नाक निपात बहोरी॥
पय पीवत जिन हती पूतना, स्रुति मरजादा फोरी।
बहुते प्रीति बढ़ाइ महरि सौं, छिनक माँझ दै तोरी॥
आरजपथ छिड़ाइ गोपिकनि, अपनैं स्वारथ भोरी।
सूरदास करि काज आपनौ, गुड़ी डोर ज्यौं तोरी॥
॥३३६१॥३९७९॥

राग मलार

अब या तनहिं राखि कह कीजै।
सुनि री सखी स्याम सुंदर बिनु, बाँटि बिषम बिष पीजै॥
कै गिरिऐ गिरि चढ़ि सुनि सजनी, सीस सकरहिं दीजै।
कै दहिऐ दारुन दावानल, जाइ जमुन धँसि लीजै॥
दुसह बियोग बिरह माधौ के, को दिन ही दिन छीजै।
सूर स्याम प्रीतम बिनु राधे, सोचि सोचि कर मींजै॥
॥३३६२॥३९८०॥

राग भोपाल

हमहिं कहा सखि तन के जतन कौ, अब या जमहिं मनोहर लीजै।
सकल त्रास सुख याही बपु लौं, छाँड़ि दिए तैं कछू न छीजै।
कुसुमित सेज कुसुम सर सर बर, हरि कै प्रान प्रानपति जीजै।
बिरह थाह जदुनाथ सबनि दै, निधरक सकल मनोरथ कीजै॥
सजनि कहति मन रीस रिसाए, नहिन समाइ प्रान तजि दीजै।
सूर सुपति सौं चरचि चतुरई तुम यह, जाइ बधाई लीजै॥
॥३३६३॥३९८१॥

राग केदारौ

जियहिं क्यौं कमलिनि काँदौ-हीन ।
जिनसौं प्रीति हुती री सजनी, तिनहुँ बिछुरि दुख दीन ॥
सागर कूल मीन तरफति है, हुलस होत जल जी न ।
स्याम बारि-बिधि लई बिरद तजि, हम जु मरतिं लव लीन ॥
ससि चंदन अरु अंभ छाँड़ि गुन, वपु जु दहत मिलि तीन ।
सूरदास-प्रभु मौन सबै व्रज, बिनु जत्री ज्यौं बीन ॥
॥३३६४॥३९८२॥

राग सारंग

वैसी सारँग करहिं लिए ।
सारंग कहत सुनत वै सारँग, सारँग मनहिं दिए ॥
सारँग थकित बैठि वह सारँग, सारँग बिकल हिए ।
सारँग धुकि, सारँग पर सारँग, सारँग क्रोध किए ॥
सारँग है भुज करनि बिराजत, सारँग रूप बिए ।
सूरदास मिलहीं वै सारँग, तौ पै सुफल जिए ॥
॥३३६५॥३९८३॥

राग मलार

ऐसौ सुनियत है द्वै माह ।
इतने मैं सब बात समझबी चतुर सिरोमनि नाह ॥
आवन कह्यौ बहुत दिन लाए, करी पाछली गाह ।
हमहिं छाँड़ि कुबिजा मन बाँध्यौ, कौन बेद की राह ॥
एतेहुँ पर संतोष न मानत, परे हमारे डाह ।
सूरदास प्रभु पूरौं दीजै, दिन दस मानी साह ॥
॥३३६६॥३९८४॥

राग सारंग

ऐसौ सुनियत है द्वै सावन ।
वहै सूल फिरि फिरि सालत जिय, स्याम कह्यौ हो आवन ॥
तब कत प्रीति करी अब त्यागी, अपनौ कीन्हौ पावन ।
इहिं दुख सखी निकसि तहँ जइयै, जहँ सुनियै कोउ नावँ न ॥

एकहिँ बेर तजी मधुकर ज्यौँ, लागे नेह बढ़ावन।
सूर सुरति क्यौं होति हमारी, लागी नीकी भावन॥
॥३३६७॥३९८५॥

राग कान्हरौ

काहे कौं पिय पियहिँ रटति हौ, पिय कौ प्रेम तेरौ प्रान हरैगौ।
काहे कौं लेति नयन जल भरि भरि, नैन भरे कैसैं सूल टरैगौ॥
काहे कौं स्वास उसास लेति हौ, बैरी बिरह कौ दवा बरैगौ।
छार सुगंध सेज पुहुपावलि, हार छुवैं, हिय हार जरैगौ॥
बदन दुराइ बैठि मंदिर मैं, बहुरि निसापति उदय करैगौ।
सूर सखी अपने इन नैननि, चंद चितै जनि चंद जरैगौ॥
॥३३६८॥३९८६॥

अब हरि निपटहिं निठुर भए।
फिरि नहिँ सुरति करी गोकुल की, जिहिँ दिन तैं मधुपुरी गए॥
कबहुँ न सुन्यौ सँदेस स्रवन हम, करत फिरत नित नेह नए।
ऐसी बधू चतुर वा पुर की, छल बल करि मोहन रिझए॥
हम जानतिँ हैँ स्याम हमारे, कहा भयौ जौ अनत रए।
सूरदास हरि कछू न लागैं, छंद बंद कुबिजा सिखए॥
॥३३६९॥३९८७॥

राग मलार

हौं कछु बोलति नाहीं लाजन।
एक दाउँ मारिबा पै मरिबौ, नंदनंदन के काजन॥
तजि ब्रज बाल आपनौ गोकुल, अब भाए सुख राजन।
कागद लिखि पतियौ नहिं पठवत, पायौ जिय कौ भाजन॥
जे गृह देखि परम सुख हातौ, बिनु गोपाल भय-भाजन।
कासौं कहौं सुनै को यह दुख, दूरि स्याम सौं साजन॥
कारी घटा देखि धुरवा जनु, बिरह लयौ कर ताजन।
सूर स्याम नागर बिनु अब यह, कान सहै सिर गाजन॥
॥३३७०॥३९८८॥

राग गौरी

वहु दिन ऐसोई हो री।
ह्वै जाते मेरे आँगन मोहन, यह विरियाँ सो री।
बाल दसा की प्रीति निरंतर, परी रहति ही ढोरी॥
राधा राधा नंद नँदन मुख, लागि रहति यह लौ री॥
वेनु पानि गहि मोहिं सिखावत, मोहन गावत गौरी।
सूरजदास स्याम सारँग तजि, वह सुख बहुरि न भौ री॥
॥३३७१॥३९८९॥

राग सारंग

गौरि पूत रिपु ता सुत आयुध, प्रीतम ताहि निनारे।
सिव विरंचि जाके दोउ वाहन, तिन हरे प्रान हमारे॥
मोहिं वरजत उठि गवन कियौ हठि, स्वाद लुब्ध रस आल।
कुंती नंद तात मुख जोवति, अरु वारति अति चाल॥
उगवै सूर छुटै पसु बंधन, तौ विरहिनि रति मानै।
इहिं विधि मिलैं सूर के स्वामी, चतुर होइ सो जानै॥
॥३३७२॥३९९०॥

राग गौरी

माधौ दरसन की अवसेरि।
लै जु गए मन संग आपने, वहुरि न दीन्हो फेरि॥
तुम्हरे विना भवन नहिं भावै, मन राखैं अवढेरि।
कमलिनि हतीं हेम ज्यौं हम अति, कासौं कहैं दुख टेरि॥
तुम विछुरे सुख कवहुँ न पायौ, सब जग देखति हेरि।
सूरदास सब नातौ व्रज कौ, आए नंद निवेरि॥
॥३३७३॥३९९१॥

राग आसावरी

सखि री विरह यह विपरीति।
विरहिनी व्रज वास क्यौं करैं, पावसहिं परतीति॥
नित्य नवला साजि नव सत, अरु सु भावक राखि।
नाहिं जानौं नृपति प्राननि-पति, कहा रुचि-आँखि॥

सूरदास गुपाल की सब, अवधि गई बितीति।
बहुरि कब देखिबौ वह मुख, यह तुम्हारी नीति॥
॥३३७४॥३९९२॥

राग बिलावल

तऊ गुपाल गोकुल के बासी।
ऐसी बातैं बहुतै कहि-कहि, लोग करत हैं हाँसी॥
मथि मथि सिंधु सुरनि कौं पोषे, संभु भए बिष आसी।
इनि हनि कंस राज औरहिं दै, चाहि लई इक दासी॥
बिसरी हमैं बिरह दुख अपनौ, चली चाल आँगासी।
ऐसी बिहँगम प्रीति न देखी, प्रगट न परखी-खासी॥
आरज पंथ छुड़ाइ गोपिका, कुल-मरजादा नासी।
आजु करत सुख-राज सूर-प्रभु, हमैं देत दुख गाँसी॥
॥३३७५॥३९९३॥

राग सारंग

उन ब्रजदेव नैंकु चित करते।
कछु जिय आस रहति बिधि बस जौ, बहुरहु फिरि फिरि मिलते॥
कह कहिऐ हरि सब जानत हैं, या तन की गति ऐसी।
सूरदास प्रभु-हित चित मिलियौ, नातरु हम गरियै सी॥
॥३३७६॥३९९४॥

राग बिलावल

स्याम बिनोदी रे मधुबनियाँ।
अब हरि गोकुल काहे कौं आवत, भावति नव जोबनियाँ॥
वे दिन माधौ भूलि गए जब, लिऐं फिरावनि कनियाँ।
अपनैं कर जसुमति पहिरावति, तनक काँच की मनियाँ॥
दिना चारि तैं पहिरन सीखे, पट पीतांबर तनियाँ।
सूरदास-प्रभु वाकें बस परि, अब हरि भए चिकनियाँ॥
॥३३७७॥३९९५॥

मथुरा मोहिनी मैं जानी।
मोहन स्याम, मोहन जादव जन, मोहन जमुना पानी॥

मोहन नारि सबै घर घर की, बोलति मोहन बानी।
मोहन सूरदास कौ ठाकुर, मोहन कुबिजा रानी॥
॥३३७८॥३९९६॥

राग बिलावल

देखौ री, लोग चतुर मधुबन के।
बातनि ही गोविंद बिमोह्यौ, गुन जानौ मैं तिनि के॥
सब हरि गवन कियौ मधुबन कौ, छाड़े हेत सबनि के।
सूरदास-प्रभु बेगि मिलावौ, गोबिंद प्रिय प्राननि के॥
॥३३७९॥३९९७॥

राग धमार

कहौ री जो कहिबे की होइ।
प्रान-नाथ बिछुरे की बेदन, और न जानै कोइ॥
तब हम अधर सुधा रस लै-लै, मगन रहीँ मुख जोइ।
जा रस सिव सनकादिक दुरलभ, सो रस बैठीँ खोइ॥
कहा कहौँ कछु कहत न आवै, सुख सपना भयौ सोइ।
हमसौं कठिन भए कमलापति, काहि सुनाऊँ रोइ॥
बिरह-बिथा अंतर की बेदन, सो जानै जिहिँ होइ।
सूरदास सुख-मूरि मनोहर, लै जु गए मन गोइ॥
॥३३८०॥३९९८॥

राग सारंग

बिछुरे री मेरे बाल-सँघाती।
निकसि न जात प्रान ये पापी, फाटति नाहिँन छाती॥
हौं अपराधिनि दही मथति ही, भरी जोबन मदमाती।
जो हौं जानति हरि कौ चलिबौ, लाज छाँड़ि सँग जाती॥
ढरकत नीर नैन भरि सुंदरि, कछु न सोह दिन-राती।
सूरदास-प्रभु दरसन कारन, सखियनि मिलि लिखी पाती॥
॥३३८१॥३९९९॥

राग मलार

हरि परदेस बहुत दिन लाए।
कारी घटा देखि बादर की, नैन नीर भरि आए॥

बीर बटाऊ पथी हौ तुम, कौन देस तैं आए।
यह पाती हमरी लै दीजौ, जहाँ साँवरे छाए।।
दादुर मोर पपीहा बोलत, सोवत मदन जगाए।
सूर स्याम गोकुल तैं बिछुरे, आपुन भए पराए।।
।।३३८२।।४०००।।

राग मलार

हमारे हिरदै कुलिसहु जीत्यौ।
फटत न सखी अजहुँ उहिं आसा, बरष दिवस परि बीत्यौ।।
हमहूँ समुझि परी नीकैं करि, यह असितन की रीत्यौ।
बहुरि न जीवन मरन सौं साझौ, करी मधुप की प्रीत्यौ।।
अब तौ बात घरी पहरन की, ज्यौं उदवस की भीत्यौ।
सूर स्याम दासी सुख सोवहु, भयौ उभै मन चीत्यौ।।
।।३३८३।।४००१।।

राग सारंग

एक द्यौस कुंजनि मैं माई।
नाना कुसुम लेइ अपनैं कर, दिए मोहिं सो सुरति न जाई।।
इतने मैं घन गरजि वृष्टि करी, तनु भीज्यौ मो भई जुडाई।
कंपत देखि उढाइ पीत पट, लै करुनामय कंठ लगाई।।
कहँ वह प्रीति रीति मोहन की, कहँ अब धौं एती निठुराई।
अब बलबीर सूर-प्रभु सखि री, मधुबन बसि सब रति बिसराई।।
।।३३८४।।४००२।।

राग कान्हरौ

हौं जानौ माधौ हित कियौ।
अति आदर आतुर अलि ज्यौं मिलि, मुख मकरंद पियौ।।
बरु वह भली पूतना जाकौ, पय सँग प्रान लियौ।
मनु मधु अँचै निपट सूने तन, यह दुख अधिक दियौ।।
देखि अचेत अमृत अवलोकनि, चले जु सींचि हियौ।
सूरदास-प्रभु वा अधार तैं, अब लौं परत जियौ।।
।।३३८५।।४००३।।

राग सारंग

नाहिंनै अब ब्रज नंद कुमार।
परम चतुर सुंदर सुजान सखि, या तनु के प्रतिहार॥
रूप लकुट रोके जु रहत अलि, अनु दिन नैननि द्वार।
ता दिन तैं उर-भवन भयौ सखि, सिव रिपु कौ संचार॥
दुख आवत कछु अटक न मानत, सूनौ देखि अगार।
असु उसास जात अंतर तैं करत न कछू विचार॥
निसा निमेष कपाट लगे बिनु, ससि मूसत सत सार।
सूर प्रान लटि लाज न छाँड़त, सुमिरि अवधि आधार॥

॥३३८६॥४००४॥

राग सारंग

ऐसे समय जो हरि जू आवहिं।
निरखि निरखि वह रूप मनोहर, नैन बहुत सुख पावहिं॥
तैसिय स्याम घटा घन घोरनि, बिच बगपाँति दिखावहिं।
तैसेइ मोर कुलाहल सुनि सुनि, हरपि हिंडोरनि गावहिं॥
तैसीयै दमकति दामिनि अरु, मुरलि मलार बजावहिं।
कबहुँक संग जु हिलि मिलि खेलहिं, कबहुँक कुंज बुलावहिं॥
बिछुरे प्रान रहत नहिं घट मैं, सो पुनि आनि जियावहिं।
अबकैं चलत जानि सूरज-प्रभु, सब पहिलैं उठि धावहिं॥

॥३३८७॥४००५॥

राग रामकली

ब्रज कहा खोरी।
छत अरु अछत एक रस अंतर, मिटत नहीं कोउ करौ करोरी॥
बालक ही अभिलाषनि लीला, चकित भई कुल लाजनि छोरी।
बिरुध-बिवेक गोप-रस परि करि, बिरह-सिंधु मारत तैं ओरी।
जद्यपि हौ त्रैलोक के ईस्वर, परसि दृष्टि चितवत न बहोरी।
सूरदास-प्रभु प्रीति-रीति कत, ते तुम सबै अब रहे तोरी॥

॥३३८८॥४००६॥

राग सारंग

हरि मोकौं हरि-भख कहि जु गयौ ।
हरि दरसत हरि मुदित उदित हरि, हरि व्रज हरि जु लयौ ॥
हरि रिपु ता रिपु ता पति कौ सुत, हरि बिनु प्रजरि दहै ।
हरि को तात परस उर अंतर, हरि बिनु अधिक बहै ॥
हरि तनया सुधि तहाँ बदति हरि, हरि अभिमान न टार्यौ ।
अब हरि दवन दिवा कुबिजा कौ, सूरदास मन भायौ ॥
।३३८९॥४००७॥

राग सारंग

हरि बिनु कौन सौं कहियै ।
मनसिज बिथा अरनि लौं जारति, उर अंतर दहियै ॥
कानन भवन रैनि अरु बासर, कहूँ न सचु लहियै ।
मूक जु भए जज्ञ के पसु लौं, कौलौं दुख सहियै ॥
कबहुँक उपजै जिय मैं ऐसो, जाइ जमुन बहियै ।
सूरदास प्रभु कमलनैन बिनु, कैसैं व्रज रहियै ॥
॥३३९०॥४००८॥

राग मारू

किते दिन हरि दरसन बिनु बीते ।
एक न फुरत स्याम सुंदर बिनु, बिरह सबै सुख जीते ॥
मदन गुपाल बैठि कंचन रथ, चितै किए तन रीते ।
सुफलक सुत लै गए दगा दै, प्राननिहूँ तैं प्रीते ॥
कहि धौं घोष कबहिं आवहिंगे, हरि बलभद्र सहीते ।
सूरदास-प्रभु बहुरि कृपा करि, मिलहु सुदामा मीते ॥
॥३३९१॥४००९॥

राग नट

ग्वालिनि छाँड़ि दै बिरह खर्‌यौ ।
तेरैं बिरह बिरहिनी व्याकुल, भुवन काज बिसर्‌यौ ॥
कर पल्लव उडुपति रथ खैंच्यौ, मृगपति बैर कर्‌यौ ।
पखी पति सबही सकुचाने, चातक अनँग भर्‌यौ ॥

सारँग सुर सुनि भयौ वियोगी, हिमकर गरब टरयौ।
सूरदास सायर-सुत-हित-पति देखत मदन हरयौ॥
॥३३६२॥४०१०॥

राग सारंग

बिरह भन्यौ घर-आँगन कोने।
दिन दिन बाढ़त जात सखी री, ज्यौं कुरुखेत के सोने॥
तब वह दुख दीन्हौ जब बाँधे, ताहू कौ फल जानि।
निज कुल चूक समुझि मन ही मन, लेति परस्पर मानि॥
हम अबला अति दीन हीन-मति, तुम सबही विधि जोग।
सूर मदन देखतहिं अहूठे, यम सरीर कौ रोग॥
॥३३९३॥४०११॥

राग मलार

जौ पै कोउ माधौ सौं कहै।
तौ यह बिथा सुनत नँदनंदन, कत मधुपुरी रहै॥
पहिलैं ही सब दसा बतावै, पुनि कर चरन गहै।
यह प्रतीति मेरैं चित अंतर, सुनत न प्रेम सहै॥
यहै सँदेस सूर के प्रभु सौं, को कहि जसहिं लहै।
अबकी बेर दयालु दरस दै, यह दुख आनि दहै॥
॥३३९४॥४०१२॥

राग नट

मेरे मन इतनी सूल रही।
वे बतियाँ छतियाँ लिखि राखीं, जे नँदलाल कही॥
एक द्यौस मेरैं गृह आए, हौं ही महत दही।
रति माँगत मैं मान कियौ सखि, सो हरि गुसा गही॥
सोचति अति पछिताति राधिका, मुरछित धरनि ढही।
सूरदास-प्रभु के बिछुरे तैं, बिथा न जाति सही॥
॥३३९५॥४०१३॥

राग गौरी

सुरति करि ह्याँ की रोइ दियौ।
पंथी एक देखि मारग मैं, राधा बोलि लियौ॥

कहि धौं बीर कहाँ तैं आयौ, हम जु प्रनाम कियौ ।
पा लागौं मंदिर पग धारौ, सुनि दुखियान त्रियौ ॥
गद्‌गद कंठ हियौ भरि आयौ, बचन कह्यौ न दियौ ।
सूर स्याम अभिराम ध्यान मन, भरि भरि लेत हियौ ॥

॥३३९६॥४०१४॥

राग मला

हरि कहँ इते दिन लाए ।
आवन कहि गए सु तौ, अजहूँ नहिं आए ॥
चलत चितै मुसकाइ कै, मृदु बचन सुनाए ।
तेई ठग मोदक भए, धीरज-छिटकाए ॥
जग मोहन जदुनाथ के, गुन जानि न पाए ।
मनहुँ सूर इहि लाज तैं नहिं चरन दिखाए ॥

॥३३९७॥४०१५॥

राग मलार

यह दुख कौन सौं कहौं ।
जोइ बीतति सोइ कहति सयानी, नित नव मूल सहौं ॥
जे सुख स्याम संग सब कीन्हे, गहि राखे इहि गात ।
ते अब भये सीत या तनु कौं, साखा ज्यौं द्रुम पात ॥
जो हुती निकट मिलन की आसा, सो तौ दूरि गई ।
जथा जोग ज्यौं होत रोगिया, कुपथी करत नई ॥
यह तन त्यागि मिलन यौं बनिहै, गगा सागर सग ।
अब सुनि सूर ध्यान ऐसौ है, स्याम राम इक रग ॥

॥३३९८॥४०१६॥

गोविंद अजहूँ नहि आए री, जान एउ दिन लागे ।
उनकौं दोष कहा सखि दीजै, ब्रज के लोग अभागे ॥
प्रीतिहिं के माते जे सोये, सरबस हरत न जागे ।
अब कहि सूर कहा बसाइ हम, अनत कहूँ अनुरागे ॥

॥३३९९॥४०१७॥

राग सारंग

हम सरघा ब्रजनाथ सुधानिधि, राखे बहुत जतन करि सचि सचि ।
मन-मुख भरि भरि, नैन ऐन ह्वै, उर प्रति कमल कोस लौं खचि खचि ॥
सुभग सुमन सब अंग अमृतमय, तहाँ तहाँ राखति चित रचि-रचि ।
मोहन मदन सुरूप सुजस रस, करत सु गुप्त प्रेम रस पचि पचि ॥
सूरदास पीयूष लागि तिहिं, पठ्यौ नृपति तेउ गए बचि बचि ।
अब सोई मधु हर्‌यौ सुफलक सुत, दुसह दाह जु उठत तन तचि-तचि ॥
॥३४००॥४०१८॥

राग बिलावल

तुम्हरी प्रीति हरि पूरब जनम की, अब जु भए मेरे जियहु के गरजी ।
बहुत दिननि तैं बिरमि रहे हौ, संग बिछोहि हमहिं गए बरजी ॥
जा दिन तैं तुम प्रीति करी हौ, घटति न बढ़ति तोलि लेहु नरजी ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु, तन भयौ ब्यौंत बिरह भयौ दरजी ॥
॥३४०१।४०१९॥

राग सारंग

(माई) वै दिन इहिं देह अछत, बिधिना जौ आनै री ।
स्याम सुंदर संग रंग, जुवति बृंद ठानै री ॥
जद्यपि अक्रूर क्रूर परम गति पठावै री ।
प्रान नाथ कमल नैन, बाँसुरी बजावै री ॥
कहा कहौं कहत कठिन, कहैं कौन मानै री ।
सूरदास प्रेम-पीर, बिरहि, मिलैं जानैं री ॥
॥३४०२॥४०२०॥

राग मलार

हरि कौ मारग दिन प्रति जोवति ।
चितवत रहत चकोर चंद ज्यौं, सुमिरि-सुमिरि गुन रोवति ॥
पतियाँ पठवति मसि नहिं खूँटति लिखि लिखि मानहु धोवति ।
भूख न दिन निसि नींद हिरानी, एकौ पल नहिं सोवति ॥
जे जे बसन स्याम सँग पहिरे, ते अजहूँ नहिं धोवति ।
सूरदास,प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, बृथा जनम सुख खोवति ॥
॥३४०३॥४०२१॥

राग सारंग

बिनु माधौ राधा तन सजनी, सब बिपरीत भई।
गई छपाइ छपाकर की छबि, रही कलंकमई॥
अलक जु हुती भुवगम हू सी, बट लट मनहु भई।
तनु-तरु लाइ-बियोग लग्यौ जनु, तनुता सकल हई॥
अँखियाँ हुतीं कमल पँखुरी सी, सुछबि निचोरि लई।
आँच लगैं च्यौनो सोनो सौं, यौं तनु धातु धई॥
कदली दल सी पीठि मनोहर, मानौ उलटि टई।
संपति सब हरि हरी सूर-प्रभु बिपदा देह दई॥
॥३४०४॥४०२२।

राग कान्हरौ

कर कपोल भुज धरि जघा पर, लेखति माइ नखनि की रेखनि।
सोच-बिचार करति वह कामिनि, धरति जु ध्यान मदन-मुख-भेषनि॥
नैन नीर भरि भरि जु लेति है, धिक धिक जे दिन जात अलेखनि।
कमल-नयन मधुपुरी सिधारे, जाने गुन न सहस मुख सेषनि॥
अवधि कुटाइ कान्ह सुनु री सखि, क्यौं जीवैं निसि दामिनि देखनि।
सूरदास-प्रभु चेटक करि गए नाना बिधि नाचतिं नट-पेषनि॥
॥३४०५॥४०२३॥

राग कान्हरौ

सोचति राधा लिखति नखनि मैं वचन न कहति कंठ जल त्रास।
छिति पर कमल, कमल पर कदली, ता पर पकज कियौ प्रकास॥
ता पर अलि सारँग पर सारँग, सारँग रिपु लै कीन्हौ बास।
तहँ अरि पथ पिता जुग उदित, बारिज बिबि रँग भयौ अमास॥
सारँग मुख तैं परत अंबु ढरि, मनु सिव पूजति तपति बिनास।
सूरदास प्रभु हरि बिरहा रिपु, दाहत अग दिखावत बास॥
॥३४०६॥४०२४॥

इहिं दुख तन तरफत मरि जैहैं।
कबहुँ न सखी स्याम-सुंदर-घन, मिलिहैं आइ अक भरि लैहैं?
कबहुँ न बहुरि सखा सँग ललना, ललित त्रिभंगी छबिहिं दिखैहैं?
कबहुँ न बेनु अधर धरि मोहन, यह मति लै लै नाम बुलैहैं?

कबहुँ न कुंज भवन सँग जैहैं, कबहुँ न दूती लैन पठैहैं ?
कबहुँ न पकरि भुजा रस बस ह्वै, कबहुँ न पग परि मान मिटैहैं ?
याही तैं घट प्रान रहत हैं, कबहुँक फिरि दरसन हरि दैहैं ?
सूरदास परिहरत न यातैं, प्रान तजैं नहिं पिय ब्रज ऐहैं ॥

॥३४०७॥४०२५॥

सबैं सुख लै जु गए ब्रजनाथ।
बिलखि बदन चितवति मधुबन तन, हम न गईं उठि साथ ॥
वह मूरति चित तैं बिसरति नहिं, देखि साँवरे गात।
मदन गोपाल ठगौरी मेली, कहत न आवै बात ॥
नंद-नँदन जु बिदेस गवन कियौ, बैसी मींजतिं हाथ।
सूरदास प्रभु तुम्हरैं बिछुरे, हम सब भईं अनाथ ॥

॥३४०८॥४०२६॥

करिहौ मोहन कहूँ सँभारि, गोकुल-जन-सुखहारे।
खग मृग, तृन, बेली बृंदावन, गैया ग्वाल बिसारे ॥
नंद जसोदा मारग जोवैं, निसि दिन दीन दुखारे।
छिन छिन सुरति करत चरननि की, बाल बिनोद तुम्हारे ॥
दीन दुखी ब्रज रह्यौ न परि है, सुंदर स्याम ललारे।
दीनानाथ कृपा के सागर, सूरदास-प्रभु प्यारे ॥

॥३४०९॥४०२७॥

उनकौं ब्रज बसिबौ नहिं भावै।
ह्वाँ वै भूप भए त्रिभुवन के, ह्याँ कत ग्वाल कहावैं ॥
ह्वाँ वै छत्र सिंहासन राजत, को बछरनि सँग धावै।
ह्वाँ तौ बिबिध बस्त्र पाटंबर, को कमरी सचु पावै ॥
नंद जसोदा हूँ कौं बिसरयौ, हमरी कौन चलावै।
सूरदास प्रभु निठुर भए री, पातिहु लिखि न पठावै ॥

॥३४१०॥४०२८॥

उद्धव-ब्रज आगमन

राग बिलावल

अंतरजामी कुँवर कन्हाई।
गुरु गृह पढ़त हुते जहँ बिद्या, तहँ ब्रज-बासिन की सुधि आई।

गुरु सौं कह्यौ जोरि कर दोऊ, दछिना कहौ मो देउँ मँगाई ॥
गुरु पतनी कह्यौ पुत्र हमारे, मृतक भये सो देहु जिवाई ॥
आनि दिए गुरु-सुत जमपुर तैं, तब गुरुदेव असीस सुनाई ।
सूरदास-प्रभु आइ मधुपुरी, ऊधौ कौं ब्रज दियौ पठाई ॥
॥३४११॥४०२६॥

राग मलार

जदुपति सखा ऊधौ जानि ।
लगे मन मन यहै सोचन, भली नहिं यह बानि ॥
अस भुज धरि होत ठाढ़ौ, निठुर जैसो काठ ।
संग यह नहिं बनत नीको, होइ कैसेंहु साँठ ॥
जौ कहौं तौ करै क्यौं यह, निदिहै अरु मोहि ।
देखिबे कौं परम सुंदर, रहत नैननि जोहि ॥
कनक कलस अपान जैसें, तैसोई यह रूप ।
सूर कैसैंहु प्रेम पावै, तबहिं होइ सुरूप ॥
॥३४१२॥४०३०॥

राग नट

जदुपति जानि उद्धव रीति ।
जिहिं प्रगट निज सखा कहियत, करत भाव अनीति ॥
बिरह दुख जहँ नाहिं-नैकहुँ, तहँ न उपजै प्रेम ।
रेख, रूप न बरन जाकै, इहिं धरयौ वह नेम ॥
त्रिगुन तन करि लखत हमको, ब्रह्म मानत और ।
बिना गुन क्यौं पुहुमि उधरै, यह करत मन डौर ॥
बिरस रस किहिं मंत्र कहिए, क्यौं चलै संसार ।
कछु कहत यह एक प्रगटत, अति भरयौ अहँकार ॥
प्रेम भजन न नैकु याकैं, जाइ क्यौं समुझाइ ।
सूर प्रभु मन यहै आनी, ब्रजहिं देउँ पठाइ ॥
॥३४१३॥४०३१॥

राग नट

यह अद्वैत दरसी रंग ।
सदा मिलि इक साथ बैठत, चलत बोलत संग ।

वात कहत न बनत यासौं निठुर जोगी जंग।
प्रेम सुनि विपरीत भाषत, होत है रस भंग॥
सदा व्रज कौ ध्यान मेरैं, रास रंग तरंग।
सूर वह रस कहौं कासौं, मिल्यौ सखा सुरंग॥

॥३४१४॥४०३२॥

राग नट

सग मिलि कहौं कासौं बात।
यह तौ कहत जोग की बातैं, जामैं रस जरि जात॥
कहत कहा पितु मातु कौन के, पुरुष नारि कह नात।
कहाँ जसोदा सी है मैया, कहाँ नंद सम तात॥
कहँ वृषभानु-सुता सँग कौ सुख, वह बासर वह प्रात।
सखी सखा सुख नहिं त्रिभुवन मैं नहिं वैकुंठ सुहात॥
वै बातैं कहिए किहिं आगैं, यह गुनि हरि पछितात।
सूरदास प्रभु व्रज महिमा कहि लिखी बदत बल भ्रात॥

॥३४१५॥४०३३॥

राग धनाश्री

कहाँ सुख व्रज कौ सौ संसार॥
कहाँ सुखद बंसी बट जमुना, यह मन सदा विचार।
कहँ वन धाम कहाँ राधा सँग, कहाँ संग व्रज बाम।
कहँ रस रास बीच अतर सुख, कहाँ नारि तन ताम॥
कहाँ लता तरु तरु प्रति वूझनि, कुंज-कुंज नव धाम।
कहाँ विरह सुख बिन गोपिन सँग, सूर स्याम मन काम॥

॥३४१६॥४०३४॥

राग धनाश्री

वह सुख कहाँ काकैं साथ।
सखा हमकौं मिले ऊधौ, वचन मारत माथ॥
भजन भाव बिना नहीं सुख, कहाँ प्रेमऽरु जोग।
काग हंसहि सग जैसौ, कहाँ दुख कहँ भोग॥

जगत मैं यह संग देखौ, घचन प्रति कहै ब्रह्म।
सूर ब्रज की कथा कासौं, कहौं यह करै दंभ॥
॥३४१७॥४०३५॥

राग कान्हरौ

हंस काग कौ संग भयौ।
कहँ गोकुल कहँ गोप गोपिका, विधि यह संग दयौ॥
जैसैं कंचन काँच संग ज्यौं चंदन संग सुगंधि।
जैसैं खरी कपूर एक सम, यह भइ ऐसी संधि॥
जल बिन मीन रहति क्यौं न्यारी, यह सोइ रीति चलावत।
जब ब्रज की बातैं इहिं कहियत, तबहीं तब उचटावत॥
याकौ ज्ञान थापि ब्रज पठवौं, और न याहि उपाउ।
सुनहु सूर याकौं ब्रज पठए, भलौ बनैगो दाउँ॥
॥३४१८॥४०३६॥

राग धनाश्री

याहि और नहिं कछू उपाइ।
मेरौ प्रगट कह्यौ नहिं बदिहै, ब्रज हीं देउँ पठाइ॥
गुप्त प्रीति जुवतिनि की कहि कै, याकौ करौं महंत।
गोपिनि के परमोधन कारन, जैहै सुनत तुरंत॥
अति अभिमान करैगो मन मैं जोगिनि की यह भाँति।
सूर स्याम यह निहचै करिकै, बैठत है मिलि पाँति॥
॥३४१९॥४०३७॥

राग बिलावल

तबहिं उपँग सुत आइ गए।
सखा सखा कछु अंतर नाहीं, भरि भरि अंक लए॥
अति सुंदर तन स्याम सरीखौ, देखत हरि पछिताने।
ऐसे कैं वैसी बुधि होती, ब्रज पठऊँ मन आने॥
या आगैं रस कथा प्रकासौं, जोग कथा प्रगटाऊँ।
सूर ज्ञान याकौ दृढ़ करिकै, जुवतिन्ह पास पठाऊँ॥
॥३४२०॥४०३८॥

राग धनाश्री

जवहीं यह कहैगौ याहि।
मोहिं पठवत गोपिकनि पै, हरष ह्वैहै ताहि॥
जोग कौ अभिमान करिहै, व्रजहिं जैहै धाइ।
कहैगौ मोहिं स्याम मानत, करौं यह चतुराइ॥
आइ गए तेहि समै ऊधौ, सखा कहि लियौ बोलि।
कंध धरि भुज भए ठाढ़े, करत वचन निठोलि॥
वार-वार उसाँस डारत, कहत व्रज की बात।
सूर प्रभु के वचन सुनि सुनि, उपँग-सुत मुसकात॥
॥३४२१॥४०३९॥

राग धनाश्री

हरि गोकुल की प्रीति चलाई।
सुनहु उपँग-सुत मोहिं न विसरत, व्रज-वासी सुखदाई॥
यह चित होत जाउँ मैं अवहीं, इहाँ नहीं मन लागत।
गोपी ग्वाल गाइ वन चारन अति दुख पायौ त्यागत॥
कहँ माखन-रोटी, कहँ जसुमति, जेंवहु कहि-कहि प्रेम।
सूर स्याम के वचन हँसत सुनि, थापत अपनौ नेम॥
॥३४२२॥४०४०॥

राग रामकली

जदुपति लख्यौ तिहिं मुसुकात।
कहत हम मन रही जोई, भई सोई वात॥
वचन परगट करन कारन, प्रेम कथा चलाइ।
सुनहु ऊधौ मोहिं व्रज की, सुधि नहीं विसराइ॥
रैनि सोवत, दिवस जागत, नाहिंनै मन आन।
नंद-जसुमति, नारि-नर-व्रज तहाँ मेरौ प्रान॥
कहत हरि सुनि उपँग सुत यह, कहत हौं रस रीति।
सूर चित तैं टरति नाहीं, राधिका की प्रीति॥
॥३४२३॥४०४१॥

राग रामकली

सखा सुनि एक मेरी वात।
वह लता-गृह संग गोपिन, सुधि करत पछितात॥

बिधि लिखी नहिं टरत क्यौं हूँ, यह कहत अकुलात।
हँसि उपँग-सुत बचन बोले, कहा हरि पछितात॥
सदा हित यह रहत नाहीं, सकल मिथ्या जात।
सूर-प्रभु यह सुनौ मोसौं, एक ही सौं नात॥

॥३४२४॥४०४२॥

राग रामकली

जब ऊधौ यह बात कही।
तब जदुपति अति ही सुख पायौ, मानी प्रगट सही॥
श्री मुख कह्यौ जाहु तुम ब्रज कौं, मिलहु जाइ ब्रज-लोग।
मो बिन, बिरह भरीं ब्रज-बाला, जाइ सुनावहु जोग॥
प्रेम मिटाइ ज्ञान परबोधहु, तुम हौ पूरन ज्ञानी।
सूर उपँग-सुत मन हरषाने, यह महिमा इन जानी॥

॥३४२५॥४०४३॥

राग गौरी

ऊधौ तुम यह निहचै जानौ।
मन, बच, क्रम मैं तुमहि पठावत, ब्रज कौं तुरत पलानौ॥
पूरन ब्रह्म अकल अबिनासी, ताके तुम हौ ज्ञाता।
रेख न रूप जाति कुल नाहीं, जाके नहि पितु माता॥
यह मत दै गोपिनि कौं आवहु, बिरह नदी मैं भासत।
सूर तुरत तुम जाइ कहौ यह, ब्रह्म बिना नहि आसत॥

॥३४२६॥४०४४॥

राग सारंग

ऊधौ बेगिहीं ब्रज जाहु।
सुरति सँदेस सुनाइ मेटौ बल्लभिनि कौ दाहु॥
काम पावक, तूल तन मैं, बिरह स्वास समीर।
जरि भसम नहिं होन पावैं, लोचननि के नीर॥
आजु लौं इहिं भाँति ह्वै वै, कछुक सजग सरीर।
इते पर बिनु समाधानहिं, क्यौं धरैं तिय धीर॥

बार-बार कहा कहौं, तुम सखा साधु प्रवीन।
सूर सुमति विचारिऐ, जिहिं, जिऐं जलबिनु मीन॥
॥३४२७॥४०४५॥

राग धनाश्री

ऊधौ ब्रज कौं गमन करौ।
हमहिं बिना गोपिका बिरहिनी, तिनके दुःख हरौ॥
जोग ज्ञान परबोधि सबनि कौं, ज्यौं सुख पावैं नारि।
पूरन ब्रह्म अकल परिचै करि, डारैं मोहिं बिसारि॥
सखा प्रवीन हमारे तुम हौ, तुम तैं नहीं महंत।
सूर स्याम इहि कारन पठवत ह्वै आवैगौ संत॥
॥३४२८॥४०४६॥

राग नट

ऊधौ मन अभिमान बढ़ायो।
जदुपति जोग जानि जिय साँचौ, नैन अकास चढ़ायौ॥
नारिन पै मोकौं पठवत हैं, कहत सिखावन जोग।
मन ही मन अब करत प्रसंसा, यह मिथ्या सुख भोग॥
आयसु मानि लियौ सिर ऊपर, प्रभु अज्ञा परमान।
सूरदास-प्रभु गोकुल पठवत, मैं क्यौं कहौं कि आन॥
॥३४२९॥४०४७॥

राग कान्हरौ

तुम पठवत गोकुल कौं जैहौं।
जौ मानिहैं ब्रह्म की बातैं, तौ उनसौं मैं कैहौं॥
गदगद बचन कहत मन प्रफुलित, बार-बार समुझैहौं।
आजु नहीं जो करौं काज तुव, कौन काज पुनि ऐहौं॥
यह मिथ्या संसार सदाई, यह कहिकै उठि ऐहौं।
सूर दिना द्वै ब्रज-जन सुख दै आइ चरन पुनि गैहौं॥
॥३४३०॥४०४८॥

राग केदारौ

सुनु सखा हित प्रान मेरैं, नाहिंनै सम तोहिं।
कैसैंहू कर उरनि कीजै, गोपिकनि सौं मोहिं॥

रैनि दिन मम भक्ति उनकैं कछू करत न आन।
और सरबस मोहिं अरप्यौ तरुनि तन धन प्रान॥
ब्याज मैं ये रतन दीन्हौ, वृथा गोप कुमारि।
सालोकता समीपता सारूपता, भुज चारि॥
इक रही सायुज्यता सो, सिद्ध नहि बिनु ज्ञान।
सोइ तुम उपदेसियौ जिहिं, लहैं पद निर्वान॥
जो न अंगीकृत करैं वै होउ हौं रिन दास।
सूर गाइ चराइहौं मैं, बहुरि बसि ब्रजबास॥

॥३४३१॥४०४९॥

राग बिहागरौ

तुरत ब्रज जाहु उपँग-सुत आजु।
ज्ञान बुझाइ खबरि दै आवहु, एक पंथ द्वै काज॥
जब तैं मधुबन कौं हम आए, फेरि गयौ नहिं कोउ।
जुवतिन पै ताही कौं पठवैं, जो तुम लायक होउ॥
इक प्रवीन अरु सखा हमारे, ज्ञानी तुम सरि कौन।
सोइ कीजौ जातैं ब्रज-बाला, साधन सीखैं पौन॥
श्री मुख स्याम कहत यह बानी, ऊधौ सुनत सिहात।
आयसु-मानि, सूर प्रभु जैहौं, नारि मानिहैं बात॥

॥३४३२॥४०५०॥

राग गौरी

ऊधौ ब्रज जनि गहरु लगावहु।
तुम ब्रजनारि जानि मन सकुचत, कहियौ जोग सुनावहु॥
बानी कहत समुझि वै लैहैं, कही हमारी मानौ।
बिरह दाह यह सुनत बुझैहै, मानौ अनलहिं पानौ॥
अनहौं जाहु बिकल सब गोपी, जोग बचन कहि पोपौ॥
सूर नंद बाबा जसुमति कौं, बेगि जाइ सतोषौ॥

॥३४३३॥४०५१॥

राग सोरठ

हलधर कहत प्रीति जसुमति की।
कहा रोहिनी इतनी पावै, वह बोलनि अति हित की॥

एक दिवस हरि खेलत मो सँग, झगरौ कीन्हौ पेलि।
मोकौं दौरि गोद करि लीन्हौ, इनहिं दियौ कर ठेलि ॥
नंद बबा तब कान्ह गोद करि, खीझन लागे मोकौं।
सूर स्याम नान्हौ तेरौ भैया, छोह न आवत तोकौं ॥
॥३४३४॥४०५२॥

राग रामकली

जसुमति करति मोकौं हेत।
सुनौ ऊधौ कहत बनत न, नैन भरि-भरि लेत ॥
दुहुँनि कौ कुसलात कहियौ, तुमहिं भूलत नाहिं।
स्याम हलधर सुत तुम्हारे, और के न कहाहिं ॥
आइ तुमकौं धाइ मिलिहैं, कछुक कारज और।
सूर हमकौं तुम बिना सुख कौ नहीं कहुँ ठौर ॥
॥३४३५॥४०५३॥

राग बिहागरौ

स्याम कर पत्री लिखी बनाइ।
नंद बाबा सौं बिनै, कर जोरि जसुदा माइ।
गोप ग्वाल सखानि कौं हिलि-मिलन कंठ लगाइ ॥
और ब्रज-नर-नारि जे हैं, तिनहिं प्रीति जनाइ ॥
गोपिकनि लिखि जोग पठयो, भाव जानि न जाइ।
सूर-प्रभु मन और यह कहि, प्रेम लेत दिढ़ाइ ॥
॥३४३६॥४०५४॥

राग बिहागरौ

उपँग-सुत हाथ दई हरि पाती।
यह कहियौ जसुमति मैया सौं, नहिं बिसरत दिन-राती ॥
कहत कहा बसुदेव-देवकी, तुमकौं हम हैं जाये।
कंस-त्रास सिसु अतिहिं जानिकै, ब्रज मैं राखि दुराये ॥
कहै बनाइ कोटि कोउ बातैं, कही बलराम कन्हाई।
सूर काज करिकै दिन कछु मैं, बहुरि मिलैंगे आई ॥
॥३४३७॥४०५५॥

राग बिलावल

ऊधौ इतनी कहियौ जाइ ।
हम आवैंगे दोऊ भैया, मैया जनि अकुलाइ ॥
याकौ बिलग बहुत हम मान्यौ, जो कहि पठयौ धाइ ।
वह गुन हमकौं कहा बिसरिहै, बड़े किए पय प्याइ ॥
अरु जब मिल्यौ नंद बाबा सौं, तब कहियौ समुझाइ ।
तौ लौं दुखी होन नहिं पावैं धौरी धूमरि गाइ ॥
जद्यपि इहाँ अनेक भाँति सुख, तदपि रह्यौ नहिं जाइ ।
सूरदास देखौं ब्रजबासिनि, तबहीं हियौ सिराइ ॥

॥३४३८॥४०५६॥

राग सारंग

नीकैं रहियौ जसुमति मैया ।
आवैं दिन चारि पाँच मैं, हम हलधर दोउ भैया ॥
नोई, बैंत, बिपान, बाँसुरी, द्वार अबेर सबेरैं ।
लै जनि जाइ चुराइ राधिका, कछुक खिलौना मेरे ॥
जा दिन तैं हम तुमतैं बिछुरे, कोउ न कहत कन्हैया ।
उठि न सवेरे कियौ कलेऊ, साँझ न चोपी धैया ॥
कहियौ कहा नंद बाबा सौं, जितौ निठुर मन कीन्हौ ।
सूरदास पहुँचाइ मधुपुरी, फेरि न सोधौ लीन्हौ ॥

॥३४३९॥४०५७॥

राग आसावरी

ऊधौ जननी मेरी कौं मिलि, अरु कुसलात कहौगे ।
बाबा नंदहिं पालागन कहि, पुनि पुनि चरन गहौगे ॥
जा दिन तैं मधुबन हम आए, सोध नहीं तुम लीन्हौ ।
दै-दै सौंह कहौगे हित करि, कहा निठुरई कीन्हौ ॥
यह कहियौ बलराम स्याम अब, आवैंगे दोउ भाई ।
सूर करम की रेख मिटै नहिं, यहै कह्यौ जदुराई ।

॥३४४०॥४०५८॥

राग केदारौ

बिधना यहै लिख्यौ सँजोग ।
कहाँ तैं मधुपुरी आए, तज्यौ माखन भोग ॥

कहाँ वै ब्रज सखा सब, कहाँ मथुरा लोग।
देवकी वसुदेव सुत सुनि, जननि करिहै सोग॥
रोहिनी माता कृपा करि, उछँग लेती रोग।
सूर प्रभु मुख यह वचन कहि, लिखि पठायौ जोग॥

॥३४४१॥४०५९॥

राग बिहागरौ

ऊधौ जात ब्रजहिं सुने।
देवकी वसुदेव सुनि कै, हृदै हेत गुने॥
आपु सौं पाती लिखी, कहि धन्य जसुमति नंद।
सुत हमारे पालि पठए, अति दियौ आनंद॥
आइकै मिलि जात कबहूँ न, स्याम अरु बलराम।
इहौ कहत पठाइहौं अब, तबहिं तन बिस्राम॥
बाल-सुख सब तुमहिं लूट्यौ, मोहिं मिले कुमार।
सूर यह उपकार तुम तैं, कहत बारंबार॥

॥३४४२॥४०६०॥

राग गौरी

पाती लिखि ऊधौ कर दीन्ही।
नंद जसोदहिं हित करि दीजौ, हँसि उपंग-सुत लीन्ही॥
मुख वचननि कहि हेत जनायौ, तुम हौ हितू हमारे।
बालक जानि पठए नृप डर सौं, तुम प्रति-पालनहारे॥
कुबिजा सुन्यौ जात ब्रज ऊधौ, महलहिं लियौ बुलाइ।
अपने कर पाती लिखि राधेहिं, गोपिनि सहित बड़ाइ॥
मोकौं तुम अपराध लगावति, कृपा भई अनयास।
झुकतिं कहा मो पर ब्रज-नारी, सुनहु न सूरजदास॥

॥३४४३॥४०६१॥

राग मलार

हम पर काहैं झुकतिं ब्रजनारी।
साझे भाग नहीं काहू कौ, हरि की कृपा निनारी॥
कुबिजा लिख्यौ सँदेस सबनि कौं, अरु कीन्ही मनुहारी।
हौं तौ दासी कंसराइ की, देखौ मनहिं बिचारी॥

फलनि माँझ ज्यौं करुइ तोमरी, रहत घुरे पर डारी।
अब तौ हाथ परी जत्री के, बाजत राग दुलारी ॥
तनु तैं टेढ़ी सब कोउ जानत, परसि भई अधिकारी।
सूरदास स्वामी करुनामय, अपने हाथ सँवारी ॥
॥३४४४॥४०६२।

राग गौरी

ऊधो ब्रजहिं जाहु पालागौं।
यह पाती राधा-कर दीजौ, यह मैं तुमसौं माँगौं ॥
गारी देहिं प्रात उठि मोकौं, सुनति रहति यह बानी।
राजा भए जाइ नँदनंदन, मिली कूबरी रानी ॥
मो पर रिस पावतिं काहे कौं, बरजि स्याम नहिं राख्यौ ?
लरिकाई तैं बाँधति जसुमति, कहा जु माखन चाख्यौ ॥
रजु लै सबै हजूर होतिं तुम, सहित सुता वृषभानु।
सूर स्याम बहुरौ ब्रज जैहैं, ऐसे भए अजान ॥
॥३४४५॥४०६३॥

राग धनाश्री

ऊधौ यह राधा सौं कहियौ।
जैसी कृपा स्याम मोहिं कीन्ही, आपु करत सोइ रहियौ ॥
मो पर रिस पावतिं बिनु कारन, मैं हौं तुम्हरी दासी।
तुमहीं मन मैं गुनि धौं देखौ, बिनु तप पायौ कासी ॥
कहाँ स्याम को तुम अरधंगिनि, मैं तुम सरि की नाहीं।
सूरज प्रभु कौ यह न बूझिए, क्यौं न उहाँ लौं जाहीं ॥
॥३३४६॥४०६४॥

राग कान्हरौ

सुनियत ऊधौ लए सँदेसौ, तुम गोकुल कौं जात।
पाछैं करि गोपिन सौं कहियौ, एक हमारी बात ॥
मातु पिता कौ नेह समुझि कै स्याम मधुपुरी आए।
नाहिंन कान्ह तुम्हारे प्रीतम, ना जसुदा के जाए ॥
देखौ बूझि आपने जिय मैं, तुम धौं कौन सुख दीन्हे।
ये बालक तुम मत्त ग्वालिनी, सबै मूँड करि लीन्हे ॥

तनक दही माखन के कारन, जसुदा त्रास दिखावै।
तुम हँसि सब बाँधन कौं दौरीं, काहू दया न आवै ॥
जो वृषभान-सुता उत कीन्ही, सो सब तुम जिय जानी।
ताहीं जाल तज्यौ ब्रज मोहन, अब काहैं दुख मानौ।
सूरदास-प्रभु सुनि-सुनि बातैं, रहे भूमि सिर नाए।
इत कुबिजा उत प्रेम गोपिकनि, कहत न कछु बनि आए॥

॥३४४७॥४०६५॥

राग बिलावल

तब ऊधौ हरि निकट बुलायौ।
लिखि पाती दोउ हाथ दई तिहिं, औ मुख बचन सुनायौ॥
ब्रजबासी जावत नारी नर, जल थल द्रुम बन-पात।
जो जिहिं बिधि तासौं तैसैंही, मिलि कहियौ कुसलात॥
जो सुख स्याम तुमहिं तैं पावत, सो त्रिभुवन कहुँ नाहिं।
सूरज-प्रभु दई सौंह आपुनी, समुझत हौ मन माहिं॥

॥३४४८॥४०६६॥

राग सारग

पहिलैं प्रनाम नँदराइ सौं।
ता पाछैं मेरौ पालागन, कहियौ जसुमति माइ सौं॥
बार एक तुम बरसाने लौं, जाइ सबै सुधि लीजौ।
कहि वृषभानु महर सौं मेरौ, समाचार सब दीजौ॥
श्रीदामाऽदि सकल ग्वालनि कौं मेरौ कोतौ भैंट्यौ।
सुख संदेस सुनाइ सबनि कौं, दिन दिन कौ दुख मेट्यौ॥
मित्र एक मन बसत हमारैं, ताहि मिलैं सुख पाइहौ।
करि करि समाधान नीकी बिधि, मोकौं माथौ नाइहौ॥
डरपहु जनि तुम सघन कुंज मैं, हैं तहँ के तरु भारी।
वृंदावन मति रहति निरंतर, कबहुँ न होति निनारी॥
ऊधौ सौं समुझाइ प्रगट करि, अपने मन की बीती।
सूरदास स्वामी सौं छल सौं, कही सकल ब्रज-प्रीती॥

॥३४४९॥४०६७॥

राग रामकली

कही हरि ऊधौ सौं ब्रज-प्रीति ।
वै लै चले जाग गोपिनि कौं, तहाँ करन बिपरीति ॥
तुरत अंक भरि रथहिं चढ़ायौ, लीन्हे, कह्यौ करि ताहि ।
बिरह जँजाल मेटि गोपिनि कौ, आवहु काज निबाहि ॥
लै रज चरन सीस बंदन करि, ब्रज रैहौ दिन द्वैकु ।
सूरज-प्रभु श्री मुख कहि पठवत, तुम बिनु रहौं न नैकु ॥
॥३४५०॥४०६८॥

राग गौरी

गहरु जनि लावहु गोकुल जाइ ।
तुमहिं बिना ब्याकुल हम ह्वै हैं, जदुपति करी चतुराइ ॥
अपनौ ही रथ तुरत मँगायौ, दियौ तुरत पलनाइ ।
अपने अंग अभूषन करि-करि, आपुन ही पहिराइ ॥
अपनौ मुकुट पितंबर अपनौ, देत सबै, सुख पाइ ।
सूर स्याम तदरूप उपँगसुत, भृगुपद एक बचाइ ॥
॥३४५१॥४०६९॥

राग बिलावल

ऊधौ चले स्याम आयसु सुनि, ब्रज नारिनि कौ जोग कह्यौ ।
हरि के मन यह प्रेम लहैगो, वह तौ जिय अभिमान गह्यौ ॥
आतुर चल्यौ हरष मन कीन्हे, कृष्न महत करि पठै दियौ ।
स्यंदन उहै स्याम सब भूषन, जानि परै नँद-सुवन बियौ ॥
जुवती कहा ज्ञान समुझैंगी, गर्व बचन मन कहत चल्यौ ।
सूर ज्ञान कौ मान बढ़ाए, मधुबन के मारगहिं मिल्यौ ॥
॥३४५२॥४०७०॥

राग बिलावल

जबहिं चले ऊधौ मधुबन तैं, गोपिनि मनहिं जनाइ गई ।
बार-बार अलि लागे स्रवननि, कछु दुख कछु हिय हर्ष भई ॥
जहँ तहँ काग उड़ावन लागीं, हरि आवत उड़ि जाहिं नहीं ।
समाचार कहि जबहिं मनावतिं, उड़ि बैठत सुनि औचकहीं ॥

सखी परस्पर यह कहीं बातैं, आजु स्याम कै आवत हैं।
किधौ सूर कोऊ ब्रज पठयौ, आजु खबरि कै पावत हैं॥
॥३४५३॥४०७१॥

भुज फरकत अँगिया तरकति, कोउ मीठी बात सुनावै।
स्याम सुँदर कौ आगम जानिय, वै निस्चय घर आवैं॥
इमि सगुननि कौ यहै भरोसौ, नैननि दरस दिखावैं।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौ, नव जोवन धनि भावैं॥
॥३४५४॥४०७२॥

राग बिलावल

आजु कोउ नीकी बात सुनावै।
कै मधुबन तैं नंद लाड़िलौ, कैऽब दूत कोउ आवै॥
भौंर एक चहुँ दिसि तैं उड़ि-उड़ि, कानन लगि-लगि गावै।
उत्तम भाषा ऊँचे चढ़ि-चढ़ि, अंग-अंग सगुनावै॥
भामिनि एक सखी सौं बिनवै, नैन नीर भरि आवै।
सूरदास कोऊ ब्रज ऐसौ, जो ब्रजनाथ मिलावै॥
॥३४५५॥४०७३॥

राग धनाश्री

तौ तू उड़ि न जाइ रे काग।
जौ गुपाल गोकुल कौं आवैं, तौ ह्वैहै बड़भाग॥
दधि ओदन भरि दोनौ दैहौं, अरु अंचल की पाग।
मिलि हौं हृदय सिराइ स्रवन सुनि, मेटि बिरह के दाग॥
जैसे मातु पिता नहिं जानत अंतर कौ अनुराग।
सूरदास-प्रभु करैं कृपा जब, तब तैं देह सुहाग॥
॥३४५६॥४०७४॥

राग कल्यान

ऊधौ रथ बैठि चले, ब्रज तन समुहाइ।
मथुरा तैं निकसि परे, गैल माँझ आइ॥
वहै मुकुट पीतांबर स्याम रूप काछे।
भृगुपद इक बंचित उर और अंग आछे॥

ज्ञान कौ अभिमान किए, मोकौं हरि पठयौ।
मेरोई भजन थापि, माया सुख झुठयौ॥
मधुवन तैं चल्यौ तबहिं, गोकुल नियरान्यौ।
देखत ब्रज लोग स्याम आयौ अनुमान्यौ॥
राधा सौं कहति नारि, काग सगुन टेरौ।
मिलिहैं तोहिं स्याम आजु, भयौ वचन मेरौ॥
वैसोइ रथ देखति सब, कहति हरष बानी।
सूरज प्रभु से लागत, तरुनी मुसुकानी॥

॥३४५७॥४०७५॥

राग बिलावल

राधेहिं सखी बतावत री।
वैसोई रथ लागत मोकौं, उतहीं तैं कोउ आवत री॥
चढ़ि आयौ अक्रूर जाहि पर, स्यंदन ब्रज तन धावत री।
वैसियै ध्वजा पताका वैसोइ घर घर सबद सुनावत री॥
कोउ कहै स्याम, कहति को ए हैं, ब्रज तरुनी हरषावत री।
सूर स्याम जेहि मग पग धारे, तेहि मारग दरसावत री॥

॥३४५८॥४०७६॥

राग सारंग

है कोउ वैसी ही अनुहारि।
मधुबन तन तैं आवत सखि री, देखौ नैन निहारि॥
वैसाइ मुकुट मनोहर कुंडल, पीत बसन रुचिकारि।
वैसहिं बात कहत सारथि सौं, ब्रज तन बाहँ पसारि॥
केतिक बीच कियौ हरि अंतर, मनु बीते जुग चारि।
सूर सकल आतुर अकुलानी, जैसैं मीन बिनु बारि॥

॥३४५९॥४०७७॥

राग कल्यान

वैसोइ रथ वैसोइ कोउ आवत उतही तैं।
झुरि-झुरि सब मरतिं बिरह गोपी जित की तैं॥
देखौ री मुकुट झलक, कुंडल की ओभा।
वैसोइ पट पीत अंग सुंदर अति सोभा॥

आए री नंद सुवन राधा हरषानो।
सूर मरत मीन तुरत मिलैं अगम पानी ॥
॥३४६०॥४०७८॥

राग नट

देखत हरष भईं ब्रजनारी। वै निहचै आए बनवारी ॥
जो जैसें सो तैसें धाई। घर घर लोगनि सुने कन्हाई ॥
रथ ही तन सब निरखन लागे। सपने कौ सुख लूटत आगे ॥
कृपा करी आए गोपाला। गोपिनि जानी बिरह बिहाला ॥
ज्यौं ही त्यौं रथ आतुर आवै। त्यौं ही त्यौं तनु पट फहरावै ॥
सूर भईं सुख व्याकुल नारी। प्रेम बिबस आनँद उर भारी ॥
॥३४६१॥४०७९॥

राग बिलावल

घर घर इहै सब्द पर्यो।
सुनत जसुमति धाइ निकसी, हरष हियौ भर्यौ ॥
नंद हरषित चले आगैं, सखा हरषित अंग।
झुंड झुंडनि नारि हरषित, चलीं उदधि तरंग ॥
गाइ हरषित ते स्रवतिं थन, चौकरत गो-बाल।
उमँगि अंग न मात कोऊ, बिरध तरुनऽरु बाल ॥
कोउ कहत बलराम नाहीं, स्याम रथ पर एक।
कोउ कहत प्रभु-सूर दोऊ, रचित बात अनेक ॥
॥३४६२॥४०८०॥

राग बिलावल

सुने ब्रज लोग आवत स्याम।
जहँ तहाँ तैं सबै धाईं, सुनत दुर्लभ नाम ॥
मनु मृगी बन जरत व्याकुल, तुरत बरष्यौ नीर।
बचन गदगद प्रेम व्याकुल, धरतिं नहिं मन धीर ॥
एक इक पल जुग सबनि कौं, मिलन कौं अतुरात।
सूर तरुनी मिलि परस्पर, भईं हरषित गात ॥
॥३४६३॥४०८१॥

राग धनाश्री

नंद गोप हरषित ह्वै, गए लैन आगैं।
आवत बलराम स्याम, सुनत दौरि चलीं बाम, मुकुट झलक पीतांबर मन मन अनुरागैं॥
निहचै आए गुपाल, आनंदित भईं बाल, मिट्यौ बिरह कौ जँजाल, जोवत तिहिं काला।
गदगद तन पुलक भयौ, बिरहा कौ मूल गयौ, कृष्न दरस आतुर अति प्रेम कैं बिहाला॥
ज्यौं ज्यौं रथ निकट भयौ, मुकुट पीत बसन नयौ, मन मैं कछु सोच भयौ स्याम किधौं कोऊ।
सूरज प्रभु आवत हैं, हलधर कौं नहीं लखतिं, झखतिं कहतिं होते तौ संग बीर दोऊ॥

॥३४६४॥४०८२॥

राग आसावरी

आजु कोउ स्याम की अनुहारि।
आवत उतै उमँग सौं सबहीं, देखि रूप की पारि॥
इंद्र धनुष की उर बनमाला, चितवत चित्त हरै।
मनु हलधर अग्रज मोहन के स्रवननि सब्द परै॥
गईं चलि निकट न देखे मोहन, प्रान किये बलिहारि।
सूर सकल गुन सुमिरि स्याम के, बिकल भईं ब्रजनारि॥

॥३४६५॥४०८३॥

राग बिलावल

कोउ माई आवत है तनु स्याम।
वैसे पट वैसिय रथ बैठनि, वैसीयै उर दाम॥
जो जैसैं तैसैं उठि धाईं, छाँडि सकल गृह काम।
पुलक रोम गदगद तेहीं छन, सोभित अंग अभिराम॥
इतने बीच आइ गए ऊधौ, रहीं ठगी सब बाम।
सूरदास प्रभु ह्याँ कत आवैं, बँधे कुबिजा रस दाम॥

॥३४६६॥४०८४॥

राग बिलावल

उमँगि ब्रज देखन कौं सब धाए।
एकहि एक परस्पर बूझतिं, मोहन दूलह आए॥
सोई ध्वजा पताका सोई, जा रथ चढ़ि जु सिधाए।
श्रुति कुंडल अरु पीत वसन छवि, वैसोइ साज बनाए॥
आइ निकट पहिचाने ऊधौ, नैन जलज जल छाए।
सूरदास मिटी दरसन आसा नूतन विरह जनाए॥
॥३४६७॥४०८५॥

राग बिलावल

जबहिं कह्यौ ये स्याम नहीं।
परी मुरछि धरनी ब्रजबाला, जो जहँ रही सु तहीं॥
सपने की रजधानी ह्वै गइ, जो जागीं कछु नाहीं।
बार-बार रथ ओर निहारहिं, स्याम बिना अकुलाहीं॥
कहा आइ करिहैं ब्रज मोहन, मिली कूबरी नारी।
सूर कहत सब ऊधौ आए, गईं काम-सर मारी॥
॥३४६८॥४०८६॥

राग रामकली

तरुनी गईं सब बिलखाइ।
जबहिं आए सुने ऊधौ, अतिहिं गईं झुराइ॥
परी व्याकुल जहाँ जसुमति, गईं तहँ सब धाइ।
नीर नैननि बहति धारा, लई पोंछि उठाइ॥
इक भई अब चलौ मारग, सखा पठयौ स्याम।
सुनौ हरि कुसलात ल्यायौ, महरि सौं कहैं बाम॥
जबहिं लौं रथ निकट आयौ, तबहुँ तैं परतीति।
वह मुकुट कुंडल पितंबर, सूर-प्रभु अँग रीति॥
॥३४६९॥४०८७॥

राग बिलावल

भली भई हरि सुरति करी।
उठौ महरि कुसलात बूझिऐ, आनँद उमँग भरी॥

भुजा गहे गोपी परबोधति, मानहु सुफल घरी।
पाती लिखि कछु स्याम पठायो, यह सुनि मनहिँ ढरी॥
निकट उपँगसुत आइ तुलाने, मानो रूप हरी।
सूर स्याम को सखा यहै री, स्रवननि सुनी परी॥
॥३४७०॥४०८८॥

राग धनाश्री

निरखत ऊधौ कौं सुख पायौ।
सुंदर सुलज सुबंस देखियत, यातैं स्याम पठायौ॥
नीकैं हरि-संदेस कहैगौ, स्रवन सुनत सुख पैहै।
यह जानति हरि तुरत आइहैँ, यह कहि हृदै सिरैहै॥
घेरि लिए रथ पास चहूँधा, नंद गोप ब्रजनारी।
महर लिवाइ गए निज मंदिर, हरषित लियौ उतारी॥
अरघ देत भीतर तिहि लीन्हौ, धनि धनि दिन कहि आज।
धनि धनि सूर उपँगसुत आए, मुदित कहत ब्रजराज॥
॥३४७१॥४०८९॥

नंद-वचन *राग मलार*

कबहुँ सुधि करत गुपाल हमारी।
पूछत पिता नंद ऊधौ सौं, अरु जसुदा महतारी॥
बहुतै चूक परी अनजानत, कहा अबकैं पछिताने।
बासुदेव घर भीतर आए, मैं अहीर करि जाने॥
पहिलैं गर्ग कह्यौ हुतौ हमसौं, संग दुःख गयौ भूल।
सूरदास स्वामी के बिछुरैं, राति दिवस भयौ सूल॥
॥३४७२॥४०९०॥

उद्धव-वचन *राग सारंग*

कह्यौ कान्ह सुनि जसुदा मैया।
आवहिंगे दिन चारि पाँच मैं, हम हलधर दोउ भैया॥
मुरली बेंत बिषान हमारौ, कहूँ अबेर सबेरो।
मति लै जाइ चुराइ राधिका, कछुक खिलौना मेरो॥
जा दिन तैं हम तुम सौं बिछुरे, काहु न कह्यौ कन्हैया।
प्रात न कियौ कलेऊ कबहूँ, साँझ न पय पियौ घैया॥

कहा कहौं कछु कहत न आवै, जननी जो दुख पायौ।
अब हमसौं वसुदेव देवकी, कहत आपनौ जायौ॥
कहिऐ कहा नंद बाबा सौं, बहुत निठुर मन कीन्हौ।
सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी, बहुरि न सोधौ लीन्हौ॥

॥३४७३॥४०९१॥

राग सारंग

हमतैं कछु सेवा न भई।
धोखैं ही धोखैं जु रहे हम, जाने नाहिं त्रिलोकमई॥
चरन पकरि कर बिनती करिबौ, सब अपराध छमा कीबै।
ऐसौ भाग होइगौ कबहूँ, स्याम गोद पुनि मैं लीबै॥
कहै नंद आगैं ऊधौ के, एक बेर दरसन दीबे।
सूरदास स्वामी मिलि अबकैं, सबै दोष निज गत कीबे॥

॥३४७४॥४०९२॥

ऊधौ कहौ साँची बात।
दधि, मह्यौ नवनीत माधव, कौन के घर खात॥
किन सखा सँग संग लीन्हे, गहे लकुटी हाथ।
कौन की गैयाँ चरावत, जात को धौं साथ॥
कौन गोपी कूल-जमुना, रहत गहि-गहि घाट॥
दान हठ कै लेत कापै, रोकि किनकी बाट॥
कौन ग्वालनि साथ भोजन, करत किनतैं बात।
कौन कैं माखन चुरावन, जात उठिकै प्रात॥
इतौ बूझत माइ जसुमति, परी मुरछित गात।
सूरदास किसोर मिलवहु, मेटि हिय की तात॥

॥३४७५॥४०९३॥

राग बिलावल

भली बात सुनियत है आज।
कोऊ कमल नैन पठयौ है, तन बनाइ अपनौ सौ साज॥
पूछत सखा कहौ कैसे हैं, अब नाहीं करिहैं कछु काज।
कंस मारि बसुद्यौ गृह आए, उग्रसेन कौं दीन्हौ राज॥

राजा भए ·कहाँ है यह सुख, सुरभी सँग बन गोप समाज।
अब सुनि सूर करै को कौतुक, ब्रज मैं नाहिँ बसत ब्रजराज ॥

॥३४७६॥४०९४॥

याते सुनियत हैं मनभावन।
वैसेइ ग्वाल गोप गोपी सब, वैसोइ भेप बनावन।
नंद नँदन पतिया लिखि पठई, आजु कालि हरि आवन ॥
वैसेइ कुंज गलिन मैं फिरि फिरि, वैसेइ बेनु बजावन ॥
वैसेइ बिहँसि बिहँसि मृदु टेरनि, वैसोइ अनँद बढ़ावन।
सूरदास वैसियै बिधि बिहरनि, वैसेइ खरिक दुहावन ॥

॥३४७७॥४०९५॥

ब्रज-नर-नारी बचन *राग सारंग*

वैसोइ रथ वैसोइ सब साज।
मानहु बहुरि बिचारि कछू मन, सुफलक सुत आयौ ब्रज आज ॥
पहिलैंइ गमन गयौ लै हरि कौं, परम सुमति रायौ रति राज।
अजहूँ कहा कियौ चाहत है, यातैं अधिक कंस कौ काज ॥
व्याध जु मृगनि बधत सुनि सजनी, सो सर काढ़ि संग नहिं लेत।
यह अक्रूर कठिन की नाईं हिएँ बिषम इतनौ दुख देत ॥
ऐसे बचन बहुत बिधि कहि कहि, लोचन भरि सींचति उर गात।
सूरदास-प्रभु अवधि जानि कै, चलीं सबै पूछन कुसलात ॥

॥३४७८॥४०९६॥

राग रामकली

ब्रज घर-घर सब होति बधाइ।
कंचन कलस दूब दधि रोचन लै बृंदावन आइ ॥
मिलि ब्रजनारि तिलक सिर कीनौ करि प्रदच्छिना तासु।
पूछत कुसल नारि नर हरपत, आए सब ब्रज-बासु ॥
सक सकात तन धक धकात उर, अकबकात सब ठाढ़े।
सूर उपँग सुत बोलत नाहीं, अति हिरदै ह्वै गाढ़े ॥

॥३४७९॥४०९७॥

राग धनाश्री

आजु ब्रज कोऊ आयौ है।
किधौं बहुरि अक्रूर क्रूर ह्वै, जियत जानि उठि धायौ है॥
मैं देख्यौ ताकौ रथ ठाढ़ौ, तुमकौं सोध बतायौ है।
कै करि कृपा दुखित दीननि पै, हरि संदेस पठायौ है॥
चलीं मिलि सिमिट सखी पूछन कौं, ऊधौ दरस दिखायौ है।
तब पहिचानि जानि प्रभु कौ भृत करनि जोरि सिर नायौ है॥
हरि हैं कुसल कुसल हौ तुमहूँ, कुसल लोग सब भायौ है।
है वह नगर कुसल सूरज-प्रभु, करि सुदृष्टि जहँ छायौ है॥
॥३४८०॥४०९८॥

राग धनाश्री

देखौ नंद-द्वार रथ ठाढ़ौ।
बहुरि सखी सुफलक सुत आयौ, पर्‌यौ सँदेह जिह गाढ़ौ॥
प्रान हमारे तबहिं लै गयौ, अब किहिं कारन आयौ।
मैं जानी यह बात सुनत प्रभु, कृपा करन उठि धायौ॥
इतने अंतर आइ उपँग सुत, तेहिं छन दरसन दीन्हौ।
तब पहिचानि सखा हरि जू कौ, परम सुचित मन कीन्हौ॥
तिहिं परनाम कियौ अति रुचि सौं, अरु सबहिनि कर जोरे।
सुनियत हुते तैसेई देखे, परम सुहृद जिय भोरे॥
तुम्हरौ दरसन पाइ आपनौ, जनम सुफल करि मान्यौ।
सूर सु ऊधौ मिलत भयौ सुख, ज्यौं, झख पायौ पान्यौ॥
॥३४८१॥४०९९॥

राग धनाश्री

बोलक इनहूँ कौ सुनि लीजै।
कैसी उठनि उठै धौं ऊधौ, तैसोइ उत्तर कीजै॥
यामैं कछू खरचियत नाहीं, अपनौ मतौ न दीजै।
कहि री सखी भागिऐ किहिं डर, चलैं जाइ सुख छीजै॥
दोउ कर जोरि भई सब सन्मुख, वचन कहौ ज्यौं जीजै।
सूर सुमति सोई दीजै, हरि बदन-सुधा रस पीजै॥
॥३४८२॥४१००॥

राग नट

ऊधौ कहौ हरि कुसलात ।
कह्यौ आवन किधौं नाहीं, बोलिऐ मुख बात ॥
एक छिन जुग जात हमकौं, बिनु सुने हरि प्रीति ।
आपु आए कृपा कीन्ही, अब कहौ कछु नीति ॥
तब उपँग सुत सबनि बोले, सुनौ श्रीमुख जोग ।
सूर सुनि सब दौरि आईं, हटकि दीन्हौ लोग ॥

॥३४८३॥४१०१॥

उद्धव-बचन *राग सारंग*

गोपी सुनहु हरि कुसलात ।
कंस नृप कौं मारि छोरे आपने पितु-मात ॥
बहुत बिधि मनुहार करि, दियौ उग्रसेनहिं राज ।
नगर लोग सुखी बसत हैं, भए सुरनि के काज ॥
मोहिं यह पाती दई लिखि, कह्यौ कछु संदेस ।
सूर निर्गुन ब्रह्म उर धरि, तजहु सकल अँदेस ॥

॥३४८४॥४१०२॥

राग केदारौ

गोपी सुनहु हरि सदेस ।
गए सँग अक्रूर मधुबन, हत्यौ कंस नरेस ॥
रजक मार्‌यौ बसन पहिरे, धनुष तोर्‌यौ जाइ ।
कुबलया चानूर मुष्टिक, दिए धरनि गिराइ ॥
मातु पितु के बंद छोरे, बासुदेव कुमार ।
राज दीन्हौ उग्रसेनहिं, चौंर निज कर ढार ॥
कह्यौ तुमकौं ब्रह्म ध्यावन, छाँडि बिषय बिकार ।
सूर पाती दई लिखि मोहिं, पढ़ौ गोप-कुमारि ॥

॥३४८५॥४१०३॥

गोपी-बचन *राग सारंग*

पाती मधुबन हीं तैं आई ।
सुंदर स्याम आपु लिखि पठई, आइ सुनौ री माई ॥

अपने अपने गृह तैं दौरीं लै पाती उर लाई।
नैननि निरखि निमेष न खंडित प्रेम-तृषा न बुझाई॥
कहा करौं सूनौ यह गोकुल, हरि बिनु कछु न सुहाई।
सूरदास ब्रज कौन चूक तैं, स्याम सुरति बिसराई॥

॥३४८६॥४१०४॥

राग सारंग

निरखतिं अंक स्याम सुंदर के बार-बार लावतिं लै छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलि कै ह्वै गइ स्याम स्याम जू की पाती॥
गोकुल बसत नंदनंदन के, कबहुँ बयारि न लागी ताती।
अरु हम उती कहा कहैं ऊधौ, जब सुनि बेनु नाद सँग जाती॥
उनकैं लाड़ बदति नहिं काहूँ, निसि दिन रसिक-रास-रस राती।
प्रान-नाथ तुम कबहि मिलौगे, सूरदास-प्रभु बाल-सँघाती॥

॥३४८७॥४१०५॥

राग सारंग

पाती मधुबन तैं आई।
ऊधौ हरि के परम सनेही, ताकैं हाथ पठाई॥
कोउ पढ़ति, कोउ धरति नैन पर, काहूँ हृदै लगाई।
कोउ पूछति फिरि फिरि ऊधौ कौं आपुन लिखी कन्हाई?
बहुरौ दई फेरि ऊधौ कौं, तब उन बाँचि सुनाई।
मन मैं ध्यान हमारो राख्यौ, सूर सदा सुखदाई॥

॥३४८८॥४१०६॥

राग सारंग

लिखि आई ब्रजनाथ की छाप।
ऊधौ बाँधे फिरत सीस पर, बाँचत आवै ताप॥
उलटी रीति नंदनंदन की, घर-घर भयौ संताप।
कहियौ जाइ जोग आराधैं, अबिगत अकथ अमाप॥
हरि आगैं कुबिजा अधिकारिनि, को जीवै इहिं दाप।
सूर सँदेस सुनावन लागे, कहौ कौन यह पाप॥

॥३४८९॥४१०७॥

भ्रमर-गीत *राग सारंग*

इहिं अंतर मधुकर इक आयौ ।
निज स्वभाव अनुसार निकट ह्वै सुंदर सब्द सुनायौ ॥
पूछन लागीं ताहिं गोपिका, कुबिजा तोहिं पठायौ ।
कीधौं सूर स्याम सुंदर कौं, हमैं सँदेसो लायौ ॥
॥३४९७॥४११५॥

राग मलार

मधुप कहा ह्याँ निरगुन गावहि ।
यह प्रिय कथा नगर-नारिनि सौं कहहि जहाँ कछु पावहि ॥
जानतिं मरम नंदनंदन कौ, और प्रसग चलावहि ।
हम नाहीं कमला सी भोरी, करि चातुरी मनावहि ॥
अति विचित्र लरिका की नाईं, गुर दिखाइ बौरावहि ।
जौ तू कितक सुमन रस लै, तजि जाइ बहुरि नहिं आवहि ॥
सुंदर मधु आनन अनुरागी, नैननि आनि पिवावहि ।
नागर रति-पति सूरदास-प्रभु किहिं विधि आनि मिलावहि ॥
॥३४९८॥४११६॥

राग धनाश्री

जाके गुन गावत दिन-रात ।
ताकौं निरगुन कहत मधुप तुम, नई सुनी यह बात ॥
जौ बादर जल बरषै निसि दिन, उमड़ि भरैं नद खात ।
स्वाति बिना नहिं कल मधुकर सुनि, खग चातक के गात ॥
बसी मधुर सुनाइ हर्‌यौ मन, दधि खायौ लै पात ।
सूर स्याम नृप राज भए अब गोपिनि देखि लजात ॥
॥३४९९॥४११७॥

राग बिलावल

(मधुप तुम) कहौ कहाँ तैं आए हौ ।
जानति हौं अनुमान आपनै, तुम जदुनाथ पठाए हौ ॥
वैसेइ बसन, बरन तन सुंदर, वेइ भूषन सजि ल्याए हौ ।
लै सरबसु सँग स्याम सिधारे, अब का पर पहिराए हौ ॥
अहो मधुप एकै मन सबकौ, सु तौ उहाँ लै छाए हौ ।
अब यह कौन सयान बहुरि ब्रज, ता कारन उठि धाए हौ ॥

मधुबन की मानिनी, मनोहर, तहीँ जात जहँ भाए हौ।
सूर जहाँ लौं स्याम गात हैं, जानि भले करि पाए हौ ॥
॥३५००॥४११८॥

राग गौरी

मधुकर जो हरि कह्यौ सु कहियै।
तब हम अब इनहीँ की दासी, मौन गहे क्यौँ रहियै ॥
जो तुम जोग सिखावन आए, निरगुन क्यौँ करि गहियै।
जो कछु लिख्यौ सोइ माथे पर, आनि परैँ सब सहियै ॥
सुंदर रूप लाल गिरिधर कौ, बिनु देखे क्यौँ रहियै।
सूरदास-प्रभु समुझि एक रस, अब कैसैँ निरबहियै ॥
॥३५०१॥४११९॥

उद्धव-वचन *राग धनाश्री*

सुनौ गोपी हरि कौ संदेस।
करि समाधि अंतर-गति ध्यावहु, यह उनकौ उपदेस ॥
वै अबिगत अबिनासी पूरन, सब-घट रहे समाइ।
तत्व ज्ञान बिनु मुक्ति नहीँ है, वेद पुराननि गाइ ॥
सगुन रूप तजि निरगुन ध्यावहु, इक चित इक मन लाइ।
वह उपाइ करि बिरह तरौ तुम, मिलै ब्रह्म तब आइ ॥
दुसह सँदेस सुनत माधौ कौ, गोपी जन बिलखानी।
सूर बिरह की कौन चलावै, बूड़तिं मनु बिनु पानी ॥
॥३५०२॥४१२०॥

गोपी-वचन *राग मलार*

मधुकर हमहीँ क्यौँ समुझावत।
बारंबार ज्ञान गीता कौ, अबलनि आगैँ गावत ॥
नँद नंदन बिनु कपट कथा कत, कहि कहि रुचि उपजावत।
एक चंदन जो अंग छुधा-रत, कहि कैसैँ सचु पावत ॥
देखि विचारि तुहीँ जिय अपने, नागर है जु कहावत।
सब सुमननि फिरि-फिरि जु निरस करि काहैँ कमल बँधावत ॥
चरन कमल, कर नयन बदन छबि, वहै कमल मन भावत ॥
सूरदास मन अलि अनुरागी, कहि कैसैँ सुख पावत ॥
॥३५०३॥४१२१॥

राग मलार

रहु रे मधुकर मधु मतवारे।
कौन काज या निरगुन सौं, चिर जीवहु कान्ह हमारे॥
लोटत पीत पराग कीच मैं, नीच न अंग सँम्हारे।
बारंबार सरक मदिरा की, अपरस रटत उघारे॥
तुम जानत हो वैसी ग्वारिनि, जैसे कुसुम तिहारे।
घरी पहर सबहिनि बिरमावत, जेते आवत कारे॥
सुंदर बदन कमल दल लोचन, जसुमति नंद-दुलारे।
तन मन सूर अरपि रहीं स्यामहिं, कापै लेहिं उधारे॥
॥३५०४॥४१२२॥

राग मलार

मधुकर कौन देस तैं आए।
जब तैं क्रूर गए लै मोहन, तब तैं भेद न पाए॥
जाने सखा स्याम-सुंदर के, अवधि बंध उठि धाए।
अंग-बिभाग नंद-नंदन के, इहिं सुरूप दरसाए॥
आसन, ध्यान, वायु आराधन, अलि मन चित तुम ताए।
अतिहिं बिचित्र सुबुद्धि सुलच्छन, गुनी जोग मत गाए॥
मुद्रा, भस्म, बिषान, त्वचा-मृग, ब्रज जुवतिनि नहिं भाए।
अतिसी कुसुम बरन मुख मुरली, सूरज-प्रभु किन ल्याए॥
॥३५०५॥४१२३॥

राग मलार

मधुकर काके मीत भए।
त्यागे फिरत सकल कुसुमावलि, मालति भुरै लए॥
छितु के बिछुरैं कमल रति मानी, केतिक कत बिंधए।
छाँडि जु देह नेह नहिं जान्यौ लै गुन प्रगट नए॥
नूतन कदंब, तमाल, बकुल, बट, परसत जनम गए।
भुज भरि नलिनि उडत उदास होइ, गत स्वारथ समए॥
भटकत फिरत पात द्रुम बेलिनि, कुसुमाकर रमए।
सूर बिमुख पद-अंबुज छाँडे, बिषयनि बिबर छए॥
॥३५०६॥४१२४॥

राग जैतश्री

मधुकर काके मीत भए।
द्यौस चारि करि प्रीति सगाई, रस लै अनत गए ॥
डहकत फिरत आपने स्वारथ, पाखँड अग्र दए।
चाँड़ सरैं पहिचानत नाहीं, प्रीतम करत नए ॥
मूड़ उचाट मेलि बौराए, मन हरि हरि जु लए।
सूरदास प्रभु धूति धर्म ढिग, दुख के बीज बए ॥
॥३५०७॥४१२५॥

राग सारंग

मधुकर हम न होहिं वै बेली।
जिन भजि तजि तुम फिरत और रँग, करत कुसुम-रस केलि ॥
बारे तैं बर बारि बढ़ी हैं, अरु पोषी पिय पानि।
बिनु पिय परस प्रात उठि फूलत, होति सदा हित हानि ॥
ये बेली बिरहीं बृंदावन, उरझीं स्याम तमाल।
प्रेम-पुहुप-रस-बास हमारे, बिलसत मधुप गोपाल ॥
जोग समीर धीर नहिं डोलतिं, रूप डार दृढ़ लागीं।
सूर पराग न तजतिं हिए तैं, श्री गुपाल अनुरागीं ॥
।३५०८॥४१२६॥

राग सारंग

मधुकर कहाँ पढ़ी यह नीति।
लोक वेद सब ग्रंथ रहित यह, कथा कहत बिपरीति ॥
जनम भूमि ब्रज सखी राधिका, केहिं अपराध तजी।
अति कुलीन गुन रूप अमित सुख, दासी जाइ भजी ॥
जोग समाधि वेद-गुनि मारग, क्यौं समुझैं जु गँवारि।
जो पै गुन अतीत व्यापक है, तौ हम काहैं न्यारि ॥
रहि अलि ढीठ कपट स्वारथ हित, तजि बहु बचन बिसेषि।
मन क्रम बचन बचतिं इहिं नातैं, सूर स्याम तन देखि ॥
॥३५०९॥४१२७॥

राग मलार

मधुकर काहे कौं गोकुल आए।
हम वैसी हीं सचु अपने मैं दूने बिरह जगाए ॥

जानति हैं तुम जिनहिं पठाए, स्याम सँदेसो लाए।
जन्म जन्म के दूत तिरोचन, कौन हिलार लाए॥
कहा करहिं कहँ जाहिं सखी री, हरि बिनु कछु न सोहाए।
जनम सुफल सूरज तिनको, जे काज पराए धाए॥

॥३५१०॥४१२८॥

राग मलार

आए माई दुरँग स्याम के संगी।
जो पहिलैं रँग रँगे स्याम के, तिनहीं की बुधि रंगी॥
हमरी उनकी सी मिलवत हौ, तातैं भए विहंगी।
सूधी कहि सखिहिनि समुझावत, ते साँचे सरबंगी॥
औरनि कौ सरबस लै मागत, आपुन भए अभंगी।
सूर सुनाम सिलीमुख जो पै, बेधन कवच उपंगी॥

॥३५११॥४१२९॥

राग मलार

कोउ माई मधुवन तैं आयौ।
सखी सिमिट सब सुनौ सयानी, हित करि कान्ह पठायौ॥
जो मोहन बिछुरे तैं गोकुल, इते दिवस दुख पायौ।
सो इन कमलनैन करुनामय, हिरदै माँझ बतायौ॥
जाकौं जोगी जतन करत हैं, नेकहुँ ध्यान न आयौ।
सो इन परम उदार मधुप ब्रज-वीथिनि माँझ बहायौ॥
अति कृपालु आतुर अबलनि कौं, व्यापक अगह गहायौ।
समुझि सूर सुख होत स्रवन सुनि, नेति जु निगमनि गायौ॥

॥३५१२॥४१३०॥

राग सारग

परी पुकार द्वार गृह गृह तैं, सुनो सखी इक जोगी आयौ।
पवन सधावन, भवन ढहावन, रवन रसाल, गोपाल पायौ॥
आसन बाँधि, परम ऊरध चित, चनत न तिनहिं कहा हित ल्यायौ।
कनक बेलि, कामिनि ब्रजबाला, जोग अगिनि दहिबे कौं धायौ॥

भव-भय हरन, असुर मारन हित, कारन कान्ह मधुपुरी छायौ।
जादव मैं ब्रज एकौ नाहीं, काहैं उलटौ जस बिथरायौ॥
सुथल जु स्याम थाम मैं बैठौ, अबलनि प्रति अधिकार जनायौ।
सूर बिसारी प्रीति साँवरे, भली चतुरता जगत हँसायौ॥
॥३५१३॥४१३१॥

राग सारंग

देन आए ऊधौ मत नीकौ।
आवहु री मिलि सुनहु सयानी, लेहु सुजस कौ टीकौ॥
तजन कहत अंबर आभूषन, गेह नेह सुत ही कौ।
अंग भस्म करि सीस जटा धरि, सिखवत निरगुन फीकौ॥
मेरे जान यहै जुवतिनि कौ, देत फिरत दुख पी कौ।
ता सराप तैं भयौ स्याम तन, तउ न गहत डर जी कौ॥
जाकी प्रकृति परी जिय जैसी, सोच न भली बुरी कौ।
जैसैं सूर ब्याल रस चाखैं, मुख नहिं होत अमी कौ॥
॥३५१४॥४१३२॥

राग नट

(ऊधौ) नैंकु सुजास हरि कौ स्रवननि सुन।
कंकन काँच, कपूर करर सम, सुख दुख, गुन औगुन॥
नाम उनहिं कौ सुनत गेह तजि, जाइ बसत नर कानन।
परम हंस बहुतक देखियत हैं, आदत भिच्छा माँगन॥
बालि, कपिन कौ राउ, सँहारयौ, लोक-लाज-डर डारी।
सूपनखा की नाक निपाती, तिय बस भए मुरारी॥
बलि, सो बाँधि पताल पठायौ, कीन्हे जग्य बनाइ।
सूर प्रीति जानी नइ हरि की, कथा तजी नहिं जाइ॥
॥३५१५॥४१३३॥

राग सोरठ

ऊधौ स्याम सखा तुम साँचे।
की करि लियौ स्वाँग बीचहि तैं, वैसहिं लागत काँचे॥
जैसी कही हमहिं आवत ही, औरनि कहि पछिताते।
अपनौ पति तजि और बतावत, मेहमानी कछु खाते॥

तुरत गमन कीजै मधुबन कों, इहाँ कहा यह लाए।
सूर सुनत गोपिनि की बानी, ऊधो सीस नवाए॥
॥३५१६॥४१३४॥

राग नट

ऊधौ बेगि मधुबन जाहु।
जोग लेहु सँभारि अपनो, बेचिये जहँ लाहु॥
हम बिरहिनी नारि, हरि बिनु कौन करै निबाहु।
तहाँ दीजै मूल पूरै, नफो तुम कछु खाहु॥
जो नहीं ब्रज मैं बिकानौ, नगर नारि बिसाहु।
सूर वै सब सुनत लैहैं, जिय कहा पछिताहु॥
॥३५१७॥४१३५॥

राग धनाश्री

ऊधौ और कछू कहिबे कौं?
मन मानै सोऊ कहि डारौ, हम सब सुनि सहिबे कौं॥
यह उपदेस आजु लौं ऐसौ, काननि सुन्यौ न देख्यौ।
नीरस कटुक तपत अति दारुन, चाहत हम उर लेख्यौ॥
निसि दिन बसत नैकु नहिं निकसत, हृदय मनोहर ऐन।
याकौं यहाँ ठौर नाहीं है, लै राखौ जहँ चैन॥
ब्रजबासी गोपाल उपासी, हमसौं बातैं छाँडि।
सूर जोग धन राखि मधुपुरी, कुबिजा के घर गाड़ि॥
॥३५१८॥४१३६॥

राग सोरठ

ऊधौ कहौ कहन जो पारौ।
नाहीं बलि कछु दोष तिहारौ, सकुचि साथ जनि मारौ॥
नाहीं ब्रज बसि नंदलाल कौ, बाल-बिनोद निहारौ।
नाहीं रास रसिक रस चाख्यौ तोडि लई सो डारयौ॥
जौ नहिं गयौ सूर प्रीतम सँग, प्रान त्यागि तन न्यारौ।
तौ अब बहुत देखिबे, सुनिबे, कहा करम सौं चारौ॥
॥३५१९॥४१३७॥

राग नट

जाहु जाहु ऊधौ जाने हौ ।
जैसे हरि तैसे तुम सेवक, कपट चतुरई साने हौ ॥
निरगुन ज्ञान कहाँ तुम पायौ कौन सीख व्रज आने हौ ।
यह उपदेस देहु लै कुबिजहिं, जाकैं रूप लुभाने हौ ॥
कहँ लगि कहौं जोग की बातैं, बाँचत नैन पिराने हौ ।
सूरदास-प्रभु हम सब खोटी, तुम तौ बारह बाने हौ ॥
॥३५२०॥४१३८॥

राग गौरी

ऊधौ जाहु तुमहिं हम जाने ।
स्याम तुमहिं ह्याँ कौं नहिं पठयौ, तुम हौ बीच भुलाने ॥
ब्रजनारिनि सौं जोग कहत हौ, बात कहत न लजाने ।
बड़े लोग न विवेक तुम्हारे, ऐसे भए अयाने ॥
हमसौं कही लई हम सहि कै, जिय गुनि लेहु सयाने ।
कहँ अबला कहँ दसा दिगंबर, मष्ट करौ पहिचाने ॥
साँच कहौं तुमकौं अपनी सौं, बूझतिं बात निदाने ।
सूर स्याम जब तुमहिं पठायौ, तब नैंकहुँ मुसकाने ॥
॥३५२१॥४१३९॥

राग काफी

जोग उलटि लै जाहु (ऊधौ) भजिहैं नंदकिसोर ।
हमहिं तहाँ लै जाहु (ऊधौ) जहाँ बसैं चित चोर ॥
मोहन मूरति साँवरी, चित मैं रही समाइ ।
देखौ ऊधौ न्याउ कै, जोग कियौ क्यौं जाइ ॥
पूरन पूरन तुम कहौ, हाँ पूरन ह्याँ कौन ।
ऊधो जौ जिय जानि कै, देत जरे पर लौन ॥
जोगहिं जोग मिलाइये, हम या जोग अजोग ।
ऊधौ करनी सार है, आपु जोग यह जोग ॥
मधुर बचन जे तुम कहौ, ते हम चित न समाहिं ।
ऊधौ जोगहु ना छुएँ, छुएँ तौ प्रेम लजाहिं ॥

हमें जु आसा कृष्न की, देखें जीवन प्रान।
सूरदास प्रभु साँवरो, नागर चतुर सुजान॥
॥३५२२॥४१४०॥

राग गौरी

कहति कहा ऊधो सौं बौरी।
जाकौं सुनतिं रहे हरि के ढिग, स्याम सखा यह सो री?
कहा कहति री मैं पत्याति नहिं सुनी तुहीं कहनावति॥
हमकौं जोग सिखावन आए यह तेरे मन आवति।
करनी भली भलेई जानैं, कुटिल कपट की खानि॥
हरि कौ सखा नहीं री माई, यह मन निहचै जानि।
कहाँ रास-रस कहाँ जोग धरि, इतने अनर भाषत॥
सूर सबै तुम भईं बावरी, याकौ पति कह राखत।
॥३५२३॥४१४१॥

राग कान्हरौ

ऐसेई जन धूत कहावत।
मोकौं एक अचभौ आवत, यामैं वै कछु पावत॥
वचन कठोर कहत कहि दाहत, अपनौ महत गँवावत।
ऐसी प्रकृति परी काहू की, जुवतिनि ज्ञान बतावत॥
आपुन निलज रहत नख सिख लौं एते पर पुनि गावत।
सूर कहत परससा अपनी, हारेहुँ जीति कहावत॥
॥३५२४॥४१४२॥

राग मलार

ऐसे जन बेसरम कहावत।
सोच विचार कछू इनकैं नहिं कहि डारत जो आवत॥
अहि के गुन इनमैं परिपूरन, यामैं कछू न पावत।
लघुता लहत महत करि यौं हँसि, नारिनि जोग बतावत॥
ब्रज मैं हीन भए अब जैहैं, अनतहुँ ऐसेहिं गावत।
सूर स्वभाव पर्यौ जिहिं जैसौ, सो कैसैं बिसरावत॥
॥३५२५॥४१४३॥

राग कान्हरौ

प्रकृति जो जाकैं अंग परी।
स्वान पूँछ कोउ कोटिक लागै, सूधी कहुँ न करी॥
जैसें काग भच्छ नहिं छाँड़ै, जनमत जौन घरी।
धोए रंग जात नहिं कैसैहुँ, ज्यौं कारी कमरी॥
ज्यौं अहि डसत उदर नहिं पूरत, ऐसी धरनि धरी।
सूर होउ सो होइ सोच नहिं, तैसेइ एऊ री॥
॥३५२६॥४१४४॥

राग सारंग

ऊधौ होउ आगे तैं न्यारे।
तुम देखत तन अधिक दहत है, अरु नैननि के तारे॥
अपनौ जोग सैंति किन राखहु, इहाँ देत कत डारे।
सो को जो अपने सुख खैहै, मीठे तजि फल खारे॥
हम गिरिधर के नाम गुननि बस, और काहि उर धारे।
सूरदास हम सब एकै मत, तुम सब खोटे कारे॥
॥३५२७॥४१४५॥

राग कल्याण

जाहु जाहु आगे तैं ऊधौ, हौं तौ पति राखति हौं तेरी।
काहे कौं अब रोष दिखावत, देखत आँखि बरति है मेरी॥
तुम जु कहत संतत हैं गोविंद, सुनियत हैं कुबिजा उन घेरी।
दोउ मिले तैसेई तैसे, वै अहीर, वह कंस की चेरी॥
तुम सारिखे बसीठ पठाए, कहिऐ कहा बुद्धि उन केरी।
सूर-स्याम वह सुधि बिसराई, देत फिरत ग्वालनि सँग हेरी॥
॥३५२८॥४१४६॥

राग सारंग

समुझि न परति तिहारी ऊधौ।
ज्यौं त्रिदोप उपजैं जक लागत, बोलत बचन न सूधौ॥
आपुन कौ उपचार करौ अति तब औरनि सिख देहु।
बड़ौ रोग उपज्यौ है तुमकौं भवन सवारैं लेहु॥

हाँ भेषज नाना भाँतिन के, अरु मधु-रिपु से वैद।
हम कातर डरपतिं अपनैं सिर, यह कलंक है खेद॥
साँची बात छाँड़ि अलि तेरी, झूठी को अब सुनिहै।
सूरदास मुक्ताहल भोगी, हंस ज्वारि क्यौं चुनिहै॥
॥३५२९॥४१४७॥

राग सोरठ

हम अलि गोकुलनाथ अराध्यो।
मन, क्रम, बच हरि सौं धरि पतिव्रत, प्रेम-जोग तप साध्यौ॥
मातु पिता हित, प्रीति, निगम पथ तजि, दुख सुख भ्रम नाख्यौ।
मानऽपमान परम परितोषी, सुस्थल थिति मन राख्यौ॥
सकुचासन कुल सील करषि, करि, जगत बंध करि बंदन॥
मौनऽपवाद पवन आरोधन, हित-क्रम काम निकंदन॥
गुरु जन कानि अगिनि चहुँ दिसि, नभ नरनि ताप बिनु देखे।
पिवत धूम उपहास जहाँ तहँ, अपजस स्रवन अलेखे॥
सहज समाधि सारि बपु बानक निरखि, निमेष न लागत।
परम ज्योति प्रति अंग माधुरी, धरतिं यहै निसि जागत॥
त्रिकुटि संग भ्रूभंग, तराटक, नैन नैन लगि लागैं।
हँसनि प्रकास सुमुख कुंडल मिलि, चंद सूर अनुरागैं॥
मुरली अधर स्रवन धुनि सो सुनि, सबद अनाहद कानैं।
बरषत रस रुचि बचन संग सुख, पद आनंद समानैं॥
मंत्र दियौ मन जात भजन लगि, ज्ञान ध्यान हरि ही कौ।
सूर कहौ गुरु कौन करै अलि, कौन सुनै मत फीकौ॥
॥३५३०॥४१४८॥

मैं मन मोल गुपालहि दीन्हौ।
अंबुज बदन रसिक गिरिधर कौ, रूप नयन निरखन कौं लीन्हौ॥
इन तौ कर गहि लियौ आपनौ, उन तौ बातैं कछू न कीन्हौ।
वै लै गए चुराइ मोहि इन चितवन चितवत पल छीनौ॥
अब वै पलक न देन अपुन तैं इन जान्यौ यातैं भयौ हीनौ।
सूरदास मन मोहन पिय तैं तोरि सनेह बिथारैं दीनौ॥
॥३५३१॥४१४९॥

राग धनाश्री

ऊधौ हम आजु भईं बड़ भागी।
जिन अँखियनि तुम स्याम बिलोके, ते अँखियाँ हम लागीं॥
जैसैं सुमन बास लै आवत, पवन मधुप अनुरागी।
अति आनंद हेत है तैसैं, अंग-अंग सुख रागी॥
ज्यौं दरपन मैं दरस देखियत, दृष्टि परम रुचि लागी।
तैसैं सूर मिले हरि हमकौं, बिरह-बिथा तन-त्यागी॥
॥३५३२॥४१५०॥

राग सारंग

बिलग जनि मानौ हमरी बात।
डरपतिं बचन कठोर कहत अलि, मति बिनु पति उठि जात॥
जो कोउ कहै जरै कछु अपनैं फिरि पाछैं पछितात।
जो प्रसाद पावत तुम ऊधौ, कृष्न नाम लै खात॥
मन जु तिहारो हरि चरननि तर, अचल रहत दिन प्रात।
सूर स्याम तैं जोग अधिक है, कत कहि आवै बात॥
॥३५३३॥४१५१॥

राग सारंग

(अलि हौं) कैसैं कहौं हरि के रूप रसहिं।
अपने तन मैं भेद बहुत बिधि, रसना जानै न नैन दसहिं॥
जिन देखे ते आहिं बचन बिनु, जिनहिं बचन दरसन न तिसहिं।
बिनु बानी ये उमँगि प्रेम जल, सुमिरि-सुमिरि वा रूप जसहिं॥
बार-बार पछितात यहै कहि, कहा करौं जो बिधि न बसहिं।
सूर सकल अंगनि की यह गति, क्यौं समुझावैं छपद पसुहिं॥
॥३५३४॥४१५२॥

राग केदारौ

हम तौ सब बातनि सचु पायौ।
गोद खिलाइ पिवाइ देह पय, पुनि पालनैं झुलायौ॥
देखति रही फनिग की मनि ज्यौं, गुरुजन ज्यौं न भुलायौ।
अब नहिं समुझति कौन पाप तैं, बिधना सो उलटायौ॥

बिनु देखैं पल-पल नहिं छिन-छिन, ये ही चित ही चायौ।
अबहिं कठोर भए ब्रजपति-सुत, रोवत मुँह न धुवायौ॥
तब हम दूध, दही के कारन, घर-घर बहुत खिझायौ।
सो अब सूर प्रगट ही लाग्यौ, योगरु ज्ञान पठायौ॥

॥३५३५॥४१५३॥

राग सारंग

सो को जिहिं नाहीं सचु पायौ, बलि गुपाल कैं राज।
ऊधौ इहै संपदा हरि की, आवै सबकैं काज॥
धनुष तोरि, गज मारि मल्ल मथि, किए निडर जदुबंस।
इन औरौ अमरनि सुख दीन्हौं, करषि केस सिर कंस॥
कुब्जिहिं रूप दियौ नंदनंदन, माली कौं हित काम।
उग्रसेन बसुदेव देवकी, आने अपने धाम॥
दीन दयाल दयानिधि मोहन, हैं हमरे इक आस।
सूर-स्याम हरिहैं जु कृपा करि, इन नैननि की प्यास॥

॥३५३६॥४१५४॥

राग धनाश्री

मधुकर कहिऐ काहि सुनाइ।
हरि बिछुरत हम जिते सहे दुख, जिते बिरह के घाइ॥
बरु माधौ मधुबन ही रहते, कत जसुदा कैं आए।
कत प्रभु गोप-बेष ब्रज धरि कै, कत ये सुख उपजाए॥
कत गिरि धर्‌यो, इंद्र मद मेर्‌यौ, कत बन रास बनाए।
अब कहा निठुर भए अबलनि कौं, लिखि लिखि जोग पठाए॥
तुम परबीन सबै जानत हौ, तातैं यह कहि आई।
अपनी को चालै सुनि सूरज, पिता जननि बिसराई॥

॥३५३७॥४१५५॥

कहौ तौ दुख आपनौं सुनाऊँ।
जुवतिनि सौं कहि कथा जोग की, सामग्री कहँ पाऊँ॥
ऊधौ कहँ सृंगी अरु सेली, केती भस्म जराऊँ।
सोलह सहस सुंदरी काजैं, मृगछाला कहँ पाऊँ॥

रूप न रेख वरन वपु जाके, कैसे ध्यान धराऊँ ॥
सूरदास स्वामी विनु मुख तैं, कहौ काके गुन गाऊँ ॥
॥३५३८॥४१५६॥

उद्धव-वचन *राग धनाश्री*

जानि करि वावरी जनि होहु ।
तत्व भजैं वैसी ह्वै जैहौ, पारस परसैं लोहु ॥
मेरौ वचन सत्य करि मानौ, छाँड़ौ सबकौ मोहु ।
तौ लगि सब पानी की चुपरी, जौ लगि अस्थित दोहु ॥
अरे मधुप! वातैं ये ऐसी, क्यौं कहि आवति तोह ।
सूर सुवस्ती छाड़ि परम सुख, हमैं बतावत खोह ॥
॥३५३९॥४१५७॥

गोपी-वचन *राग सारंग*

कहिवैं जिय न कछू सक राखौ ।
लाँबी मेलि दई है तुमकौं, वकत रहौ दिन आखौ ॥
जाकी बात कहौ तुम हमकौं, सुधौं कहौ को काँधी ।
तेरौ कहौ पवन कौ भुस भयौ, वह्यौ जात ज्यौं आँधी ॥
कत स्रम करत सुनत को ह्याँ है, होत जु बन कौ रोयौ ।
सूर इते पर समुझत नाहीं, निपट दई कौ खोयौ ॥
॥३५४०॥४१५८॥

राग धनाश्री

तुम तौ कहत सँदेसौ आनि ।
कहा कहैं वा नंदनँदन सौं, होत नहीं हित हानि ॥
जुगुति मुकुति किहिं काज हमारैं, जदपि महा सुख खानि ।
सनी सनेह स्याम सुंदर सौं, हिलि मिलि कै मन मानि ॥
सोहत लोह परसि पारस कौं ज्यौं सुवरन वर वानि ।
पुनि वह कहा चारु चुंबक सौं, लटपटाइ लपटानि ?
रूप रहित निरगुन नीरस नित, निगमहु परत न जानि ।
सूरजदास कौन विधि तासौं, अब कीजै पहिचानि ॥
॥३५४१॥४१५९॥

राग सारंग

मधुकर भली सुमति यह खोई ।
हाँसी होन लगी है ब्रज मैं, जोगहिं राखहु गोई ॥
आतम ब्रह्म लखावत डोलत, घट घट व्यापक जोई ।
चाँपे कोख फिरत निरगुन गुन, इहाँ न गाहक कोई ॥
प्रेम-कथा सोई पै जानै, जापै बीती होई ।
तू नीरस एती कह जानै, बूझि देखियै लोई ॥
बडो दूत तू बडी ठौर को, बड़ी बुद्धि सु बुड़ोई ।
सूरदास पूरो है षटपद, कहत फिरत है सोई ॥

॥३५४२॥४१६०॥

राग सारंग

ऊधो हम हैं हरि की दासी ।
काहे कौं कटु बचन कहत हौ, करत आपनी हाँसी ॥
हमरे गुनहिं गाँठि किन बाँधौ, हम कह कियौ बिगार ।
जैसी तुम कीन्ही सो सबहीं, जानत है ससार ॥
जो कुछ भली बुरी तुम कहिहौ सो सब हम सहि लैहैं ।
आपन कियौ आपही भुगतहिं, दोष न काहू दैहैं ॥
तुम तौ बड़े बडे कुल जनमे, अरु सबके सरदार ।
यह दुख भयौ सूर के प्रभु सौं, कहत लगे बन छार ॥

॥३५४३॥४१६१॥

राग देवगधार

ऊधो हरि गुन हम चकडोर ।
गुन सौं ज्यौं भावै त्यौं फेरौ, यहै बात कौ ओर ॥
पैंड पैंड चलिये तौ चलिये, ऊबट रपटै पाइँ ।
चकडोरी की रीति यहै फिरि, गुन हीं सौं लपटाइ ॥
सूर सहज गुन ग्रथि हमारैं, दई स्याम उर माहिं ।
हरि के हाथ परैं तौ छूटै, और जतन कछु नाहिं ॥

॥३५४४॥४१६२॥

राग धनाश्री

मधुप कहि जानत नाहीं बात।
फूँकि फूँकि हियरौ सुलगावत, उठि न इहाँ तैं जात॥
जिहिं उर बसत जसोदा-नंदन, निरगुन कहाँ समात।
कत भटकत डोलत पुहुपनि कौं, पान करत किन पात॥
जद्पि सकल बेली बन बिहरत, बसत जाइ जलजात।
सूरदास ब्रज मिलवन आए, दासी की कुसलात॥
॥३५४५॥४१६३॥

मधुप तुम्हारी बात अटपटी, सुनि आवति है हाँसी।
कहियौ कौन अंग अबलनि सौं, कथत जोग अबिनासी॥
तिनकौ कहा आन सौं नातौ, जे हैं घर की दासी।
अपने प्रान प्रेम पोषन लगीं, मीन नीर लौं बासी॥
नेम न तजत तजत बरु तन कौं, बधिक न छोरत फाँसी।
सूरदास गोपाल दरस बिनु, क्यौं जीवैं ब्रजबासी॥
॥३५४६॥४१६४॥

राग धनाश्री

मधुकर छाँड़ि अटपटी बातैं।
फिरि-फिरि बार-बार सोइ सिखवत, हम दुख पावतिं जातैं॥
हम दिन देतिं असीस प्रात उठि, बार खसौ मत न्हातैं।
तुम निसि दिन उर अंतर सोचत, ब्रज जुवतिनि की घातैं॥
पुनि-पुनि तुमहिं कहत कत आवै, कछुक सकुच है नातैं।
सूरदास जे रँगीं स्याम रँग, फिरि न चढ़ै रँग यातैं॥
॥३५४७॥४१६५॥

राग सारंग

एक बात दुहुँ भाँति अटपटी, कहि अलि कहा बिचारैं।
हरि मधुपुरी रहे जौ थिर ह्वै, हम दिन क्यौं करि टारैं॥
ब्रज-बनिता गति और भई है, पूरब दसा निहारैं।
सुखकर सब प्रतिकूल भए हैं, क्यौं हरि इत पगु धारैं॥
मधुर सकल खग कटुक बदत हैं, चंद अगिनि अनुसारैं।
सुमन बान सम, गुहा कुंज गृह, धूम मरुत तन जारैं॥

पलट भयौ ब्योहार देखियत, को धौं दुख तैं तारै।
समाधान नहिं होत किहूँ बिधि, करत बहुत उपचारै॥
हम सी बहुत बहुत या ब्रज मैं, कहियो नंदकुमारैं।
सूरदास-प्रभु तौलौं रहियौ, जौ लौं दुरति निवारैं॥

॥३५४८॥४१६६॥

राग मलार

क्यों मन मानत है इन बातनि।
पाए जानि सकल गुन मधुकर, बेइ साँवरे गातनि॥
प्रथम प्रेम निसिहू न तजत अब, सकुचत हौ जलजातनि।
नीरस जानि निकट नहिं आवत, देखि पुराने पातनि॥
सुनियत कथा काग कोकिल की, कपट रंग की रातनि।
निसि-दिन स्रम सेवा कराइ उडि, अंत मिले पितु मातनि॥
बेनु बजाइ सुधाकर हरि मुख, बन बोली अधरातनि।
अति रति लोभ तजत नहिं इक छिन, पठै सकत नहिं प्रातनि॥
बालि जीति जिन बलि बंधन किए, लुब्धक की सी घातनि।
को पतियाई सु धौं सूरज कहि, संकरषन के भ्रातनि॥

॥३५४९॥४१६७॥

राग सारंग

उलटी रीति तिहारी ऊधौ, सुनै सो ऐसी को है।
अलप बयस अबला अहीरि सठ तिनहिं जोग कत सोहै॥
बूची खुभी, आँधरी काजर, नकटी पहिरै बेसरि।
मुडली पटिया पारौ चाहै, कोढ़ी लावै केसरि॥
बहिरी पति सौं मतौ करै तौ, तैसोइ उत्तर पावै।
सो गति होइ सबै ताकी जो, ग्वारिनि जोग सिखावै॥
सिखई कहत स्याम की बतियाँ, तुमकौं नाहीं दोप।
राज काज तुम तैं न सरैगौ, काया अपनी पोप॥
जाते भूलि सबै मारग मैं, इहाँ आनि का कहते।
भली भई सुधि रही सूर, नतु मोह धार मैं बहते॥

॥३५५०॥४१६८॥

राग सारंग

सौँति धरौ यह जोग आपनौ, ऊधौ पाइँ परौँ।
कहँ रस-रीति, कहाँ तन सोधन, सुनि सुनि लाज मरौँ ॥
चंदन छाँड़ि विभूति वतावत, यह दुख कौन जरौँ।
सगुन रूप जु रहत उर अंतर, निरगुन कहा करौँ ॥
निसि दिन रसना रटत स्याम, गुन, का करि जोग भरौँ।
नासा कर गहि ध्यान सिखावत, वेसरि कहाँ धरौँ ॥
मुद्रा न्यास अंग आभूषन, पतिव्रत तैं न टरौँ।
सूरजदास यहै व्रत मेरैं, हरि पल नहिं विसरौँ ॥

॥३५५१॥४१६९॥

मधुकर जुवती जोग न जानैं।
एक पतिव्रत हरि रस जिनकैं, और हृदै नहिं आनैं।
जिनके रँग रस रस्यौ रैनि-दिन, तन मन सुख उपजायौ ॥
जिन सरवस हरि लियौ रूप धरि, वहै रूप मन भायौ।
तू अति चपल आपनैं रस कौ, या रस मरम न जानै ॥
पूछौ सूर चकोर चंद, चातक घन केवल मानै।

॥३५५२॥४१७०॥

राग सारग

मधुकर हम अजान मति भोरी।
यह मत जाइ तहाँ उपदेसौ, नागरि नवल किसोरी ॥
कंचन कौ मृग कौनैं, देख्यौ, किन वाँध्यौ गहि डोरी।
कहि धौं मधुप वारि तैं माखन, कौनैं भरी कमोरी ॥
विनुहीं भीत चित्र किन कीन्हौ, किन नभ घाल्यौ झोरी।
कहौ कौन पै कढ़त कनूका, जिन हठि भुसी पछोरी ॥
निरगुन ज्ञान तुम्हारौ ऊधौ, हम अवला मति थोरी।
चाहति सूर स्याम मुख चंदहिं, अखियाँ तृपित चकोरी ॥

॥३५५३॥४१७१

राग विहागरौ

ऊधौ कैसे हैं वे लोग
करि वहु प्रेम गह्यौ अविवेकहिं, लिखि लिखि पठवत जोग ॥

कीजै कहा नहीं बस काहू, व्यापत बिरह-बियोग ।
सूरदास-प्रभु मिलौ कृपा करि, गोपिनि व्यापत रोग ॥

।३५५४॥४१७२॥

राग मारू

ऊधौ काल चाल औरासी ।
मन हरि मदनगुपाल हमारौ, बोलत घोल उदासी ॥
अब हम कहा करैं एते पर, जोग कहत अबिनासी ।
गुप्त गोपाल करी रस लीला, हम लूटी सुख रासी ॥
नैन उमगि चले हरि के हित, बरपत हैं बरपा सी ।
रसना सूर स्याम के रस बस, चातक हू तैं प्यासी ॥

॥३५५५॥४१७३॥

मधुकर ब्रज कौ बसिबौ नीको ।
बछरा धेनु चरावत बन मैं, कान्ह सबनि कौ टीको ।
बृंदावन मैं होत कुलाहल, गरजत सुर मुरली कौ ।
ठाढ़ौ जाइ कदम की छहियाँ, माँगत दान मही कौ ॥
उपजत प्रेम प्रीति अंतरगत, गावत जस हरि पी कौ ।
सूरदास प्रभु इतनोइ लेखौ, प्रान हमारे जी कौ ॥

॥३५५६॥४१७४॥

राग धनाश्री

अँखियाँ हरि दरसन की भूखीं ।
कैसैं रहति रूप-रस राँची, ये बतियाँ सुनि रूखी ॥
अवधि गनत, इकटक मग जोवत, तब इतनौ नहिं भूखीं ।
अब यह जोग सँदेसौ सुनि-सुनि, अति अकुलानी दूखीं ॥
बारक वह मुख आनि दिखावहु, दुहि पय पिवत पतूखी ।
सूर सुकत हठि नाव चलावत, ये सरिता हैं सूखी ॥

॥३५५७॥४१७५॥

राग धनाश्री

अँखियाँ हरि दरसन की प्यासी ।
देख्यौ चाहतिं कमलनैन कौं निसि दिन रहतिं उदासी ॥

आए उधौ फिरि गए आँगन, डारि गए गर फाँसी।
केसरि तिलक मोतिनि की माला, वृंदावन के वासी॥
काहू के मन की कोउ जानत, लोगनि के मन हाँसी!
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस कौं, करवत लैहौं कासी॥

॥३५५८॥४१७६॥

हमरे प्रथमहिं नेह नैन कौ।
वह रस रूप नीर कहँ पैयत, यह पय ज्ञानऽरु वैन कौ॥
जानतिं लोचन भरि नहिं देखे, तन रस कोटिक मैन कौ।
तू वकवाद करै केतौ ही, नहिं सुख निमिषहु रैन कौ॥
कह जानै रस सागर की गति, षट्‌पद वंसज ऐन कौ।
सूरदास प्रभु इतने कोमल, अलि उपज्यौ दुख दैन कौ॥

॥३५५९॥४१७७॥

राग धनाश्री

नैननि उहै रूप जौ देखौं।
तौ ऊधौ यह जीवन जग कौ साँच सुफल करि लेखौं॥
लोचन चपल चारु खंजन, मन-रंजन हृदय हमारे।
सुरँग कमल मृग मीन मनोहर, सेत, अरुन अरु कारे॥
रत्न जटित कुंडल स्रवननि वर परति कपोलनि झाँई।
मनु दिनकर प्रतिबिंब मुकुर महँ, ढूढ़त यह छवि पाई॥
मुरली अधर विकट भौंहैं करि, ठाढ़ौ होन त्रिभंग।
मुक्त माल उर नील-सिखर तैं, धँसी धरनि जनु गंग॥
और वेष को कहै वरनि सब, अँग-अँग केसरि खौर।
देखें बने, कहत रसना सौं, सूर बिलोकत और॥

॥३५६०॥४१७८॥

राग धनाश्री

नैननि नंद-नंदन ध्यान।
तहाँ यह उपदेस दीजै, जहाँ निरगुन ज्ञान॥
पानि पल्लव रेख गनि गुन अवधि विविध विधान।
इते पर इन कटुक वचननि, क्यौं रहैं तन प्रान॥

चंद कोटि प्रकास मुख, अवतंस कोटिक भान ।
कोटि मन्मथ वारि छवि पर, निरखि दीजत दान ॥
भृकुटि कोटि कोदंड रुचि, अवलोकनी संधान ।
कोटि वारिज बक्र नैन कटाच्छ कोटिक बान ॥
मनि कंठ हार, उदार उर, अतिसय बन्यौ निरमान ।
संख, चक्र, गदा धरे कर पद्म सुधा निधान ॥
स्याम तनु पट पीत की छवि, करै कौन बखान ।
मनहु नृत्यत नील-घन मैं, तड़ित देती भान ॥
रास-रसिक गुपाल मिलि, मधु अधर करतीं पान ।
सूर ऐसे स्याम बिनु, को इहाँ रच्छक आन ॥

॥३५६१॥४१७९॥

राग गूजरी

ऊधौ इन नैननि नेम लियौ ।
नंद नँदन सौं पतिव्रत राख्यौ, नाहिंन दरस बियौ ॥
चंद चकोर स्वाति सौं चातक, जैसैं बँध्यौ हियौ ।
ऐसैंही इन नैननि इकटक, हरि सौं प्रेम कियौ ॥
आए पुहुप-ज्ञान लै इन दृग, मधुपनि रुचि न कियौ ।
हरि-मुख कमल अमी-रस सूरज, चाहत बहै पियौ ॥

॥३५६२॥४१८०॥

राग कान्हरौ

ऊधौ नैननि यह व्रत लीन्हौ ।
स्वाति बिना ऊसर सब भरियत, ग्रीव रंध्र मत कीन्हौ ॥
मुरली गरज तात मुकता तनु मेघ ध्यान जल दीन्हौ ।
बरु ये प्रान जाइँ ऐसैं ही, बचन होइ क्यौं हीनौ ॥
तुम आए लै जोग सिखावन, सुनत महा दुख दीनौ ।
कैसैं सूर अगोचर लहियै, निगम न पावत चीनौ ॥

॥३५६३॥४१८१॥

राग सारंग

जब तैं सुंदर बदन निहार्‌यौ ।
ता दिन तैं मधुकर मन अटक्यौ, बहुत करी निकरै न निकार्‌यौ ॥

मातु, पिता, पति, बंधु, सुजन नहिं, तिनहूँ कौ कहिबौ सिर धार्‍यौ।
रही न लोक लाज मुख निरखत, दुसह क्रोध फीकौ करि डार्‍यौ॥
ह्वैबौ होइ सु होइ कर्मबस, अब जी कौ सब सोच निवार्‍यौ।
दासी भई जु सूरदास-प्रभु, भलौ पोच अपनौ न बिचार्‍यौ।

॥३५६४॥४१८२॥

माई मेरे नैननि भेद दियौ।
ता दिन तैं उन स्याम मनोहर, चित वित चोरि लियौ॥
जैसैं कनक कटोरी मदिरा, आरतवंत पियौ।
बिसरी देह गेह सुख संपति, पर बस प्रान कियौ॥
तजि ब्रज बास चले मधुबन कौं, हरि बिनु बृथा जियौ।
सूरदास बिछुरत नहिं दरक्यौ, बज्र समान हियौ॥

॥३५६५॥४१८३॥

राग सारंग

हरि मुख निरखि निमेष बिसारे।
ता दिन तैं ये भए दिगंबर, इन नैननि के तारे।
तजी सीख सब सास ससुर की, लाज जनेऊ जारे॥
घूँघट घर छाँड़े बन बीथिनि, अह निसि रहत उघारे।
सहज समाधि रूप रुचि कारन, टरत न टक तैं टारे॥
ताकैं बीच बिघन करिबे कौं, मातु पिता पचिहारे॥
कहत सुनत समुझत मन महियाँ, ऊधौ बचन तुम्हारे।
सूरदास ये हटक न मानत, लोचन हठी हमारे॥

॥३५६६॥४१८४॥

राग केदारौ

नैननि निपट कठिनई ठानी।
जा दिन तैं बिछुरे नँद-नंदन, ता दिन तैं नहिं नैकु सिरानी॥
पलक न लावत रहत ध्यान धरि, बारंबार ढुरावत पानी।
लाल गुपाल मिले ऊधौ, मैं करमहीन कछुवै नहिं जानी॥
समुझि-समुझि अनुहार स्याम की, अति सुंदर बर सारँगपानी।
सूरदास ये मोहि रहे अति, हरि मूरति मन माहँ समानी।

॥३५६७॥४१८५॥

हरि बिनु पलक न लागति मेरी।
पात-पात बृंदावन ढूँढ़्यो, कुंज गली सब हेरी॥
हम दुखिया दुख ही कौं सिरजी, जनम जनम की चेरी।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस कौं, भई भसम की ढेरी॥
॥३५६८॥४१८६॥

राग सारग

ऊधौ क्यौं राखौं ये नैन।
सुमिरि सुमिरि गुन अधिक तपत हैं, सुनत तुम्हारे बैन॥
ये जु मनोहर बदन इंदु के, सादर कुमुद चकोर।
परम तृपा रत सजल स्याम-घन-तन के चातक मोर॥
मधुप मराल जु पद पंकज के, गति-बिलास जल मीन।
चक्रवाक दुति-मनि दिनकर के, मृग मुरली आधीन॥
सकल लोक सूनौ लागत है, बिनु देखे वह रूप।
सूरदास प्रभु नंद-नँदन के नख सिख अंग अनूप॥
॥३५६९॥४१८७॥

राग धनाश्री

और सकल अंगनि तैं ऊधौ, अँखियाँ अधिक दुखारी।
अतिहिं पिराति सिराति न कबहूँ, बहुत जतन करि हारी॥
मग जोवत पलकौ नहिं लावतिं, बिरह बिकल भई भारी।
भरि गइ बिरह बयारि दरस बिनु, निसि दिन रहतिं उघारी॥
ते अलि अब ये ज्ञान सलाकैं, क्यौं सहि सकतिं तिहारी।
सूर सु अंजन आँजि रूप रस, आरति हरहु हमारी॥
॥३५७०॥४१८८॥

स्याम बियोग सुनौ हो मधुकर, अँखियाँ उपमा जोग नहीं।
कंज खंज, मृग, मीन होहिं नहिं, कबि जन बृथा कहीं॥
कंजनहूँ कौं लगति पलक दल, जामिनि होति जहीं।
खंजनहू उड़ि जात छिनक मैं, प्रीतम जहाँ तहीं॥
मृग होते रहते सँग ही सँग, चंद बदन जितहीं।
रूप सरोवर के बिछुरे कहुँ, जीवत मीन महीं?

ये झरना सी झरत सदा हैं सोभा सकल बही।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, अब कत साँस रही॥

॥३५७१॥४१८९॥

राग मलार

उपमा नैन न एक रही।
कविजन कहत कहत सब आए, सुधि करि नाहिं कही॥
कहि चकोर बिधु-मुख बिनु जीवत, भ्रमर नहीं उड़ि जात।
हरि-मुख कमल कोष बिछुरे तैं, ठाले कत ठहरात॥
ऊधौ वधिक व्याध ह्वै आए, मृग सम क्यौं न पलात।
भागि जाहिं बन सघन स्याम मैं, जहाँ न कोऊ घात॥
खंजन मन-रंजन न होहिं ये, कबहुँ नहीं अकुलात।
पंख पसारि न होत चपल गति, हरि समीप मुकुलात॥
प्रेम न होइ कौन बिधि कहियै, झूठैं हीं तन आड़त।
सूरदास मीनता कछू इक, जल भरि कबहुँ न छाँड़त॥

॥३५७२॥४१९०॥

राग मलार

ऊधौ इन नैननि अंजन देहु।
आनहु क्यौं न स्याम रँग काजर, जासौं जुर्यौ सनेहु॥
तपत रहति निसि बासर मधुकर, नहिं सुहात बन गेहु।
जैसैं मीन मरत जल बिछुरत, कहा कहौं दुख एहु॥
सब बिधि बानि ठानि करि राख्यौ, खरि कपूर कौ रेहु।
बारक स्याम मिलाइ सूर सुनि, क्यौं न सुजस जग लेहु॥

॥३५७३॥४१९१॥

राग मलार

नैना नाहिनैं ये रहत।
जदपि मधुप तुम नंद-नँदन कौं, निपटहिं निकट कहत॥
हृदै माँझ जौ हरिहिं बतावत, सीखौ नाहिं गहत।
परी जु प्रकृति प्रगट दरसन की, देख्यौइ रूप चहत॥

यह निरगुन उपदेस तुम्हारो, सुनैं न सह्यो परत।
सूरदास-प्रभु बिनु अवलोके, कैसैं हु सुख न लहत॥

॥३५७४॥४१९२॥

राग सारंग

अब अलि नैननि प्रकृति परी।
हरि मुख कमल बिना निरखे तें रहत न एक घरी॥
सूखे सर सरोज सपुट भए, कौन अधार जिएँ।
मधु-मकरंद पियत मधुकर ते, कैसैं गरल पिएँ॥
तुमहूँ जात प्रेम के लालच, कानि सूल जिय जानि।
तन त्यागे नीको लागत पै, सहत न परसन-पानि॥
हरि हित बारि कहूँ ब्रज बरषन, बारिज करै बिकास।
सूर अंबु लौं जरत मरत नहिं, करत भँवर की आस॥

॥३५७५॥४१९३॥

राग सारंग

पूरनता इन नैननि पूरे।
तुम पुनि कहत सुनति हम समुझतिं, येही दुख अति मरत बिसूरे॥
हरि अंतरजामी सब बूझत, बुद्धि बिचारि सु बचन समूरे।
वै हरि रतन रूप-सागर के, क्यौं पाइये खनावत धूरे॥
रे अलि चपल मोद-रस लंपट, कटु संदेस कथत कत चूरे।
कहँ मुनि ध्यान कहाँ ब्रज-बासिनि कैसैं जात कुलिस कर चूरे॥
देखि बिचारि प्रगट सरिता सर, सीतल सजल स्वाद रुचि रूरे।
सूर स्वाति की बूँद लगी जिय, चातक चित लागत सब भूरे॥

॥३५७६॥४१९४॥

राग मलार

ऊधौ अँखियाँ अति अनुरागी।
इकटक मग जोवतिं अरु रोवतिं, भूलेहुँ पलक न लागी॥
बिनु पावस पावस करि राखी, देखत हौ बिदमान।
अब धौं कहा कियौ चाहत हौ, छाँडौ निरगुन ज्ञान॥

तुम हौ सखा स्याम सुंदर के, जानत सकल सुभाइ।
जैसैं मिलैं सूर के स्वामी, सोई करहु उपाइ॥

॥३६७७॥४१६५॥

राग बिहागरौ

मधुकर सुनौ लोचन बात।
रोकि राखे अंग अंगनि, तऊ उड़ि-उड़ि जात॥
ज्यौं कपोत वियोग व्याकुल, जात है तजि धाम।
जात यौं दृग गिरि न आवत, बिना दरसन स्याम॥
मूँदि नैन कपाट पल दै, किए घूँघट ओट।
स्वाति-सुत ज्यौं जात कतहूँ, निकसि मनि नग फोट॥
स्रवन सुनि जस रहत हरि कौ, मन रहत धरि ध्यान।
रहति रसना नाम रटि-रटि, कंठ करि गुन-गान॥
कछुक दियौ सुहाग इनकौं, तौ सबै ये लेत।
सूर स्याम बिना बिलोकैं, नैन चैन न देत॥

॥३६७८॥४१९६॥

राग सारंग

मधुकर ये नैना पै हारे।
निरखि निरखि मग कमलनैन के, प्रेम मगन भए भारे॥
ता दिन तैं नींदौ पुनि नासी, चौंकि परत अधिकारे।
सुपन तुरी जागत पुनि वेई, वसत जु हृदय हमारे॥
यह निरगुन लै ताहि बतावहु, जानै याको सारे।
सूरदास गोपाल छाँड़ि, को चूसै टेंटा खारे॥

॥३६७९॥४१९७॥

राग धनाश्री

अँखियाँ अब लागीं पछितान।
जब मोहन उठि चले मधुपुरी, तब क्यौं दीन्हे जान॥
पथ चलै सँदेस न आनै, धीरज धरै न प्रान।
जा दिन तैं बिछुरे नँदनंदन, अँग-अँग लागे बान॥

ऊधौ अब तुम जाइ सुनावहु, आवैं सारँगपान।
सूरदास चातकि भईं गोपी, अंतरगति की जान॥

॥३५८०॥४१९८॥

राग जैतश्री

कमल नैन कान्हर की सोभा, नैननि तैं न टरै।
ऊधौ आए जोग सिखावन, को जजाल करै॥
जब मोहन गाइनि लै आवत, ग्वालनि मग घरै।
बलदाऊ अरु सग सखा सब, कहि कैसैं बिसरै॥
बंसीबट जमुना तट ठाढ़े, मुरली अधर धरै।
सुख समूह बिनोद जे कीन्हे, को इहिं ढरनि ढरै॥
ब्रजबासी सब भए उदासी, को संताप भरै।
सूरदास के प्रभु बिनु ऊधौ, को तन तपति हरै॥

॥३५८१॥४१९९॥

राग सारंग

आँखिनि तैं छिनक कान्ह करि सकैं न न्यारे।
कहाँ रहैं नैना जौ निकसि जाहिं तारे॥
निकसत नहि अंग तैं हरि, जतननि करि हारे।
फैलि जाइ अग जैसैं, नसनि के निकारे॥
जब तौं अलि बचन सूर क्रूर से उचारे।
तब तौं नहिं रहत, बहत अँसुअनि के तारे॥

॥३५८२॥४२००॥

राग सारंग

स्याम राम कौ सगी यह अलि, कीजत कह सन्यास।
मोहन नागर नायक की मनि तजी और की आस॥
कर्म-सूत्र ठाने अरु सुनियत, रसना सधि प्रकास।
भए छिदा ब्रज प्रेम नेम के टोंकि हाथ गहि नास॥
इतने भएँ नैन नहिं मानत, प्रथम परे जे पास।
टेक न छाँडत सूर अजहुँ लौं, बीच बसीठ दुभास॥

॥३५८३॥४२०१॥

राग नट

सुंदर स्याम के सँग आँखि।
प्रथम ऊधौ आनि दै हम, सगुन डारैं नाखि॥
द्वै तीन सप्त अनंत जे स्रुति, कहैं सुम्रिति भाषि।
हृदय विद्या, ज्ञान, धर्म सुलोचननि अभिलाषि॥
जहाँ, जहँ किए केलि हरि पिय, सर सु चकई पाँखि।
हारि हेरि अहेरिया हरि, रहीं झुकि झुकि झाँखि॥
राति ज्यौं अक्रूर दिन अलि, मदन की मधु माखि।
कमल कुमुदिनि इंदु उड़गन, मिलन सूरज साखि॥

॥३५८४॥४२०२॥

राग मलार

कहियौ मधुप जाइ तुम हरि सौं मेरौ मन अटक्यौ नैननि लेखैं।
यहै दोष दै दै झगरत हैं, निरखत मुख क्यों लगीं निमेषैं॥
ते अब सब इन पै भरि चाहत, बिधि जो लिखे दरस सुख रेखैं।
कै तौ मोहि बताइ देहु अब, लगीं पलक जड़ जाके पेखैं॥
इहिं बिधि अनुदिन जुरत जतन करि, गनत गए अँगुरिनि अवसेसैं।
सूरदास सुनि इन झगरनि तैं, नहिं चित छुटत बदन बिनु देखैं॥

॥३५८५॥४२०३॥

राग सारंग

या जुवती के गोरस कौं हरि, इक दिन बहुत अरे।
ऊधौ वे बातैं क्यौं बिसरति, छाँड़ि न हठहिं परे॥
ता दिन कौं देखौ यह अंचल, ऐंचत ओप भरे।
आपु सिखाइ ग्वाल सबहिनि कौं, न्यारे रहे खरे॥
सो मूरति नैननि मैं लगि रही, अँग-अँग चपल परे।
सूर स्याम देखैं सचु पइयै, राखि सँदेस घरे॥

॥३५८६॥४२०४॥

राग मलार

सखी री मथुरा मैं द्वै हंस।
वे अक्रूर और ये ऊधौ, जानत नीकैं गंस॥

ये दोउ नीर गँभीर पैरिया, इनहिं बधायौ कम।
इनकैं कुल ऐसी चलि आई, सदा उजागर बस॥
अब इन कृपा करी ब्रज आए, जानि आपनो स्रम।
सूर सु ज्ञान सुनावत अबलनि, सुनत होत मति-भ्रम॥
॥३५८७॥४२०५॥

राग सारंग

मनौ दोउ एकहिं मते भए।
ऊधौ अरु अक्रूर वधिक मति, ब्रज आखेट ठए॥
वचन फाँस बाँधे मृग माधौ, उन रथ लाइ लए।
इनहीं हेरि मृगी गोपी सब, सायक-ज्ञान हए॥
जोग अगिनि की दवा देखियत, चहुँ दिसि लाइ दए।
अब धौं कहा कियौ चाहत हैं, करि उपचार नए॥
परमारथी परम कैतव चित, विरहिनि प्रेम रए।
कैसें जिएँ सूर के प्रभु बिनु, चातक मेघ गए॥
॥३५८८॥४२०६॥

राग सारंग

मनौ गढ़े दोउ एकहिं साँचे।
नख सिख कमलनैन की सोभा, एक भृगु लता बाँचे॥
दारु-जात कैसे गुन इनमैं, ऊपर अंतर स्याम।
हम जु तपतिं उर अधिक प्रीति कै, वचन कहत निहकाम॥
ये सखि असित देह धरे जेते, ऐसेई सब जानि।
सूर एक तैं एक आगरे, वा मथुरा की खानि॥
॥३५८९॥४२०७॥

राग सारंग

सब खोटे मधुबन के लोग।
जिनके संग स्याम सुंदर सखि, सीखे हैं अपजोग॥
आए हैं ब्रज के हित ऊधौ, जुवतिनि कौं लै जोग।
आसन, ध्यान, नैन मूँदे सखि, कैसें कढ़ै वियोग॥
हम अहीरि इतनी का जानैं, कुबिजा सौं संजोग।
सूर सुबैद कहा लै कीजै, कहैं न जानैं रोग॥
॥३५९०॥४२०८॥

राग नट

मधुबन लोगनि को पतियाइ।
मुख औरै, अंतरगति औरै, पतियाँ लिखि पठवत जु बनाइ॥
ज्यौं कोइल-सुत काग जियावै, भाव भगति भोजन जु खवाइ।
कुहुकि कुहुकि आऐं बसंत रितु, अंत मिलै अपने कुल जाइ॥
ज्यौं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, बहुरि न बूझै बातैं आइ।
सूर जहाँ लगि स्याम गात हैं, तिनसौं कीजै कहा सगाइ॥
॥३५९१॥४२०९॥

तुम अलि स्यामहिं जनि पतियाहु।
बहुरोचक इन कपट कहानी, तजे किए तैं ब्याहु॥
सुरपति, असुर, बिप्र जीते ब्रज, कित दुख निमिष निवारी।
ते अब कहि पठवत ये बातैं जोग की हृदय-बिदारी॥
करनी कान्ह करी जग जानी, कुल गुन आन सँभारे।
सूर सुदेस होत नहिं गाँरुड़, कुटिल बिकट अहि कारे॥
॥३५९२॥४२१०॥

राग नट

माई मधुपनि की यह रीति।
नीरस जानि तजत छिन भीतर, नवल कुसुम रस प्रीति॥
तिनहीं के संगिन कौं कैसैं, चित आवत परतीति।
हमहिं छाँड़ि बिरमहिं कुबिजा सँग, आए न रिपु रन जीति॥
जनि पतियाहु मधुर सुनि बातैं, लागे करन सभीति।
ऐसी संगति सूर स्याम की, ज्यौं भुस पर की भीति॥
॥३५९३॥४२११॥

राग मलार

मधुबन सब कृतज्ञ धरमीले।
अति उदार परहित डोलत हैं, बोलत बचन सुसीले॥
प्रथम आइ गोकुल सुफलक सुत, लै मधुरिपुहिं सिधारे।
उहाँ कंस ह्याँ हम दीननि कौं, दूनौ काज सँवारे॥
हरि कौं सिखै सिखावन हमकौं, अब ऊधौ पग धारे।
ह्याँ दासी रति की कीरति कै, इहाँ जोग बिस्तारे॥

अब तिहिँ बिरह समुद्र सबै हम, बूड़ीं चहुँ तन हीं।
लीला सगुन नाव ही सुनु अलि, तिहि अवलंब रहीं॥
अब निरगुनहिं गहैं जुवतीजन, पारहि कहा गईं।
सूर अक्रूर छपद के मन मैं, नाहिंन त्रास दई॥
॥३५९४॥४२१२॥

राग धनाश्री

हमकौं नीकैं समुझि परी।
जिन लगि हुती बहुत उर आसा, सोउ बात निवरी॥
वै सुफलक-सुत ये सखि ऊधौ, पढ़े एक परिपाटी।
उन वैसी कीन्ही इन ऐसी, रतन छोरि दियौ माटी॥
ऊपर मृदु भीतर जु कुलिस सम, देखत के अति भोरे।
जोइ जोइ आवत वा मथुरा तैं, एक डार के तोरे॥
यह मैं पहिलैं ही कहि राखी, असित न अपने होंहिं।
सूर काटि जौ माथौ दीजै, चलैं आपनी गौंहिं॥
॥३५९५॥४२१३॥

राग आसावरी

ऊधौ ऐसे काम न कीजै।
एकहि रंग रँगे तुम दोऊ, धोइ स्वेत करि लीजै॥
फिरि-फिरि दुख अवगाहि हमारे, हम सब करी अचेत।
कित पटपर गोता मारत हौ, आप भूड़ के खेत॥
आपुन कपट, कपट कुल जनम्यौ, कहा भलाई जानै।
फोरत बाँस काटि दाँतनि सौं, बार-बार ललचानैं॥
छाँडि हेत कमलिनि सौं अपनौ, तू कित अनतहिं जाइ।
लपट, ढीठ बहुत अपराधी, कैसैं मन पतियाइ॥
यहै जु बात कहति हैं तुम सौं, इहिं ब्रज फिरि मति आवै।
एक बार समुझावहु सूरज, अपनौ ज्ञान सिखावै॥
॥॥३५९६॥४२१४॥

राग धनाश्री

(ऊधौ) प्रेम भक्ति रहित निरस जोग कहा गायौ।
निठुर वचन अबलनि सौं, कहे कहा पायौ?

जिहिं नैननि कमलनैन, मोहन मुख हेर्‍यौ।
मूँदन ते नैन कहत, कौन ज्ञान तेर्‍यौ॥
तामैं सुनि मधुकर, हम कहा लेन जाहीं।
जामैं प्रिय प्राननाथ, नंद-नँदन नाहीं॥
जिनके तुम सखा साधु, कहौ बात तिनकी।
जीवति कहि प्रेम-कथा, दासी हम उनकी॥
निरगुन अबिनासी मत, कहा आनि भाष्यौ।
सूरदास जीवन-धन कान्ह, कहाँ राख्यौ?

॥३५९७॥४२१५॥

राग नट

(ऊधौ) प्रेम गएँ प्रान रहै, कौन काज आवै।
जैसैं ससि निसा गएँ, सोभा नहिं पावै॥
बिबिध खग जु एक रूप, बोलत मृदुबानी।
नेन अछत चातक की, प्रीति जगत जानी॥
औरै जग जीवन को, नाम न कोउ जानै।
एक प्रेम लीन मीन, कीरति जग बखानै॥
अति सुबास सुमन सबै, देखत जिय भावैं।
वै सु प्रेम पंकज कौं, सब तजि कित गावैं॥
जिन नैननि मोहन मुख, कमलनैन हेरौ।
मूँदौ ते नैन कहत, कौन ज्ञान तेरौ॥
अबिनासी निर्गुन कहा, ब्रजहिं आनि भाष्यौ।
सूरदास जीवन-धन स्याम, कहाँ राख्यौ॥

॥३५९८॥४२१६॥

राग सारंग

जनि चालहि अलि बात पराई।
नहिं कोउ सुनत न समुझत ब्रज मैं, नई कीरति सब जाति हिराई॥
जाने समाचार सुख पाए, मिलि कुल की आरति बिसराई।
भले संग बसि भई भली मति, भले ठौर पहिचानि कराई॥
मीठी कथा कटुक सी लागति, उपजत है उपदेस खराई।
उलटौ न्याउ सूर के प्रभु कौ, वही जाति माँगत उतराई॥

॥३५९९॥४२१७॥

राग मलार

याकी सीख सुनै ब्रज कोरे।
जाकी रहनि कहनि अनमिल अलि, कहत समुझियत थोरे ॥
आपुन पद-मकरंद सुधा-रत, हृदय रहत नित बोरे।
हमसौं कहत बिरह-स्रम जैहै, गगन कूप खनि खोरैं ॥
धान को गाँव पयार तैं जानो, ज्ञान बिषय रस भोरे।
सूर सु बहुत कहे न रहै रस, गूलर को फल फोरे ॥
॥३६००॥४२१८॥

राग धनाश्री

ऊधौ जोग सिखावन आए, अब कैसैं धीरज धरौं ॥
जोरि जोरि चित जोरि जुरान्यौ, जोरथौ जोरि न जान्यौ।
तब धौं जोग कहाँ हो ऊधौ, जब यह जोग दृढ़ान्यौ ॥
उन हरि हमसौं प्रीति जु कीन्ही, जैसैं मीन ऽरु पानी।
तलफि तलफि जिय निकसन लाग्यौ, पानी पीर न जानी ॥
निसि बासर मोहिं पलक न लागे, कोटि जतन करि हारी।
ज्यौं भुवग तजि गयो कैंचुली, सो गति भई हमारी ॥
एक समय हरि अपने हाथनि, करनफूल पहिराए।
अब कैसैं माटी के मुद्रा, मधुकर हाथ पठाए ॥
बेनी सुभग गुही अपने कर, चरननि जावक दीन्हौ।
कहा कहौं वा स्याम सुँदर सौं, निपट कठिन मन कीन्हो ॥
चोवा चंदन और अरगजा, जा सुख मैं हम राखी।
अब तन कौं हम भस्म चढ़ावैं तुम मधुकर हौ साखी ॥
तुम जु बसत हौ मथुरा नगरी, हम जु बसतिं इहिं गाउँ।
ऊधौ हरि सौं जाइ कहीजै, प्रान तजैं कै ठाउँ ॥
प्रीतम प्यारे प्रान हमारे, रहे अधर पर आइ।
सूरदास हरि जू के आगैं, कौन कहै दुख जाइ ॥
॥३६०१॥४२१९॥

बिरहिन क्यौं धीरज मन धरैं।
वह चितवनि, वह चलनि मनोहर, संत समाधि टरैं ॥
दसन बज्र दुति, बदन लाल मृदु, ससि गन पुंज हरैं।
खजन नैन किधौं अलि वारिज, कछू न समुझि परै ॥

उज्ज्वल स्याम अरुन चंचलता, मुनि मन निरखि हरै ॥
सूरदास प्रभु देखि थकित भइ, को स्तुति सिंधु तरै ॥
॥३६०२॥४२२०॥

राग जैतश्री

ऊधौ जोग सिखावन आए।
सृंगी भस्म अधारी मुद्रा, दै ब्रजनाथ पठाए ॥
जो पै जोग लिख्यौ गोपिनि कौं, कत रस रास खिलाए।
तबहीं क्यौं न ज्ञान उपदेस्यौ, अधर सुधा-रस प्याए ॥
मुरली सब्द सुनत बन गवनीं, सुत, पति गृह बिसराए।
सूरदास सँग छाँड़ि स्याम कौ, हमहिं भए पछिताए ॥
॥३६०३॥४२२१॥

राग नट

आए जोग सिखावन पाँड़े।
परमारथी पुराननि लादे, ज्यौं बनजारे टाँड़े ॥
हमरे गति-पति कमल-नयन की, जोग सिखैं ते राँड़े।
कहौ मधुप कैसे समाहिंगे, एक म्यान दो खाँड़े ॥
कहु षट्पद कैसैं खैयतु है, हाथिनि कैं सँग गाँड़े।
काकी भूख गई बयारि भषि, बिना दूध घृत माँड़े ॥
काहे कौं झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँड़े।
सूरदास तीनौ नहिं उपजत, धनियाँ, धान, कुम्हाँड़े ॥
॥३६०४॥४२२२॥

राग धनाश्री

बहुत दिन गए ऊधौ, चरन-कमल सुख नाहीं।
दरस हीन दुखित दीन, छिन-छिन बिपदा सहीं ॥
रजनी अति प्रेम पीर, बन गृह मन धरै न धीर।
बासर मग जोवत उर, सरिता बही नैन नीर ॥
नलिनी जनु हेम घात, कंपित तन कदलि पात।
लोचन जल पावस भयौ, रही री कछु समुझि बात ॥

मथुरा गहौ वेगि इन पाइनि, उपज्यो है तन रोग।
सूर सु बैद वेगि टोहौ किन, भए मरन के जोग॥
॥३६११॥४२२९॥

राग नट

कह्यौ तुम्हारौ लागत काहैं।
कोटिक जतन कहौ जो ऊधो, हम न वहकिहैं वाहैं॥
काहे कौं अपनैं जिय भूलत, करि करि मन की लाहैं।
यह भ्रम तौ अवहीं भजि जैहै, ज्यौं पयार के गाहैं॥
कासी के लोगनि लै सिखवहु, जे समझैं या माहैं।
सूर स्याम विहरत व्रज भीतर, जीजन है मुख चाहैं॥
॥३६१२॥४२३०॥

राग सारंग

आपु देखि पर देखि रे मधुकर, तव औरनि सिख देहु।
बीतैगी तवहीं जानैगौ, महा कठिन है नेहु॥
मन जु तुम्हारौ हरि चरननि है, तन लै गोकुल आयौ।
नंद-नंदन के बिछुरे, कहि कौनैं सचु पायौ॥
गोकुल रहहु जाहु जनि मथुरा, झूठो माया मोहु।
गोपी कहैं सूर सुनि ऊधौ, हमसे तुमसे होहु॥

॥३६१३॥४२३१॥

गविंद के बिछुरे तैं ऊधौ जानी विरह की बात।
हौं सूखी वहु भाँति गात अति, ज्यौं तरुवर के पात॥
भूल्यौ भोजन भाव सफल कृत, वचन न नैंकु सुहात।
उडगन गिनत जाम चारौ निसि क्रम क्रम करि जु विहात॥
जे गुरुजन के वचन न मानत, ते ऐसेइ डहकात।
ये दुख मो पै न टरत विरहिनी, जे वीतत मो गात॥
वे दिन दसा वीति गइ लेखे, पल पल जुग सम जात।
सहज वहत लोचन जल सरिता, सूर बुडत उतरात॥
॥३६१४॥४२३२॥

राग सारग

तू अलि कहा पर्‍यौ है पैंड़े।
ब्रज तू स्याम अजा भयौ हमकौं, यहऊ बचत न दौंड़े॥
यह उपदेश संत नहिं भाए, जो चढ़ि कह्यौ बरेंड़े।
राखतिं जतन जसोदा-नंदन, हृदै मॉझ सब मैंड़े॥
छॉडि राजमारग यह लीला, कैसैं चलहिं कुपैंड़े।
या आदर पर अजहूँ वैठ्यौ, टरत न सूर पलैंड़े॥
॥ ३६१५॥४२३३ ॥

राग सारंग

घर ही के बाढ़े रावरे।
नाहिन मीत-वियोग बस परे, अनव्यौंगे अलि बावरे॥
बरु मरि जाइ चरैं नहिं तिनुका, सिंह कौ यहै स्वभाव रे।
स्रवन सुधा-मुरली के पोपे, जोग जहर न खवाव रे॥
ऊधौ हमहिं सीख कह दैहौ, हरि बिनु अनत न ठॉव रे।
सूरजदास कहा लै कीजे, थाही नदिया नाव रे॥
॥३६१६॥४२३४॥

राग सारंग

तुम अलि कासौं कहत बनाइ।
बिनु समुझैं हम फिरि फिरि बूझतिं, बारक बहुरौ गाइ॥
कहु किहिं गमन कियौ स्यंदन चढ़ि, सुफलक-सुत के संग।
किहिं बधि रजक लिए नाना पट, पहिरे अपने अंग॥
किहिं हति चाप निदरि गज निज बल, किहिं मल्लनि मथि जाने।
उग्रसेन बसुदेव देवकी किहिंऽब निगड़ तैं आने॥
काकी करत प्रसंसा निसि दिन, कौनैं घोष पठाए।
किहिं मातुल हति कियो जगत जस, कौन मधुपुरी छाए॥
माथैं मोर मुकुट उर गुंजा, मुख मुरली कल बाजै।
सूरदास जसुदा नँद नंदन, गोकुल कान्ह बिराजै॥
॥ ३६१७ ॥ ४२३५ ॥

राग सारंग

हमकौं हरि की कथा सुनाउ।
ये आपनी ज्ञान गाथा अलि, मथुरा ही लै जाउ॥

मथुरा गहो वेगि इन पाइनि, उपज्यो है तन रोग ।
सूर सु बैद वेगि टोहौ किन, भए मरन के जोग ॥
॥३६११॥४२२९॥

राग नट

कह्यौ तुम्हारौ लागत काहैं ।
कोटिक जतन कहौ जो ऊधौ, हम न यहकिहैं वाहैं ॥
काहे कौं अपनैं जिय भूलत, करि करि मन की लाहैं ।
यह भ्रम तौ अबहीं भजि जैहै, ज्यौं पयार के गाहैं ॥
कासी के लोगनि लै सिखवहु, जे समझैं या माहैं ।
सूर स्याम बिहरत ब्रज भीतर, जीजत हैं मुख चाहैं ॥
॥३६१२॥४२३०॥

राग सारग

आपु देखि पर देखि रे मधुकर, तब औरनि सिख देहु ।
बीतैगी तबहीं जानैगौ, महा कठिन है नेहु ॥
मन जु तुम्हारौ हरि चरननि है, तन लै गोकुल आयौ ।
नंद-नँदन के बिछुरे, कहि कौनैं सचु पायौ ॥
गोकुल रहहु जाहु जनि मथुरा, झूठौ माया मोहु ।
गोपी कहैं सूर सुनि ऊधौ, हमते तुमसे होहु ॥
॥३६१३॥४२३१॥

गबिंद के बिछुरे तैं ऊधौ जानी बिरह की बात ।
हौं सूखी बहु भाँति गात अति, ज्यौं तरुवर के पात ॥
भूल्यौ भोजन भाव सफल कृत, वचन न नैंकु सुहात ।
उडगन गिनत जाम चारौ निसि क्रम क्रम करि जु बिहात ॥
जे गुरुजन के वचन न मानत, ते ऐसेइ डहकात ।
ये दुख मो पै न टरत बिरहिनी, जे बीतत मो गात ॥
वे दिन दसा बीति गइ लेखे, पल पल जुग सम जात ।
सहज बहत लोचन जल सरिता, सूर बुडत उतरात ॥
॥३६१४॥४२३२॥

राग सारंग

तू अलि कहा पर्यौ है पैंड़े।
ब्रज तू स्याम अजा भयौ हमकौं, यहऊ बचत न बैंड़े॥
यह उपदेश संत नहिं भाए, जो चढ़ि कहौ बरैंड़े।
राखतिं जतन जसोदा-नंदन, हृदै माँझ सब मैंड़े॥
छाँड़ि राजमारग यह लीला, कैसैं चलहिं कुपैंड़े।
या आदर पर अजहूँ बैठ्यौ, टरत न सूर पलैंड़े॥
॥ ३६१५॥४२३३ ॥

राग सारंग

घर ही के बाढ़े रावरे।
नाहिन मीत-वियोग बस परे, अनव्यौंगे अलि बावरे॥
बरु मरि जाइ चरैं नहिं तिनुका, सिंह को यहै स्वभाव रे।
स्रवन सुधा-मुरली के पोपे, जोग जहर न खवाव रे॥
ऊधौ हमहिं सीख कह दैहो, हरि बिनु अनत न ठाँव रे।
सूरजदास कहा लै कीजे, थाही नदिया नाव रे॥
॥३६१६॥४२३४॥

राग सारंग

तुम अलि कासौं कहत बनाइ।
बिनु समुझैं हम फिरि फिरि बूझतिं, बारक बहुरौ गाइ॥
कहु किहिं गमन कियौ स्यंदन चढ़ि, सुफलक-सुत के संग।
किहिं बधि रजक लिए नाना पट, पहिरे अपने अंग॥
किहिं हति चाप निदरि गज निज बल, किहिं मल्लनि मथि जाने।
उग्रसेन बसुदेव देवकी किहिंऽब निगड़ तैं आने॥
काकी करत प्रसंसा निसि दिन, कौनैं घोप पठाए।
किहिं मातुल हति कियो जगत जस, कौन मधुपुरी छाए॥
माथैं मोर मुकुट उर गुंजा, मुख मुरली कल बाजै।
सूरदास जसुदा नँद नदन, गोकुल कान्ह बिराजै॥
॥ ३६१७ ॥ ४२३५ ॥

राग सारंग

हमकौं हरि की कथा सुनाउ।
ये आपनी ज्ञान गाथा अलि, मथुरा ही लै जाउ॥

नागरि नारि भलैं समझैं जी, तेरो बचन बनाउ।
पा लागौं ऐसी इन बातनि, उनहीं जाइ रिझाउ॥
जौ सुचि सखा स्याम सुंदर कौ, अरु जिय मैं सति भाउ।
तौ बारक आतुर इन नैननि, हरि मुख आनि दिखाउ॥
जौ कोउ कोटि करै कैसिहुँ बिधि, बल बिद्या ब्यवसाउ।
तउ सुनि सूर मीन कौ जल बिनु, नाहिंन और उपाउ॥
॥३६१८॥४२३६॥

ऊधौ बानी कौन ढरैगौ, तोसौं उत्तर कौन करैगौ।
या पाती के देखत हीं अब, जल सावन कौ नैन ढरैगौ॥
बिरह-अगिनि तन जरत निसा दिन, करहिं छुवत तुव जोग जरैगौ।
नैन हमारे सजल हैं तारे, निरखत ही तेरौ ज्ञान गरैगौ॥
हमहिं बियोगऽरु सोग स्याम कौ जोग रोग सौं कौन अरैगौ।
दिन दस रहौ जु गोकुल महियाँ, तब तेरौ सब ज्ञान मरैगौ॥
सिंगी सेल्ही भसमऽरु कथा कहि अलि काके गरैं परैगौ।
जे ये लट हरि सुमननि गूँथी, सीस जटा अब कौन धरैगौ॥
जोग सगुन लै जाहु मधुपुरी, ऐसे निरगुन कौन तरैगौ।
हमहिं ध्यान पल छिन मोहन कौ बिनु दरसन कछुवै न सरैगौ॥
निसि दिन सुमिरत रहत स्याम कौ जोग अगिनि मैं कौन जरैगौ।
कैसैंहु प्रेम नेम मोहन कौ, हित चित तैं हमरैं न टरैगौ॥
नित उठि आवत जोग सिखावन, ऐसी बातनि कौन भरैगौ।
कथा तुम्हारी सुनत न कोऊ, ठाढ़े हीं अब आप ररैगौ।
बादिहिं रटत उठत अपने जिय, को तोसौं बेकाज लरैगौ।
हम अँग अंग स्याम रँग भीनीं, को इन बातनि सूर डरैगौ॥
॥३६१९॥४२३७॥

राग भूपाली

(ऊधौ) हरि बिनु ब्रज रिपु बहुरि जिए।
जे हमरे देखत नँद नंदन, हति हति हुते सु दूरि किए॥
निसि कौ रूप बकी बनि आवति, अति भय करति सु कंप हिए।
तापहिं तैं तन प्रान हमारे, रबिहूँ छिनक छँडाइ लिए॥

उर ऊँचे उच्छ्वास तृनावर्त, तिहिं सुख सकल उड़ाइ दिए।
कोटिक काली सम कालिंदी, परसत सलिल न जात पिए॥
वन बक रूप अघासुर सम गृह, कतहूँ तौ न चितै सकिए।
ऐसी कठिन करम कैसौ विनु, काकौ सूर सरन तकिए॥
३६२०॥४२३८॥

राग सोरठ

ऊधौ तुम ब्रज की दसा विचारौ।
ता पाछैं यह सिद्धि आपनी, जोग कथा विस्तारौ॥
जा कारन तुम पठए माधौ, सो सोचौ जिय माहीं।
केतिक बीच बिरह परमारथ, जानत हौ किधौं नाहीं॥
तुम परवीन चतुर कहियत हौ, संतत निकट रहत हौ।
जल बूड़त अवलंब फेन कौ, फिरि फिरि कहा कहत हौ॥
वह मुसकान मनोहर चितवनि, कैसैं उर तैं टारौं।
जोग जुक्ति अरु मुक्ति परम निधि वा मुरली पर वारौं॥
जिहिं उर कमल-नयन जु बसत हैं तिहिं निरगुन क्यौं आवै।
सूरदास सो भजन बहाऊँ, जाहि दूसरौ भावै॥
।३६२१॥४२३९॥

राग आसावरी

ऊधौ कहँ की प्रीति हमारैं। अजहुँ रहत तन हरि के सिधारैं॥
छिदि छिदि जात बिरह सर मारैं। पुरि पुरि आवत अवधि बिचारैं॥
फटत न हृदय सँदेस तुम्हारैं। कुलिस तैं कठिन धुकत दोउ तारे॥
बरषत नैन महा जल धारैं। उर पषान बिदरत न बिदारैं॥
जीवन मरन भए दोउ भारे। कहियत सूर लाज पति हारे॥
॥३६२२॥४२४०॥

ऊधौ इतने मोहिं सतावत।
कारी घटा देखि बादर की, दामिनि चमकि डरावत॥
हेम-सुता-पति कौ रिपु ब्यापै, दधिसुत रथ न चलावत।
अंबू खंडन सब्द सुनत हीं, चित चकृत उठि धावत॥
कंचनपुर-पति कौ जो भ्राता, ता प्रिय बलहिं न आवत।
संभू-सुत कौ जो वाहन है, कुहुकै असल सलावत॥

जद्यपि भूषन अंग बनावतिँ, सो भुजंग ह्वै धावत।
सूरदास बिरहिनि अति व्याकुल, खगपति चढि किन आवत ॥
॥३६२३॥४२४१॥

राग धनाश्री

हमकौं तुम बिनु सबै सतावत।
कहियौ मधुप चतुर माधौ सौं तुमहूँ सखा कहावत ॥
काकौ तन हरि हर्‍यौ दीन सुनि, कुल सरनागत दीन्ही।
सोइ मारत करवारि धारि कर, हमकौं कानि न कीन्हीं ॥
काढि सिंधु तैं सिव कर सौंप्यौ, गुनहगार की नाईं।
सो ससि प्रगट प्रधान काम कौ, चहुँ दिसि देत दुहाईं ॥
अमरनाथ अपराध छमा करि, पीठि ठोकि मुकरायौ।
सो अब इंद्र कोप जलधर लै, ब्रज-मंडल पर छायौ ॥
पच्छ पुच्छ सिर धारि सिखनि के, इहिं बिधि दई बडाई।
तिन अब बोलि छोलि तन डार्‍यौ, उपल खोर की नाईं ॥
बच्छ चोरि अलि स्वच्छ पच्छ करि, तिनहूँ कोप जनायौ।
परी जो रेख ललाट अधिक सुख, मेटि दुकार बनायौ ॥
कौन-कौन सौं बिनती कीजै, कही जितक कहि आई।
सूर स्याम अपने या ब्रज की, इहि बिधि कानि घटाई ॥
॥३६२४॥४२४२॥

राग नट

ऊधौ यह हित लागत काहैं।
निसि दिन नैन तपत दरसन कौं, तुम जु कहत हिय माहैं ॥
पलक न परत चहूँ दिसि चितवति, बिरहानल के दाहैं।
इतनी आरति काहैं न मिलहीं, जौ पै स्याम इहाँ हैं ॥
पा लागौं ऐसीहिं रहन दै, अवधि आस जल थाहैं।
जनि बोरहि निरगुन समुद्र मैं, बहुरि न पैहैं चाहैं ॥
जासौं उपजी प्रीति रीति अलि, तासौं बनै निबाहैं।
सूर कहा लै करै पपीहा, एते सर सरिता हैं ॥
॥३६२५॥४२४३॥

राग मलार

ह्यॉं तुम कहत कौन की बातैं ।
अहो मधुप हम समुझतिं नाहीं फिरि बूझति हैं तातैं ॥
को नृप भयौ कंस किन मार्‌यौ, को वसुद्यौ-सुत आहि ।
ह्यॉं जसुदासुत परम मनोहर, जीजतु है मुख चाहि ॥
दिन प्रति जात धेनु वन चारन, गोप सखनि कैं संग ।
वासर गत रजनी मुख आवत, करत नैन गति पंग ॥
को अविनासी अगम अगोचर, को विधि वेद अपार ।
सूर वृथा बकवाद करत कत, इहिं ब्रज नंदकुमार ॥

॥३६२६॥४२४४॥

कहत अलि मोहन मथुरा-राजा ।
नेव अक्रूर बदत वंदी तुम, गावत हौ नृप साजा ॥
सुरभी जूथ जाम स्रम चारत, अरु तकि जात अहीर ।
या अभिमान आनि उर कबहूँ, नहिं जानत परपीर ॥
गुन अनुरूप समान भेषता, मिले दुआदस बानी ।
मधुबन देस कान्ह कुबिजा सँग, बनी सूर पटरानी ॥
॥३६२७॥४२४५॥

राग सारंग

कहा जौ, राजा जाइ भयौ ।
हमकौं कहत और की औरै, पायौ भेव नयौ ॥
अबलौं तौ छोटे अँग भोजन, घर-घर मॉंगि लयौ ।
कैसैं सह्यौ जात हम पै यह जोग जु पटै दयौ ॥
बन बन धेनु चराइ ग्वाल सँग, मथि मथि पियौ घयौ ।
सूरज प्रभु अब ब्रज बिसरायौ, उन यह मतौ दयौ ।
॥३६२८॥४२४६॥

राग मलार

ऊधौ हरि काहे के अंतरजामी ।
अजहुँ न आइ मिलत इहिं अवसर, अवधि बतावत लामी ॥
अपनी चोप आइ उड़ि बैठत, अलि ज्यौं रस के कामी ।

तिनकौ कौन परेखौ कीजै, जे हैं गरुड के गामी।
आई उघरि प्रीति कलई सी, जैसी खाटी आमी।
सूर इते पर अनखनि मरियत, ऊधौ पीवत मामी ॥

॥३६२९॥४२४७॥

राग मलार

मधुकर यह जानी तुम साँची।
पूरन ब्रह्म तुम्हारौ ठाकुर, आगे माया नाची ॥
यह इहिं गाउँ न समुझत कोऊ, कैसौ निरगुन होत।
गोकुल ओट परे नँद नंदन, वहै तुम्हारौ पोत ॥
को जसुमति ऊखल सौं बाँध्यौ, को दधि माखन चोरे।
किन ये दोऊ रूख हमारे, जमला अर्जुन तोरे ॥
को लै बसन चढ्यौ तरु साखा, मुरली मन आकरषे।
को रस रास रच्यौ बृंदाबन, हरषि सुमन, सुर बरषे ॥
जौ डाकौ तौ कत बिनु बूडे, काहै जीभि पिरावत।
तब जु सूर-प्रभु गए क्रूर लै, अब क्यौं नैन सिरावत ?

॥३६३०॥४२४८॥

राग कान्हरौ

निरगुन कौन देस कौ बासी ?
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझति साँच न हाँसी ॥
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी ?
कैसे बरन, भेष है कैसौ, किहिं रस मैं अभिलाषी ?
पावैगौ पुनि कियौ आपनौ, जो रे करैगौ गाँसी।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, सूर सबै मति नासी ॥

॥३६३१॥४२४९॥

राग कल्यान

ऊधौ हम हरि कत बिसराए !
एक द्यौस बृंदावन भीतर, कर करि पत्र डसाए ॥
सुमिरि-सुमिरि गुन ग्राम स्याम के, नैन सजल ह्वै आए।
बिछुरे पलक किते दिन बीते, प्रीतम भए पराए ॥

विकल पंथ जोवतिँ हम निसि दिन, कित बिरहिनि बिरमाए।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु, मदन के ताप सताए॥
॥३६३२॥४२५०॥

राग सारंग

वे, हरि, बातैँ क्यौं बिसरीं।
आवत राधा पथ चरन-रज, हित सौं अंक भरी॥
भाँति-भाँति किसलय कुसुमावलि, सेज्या सोभ करी।
निमिष-बियोग होत तन तलफत, ज्यौं जल बिनु मछरी॥
सुरति स्रमित स्यामा रस-रंजित सोवति रग भरी।
आपुन कुसुम-व्यजन कर लीन्हैं, करत मरुत लहरी॥
गोचारन मिस जात सघन बन, मुरली अधर धरी।
नाद-प्रनालि प्रवेस घोष मैं, रिझवत तिय सिगरी॥
प्रकृति पुरुष तामैं ताकौ सँग, सूर प्रगट जस री।
ऊधौ सुनत-सुनत मन बिथकित, सुफलित करन-घरी॥

॥३६३३॥४२५१॥

राग धनाश्री

ऊधौ अब चित भए कठोर।
पूरब प्रीति बिसारी गिरिधर, नूतन राँचे और॥
जनम जनम की दासी तुम्हरी, नागर नंद-किसोर।
चितवन बान लगाए मधुकर, निकसि गए दुहुँ ओर॥
जब हरि मधुबन कौं जु सिधारे, धीरज धरत न ठौर।
सूरदास चातक भईं गोपी, कहाँ गए चित चोर॥

॥३६३४॥४२५२॥

राग बिहागरौ

ऊधौ हमरौ कछू दोष नहिँ, वै प्रभु निपट कठोर।
हम हरि नाम जपति हैं निसि-दिन, जैसैं चंद चकोर॥
हम दासी बिन मोल की ऊधौ, ज्यौं गुड़िया बिनु डोर।
सूरदास प्रभु दरसन दीजै, नाहीँ मनसा और॥
॥३६३५॥४२५३॥

राग गौरी

मधुकर उनकी बात हम जानी ।
कोऊ हुती कंस की दासी, कृपा करी भइ रानी ॥
कुबिजा नाउँ मधुपुरी बैठी, लै सुबास मनमानी ।
कुटिल कुचील जन्म की टेढ़ी, सुंदरि करि घर आनी ॥
अब वह नवल बधू ह्वै बैठी, ब्रज की कहति कहानी ।
सूर स्याम अब कैसैं पैयै, जिनसौं मिली मयानी ॥
॥३६३६॥४२५४॥

राग सारंग

कहियौ ठकुराइति हम जानी ।
अब दिन चारि चलहु गोकुल मैं, सेवहु आइ बहुरि रजधानी ॥
हमकौं हौंस बहुत देखन की संग लियैं कुबिजा पटरानी ।
पहुनाई ब्रज कौ दधि माखन, बड़ौ पलँग, अरु तातौ पानी ॥
तुम जनि डरौ उखल तौ तोर्‍यौ, दाँवरिहू अब भई पुरानी ।
वह बल कहाँ जसोमति कैं कर, देह रावरैं सोच बुढ़ानी ॥
सुरभी बाँटि दई ग्वालनि कौं, मोर-चंद्रिका सबै उडानी ।
सूर नंद जू के पालागौं, देखहु आइ राधिका स्यानी ॥
॥३६३७॥४२५५॥

राग गौरी

बरु उन कुबिजा भलौ कियौ ।
सुनि-सुनि समाचार ये मधुकर, अधिक जुड़ात हियौ ॥
जिनके तन मन प्रान रूप गुन हर्‍यौ, सु फिरि न दियौ ।
तिन अपनौ मन हरत न जान्यौ, हँसि हँसि लोग जियौ ॥
सूर तनक चंदन चढ़ाइ उर, श्रीपति बस जु कियौ ।
और सकल नागरि नारिनि कौं, दासी दाउँ लियौ ॥
॥३६३८॥४२५६॥

राग केदारौ

ऊधौ अब कछु कहत न आवै ।
सिर पर सौति हमारैं कुबिजा, चाम के दाम चलावै ॥

कछु इक मंत्र कर्‌यौ चंदन मैं, तातैं स्यामहि भावै।
अपनैं ही रँग रचे साँवरे, सुक ज्यौं बैठि पठावै॥
तब जो कहत असुर की दासी, अब कुल वधू कहावै।
नटिनी लौं कर लिए लुकटिया, कपि ज्यौं नाच नचावै॥
टूट्यौ नातौ या गोकुल कौ, लिखि लिखि जोग पठावै।
सूरदास प्रभु हमहिं निदरि, दाढ़े पर लोन लगावै॥
॥३६३९॥४२५७॥

देखौ माई इहिं कुबिजा हम जारी।
किरचक चंदन दै बिरमाए, हम तन करी निनारी॥
कत हम संखचूड़ तैं राखी, दावानलहिं उबारी।
एक सँदेसौ कहियौ ऊधौ, प्रान तजतिं ब्रजनारी॥
कत हम सिरजीं चतुर बिधाता, कत गढ़ि छोलि सँवारी।
सूरदास-प्रभु जल के सुत ज्यौं, क्यौं बिरहिनि तन गारी॥
॥३६४०॥४२५८॥

राग बिहागरौ

ऊधौ जानी रे मैं जानी।
राजा भए तिहारे ठाकुर, अरु कुबिजा पटरानी॥
भली भई जु सुनी नई बतियाँ, मोहन मुख की बानी।
सूरदास मधुबन के बासी, कबतैं भए गुरु ज्ञानी॥
॥३६४१॥४२५९॥

ऊधौ यहै अचंभो बाढ़।
आपु कहाँ ब्रजराज मनोहर, कहाँ कूबरी राढ़॥
जिहि छिन करत कलोल संग रति, गिरिधर अपनी चाढ़।
काटत हैं परजंक ताहिं छिन, कै धौं खोदत खाढ़॥
किधौं सदा बिपरीत रचत हैं, गहि-गहि आसन गाढ़।
सूर सयान भए हरि, बाँधत, माँस खाइ, गल हाड़॥
॥३६४२॥४२६०॥

राग कन्हरौ

सुनि-सुनि ऊधौ आवति हाँसी।
तहँ वै ब्रह्मादिक के ठाकुर, कहाँ कंस की दासी॥

इन्द्रादिक की कौन चलावै, संकर करत खवासी।
निगम आदि बंदीजन जाके, सेष सीस के बासी॥
जाकैं रमा रहति चरननि तर, कौन गनै कुबिजा सी।
सूरदास-प्रभु दृढ़ करि बाँधे, प्रेम-पुञ्ज की पासी॥
॥३६४३॥४२६१॥

राग मलार

तबतैं बहुरि दरस नहिं दीन्हौ।
ऊधौ हरि मथुरा कुबिजा गृह, वहै नेम व्रत लीन्हौ॥
चारि मास बरषा कैं आगम, मुनिहुँ रहत इक ठौर।
दासी-धाम पवित्र जानि कै, नहिं देखत उठि और॥
व्रजवासी सब ग्वाल कहत हैं, कत व्रज छाँडि गये।
सूर सगुनई जात मधुपुरी, निर्गुन नाम भये॥
॥३६४४॥४२६२॥

राग जैतश्री

कुबरी कौ न्याउ री जासौं गोबिंद बोलैं।
वै त्रैलोकीनाथ चाहत हैं, काहें न ऐंडी डोलैं॥
जिनसौं कृपा करी नँद-नंदन, क्यौं नहिं करति कलोलैं।
कारो कुटिल कपट अति कान्हर, अंतर ग्रंथि न खोलै॥
हम बौरी बकवाद करति हैं, वृथा आरति यह जोलै।
दीपक देखि पतंग जरत ज्यौं मीन सुजल बिनु मोलै॥
प्रीति पुरातन पारि जिनहिं सौं, नेह कसौटी तोलै।
सूरस्याम उपहास चल्यौ व्रज, आप आपने टोलै॥
॥३६४५॥४२६३॥

राग जैतश्री

काम गँवारी सौं पर्‍यौ।
रूपहीन कुलहीन कूबरी, तासौं मन जु ढर्‍यौ॥
उनकौ सदा सुभाउ सलिल कौ, खोरनि खार भर्‍यौ।
सकुच्यौ नहीं जानि ऊँचौ तन उमँगि तहँउ पसर्‍यौ॥

फेरे फिरत असुर-दासी के, जनु जड़ भाँड़ घर्‍यौ।
सूरदास गोपाल रसिक मनि, अकरन करन कर्‍यौ ॥

॥३६४६॥४२६४॥

राग मलार

काहे कौं गोपीनाथ कहावत।
जौ मधुकर वै स्याम हमारे, क्यौं न इहाँ लौं आवत ॥
सपने की पहिचानि मानि जिय हमहिं कलंक लगावत।
जो पै कृष्न कूबरी रीझे, सोइ किन विरद बुलावत ॥
ज्यौं गजराज काज के औरै, औरै दसन दिखावत।
ऐसे हम कहिबे सुनिबे कौं, सूर अनत बिरमावत ॥

॥३६४७॥४२६५॥

राग मलार

कहियत कुबिजा कृष्न निवाजी।
छुवत अटपटी चाल गई मिटि, नवसत कंचुकि साजी ॥
मिली जाइ आगैं दरवाजैं, दै चंदन ठग बाजी।
पायौ सुरति सुहाग सबनि कौ, विमल प्रीति उपराजी ॥
सुफल भयौ पछिलौ तप कीन्हौ, लखि सुरूप रति भाजी।
जग के प्रभु बस किये सूर, सिर सकल सुहागिनि गाजी ॥

॥३६४८॥४२६६॥

बैद मिल्यौ कुबिजा कौं नीकौ।
कबहूँ छुवत न पानि पानि सौं, उपकारी नितही कौ ॥
चल्यौ जु चलन नगर नारिनि मैं, रोग न रह्यौ कहीं कौ।
धनी तिहारी उनकी ऊधौ, आयौ जस कौ टीकौ ॥
रंग पर रंग लग्यौ रे मधुकर, मधुप भयौ जु तहीं कौ।
सूरदास प्रभु समुझि न देखौ, मँगनी चढ़ौ चही कौ ॥

॥३६४९॥४२६७।

राग बिहागरौ

बाजी ताँति राग हम बूझौ।
नृप हति छाँड़ि सकल ब्रज बनिता, कान्ह कूबरी रीझौ ॥

आपुन जाइ मधुपुरी छाए, जोग लिखत हम सूझौ।
दासी लै पटरानी कीन्ही, कौन न्याव यह बूझौ॥
घर-घर माखन चोरत डोलत, तिनके सखा तुम ऊधौ।
सूर परेखौ काकौ कीजै, बाप कियौ जिन दूजौ॥
॥३६५०॥४२६८॥

सॉवरौ सॉवरी रैनि कौ जायौ।
आधी राति कंस के त्रासनि, बसुद्यौ गोकुल ल्यायौ॥
नद पिता अरु मातु जसोदा, माखन मही खवायौ।
हाथ लकुट कामरि कॉधे पर, बछरुन साथ डुलायौ॥
कहा भयौ मधुपुरी अवतरे, गोपीनाथ कहायौ।
ब्रज बधुअनि मिलि सॉट कटीली, कवि ज्यौं नाच नचायौ।
अब लौं कहॉ रहे हो ऊधौ, लिखि-लिखि जोग पठायौ।
सूरदास हम यहै परेखौ, कुबरी हाथ बिकायौ॥
॥३६५१॥४२६९॥

राग सारग

ऊधौ जाके माथैं भाग।
बिलपत छॉड़ि सकल गोपीजन, चेरी चपल सुहाग॥
आए जोग की बेलि लगावन, काटि प्रेम कौ बाग।
कुबिजा कौ पटरानी कीन्ही, हमैं देत बैराग॥
लौंड़ी की डौंड़ी जग बाजी, बढ़्यौ स्याम अनुराग।
निलज भए दोऊ खेलत हैं, बारहमासी फाग॥
जोरी भली बनी है उनकी, राजहंस अरु काग।
सूरदास प्रभु ऊख छॉड़ि कै, चतुर चचोरत आग॥
॥३६५२॥४२७०॥

राग गौरी

ऊधौ जू जाइ कहौ दूरि करैं दासी।
गोकुल की नागरी सब नारि करैं हॉसी॥
हेम कॉच, हस काग, खरि कपूर जैसौ।
कुबिजा अरु कमल नैन, संग बन्यौ ऐसौ।

जाति हीन, कुल विहीन, कुबिजा वै दोऊ।
ऐसेनि कैं संग लागै, सूर तैसौ सोऊ॥
॥३६५३॥४२७१॥

राग मलार

ऊधौ कहा हमारी चूक।
वे गुन ये अवगुन सुनि हरि के, हृदय उठति है हूक॥
बिनही काज छाँड़ि गए मधुबन, हम घटि कहा करी।
तन, मन, धन आतमा निवेदन, सो उन चितहिं धरी॥
रीझे, जाइ सुन्दरी कुबिजा, इहिँ दुख आवति हाँसी।
यद्यपि कूर, कुरूप, कुदरसन, तद्यपि हम ब्रजवासी॥
एते ऊपर प्रान रहत घट, कहौ कौन सौं कहियै।
पूरब कर्म लिखे बिधि अच्छर, सूर सबै सो सहियै॥
॥३६५४॥४२७२॥

राग मलार

स्याम कौ यहै परेखो आवै।
तब वह प्रीति चरन जावक सिर, अब कुबिजा मन भावै॥
तब कत पानि धर्‌यौ गोवरधन, कत ब्रज बिपति छँड़ावै।
अब वह रूप अनूप कृपा करि, नैननि क्यौं न दिखावै॥
तब कत बेनु अधर धरि मोहन, लै लै नाम बुलावै।
अरु कत लाड़ लड़ाइ राग, रस, हँसि हँसि कंठ लगावै॥
जे सुख संग समीप रैनि-दिन, तिन कत जोग सिखावै।
जिहि मुख अमृत पियौ रसना भरि, तिहि क्यौं बिषहि पियावै॥
कर मीड़ति पछिताति मनहिं मन, क्रम क्रम करि समुझावै।
सोइ सुनि सूरदास अब बिरहिनि, इहि दुख दुख अति पावै॥
॥३६५५॥४२७३॥

राग सोरठ

यह अलि हमैं अँदेसौ आवै।
कौन गुनाह जोग लिखि पठयौ, सो तू कहि समुझावै॥
जे अँग रचे बसन आभूषन, कैसे भस्म चढ़ावै।
कबरी केस सुमन गहि राखे, सो क्यौं जटा बनावै॥

सब बिपरीत कहत तू हमसौं, सो कैसें चित आवै।
सुदर स्याम कमल दल लोचन, सूरदास मोहिं भावै॥
॥३६५६॥४२७४॥

राग सारंग

यह सदेस कहत हौ ऊधौ, कहौ कौन पै पाए।
करियत हैं अनुमान एक मन, इहिं मिस हौ ह्यॉ आए॥
हरि जू प्रथम नंद-जसुमत गृह, नाना लाड लड़ाए।
उर उच्छग कन्हैया लै लै, माखन खान सिखाए॥
सुबल श्रीदामा के सँग सब, ब्रज बीथिनि-बीथिनि धाए।
कछु इक जान भए खेलन तब, गोधन सग पठाए॥
बेनु मधुर धुनि बोलत थेइ-थेइ, संगहिं नाच-नचाए।
जल थल नित नूतन लीला करि, केते जुग बिरमाए॥
इहिं बिधि बिबिध कुतूहल, छन-छन किए आपने भाए।
कब मधुबन चले कब मार्‌यौ रिपु, बचन अचभ जनाए॥
पाछे रहे सुनत मोहन प्रिय, उभकि उरस्थल लाए।
सूरदास-प्रभु बूझत बतियॉ, सखियनि सैन बताए॥
॥३६५७॥४२७५॥

राग सोरठ

मेरैं जिय यहै परेखौ आवै।
सरबस लूटि हमारौ लीन्हौ, राज कूबरी पावै॥
तापै एक सुनौ री अजगुत, लिखि लिखि जोग पठावै।
सूर कुटिल कुबिजा के हित कौं, निगुन बेद सुनावै॥
॥३६५८॥४२७६॥

राग मलार

ऊधौ आवै यहै परेखौ।
जब बारे तब आस बडे की, बडे भएँ यह देखौ॥
जोग, जज्ञ, तप, नेम, दान, ब्रत, यहै, करत तब जात।
क्यौं हूँ बालक बढ़ै, कुसल सौं, कठिन मोह की बात॥
करी जु प्रगट कपट पिक कीरति आपु काज लगि तीर।
काज सरैं उडि मिले आपु कुल, कहा बायस की पीर॥

जहँ जहँ रहौ राज करौ तहँ-तहँ, लेहु कोटि सिर भार।
यहै असीम सूर प्रभु सौं कहि, न्हात खसै जनि वार॥
॥३६५९॥४२७७॥

राग मलार

हरि ब्रज कबहिं कह्यौ है आवन।
वेगि सु बचन सुनाइ मधुप मोहिं, बिरह बिथा बिसरावन॥
हौं यह बात कहा जानौं पिय जात, मधुपुरी छावन।
पछिली चूक समुझि उर अंतर, अब लागी पछितावन॥
सब निसि सूर सेज भई बैरिनि, ससि सीरौ तन तावन।
कब वै अंचल उर कर गहिहैं, दुसह बियोग नसावन॥
॥३६६०॥४२७८॥

राग मलार

कमल नैन की अवधि सिरानी, अजहूँ भयौ न आवन।
निसि-बासर हौं सगुन मनावति, मिलहु कृपा करि भावन॥
सबै स्वदेश बिदेसी आए, वृच्छ पखेरू छावन।
मानौ बिरह बिवाहन आयौ, क्रीड़ा मंगल गावन॥
ता महँ मोर घटा घन गरजहिं, संग मिले तिहिं सावन।
भरि भादौं वै छाइ घोपपति नारिनि दुख बिसरावन॥
बिनु देखे कल परै न इक छिन, वह मूरति चित चावन।
सूरदास प्रभु ठानी ऐसी, बैरी कंस ज्यौं रावन॥
॥३६६१॥४२७९॥

राग सारंग

तुम्हारी प्रीति, किधौं तरवारि।
दृष्टि धारि धरि हती जु पहिलैं, घायल सब ब्रजनारि॥
गिरीं सुमार खेत वृंदावन, रन मानी नहिं हारि।
बिह्वल बिकल सँभारति छिनु-छिनु, बदन सुधा-निधि बारि॥
अब यह कृपा जोग लिखि पठयौ, मनसिज करी गुहारि।
कछु इक सेप बच्यौ सूरज प्रभु, सोउ जनि डारहु मारि॥
॥३६६२॥४२८०॥

राग नट

ऊधौ तुम ब्रज मैं पैठ करी।
लै आए हौ नफा जानि कै, सबै वस्तु अकरी॥
हम अहीर माखन मथि बेचैं, सगुन टेक पकरी।
यह निर्गुन निरमोल गाठरी, अब किन करत घरी॥
यह ब्यौपार उहाँ जु समातौ, हुती बडी नगरी।
सूरदास गाहक नहिं कोऊ, देखियत गरे परी॥
॥३६६३॥४२८१॥

राग धनाश्री

जोग ठगौरी ब्रज न बिकैहै।
मूरी के पातनि के बदलैं, को मुक्ताहल दैहै॥
यह ब्यौपार तुम्हारौ ऊधौ, ऐसैं ही धरयौ रैहै।
जिन पै तैं लै आए ऊधौ, तिनहिं के पेट समैहै॥
दाख छाँड़ि कै कटुक निबौरी, को अपने मुख खैहै।
गुन करि मोही सूर साँवरैं, को निरगुन निरवैहै॥
॥३६६४॥४२८२॥

राग सारंग

मीठी बातनि मैं कहा लीजै।
जौ पै वै हरि होहिं हमारे, करन कहैं सोइ कीजै॥
जिन मोहन अपनैं कर काननि, करनफूल पहिराए।
तिन मोहन माटी के मुद्रा, मधुकर हाथ पठाए॥
एक दिवस बेनी बृंदावन, रचि पचि बिबिध बनाइ।
ते अब कहत जटा माथे पर, बदलौ नाम कन्हाइ॥
लाइ सुगंध बनाइ अभूषन, अरु कीन्हौ अरधंग।
सो वै अब कहि कहि पठवत हैं, भसम चढ़ावन अंग॥
हम कहा करैं दूरि नँद-नंदन, तुम जु मधुप मधुपाती।
सूर न होहिं स्याम के मुख की, जाहु न जारहु छाती॥
॥३६६५॥४२८३॥

ऊधौ कहत न कछू बनै।
अधरामृत आस्वादिनि रसना, कैसैं जोग सनै॥

जिहिं लोचन अवलोके नख-सिख, सुंदर नंद-तनै।
ते लोचन क्यौं जाहिं और पथ, लै पठये अपनै॥
रागिनि राग तरंग जानि चित, जे स्रुति मुरलि सुने।
ते स्रुति जोग-सँदेस सुनत कित, काँकर मेलि हने॥
सूरजदास स्याम मोहन के, गुन-गन भेद गुने।
कनकलता तैं उपज न मुकता, पटपद रंग चुने॥

॥३६६६॥४२८४॥

राग सारंग

ऊधौ भूलि भलैं भटके।
कहत कहौ कछु बात लड़ैतै, तुम ताही अटके॥
देख्यौ सकल सयान तिहारौ, लीन्हे छरि फटके।
तुमहिं दियौ बहराइ इतहिं कौं, वै कुबिजा अटके॥
लीजौ जोग सँभारि आपनौ, जाहु तहीं टटके।
सूर स्याम तजि कोउ न लैहै, या जोगहिं कटुके॥

॥३६६७॥४२८५॥

राग नट

ऊधौ तुम हौ निकट के वासी।
यह निरगुन लै तिनहिं सुनावहु, जे मुड़िया बसैं कासी॥
मुरलीधरन सकल अँग सुंदर, रूप-सिंधु की रासी।
जोग बटोरे लिए फिरत हौ, ब्रजवासिन की फाँसी॥
राजकुमार भलैं हम जाने, घर मैं कंस की दासी।
सूरदास जदुकुलहिं लजावत, ब्रज मैं होति है हाँसी॥

॥३६६८॥४२८६॥

राग सारंग

ऊधौ तुम जु निकट के वासी।
यह परमारथ बूझि कहौ किन, नाम बड़ौ की कासी॥
जोग न ज्ञान ध्यान अवराधन, साधन मुक्ति उदासी।
आन प्रकार कहा रुचि मानहिं, जे गोपाल उपासी॥

परमारथी जहाँ लौं जेते, विरहिनि के दुखदाई।
सूरदास-प्रभु रँगी, प्रेम रँग जारहिं जोग-सगाई ॥
॥३६६९॥४२८७॥

राग मलार

मधुप विराने लोग बटाऊ।
दिन दस रहे आपने स्वारथ, तजि फिरि मिले न काऊ ॥
प्रथम सिद्धि हमकौं हरि पठई, आयौ जोग अगाऊ।
हमकौं जोग, भोग कुबिजा कौं, उहिं कुल यहै सुभाऊ ॥
जान्यौ प्रेम नंद-नंदन कौ, कीजै कौन उपाऊ।
सूर स्याम कौं सरबस दीन्हौं, प्रान रहौ कै जाऊ ॥
॥३६७०॥४२८८॥

राग सारंग

बटाऊ होहिं न काके मीत।
संग रहत सिर मेलि ठगौरी, हरत अचानक चीत ॥
मोहे नैन रूप दरसन के, स्रवन मुरलिका गीत।
देखत ही हरि लै जु सिधारे, बाँधि पिछौरी पीत ॥
याहि तैं झुकति, यहै मग चितवति, सुख जु भए बिपरीत।
सूरदास बरु भली पिंगला, आसा तजि परतीत ॥
॥३६७१॥४२८९॥

राग सोरठ

ऊधौ प्रीति नई नित मीठी।
आपुन जाइ मधुपुरी छाए, हमकौं जोग बसीठी ॥
काटे ऊपर लौन लगावत, लिखि-लिखि पठवत चीठी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, जरि बरि भई अँगीठी ॥
॥३६७२॥४२९०॥

राग मलार

दिन-दिन प्रीति देखियत थोरी।
सुनहु मधुप मधुबन बसि, मधुरिपु कुल मरजादा छोरी ॥
गोकुल की मनि त्रिभुवन नायक दासी सौं रति जोरी।
तापर लिखि लिखि जोग पठावत, बिसरी माखन चोरी ॥

काकौ मान परेखौ कीजै, बँधी प्रेम की डोरी।
सूरदास बिरहिनी बिरह जरि, भई साँवरी गोरी ॥
॥३६७३॥४२९१॥

राग आसावरी

जा दिन तैं गोपाल चले।
ता दिन तैं ऊधौ या ब्रज के, सब स्वभाव बदले ॥
घटे अहार बिहार हरष हित सुख सोभा गुन गान।
ओज तेज सब रहित सकल बिधि, आरति असम समान ॥
बाढ़ी निसा, बलय आभूषन, उर-कचुकी उसास।
नैननि जल अंजन अंचल प्रति, आवन अवधि की आस ॥
अब यह दसा प्रगट या तन की कहियौ जाइ सुनाइ।
सूरदास-प्रभु सो कीजौ जिहिं, वेगि मिलहिं अब आइ ॥
॥३६७४॥४२९२॥

राग सारंग

सुनि रे मधुकर चतुर सयाने।
सुख की सौंज उठी ता दिन तैं, पटए स्याम बिनाने ॥
नैननि तेज गयौ ता दिन तैं, सावन ज्यौं बरषाने।
उर तैं हास बिलास दोऊ मिलि ये दुरि कहूँ लुकाने ॥
ता दिन तैं पंछी भए बैरी, भापा बैर बुलाने।
बन के बास निवास सकल ये, भए भयानक बाने ॥
मोहन प्रान हरे ता दिन तैं, फेरि न यह गति आने।
बिरह अनंग अनल तन दाहत, को या परिहिं जाने ॥
अब ये अंक देखियत ऐसे, रहे जु चित्र लिखाने।
सूर सजीवन होहि सु नव तन रूप माधुरी साने ॥
॥३६७५॥४२९३॥

राग गौरी

हमारी पीर न हरि बिनु जाइ।
जौ सोऊँ तौ मोहिं हरि मिलैं, जागे तैं अति दाइ ॥
कमलनैन मधुपुरी सिधारे, हमहिं न संग लगाइ।
अब यह बिथा कौन बिधि भरियै, कोऊ देइ बताइ ॥

परमारथी जहाँ लौं जेते, बिरहिनि के दुखदाई।
सूरदास-प्रभु रँगी, प्रेम रँग जारहिं जोग-सगाई॥
॥३६६९॥४२८७॥

राग मलार

मधुप बिराने लोग बटाऊ।
दिन दस रहे आपने स्वारथ, तजि फिरि मिले न काऊ॥
प्रथम सिद्धि हमकौं हरि पठई, आयौ जोग अगाऊ।
हमकौं जोग, भोग कुबिजा कौ, उहिं कुल यहै सुभाऊ॥
जान्यौ प्रेम नंद-नंदन कौ, कीजै कौन उपाऊ।
सूर स्याम कौं सरबस दीन्हौ, प्रान रहौ कै जाऊ॥
॥३६७०॥४२८८॥

राग सारग

बटाऊ होहिं न काके मीत।
संग रहत सिर मेलि ठगौरी, हरत अचानक चीत॥
मोहे नैन रूप दरसन के, स्रवन मुरलिका गीत।
देखत ही हरि लै जु सिधारे, बाँधि पिछौरी पीत॥
याहि तैं कुकति, यहै मग चितवति, सुख जु भए बिपरीत।
सूरदास बरु भली पिगला, आसा तजि परतीत॥
॥३६७१॥४२८९॥

राग सोरठ

ऊधौ प्रीति नई नित मीठी।
आपुन जाइ मधुपुरी छाए, हमकौं जोग बसीठी॥
काटे ऊपर लौन लगावत, लिखि-लिखि पठवत चीठी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, जरि बरि भई अँगीठी॥
॥३६७२॥४२९०॥

राग मलार

दिन-दिन प्रीति देखियत थोरी।
सुनहु मधुप मधुबन बसि, मधुरिपु कुल मरजादा छोरी॥
गोकुल की मनि त्रिभुवन नायक दासी सौं रति जोरी।
तापर लिखि लिखि जोग पठावत, बिसरी माखन चोरी॥

काकौ मान परेखौ कीजै, बँधी प्रेम की डोरी।
सूरदास बिरहिनी बिरह जरि, भई साँवरी गोरी ॥
॥३६७३॥४२९१॥

राग आसावरी

जा दिन तैं गोपाल चले।
ता दिन तैं ऊधौ या ब्रज के, सब स्वभाव बदले ॥
घटे अहार बिहार हरष हित सुख सोभा गुन गान।
ओज तेज सब रहित सकल बिधि, आरति असम समान ॥
बाढ़ी निसा, बलय आभूषन, उर-कचुकी उसास।
नैननि जल अंजन अंचल प्रति, आवन अवधि की आस ॥
अब यह दसा प्रगट या तन की कहियौ जाइ सुनाइ।
सूरदास-प्रभु सो कीजौ जिहिं, बेगि मिलहिं अब आइ ॥
॥३६७४॥४२९२॥

राग सारंग

सुनि रे मधुकर चतुर सयाने।
सुख की सौंज उठी ता दिन तैं, पठए स्याम बिनाने ॥
नैननि तेज गयौ ता दिन तैं, सावन ज्यौं बरषाने।
उर तैं हास बिलास दोऊ मिलि ये दुरि कहूँ लुकाने ॥
ता दिन तैं पंछी भए बैरी, भाषा बैर बुलाने।
बन के बास निवास सकल ये, भए भयानक बाने ॥
मोहन प्रान हरे ता दिन तैं, फेरि न यह गति आने।
बिरह अनंग अनल तन दाहत, को या परिहिं जाने ॥
अब ये अंक देखियत ऐसे, रहे जु चित्र लिखाने।
सूर सजीवन होहिं सु नव तन रूप माधुरी साने ॥
॥३६७५॥४२९३॥

राग गौरी

हमारी पीर न हरि बिनु जाइ।
जौ सोऊँ तौ मोहिं हरि मिलैं, जागे तैं अति दाइ ॥
कमलनैन मधुपुरी सिधारे, हमहिं न संग लगाइ।
अब यह बिथा कौन बिधि भरियै, कोऊ देइ बताइ ॥

उन्मद जोबन आनि टाठि कै, कैस रोको जाइ।
सूरदास-स्वामी के मिलिवैं, तन की तपति बुझाइ ॥
॥३६७६॥४२९४॥

हमारी नाहिं जानत पीर।
हास बिलास प्रेम रस रहि गयौ, वा जमुना के तीर ॥
जा दिन तैं ऊधौ हरि बिछुरे, प्रान धरत नहिं धीर।
हमरी बिथा जाइ तुम कहियौ, मूर्खों सकल सरीर ॥
जो पाती तुम आनि दई है, देखि चल्यौ द्दग नीर।
सूरदास प्रभु आनि मिलावहु, प्रान रहैं बलबीर ॥
॥३६७७॥४२९५॥

राग मलार

गोपालहिं बारे ही की टेव।
जानति नहीं कहाँ तैं सीखे, चोरी के छल छेव ॥
तब कछु दूध दह्यौ लै खाते, करि रहतीं हम कानि।
कैसैं सही परति अब हम पै, मन मानिक की हानि ॥
ऊधौ नंद-नँदन सौं कहियौ, राजनीति समुझाइ।
राजहु भये तजत नहिं लोभहिं, जोग नहीं जदुराइ ॥
बुधि बिवेक अरु बचन चातुरी, पहिलैं लई चुराइ ॥
सूरदास प्रभु के गुन ऐसे, कासौं कहिए जाइ ॥
॥३६७८॥४२९६॥

राग सारग

बिसरतिं क्यौं गिरिधर की बातैं।
अवधि आस लगि रह्यौ, मधुप, मन, तजि न गयौ वट तातैं ॥
हरि कैं बिरह छीन भई ऊधौ, दोउ दुख परे सँघातैं।
तन-रिपु काम चित्त रिपु लीला, ज्ञान गम्य नहिं तातैं ॥
स्रवन सुन्यौ चाहत गुन हरि कौ, जो वै कथा पुरातैं।
लोचन रूप ध्यान धर्‌यौ निसि-दिन, कहौ घटै को कातैं ॥
ज्यौं नृप प्रान गए सुत अपनैं, राँचि रह्यौ जो जातैं।
सूर सुमति तौ ही पै उपजै, हरि आवैं मथुरा तैं ॥
॥३६७९॥४२९७॥

राग बिलावल

ऊधौ कहौ हमैं क्यौं बिसरे, श्री गुपाल सुखदाई॥
सुंदर बदन नैन देखे बिनु, निसि दिन कछु न सुहाई॥
अति सुरूप सोभा की सींवा, अखिल लोक चतुराई।
मृदु मुसकान रोम आनंदत, कह लौं करें बड़ाई॥
जिन हम काज धरयौ कर गिरिवर, बहुत बिपति बिसराई।
सोइ इहिं देह हमारैं मन बसि, सूरदास बलि जाई॥
॥३६८०॥४२९८॥

राग मलार

ऊधौ कुलिस भई यह छाती।
मेरौ मन रसिक लग्यौ नँदलालहिं, झखत रहत दिन राती॥
तजि ब्रज लोग पिता अरु जननी, कंठ लाइ गए कॉंती।
ऐसे निठुर भए हरि हमकौं, कबहुँ न पठई पाती॥
पिय पिय कहत रहै जिय मेरौ, ह्वै चातक को जाती।
सूरदास-प्रभु प्रानहिं राखौ, ह्वै करि बूँद सिवाती॥
॥३६८१॥४२९९॥

राग गौरी

हम तौ कान्ह केलि की भूखी।
कहा करैं लै निर्गुन तुम्हरौ, बिरहिनि बिरह बिदूषी॥
कहियै कहा यहै नहिं जानत, कहौ जोग किहि जोग।
पालागौं तुमहीं से वा पुर, बसत बावरे लोग॥
चंदन, अभरन, चीर चारु वर, नेकु आपु तन कीजै।
दंड, कमंडल, भसम, अधारी, तब जुवतिनि कौं दीजै॥
सूर देखि दृढ़ता गोपिन की, ऊधौ दृढ़ ब्रत पायौ।
करी कृपा जदुनाथ मधुप कौं, प्रेमहिं पढ़न पठायौ॥
॥३६८२ ४३००॥

राग गौरी

तुमहीं मधुप गोपाल दुहाइ।
कबहुँक स्याम करत ह्याँ कौ मन, किधौं प्रीति बिसराई।

सोई बात कहौ किन साँची, छाँडो दुसह दुराई।
कहि कब हरि आवैंगे ऊधौ, करैं केलि सुखदाई।
हम अबला, अज्ञान, अलप मति, बरजत प्रीति लगाई।
करहु कृपा जन सूर आपने, बारक दरस दिखाई॥
॥३६८३॥४३०१॥

(ऊधौ) कबहुँ सुरति करैं कान्ह तुम्हारे।
हरि मुख कमल नैन ये मधुकर बिलसत रहत हमारे॥
तब वह कृपा केलि बृंदावन, निमिष न होत निनारे।
सो चरनारबिंद बिनु देखैं, द्यौस अनेक सिधारे॥
तुम सँदेस लै आए ऐसौ, बचन बान कर मारे।
सूरदास-प्रभु तन दावानल, रहे हुते, फिरि जारे॥
॥३६८४॥४३०२

उद्धव वचन *राग बिहागरौ*

गोपी सुनहु हरि सदेस।
कह्यौ पूरन ब्रह्म ध्यावहु, त्रिगुन मिथ्या भेष॥
मैं कहौं सो सत्य मानहु, सगुन डारहु नाखि।
पच त्रय गुन सकल देही, जगत ऐसौ भाषि॥
ज्ञान बिनु नर मुक्ति नाहीं, यह विषय ससार।
रूप-रेख, न नाम जल थल बरन अबरन सार॥
मातु पितु कोउ नाहिं नारी, जगत मिथ्या लाइ।
सूर सुख दुख नहीं जाकैं, भजौ ताकौं जाइ॥
॥३६८५॥४३०३॥

गोपी वचन *राग सारग*

ऐसी बात कहौ जनि ऊधौ।
कमलनैन की कानि करति हैं, आवत बचन न सूधौ॥
बातनि ही उडि जाहिं और ज्यौं, त्यौं नाहीं हम काँची।
मन बच, कर्म सोधि एकै मत, नद-नँदन रँग-राँची॥
सो कछु जतन करौ पालागौं, मिटै हियें की सूल।
मुरली बरहि आनि दिखरावहु, ओढ़े पीत दुकूल॥

इनहीं बातनि भए स्याम तनु, मिलवत हौं गढ़ि छोलि ।
सूर बचन सुनि रह्यौ ठगौसौ, बहुरि न आयौ बोलि ॥
॥३६८६॥४३०४॥

राग धनाश्री

मधुकर समुझि कह्यौ किन बात ।
पर मद पिये मत्त न हूजियत, काहे कौं इतरात ॥
बीच जो परै सत्य सो भाषै, बोलै सत्य स्वरूप ।
मुख देखे कौ न्याउ न कीजै, कहा रंक कह भूप ॥
कछुवै कहत कछू मुख निकसत, पर निंदक व्यभिचारी ।
ब्रज बनितनि कौ जोग सिखावत, कीरति आनि पसारी ॥
हम जानैं जु भँवर रस भोगी, जोग जुगति कहँ पाई ।
परम गुरू सिर मूँड़ि बापुरे, कर मुख छार लगाई ॥
यहै अनीति बिधाता कीन्ही, तौ वै पूछत नाहीं ।
जौ कोउ पर हित कूप खनावै, परै सु कूपहि माहीं ॥
तब अक्रूर अबै हौ ऊधौ, दुहुँ मिलि छाती जारी ।
सूर सोइ प्रभु अंतर जामी, कासौं कहैं पुकारी ॥
॥३६८७॥४३०५॥

राग सोरठ

फिरि फिरि कहा बनावत बात ।
प्रात काल उठि खेलत, ऊधौ घर-घर माखन खात ॥
जिनकी बात कहत तुम हमसौं, सो है हमसौं दूरि ।
ह्याँ हैं निकट जसोदा नंदन, प्रान सजीवन मूरि ॥
बालक संग लिऐं दधि चोरत, खात खवावत डोलत ।
सूर सीस नीचौ कत नावत, अब काहैं नहिं बोलत ॥
॥३६८८॥४३०६॥

तुम्ह कहि आवत ऊधो बात !
या ब्रज मैं कोउ जानत नाहीं, जोग कथा उत्पात ॥
हम तौ जोग जुगुति जिय सीखी, स्यो सिंगार अरबिंद ।
तातैं जीवन मुक्त भईं हम, भैंटति हैं गोबिंद ॥

जोगी जरे मर उटि सीसी, निरगुन क्यौं टहरात।
तातैं सगुन सुरूप सिंधु तजि, दृग भरमन नहिँ जात॥
निरगुन सगुन सूर प्रभु आगैं, जाइ मधुपुरी भापि।
जोई भलौ सोइ व्रज पैहौ, तुम्हैं हमारी साखि॥

॥३६८९॥४३०७॥

राग सारंग

फिरि-फिरि कहा सिखावत मौन।
बचन दुसह लागत अलि तेरे, ज्यौं पजरे पर लौन॥
सृंगी, मुद्रा, भस्म, त्वचा-मृग, अरु अवराधन पौन।
हम अबला अहीरि सठ मधुकर, धरि जानहिँ कहि कौन॥
यह मत जाइ तिनहिँ तुम सिखवहु, जिनहि आजु सब सोहत।
सूरदास कहुँ सुनी न देखी, पोत सूतरी पोहत॥

।३६९०॥४३०८॥

राग केदारौ

रहि रहि देख्यौ तेरौ ज्ञान।
सुफल-सुत सरबस्व लै गयौ, तू करत अब न्यान॥
वृथा कत अपलोक लावत, कहत यह संदेस।
डरपि कातर होहु जनि कहुँ, कहत बैन कलेस॥
जोग मत अति बिसद कीरति, होहिँ बाछित काम।
सदा तनमयता भरे हैं, वे पुरुष तुम धाम॥
चरन कंज सुवास लै लै, जियतिं ऐसी रीति।
कहत तिनसौं धूम घूटन, नाहिँ चालन प्रीति॥
अजहुँ नाहिन कहि सिरानौ, यह कथा कौ छेउ।
सूर धोखौ तनक हो हम, देखि लीन्हौ तेउ॥

॥३६९१॥४३०९॥

राग धनाश्री

ऊधौ हमहिँ न जोग सिखैये।
जिहिँ उपदेस मिलैं हरि हमकौं, सो ब्रत नेम बतैये॥
मुक्ति रहौ घर बैठि आपने, निर्गुन सुनि दुख पैये।
जिहिँ सिर केस कुसुम भरि गूँदे, कैसैं भस्म चढ़ैये॥

जानि जानि सब मगन भई हैं, आपुन आपु लखैयै ।
सूरदास-प्रभु सुनहु नवौ निधि, बहुरि कि इहिं ब्रज अइयै ॥
॥३६९२॥४३१०॥

राग मलार

हम तौ तबहिं तैं जोग लियौ ।
जबही तैं मधुकर मधुबन कौं, मोहन गौन कियौ ॥
रहित सनेह सिरोरुह सब तन, श्री खँड भसम चढ़ाए ।
पहिरि मेखला चीर पुरातन, फिरि फिरि फेरि सियाए ॥
श्रुति ताटक मेलि मुद्रावलि, अवधि अधार अधारी ।
दरसन भिच्छा माँगत डोलतिं, लोचन पात्र पसारी ॥
बाँधे बेनु कंठ सिंगी, पिय, सुमिरि सुमिरि गुन गावत ।
करतल बेंत दंड डर डरत न, सुनत स्वान दुख धावत ॥
रहत जु चित्त उदास फिरतिं, बन बीथिनि दिन अरु राति ।
धारक आवत कुटुँब जातरा, सोऊ अब न सुहाति ॥
भोग भुगति भूलैं नहिं भावत, भरीं बिरह बैराग ।
गोरख सब्द पुकारत आरत, रस रसना अनुराग ॥
भोगी को देखत इहिं ब्रज मैं, जोग देन जिहिं आए ।
जानी सिद्धि तुम्हारे सिध की, जिन तुम इहाँ पठाए ॥
परम गुरू रतिनाथ हाथ सिर, दियौ मंत्र उपदेस ।
चतुर चेटकी मथुरानाथ सौं, जाइ करौ आदेस ॥
सूर सुमति प्रभु तुमहिं लखायौ, सोई हमरैं ध्यान ।
अलि चलि औरै ठौर दिखावहु, अपनौ फोकट ज्ञान ॥
॥३६९३॥४३११॥

राग मलार

ऊधौ करि रहीं हम जोग ।
कहा एतौ बाद ठान्यौ, देखि गोपी भोग ॥
सीस सेली-केस, मुद्रा, कान-बीरी बीर ।
बिरह भस्म चढ़ाइ बैठीं, सहज कंथा चीर ॥
हृदय सिंगी टेर मुरली, नैन खप्पर हाथ ।
चाहतीं हरि दरस भिच्छा देहिं दीनानाथ ॥

जोग की गति जुगति हम पै, सूर देखो जोइ।
कहत हम सौं करन जोग, सु जोग कैसो होइ ॥
॥३६९४.४३१२॥

राग मलार

ब्रज मैं जोग करत जुग बीते।
बिना स्याम सुंदर के सजनी, मदन दूत तन जीते ॥
ज्यौं-ज्यौं निठुर बचन सुनियत हैं, जरत हमारे पीते।
अब किन सुरति करैं गोकुल की, क्यौं त्यागी हम जीतैं ॥
सरबस दयो स्याम कैं कारन, हम अपनो तब ही तैं।
सूरजदास हमारे लोचन, भए कान्ह बिनु रीते ॥
॥३६९५॥४३१३॥

राग मलार

ऊधौ जोग तबहिं तैं जान्यो ॥
जा दिन तैं सुफलक सुत कैं सँग, रथ ब्रजनाथ पलान्यौ ॥
ता दिन तैं सब छोह मोह गयौ, सुत पति हेत भुलान्यौ।
तजि माया संसार सबनि कौं, ब्रज जुवतिन ब्रत ठान्यौ ॥
नैन-मूँदि, मुख मौन रही धरि, तन तप तेज सुखान्यौ।
नंद-नँदन मुरली मुख धारैं वहै ध्यान उर आन्यौ ॥
सोइ रूप जोगी जिहिं भूले, जो तुम जोग बखान्यौ।
ब्रह्मा हू पचि मुए ध्यान करि, अतहु नहिं पहिचान्यो ॥
कहौ सु जोग कहा लै कीजै, निरगुन जो नहिं जान्यो।
सूर वहै निज रूप स्याम कौ, है मन माहँ समान्यो ॥
॥३६९६॥४३१४॥

राग सारंग

ए अलि कहा जोग मैं नीकौ।
तजि रस रीति नंद-नदन की, सिखवत निरगुन फीकौ ॥
देखत सुनत नाहि कछु स्रवननि, जोति-जोति करि ध्यावत।
सुंदर स्याम कृपालु दयानिधि, कैसैं हौं बिसरावत ॥
सुनि रसाल मुरली की सुर धुनि, सुर मुनि कौतुक भूले।
अपनी भुजा ग्रीव पर मेली, गोपिन के मन फूले ॥

लोक कानि कुल के भ्रम छाँड़े, प्रभु संग घर बन खेली।
अब तुम सूर खवावन आए, जोग जहर की वेली।

॥३६९७॥४३१५॥

ऊधौ किहिँ विधि कीजै जोग।
जे रस रसौं स्याम सुदर के, ते क्यौं सहैं बियोग॥
पूछहु जाइ चकोर चंद-हित, दरसन जो सुख पावत।
चातक स्वाति बूँद चित बाँध्यौ, जल निधि मनहिँ न आवत॥
अरु रस-कमल सिलीमुख जानत, कटक सूल सहै जो।
जानैं रसिक मैन बिछुरन दुख, मरतहुँ प्रीति लहै जो॥
तुमहूँ रसिक कहावत मधुकर, आपु स्वारथी जैसौ।
कहा करैं ये सूर प्रेम-बस, बिनु हित जीवन कैसौ॥

॥३६९८॥४३१६॥

ऊधौ तुम क्यौं नहिँ जोग करौ।
ऐसी सिद्धि छाँड़ि कित डोलत, औरनि सीख धरौ॥
हरि कौ रूप सु रूप अनूपम, यही हमारैं ध्यान।
निसि बासर नहिँ टरत हृदय तैं, ब्रज के जीवन-प्रान॥
कहा भयौ जौ निकट बसत हौ, हरि के सखा कहावत।
तन तजि सूर ज्ञान उर रोहत, यह नीरस किहिँ भावत॥

॥३६९९॥४३१७॥

राग गौरी

ऊधौ जोग-जोग कहत, कहा जोग कीएँ।
स्याम सुँदर कमल नैन, बसौ मेरे जीएँ॥
जोग जुगुति साधन तप, जोगि जुग सिरायौ।
ताकौ फल सगुन मूर्ति, प्रगट दरस पायौ॥
मकराकृत कुंडल छबि, राजति सु कपोलैं।
मोर मुकुट पीत बसन बाँसुरि कर बोलै॥
ऐसे प्रभु गुन-निधान, दरस देखि जीजै।
राम-स्याम निधि-पियूष, नैननि भरि पीजै॥
जाकौ अयन जल मैं, तिहि अनल कैसैं भावै।
सूरज-प्रभु गुन-निधान, निरगुन क्यौं गावै॥

॥३७००॥४३१८॥

ऊधौ हम कह जानैं जोग ।
नंद नँदन कारन जिन छाँड्यौ, कुल लज्जा अरु लोग ॥
को आसन मम बैठै ऊधौ, प्रान वायु को साधै ।
को धरि ध्यान धारना मधुकर, निरगुन पथ आराधै ॥
काके जिय मैं नेम तपस्या, काकैं मन संतोष ।
काकैं सब आचार फलौ बरु, को चाहत है मोष ॥
निसि दिन कछु चित चेत न जानौ, नंद-नँदन की आस ।
को खनि कूप मरै बालू थल, छाँड़ि सूर सरि पास ॥
॥३७०१॥४३१९॥

राग मलार

मधुकर स्याम हमारे ईस ।
तिनको ध्यान धरैं निसि बासर, औरहिं नवैं न सीस ॥
जोगिनि जाइ जोग उपदेसहु, जिनके मन दस बीस ।
एकै चित एकै वह मूरति, तिन चितवति दिन तीस ॥
काहैं निरगुन ग्यान आपनौ, जित कित डारत खीस ।
सूरदास-प्रभु, नंदनंदन बिनु, हमरे को जगदीस ॥
॥३७०२॥४३२०॥

राग सोरठ

जोग की गति सुनत मेरैं, अंग आगि बई ।
सुलगि तन हम जरति हीं, तुम आनि फूँकि दई ॥
भोग कुबिजा कूबरी को, कौन बुद्धि भई ।
सिंह भख तजि चरत तिनुका, सुनी बात नई ॥
ध्यान धरति न टरति मूरति, त्रिबिधि ताप तई ।
सूर हरि की कृपा जापर, सकल सिद्धि मई ॥
॥३७०३॥४३२१॥

राग धनाश्री

जोग ज्ञान की बातैं ऊधौ तुमहीं पै बनि आईं ।
स्रोता कंठ कुसुम की माला, बक्ता लइ ठकुराई ॥
वे ज्ञानी गुरु सब जग जानत, जिन दासी रति पाई ।
कनक-रतन रथ ऊपर चढ़ि कैं, संग चले ब्रज धाई ॥

तुम तौ परम साधु उपदेसक, कथनी कथत बनाई।
हम हरिनी नैनी की संगति, ज्ञान पंथ मैं गाई॥
याकौ मरम न जानत कछुवै, कहि सुंदरि समुझाई।
सूरदास-प्रभु सौं कहियौ जब, बैठैं सभा जुराई॥
॥२७०४॥४३२२॥

राग सारंग

जोग जुगुति यद्यपि हम लीनी, लीला काकौं दैहौ।
उलटि जाहु मथुरा मधुकर तुम, बूझि बेगि ब्रज ऐहौ॥
रास समय कालिंदी के तट, तब तुव बचन न माने।
यह को सुनै कुपथ की बतियाँ, प्रभुहि पराए जाने॥
नगर बसत गुन ज्ञान बढत, पै भूलहु बिसर्‍यौ ज्ञान।
चारि बाहु पद भए मधुपुरी, खरे सुहाए कान॥
आपुन फेरि कियौ दिखियत है, तुम भूलौ हम भूलतिँ।
सूर स्याम बल्लभ बेली बिनु, दरस सलिल उन्मूलतिँ॥
॥२७०५॥४३२३॥

राग मलार

मधुकर रह्यौ जोग लौं नातौ।
कतहिँ बकत है काम काज बिनु, होहि न ह्याँ तैं हातौ॥
जब मिलि मिलि मधुपान करत हे, तब तू कहि धौं कहा तौ।
अब आयौ निरगुन उपदेसन, जो नहिँ हमहिं सुहातौ॥
काँचे गुन करि तृनहिँ लपेटत, लै बारिज कौ ताँतौ।
मेरे जान गह्यौ चाहत हौ, फेरि कि मैगल मातौ॥
यह लै देहु सूर के प्रभु कौ, आयौ जोग जहाँ तौ।
जब चहिहैं तब माँगि पठैहैं, जो कोउ आवत जातौ॥
॥२७०६॥४३२४॥

राग सारंग

ऊधौ जोग किधौं यह हाँसी।
कीन्हीं प्रीति हमारे ब्रज सौं, दई प्रेम की फाँसी॥
तुम हौ बड़े जोग के पालक, संग लए कुबिजा सी।
सूरदास सोई पै जानै, जा उर लागै गाँसी॥
॥२७०७॥४३२५॥

ऊधौ जो हरि जोग सिखावत।
जोग जुगुति बुधि ज्ञान प्रगट करि, कहि कहि कहा बतावत ॥
बिद्या दान दुराइ स्रवन मैं, गुप्त मंत्र गुरु देत।
हम गोकुल वै मधुबन माधौ, होत सँदेसनि खेत ॥
जौ हरि कृपा करी दीननि पै, तौ ह्याँ लगि पग धारैं।
करि उपदेस क्यौं न दृढ हमकौं, फिरि ब्रजनाथ सिधारैं ॥
दरसन पाइ परसि पद पावन, प्रथम पवित्र करैं।
तौ फल सिद्धि होइ सूरज, गुरु माथैं हाथ धरैं ॥

॥३७०८॥४३२६॥

राग धनाश्री

सतगुरु-चरन भजे बिनु बिद्या, कहु कैसैं कोउ पावै।
उपदेसक हरि दूरि रहे तैं क्यौं हमरे मन आवै ॥
जो हित कियौ तौ अधिक करहि किन, आपुन आनि सिखावैं।
जोग बोझ तैं चलि न सकैं तौ, हमहीं क्यौं न बुलावैं ॥
जोग ज्ञान मुनि नगर तजे बरु, सघन गहन बन धावैं।
आसन मौन नेम मन संजम, बिपिन मध्य बनि आवैं ॥
आपुन कहैं करैं कछु औरै, हम सबहिनि डहकावैं।
सूरदास ऊधौ सौं स्यामा, अति संकेत जनावैं ॥

॥३७०९॥४३२७॥

राग मारू

जोग-विधि मधुबन सिखिहैं जाइ।
मन-बच कर्म सपथ सुनि ऊधौ, सगहिं चलौ लिवाइ ॥
सब आसन, रेचक अरु पूरक, कुंभक सीखहि भाइ।
बिनु गुरु निकट सँदेसनि कैसैं, यह अवगाह्यौ जाइ ॥
हम जो करत देखिहैं कुबिजहिं, तेई करब उपाइ।
श्रद्धा-सहित ध्यान एकहि सँग, कहत जाहि जदुराइ ॥
सूर-सुप्रभु की जापर रुचि है, सो हम करिहैं आइ।
आज्ञा-भंग करैं हम क्यौं करि, जो पतिव्रत बिनसाइ ॥

॥३७१०॥४३२८॥

राग धनाश्री

जोग सँदेसौ ब्रज मैं लावत ।
थाके चरन तुम्हारे ऊधौ, बार-बार के धावत ॥
सुनिहै कथा कौन निरगुन की, रचि पचि बात बनावत ।
सगुर सुमेर प्रगट देखियत, तुम तृन की ओट दुरावत ॥
हम जानतिं परपंच स्याम के, बातनि हीं बौरावत ।
देखी सुनी न अबलगि कबहूँ, जल मथि माखन आवत ॥
जोगी जोग अपार सिंधु मैं, ढूँढ़ेहू नहिं पावत ।
ह्याँ हरि प्रगट प्रेम जसुमति कैं, ऊखल आपु बँधावत ॥
चुप करि रहौ ज्ञान ढकि राखौ, कत हौ बिरह बढ़ावत ।
नंदकुमार कमल-दल लोचन, कहि को जाहि न भावत ।
काहे कौं बिपरीत बात कहि, सबके प्रान गवाँवत ।
सोहत कित सूरज अबलनि कौं, निगम नेति जिहि गावत ॥
॥३७११॥४३२६॥

राग सारंग

सुनियत ज्ञान कथा अलि गावत ।
जिहि मुख सुधा बेनु रस पूरत, यह ब्रत तिनहिं सुनावत ॥
जहँ लीला रस सखी समाजहिं, कहत कहत दिन जात ।
बिधना फेर कियौ अब दिखियत, तहँ षटपद समुझात ॥
बिद्यमान रस रास लड़ैते, कत मन इत अरुझात ।
रूप रहित कछु बदत बदन तैं, मनि कोउ ठग भरकात ॥
साधुवाद स्रुति सार जानि कोउ तन मन कित बिसरात ।
नंद-नँदन कर कमल सुमिरि छबि, मुख ऊपर परसात ॥
एक एक तैं सबै सयानी, ब्रजसुंदरि न सँख्यात ।
सूर स्याम रस-सिंधु-कामिनी, नहिं वह दसा हिरात ॥
॥३७१२॥४३३०॥

राग गौरी

ब्रज की बात भई अब न्यारी ।
तिहिं सुंदरि मधि जोग गाइयतु, जहँ गावत गिरिधारी ॥
रिपु रन मारि रहे सब दिसि त्यौं, भिच्छु कथा बिस्तारी ।
सूर ब्यथित दिन सकुचि कुमुदिनी, निसि हेमंत प्रजारी ॥
॥३७१३॥४३३१॥

राग सारंग

मधुकर यह निहचै हम जानी ।
खोयौ गयौ नेह नग उनपै, प्रीति काथरी, भई पुरानी ।
पहिलैं अधर सुधा रस सींचे, कियौ पोष वहु लाड लड़ानी ।
बहुरौ खेल कियौ सिसु कैसो, गृह रचना ज्यौं चलत पिछानी ॥
ऐसे हित की प्रीति दिखाई, पन्नग कँचुरी ज्यौं लपटानी ।
बहुरौ सुरति लई नहिं जैसें, भ्रमर लता त्यागत कुँभिलानी ॥
बहुरंगी जित जाइ तितहिं सुख, इक रंगी दुख देह दिझानी ।
सूरदास पसुवनी चोरि कै, खायौ चाहत चारा-पानी ॥
॥३७१४॥४३३२॥

राग मलार

मधुकर कहि कैसैं मन मानै ।
जिनकौं इक अनन्य व्रत सूझै, क्यौं दूजौ उर आनै ॥
यह तौ जोग स्वाद अलि ऐसौ, पाइ सुधा खरि सानै ।
कैसैं धौं यह वात पतिव्रता, सुनै सठ पुरुष विरानै ॥
जैसें मृगिनी ताकि वधिक दृग, कर कोदंड गहि तानै ।
हिंसा करि पोषत तन-मन सुख, उर अपराध न आनै ॥
बड़े विचित्र कुबिजा रँग रगे हम निर्गुन लिखि ठानै ।
सूरज स्याम सगुन रतिमानी, मधुप प्रान जनि छानै ॥
॥३७ ५॥४३३३॥

राग मलार

कहाँ लौं राखैं मन मैं धीर ।
सुनौ मधुप अपनैं इन नैननि, बिनु देखैं बलबीर ॥
घर आँगन न सुहात रैन दिन, भूले भोजन, चीर ।
दाहत देह चंद-चंदन सुख, औरौ मलय समीर ॥
छिन-छिन वहै सुरति आवति, जब चितवति जमुना तीर ।
सूरदास गडि रहे हिये मैं, सुंदर स्याम सरीर ॥
॥३७१६॥४३३४॥

(ऊधौ) इन बतियनि कैसे मन दीजै ।
बिनु देखे वा स्याम सुँदर के, पल पल ही तन छीजै ।

जो कर आनि हमारैं दीनो, सो अपने कर लीजै।
बाँचि सुनावहु लिख्यौ कहा है, हम बाँचत यह भीजै॥
बड़ौ मतौ है जोग तिहारे, सो हमरैं कह कीजै।
अच्छर चारिक आनि सुनावहु, तिनहिं आस करि जीजै॥
उर की सूल तबै भल निकसै, नैन बान जौ कीजै।
सूरदास प्रभु प्रान तजति हौं, मोहन मिलैं तौ जीजै॥
॥३७१७॥४३३५॥

राग केदारौ

बिनु हरि क्यौं राखैं मन धीर।
एक बेर हरि-दरस दिखावहु, सुंदर स्याम सरीर॥
तुम जु दयाल दयानिधि कहियत जानत हौ पर पीर।
बिछुरैं प्रान नाथ ब्रज आवैं, कत हम कत जदुबीर॥
मत अपजस आनौ सिर अपनैं, कठिन मदन की पीर।
सूरदास प्रभु मिलन कहत हे, रबितनया के तीर॥
॥३७१८॥४३३६॥

राग धनाश्री

ऊधौ मन नहिं हाथ हमारैं।
रथ चढ़ाइ हरि संग गए लै, मथुरा जबहिं सिधारे॥
नातरु कहा जोग हम छाँड़हि, अति रुचि कै तुम ल्याए।
हम तौ झँखतिं स्याम की करनी, मन लै जोग पठाए॥
अजहुँ मन अपनौ हम पावैं, तुम तैं होइ तौ होइ।
सूर सपथ हमैं कोटि तिहारी, कही करैंगी सोइ॥
॥३७१९॥४३३७॥

राग सारंग

मन तौ मथुरा हीं जु रह्यौ।
तब कौ गयौ बहुरि नहिं आयौ, गहनि गुपाल गह्यौ॥
इन नैननि कौं मर्म न जान्यौ, किन भेदिया कह्यौ।
राख्यौ हुतौ चोरि चित अंतर, हरि सोइ सोध लह्यौ॥
आये ओल मिलावन ऊधौ, मनि दै लेहु मह्यौ।
निरगुन साटि गोपालहिं चाहत, क्यौं दुख जात सह्यौ॥

इहिं आधार आजु लौं यह तन ऐसें हीं निबह्यौ।
सोई लेत छुड़ाइ सूर अब चाहत हृदय दह्यौ॥
॥३७२०॥४३३८॥

राग सारंग

कहा भयौ हरि मथुरा गए।
कहि ऊधौ कैसैं सचु पावत, तन दोउ भाँति भए॥
इहाँ अटक अति प्रेम पुरातन, ह्वाँ निज नेह नए।
ह्वाँ कहियत है राज-काज बस, ह्याँ कर बेनु लए॥
कह गथ हाथ पर्‍यौ सुफलक-सुत, यह ठग ठाठ ठए।
अब क्यौं कान्ह रहत गोकुल बिनु, लोगनि के सिखए॥
राजा राज करत गृह अपनैं माथे छत्र दए।
चिरजीवौ अब सूर नंदसुत, जीजत मुख चितए॥
॥३७२१॥४३३९॥

राग सारंग

कहि कहि कथा मधुप समुझावत, तदपि न रहत नंदनंदन बिनु॥
स्रवन सँदेस नयन बरषत जल, मुख बतियाँ कछु और चलावत।
भाँति अनेक धरत मन निठुरइ, सब तजि सुरति वहै जिय आवत।
कोटि स्वर्ग सम सुख अनुमानत, हरि समीप समता नहिं पावत।
थकित सिंधु नौका के खग ज्यौं, फिरि फिर फेरि वहै गुन गावत॥
जेइ-जेइ बात बिचारतिं अंतर, तेइ तेइ अधिक अनल उर दाहत।
सूरदास परिहरि, न सकत तन, बारक बहुरि मिल्यौई चाहत॥
॥३७२२॥४३४०॥

राग सारंग

मधुकर ह्याँ नाहीं मन मेरौ।
गए जु संग नंदनंदन के बहुरि न कीन्हौ फेरौ॥
उन नैननि मुसकानि मोल लै, कियौ परायौ चेरौ।
जाकैं हाथ पर्‍यौ ताहीं कौ, बिसर्‍यौ बास बसेरौ॥
को सीखे ता बिनु सुनि सूरज, जोग जु काहू केरौ।
मदौ पर्‍यौ सिथाहु अनत लै, यह निरगुन मत तेरौ॥
॥३७२३॥४३४१॥

राग सारंग

मुक्ति आनि मंदे मैं मेली।
समुझि सगुन लै चले न ऊधौ, यह तुम पै सब पुँजी अकेली ॥
कै लै जाहु अनत ही बेंचौ, कै लै राखु जहाँ बिष बेली।
याहि लागि को मरै हमारैं बृंदावन चरननि सौं ठेली ॥
धरे सीस घर घर डोलत हौ, एकै मति सब भईं सहेली।
सूरदास गिरिधरन छबीलौ, जिनकी भुजा कंठ धरि खेली ॥
॥३७२४॥४३४२॥

राग सारंग

ऊधौ मन तौ एकहि आहि।
सो तौ हरि लै संग सिधारे, जोग सिखावत काहि ॥
सुनि सठ कुटिल बचन रस लंपट, अबलनि तन धौं चाहि।
अब काहे कौं लोन लगावत बिरह-अनल कैं दाहि ॥
परमारथ उपचार कहत हौ, बिरह-ब्यथा है जाहि।
जाकौं राजरोग कफ ब्यापत, दह्यौ खवावत ताहि ॥
सुंदर स्याम सलोनी मूरति, पूरि रही हिय माहि।
सूर ताहि तजि निरगुन-सिंधुहिं कौन सकै अवगाहि ॥
॥३७२५॥४३४३॥

राग सारंग

ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को अवराधै ईस ॥
इंद्री सिथिल भईं केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस ॥
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारैं नंदनँदन बिनु, और नहीं जगदीस ॥
॥३७२६॥४३४४॥

राग सारंग

ऊधौ जो मन होत बियौ।
तौ तुम्हरे निरगुन कौ दीजै, सो बिधना न दियौ ॥

एक जो हुतौ मदन मोहन कौ, सो छवि छीन लियौ ।
अब वा रूप रासि बिनु मधुकर, कैसैं परत जियौ ॥
जो तुम कह्यौ सोइ सिर ऊपर, सूर स्याम पठयौ ।
नाहिंन मीन जियत जल बाहर, जौ घृत मैं सजियौ ॥

॥३७२७॥४३४५॥

राग सारंग

ऊधौ यह मन और न होइ ।
पहिलैं ही चढ़ि रह्यौ स्याम रँग, छुटत न देख्यौ धोइ ॥
कैतव वचन छाँड़ि अलि हमसौं, सोइ कहौ जो मूल ।
जोग हमहिं ऐसौ लागत ज्यौं, तुहिं चंपे कौ फूल ॥
अब क्यौं मिटति हाथ की रेखैं, कहौ कौन बिधि कीजै ।
सूर स्याम-मुख आनि दिखावहु, जिहिं देखैं दिन जीजै ॥

॥३७२८॥४३४६॥

राग सारंग

मधुकर मो मन अधिक कठोर ।
बिगसि न गयौ कुंभ काँचे लौं, बिछुरत नंद किसोर ॥
हम तैं भली जलचरी बपुरी, अपनौ नेह निबाह्यौ ।
जल तैं बिछुरि तुरत तन त्याग्यौ, पुनि जल ही कौं चाह्यौ ॥
जौ हम प्रीति रीति नहिं जानतिं, तौ ब्रजनाथ तजीं ।
हमरे प्रेम नेम की ऊधौ, सब रस रीति लजीं ॥
अचरज एक सुनौ हो ऊधौ, जल बिनु मीन रह्यौ ।
सूरदास-प्रभु अवधि आस लगि, मन बिस्वास गह्यौ ॥

॥३७२९॥४३४७॥

राग मलार

मधुकर ये मन बिगरि परे ।
समुझत नहीं ज्ञान गीता कौ, मृदु मुसकानि अरे ॥
हरि-पद-कमल बिसारत नाहीं, सीतल उर सँचरे ।
जोग गँभीर कूप आँवे सौ, ताहि जु देखि डरे ॥
बाँकी भौंह वक्र दृग गाँचे, तातैं वक्र परे ।
सूधे होत न स्वान पूँछ ज्यौं, पचि पचि बैद मरे ॥

कमल नैन अनुराग भाग भरि, अमी रस गलित गरे।
सूरदास हम ऐसैं हि रहिहैं, कान्ह वियोग भरे॥
॥३७३०॥४३४८॥

राग मलार

इहिं उर माखन चोर गड़े।
अब कैसैं निकसत सुनि ऊधौ, तिरछे ह्वै जु अड़े॥
जदपि अहीर जसोदा-नंदन, कैसैं जात छँड़े।
ह्वाँ जादौपति प्रभु कहियत हैं, हमैं न लगत बड़े॥
को वसुदेव-देवकी नंदन, को जानै को बूझै।
सूर नंदनंदन के देखत, और न कोऊ सूझै॥
॥३७३१॥४३४९॥

राग केदारौ

मन मैं रह्यौ नाहिंन ठौर।
नंद-नंदन अछत कैसैं, आनियै उर और॥
चलत चितवत दिवस जागत, स्वप्न सोवत राति।
हृदय तैं वह मदन मूरति, छिन न इत उत जाति॥
कहत कथा अनेक ऊधौ, लोग लोभ दिखाइ।
कह करौं मन प्रेम पूरन, घट न सिंधु समाइ॥
स्याम गात सरोज आनन, ललित मृदु मुख हास।
सूर इनकैं दरस कारन, मरत लोचन प्यास॥
॥३७३२॥४३५०॥

ऊधौ यह मन ठौर न आवै।
बिलपत लोचन हरि दरसन कौं, मारग कौन बतावै।
बीति गए जुग ढूँढ़त बन बन, कठिन स्याम की बाट।
नहिं बनि आयौ जो हम ठाटौ, भयौ कुठारन ठाट॥
हमकौं छाँड़ि गए सुखरासी, लीन्ही कुबिजा ढूँढ़।
सूरदास प्रभु आक चचोरत, छाँड़ि ऊख कौ मूढ़॥
॥३७३३॥४३५१॥

राग सारंग

मधुकर स्याम हमारे चोर।
मन हरि लियौ तनक चितवनि मैं, चपल नैन की कोर॥

पकरे हुते हृदय उर अंतर, प्रेम प्रीति कैं जोर।
गए छँडाइ तोरि सब बंधन, दै गए हँसनि अँकोर॥
चौंकि परीं जागत निसि बीती, दूत मिल्यौ इक भोर।
सूरदास प्रभु सरबस लूट्यौ, नागर नवल-किसोर॥
॥३७३४॥४३५२॥

राग सारग

अलि ब्रजनाथ कछू करो।
जा कारन यह देह धरी है, तिहिं के लेखे परो॥
प्रथमहि अरपि दियौ हम सरबस, बिरहिनि यौंहि जरौ।
कोटि मुकुति बारौं मुसुकनि पर, बपुरौ जोग सरो॥
सूर सगुन बाँध्यौ गोकुल मैं, अब निरगुन ओसरो।
ताकी छटा छार कँटहरिया, ब्रज जानौ दुसरो॥
॥३७३५॥४३५३॥

राग सारग

ऊधौ भली करी गोपाल।
आपुन तौ हरि आवत नाहीं, बिरमि रहे इहिं काल॥
चदन, चद हुते तब सीतल, कोकिल सब्द रसाल।
अब समीर पावक सम लागत, सब ब्रज उलटी चाल॥
हार, चीर कंचुकि कंटक भये, तरनि तिलक भयौ भाल।
सेज सिंह, गृह तिमिर कदरा, सर्प सुमन की माल॥
हम तौ न्याइ इतौ दुख पावैं, ब्रज बसि गोपी ग्वाल।
सूरदास स्वामी सुखसागर, भोगी भँवर भुवाल॥
॥३७३६॥४३५४॥

राग आसावरी

सब दिन एकहिं से नहिं होते।
तब अलि ससि सीरौ अब तातौ भयौ बिरह जरि मो तैं॥
तब षट मास रास रस-अंतर, एकहु निमिष न जाने।
अब औरै गति भई कान्ह बिनु, पल पूरन जुग माने॥
कहा मति जोग ज्ञान साखा स्रुति, ते किन कहे घनेरे।
अब कछु और सुहाइ सूर नहिं, सुमिरि स्याम गुन केरे॥
॥३७३७॥४३५५॥

राग सारंग

हमकौं इती कहा गोपाल ।
नंद कुमार कमल दल लोचन, सुंदर बाहु बिसाल ॥
इक ऐसैं ही बिरह रही लटि, बिनु घन स्याम तमाल ।
तापर अलि पठये हैं सिखवन, अबलनि उलटी चाल ॥
लोचन मूँदि ध्यान चित चितवत धरि आसन मृगछाल ।
क्यौं सहि जाइ जरे पर चूनौ, दूनौ दुख तिहिं काल ॥
डारि न दिये कमल करतैं गिरि, दबि मरतीं तिहिं काल ।
सूर स्याम अब यह न बूझियै, बिछुरि करी बेहाल ॥
॥३७३८॥४३५६॥

राग सारंग

सुरति जब होति है वह बात ।
सुनौ मधुप वा बेदन को गति, मन जानै की गात ॥
रोकैं रहत नहीं उर अंतर, कहैं नहीं कहि जात ।
भई रीति हठि उरग छछूँदरि, छाँड़े बनै न खात ॥
याही भाँति सदा इहिं ब्रज मैं बीतत है दिन रात ।
सूरदास प्रभु की मिलि-बिछुरनि, सुमिरि-सुमिरि पछितात ॥
॥३७३९॥४३५७॥

राग सारंग

यह बात हमारे कौन सुनै ।
जिन चाह्यौ हरि रूप सुरति करि, भूलि अँगारनि को चुनै ॥
ह्याँ सेवनि को ठौर न देखति, तातैं सुनि मन मैं गुनै ।
केमुक बिरह बयारि पैन की, बैठे ठाढ़े को धुनै ॥
तब उन भाँतिनि लाड़ लड़ाये, अब बूझियै न यह उनै ॥
घालि छाँड़ि कै सूर हमारैं, अब नरवाई को लुनै ॥
॥३७४०॥४३५८॥

राग नट

ऊधौ बात कही नहिं जाइ ।
मदन गुपाल लाल के बिछुरे, प्रान रहे मुरझाइ ॥

जब स्यदन चढ़ि गवन कियौ हरि, फिरि चितए गोपाल।
तबहीं परम कृतज्ञ सबै उठि, संग लगीं ब्रजबाल॥
अब यह औरै सृष्टि बिरह की, बकत बाइ बौरानी।
तिनसौं कहा देत फिरि उत्तर, तुम हौ पूरन ज्ञानी॥
अब सो साधन घट का कीजै, क्यौं उपजै परतीति।
सूरदास कछु बरनि न आवै, कठिन बिरह की रीति॥
॥३७४१॥४३५९॥

राग सारग

मधुकर जौ तू हितू हमारौ।
तौ प्यावहि हरि बदन सुधा-रस, छाँडि जोग-जल खारौ।
सुनि सठ नीति सुरभि पय दायक, क्यौं जु लेति हल भारौ॥
जे भय भीत होहिं स्रक देखैं, क्यौंऽब छुवहिं अहि कारौ।
निज कृत समुझि बेनु दसनन हति, धाम सजत नहिं हारौ॥
ता बल अछत निसा पकज भ्रमि, दल कपाट नहिं टारौ।
रे अलि चपल मोद रस लंपट, कतहिं बकत बेकाज॥
सूर स्याम छबि क्यौं बिसरति है, नखसिख अग बिराज।
॥३७४२॥४३६०॥

राग मारग

हमारे बोल बचन परतीति।
सुनि ऊधौ हम नाहिं न जानति, तुम्हरे गात्र की रीति॥
हमरे प्रीतम तुम जु लै गए, आवन कह्यौ रिपु जीति।
तुम्हरे बोलनि कौन पतीजै, ज्यौं भुस पर की भीति॥
आवन अवधि बजी हरि हम सौं, सोऊ गई ब्यतीति।
सूरदास-प्रभु मिलहु कृपा करि, सुमिरि पुरातन प्रीति॥
॥३७४३॥४३६१॥

राग सारग

ऊधौ जो तुम हमहिं सुनायौ।
सो हम निपट कठिनई हठ करि, या मन कौ समुझायौ॥
जुक्ति जतन करि जोग अगह-गहि, अपथ पंथ लौ लायौ।
भटकि फिर्‌यौ बोहित के खग लौं, पुनि हरि ही पै आयौ॥

हमकौं सब अनहित लागत, है, तुम सब हितहिं जनायौ।
सुरसरिता जल होम किए तैं, कहा अगिनि सचु पायौ॥
अब सोई उपाय उपदेसौ, जिहिं जिय जाइ जिवायौ।
घारक मिलहिं सूर के स्वामी, कीजै अपनौ भायौ॥

॥३७४४॥४३६२॥

राग मलार

ऊधौ हरि कहियै प्रतिपालक।
जे रिपु तुम पहिलैं हति छाँड़े, बहुरि भए मम सालक॥
अघ, बक, बकी तृनावर्त केसी, ए सब मिलि ब्रज घेरत।
सूनौ जानि नंदनंदन बिनु, बैर आपनौ फेरत॥
अरु अपनौ परिहास मेटिबैं, इंद्र रह्यौ करि घात।
सत्वर सूर सहाइ करै को रही छिनक की बात॥

॥३७४५॥४३६३॥

राग कल्यान

ऊधौ तुम जानत गुप्तहिं चारी।
तुम काहू के मन की बूझत, बाँधे मूड़ फिरत ठगवारी॥
पीत धुजा उनकी मनरंजन, लाल धुजा कुबिजा व्यभिचारी।
जस की धुजा स्वेत ब्रज बाँधे, अपजस की ऊधौ पै कारी॥
वै तो प्रेमपुंज मन रंजन, हम तौ सीस जोग ब्रतधारी।
सूर सपथ मिथ्या, लँगराई, ए बातैं ऊधौ की प्यारी॥

॥३७४६॥४३६४॥

राग मलार

ऊधौ अब नहिं स्याम हमारे।
मथुरा गए पलटि से लीन्हे, माधौ मधुप तुम्हारे॥
अब मोहिं आवत यह पछितावौ, क्यौं गुन जात बिसारे।
कपटी कुटिल काक अरु कोकिल, अंत भए उड़ि न्यारे॥
करि करि मोह मगन ब्रजवासी, प्रेम प्रान धन वारे।
सूर स्याम कौ कौन पत्यै है, कुटिल गात तन कारे॥

॥३७४७॥४३६५॥

राग धनाश्री

(ऊधौ) जाहु कहा बूझैं कुसलात ?
जाकैं ज्ञान न होइ सो मानै, कही तिहारी बात ॥
कारे नाम रूपहूँ कारे, संग सखा सब गात ।
जौ पै भले होहिं कहुँ कारे, बदलि सुता लै जात ?
हमकौं जोग भोग कुबिजा कौं, काकै हियैं समात ।
सूरजदास-प्रीति करि पाले, तेऊ अब पछितात ॥
॥३७४८॥४३६६॥

स्याम रंग पर तर्क *राग मलार*

सखी री स्याम सबै इक सार ।
मीठे बचन सुहाए बोलत, अंतर जारनहार ॥
भँवर कुरंग काक अरु कोकिल, कपटिन की चटसार ।
कमलनैन मधुपुरी सिधारे, मिटि गयौ मंगलचार ॥
सुनहु सखी री दोष न काहू, जो बिधि लिख्यौ लिलार ।
यह करतूति उनहिं की नाहीं, पूरब बिबिध बिचार ॥
कारी घटा देखि बादर की, सोभा देति अपार ।
सूरदास सरिता सर पोषत, चातक करत पुकार ॥
॥३७४९॥४३६७॥

राग मलार

मधुकर स्याम कहा हित जानै ।
कोऊ प्रीति करै कैसेहूँ, वह अपनौ गुन ठानै ॥
देखौ या जलधर की करनी, बरसत पोषै आनै ।
चातक सदा चरन कौ सेवक, दुखित बिना जल पानै ॥
भँवर भुजंग काक कोकिल कौं, कबिगन कपट बखानै ।
सूरदास सरबस जौ दीजै, कारौ कृतहिं न मानैं ॥
॥३७५०॥४३६८॥

राग सारंग

तिनहिं न पतीजै री जे कृतहिं न मानै ।
ज्यौं भौंरा रस चाखि चाहि कै, तहाँ जाइ जहँ नव तन जानै ॥
कोइल काक पालि कह कीन्हौ, मिले मिलहिं जब भए सयानै ।
सोइ बात भइ नंद महर की, मधुबन तैं माधौ जौ आनै ॥

तब तौ प्रेम बिचारि न कीन्हौ, होत कहा अबकें पछिताने।
सूरदास जे मन के खोटे, अवसर परें जाहिं पहिचाने॥
॥३७५१॥४३६९॥

राग सारंग

कहा होत अबके पछिताने।
खेलत खात हँसत एकहि सँग, हम न स्याम गुन जाने॥
को बसुदेव कौन के थापे, को है साखि उन आने।
सो बतलाइ देउ ऊधौ हमैं, तुमहूँ निपट सयाने।
सुनियत कथा काग कोकिल की, मन महँ कपट समाने॥
सूर समै रितुराज बिराज्यौ, मिलि निज कुल पहिचाने॥
॥३७५२॥४३७०॥

राग धनाश्री

मधुकर कह कारे की न्याति।
ज्यौं जल मीन कमल मधुपनि की, छिन नहिं प्रीति खटाति॥
कोकिल कपट कुटिल वायस छलि, फिरि नहिं उहिं बन जाति।
तैसें हि रास केलि रस अँचयौ, बैठि एक ही पाँति॥
सुत हित जोग जग्य ब्रत कीजत, बहु बिधि नीकी भाँति।
देखौ अहि मन मोह मया तजि, ज्यौं जननी जनि खाति॥
तिनकौ क्यौं मन बिस्मय कीजै, औगुन लौ सुख साँति।
तैसेइ सूर सुने जदुनंदनन, बजी एक ही ताँति॥
॥३७५३॥४३७१॥

राग धनाश्री

स्याम सखी कारेहु मैं कारे।
तिनसौं प्रीति कहा कहि कीजै, मारग छाँड़ि सिधारे॥
लोक चतुरदस बिभव कहत हैं पदुम-पत्र जल न्यारे।
सरवर त्यागि बिहंग उड़े ज्यौं, फिरि पाछें न निहारे॥
तब चित चोरि भोरि ब्रजबासिनि प्रेम नेम ब्रत टारे।
लै सरबस नहिं मिले सूर प्रभु, कहियत कुलट बिचारे॥
॥३७५४॥४३७२॥

अब तुम चले ज्ञान विष अञ्ज दे, हरन जु प्रान हमारे।
ते क्यों भले होहिं सूरज प्रभु, रूप वचन कृत कारे ॥
॥३७६१॥४३७९॥

राग मलार

बिलग जनि मानो ऊधो कारे।
वह मथुरा काजर की ओबरी, जे आवैं ते कारे ॥
तुम कारे सुफलक सुत कारे, कारे कुटिल सँवारे।
कमलनैन की कौन चलावै, सबहिनि मैं मनियारे ॥
मानो नील माट तैं काढे, जमुना आइ पखारे।
तातैं स्याम भई कालिंदी, सूर स्याम गुन न्यारे ॥
॥३७६२॥४३८०॥

राग मलार

ऊधो तुम सब साथी भोरे।
मेरे कहैं बिलग जनि मानहु, कोटि कुटिल लै जोरे ॥
वे अक्रूर क्रूर कृत जिनके, रीते भरि, भरि ढोरे।
आपुन स्याम स्याम अतर मन, स्याम काम मैं बोरे ॥
तुम मधुकर निरगुन निजु नीके, देखे फटकि पछोरे।
सूरदास कारेन की सगति, को जावै अब गोरे ॥
॥३७६३॥४३८१॥

(ऊधो) कह बूझत तन की दुबराई।
वह थोरी जो जियत रही हैं बिछुरत कुँअर कन्हाई ॥
जब ही कृपा नद-नंदन की, मिलि रस रास खेलाई।
अब अदया देखति जादौपति, पाती लिखि जु पठाई ॥
कौन जोग लै आए ऊधो, कैसैं, जीजे माई।
सूरज स्याम-बिरह की वेदन, मो पै सही न जाई ॥
॥३७६४॥४३८२॥

राग भोपाली

ऊधो हम दूबरी वियोग।
प्रीतम हते सो उठि गए मधुबन, रहे बटाऊ लाग ॥

जो तुम बूझहु व्यथा हमारी, कहे बनै तुम आगैं।
देह-बिहार सिंगार न भावै, मन तरसै हरि काजैं॥
कारी घटा देखि अँधियारी, सारँग सब्द न भावैं।
दिवस रैनि मैं बिरह सतावै, कब गुपाल घर आवैं॥
सूरदास-स्वामी मनमोहन, अब करि गए अनाथ।
मन क्रम बचन उहाँइ बसत हैं, जहाँ बसत जदुनाथ॥
॥३७६५॥४३८३॥

राग सोरठ

ऊधौ यह हरि कहा कर्यौ।
राज काज चित दियौ साँवरैं, गोकुल क्यौं बिसर्यौ?
जौ लौं रहे घोष मैं, तौलौं संतत सेवा कीन्ही।
छिन इक परस भए ऊखल सौं, बहुत मानि जिय लीन्ही॥
अब किन कोटि वरैं ब्रजनायक, अनतहिं राजकुमारो।
कहियौ नंद पिता कहँ पैहैं, कहँ जसुमति महतारी॥
कहँ गोधन, कहँ गोपवृंद सब, कहँ माखन कौ खइबौ।
सूरदास अब सोइ करौ जिहिं, होइ कान्ह कौ अइबौ॥
॥३७६६॥४३८४॥

राग नट

जदपि मैं बहुतै जतन करे।
तदपि मधुप हरि-प्रिया जानि कै, काहुँ न प्रान हरे॥
सौरभ-जुत सुमननि लै निज कर, सतत सेज धरे।
सनमुख सहति सरद ससि सजनी, ताहु न अंग जरे॥
मधुकर, मोर कोकिला, चातक, सुनि सुनि स्रवन भरे।
सादर ह्वै निरखतिं रतिपति दृग नैंकु न पलक परे॥
निसि-दिन रटति नंद-नंदन कौं, उर तैं छिन न टरे।
अति आतुर गुन सहित चमू सजि, अंगनि सर सँचरे॥
जानत नहीं कौन गुन इहिं तन, जातैं सब बिडरे।
सूरदास सकुचनि श्रीपति की, सुभटनि बल बिसरे॥
॥३७६७॥४३८५॥

राग केदारौ

जिहिं दिन तजी ब्रज की भीर।
कहौं ए अलि लेखि तुमसौं, सखा सुंदर धीर॥

काम नृप ससि नेव अवलनि, दुर्ग दूत समीर।
विपिन सेना साजि नव-दल, बदत बंदी कीर॥
लता लघु जनु कुसुम कर सर, कली कोटि तुनीर।
बरन बान बसंत कर लै, बधत है आभीर॥
मध्य द्रुम हैं फूल मानौ, कवच चित्रित चीर।
कुंभ कुंजर विटप भारी चँवर चारु मईर॥
चमू चचल चलति नाहीं, रही है पुर तीर।
समर मारू कीट की रट, सहति त्रिया अधीर॥
जन्म जातक व्याधि व्यापक, कहौं कासौं पीर।
सूर रसिक सिरोमनिहिं बिनु, जरत जमुना नीर॥

॥३७६८॥४३८६॥

राग कान्हरौ

हरि बिछुरन की सूल न जाइ।
बलि-बलि जाऊँ मुखारबिंद की वह मूरति चित रही समाइ॥
एक समै बृंदावन महियाँ, गहि अचल मेरी लाज छडाइ।
कबहुँक रहसि देत आलिंगन, कबहुँक दौरि बहोरत गाइ॥
वै दिन ऊधौ बिसरत नाहीं, अवर हरे जमुन तट जाइ।
सूरदास-स्वामी गुन सागर, सुमिरि-सुमिरि राधे पछिताइ॥

॥३७६९॥४३८७॥

राग नट

मोहन माँग्यौ अपनौ रूप
इहिं ब्रज बसत अँचे तुम बैठीं, ता बिनु उहाँ निरूप॥
मेरौ मन, मेरे अलि लोचन, लै जु गए धपि धूप।
ता ऊपर तुम लैन पठाए, मनौ धऱ्यौ करि सूप॥
अपनौ काज सँवारि सूर सुनि हमैं बतावत कूप।
लेवा देइ धराधरि मैं है, कौन रक को भूप॥

॥३७७०॥४३८८॥

राग सारग

पटवत जोग कछू जिय लाज न।
सुनियत जब तात तैं जानी, कपट राग रुचि घाजन॥

जिय गहि लई क्रूर के सिखएँ, मोह होत नहिं राजन।
सब सुधि परी बचन कन टोए, ढके रहौ मुख भाजन॥
यह नृप-नीति रही कौनैंहु जुग, नेह होत जस-भाजन।
ताहू तजी सुरति नहिं आवत, दुख पाए जन माजन॥
करि दासी दुलहिनि भए दूलह, फिरत ब्याह के साजन।
सूर बड़े भुव-भूप कंस हते, वा कुबिजा के काजन॥
॥३७७१॥४३८९॥

राग मलार

सँदेसनि बिरह-बिथा क्यौं जानि।
जब तैं दृष्टि परी वह मूरति, कमल-बदन की काँति॥
अब तौ जिय ऐसी बनि आई, कहौ कोउ किहुँ भाँति।
जो वह कहै सोइ सो सुनि सखि, जुग बर रैनि बिहाति॥
जौलौं नहिं भेंटौं भुज भरि हरि, उर कंचुकि न सुहाति।
सूरदास-प्रभु कमल-नयन बिनु, तलफति अरु अकुलाति॥
॥३७७२॥४३९०॥

राग मलार

सँदेसनि क्यौं निघटति दिन राति ?
कबहुँक स्याम कमल-दल लोचन, ब्रज मिलिहैं उहिं भाँति॥
खजरीट, मृग, मीन, मधुप मिलि, उपमा कौं अकुलात।
सहस भाँति अर्पित कीन्हे सब, एकौ चित न सुहात॥
बार-बार मैं बरज्यौ ग्वालिनि, अपने मारग जात।
सूरदास-प्रभु संतत हित तैं, कहे सुनत नहिं बात॥
॥३७७३॥४३९१॥

राग सारंग

सँदेसनि सुनत प्रीति गति जानी।
चातक स्वाति बूँद लौं, सागर भरे देखियत पानी॥
दिन-दिन मोह बँध्यौ सुक नल ज्यौं, बंसी धुनि कल कीन्ही।
उरझ्यौ मन पठयौ हम देखन, यही सुरति हम लीन्ही॥
निरगुन के ऐसे गुन सुमिरत, सुनि अलि सखा सनेही।
जिय हरि लियौ कौन ऐसौ हित, सूर सुपोषत देही॥
॥३७७४॥४३९२॥

राग मलार

गोपालहि लै आवहू मनाइ।
अब की बार कैसैंहू ऊधौ, करि छल बल चतुराइ॥
दीजौ उनहिं उरहनौ मधुकर, सनै-सनै समुझाइ।
जिनहिं छाँडि मथुरा तुम आए, ते कहा करैं जदुराइ॥
बार बार हौं बहुत कहा कहौं, बिनती बहुत बनाइ।
पाँइ पकरि सूरज प्रभु ल्यावहु, नंद की सौंहैं दिवाइ॥

॥३७७५॥४३९३॥

राग केदारौ

ऊधौ स्याम इहाँ लै आवहु।
ब्रजजन चातक मरत पियासे, स्वाति बूँद बरसावहु॥
ह्याँ तैं जाहु बिलंब करौ जनि, हमरी दसा जनावहु।
घोप सरोज भयौ है संपुट, ह्वै दिनकर बिगसावहु॥
जौ ऊधौ हरि इहाँ न आवहिं, तौ हमैं उहाँ बुलावहु।
सूरदास प्रभु हमहिं मिलावहु, तौ तिहुँपुर जस पावहु॥

॥३७७६॥४३९४॥

राग केदारौ

कहहु कहा हम तैं बिगरी।
कौनैं न्याउ जोग लिखि पठए, हँसि सेवा कछुवै न करी॥
पाखँड प्रीति करी नंद-नंदन, अवधि अधार हुती सो टरी।
मुद्रा जटा ऊधौ लै आए, ब्रज-बनिता पहिरौ सगरी॥
जाति सुभाउ मिटै नहिं सजनी, अंत तऊ उबरी-कुबरी।
सूरदास-प्रभु बेगि मिलहु अब, नातरु प्रान जात उगरी॥

॥३७७७॥४३९५॥

राग केदारौ

बिरही कहँ लौं आपु सँभारै।
जब तैं गंग परी हरि पग तैं, बहिबौ नहीं निवारै॥
नैननि तैं बिछुरे जु भ्रमत है, ससि अजहूँ तन गारै।
राम ते बिछुरि, कमल कंटक भए, सिंधु भए जल खारै॥

बैन तैं बिछुरि, अविधि बिधिहूँ भई, बेदहिं को निरुवारै।
सूरदास जे सब अँग बिछुरौं, तिनहिं कौन उपचारै॥
॥३७७८॥४३९६॥

राग मलार

बहुत दिन बीते हरि बिनु देखैं।
गनतहिं गनत गई सुनि सजनी, कर अँगुरिनि की रेखैं॥
अब यह बिरह अमर जु करी हम, बिसरी नैन निमेषैं।
हौं डरपति सुनि सूरदास जनि, पारहिं उनहिं के लेखैं॥
॥३७७९॥४३९७॥

राग नट

ऊधौ जू त्रिभंगी छबि फेरि नहीं दीठी।
देख्यौ चाहैं नैन मेरे, मूरति वह मीठी॥
काहैं तुम करत मधुप, ऐसियै बसीठी।
मानत नहिं बातैं मन, लागति हमैं सीठी॥
सूरदास प्रभु सौं यह, कहियौ तुम ढीठी।
सेवाहूँ करत कितहिं, दीन्ही है पीठी॥
॥३७८०॥४३९८॥

राग धनाश्री

ऊधौ भली भई ब्रज आए।
बिधि कुलाल कीन्हे काँचे घट ते तुम आनि पकाए॥
रँग दीन्हौ हो कान्ह साँवरैं, अँग-अँग चित्र बनाए।
पातैं गरे न नैन नेह तैं, अवधि अटा पर छाए॥
ब्रज करि अवा जोग ईंधन करि, सुरति आनि सुलगाए।
फूँक उसास बिरह प्रजरनि सँग, ध्यान दरस सियराए॥
भरे सँपूरन सकल प्रेम-जल, छुवन न काहू पाए।
राज काज तैं गए सूर-प्रभु, नंद नँदन कर लाए॥
॥३७८१॥४३९९॥

राग मलार

ऊधौ भली करी ह्यौं आए।
तुम देखे जनु माधौ देखे, दुख त्रै ताप नसाए॥

नँद जसुदा कौ नात न छूटत, वेद-पुराननि गाए।
हम अहीरि तुम अहिर लाख दस, निरगुन कहा कहाए॥
तब इहिं घोष खेल बहु खेले, ऊखल भुजा बँधाए।
सूरदास प्रभु इहै सूल जिय, बहुरि न दरस दिखाए॥

॥३७८२॥४४००॥

राग मलार

ऊधौ कहि मधुबन की रीति।
राजा होइ जदुनाथ तिहारे, कहा चलाई नीति॥
निसिकर करत दाह दिनकर लौं हुतौ सदा ससि सीत।
पूरब पवन कह्यौ नहिं मानत, गयौ सहज बपु जीति॥
कंस काज कुबिजा कैं मार्‍यौ, भई निरंतर प्रीति।
सूर बिरह ब्रज भलौ न लागत, जहाँ ब्याह तहँ गीति॥

॥३७८३॥४४०१॥

राग केदारौ

हरि बिनु नाहिंन परत रह्यौ।
उत गिरि दुर्गम इत दव दारुन, क्यौं दुख जात सह्यौ॥
उठत जु बिरह धूम पावक झर, बरि-बरि बायु बह्यौ।
जारि जारि फिरि फूँकि प्रजारत, पलकनि हृदय दह्यौ॥
जद्यपि घृत आए लै ऊधौ, जोग सँदेस कह्यौ।
तद्यपि भस्म न हाति सूर सुनि, चलत गोपाल चह्यौ॥

॥३७८४॥४४०२॥

राग मलार

माधौ जू नैकु दिखाई देहु।
या तनु मैं तैं ताके बदलैं, जो चाहौ सो लेहु॥
भूली फिरति ठगी सी तब तैं, बिनु बल मति गुन गेहु।
जब तैं इन अपराधी नैननि, बरजत कियौ सनेहु॥
कहियौ जाइ मधुप पा लागौं बिरह कियौ तन खेहु।
सूरदास प्रभु प्रान पथिक कौ, तुमहिं निहोरौ एहु॥

॥३७८५॥४४०३॥

राग मलार

एक वार ब्रज आइकै, हरि दरसन देते।
तन की तपत मिटाइ कै, जग मैं जस लेते॥
सुख समीप जननी किए, अवगुन भए तेते।
मधुकर कौं वेली भईं, विनु गाहक केते॥
छाँड़नहार जु हरि भए, कछुवै गुन देते।
सूरदास हम कह कियौ, कंचन कसि लेते॥

॥३७८६॥४४०४॥

राग सारंग

(ऊधौ जौ) हरि आवहिं तौ प्रान रहैं।
आवत जात उलटि फिरि वैठत, जीवत अवधि गहैं॥
जव वे दाम उखल सौं वाँधे, वदन नवाइ रहे।
चुभि जु रही नवनीत चोर छवि, भुलति न ज्ञान कहे॥
तिनसौं ऐसी क्यौं कहि आवति, जिन कुल त्रास सहे।
सूर स्याम गुन रस निधि तजि कै, क्यौं यह घट निवहै॥

॥३७८७॥४४०५॥

राग नट

जव लगि ज्ञान हृदै नहिं आवै।
तव लगि कोटि जतन करै कोऊ, विनु विवेक नहिं पावै॥
विना विचार सवै सुपनौ सौ, मैं देख्यौ जग जोइ।
नाना दारु वसै ज्यौं पावक, प्रगट मथे तैं होइ॥
तुमहीं कहत सकल घट व्यापक, और सवहिं तैं नियरे।
नख सिख लौं तन जरत निसा दिन, निकसि करत किन सियरे॥
साँची वात सवै वोलत हौ, मुख मैं मेले तुरसी।
सूर सु औषध हमैं वतावहु, पितजुर ऊपर गुरसी॥

॥३७८८॥४४०६॥

राग सारंग

तुम जु कहत हरि हृदय रहत हैं।
कैसैं होइ प्रतीति मधुप सुनि, ये इतनी जु सहत हैं॥

बासर रैनि कठिन बिरहागिनि, अंतर प्रान दहत हैं।
प्रजरि प्रजरि मनु निकसि धूम अति, नैननि नीर बहत हैं॥
कठिन अवज्ञा होति देह दुख, मरजादा न गहत है॥
कहि अब क्यौं मानै मन सूरज, ये बातैं जु कहत है॥
॥३७८९॥४४०७॥

राग सारंग

जौ पै हिरदै माँझ हरी।
तौ कहि इती अवज्ञा उनपै, कैसैं सही परी॥
तब दावानल दहन न पायौ, अब इहिं बिरह जरी।
उर तैं निकसि नंद-नंदन हम, शीतल क्यौं न करी॥
दिन प्रति नैन इंद्र जल बरषत, घटत न एक घरी।
अति ही सीत भीत तन भींजित, गिरि अचल न धरी॥
कर-कंकन दरपन लै देखौ, इहि अति अनख मरी।
क्यौं अब जियहिं जोग सुनि सूरज, बिरहिनि बिरह भरी॥
॥३७९०॥४४०८॥

राग सारंग

तुम घट ही मैं स्याम बताए।
लीजै सँभारि सकल सुख अपने, रास रंग जे पाए॥
जौ समदृष्टि आदि निर्गुन पद, तौ कत चित्त चुराए।
मोहन बदन बिलोकि मानि रुचि, हँसि हँसि कंठ लगाए॥
हम मति-हीन अजान अल्प बुधि, तुम अनुभौ पद ल्याए।
सूरदास तिहिं बनिज कौन गुन, मूलहु माँझ गँवाए॥
॥३७९१॥४४०९॥

राग सारंग

इन बातन के मारैं मरियत।
निरगुन ज्ञान मधुप लै आए, बिनु गुपाल कैसैं निस्तरियत॥
सबै अटपटी कहै रे मधुकर, सुनि देखी मधुबन की नीति।
कौन हाल हमरैं ब्रज बीतत, जानत नहीं बिरह की रीति॥
बुझी अगि बहुरौ सुलगाई, अंतर गति बिरहानल जारत।
सूरदास स्वामी सुख सागर, मिलि काहैं न तन ताप निवारत॥
॥३७९२॥४४१०॥

राग नट

बातैं कहत बनाइ बनाइ।
रंचक बिरह हुतौ इहिं गोकुल, मधुकर मेट्यौ आइ॥
कमलनैन मोहन की लीला, रहति रही गुन गाइ।
ओछी पूँजी हरै जु तस्कर, रंक मरै पछिताइ॥
भली करी हमकौं लै आए, पठए, जोग सिखाइ।
सूरदास स्वामी यह घाली, निरगुन कथा सुनाइ॥
॥३७९३॥४४११॥

राग केदारौ

ऐसौ जोग न हम पै होइ।
आँखि मूँदि कह पावैं ढूँढ़े, अँधरे ज्यौं टकटोइ॥
भसम लगावत कहत जु हमकौ, अंग कुंकुमा धोइ।
सुनि कै वचन तुम्हारे ऊधौ, नैना आवत रोइ॥
कुंतल कुटिल मुकुट कुंडल छवि, रही जु चित मैं पोइ।
सूरज-प्रभु बिनु प्रान रहैं नहिं, कोटि करौ किन कोइ॥
॥३७९४॥४४१२॥

ऊधौ तौ हम जोग करैं।
जौ हरि बेगि मिलैं अब हमकौं, वैसे वेष धरैं॥
कर मुरली उर गुंजनि माला, बाल बच्छ लिए संग।
वैसेहिं दान जु माँगैं हम पै, बाढ़ै अति रस-रंग॥
वैसेई हम मान करैंगी, वै गहि चरन मनावैं।
यातैं भली कहा सूरज जौ, स्याम जोग धरि पावैं॥
॥३७९५॥४४१३॥

जोग भलौ जौ मोहन पावैं।
कहि सति भाव कपट तजि ऊधौ, तौ निहचै चित लावैं॥
करैं तपस्या बिधि संजोगी, एक ध्यान धरि ध्यावैं।
मन करि हाथ आपनैं राखैं, चित्त न कहूँ डुलावैं॥
एकै सूर कठिन लागत है, नैना जौ ढँग आवैं।
हैं रस-रसे साँवरे हरि के, सो रस जौ बिसरावैं॥
॥३७९६॥४४१४॥

राग सारंग

मधुकर कह्यौ सँदेस सिधारौ ।
बिनु उपदेस सहजहीं जोगी, सुधरि रह्यौ ब्रज सारौ ॥
जाकौ ध्यान धरत गौरीपति, जोग जुक्ति करि हारौ ।
सो हरि बसत सदा उर अंतर, नैकु टरत नहिं टारौ ॥
यह उपदेस आपनौ ऊधौ, राखौ ढाँपि सँवारौ ।
सूर स्याम जानत हैं, जी की, जो निज हितू हमारौ ॥
॥३७९७॥४४१५॥

राग सारंग

ऊधौ हमहिं कहा समुझावहु ।
पसु-पंछी सुरभी ब्रज की सब, देखि स्रवन सुनि आवहु ॥
त्रिन न चरत गो, पिवत न सुत पय, ढूँढत बन-बन डोलैं ।
अलि कोकिल दै आदि विहगम, भाँति भयानक बोलैं ॥
जमुना भई स्याम स्यामहिं बिनु, इदु छीन छय रोगी ।
तरुवर पत्र-बसन न सँभारत, बिरह बृच्छ भए जोगी ॥
गोकुल के सब लोग दुखित हैं, नीर बिना ज्यौं मीन ।
सूरदास प्रभु प्रान न छूटत, अवधि आस मैं लीन ॥
॥३७९८॥४४१६॥

राग नट

हमसौं उनसौं कौन सगाई ।
हम अहीर अबला ब्रजवासी, वै जदुपति जदुराई ॥
कहा भयौ जु भए जदुनंदन, अब यह पदवी पाई ।
सकुच न आवत-घोष बसत की, तजि ब्रज गए पराई ॥
ऐसे भए उहाँ जादौपति, गए गोप बिसराई ।
सूरदास यह ब्रज कौ नातौ, भूलि गए बलभाई ॥
॥३७९९॥४४१७॥

राग सोरठ

प्रीति करि निरमोहि हरि सौं, काहि नहिं दुख होइ ।
कपट की करि प्रीति कपटी, लै गयौ मन गोइ ॥

सौंचि आल मजीठ जैसै, निठुर काटी पोइ।
हमरे मन की सोइ जानै, जाहि बीती होइ॥
काल कर तैं राखि लीन्ही, इंद्र गर्व जु खोइ।
सूर गोपिनि ऊधौ आगैं, डहकि दीन्हौ रोइ॥
॥३८००॥४४१८॥

राग सारंग

ऊधौ तुम यह मति लै आए।
इक हम जरतिं खिझावन आए, मानौ सिखै पठाए॥
तुम उनके वै नाथ तुम्हारे, प्रान एक इक सारे।
मित्र के मित्र सजन के सज्जन, तातैं कहतिं पुकारे॥
रे सुनि मूढ़ जरति अबलनि कौं, पर दुख तू नहिं जानै।
निपट गँवार होइ जो मूरख, सो तेरी बातैं मानै॥
हम रुचि करी सूर के प्रभु कौं, दूजौ मन न सुहाइ।
उलटि जाहु अपनें पुर माहीं, बादिहिं करत लराइ॥
॥३८०१॥४४१९॥

राग मारू

हरि मुख देखैं ही परतीति।
जौ तुम कोटि भाँति परमोधौ, जोग ध्यान की रीति॥
नाहीं कछू सयान ज्ञान मैं, यह नीकैं हम जानैं।
कहौ कहा कहिऐ अनभव कौं, कैसैं मन मैं आनैं॥
यह मन एक, एक वह मूरति, भृंगी कीट समानै।
सूर सपथ दै ऊधौ पूछौ, इहिं विधि कौन सयानैं॥
॥३८०२॥४४२०॥

राग सारंग

(ऊधौ) बात तिहारी को सुनै।
हरि-पद-पंकज मन मधुकर गह्यौ, मन बिनु बात न कछू बनै॥
जोग जुगुति बिस्तार बड़ौ है, ऐसौ ठौर नहीं अपनैं।
ब्रज-बासिन इतनोइ हियौ है, कृष्न बसत संकोच बनै॥
तहाँ जाहु जहँ बैठे जोगी, इहाँ काम-रस रह्यौ धुनै।
हम जु अहीर कृष्न मदमाते, मूरख सौं क्यौं मंत्र बनै॥

जो तुम जानत तप करि पायौ, मौन रहौ तुम घर अपनै।
घर-घर फिरत पुकारत ल्यौ ल्यौ, ताही वस्तु को मोल हनै॥
भूख न प्यास नींद गइ हरि बिनु, पति, सुत, गृह की कौन गनै।
माया और छूटि गइ ममता, अधिक कहा लौं लोग बनै॥
सो हरि प्रान, प्रान तैं वल्लभ, मोहन की लीला अगनै।
आवत है तौ कहौ सूर प्रभु, नहीं रहौ तुम मौन बनै॥

॥३८०३॥४४२१॥

राग रामकली

तौ हम मानैं बात तुम्हारी।
अपनौ ब्रह्म दिखावहु ऊधौ, मुकुट पितांबर धारी॥
भनिहैं तब ताको सब गोपी, सहि रहिहैं बरु गारी।
भूत समान बतावत हमकौं, डारहु स्याम बिसारी॥
जे मुख सदा सुधा अँचवत हैं, ते बिष क्यौं अधिकारी।
सूरदास-प्रभु एक अंग पर, रीझि रहीं ब्रजनारी॥

॥३८०४॥४४२२॥

राग मलार

बातनि को परतीति करै।
को अब कमलनैन मूरति तजि, निरगुन ध्यान धरै॥
जो मत बेद कहत जुग बीते, रूप रेख बिनु जानै।
सो मत मूढ़ कहत अबलनि सौं, नाहिं सो हृदै समानै॥
जिहिं रस काज देव मुनि चिंतत, ध्यान पलक नहिं आवत।
सोई रस सूर गाइ ग्वालनि सँग, मुरली लै कर गावत॥

॥३८०५॥४४२३॥

राग सारंग

नहीं हम निरगुन सौं पहिचानि।
मन मनसा रस-रूप सिंधु मैं, रही अपुनपौ सानि॥
जदपि आनि उपदेसत ऊधौ, परम ज्ञान बखानि।
चित चुभि रही मदन मोहन की चितवनि मृदु मुसकानि॥
जुर्‍यौ सनेह नंद-नंदन सौं, तजि परिमिति कुलकानि॥
छूटन नहीं सहज सूरज प्रभु, दुःख सुख लाभ कि हानि॥

॥३८०६॥४४२४॥

राग सारंग

(ऊधौ) जौ कोउ यह तन फेरि बनावै।
तोऊ नंद-नँदन तजि मधुकर, और न मन मैं आवै॥
जौ या तन की त्वचा काटि कै, लै करि दुंदुभि साजै।
मधुकर उतंग सप्त सुर निकसै, कान्ह-कान्ह करि बाजै॥
निकसैं प्रान परैं जिहि माटी, द्रुम लागै तिहिं ठाम।
अब सुनि सूर पत्र फल, साखा, लेत उठैं हरि नाम॥
॥३८०७॥४४२५॥

राग सारंग

ऊधौ जाइ बहुरि सुनि आवहु, कह्यौ जो नंदकुमार।
यह न होइ उपदेस स्याम कौ, कहत लगावन छार॥
निरगुन जोति कहाँ उन पाई, सिखवत बारंबार।
काल्हिहिं करत हुते हमरे अँग, अपनैं हाथ सिँगार॥
व्याकुल भई गोपालहिं बिछुरैं, गयौ गुन ज्ञान सँभार।
तातैं जो भावै सो बकत हौ, नाहिंन दोष तुम्हार॥
बिरह सहन कौं हम सिरजी हैं, पाहन हृदय हमार।
सूरदास अंतरगति मोहन, जीवन प्रान अधार॥
॥३८०८॥४४२६॥

राग सारंग

ऊधौ जोग बिसरि जनि जाहु।
बाँधौ गाँठि छूटि परिहै कहुँ, फिरि पाछैं पछिताहु॥
ऐसी बहुत अनूपम मधुकर, मरम न जानै और।
ब्रज बनितनि के नहीं काम की, है तुम्हरेई ठौर॥
जो हित करि पठयौ मनमोहन, सो हम तुमकौं दीनौ।
सूरदास ज्यौं विप्र नारियर, करहीं बंदन कीनौ॥
॥३८०९॥४४२७॥

राग सारंग

ज्ञान जोग अबलनि अहीरि सौं कहत न आवै लाज।
ऊधौ सखा स्याम के कहियत, पठए हौ बेकाज॥

जा लायक जो बात होइ सो, तैसियै तासौं कहिऐ।
बीना नाद सँगीत सुधानिधि, मूढ़हिं कहा सुनैऐ॥
हम जानी बिचारि पठऐ हौ, सखा अंग परबीन।
सुख दैहौ मोहन कहि बतियाँ, करत जोग आधीन॥
मुरली अधर मोर की पाखैं, जिन यह मूरति देखी।
सोऽब कहा जानैं निरगुन कौं, भीति चित्र अवरेखी॥
पा लागौं तुम बड़े सयाने, अनबोले ही रहियौ।
सिखए जोग सूर के प्रभु के, उनहीं सौं फिरि कहियौ॥
॥३८१०॥४४२८॥

ऊधौ कह्यौ तिहारौ कीन्हौ।
जिहिं-जिहिं भाँति सिखावन दीन्हौ, सोइ बिचारन लीन्हौ॥
नैन मूँदि धरि ध्यान निरंतर, मन देख्यौ दौराइ।
अरुझि रह्यौ नँदलाल प्रेम रस, निमिष न इत उत जाइ॥
जो हम हाथ आवते जानतिं, लेतीं सीस चढ़ाइ।
यह लै देहु ताहि फिरि मधुकर, जिन पठए हित गाइ॥
मेरे जान सूर के प्रभु तौ, फेरि न लैहैं ओऊ।
देखियत परी तिहारे माथैं, यह हाँसी दुख दोऊ॥
॥३८११॥४४२९॥

राग धनाश्री

ऊधौ काहे कौं भक्त कहावत।
जु पै जोग लिखि पठयौ हमकौं, तुमहुँ न भस्म चढावत॥
शृंगी मुद्रा भस्म अधारी, हमहीं कहा सिखावत।
कुबिजा अधिक स्याम की प्यारी, ताहिं नहीं पहिरावत॥
यह तौ हमकौं तबहि न सिखयौ, जब तैं गाइ चरावत।
सूरदास प्रभु कौं कहियौ अब, लिखि-लिखि कहा पठावत॥
॥३८१२॥४४३०॥

राग नट

(ऊधौ) ना हम बिरहिनि ना तुम दास।
कहत सुनत घट प्रान रहत हैं, हरि तजि भजहु अकास॥

बिरही मीन मरै जल बिछुरैं छाँड़ि जियन की आस।
दास भाव नहिं तजत पपीहा, बरषत मरत पियास॥
पंकज परम कमल मैं बिहरत, बिधि कियौ नीर निरास।
राजिव रबि कौ दोष न मानत, ससि सौं सहज उदास॥
प्रगट प्रीति दसरथ प्रतिपाली, प्रीतम कैं बनबास।
सूर स्याम सौं दृढ़ ब्रत राख्यौ, मेटि जगत उपहास॥
॥३८१३॥४४३१॥

राग नट

ऊधौ बिनति सुनौ इक मेरी।
जब कैं बिछुरी गए नँदनंदन, काम के दल रहे घेरी॥
देखौ हृदै बिचारि तुमहिं अब, प्रीति रीति सब केरी।
जहँ जाकी निधि तहँ सब सौंपै, ज्यौं मृग नाद अहेरी॥
वै दस मास रतन रस बस तैं, ससि बिनु रैनि अँधेरी।
सूरदास स्वामी कब आवहिं, बास करन ब्रज फेरी॥
॥३८१४॥४४३२॥

राग सारंग

मधुकर कहा प्रवीन सयाने।
जानत तीनि लोक की महिमा, अबलनि काज अयाने॥
जे कच कनक कटोरा भरि-भरि, मेलत तेल फुलेल।
तिन केसनि क्यौं भस्म चढ़ावत, होरी कैसे खेल॥
जिन केसनि कबरी गुहि सुंदर, अपनैं हाथ बनाई।
तिनकौं जटा कहा नीकी है, कहु कैसे कहि आई॥
जिन स्रवननि ताटंक खुभी, औ करनफूल खुटलाऊ।
तिन स्रवननि कसमीरी मुद्रा, लै लै चित्र झुलाऊ॥
भाल तिलक, काजर चख, नासा नकबेसरि नथ फूली।
ते सब तजि हमरे मुख मेलत, उज्ज्वल भस्मी धूली॥
जिहिं मुख गीत सुभाषित गावतिं, करतिं जु हास बिलास।
तिहिं मुख मौन गहे क्यौं जीजै, घूँटत ऊरध स्वास॥
कंठ सुमाल हार मुकता के हीरा रतन अपार।
ताही कंठ बाँधिबे कारन, सिंगी जोग सिंगार।

कंचुकि भीनि भीनि पट सारी, चंदन सरस सुछंद।
अब कंथा एकै अति गुदरी, क्यों उपजी मतिमंद ॥
ऊधौ उठौ सबै पा लागैं, देख्यौ ज्ञान तुम्हारौ।
सूर सु प्रभु मुख फेरि देखिहैं, चिरजियौ कान्ह हमारौ ॥
॥३८१५॥४४३३॥

राग सारंग

हमतौ दुहूं भाँति फल पायौ।
जौ गोपाल मिलैं तौ नीकौ, नतरु जगत जस छायौ ॥
कहँ हम या गोकुल की गोपी, बरनहीन घटि जाति।
कहँ वै श्री कमला के वल्लभ, मिलि बैठीं इक पाँति ॥
निगम ज्ञान मुनि ध्यान अगोचर, ते भए घोप निवासी।
ता ऊपर अब कहौ देखि धौं, मुक्ति कौन की दासी ॥
जोग कथा ऊधौ पालागौं, मति कहौ बारबार।
सूर स्याम तजि आन भजे जो, ताकी जननी छार ॥
॥३८१६॥४४३४॥

राग मारू

मोहिं अलि दुहूँ भाँति फल होत।
तब रस अधर लेति ही मुरली, अब भइ कुबिजा सौत ॥
तुम जु जोग मत सिखवन आए, भस्म चढ़ावन अंग।
इन बिरहिनि मैं कहुँ तुम देखी, सुमन गुहाए मंग ॥
काननि मुद्रा पहिरि मेपला, धरे जटा जु अधारी।
ह्याँ हैं तरल तर्‍यौना कानैं, अरु तनसुख की सारी ॥
परम वियोगिनि रटत रैनि-दिन, धरि मन मोहन ध्यान।
तुम तौ चलौ बेगि मधुबन कौं, जहाँ जोग कौ ज्ञान ॥
निसि दिन जीजत हैं या ब्रज मैं, देखि मनोहर रूप।
सूर जोग लै घर घर डोलौ, लेहु-लेहु ज्यौं सूप ॥
॥३८१७॥४४३५॥

राग नट

ऊधौ मथुरा ह्याँ लै जाहु।
आरति हरौ स्रवन नैननि की, मेटहु उर कौ दाहु ॥

बुधि बल बचन जहाज बाहँ महि, बिरह-सिधु अवगाहु।
पार लगावहु मधुरिपु कैं तट, चंद तज्यौ जनु राहु॥
देखहिं जाइ रूप कुबिजा कौ, सहि न सकत यह दाहु।
जीवन जनम सुफल करि लेखहिं, सूर सबनि उत्साहु॥
॥३८१८॥४४३६॥

राग नट

लै चलि ऊधौ अपनैं देस।
मदनगुपाल मिलन मन उमह्यौ, कौन बसै ह्यॉं जदपि सुदेस॥
वह मूरति मो हृदै बसति है, मुरलि अधर पुट कुंतल केस।
कुंडल लोल तिलक मृगमद रुचि, गावत नृत्यत नटवर वेस॥
कहा करौं मोपै रह्यौ न जाइ छिन, सब सुखदायक बसत बिदेस।
सूरज स्याम मिलन कब ह्वैहै, दूरि गमन ब्रजनाथ नरेस।
॥३८१९॥४४३७॥

राग गौरी

सब तैं वहै देस अति नीकौ।
जह वै मदन गुपाल हमारे, तहँ जाइ दुख जी कौ॥
सुदर कमल बदन मुरली-धुनि, कित सुख सब्द सुनायौ।
तब तैं थक्यौ मधुप मन उहँई, बहुरि न उर मैं आयौ॥
जैसैं देह स्वास बिनु औरै, त्यौं ब्रज लागत फीकौ।
कहि किहिं जतन प्रान राखैं, बिनु सूर स्याम प्रिय जी कौ॥
॥३८२०॥४४३८॥

राग बिहागरौ

ऊधौ लै चल लै चल।
जहँ वै सुंदर स्याम बिहारी, हमकौं तहँ लै चल॥
आवन-आवन कहि गए ऊधौ, करि गए हम सौं छल।
हृदय की प्रीति स्याम जू जानत, कितिक दूरि गोकुल॥
आपुन जाइ मधुपुरी छाए, उहाँ रहे हिलि मिल।
सूरदास स्वामी के बिछुरैं, नैननि नीर प्रबल॥
॥३८२१॥४४३९॥

राग सारंग

गुप्त मते की बात कहौं, जो कहौ न काहू आगैं।
कै हम जानैं कै हरि तुमहूँ, इतनी पावहिं माँगैं॥
एक बेर खेलत बृंदावन, कंटक चुभि गयौ पाइँ।
कटक सौं कटक लै काढ्यौ, अपनैं हाथ सुभाइ॥
एक दिवस बिहरत बन भीतर, मैं जु सुनाई भूख।
पाके फल वै देखि मनोहर, चढे कृपा करि रूख॥
ऐसी प्रीति हमारी उनकी, बसतैं गोकुल बास।
सूरदास-प्रभु सब बिसराई, मधुबन कियौ निवास॥
॥३८२२॥४४४०॥

राग मलार

ऊधौ कत ये बातैं चालीं।
कछु मीठी कछु मधुरी हरि की, ते उर-अंतर साली॥
तब ये बेली सींचि स्याम घन, अपनी करि प्रतिपाली।
अब ये बेली सूखतिं हरि बिनु, छाँडि गए बनमाली॥
जबहीं कृपा हुती जदुपति की, सँग रस रास सुखाली।
सूरदास-प्रभु तब न मुईं हम, जीवहिं बिरह की जाली॥
॥३८२३॥४४४१॥

राग नट

ऊधौ यहै बिचार गहौ।
कै तन गएँ भलौ मानैं कै हरि ब्रज आइ रहौ॥
कानन देह बिरह दौ लागी, इंद्री जीव जरैं।
बुझै स्याम-घन प्रेम कमल मुख, मुरली बूँद परैं॥
चरन सरोवर माहिं मीन मन, रहत एक रस रीति।
तुम निरगुन धाम पर डारत, सूर कौन यह नीति॥
॥३८२४॥४४४२॥

राग सारंग

ऊधौ हम लायक सिख दीजै।
यह उपदेस अगिनि तैं तातौ, कहौ कौन बिधि लीजै॥

तुमहीं कहौ इहाँ इतननि मैं, सीखनहारी को है।
जोगी जती रहित माया तैं, तिनहीं यह मत सोहै॥
कहा सुनत विपरीति लोक मैं, यह सब कोऊ कैहै।
देखौ धौं अपने मन सब कोउ, तुमहीं दूषन दैहै॥
स्रक-चंदन वनिता विनोद रस, क्यौं विभूति वपु माँजैं।
सूरदास सोभा क्यौं पावत, आँखि आँधरी आँजैं॥
॥३८२५॥४४४३॥

ऊधौ तुम हो चतुर सुजान।
हमकौं तुम सोई सिख दीजो, नंद-सुवन की आन।
आमिष है भोजन हित जाकौ, सो क्यौं सागहिं मान।
ता मुख सेम पात क्यौं परसत, जा मुख खाए पान॥
किंगरी स्वर कैसैं सचु मानत, सुनि मुरली की तान।
सुख तौ ता दिन होइ सूर ब्रज, जा दिन आवैं कान्ह॥
॥३८२६॥४४४४॥

ऊधौ कहि न सकति इक बात।
जोग सुनत डर ऐसी लागत, ज्यौं तरु टूटे पात॥
दधि अरु भात हाथ करि लेते, लै कुंजनि मैं खात॥
अब सुनियत है धोती पहिरे, चढ़े खराऊँ न्हात॥
अरु कुबिजा पटरानी कीन्ही, कूबर पै इतरात।
कहौ तौ जाइ उहाँ हौं झगरौं दै, कूबर पर लात॥
कुल की लाज कहाँ लौं राखौं, सुनि सुनि हृदय दुखात।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, गुन मेटे फल जात॥
॥३८२७॥४४४५॥

राग सारंग

जा दिन स्याम मिलैं सोइ नीकौ।
जोतिष निगम पुरान बडे ठग फाँसत जे जिय ही कौ॥
जौ बूझौ तौ ऊतर दीजै, बिनु बूझैं रस फीकौ।
अपनैं-अपनैं ठौर सबै ग्रह, हरन भयौ क्यौं सी कौ॥
सुनि रे मधुप मूढ़ ब्रज आयौ, लै अपजस कौ टीकौ।
चातक मीन कमल घन चाहत, कब मन करत अमी कौ॥

भद्रा भली, भरनि भय हरनी, चलत मेप अरु छींकौ।
सूर धरम धरि लाल गुनै जो, तौ प्रेमी कौडी कौ॥
॥३८२८॥४४४६॥

राग सारंग

(ऊधौ) हम लायक हमसौं कहौ।
बात विचारि सुहाती कहिऐ, कै अनबोल रहौ॥
भली कहैं तुमकौं अति सोभा, अरु पदवी सु लहौ।
यह विपरीति बूझिये, तुमकौं जूवा सुरभि नहौ॥
एते पर फिरि फिरि सिखवत हौ, दृढ करि जोग गहौ।
सूर कहै अलि पूरौ दीजै, बातनि ही न बहौ॥
॥३८२९॥४४४७॥

राग सारंग

कबहूँ ऐसी बात कहौ।
तजहु सोच मिलिहैं नँदनंदन, हित करि दुखहि दहौ॥
तुम हरि समाधान कौं पठए, हमसौं कहन सँदेस।
आनि अधिक आरति उपजाई, कहि निरगुन उपदेस॥
इक अति निकट रहत हौ उनकैं, जानत सकल सुभाइ।
सोइ करहु जिनि पावहिं दरसन, मेटहु अगम उपाइ॥
हम किंकरी कमललोचन की, बस कीन्ही मृदु हास।
सूरदास अब क्यौं विसरत है, नख-सिख अंग बिलास॥
॥३८३०॥४४४८॥

राग मलार

सब जल तजे प्रेम के नातैं
चातक स्वाति बूँद नहिं छाँडत, प्रगट पुकारत तातैं॥
समुझत मीन नीर की बातैं, तऊ प्रान हठि हारत।
सुनत कुरंग प्रेम नहिं त्यागत, जदपि ब्याध सर मारत॥
निमिप चकोर नैन नहिं लावत, ससि जोवत जुग बीते।
ज्योति पतंग देखि वपु जारत, भए न प्रेम घट रीते॥
कहि अलि क्यौं बिसरति वे बातैं संग जु करि ब्रजराज।
कैसैं सूरस्याम हम छाँडैं, एक देह के काज॥
॥३८३१॥४४४९॥

मधुकर मधु माधव की बानी।
अरथ सुनत ही प्रान हमारे, सम सनेह घृत सानी॥
जैसैं दीपक तेल तूल बल, अति दीपति परकासै।
रूप लोभ जोतिहि दरसत ही, कीट कृपन तन नासै॥
जैसैं मीन छीन आमिष रस, ग्रसत बाँस अनियारे।
अटकत कंटक कुटिल हृदय मैं, तब नहिं जात निकारे॥
जैसैं नाद सुनाइ पारधी, धन कुरंग कौ मोहै।
कठिन बान संधान तुरत ही, तीखे सर उर पोहै॥
जैसैं ठग खवाइ मद-मोदक, पथिकनि कौँ सुख दीन्हौ।
रस बिस्वास बढ़ाइ चाइ सौं, प्रान सहित गथ लीन्हौ॥
ऐसै मधुकर हरि जी हमसौं, कपट प्रीति बिस्तारी।
रस की ऊँख उखारि सूर प्रभु, बई बिरह की बारी॥

॥३८३२॥४४५०॥

राग भैरव

ऊधौ को हरि हितू हमारे।
वै राजा ह्वै रहे मधुपुरी, दासी कहत दुलारे॥
तब लौं आस हुती आवन की, सुने न वचन तिहारे।
केहिं कैं रूप आनि उर अंतर, जोग जुगुति गहि डारे॥
नृप अभिमान जानि छाँड़यौ ब्रज, कित अहीर बेचारे।
मारयौ कंस काज कुबिजा के, सूर कहावत भारे॥

॥३८३३॥४४५१॥

राग मलार

ऊधौ जौ हरि हितू तुम्हारे।
तौ तुम कहियौ जाइ कृपा करि, ए दुख सबै हमारे॥
तन तरिवर उर स्वास पवन मैं, बिरह दवा अति जारे।
नहिं सिरात नहिं जात छार ह्वै, सुलगि-सुलगि भए कारे॥
जद्यपि प्रेम उमँगि जल सींचे, बरषि-बरषि घन हारे।
जौ सींचे इहिं भाँति जतन करि, तौ एतैं प्रतिपारे॥
कीर कपोत कोकिला चातक, बधिक बियोग बिडारे।
क्यौं जीवैं इहिं भाँति सूर प्रभु, ब्रज के लोग बिचारे॥

॥३८३४॥४४५२॥

राग धनाश्री

हमैं तौ इतनौ ही सौं काज।
कैसैंहू अलि कमलनैन कौं, लै आवहु ब्रज आज॥
और अनेक उपाइ तुम्हारैं, करौ सकल सुख राज।
कैसैं वै निबहत अबलनि पै, कठिन जोग के साज॥
नख-सिख सुभग स्याम दरसन बिनु जीवन जनम वृथा जु।
सूरदास मन रहत कौन बिधि, बदन बिलोकैं बाजु॥
॥३८३५॥४४५३॥

राग धनाश्री

अब हरि कौन के रस गिधे।
सकत नहिं निवारि ऊधौ, बदरी ज्यौं ससि बिंधे॥
बार तिहिं बन बन डुलाईं, तजि सकल कुल-कानि।
अध करि अब छाँडि गए हम, बिनु लकुट बिनु पानि॥
जतन गुन निरगुन भए सब, मरन की अभिलाष।
बिना चरन-सरोज देखे, जरै देह जु राख॥
परीं फंद वियोग सूनैं तजति कुमुद निवास।
बिना पुष्कर मीन कैसैं जियैं सूरजदास॥
॥३८३६॥४४५४॥

राग देवगिरि

अब हरि कैसे कै हैं रहत।
सुनि यह दसा दुसह गोकुल की, ऊधो का जु कहत॥
देखि सखी करुना अति इनकी, उलटे चरन गहत।
तुमकौं चाहि अधिक करि माई, अँखियाँ आँसु बहत॥
सुनियत है यह बात जु पर दुख, नाहीं कबहुँ सहत।
उपजी परम प्रतीति सूर यह, दुसह दई सु लहत॥
॥३८३७॥४४५५।

राग कान्हरौ

हरि ठाकुर लोगनि सौं ऊधौ, कहि काहे की प्रीति।
जौ कीजै तौ ह्वै है जलचर, गनि की ऐसी रीति॥

जैसैं मीन कमल चातक कौ, ऐसैं दिन गए बीति।
तरफत जरत, पुकारत निसि-दिन, नाहिंन ह्याँ कछु नीति॥
मन हठि परयौ कबंध जुद्ध ज्यौं, हारेहुँ मानत जीति।
रुकत न प्रेम समुद्र सूर-प्रभु, बारू ही की भीति॥
॥३८३८॥४४५६॥

राग सारंग

को गोपाल कहाँ के बासी, कासौं है पहिचानि।
तुम धौं जोग कौन के सिखए, इहाँ कहत हौ आनि॥
अपनी चोप मधुप उड़ि बैठत, भोर भलौ रस जानि।
पुनि वह बेलि बढ़ौ कै सूकौ, वाहि कहा हित हानि॥
प्रथम बेनु धुनि करत हरत मन, राग रागिनी ठानि।
पुनि वह ब्याध बिसास-बिबस करि, हनत बिषम सर तानि॥
पय प्यावत पूतना सँहारी, छले जु बलि से दानि।
सूपनखा नासिका निपाती, सूर सदा यह बानि॥
॥३८३९॥४४५७॥

राग मलार

मधुकर कौन मनायौ मानै।
अबिनासी अति अगम तुम्हारौ, कहा प्रीति रस जानै॥
सिखवहु जाइ समाधि जोग 'रस, जे सब लोग सयाने।
हम अपनै ब्रज ऐसहिं रहिहैं, बिरह बाइ बौराने॥
जागत सोवत सपन रैन दिन, उहै रूप परवाने।
बालमुकुंद किसोरी लीला, सोभा सिंधु समाने॥
जिनके तन मन प्रान सूर सुनि, मृदु मुसकानि बिकाने।
परी जु पयनिधि अलप बूँद जल, सु पुनि कौन पहिचानै॥
॥३८४० ४४५८॥

राग सारंग

अब तौ जोर कटक कौ पायौ।
बाजी ताँत राग पहिचान्यौ, जो निरगुन लिखि ल्यायौ॥
जोगी जहाँ होइ अगवानी, तुंबा तहाँ तुबावै।
जाकैं कुल जैसी चलि आई, तैसी रीति चलावै॥

कुब्जिा जहाँ होइ पटरानी, तुमसे होइँ वजीर।
सूरदास ब्रज-जुवतिनि ऊपर, क्यौं न करौ उपचीर ॥
॥३८४१॥४४५९॥

राग सारंग

हरि-सुत सुत हरि के तन आहि।
ह्याँ को कहै कौन की बातैं, ज्ञान ध्यान कौ काहि ॥
को मुख भ्रमर तासु जुवती की, को निज कस हते।
हमरे तौ गोपति सुत अधिपति, बनति न औरनि तैं ॥
मोरज रध्र रूप रुचिकारी, चितै चितै हरि होत।
कबहूँ कर करनी समेति लै, नैकु मान कै सोत ॥
ता रिपु समै संग सिसु लीन्हे, आवत है तन घोष।
सूरदास स्वामी मन मोहन, कत उपजावत दोष ॥
॥३८४२॥४४६०॥

राग सारंग

अब हरि और भए हैं माई, बसति इतनियै दूरि।
मधुकर हाथ सँदेसौ पठयौ, चतुर चातुरी चूरि ॥
रूप रासि सब गुन की परिमिति, स्याम सजीवन मूरि।
तिनसौं कहत मनहिं मन समुझहु, है सबहीं भरि पूरि ॥
इक सुनि सूर ऐसहीं या तन, रहीं बिरह झकझूरि।
तापर छपद कियौ चाहत है, कोइलाहू तैं धूरि ॥
॥३८४३॥४४६१॥

राग बिहागरौ

अब अलि सुनत स्याम की बात।
नूतन नेह कियौ कुब्जिा सन, तज्यौ पुरातन नात ॥
परसत जाइ कपट स्वारथ तजि, कमल कोष निसि बासी।
भ्रमत भ्रमर सुख और सुमन सँग, मधुप एक इक रासी ॥
इती दूरि मुख अवधि बदी निज, सोऊ भई न साँची।
कीजति कहा प्रतीति सँदेसनि, सूर बिरह की काँची ॥
॥३८४४॥४४६२॥

राग केदारौ

कहा कोऊ जानै पर पीर।
नंद नँदन कैं बिछुरे सखि री, जेती सही सरीर॥
कहि कहि कथा मधुप समुझावत, मन राखहु धरि धीर।
नैन मीन कैसैं सचु पावत, बिनु हरि दरसन-नीर॥
जोग समाधि कहा हम जानैं, ब्रजवासिनी अहीर।
सोइ कीजै ज्यौं मिलहिं सूर-प्रभु, बहुरि तरंगिनि तीर॥
॥३८४५॥४४६३॥

राग कान्हरौ

हम तिय मृतक जियत ससि साखी।
तुम अलि रबि हित कमल बिसेषी हरे बिकल मधु माखी॥
मुरली अधर सुधा धुनि सुनि, सुख संच्यौ स्रवन दुवार।
मधुहारी अक्रूर बधिक सुख, अवधि लगाई छार॥
मन कौ बिरह नैन कह जानै, स्रुति मत तुही सुनावै।
सूर भस्म अँग लगी कुटिलता, तउ जोगै गुन गावै॥
॥३८४६॥४४६४॥

राग कान्हरौ

इनकौं दुःख भई ये सेजैं।
ऊधौ कमल नयन की बतियाँ छिदि छिदि जातिं करेजैं॥
बृंदावन, गोबर्धन यह बन, फिरि-फिरि सुरति दिवावैं।
जिहि निसि जहाँ स्याम खेलत हे, बल सँग गऊ चरावैं॥
देखे घनै पखान महूरी, मोरपखा मनि गुंज।
सूरदास प्रभु स्याम खिलौना, सकल प्रेम के पुंज॥
॥३८४७॥४४६५॥

राग रामकली

हमरी सुरति लेत नहिं माधौ।
तुम अलि सब स्वारथ के गाहक, नेह न जानत आधौ॥
निसि लौं रमत कोप अभ्यंतर, जो हित कही सो थोरी।
भ्रमत भोर सुख और सुमन सँग, कमल देत नहिं कोरी॥

राका रास मास रितु जेती, रजनि प्रीति नहि थाही।
वैस सचि-सुख तज्यौ सूर हरि, गए मधुपुरी माहीँ ॥
॥३८४८॥४४६६॥

राग धनाश्री

(,कैसे जीवैं ऊधौ हरि परदेस रहे।
गरजि गरजि घन बरषन लागे, नदिया नार बहे ॥
कहि पठयौ मधुपुरी सखी री, मेरे हुतैं चरन गहे।
बासर गए निहारत मारग, चातक रैनि डहै ॥
कासौँ कहौँ तपत मन निसि दिन, को यह पीर लहै।
हमहूँ किन लै जाहिं सूर-प्रभु को ब्रज बिपति सहै ॥
॥३८४९॥४४६७॥

राग भैरवी

अब कैसैं ब्रज जात बस्यौ।
हृदय दहत जमुना बिनु देखे, जहाँ जहाँ नँदलाल हँस्यौ ॥
तब वे धेनु रहति प्रमुदित चित, प्रभुहिं बिमुख तृन दंत कस्यौ।
ते अब बिलख बदन कृस डोलति, मनहु निकट केहरि दरस्यौ ॥
नैन नीर मोचति सोचति हैं, खजरीट जल पवन खस्यौ।
सूरदास बिनु ललित गोपालहिं, गोकुल कुल अहि बिरह डस्यौ ॥
॥३८५०॥४४६८॥

राग धनाश्री

हरि हमकौं यौं काहैं बिसारी।
प्रेम तरँग बूडत ब्रजवासी, तरत स्याम सौं इहाँ री ॥
रिपु माधव, पिक बचन, सुधाकर, मरुत मंद गति भारी।
सहि न सकति अति बिरह त्रास तन, आगि सलाकनि जारी ॥
ज्यौं जल थाकैं मीन कहा करै, त्यौं हरि मेलि अडारी।
चितै अधोमुख नैन सूर-प्रभु, कहियौ बिपति हमारी ॥
॥३८५१॥४४६९॥

राग धनाश्री

जौ पै इहै हुती उनकैं मन।
तौ तब कमलनैन हम कारन, कहा किए वे जतन ॥

बिष जल, ब्याल, बरुन, बरपानल, अखिल असुभ हति राखे।
संतत संग रहत काहू मिस, निठुर बचन नहिँ भाषे ॥
उन बिपदनि कुंचित जौ करते, तौ नहिँ जीवित रहतीँ।
बिधि बस नाव बहुरि फिरि मिलतीँ, इतौ बिलब कत सहतीँ।
कहिऐ कहा जु सब जानत हैँ, या तनु की गति ऐसी।
सूरदास-प्रभु हित सूचित कै, बेगि प्रगटवी तैसी ॥
॥३८५२॥४४७०॥

राग मलार

मधुकर दीन्ही प्रीति दिनाई।
बातनि सुहृद कर्म कपटी के, चलनि चोर के भाई ॥
प्रेम बीच बघ-बार सुधा-रस, अधर माधुरी प्याई।
सो अब जाइ खग्यौ उर अतर, ओपधि कछु न बसाई ॥
गरल दान देते बरु नीकौ, सावधान ह्वै खाई ॥
कै मारै कै काज सरै पै, दुःख न देख्यौ जाई ॥
कहि मारै सो सूर कहावै, मित्र-द्रोह न भलाई।
सूरदास ऐसे अलि जग मैँ, तिनकी गति नहिँ गाई ॥
॥३८५३॥४४७१॥

राग धनाश्री

मोहन सौँ मुख बनत न मोरे।
जिन नैननि मुख चंद बिलोक्यौ, ते नहिँ जात तरनि सौँ जोरे ॥
मुनि मन मंडन जोग कमठ बिनु, मंदर भार सहत कहि कोरे।
बँधत नहीँ है कमल के बंधन, कुञ्जर क्यौँऽब रहत बिनु तोरे ॥
नीलांबुज, तन नील, बसन, मनि, चितै न जात धूम के भोरे।
सूर भृंग जे कमल के बिरही, चपक बन लागत चित थोरे ॥
॥३८५४॥४४७२॥

ऊधौ यह न होइ रस रीति।
सोऊ सठ जो कमलनयन की, कहत बात बिपरीति ॥
सत जुग सुनत प्रगट गुन गावत, कहि कुबिजा के मीत।
सोधि न परत भरे भाजन मैँ, जो टोहै इक सीत ॥

तुम उपदेस नीति लै आए, हुती या ब्रजहिं अनीत।
देह नेह पहिलैं मन बाँध्यौ, सूर स्याम के गीत॥
॥३८५५॥४४७३॥

राग सोरठ

बिलग हम मानैं ऊधौ काकौ।
तरसत रहे बसुदेव देवकी, नहिं हित मातु पिता कौ॥
काके मातु पिता को काकौ, दूध पियो हरि जाकौ।
नंद जसोदा लाड़ लडायौ, नाहिं भयौ हरि ताकौ॥
कहियौ जाइ बनाइ बात यह, को हित है अबला कौ।
सूरदास-प्रभु प्रीति है कासौं, कुटिल मीत कुबिजा कौ॥
॥३८५६॥४४७४॥

राग सोरठ

उघरि आए कान्ह कपट की खानि।
सरबस हर्‍यौ बजाइ बाँसुरी, अब छाँडी पहिचानि॥
जिन पय पियत पूतना मारी, दालब करी न हानि।
बलि छलि बाँधि पताल पठाए, नैंकु न कीन्ही कानि॥
जैसैं बधिक अधिक मृग बिधवत, राग-रागिनी ठानि।
अवधि आस परतीति ओट दै, हनत बिषम सर तानि॥
जैसैं नाटसल टरत न उर तैं, त्यौं, ऊधौ तुम जानि।
सूरदास-प्रभु कौं जो भावै आयसु माथैं मानि॥
॥३८५७॥४४७५॥

राग सारङ्ग

जीवन मुख देखे कौ नीकौ।
दरस, परस दिन राति पाइयत, स्याम पियारे पी कौ॥
सूनौं जोग कहा लै कीजै, जहाँ ज्यान है जी कौ।
नैननि मूँदि मूँदि कह देखौं, बँधौ ज्ञान पोथी कौ॥
आछे सुदर स्याम हमारे, और जगत सब फीकौ।
खाटी मही कहा रुचि मानै, सूर खवैया घी कौ॥
॥३८५८॥४४७६॥

राग सारंग

मधुकर को मधुवनहिँ गयौ ।
काकैं कहेँ सँदेसौ ल्याए, किन लिखि लेख दयौ ॥
को वसुदेव देवकीनंदन, को जदुवंस उजागर ।
ह्याँ तिनसौं पहिचानि न काहू, फिरि लै जैये कागर ॥
गोपीनाथ राधिका वल्लभ, जसुमति कुँअर कन्हाई ।
दिन प्रति लेत दान वृंदावन, दूनी रीति चलाई ॥
मधुकर तुम हौ चतुर सयाने, कहत और की और ।
सूर सपथ काहू बहकायौ, कै भूले वह ठौर ॥
॥३८५९॥४४७७॥

राग केदारौ

नेह न होइ पुरानो रे अलि ।
जल प्रवाह ज्यौं सोभा-सागर, नित नव तन ब्रजनाथ इहाँ चलि ॥
जीवत हैं आनंद रूप रस, बिनु प्रतीति क्यौं मीन चढ़ै थल ।
अमी अगाध सिंधु सर विहरत, पीवतहू न अघात इते जल ॥
दिन-दिन बढ़त नीर नलिनी ज्यौं, स्याम रंग मैं नैन रहे रलि ।
सूर गुपाल प्रीति जिय जाकैं, छूटति नाहिंन नेह सती सलि ॥
॥३८६०॥४४७८॥

राग धनाश्री

अपने सगुन गोपालहिँ माई इहिँ विधि काहैं देति ।
ऊधौ की इन मीठी बातनि, निर्गुन कैसैं लेति ॥
धर्म, अर्थ, कामना सुनावत, सब सुख मुक्ति समेति ।
काकी भूख गई मन लाड़ू सो देखहु चित चेति ॥
जाको मोक्ष विचारत बरनत, निगम कहत हैं नेति ।
सूर स्याम तजि को भुस फटकै, मधुप तुम्हारे हेति ॥
॥३८६१॥४४७९

राग धनाश्री

हमरी सुधि भूली अलि आए ।
अब कछु कान्ह कहत हैं औरै, समुझि सखा गुन गाए ॥
निज स्वारथ रस रीति समुझ उर, बिकल निमेष न चाहे ।
कहतहिँ सुगम सबै कोउ जानत, कठिन हेत निरबाहे ॥

अब परतीति बात को मानै, कहत हैं स्याम पराए।
कब लौं चलै कपट कौ नातौ, सूर सनेह बनाए ॥
॥३८६२॥४४८०॥

राग धनाश्री

मधुकर हम सब कहा करैं।
पठए हौ गोपाल हेत करि, आयसु तैं न टरैं ॥
रसना उर वारौं ऊधौ पर, इहिं निरगुन कैं साथ।
यह पै नैकु बिलग जनि मानहु अँखियाँ नाहिंन हाथ ॥
कौन भाँति गुन कहौं तिहारे, चित कौं धीर धरावौं।
महा विचित्र नीर बिनु नौका, जल बिनु मीन जियावौं ॥
सेवा हीन अपूरब दरसन, कब आवैंगे फेरि।
सूरदास प्रभु सौं यौं कहियौ, केरा पास ज्यौं बेरि ॥
॥३८६३॥४४८१॥

राग गौरी

रे अलि जनम करम गुन गाइ।
हम अनुरागिनि जसुमति-सुत की, नीरस कथा न भाइ ॥
कैसैं कर गोवरधन धार्‌यौ, कैसैं केसी मार्‌यौ।
काली दमन कियौ कैसैं, अरु बक कौ बदन बिदार्‌यौ ॥
किहिं विधि नंद महोत्सव कीन्हौ, किहिं बिधि गोपी धाई।
पट-भूषन नाना भाँतिनि के, जुवती-जन पहिराई ॥
दधि-माखन-भोजन कैसे करि, गोप सखा लै आए।
बन की धातु चित्र अँग कीन्हे, नाचत भेष सुहाए ॥
गृह बन कछु न सुहात स्याम बिनु, जुग सम बीतत जाम।
सूर मरहिँगी बिकल बियोगिनि, रटि रटि माधौ नाम ॥
॥३८६४॥४४८२॥

राग नट

मधुप आए जोग गथ लै, हाँसि औ दुख को सहै।
दंड मुद्रा भस्म कंथा मृग त्वचा, आसन दहै ॥
स्याम तैं कोउ निठुर नाहीं, सखा जिन के रावरे।
जरे ऊपर लौन लावहिं, कौन तिनतैं बावरे ॥

स्याम के गुन कहा बखानौं, जल बँधे जिन थल किए।
संग खेल खिलाइ हमकौं, सोच तौ इतने दिए॥
एक दिन बैकुंठवासी, रास वृंदावन रच्यौ।
सोइ सुरूप बिलोकि माधौ, आइ इहिं बिधि तन सँच्यौ॥
सरद जामिनि इंदु सोभा, लाज तजि कुंजन गईं।
बाँसुरी के शब्द सुनि-सुनि, बधिक की मृगिनी भईं॥
साँवरी सी मदन मूरति, हृदय माहिँ रमि रही।
और तौ कछु चित न आवत, कठिन ब्रत दृढ़ करि गही॥
मंदभागिनि करमहीनी, दोष काहि लगाइयै।
प्रानपति सौं नेह कीन्हौ, भाग लिखौ सु पाइयै॥
हम न जान्यौ जनम ऐसौ, रैनि कौ सुपनौ भयौ।
अंजुली जल घटत जैसैं, तैसैं ही यह तन गयौ॥
बैद आगैं भेद कैसौ, छेद तौ छाती किए।
प्रान दिए हम जगत जानत, सुख सबै कुबिजा लिए॥
जोग जप तप ध्यान पूजा, यह हृदै नहिं आवई।
सुधा-रस जिन स्वाद चाख्यौ, तिन्है और न भावई॥
ज्ञान दृढ़ तप ध्यान पूजा, हरि चरन जिनके हिएँ।
बिमुख हैं जे सूर स्वामी, फल कहा तिनके जिएँ॥

॥३८६५॥४४८३॥

उद्धव-वचन

राग मलार

वे हरि सकल ठौर के वासी।
पूरन ब्रह्म अखंडित मंडित, पंडित मुनिनि बिलासी॥
सप्त पताल ऊरध अध पृथ्वी, तल नभ बरुन बयारी।
अभ्यंतर दृष्टि देखन कौं, कारन रूप मुरारी॥
मन बुधि चित अहँकार दसेंद्रिय प्रेरक थंभनकारी।
ताकैं काज वियोग बिचारत, ये अबला-ब्रजनारी॥
जाकौं जैसौ रूप मन रुचै, सो अपबस करि लीजै।
आसन बैसन ध्यान धारना, मन आरोहन कीजै॥
षट दल अठ द्वादस दस निरमल, अजपा जाप जपाली।
त्रिकुटी संगम ब्रह्म द्वार भिदि, यौं मिलिहैं बनमाली॥

एकादस गीता श्रुति साखी, जिहिं विधि मुनि समुझाए।
ते सँदेस श्रीमुख गोपिनि कौ, सूर सु मधुप सुनाए॥
॥३८६६॥४४ ४॥

राग कर्नाटी

देखि रे प्रगट द्वादस मीन।
ऊधौ एक बार नँदलाल राधिका, आवत सखी सहित रस भीन॥
गए नव कुंज, कुसुमनि के पुंज, करैं अली गुंज, सुख हम लवलीन।
षट उडुगन, मनिधरहू राजत हैं, चौबीस धातु चित्र केहि कीन॥
षट इंदु द्वादस पतंग मनु मधुप सुनि, खग चौवन माधुरि रस पीन।
द्वादस बिंब, सौ बानवे बज्र कन, षट दामिनि, जलजनि हँसि दीन॥
द्वादस धनुष द्वादसै बिपका मोहन मन पट चिबुक चिन्ह चित चीन।
द्वादस ब्याल अधोमुख झूलत, मानौ कंज दल सौबीस बसीन॥
द्वादसै मृनाल द्वादस कदली खंभ, द्वादस दारिम सुमन प्रवीन।
चौबिस चतुस्पद ससि सौबीस मधुकर, अंग अंग रस कंज नवीन॥
नील नीलै मिली घटा दामिनि मनौ, सब सिंगार सोभित हरि हीन।
फिरि फिरि चक्र गगन मैं अमी बतावत, जुवती जोग मौन कहु कीन॥
बचन रचन रसरास नदनँदन तैं, जोग पौन हिरदै लवलीन।
नंद जसुदा दुखित गोपी ग्वाल गोसुत, मालिन दिन ही दिन दुखीन॥
चकी चका सकटा तृना केसी वृषभ, बिन गोपाल बैर इन कीन।
ज्यौं परैं पाइँ सूरज प्रभु मिलाइ, आरति हरैं भईं तन छीन॥
॥३८६७॥४४८५॥

राग गौरी

मधुकर ल्याए जोग सँदेसौ।
भली स्याम कुसलात सुनाई, सुनतहिँ भयौ अँदेसौ॥
आस रही जिय कबहुँ मिलन की, तुम आवत ही नासी।
जुवतिनि कहत जटा सिर बाँधौ, तौ मिलिहैं अविनासी॥

तुमकौं जिन गोकुलहिं पठाए, ते वसुदेव कुमार।
सूर स्याम हमतैं कहुँ न्यारे, होत न करत विहार॥
॥३८६८॥४४८६॥

राग मलार

मधुकर वादि वचन कत वोलै।
आपुन चपल चपल कौ संगी, चपल चहूँ दिसि डोलै॥
इन वातनि कौ कौन पत्यैहै, अंतर कपट न खोलै।
कंचन काँच कपूर कटु खरी, एकहि सँग क्यौं तोलै॥
अव अपनी सी हमहिं सिखावत, मति भूलहु यह ओलै।
सूर स्याम विनु रटत विरहिनी, विरह दाग जनि छोलै॥
॥३८६९॥४४८७॥

राग नट

ऊधौ सुनत तिहारे वोल।
ल्याए हरि कुसलात धन्य तुम घर घर पारयौ गोल॥
कहन देहु कह करै हमारौ, वरु उठि जैसे झोल।
आवत ही याकौ पहिचान्यौ, निपटहिं ओछो तोल॥
जिनकैं सोच नहीं कहिवे कौ, ये वहु गुननि अमोल।
जानी जाति सूर हम इनकी, वतचल चंचल लोल॥
॥३८७०॥४४८८॥

राग धनाश्री

मीठी वात हमारे आगैं, वार-वार अलि कहा सुनावहु।
हिं खिझाइ आपु पति खोवत, यामैं कहौ कहा तुम पावहु॥
न जाइ नगर नारिनि सौं, वे सुनि हैं इनकौं समुझावहु।
वासिनी अहीरि विरहिनी, तिन आगैं तुम काहे गावहु॥
ल गए स्याम सँग ही सँग, वड़े चतुर तौ उनहिं वुलावहु।
चकोर चंद्र दरसन तजि, कैसे जियैं तरनि दरसावहु॥
॥३८७१॥४४८९॥

राग धनाश्री

मधुकर कहा करन व्रज आए।
जोग ज्ञान हमकौं परमोधन, हरि तौ नहीं पठाए॥

जिहि मुख मुरली धरि अद्भुत सुर, गानू बजाइ रिझाए।
तिहिं मुख स्याम कहैंगे ऐसे, यह तो तुमहिं बनाए॥
अंग अंग आभूषन अपने, कर करि हमहिं बनाए।
सूरदास-प्रभु कैसें तुम कर, कंथा जोरि पठाए॥
॥३८७२॥४४९०॥

राग बिलावल

मधुकर तू काहैं उठि धायौ।
और बेर कबहूँ नहिं देख्यौ, हरि जासूसी आयौ॥
हमरैं कहा देखिहै रे तू, अपनौ ही मन सोधौ।
स्याम स्याम तन सबै एक से, वै अक्रूर तुम ऊधौ।
तू तौ बहुत पुहुप कौ लपट, वै कुब्जिा गृह-वासी॥
ह्याँ तौ उनकौ कछू न बिगर्‌यौ, सूर सदा हिय-वासी।
॥३८७३॥४४९१॥

राग बिलावल

क्यौं अलि गवन कियौ मथुरा तैं कहि धौं कौन विचार।
जनियत है सोई मुख मृदु छवि, देखत नंद-कुमार॥
सभा समिति गुन ज्ञान ध्यान मैं, नहिं ब्रज भजन प्रकार।
यह सूच्छम पथ घोष नारि कौ, तुम सिर जदुकुल भार॥
कहा बूझियत प्राननाथ बिनु, सोधि बचन स्रुति सार।
सुनि-सुनि मुख झूठनि के झूठनि, पढत बडौ बिस्तार॥
इहाँ जोग अरु अगम अगोचर, सैलवरन आधार।
सूरदास सुख कहँ लौं कहिए, आवै अतिथि अकार॥
॥३८७४॥४४९२॥

राग धनाश्री

कहा कहत रे मधु मतवारे ?
आयौ धाइ जोग उपदेसन, प्रेम भजन गहि डारे॥
जिहिं मुख सुधा स्याम रस अँचवत, अब पीवैं जल खारे।
यह अक्रूरहु तैं अति खोटौ, डरति जु हौं अहि कारे॥
हम जान्यौ यह स्याम सखा है, यह तौ औरै न्यारे।
सूर कहा याके मुख लागत, कौन याहि अब गारे॥
॥३८७५॥४४९३॥

राग रामकली

ऊधौ कहा कहत विपरीत।
जुवतिनि जोग सिखावन आए, यह तौ उलटी रीति॥
जोतत धेनु दुहत पय वृष कौ, करन लगे जु अनीति।
चक्रवाक ससि कौं क्यौं जानै, रवि चकोर कहँ प्रीति॥
पाहन तरै सोलह जौ बूड़ै, तौ हम मानैं नीति।
सूर स्याम प्रति अंग माधुरी, रही गोपिका जीति॥
॥३८७६॥४४९४॥

राग कल्यान

उत्तर कत न देत अति नीच ?
ग्रीपम तेज सहति क्यौं बेली बढ़ी कमल-कर सींच॥
मुरली अधर-सुधा-रस आनन, दै पोपी दिन रात।
अब ये काम धाम दासी के, सुरति-रीति की बात॥
समुझी, स्याम करी स्वारथ की, रचि गुन कपटी साज।
सूर एक राखत जो नाता, जगत कहत व्रजराज॥
॥३८७७॥४४९५॥

राग आसावरी

सुनि उत्तर किन दै रे मधुकर, बात सखी आनन की ?
निकट रहत यातैं बूझति हौं, कथा चलत कानन की ?
कैसैं वेप रहत मन-मोहन, कौन प्रिया प्रानन की ?
को छवि निरखत वदन-कमल की, कासौं मन मानन की ?
तुम अक्रूर, वसुदेव, देवकी, सभा भरी ज्ञानन की।
क्यौं करि सकै विपय-जल तीरथ, काहु चितै पानन की॥
कहिहौं सबै प्रान नायक सौं, तुम्हरे गुन गानन की।
सूर सुनत फीकौ भयौ जोग जु, गोपी मन ध्यानन की॥
॥३८७८॥४४९६॥

राग सारंग

मधुकर जाहि कह्यौ करि मेरौ।
पीत वसन तन स्याम लाज करि, राखति परदा तेरौ॥
इहिं ब्रज कौं उपदेसन आयौ, कन जु रह्यौ करि डेरौ।
इते मान ये सखी महा सठ, छाँड़तिं नाहीं घेरौ॥

ऐसी बात कहौ तुम तिनसौं, होइ जु कहिबे लायक।
इहाँ जसोदा कुअर हमारे, छिन-छिन प्रति सुखदायक॥
जो तू पुहुप पराग छाँडि कै, करै ग्राम बसि बास।
तौ हम सूर यहौ करि देखैं, निमिष न छाँड़ै पास॥
॥३८७९॥४४९७॥

ऊधौ हमरी सौं तुम जाहु।
यह गोकुल पूनौ को चंदा, तुम ह्वै आए राहु॥
ग्रह के ग्रसे गुसा परगास्यौ, अब लौं करि निरबाहु।
सब रस लै नँदलाल सिधारे, तुम पठए बड साहु॥
जोग बेचि कै तंदुल लीजै, बीच बसेरे खाहु।
सूरदास जबहीं उठि जैहौ, मिटिहै मन कौ दाहु॥
॥३८८०॥४४९८॥

ऊधौ कहत बात ह्वै ढीठ।
मोहन क्यौं न होइँ निरमोही, तुमसे सग बसीठ॥
मधुबन नाम फँदा करि राख्यौ, रचे सकल ठग ईठ।
स्रवन सुनत ऐसौ लागत है, गरल कहत ज्यौं मीठ॥
अति सुकुमारि कूबरी रीझै, मति कोउ लावै दीठ।
सूर स्याम यातैं नहि आवत, समुझि दई ब्रज पीठ॥
।३८८१ ४४९९॥

राग रामकली

ऊधौ मौन साधि रहे।
जोग कहि पछितात मन मन, बहुरि कछु न कहे॥
स्याम कौं यह नहीं बूझै, अनिहि रहे खिसाइ।
कहा मैं कहि-कहि लजानौ, नार रह्यौ नवाइ॥
प्रथम ही कहि बचन एकै, रह्यौ गुरु करि मानि।
सूर प्रभु मोकौं पठायौ, यहै कारन जानि॥
॥३८८२॥४५००॥

राग कल्यान

कहा न कीजै अपने काजैं।
दिन दस ऐसैं हू करि देखौ, जौ हरि मिलैं जोग के साजैं॥

माथैं जटा पहिरि उर कंथा, ल्यावहु भस्म अंग सुख माजैं।
सिंगी दंड मेखला सेली, लोचन मूँदि रहौ बिनु आँजैं॥
सनमुख ह्वै सर सहौ सयानी, नाहिंन बचत आजु के भाजैं।
जोग बिरह के बीच परम दुख, मरियत हैं इहिं दुसह दुराजैं॥
ऊधौ कहैं सत्य करि मानहु, वृथा वदति सजना बेकाजैं।
ज्यौं जमुना-जल छाँड़ि सूर-प्रभु, लीन्हे बसन तजी कुल लाजैं॥
॥३८८३॥४५०१॥

राग सारंग

कहा मति दीन्ही हमहिं गुपाल।
आवहु री सखि सब मिलि सोधैं, जो पावैं नँदलाल॥
घर बाहर तें बोलि लेहु सब, जावदेक ब्रज बाल।
कमलासन बैठहु री माई, मूँदहु नैन बिसाल॥
षटपद कही सोउ करि देखी, हाथ कछू नहिं आई॥
सुंदर स्याम कमल दल लोचन, नैंकु न देत दिखाई॥
फिरि भईं मगन बिरह सागर मैं, काहू सुधि न रही।
पूरन प्रेम देखि गोपिनि कौ मधुकर मौन गही॥
स्रवननि सुनि पुनि धुनि चातक की, प्रान पलटि तन आए।
सूर सु अबकैं टेरि पपीहा, बिरही मरत जिवाए॥
॥३८८४॥४५०२॥

राग सारंग

मधुकर भलें हि आए बीर।
दरस दुर्लभ सुलभ पाए, जानिहौ पर पीर॥
कहत बचन बिचार बिनु बहु, सोधिहौ मन माहिं।
प्रानपति की पीर ऊधौ, है कि हमसौं नाहिं॥
कौन तुमसौं कहै मधुकर, कहत जोग जु नाहिं।
प्रीति की कछु रीति न्यारी, जानिहौ मन माहि॥
नैन नींद न परै निसि-दिन, बिरह दाढ़ी देह।
कठिन निरदै नंद कैं सुत, जोरि तोर्‌यौ नेह॥
कौन तुमसौं कहै मधुकर, गुप्त प्रगटित बात।
सूर के प्रभु क्यौं बनै, जौ करैं अबला घात॥
॥३८८५॥४५०३॥

राग सकराभरन

मधुकर भली करी तुम आए ।
वै बातैं कहि कहि या दुख मैं, ब्रज के लोग हँसाए ॥
मोर मुकुट मुरली पीतांबर, पठवहु सौंज हमारी ।
आपुन जटाजूट, मुद्रा धरि, लीजै भस्म अधारी ॥
कौन काज बृंदावन कौ सुख, दही भात की छाक ।
अब वै स्याम कूबरी दोऊ, बने एक ही ताक ॥
वै प्रभु बडे सखा तुम उनके, जिनकैं सुगम अनीति ।
या जमुना जल कौ सुभाव यह, सूर बिरह की प्रीति ॥

॥३८८६॥४५०४॥

राग पटपदी

ऐसे मधुप की बलि जाउँ ।
मधुबन की बातैं कहीँ, लै लै हरि नाउँ ॥
जाकौ रूप सब्द नीकौ, प्रिय के गुन गावै ।
जद्यपि यह प्रेम-हीन, बहुरौ समुझावै ॥
स्रवन कथा हित हमारैं, सुनि सुनि नित जीजै ।
सूरज प्रभु आवैंगे, इन जान न दीजै ॥

॥३८८७॥४५०५॥

राग सारंग

ऊधौ ते कत चतुर कहावत ।
जे नहिं जानैं पीर पराई, ह्वै सरबज्ञ जनावत ॥
जो पै मीन नीर तैं बिछुरै को करि जतन जिवावत ।
प्यासे प्रान जात जल बिनु, निहिं सुधा-समुद्र बतावत ॥
हम बिरहिनी स्याम सुदर की, तुम निरगुनहि गहावत ।
जोग भोग, रस रोग, सोग सुख, जाने जगत सुनावत ॥
ये दृग मधुप सुमन सब परिहरि, कमल-बदन रस भावत ।
सोवत जगत सुपन रैन-दिन, वह मूरति मन ध्यावत ॥
कहि कहि कपट सँदेसनि मधुकर कत बकवाद बढावत ।
कूर कुटिल कपटी चित अंतर, सूरदास कवि गावत ॥

॥३८८८॥४५०६॥

राग सारंग

मधुकर समुझायौ सौ बेरनि ।
अहो मधुप निसि दिन मरियत है, कान्ह कुँवर औसेरनि ॥
चित चुभि रही मनोहर मूरति, चपल दृगनि की हेरनि ।
तन मन लियौ चुराइ हमारौ, वा मुरली की टेरनि ॥
बिसरति नाहिँ सुभग भुज सोभा, पीतांबर की फेरनि ।
कहत न बनै कान्ह कामरि छबि, बन गैयनि की घेरनि ॥
तुम प्रवीन ह्वै हमहिँ बतावत, आँखि मूँदि भट भेरनि ।
नंदकुमार छाँड़ि को लैहै, जोग दुखनि की घेरनि ॥
जहाँ न परम उदार नंद-सुत, मुकुति परौ किन भेरनि ।
सूर रसिक बिनु क्यौँ जीजतु है, निरगुन कठिन करेरनि ॥
॥३८८९॥४५०७॥

राग बिलावल

काहे कौँ रोकत मारग सूधौ ।
सुनहु मधुप निरगुन कंटक तैँ, राजपंथ क्यौँ रूँधौ ॥
कै तुम सिखि पठए हौ कुबिजा, कह्यौ स्यामघनहूँ धौँ ।
वेद पुरान सुमृति सब ढूँढ़ौ, जुवतिनि जोग कहूँ धौँ ॥
ताकौ कहा परेखौ कीजै, जानै छाँछ न दूधौ ।
सूर मूर अक्रूर गयौ लै, ब्याज निबेरत ऊधौ ॥
॥३८९०॥४५०८॥

राग धनाश्री

तुम तौ अपनैँ ही मुख झूठे ।
निरगुन छबि हरि बिनु क्यौँ पावै, ज्यौँ आँगुरी अँगूठे ॥
निकट रहत पुनि दूरि बतावत, हौ रस माहँ अपूठे ।
द्वै तरंग द्वै नाव पाँव धरि, ते कहि कौन न मूठे ॥
हमकौँ मिले बरष द्वादस, दिन चारिक तुमसौँ तूठे ।
सूर आपने प्राननि खेलैँ, ऊधौ खेलैँ रूँठे ॥
॥३८९१॥४५०९॥

राग मलार

ऊधौ बूझति हैँ अनुमान ।
देखियत नाहिँ जतन जीवे कौ, इतहि बिरह उत ज्ञान ॥

इतहिँ चंद चंदत समीर मिलि, लागत अनल निधान।
उत निरगुन अवलोकन मन कौ, कठिन निरोधन प्रान ॥
इत भूपन भय करत अंग कौ, सब निसि जाहि बिहान।
उत कहुँ सुन्न समाधि कछू नहिँ, गूढ़ जोग कौ ज्ञान ॥
दुसह दुराज नृपति बड़े दोऊ, दुख कौं उभै समान।
को राखै सूरज इहिँ अवसर, कमलनयन बिनु आन ॥

॥३८९२॥४५१०॥

राग सारंग

मधुकर राखि जोग की बात।
कहि कहि कथा स्याम सुंदर की, सीतल करि सब गात ॥
जे निरगुन गुन हीन गनैगौ, सुनि सुंदरि अकुलात।
दीरघ नदी नाव कागर की, किहिँ देख्यौ चढ़ि जात ॥
हम तन हेरि चितै आपनौ पट, देखि पसारहि लात।
सूरजदास बास बन बसि के, कैसैं कल्प बिहात ॥

॥३८९३॥४५११॥

राग मलार

जोग सौं कौनैं हरि पाए।
निज आज्ञा तप कियौ विधाता, कब रस रास खिलाए ॥
जोग-जुगुति संकर आराधी, परम तत्त्व लव लाए।
भुज धरि ग्रीव कबहिं नँद-नंदन, हिलि मिलि कल सुर गाए ॥
बृकदालभ्य महारिषि कबहूँ, तृन छाया न कराए।
बरषत दुखित जानि नँद नंदन, कब गिरिवर कर छाए ॥
अति तप पुंज बिप्र दुर्बासा, दुर्बा तृन नित खाए।
चक्र सुदर्सन तपत महामुनि, कब मुख अनल समाए ॥
बहु तप कियौ मारकंड द्विज, आइ सिंधु भरमाए।
सप्त कल्प बीते कब कहि हरि, बरुन पास मुकराए ?
भक्त बिरह-कातर करुनामय, बेद निरंतर गाए।
को है जोग सुनत ह्याँ ऊधौ, सूरस्याम मन भाए ॥

॥३८९४॥४५१२॥

हमरैं कौन जोग विधि साधै।
बटुआ, झोरी, दंड, अधारी, इतननि को
जाकौ कहूँ थाह नहिं पैयै, अगम अपार
गिरधर लाल छबीले मुख पर, इते बाँध
सुनु मधुकर जिनि सरवस चाख्यौ,क्यौं सचु प
सूरदास मानिक परिहरि कै, छार गाँठि

जिहि तन गोकुलनाथ भज्यौ।
ऊधौ हरि बिछुरत तैं बिरहिनि, सो तन तब
अब या औरै सृष्टि बिरह की, बकत बा
तिनसौं उत्तर कहा देत हौ, तुम तौ पूर
जब स्यंदन चढ़ि गमन कियौ हरि, फिर चितव
तबहीं परम कृतज्ञ प्रान सँग, उठि लागे ति
अब औसान घटत कहि कैसैं, उपजी मन
सूरदास कछु कहत न आवै, कठिन बिरह

(मधुप) बार बार काहे कौं और कथा
प्रभु की परतीति गऐं, नाहिंन कछु
पवन तेज अरु अकास, पृथ्वी अरु
तामैं तैं नंद-नंदन, कहाँ घालि
कमल नयन स्याम सुँदर कोनैं नहि
ताकौं तू गुप्त करै, आनै कछु
सूर नंद-सुत दयाल, लीला-च
निरगुन तैं सगुन भए, संतन हि

कहिऐ तासौं होइ बिबेकी।

ऐसी को ठाली बैठी है, तुमसौं मूड़ मुरावै।
झूठी बात तुसी-सी बिन कन, फटकत हाथ न आवै ॥
ऐसी बात कहौ तुम उनसौं, जो नहिं जानै बूझैं।
सूरदास प्रभु नंद-नँदन बिनु, देखैं और न सूझैं ॥
॥३८९८॥४५१६॥

राग कान्हरौ

ऊधौ निरगुनहिं कहत तुमहीं सो लेहु।
सगुन मूरति नंदनँदन, हमहिं आनि देहु ॥
अगम पथ परम कठिन, गौन तहाँ नाहि।
सनकादिक भूलि फिरे, अबला कहँ जाहि ॥
पंच तत्व प्रकृति परे, अपर कैसैं जानी।
मन बच अरु कर्म रहित, बेदहु की बानी ॥
कहिऐ जो निबहे की, अकथ न कहुँ सोही।
सूर स्याम मुख सुचंद, जुवति नलिनि मोही ॥
॥३८९९॥४५१७॥

राग मलार

ऊधौ सूधैं नैंकु निहारौ।
हम अबलनि कौ सिखवन आए, सुन्यौ सयान तिहारौ ॥
निरगुन कहौ कहा कहियत है, तुम निरगुन अति भारी।
सेवत सुलभ स्याम सुदर कौं, मुक्ति लही हम चारी ॥
हम सालोक्य, सरूप, सायुज्यौ, रहतिं समीप सदाई।
सो तजि कहत और की औरै, तुम अलि बडे अदाई ॥
हम मूरख तुम बडे चतुर हौ, बहुत कहा अब कहिऐ।
वे ही काज फिरत भटकत कत, अब मारग निज गहिये ॥
तुम अज्ञान कतहिं उपदेसत, ज्ञान रूप हमहीं।
निसि दिन ध्यान सूर प्रभु कौ अलि, देखत जित तितहीं ॥
॥३९००॥४५१८॥

राग मलार

ऊधौ कोउ नाहिंन अधिकारी।
लै न जाहु यह जोग आपनौ, कत तुम होत दुखारी ॥

यह तौ वेद उपनिषद मत है, महा पुरुष व्रतधारी।
हम अबला अहीरि ब्रज-वासिनि, नाहीं परत सँभारी॥
को है सुनत कहत हौ कासौं, कौन कथा विस्तारी।
सूर स्याम कैं संग गयौ मन, अहि काँचुली उतारी।

॥३९०१॥४५१९॥

राग केदारौ

ऊधौ राखियै वह बात।
कहत हौ अनगढी अनहद, सुनत ही चपि जात॥
जोग अलि कुषमांड जैसौ, अजा मुख न समात।
वार-वार न भाषियै, कोउ अमृत तजि विष खात?
नैन प्यासे रूप-जल के, दिएँ नाहिं अघात।
सूर-प्रभु मन हर्यौ जब लगि, नाहिँ तन कुसलात॥

॥३९०२॥४५२०॥

राग सारंग

ऊधौ औरे कथा कहौ।
तजिऐ ज्ञान सुनत तावत तन, वरु गहि मौन रहौ॥
रुचि द्रुम प्रीति-रीति नैननि जल सीँचि ध्यान झर लागी।
ताकैं प्रेम फल सुक मन लावत, स्याम सुरँग अनुरागी॥
ग्रीषम अलि आए उपजी ब्रज, कठिन जोग रवि हेरौ।
वन मुरझात सूर को राखै, मेह नेह विनु तेरौ॥

॥३९०३॥४५२१॥

राग सोरठ

कै तुमसौं छूटैं लरि ऊधौ, कै रहियै गहि मौन।
इक हम जरीं, जरे पर जारत, वोलि विगूचै कौन॥
एकै अंग मिले दोउ कारे, काकौ मन पतिआइ।
तुमसौ होइ सो तुमसौं वोलै, लैहै जोगहिँ आइ॥
जा काहू कौं जोग चाहिए, सो लै भस्म लगावै।
जिहिँ उर ध्यान नंदनंदन कौ, तिहिं क्यौं निरगुन भावै॥
कहौ संदेस सूर के प्रभु कौं, यह निरगुन अँधियारौ।
अपनौ वोयौ आप लुनौ तुम, आपे ही निरवारौ॥

॥३९०४॥४५२२॥

राग केदारौ

कहा रस बरियाई की प्रीति।
जौ न गड़ै उर अंतर ऊधो, भुस पर की सी भीति ॥
नैन बैन अरु हृदय मिलत तन, बाढ़त प्रेम प्रतीति।
ए दोउ हंस होत जब सन्मुख, लेत मनहिं मन जीति ॥
ऊधौ यहै सँदेसो कहियो, मधुबन कैसी रीति।
सूरदास सोई जन जानै, गई जिनहिं मैं बीति ॥
॥३९०५॥४५२३॥

राग मलार

जो पै यहै प्रेम की बात।
तौ ऊधौ तुम निकट रहत कत, निरखि साँवरो गात ॥
बात कहत भरि लेत नैन-जल, सुरति करत अकुलात।
जो घट घट हरि रहत निरंतर, कतहिं मधुपुरी जात ॥
सगुन प्रीति ऐसी प्रतिपालत, दुखित होत अति गात।
तुम निरगुन सौं प्रीति करत नित, सूर समुझि पछितात ॥
॥३९०६॥४५२४॥

राग सारंग

मधुकर जनि मधुबन तन देखौ।
कछुक दिवस औरौ ब्रज बसिकै, जनम सुफल करि लेखौ ॥
कहा जाइ लैहौ ह्याँ, जामैं राज काज की बात।
बाल कुमार किसोर निरखि ह्याँ, घर-घर माखन खात ॥
तुम निरगुन नित कहत निरंतर, निगम बखानत नीति।
प्रगट रूप-मद-मत्त नैन क्यौं, छाँडै दरसन प्रीति ॥
सिव बिरंचि सनकादिक मुनि जन, सुनियत जाको ध्यावत।
सूर सोइ प्रभु ग्वाल-सुतनि सँग, गोधन बृंद चरावत ॥
॥३९०७॥४५२५॥

राग मलार

ऊधौ लहनौ अपनौ पैये।
सोइ होइ जो रच्यौ बिधाता, और न दोष लगैये ॥
कीजै कहा कहत नहिं आवै, सोचि हृदै पछितैये।
मोहन सौं बर कुबिजा पायौ, हमकौं जोग बतैये ॥

आज्ञा होइ सोइ पै कीजै, विनती यहै सुनैयै !
सूरदास-प्रभु तृपा बढ़ी अति, दरसन सुधा पियैयै ॥
॥३९०८॥४५२६॥

राग धनाश्री

ऊधौ धनि तुम्हरौ ब्योहार।
धनि वै ठाकुर धनि तुम सेवक, धनि हम वर्तनहार ॥
काटहु अंब बबूर लगावहु, चदन की करि बारि।
हमकौं जोग भोग कुबिजा कौं, ऐसी समुझ तुम्हारि ॥
तुम हरि पढ़े चातुरी विद्या, निपट कपट चटसार।
पकरौ साह चोर कौं छाँड़ो, चुगलनि कौ इतबार ॥
समुझि न परै तिहारी मधुकर, हम ब्रज नारि गँवार।
सूरदास ऐसी क्यौं निबहै, अंध धुंध सरकार ॥
॥३९०९॥४५२७॥

राग केदारौ

(ऊधौ) खरी जरी हरि-सूलनि की।
कुंज कलोल किए बन ही बन, सुधि बिसरी उन फूलनि की ॥
तब हौं आनि अंक भरि लीन्ही, देखि छाँहँ नव मूलनि की।
अब वह प्रीति कहाँ लौं बरनौं, वा जमुना-जल कूलनि की ॥
वह छवि छाके हैं अति लोचन, बाहँ गहि-गहि झूलनि की।
खरकति है वह सूर हिये मैं, माल दई मोहिं फूलनि की ॥
॥३९१०॥४५२८॥

राग सारंग

हरि बिनु इहिं बिधि है ब्रज रहियतु।
पर पीरहि तुम जानत ऊधौ, तातैं तुमसौं कहियतु ॥
चंदन चंद-किरनि पावक सम, इन मिलि कै तन दहियतु।
रजनी जाति गनत ही तारे, जतन नहीं निरबहियत ॥
बासर हू या बिरह-सिंधु कौं, क्यौंहू पार न लहियत।
फिरि फिरि वहै अवधि है अवलंबन, बूड़त ज्यौं तृन गहियत ॥
एक जु हरि दरसन की आसा, ता लगि यह दुख सहियत।
मन क्रम बचन सपथ सुनि सूरज, और नहीं कछु चहियत ॥
॥३९११॥४५२९॥

राग सारंग

हरि बिनु ऐसी बिधि ब्रज जीजै।
कज्जल बरषि-बरषि उर ऊपर, सारँग रिपु जल भीजै॥
तारापति-अरि के सिर ठाढ़ी, निमिष चैन नहिँ कीजै।
बायस-अजा सब्द की मिलवनि, यहीं दुख तन छीजै॥
चौथैं चंद जात गोपिनि कौं, मधुप राखि जस लीजै।
सूरदास प्रभु बेगि कृपा करि, प्रगट दरस हम दीजै॥

॥३९१२॥४५३०॥

राग सारंग

हमारे जीवन धन कृष्ण मुकुंद।
परम उदार कृपानिधि कोमल, पूरन परमानंद॥
निठुर बचन सुनि फटत हियौ यह, रहि रे अलि मति मंद।
ब्रज-जुवतिनि कौं सुगम जनावत जोग जुगुति दुख दंद॥
यह तौ जाइ उनहिं उपदेसहु, सनकादिक स्वच्छंद।
बारक हमैं दरस दिखरावहु, सूर स्याम नंदनंद॥

॥३९१३॥४५३१॥

राग सारंग

वे बातैं जमुना तीर की।
कबहुँक सुरति करत हैं मधुकर, हरन हमारे चीर की॥
लीन्हे बसन देखि ऊँचे द्रुम, रबकि चढ़न बलबीर की।
देखि-देखि सब सखी पुकारतिं, अधिक जुड़ाई नीर की॥
दोऊ हाथ जोरि करि माँगैं ध्वाई नंद अहीर की।
सूरदास प्रभु सब सुख-दाता, जानत हैं पर पीर की॥

॥३९१४॥४५३२॥

राग धनाश्री

अब हरि क्यौं बसैं, गोकुल गवई।
बसत नगर नागर लोगनि मैं, नइ पहिचानि भई॥
इक हरि चतुर हुते पहिलैं हीं, अब उन गुन सिखई।
हम सब गर्व गँवारि जानि जड़, अवसर छाँड़ि दई॥

ऊधौ मुख जोवत कुबिजा कौ, हम सब बिसरि गईं।
याहि तैं चतुर सुजान सूर-प्रभु, ग्वाली संग न लईं॥

॥३९१५॥४५३३॥

राग गौरी

प्रेम न रुकत हमारे बूतैं।
किहिं गयंद बाँध्यौ सुनि मधुकर, पदुम नाल के काँचे सूतैं?
सोवत मनसिज आनि जगायौ, पठै सँदेस स्याम के दूतैं।
बिरह-समुद्र सुखाइ कौन बिधि, रंचक जोग अगिनि के लूतैं॥
सुफलक सुत और तुम दोऊ मिलि, लीजै मुकुति हमारे हूतैं।
चाहतिँ मिलन सूर के प्रभु कौं, क्यौं पतियाहिँ तुम्हारे धूतैं॥

॥३९१६॥४५३४॥

राग धनाश्री

यह कछु नाहिँ नेह नयौ।
मधुप माधौ सौं जु इहिं ब्रज, बिधि तैं प्रथम भयौ॥
बीज मन, माली मदन, उर आलबाल बयौ।
प्रेम-पय सींच्यौ अहर-निसि, सुभ जवारि जयौ॥
इते स्रम तन स्यामसुंदर, बिमल बृच्छ बढ़्यौ।
मुरलि मुख छबि पत्र साखा, दृग द्विरेफ चढ़्यौ॥
कमल तजि तन रुचत नाहीं, आक कौ आमोद।
सूर जोग न बचन परसहि, बिनु गुपाल बिनोद॥

॥३९१७॥४५३५॥

राग मलार

ऊधौ अब हम समुझि भई।
नंदनँदन के अंग-अंग-प्रति, उपमा न्याय दई॥
कुंतल कुटिल भँवर भामिनि वर, मालति भुरै लई।
तजत न गहरु कियौ तन कपटी, जातैं निरस भई॥
आनन इंदु बिमुख संपुट तजि, करषे तैं न नई।
निर्मोही नव नेह कुमुदिनी, अंतहु हेम हई॥
तन-घन सजल सेइ निसि-बासर, रटि रसना छिजई।
सूर बिवेक-हीन चातक मुख, बूँदौ तौ न सई॥

॥३९१८॥४५३६॥

राग सारंग

ऐसौ एक कोद कौ हेत ।
जैसें बसन कुसुम रँग मिलि कै नैंकु चटक पुनि सेत ॥
जैसें करनि किसान बापुरो, नव नव बाहैं खेत ।
एतेहूँ पर नीर निठुर भयौ, उमँगि आपु ही लेत ॥
सब गोपी पूछहिं ऊधौ सौं, सुनियौ बात सचेत ।
सूरदास-प्रभु जन तैं बिछुरे, ज्यौं कृत गाइ रेत ॥
॥३९१९॥४५३७॥

राग सारंग

मुख देखे की कौन मिताई ।
जैसें कृपनहि दान माँगनो, लालच कीन्हे करत बड़ाई ॥
प्रीतम सो जो रहै एक रस, निसि बासर बढ़ि प्रेम सवाई ।
चित मैं और कपट अतरगति, ज्यौं फल खीर नीर चिकनाई ॥
तब वह करी नदनंदन अलि, बन बोली रस रास खिलाई ।
अब यह केतिक दूरि मधुपुरी, ज्यौं उडि मधुप बेलि तजि जाई ॥
जोग सिखाए क्यौं मन मानै, क्यौं जु ओस कन प्यास बुझाई ।
सूरजदास उदास भईं हम, पाषँड प्रीति उघरि सब आई ॥
॥३९२०॥४५३८॥

राग मलार

मधुकर मन सुनि जोग डरै ।
तुमहुँ चतुर कहावत अतिहीं, इतौ न समुझि परै ॥
औरौ सुमन अनेक सुगंधित, शीतल रुचि जु करै ।
क्यौं तुमकौं अलि बिना सरोजहि, उर अंतर न अरै ॥
दिनकर महा प्रताप पुंज बल, सबको तेज हरै ।
क्यौं न चकोर छाँडि मृग-अंकहिं, वाकौ ध्यान धरै ॥
उलटोइ ज्ञान सकल उपदेसत, सुनि-सुनि हृदै जरै ।
जंबू वृच्छ कहौ क्यौं लंपट, फल बर अंब करै ॥
मुक्ता अवधि मराल प्रान मम, जौं लगि ताहि चरै ।
निघटैं निरट सूर ज्यौं जल बिनु, व्याकुल मीन मरै ॥
॥३९२१॥४५३९॥

राग सारंग

ऊधौ सुनहु नैकु जो बात।
अबलनि कौं तुम जोग सिखावत, कहत नहीं पछितात॥
ज्यौं ससि बिना मलीन कुमुदिनी, रवि बिनुहीं जलजात।
त्यौं हम कमलनैन बिनु देखे, तलफि-तलफि मुरझात॥
जिन स्रवननि मुरली सुर अँचयौ. मुद्रा सुनत डरात।
जिन अधरनि अमृत फल चाख्यौ, ते क्यौं कटु फल खात॥
कुंकुम चंदन घसि तन लावतिं, तिहिं न बिभूति सुहात।
सूरदास प्रभु बिनु हम यौं हैं, ज्यौं तरु जीरन पात॥
॥३६२२॥४५४०॥

राग धनाश्री

ऊधौ जोग जोगहिं देहु।
हम अबुधि कह जोग जानैं, सपथ हमसौं लेहु॥
चद उदय चकोर चाहै, मोर चाहै मेहु।
हमहुँ चाहिं मदन मूरति, स्याम संग सनेहु॥
दंड मुद्रा भसम कंथा, को करै बन गेहु।
लाइ. चंदन अगर केसर, क्यौं चढ़ावैं खेहु॥
स्याम गात सरोज आनन, करत पावक येहु।
सूर अब तौ दरस दुर्लभ, रह्यौ बचन सनेहु॥
॥३६२३॥४५४१॥

राग आसावरी

ऊधौ जोग जोग हम नाहीं।
अबला सार-ज्ञान कह जानैं, कैसैं ध्यान धराहीं॥
तेई मूँदन नैन कहत हौ, हरि मूरति जिन माहीं।
ऐसी कथा कपट की मधुकर, हमतैं सुनी न जाहीं॥
स्रवन चीरि सिर जटा बँधावहु, ये दुख कौन समाहीं।
चंदन तजि अँग भस्म बतावत, बिरह-अनल अति दाहीं॥
जोगी भ्रमत जाहि लगि भूले, सो तौ है अप माहीं।
सूर स्याम तैं न्यारी न पल छिन, ज्यौं घट तैं परछाहीं॥
॥३६२४॥४५४२॥

राग मलार

ऊधौ कहियै बात सोहती ।
जाहि ज्ञान सिखवन तुम आए, को कहि ब्रज मैं को हती ॥
अतहुँ सिख तुम सुनहु हमारी, कहियत बात विचारि ।
फुरत न बचन कछू कहिवे कौं, रहे सोचि पचि हारि ॥
देखियत हौ करुना की मूरति, सुनियत हौ पर पीरक ।
सोइ करौ ज्यौं मिटै हृदै कौ दाहु, परै उर सीरक ॥
राजपथ तैं टारि बतावत, ऊजर कुचल कुपैंड़ो ।
सूरदास सो समाइ कहाँ लौं, छेरी बदन कुम्हैंडो ॥
॥३९२५॥४५४३॥

मधुकर निरगुन ज्ञान तिहारो ।
तीच्छन तेज तपस्या यामैं, का पै जात जु धारो ।
हम अबला मति की सब भोरी, सहज गुपाल उपासी ॥
मन रमि रही मनोहर मूरति, को सुमिरै अविनासी ॥
मन मैं मोहन रूप विराजत, हृदय मनोहर मूरति ।
न्यारी होति न चित तैं कबहूँ, छिन पल घरी महूरति ॥
अंग-अंग छवि बसी साँवरी, खाली ठौर न कोऊ ।
जो कहुँ ठौर जोग को होतौ, लै धरतीं हम सोऊ ॥
खेलत सौंह करी नँदनंदन, हमसौं कछु न दुरायौ ।
निसि दिन रह्यौ समीप हमारैं, जोग मंत्र कहँ पायौ ॥
रस की रीति साँवरौ बूझै, बिरह जोग नहिं जानै ।
परमारथ की बात सुनै नहिं, छुवत प्रेम की खानै ॥
उन पापी हमहीं को पठयो, अनत नहीं सुख बाँटो ।
सूरदास प्रभु सीख बतावैं, सहद लाइ कै चाटो ॥
॥३९२६॥४५४४॥

राग सारंग

हम तौ नंद-घोष के बासी ।
नाम गुपाल जाति कुल गोपक, गोप गुपाल उपासी ॥
गिरिवर धारी गोधन चारी, वृंदावन अभिलाषी ।
राजा नंद जसोदा रानी, सजल नदी जमुना सी ॥

मीत हमारे परम मनोहर, कमलनैन सुख-रासी।
सूरदास-प्रभु कहौं कहाँ लौं, अष्ट महा-सिधि दासी॥
॥३९२७॥४५४५॥

राग सारंग

यह गोकुल गोपाल-उपासी।
जे गाहक निरगुन के ऊधौ, ते सब बसत ईस-पुर कासी॥
जद्यपि हरि हम तजीं अनाथ करि, तदपि रहतिं चरननि रस-रासी।
अपनी सीतलता नहिं छाँड़त, जद्यपि बिधु भयौ राहु-गरासी॥
किहिं अपराध जोग लिखि पठवत, प्रेम-भगति तैं करत उदासी।
सूरदास ऐसी को बिरहिनि, माँगि मुक्ति छाँडै गुन-रासी॥
॥३९२८॥४५४६॥

राग मलार

ब्रज जन सकल स्याम ब्रत-धारी।
बिना गुपाल और जिहिं भावै, तिहिं कहियै ब्यभिचारी॥
जोग मोट सिर बोझ आनि तुम, कत धौं घोष उतारी।
इतनिक दूरि जाहु चलि कासी, जहाँ बिकति है प्यारी॥
यह सँदेस सुनै को मधुकर, प्रीति अनन्य हमारी।
जो रस-रीति करी हरि हमसौं, सो क्यौं जाति बिसारी॥
महा मुक्ति काऊ नहिं बूझै, जदपि पदारथ चारी।
सूरदास-स्वामी मनमोहन मूरति की बलिहारी॥
॥३९२९ ४५४७॥

ऊधौ अब कोउ कछू कहौ।
जैसैं होइ सु होइ सबै किन, हरि की प्रीति रहौ॥
जप तप संजम नेम धरम की नदिया जाइ बहौ।
जोग जुगुति किहिं काज हमारैं, आपुहिं लै निबहौ॥
इक हम जरतिं बिरह की जारी, तुम कत दहन दहौ।
सूरदास-प्रभु नैंकु मिलावहु, जग मैं सुजस लहौ॥
॥३९३०॥४५४८॥

राग धनाश्री

कहँ लौं कीजै बहुत बड़ाई।
अति अगाध स्त्रुति बचन अगोचर, मनसा तहाँ न जाई॥

जाकैं रूप न रेख बरन बपु, संग न सखा सहाई।
ता निरगुन सौं नेह निरंतर, क्यौं निबहै री माई॥
जल बिनु तरँग चित्र बिनु भीतिहिं, बिनु चेतहिं चतुराई।
अब या ब्रज मैं नई रीति, इन ऊधौ आनि चलाई॥
मन हरि लियौ माधुरी मूरति, रोम-रोम अरुझाई।
स्याम सुभग तन सुंदर लोचन, सूर निरखि बलि जाई॥
॥३९३१॥४५४९॥

राग नट

ऊधौ कछुक समुझि परी।
तुम जु हमकौं जोग ल्याये, भली करनी करी॥
इक बिरह जरि रहीं हरि कैं, सुनत अतिहिं जरीं।
जाहु, जनि अब लोन लावहु, देखि तुमहिं डरीं॥
जोग पाती दई तुमकौं, बड़े चतुर हरी।
आनि आस निरास कीन्ही, सूर सुनि हहरी॥
॥३९३२॥४५५०॥

राग कान्हरौ

कहत अलि तेरैं मुख बातौ।
कमलनैन की कपट कहानी, सुनत भयौ तन तातौ॥
कत ब्रजराज काज गोकुल के, सबै किए गहि नातौ।
तब नहिं निमिष बियोग सहत उर, करत काम नहिं हातौ॥
मधुबन जाइ कान्ह कुबिजा सँग, मति भूली सुधि सातौ।
ज्यौं गज जूथ नैंकु नहिं बिछुरत, सूर मदन मदमातौ॥
॥३९३३॥४५५१॥

राग सारंग

दिन-दिन तोरन लागे नातौ।
मधुबन बसि गोपाल पियारे, प्रेम कियौ हठि हातौ॥
सीतलता उर कहूँ न दीसति, सब ब्रज लागत तातौ।
नंदलाल गोकुल आवन की, चालत नाहिन बातौ॥
पहिली प्रीति कितै गइ सजनी, मन न रहत बहरातौ।
सूरदास प्रभु के बिछुरे तैं, भूलि गईं सुधि सातौ॥
॥३९३४॥४५५२॥

मधुकर सुनि मोहन कौ नातौ।
राखि समीप सदा सुख दीन्हौ, अब हमसौं कियौ हातौ ॥
ज्यौं चातक ब्रत नेम धारि कै, जल बरषत रहै प्यासौ।
जाइ नहीं सर दूजे क्यौंहूँ, स्वाति बूँद की आसौ ॥
ज्यौं पतंग तन मन धन अरपै, प्रेम सहित मरि जानै।
नैंकु न प्रीति धरै चित अंतर, दीपक दया न आनै ॥
जासौं हित ताकी गति ऐसी, यह अँदेस मन माहीं।
सूरदास हरि प्रान हमारे, हरि की हम कछु नाहीं ॥
॥३९३५॥४५५३॥

राग धनाश्री

तुम अलि कमलनैन के साथी।
देखत भले, काज के औसर होत धूम के हाथी ॥
सुंदर स्याम गंड मदऽलंकृत, श्रम-जल-कन छबि छाजै।
जोग ज्ञान दोउ दसन भोग रद, करिनी कुंभ बिराजै ॥
जब सिसु हते कुमार असुर हति, यातैं प्रीतम जाने।
अब भए जाइ बिबस दासी के, ब्रज तैं प्रगट पराने ॥
करि कै कपट तुच्छ बिद्या बस, भ्रम करत अँग भट ज्यौं।
सूर अवधि पढ़ि मंत्र सजीवन, मारि जियावत नट ज्यौं ॥
॥३९३६॥४५५४॥

राग सारग

ऐसौ सुनियत द्वै बैसाख।
देखति नहीं ब्यौंत जीवे कौ, जतन करौ कोउ लाख ॥
मृगमद मलय कपूर कुमकुमा, केसर मलियै साख।
जरत अगिनि मैं ज्यौं घृत नायौ, तन जरि ह्वै है राख ॥
ता ऊपर लिखि जोग पठावत, खाहु नीम तजि दाख।
सूरदास ऊधौ की बतियाँ, सब उड़ि बैठीं ताख ॥
॥३९३७॥४५५५॥

राग नट

जानी ऊधौ की चतुराई।
बार बार तुम कहत अध्यातम, पावत कौन बड़ाई ॥

जौ तुम कहत अगाध अगोचर, हरि रस तज्यौ न जाई।
कै तुम कहत उक्ति अपनी तैं, कै तुम कहत कहाई॥
बाहर भीतर ध्यान सगुन बिनु, सुनिअत दूरि भलाई।
सूरदास-प्रभु बिरह जरी हैं, बिनु पावक दव लाई॥
॥३९३८॥४५५६॥

राग सारंग

जानी ऊधौ की चतुराई।
ब्रजमंडल की दसा देखि कै, कथा न वै बिसराई॥
परम प्रिया पथ देखन पठए, कहि गति जोग बनाई।
इनकौं आन भाव बिछुरन कौ, लै बातनि हम लाई॥
कहा कह्यौ हरि कहा सुन्यौ, इन, कह लीला मुख गाई।
जद्यपि बिबुध बड़े जदुकुल के, नैंकु न बड़ी बड़ाई॥
गुन महिमत सदा श्रीपति के, मुक्ति पुरी अवगाई।
नहिं देखी ब्रज बन की लीला, सूर स्याम लरिकाई॥
॥३९३९॥४५५७॥

राग सारंग

मधुकर बात तिहारी जानी।
पालागौं मुख मौन गहौ अब, कटुक लगति है बानी॥
जो पै स्याम रहत घट, तौ कत बिरह बिथा न परानी।
झूठी बातनि क्यौं मन मानत, चल मति अलप गिआनी॥
जोग जुगुति की नीति अगम, हम ब्रजबासिनि कह जानैं।
सिखवहु जाइ जहाँ नटनागर, रहत प्रेम लपटाने॥
दासी घेरि रहे हरि तुम ह्याँ, गढ़ि-गढ़ि कहत बनाई।
निपट निलज्ज अजहुँ न चलत उठि, कहत सूर समुझाई॥
॥३९४०॥४५५८॥

राग नट

ऊधौ जानि पर्‌यौ सयान।
नारियनि कौं जोग लाए, भले जान सुजान॥
निगम नहिं जिहिं पार पायौ, कहत सोई ज्ञान।
नैन त्रिकुटी जोरि संगम, जिहिं करत अनुमान॥

पवन धरि रवि तन निहारत, मनहिं राखत मारि।
सूर सो मन हाथ नाहीं, गयौ संग बिसारि॥
॥३९४१॥४५५९॥

राग मलार

इहिं बिधि पावस सदा हमारैं।
पूरब पवन स्वास उर ऊरध, आनि मिले इकठारैं॥
बादर स्याम सेत नैननि मैं, बरषि आँसु जल ढारैं।
अरुन प्रकास पलक दुति दामिनि, गरजनि नाम पियारैं॥
चातक दादुर मोर प्रकट ब्रज, बसत निरंतर धारैं।
ऊधव ये तब तैं अटके ब्रज, स्याम रहे हित टारैं॥
कहिऐ काहि सुनै कत कोऊ, या ब्रज के ब्यौहारैं।
तुमही सौं कहि-कहि पछितानी, सूर बिरह के धारैं॥
॥२९४२॥४५६०॥

राग केदारौ

जौ पै कोउ मधुबन लौं जाइ।
पतिया लिखी स्याम सुंदर कौं, कंकन देहौं ताइ॥
नैन-नीर सारग रिपु भींजत, जुग सम रैनि बिहाइ।
अब यह भवन भयौ पावक सम, हरि बिनु मोहि न सुहाइ॥
पछिली प्रीति कहा भइ ऊधौ, मिलते बेनु बजाइ।
सूरदास-प्रभु प्रान गए तैं कहा करोगे आइ॥
॥२९४३॥४५६१॥

राग बिहागरौ

वै गोपाल कहाँ गए मेरे मन के चोर।
जौ कोउ उनसौं सुधि कहै, देऊँ प्रान अकोर॥
छिन आँगन छिन भवन मैं, छिन मीड़ौं हौं हाथ।
बिरह बिथा तन अधिक है, मोहीं कछु न सुहात॥
वेइ द्रुम वेली वेइ लता, वेई हैं सब अंग।
एक लाल गिरिधर बिना, फीके भए सब रंग॥
बास गई, सोभा गई, अरु कुम्हिलाने फूल।
सूरदास प्रभु तुम बिना, उकठे सब जर मूल॥
॥२९४४॥४५६२॥

राग गूजरी

तुम जु दयाल दयानिधि कहियत, जानत हो पर पीर।
बिछुरे प्रान-नाथ ब्रज ऐहैं, कित हम कित जदुबीर॥
मत अपजस आनौ सिर अपने, कठिन मदन की पीर।
सूरदास प्रभु मिलन कहत हे, रबि तनया के तीर॥
॥३९४५॥४५६३॥

राग बिलावल

ऊधौ कोकिल कूजत कानन।
तुम हमकौं उपदेस करत हौ, भस्म लगावन आनन॥
औरौ सिखी सखा सँग लै लै, टेरत चले पखानन।
बहुरौ आइ पपीहा कैं मिस, मदन हनत निज बानन॥
हमतौ निपट अहीरि बावरी, जोग दीजिऐ जानन।
कहा कथत मासी के आगैं जानत नानी नानन॥
तुम तौ हमैं सिखावन आए, जोग होइ निरबानन।
सूर मुक्ति कैसैं पूजति है, वा मुरली के तानन॥
॥३९४६॥४५६४॥

राग सारंग

ऊधौ हरि के औरै ढंग
जहँ न अनँग-रस रूप नेह कौ, तहँ दइ गति जु अनंग॥
जो अनंग बपु, असुर दासिका, सो भइ नूतन अंग।
आपु बिषमता तजि दोऊ सम, बानक ललित त्रिभंग॥
मनौ मरीचि देखि तन भूल्यौ, भू पथ सुरभि कुरंग।
तजि कुसुमाकर कटक बन भ्रमि, नहिं कीन्हौ भ्रूभंग॥
कनक बेलि सत दल सिर मंडित, द्रुढ़ तर लता लवंग।
स्याम-सदन बिसारि भजे पुर, चंचल नारि पतंग॥
ते सुख बहुत बहुत पावैंगे, जे करिहैं अंग मंग।
काके होहि जो नहि गोकुल के, सूरज-प्रभु श्रीरंग॥
॥३९४७॥४५६५॥

राग आसावरी

ऊधौ हम दोउ कठिन परीं।
जौ जीवैं तौ मुनि जड ज्ञानी, तन तजि रूप हरीं॥

गुन गावैं तौ सुक सनकादिक, लीला धाइ फिरी।
आसा अवधि बिचारि रहैं तौ, धरम न ब्रज सुँदरी॥
सखी मण्डली सब जु सयानी, बिरहा प्रेम भरी।
सोक सिंधु तरिबे कौं नौका, जे मुख मुरलि-धरी॥
निसि बासर अति रहत निरंकुस, मातौ मदन करी।
ढाहैगौ सब धाम सूर जो, चितै न हरि केसरी॥
॥३९४८॥४५६६॥

राग केदारौ

ऊधौ बात सुनौ इक नैसी।
प्रेम-बान की चोट कठिन है, लागी होइ कहौ कत ऐसी॥
तुमकौं खोरि कहा कहि दीजै, आनि कहत हौ बातैं जैसी।
जानै कहा बाँझ ब्यावर दुख, जातक जनै न पीर है कैसी॥
हम बावरी आनि बौरावत, कहत न तुम्हैं बूझियै ऐसी।
सूरजदास न्याइ कुबिजा कौं, सरबस लेइ हमारौ वैसी॥
॥३९४९॥४५६७॥

राग सोरठ

जाकैं लागी होइ सु जानै।
हौं कासौं समुझाइ कहतिं हौं, मधुकर लोग सयाने॥
बन कुसुमावलि देखि बसत हौ, नित्य सदा रस-भोगी।
भली बुरी कछु समुझत नाहीं, अनदेखे के जोगी॥
बूझौ जाइ जिनहिं तुम पठए, को यह पीर सँहारी।
कीजै कहा होइ जौ ऐसी, चंद चकोरहिं जारी॥
तुम बड़े लोग बड़े के संगी, भाग बड़े गृह आए।
कीजै कृपा दास सूरज कौं, जो जदुनाथ पठाए॥
॥३९५०॥४५६८॥

जासौं लगन लागी होइ।
कठिन पीर सरीर ब्यापै, जानिहै पै सोइ॥
बिरह बाइ धतूर बिरवा, गए हैं हरि बोइ।
रटत अंग अनंग चिनगी, दृगनि सींचौ रोइ॥

मधुप हरि सौं जाइ कहियौ, मति बिसारैं मोंइ।
सूर जैसैं मीन जल बिनु, गति हमारी सोइ॥
॥३९५१॥४५६९॥

राग केदारौ

ऊधौ उदित भए दुख तरनि।
ब्रज बेली सब सूखन लागीं, गात कही नँद-घरनि॥
कुमुद-बदन कुम्हिलात सबनि के, गइयनि छाँडी चरनि।
सुख संपति बिति गई सबनि की, अँखियनि लागी झरनि॥
देखैं चारु चंद मुख सीतल, बिन क्यौं मिटिहै जरनि।
सुत सनेह सूरज-प्रभु जसुमति, परति जु फिरि फिरि धरनि॥
॥३९५२॥४५७०॥

राग मारग

(ऊधौ) पूछति हैं ते बावरी।
गोकुल तज्यौ कूबरी कारन, नेह न होत जो रावरी॥
जैसौ बैयै तैसोइ लुनियै, काहें करत दुरावरी।
ज्यौं गजराज काज के औसर, औरै दसन दिखावरी॥
वै तौ कुबिजा असुर की दासी, हम जु सुहागिल रावरी।
सूरदास प्रभु पारस परसैं, लोहौ कनक बराबरी॥
॥३९५३॥४५७१॥

हरि जू सुनियत मधुबन छाए।
संग लिएँ कुबिजा दुलहिनि कौं, करत फिरत मन भाए॥
भोग भुगति दासी कौं दीन्हौ, अरु सृंगार सुहाए।
हमकौं जोग जगुति लिखि मोहन, मधुकर हाथ पठाए॥
कहा करैं कित जाहिं सखी री, प्रीतम भए पराए।
सूर निठुर निरमोही कहा कियौ, फिरि नहिं गोकुल आए॥
॥३९५४॥४५७२॥

राग गौरी

मधुकर देखौ दीन दसा।
इती बात तुमसौं कहियत है, जौ तुम स्याम सखा॥
जे कारे ते सबै कुटिल हैं, मृतकनि के जो हता।
तुम बिरहिनी बिरह दुख जानत, कहियौ गूढ़ कथा॥

मन बस भयौ स्त्रवन सुनि मुरली, कुंज निकुंज बसा।
अब तौ एक न भए सूर-प्रभु, घर बन लोग हँसा॥
॥३९५५॥४५७३॥

राग सारंग

जैसौ कियौ तुम्हारैं प्रभु अलि, तैसौ भयौ ततकाल।
ग्रंथित सूत धरत तिहिं ग्रीवा, जिहिं धरते बनमाल॥
टेर देत श्रीदामा द्रुम चढ़ि, सरस बचन गोपाल।
ते अब स्त्रवन अक्रूर प्रमुख सब कहत कंस-कुल साल॥
कोमल नील कुटिल अलकावलि, रेखा राजति भाल।
तहँ अब लगत धूम बेदी कौ, पूजा भस्म कपाल॥
जहँ मनि काँकर, सुधा, सरस-जल, सत-दल कमल बिसाल
ऐसे सर लागैं सुनि सूरज, फंदा न्याइ मराल।
॥३९५६॥४५७४॥

राग मलार

बिरचि मन बहुरि राँचौ आइ।
टूटी जुरै बहुत जतननि करि, तऊ दोष नहिं जाइ॥
कपट हेत की प्रीति निरंतर, नाथि चुपाई गाइ।
दूध फाटि जैसैं ह्वै काँजी, कौन स्वाद करि खाइ॥
केरा पास जु बैरि निरंतर, हालत दुख दै जाइ।
स्वाति बूँद ज्यौं परै फनिक-मुख, परत बिषै ह्वै जाइ॥
एती केती तुम जो इनकी, कहत बनाइ बनाइ।
सूरजदास दिगंबरपुर तैं, रजक कहा ब्यौसाइ॥
॥३९५७॥४५७५॥

राग धनाश्री

ऊधौ तुम हौ अति बड़ भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी॥
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी॥
प्रीति नदी मैं पाउँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
सूरदास अबला हम भोरी, गुर चींटी ज्यौं पागी॥
॥३९५८॥४५७६॥

राग धनाश्री

हमतैं हरि कबहूँ न उदास।
रास खिलाइ पिलाइ अधर रस, क्यौं बिसरत ब्रज बास॥
तुमसौं प्रेम कथा कौ कहिबौ, मनौ काटिबौ घास।
बहिरौ तान स्वाद कह जानै, गूँगौ बात मिठास॥
सुनि री सखी बहुरि हरि ऐहैं, वह सुख वहै बिलास।
सूरदास ऊधौ अब हमकौं, भए तेरहौं मास॥
॥३६५९॥४५७७॥

राग धनाश्री

तेरौ बुरौ न कोऊ मानै।
रस की बात मधुप नीरस सुनि, रसिक होइ सो जानै॥
दादुर बसै निकट कमलनि के, जनम न रस पहिचानै।
अलि अनुराग उडत मन बाँध्यौ, घेर सुनत नहि कानै॥
सरिता चली मिलन सागर कौं, कूल सबै द्रुम भानै।
कायर बकै लोह तैं भागै, लरै सो सूर बखानै॥
॥३६६०॥४५७८॥

राग धनाश्री

हम सब जानति हरि की घातैं॥
तुम जु कहत वै राज करत नहिं, जानत हौ कछु कातैं॥
मारे कंस सुरनि सुख दीन्हौ, असुर जरे सिर-पातैं।
उग्रसेन बैठारि सिंहासन, लोग कहत कुल नातैं॥
तप तैं राज, राज तैं आगे, तुम सब समुझत बातैं।
सूर स्याम इहिं भाँति सयाने, हमसौं मिलवत सातैं॥
॥३९६१॥४५७९॥

राग धनाश्री

जान्यौ नंद-सुवन कौ हेत।
राजनीति की रीति सुनौ हो, चरत बारि चर खेत॥
जिनके संग बिहार किए, ते जोग सँदेसौ देत।
इन बातनि सोई पै भूलै, जाके मन नहिं चेत॥

रीझे जाइ कंस-दासी पर, सुधि ब्रजवधू न लेत।
सूरदास मनि-भूषन ऊपर, संख धरत हैं सेत॥
॥३९६२॥४५८०॥

राग नट

ऊधौ है तू हरि के हित कौ।
हम निरगुन तबही तैं जान्यौ, गुन मेट्यौ जब पितु कौ॥
समुझहु नैकु स्रवन दै सुनियै, प्रगट षखानौ नित कौ।
कूप रतन-घट कहि क्यों निकसै, बिनु गुन बहुतै बित कौ॥
पूरनता तौ तबहीं बूड़ी, संग गए लै चित कौ।
हम तौ खिझहिं सूर सुनि षट्पद, लोग बटाऊ हित कौ॥
॥३९६३॥४५८१॥

मधुकर अनरुचि कैसे गावे।
चौपद होइ ताहि समुझैये, षटपद को समुझावै॥
मुख औरै अंतरगति औरै, औरै ज्ञान दृढ़ावै।
दारु काटि अलि सदन संचरै, सतपत्रहिं न सतावै।
ल्याये जोग वे चिबे कारन, ब्रज मैं नाहिं बिकावै।
सूरदास ऐसो को गाहक, लै सिवपुरी पठावै॥
॥३९६४॥४५८२॥

राग काफी

आयौ घोष बड़ो ब्योपारी।
खेप लादि गुरु ज्ञान जोग की, ब्रज मैं आनि उतारी॥
फाटक दै कै हाटक माँगत, भोरी निपट सुधारी।
धुरही तैं खोटो खायो है, लिये फिरत सिर भारी॥
इनकैं कहे कौन डहकावे, ऐसी कौन अनारी।
अपनो दूध छाँड़ि को पीवै, खारे कूप को वारी॥
ऊधो जाहु सवारें ह्याँ त, वेगि गहरु जनि लावहु।
मुख मागो पैहो सूरज-प्रभु, साहुहिं आनि दिखावहु॥
॥३९६५॥४५८३॥

राग धनाश्री

ऊधो जोग कहा है कीजतु।
ओढ़ियत है कि बिछैयत है, किधौं खैयत है किधौं पीजत॥

कीधौं कछू खिलौना सुंदर, की कछु भूषन नीको।
हमरे नंद-नँदन जो चहियतु, मोहन जीवन जी को॥
तुम जु कहत हरि निगुन निरंतर, निगम नेति है रीति।
प्रगट रूप की रासि मनोहर, क्यों छाँड़ै परतीति॥
गाइ चरावन गए घोष तैं, अबहीं हैं फिरि आवन।
सोई सूर सहाइ हमारे, बेनु रसाल बजावन॥
॥३९६६॥४५८४॥

राग मलार

ऊधौ जान्यो ज्ञान तिहारौ।
जानै कहा राजगति लीला, अंत अहीर बिचारौ॥
भली भई हम सबै अयानी, स्यानी सौं मन मान्यौ।
लाज लए प्रभु आवत नाहीं, ह्वै जु रहे खिसियानौ॥
लै आवौ हम कछू न कैहैं, मिलिहैं प्रान पियारे।
ब्याहौ बीस धरौ दस कुबिजा अंतहुँ स्याम हमारे॥
सुनि री सखी कछू नहि कहियै, माधौ आवन दीजै।
सूरदास-प्रभु आन मिलैं जौ, हाँसी करि करि लीजै॥
॥३९६७॥४५८५॥

राग मलार

मधुकर तुम हौ स्याम सखाई।
पा लागौं यह दोष बकसियो, सनमुख करति ढिठाई॥
कौनैं रंक संपदा बिलसी, सोवत सपनैं पाई।
किहिं सोने की उड़त चिरैया, डोरा बाँधि उड़ाई॥
धाम धुवाँ के कहौ कौन के, कौनैं धाम उठाई।
किहि अकास तैं तोरि तरैया, आनि धरे बरनाई॥
आलनि की माला कर अपनैं, कौनैं गूँथि बनाई।
किहिं कागद की तरनी कीन्ही, कौन तर्‌यौ सर जाई॥
कौनैं अचला नैन मूँदि कै, जोग समाधि लगाई।
इहिं उर आन रूप देखन कौं, आगि उठी अनखाई॥
सुनि ऊधौ तुम फिरि-फिरि गावत, यामैं कौन बड़ाई।
सूरदास प्रभु ब्रज जुवतिनि कौं, प्रेम कह्यौ नहिं जाई॥
॥३९६८॥४५८६॥

मधुकर पीत वदन किहिं हेत ।
जनियत हैं मुख पांडु रोग भयौ, जुवतिनि कौं दुख देत ॥
रस-मय तन मन स्याम राम कौ, जो उचरै सकेत ।
कमलनयन के बचन सुधा-सम करन घूंट भरिलेत ॥
कुत्सित कटु वायक सायक से, को बोलत रस-खेत ।
इनहिं चातुरी लोग बापुरे, कहत धरम की सेत ॥
माथे परौ जोग पथ ताकैं, वक्ता छपद समेत ।
लोचन ललित कटाच्छ मोच्छ बिनु महिमा जिऐं निकेत ॥
मनसा वाचा और कर्मना, स्याम सुँदर सौं हेत ।
सूरदास मन की सब जानत, हमरे मनहिं जितेत ॥
॥३९६९॥४५८७॥

राग गौरी

मन की मन ही माँझ रही ।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही ॥
अवधि अधार आस आवन की, तन-मन बिथा सही ।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही ॥
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही ।
सूरदास अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही ॥
॥३९७०॥४५८८॥

राग गौरी

तुम्हहिं दोष नहिं हम अति भोरी । रूप निरखि दृग लागे ठौरी ॥
चित चुराइ लियौ मूरति सो री । सुभग कलेवर कुंकुम खौरी ॥
गुंज माल उर पीत पिछौरी । गहत सोइ जु समात अँकोरी ॥
सूर स्याम सौं कहि इक ठौरी । यह उपदेस सुनैं ते औरी ॥
॥३९७१॥४५८९॥

राग नट

स्याम तुम ठग सौं प्रीति करी ।
काटे नाक पिछौरे पोंछत, तातैं सब सुधरी ॥
ह्याँ ऊधौ काहे कौं आए, कौन सी अटक परी ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु, सब पाती उघरी ॥
॥३९७२॥४५९०॥

राग सारंग

ऊधो नूतन राज भयो ।
नए गुपाल नई कुबिजा बनी, नूतन नेह ठयो ॥
नए सखा जोरे जादव कुल, अरि नृप कंस हयो ।
नूतन नारि नए पुर कीन्हो, तिन अपनाइ लयो ॥
बिसरे रास बिलास कुंज सब, अपनी जाति गयो ।
सूरदास प्रभु बहुत बटोरी, दिन-दिन होत नयो ॥
॥३९७३॥४५९१॥

राग सारंग

अब तुम कापर कपट बनावत ।
नाहिन कंस कान्ह नहि गोकुल, को पठवत कह आवत ॥
जिन मोहन बंसी बारिज कर, सुख तन सींचि बढ़ायो ।
सो पुनि ऊधो कर कारन क्यों, जोग कुठार पठायो ॥
यह इतनौ मानुष हू जाने, जिनके है मति थोरी ।
धोखे ही बिरवा लगाइ कै, काटत नाहिं बहोरी ॥
वे प्रवीन अति नागर ऊधौ, जानि परस्पर प्रेम ।
कैसे कै पठवत वे आवत, टारन कौ हित नेम ॥
स्वर्गहुँ गए कंस अपराधी, परयो हमारै खोज ।
दृष्टि टारि, ध्यानहुँ तैं टारत, बाउ सबनि कौ चोज ॥
विद्यमान आए जे छल करि, तिन अपनो फल पायो ।
ह्याँ है हृदे सूर के स्वामी, बनत न स्वाँग बनायो ॥
॥३९७४॥४५९२॥

राग सारंग

अपने स्वारथ के सब कोऊ ।
चुप करि रहो मधुप रस लंपट, तुम देखे अरु ओऊ ॥
जो कछु कहो कह्यो चाहत हौ, कहि निरवारो सोऊ ।
अब मेरे मन ऐसियै षटपद, होनी होउ सु होऊ ॥
तब कत रास रच्यो बृंदावन, जो पै ज्ञान हुताऊ ।
लीन्हे जोग फिरत जुवतिनि मैं, बडे सुपत तुम दोऊ ॥
छूटि गयो मान परेखौ रे अलि, हृदै हुतो वह जोऊ ।
सूरदास प्रभु गोकुल बिसरयौ, चित चिंतामनि खोऊ ॥
॥३९७५॥४५९३॥

राग नट

कहत कत परदेसी की बात ।
मंदिर अरध अवधि बदि हमसौं, हरि अहार चलि जात ॥
ससि रिपु बरष, सूर रिपु जुग बर, हर-रिपु कीन्हौ घात ।
मघ पंचक लै गयौ साँवरौ तातैं अति अकुलात ॥
नखत, वेद, ग्रह, जोरि अर्ध करि, सोइ बनत अब खात ।
सूरदास बस भईं बिरह के, कर मीँजैं पछितात ॥
॥३९७६॥४५९४॥

राग मलार

ऊधौ जानी न हरि यह बात ।
बैठे रथ ऊपर चढि भोरहिं, हँसत मधुपुरी जात ॥
सुफलक-सुत मिलि ठग ठान्यौ है, साधु बेप मन घात ।
जेते बडे धरम-धुज मानी, सँग प्रेम-पथ पात ॥
जदुकुल मैं दोउ संत सबै कहैं, तिनके ये उतपात ।
एकनि हरे प्रान गोकुल के अपर जोग कुसलात ॥
जद्यपि सूर प्रताप स्याम कौ, दानव दुष्ट दुरात ।
तद्यपि भवन-भाव नहिं ब्रज बिनु, खोजौं दीपै सात ॥
॥३९७७॥४५९५॥

राग मलार

हम अलि कैसे कै पतियाहिं ।
बचन तुम्हारे हृदै न आवत, क्यौं करि धीर धराहिं ॥
बपु आकार बेप नहि जाकैं, कौन ठौर मन लागै ।
क्यौं करि रहै कठ मैं मनियाँ, बिना पिरोये धागैं ॥
तुमहीं कहत आहि वह निरगुन, कहा सरै तिहिं काज ।
सूरजदास सगुन मिलि मोहन, रोम रोम सुख राज ॥
॥३९७८॥४५९६॥

राग मलार

मधुकर जानत है सब कोऊ ।
जैसे तुम अरु सखा तुम्हारे, गुननि आगरे दोऊ ॥
सुफलक-सुत कारे नख-सिख, तैं, कारे तुम अरु ओऊ ।
सरबस हरत करत अपने सुख, कोउ किती गुन होऊ ॥

प्रेम कुवत थोरे चित बपुरो, उबरत नाहीं सोऊ।
सूर सनेह करै जो तुमसों, सो पुनि आपु बिगोऊ॥
॥३९७९॥४५९७॥

राग भैरव

मधुकर कहियत चतुर सयाने।
तैसे तुम तैसेइ वै ठाकुर, एकहि मोल बिकाने॥
पहिली प्रीति पिवाइ सुधा रस पाछैं, जोग बखानै।
ज्यौं ठग मीठी कहि सतोपत, फिरि प्राननि गहकानै॥
एक समय पकज-रस-बस ह्वै, दिनकर अस्त न जानै।
यह गति भई सूर ह्यॉ हरि बिनु, हाथ मीँजि पछितानै॥
॥३९८०॥४५९८॥

राग मलार

मधुकर तुम रस-लंपट लोग।
कमल कोप बस रहत निरंतर, हमहि सिखावत जोग॥
अपने काज फिरत बन अंतर, निमिप नहीं अकुलात।
पुहुप गएँ बहुरो बल्लिन के, नैंकु निकट नहि जात॥
तुम चंचल वै चोर सकल अँग, बातनि को पतियात।
सूर बिधाता दोउ रचे हैं मधुप स्याम इक गात॥
॥३९८१॥४५९९॥

राग केदारौ

मधुकर मीत नहो ससार।
जहँ जाको सुख लौस बढत है, तहँ ताको अनुसार॥
तौ लौं लिपटि रहत अबुज पर, हिमकर जनित तुपार।
नैंसुक प्रभा प्रगट दिनकर की, तच्छन तजत बिहार॥
मृदुल मल्लिका ऐसी सुनि अलि, कुसुम करत जिहिं भार।
तिह मर्दन करि गध लेत पुनि, सदन रचत टकसार॥
नाना स्वाद करत नित भोजन, एकहिं दिवस अचार।
तच्छन हरत चरन गति सिथिलित, पथ न पैंड़ पसार॥
बिपयी भजत त्रिया अग जबहीं तब त्यागत उर हार।
भोर भएँ निकसत अतर करि, गिरि सरिता प्राकार॥

कहि धौं कौन हेत हरि गोकुल, प्रगट कियौ अवतार।
किनकैं हेत लई कर मुरली, अंग रूप सत-मार॥
सूर स्याम ऐसी न बूझियै, जहँ नित अटल बिहार।
बिरद घटत किहि कौ तुम देख्यौ, यह कछु करौ विचार॥
॥३९८२॥४६००॥

राग सारंग

मधुप रावरी यह पहिचानि।
बास रस लै अनत बैठत, पुहुप की तजि कानि॥
वाटिका बहु बिपिन जाकैं, एक वै कुम्हिलानि।
तहाँ अगनित पुहुप फूले, कौन ताकैं हानि॥
काम पावक जरत छाती, लोन लायौ आनि।
जोग पाती हाथ दीन्ही, बिष लगायौ सानि॥
सीस की मनि हरी जिनकी, कौन तिनकी बानि।
निठुर ह्वै तुम सूर के प्रभु, ब्रज तज्यौ यह जानि॥
॥३९८३॥४६०१॥

राग सारंग

को कहै हरि सौं बात हमारी।
तौ हम तब तैं जिय जानी, जब तैं भए मधुप अधिकारी॥
प्रकृति एकै कैतव गनि, तिहि गुन ऐसी नहिं जिय भावै।
टे नित नव कंज मनोहर, ब्रज की सरक करन कित आवै॥
नित नव बेली-रस चाखत, अरु जाकी सब तैं गति न्यारी।
अलि की संगति बसि मधुपुरि, सूरदास प्रभु सुरति बिसारी॥
॥३९८४॥४६०२॥

राग सारंग

ऊधौ तुम अति चतुर सुजान।
जे पहिलैं मन रँगे स्याम रँग, अब न चढ़ै रँग आन॥
ए दोऊ लोचन त्रिगट के, स्रुति कहैं एक समान।
भेद चकोर कियौ ताहू मैं, बिधु प्रीतम रिपु भान॥
बिरहिनि बिरह भजै पा लागौं, तुम हौ पूरन ज्ञान।
दादुर जल बिनु जियै पवन भखि, मीन तजै हठि प्रान॥

बारिज बदन नैन मेरे षटपद, कब करिहैं मधुपान।
सूरदास गोपिन परतिज्ञा, छुवहिँ न जोग बिरान॥
॥३९८५॥४६०३॥

राग सारग

ऊधो बिरहौ प्रेम करै।

ज्यौं बिनु पुट पट गहत न रँग कौं, रंग न रसै परै॥
ज्यौं घर दहै बीज अंकुर गिरि, तौ सत फरनि फरै।
ज्यौं घट अनल दहत तन अपनौ, पुनि पय अमी भरै॥
ज्यौं रन सूर सहै सर सन्मुख, तौ रवि रथहु अरै।
सूर गुपाल प्रेम-पथ चलि करि, क्यौं दुख सुखनि डरै॥
॥३९८६॥४६०४॥

राग मलार

मधुकर प्रीति किये पछितानी।

हम जानी ऐसैं हि निबहैगी, उन कछु औरै ठानी॥
वा मोहन कौं कौन पतीजै, बोलत मधुरी बानी।
हमकौं लिखि-लिखि जोग पठावत, आपु करत रजधानी॥
सूनी सेज सुहाइ न हरि बिनु, जागत रैनि बिहानी।
जब तैं गवन कियौ मधुबन कौं, नैननि बरषत पानी॥
कहियौ जाइ स्याम-सुदर कौं, अंतरगत की जानी।
सूरदास प्रभु मिलि कै बिछुरे, तातैं भईं दिवानी॥
॥३९८७॥४६०५॥

राग मलार

हमारैं हरि हारिल की लकरी।

मनक्रम बचन नँद-नदन उर, यह दृढ़ करि पकरी॥
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी॥
सु तौ व्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ सूर तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी॥
॥३९८८॥४६०६॥

राग सारंग

बात हमारी मानौ जौ तौ।
आवन कह्यौ हुतौ हम जीवतिं, तातैं उनहीं कौ तौ॥
एक बोल के लीन्हे अपनी खोई देही देवति।
तातैं खरी मरतिं इहिं ठाहर, वाही बचनहिं सेवति॥
इतनी कह्यौ करौ, धरि राखौ जोग आपने घर कौ।
पैज खौंचि मेटन आए हौ, तनक उजारौ खर कौ॥
नंद-नँदन लै गए हमारी सब ब्रज-कुल की ऊब।
सूर स्याम तजि और न सूझै, ज्यौं खेरे की दूब॥
॥३९८९॥४६०७॥

राग मलार

स्याम मुख खौंही परतीति।
जौ तुम कोटि जतन करि सिखवहु, जोग ध्यान की रीति॥
नाहिंन कछू सयान ज्ञान मैं, यह हम कैसे मानैं।
कहौ कहा गहियै अनभव कौं, कैसैं उर मैं आनैं॥
यह मन एक, एक वह मूरति, भृंगी कीट समानैं।
सूर सपथ दै पूछौ ऊधौ, इहिं ब्रज लोग सयानैं॥
॥३९९०॥४६०८॥

राग सारंग

हरि हैं राजनीति पढि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए॥
इक अति चतुर हुते पहिलैं हीं, अब गुरु ग्रंथ पढाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग सँदेस पठाए॥
ऊधौ भले लोग आगे के, परहित डोलत धाए।
अब अपने मन फेर पाइहैं चलत जु हुते चुराए॥
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै सूर, जौ प्रजा न जाहिं सताए॥
॥३९९१॥४६०९॥

अब हरि भले जाइ पढ़ि आए।
अबलनि हूँ कौ जोग सिखावन, तुमसे गुनी पठाए॥

जौ पै ऊधौ यही बतावत, रस मैं काहे न गाए।
करी करतूति कहत नहिं आवै, जोग नीति लै आए॥
वै अक्रूर वेइ हरि ऊधौ, आन्यो जोगहिं बाँचै।
हम तौ सूर तबहिं सचु पावैं, जौ फिरि गोकुल नाचैं॥
॥३९९२॥४६१०॥

राग सारंग

बारक मिलत कहा है होत।
एते मान कहा उहिं कुबिजा, पाए हैं हरि पोत॥
इतनिक दूर भए कछु औरै, बिसर्‍यौ गोकुल गोत।
कैसैं जियहिं बदन बिनु देखे, बिरहिनि बिरह निसोत॥
आए जोग देन अबलनि कौं, सुरभि कध वृष जोत।
सूरदास-प्रभु तौ पै जीवहिं, देखहिं मुख उद्योत॥
॥३९९३॥४६११॥

राग सारंग

बारक कान्ह करौ किन फेरौ ?
दरसन दै मधुबनहिं सिधारौ, मेरे लेखे सुख इतनौ बहुतेरौ॥
भलेहिं मिले बसुदेव, देवकी, जननि जनक निज कुटुँब घनेरौ।
किहिं अवलंबि रहैं हम ऊधौ, देखि दुःख नँद जसुमति केरौ॥
तुम बिन को अनाथ प्रति पालक, जाजरि नाव कुसग सम्हेरौ।
गए सिंधु को पार उतारे अब यह, सूर थक्यौ ब्रज बेरौ॥
॥३९९४॥४६१२॥

कहा होत जो हरि हित चित धरि, एक बार ब्रज आवते।
तरसत ब्रज के लोग दरस कौं, निरखि-निरखि सुख पावते॥
मुरली सब्द सुनावत सबहिनि, हरते तन की पीर।
मधुरे बचन बोलि अमृत मुख, बिरहिनि देते धीर॥
सब मिलि जग जस गावत उनको, हरष मानि उर आनत।
नासत चिंता ब्रज बनितनि की, जनम सुफल करि जानत॥
दुरी दुरा को खेल न कोउ, खेलत है ब्रज महियाँ।
बाल दसा लपटाइ गहत हे, हँसि-हँसि हमरी बहियाँ॥

हम दासी बिनु मोल की उनकी, हमहिँ जु चित्त बिसारी।
इत तैं उन हरि रमि रहे अब तौ, कुबिजा भई पियारी॥
हिय मैं बातैं समुझि-समुझि कै, लोचन भरि-भरि आए।
सूर सनेही स्याम प्रीति के, ते अब भए पराए॥
॥३९९५॥४६१३॥

राग मलार

मधुकर नाहिँन काज सँदेसौ।
इहिँ ब्रज कौनै जोग लिख्यौ है, कोटि जतन उपदेसौ॥
रवि के उदय मिलन चकई कौ, ससि कै समै अँदेसो।
चातक क्यौँ बन बसत बापुरौ, बधिकहिँ काज बधे सौँ॥
नगर आहि नागर बिनु सूनौ, कौन जु, काज बसे सौँ।
सूर सुभाव मिटै क्यौँ कारैँ, फनिकहिँ काज डसे सौँ॥
॥३९९६॥४६१४॥

राग कल्यान

ऊधौ जोग जानै कौन।
हम जुवति कह जोग जानैँ, जियत जाकौ रौन॥
जोग हम पै होइ न आवै, धरि न आवै मौन।
बाँधिहैँ क्यौँ मन पखेरू, साधिहैँ क्यौँ पौन॥
पहिरि अंबर पाट के मृग-छाल ओढ़ै कौन।
गुरू हमारे कूबरी कर, मंत्र माला जौन॥
मदन-मोहन बिनु हमारैँ, परै बातनि कौन।
सूर-प्रभु कब आइहैँ वे, स्याम दुख के दौन॥
॥३९९७॥४६१५॥

राग मलार

ऊधौ हम यह कैसे मानैँ।
धूत धौल लंपट जैसे हरि, तैसे औरनि जानैँ॥
सुनत सँदेस अधिक तन कंपत, जनु कोउ उर तहँ आनैं।
जैसैँ बधिक गवहि तैं खेलत, अंत धनुहियाँ तानैं॥

निरगुन वचन कहहु जनि हमसौं, ऐसी करत न कानैं।
सूरदास-प्रभु की हौं जानौं, कछू कहैं कछु ठानैं॥
॥३९९८॥४६१६॥

राग मलार

ऊधौ अब कछु कही न जाइ।
रानी भई कूबरी दासी, कापै बरनी जाइ॥
जोइ जोइ मत्र कहत कुबिजा है, सोइ सोइ लिखत बनाइ।
अत अहीर प्रीति दासी सौं, मिटन न सहज सुभाइ॥
छुटत नहीं गुन औगुन जाको, काहू जतन बनाइ।
सूर स्वभाव तजै नहिं कारौ, कीजै कोटि उपाइ॥
॥३९९९॥४६१७॥

(ऊधौ) हरि हाँ पै ऐसी बनि आवत।
हम तौ भोग जनम नहिं जानतिं, तापर जोग सिखावत॥
जौ पै कृपा तजी मन माहीं मुख कहि कहा जनावत।
पावक वचन सँदेस सुनत, उर सुलगि सुलगि दव लावत॥
रीझे तौ कुबिजा सी दासी, आपुहिं आपु हँसावत।
परिमिति जानी सूर रावरी, तजि अमृत विष भावत॥
॥४०००॥४६१८॥

राग मलार

बदले कौ बदलौ लै जाहु।
उनकी एक हमारी द्वै, तुम बडे जनैया आहु॥
तुम अलि जानि हमहिं अति भोरी, सारौ चाहत दाउँ।
अपनी बेर मुकर ह्वै भागत, हिये चौगुनो चाव॥
अब तुम साखि वहीं तहँ जैये, मेटौ उर कौ दाहु।
सूरदास ब्यौहार निबेरहु, हम तुम दोऊ माहु॥
॥४००१॥४६१९॥

राग मलार

ऊधौ इहिं ब्रज बिरह बढ्यौ।
घर बाहर, सरिता, बन, उपबन देखहु द्रुमनि चढ्यौ॥

दिन अरु रैन, सधूम भयानक, दिसि दिसि तिमिर मढ़्यौ।
दुंद करत अति प्रबल होत पुर-पंथहुँ अनल दढ़्यौ॥
जरि नहिं भई भस्म ताही छिन, जौ हरि नाम रढ़्यौ।
सूरदास प्रभु नंद-नँदन बिनु नहिंन जात कढ़्यौ॥
॥४००२॥४६२०॥

राग मलार

ऊधौ जो तुम बात कही।
ताकौ कछू न उत्तर आवै, समुझि बिचारि रही॥
पा लागौं तुमहीं बूझति हौं, तुम पर बुधि उमही।
कैसैं सीतल होइँ पवन-जल पिय, बियोग दहीं॥
कुबिजा सौं पढ़ि तुमहिं पठाए, नागर नवल लहीं।
अब जोई पद देहिं कृपा करि, सोइ हम करैं सही॥
बिछुरत बिरह आगिनि नाहीं जरि, नैनन जल निबहीं।
अब सुनि सूल सहति सब सूरज, कुल मरजाद ढहीं॥
॥४००३॥४६२१॥

मेरे लेखैं मधुबन बसत उजारि।
अपने कुल की कानि करति हौं, कासौं कहौं पुकारि।
सहज भाव बूझहिं सब गोपी, क्यौं जीवहिं ब्रज नारि॥
आपुन जाइ मधुपुरी बैठे, हमैं चले जिय मारि॥
जोग जुगुति हमकौं लिखि पठयौ, मुद्रा भस्म अधारि।
सूरदास प्रभु कब धौं मिलौगे, लै गए प्रीति निबारि॥
॥४००४॥४६२२॥

राग मलार

नयौ मिटि पतियाहू ब्यौहार।
मधुबन बसि मधु-रिपु सुनि मधुकर, छाँड़े ब्रज आभार॥
धरनीधर गिरिवर कर-धरि कै, मुरलीधर सुख सार।
अब लिखि जोग सँदेसौ पठवत, ब्यापक अगम अपार॥
हाँसी अरु दुख सुनहु सखी सुठि, स्रवन दसा संचार।
सूर प्रान तन तजत न यातैं, सुमिरि अवधि आधार॥
॥४००५॥४६२३॥

कहँ करति हौ संदेह।
ऊधौ के सँदेसनि छाती होन चहत है बेह ॥
जिनकैं बिरह रैनि औ बासर, बन समान भयौ गेहु।
तिन गुपाल कौं निकट बतावत, खोजि हृदै मैं लेहु ॥
जीवन रह्यौ आजु लौं सोचनि, अचरज मानहु एहु।
रोकैं हियौ जु सूर पुरातन, कान्ह कुँवर कौ नेहु ॥
॥४००६॥४६२४॥

राग सोरठ

ऊधौ हरि यह कहा बिचारी।
सदा समीप रहत बृंदावन, करत बिहार बिहारी ॥
अब तौ रंग रँगे कुबिजा के, बिसरि गईं ब्रजनारी।
कछु इक मंत्र कियौ उन दासी तिहिं बिनोद अधिकारी ॥
दिन दस और रहौ तुम ब्रज मैं, देखौ दसा बिचारी।
प्रान रहत हैं आसा लागे, कब आवैं गिरधारी ॥
तुम जो कहत जोग है नीकौ, कहौ कौन बिधि कीजै।
हम तन ध्यान नंदनंदन कौ, निरखि-निरखि सो जीजै ॥
सुंदर स्याम कंठ बैजंती, माथैं मुकुट बिराजै।
कमलनैन मकराकृत कुंडल, देखत ही भव भाजै ॥
तात जोग न मन मैं आवै, तू नीके करि राखि।
सूरदास स्वामी के आगैं, निगम पुकारत साखि ॥
॥४००७॥४६२५॥

राग सारंग

मधुकर आपुन होहिं बिराने।
बाहर हेत हितू कहवावत, भीतर काज सयाने ॥
ज्यौं सुक पिंजर माहि उचारत, ज्यौं ज्यौं कहत बखाने।
छूटत हीं उड़ि मिलै आपुन कुल, प्रीति न पल ठहराने ॥
जद्यपि मन नहिं तजत मनोहर, तद्यपि कपटी जाने।
सूरदास-प्रभु कौन काज कौ, माखी मधु लपटाने ॥
॥४००८॥४६२६॥

राग सोरठ

हरि तैं भलौ सुपति सीता कौ।
जाकैं बिरह जतन एक कीन्हे, सिंधु कियौ बीना कौ ॥

लंका जारि सकल रिपु मारे, देख्यौ मुख पुनि ताकौ।
दूत हाथ उन लिखि जु पठायौ, ज्ञान कह्यौ गीता कौ॥
तिनकौ कहा परेखौ कीजै, कुब्जा के मीता कौ।
चढ़े सेज सातौं सुधि बिसरी, ज्यौं पीता चीता कौ॥
करि अति कृपा जोग लिखि पठयौ, देखि डराईं ताकौ।
सूरजदास प्रीति कह जानैं, लोभी नवनीता कौ॥
॥४००९॥४६२७॥

राग मारू

सब सुख लै करि स्याम सिधारे।
सुफलक-सुत कछु भली न कीन्ही, बैठें ही अपडारे॥
चलत पीत पट गहि नहिं राखे, यह जिय सोच हमारे।
भूख नींद छुटि गई सुबासर, सुनहु न ऊधौ प्यारे॥
महा प्रलय तें कत ब्रज राख्यौ, कर धरि सैल उबारे।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, क्यौं जु रहैं ये तारे॥
॥४०१०॥४६२८॥

राग सारंग

ऊधौ हम ब्रजनाथ बिसारे।
जब तैं गवन कियौ मधुबन कौ, चितवत लोचन हारे॥
महा प्रलय तें काहैं राखी, इंद्र त्रास प्रभु टारे।
छूटत नहीं त्रास हिरदै तैं, तब न मुई अब मारे॥
अवधि बदी हरि ते सब बीतीं, आवन कहि जु सिधारे।
सूरदास-प्रभु कब धौं मिलैंगे, लै गए प्रान हमारे॥
॥४०११॥४६२९॥

राग सारंग

(पहिलैं) प्रीति करि कहा पोच लागे करन।
ऊधौ कमल नयन सौं कहियौ, गोबरधन की धरन॥
अब दै बिरह अनल लगे बारन, तब न दई दौ जरन।
संकट बिपति परे पर राखे, लाई प्रीति करि सरन॥
तुम्हरी बाल-दसा ब्रजनायक सुमिरि-सुमिरि अति झुरन।
सूरज स्याम प्रान अब तजिहौं, बेगि दिखावहु चरन॥
॥४०१२॥४६३०॥

राग मलार

प्रीति उहिं देस न कोऊ जानत ।
तू तौ बात कहत अलि ऐसी, बिथा नहीं पहिचानत ॥
जे गुपाल ब्रज में गृह गृह तें, दूध दही ल खात ।
ते अब दुःख देत ब्रजबासिनि, निठुर भए पुर जात ॥
सूर कुटिलता जे सुनियत हैं लोग पुरातन गावत ।
नख सिख लौं बिष रूप बसत, पै मधुबन नाम कहावत ॥
॥४०१३॥४६३१॥

राग सारग

तुम अलि बात नहीं कहि जानत ।
निरगुन कथा बनाइ कहत नहिं, बिरह बिथा उर आनत ॥
प्रफुलित कमल देखि उडि धावत, सब कुल संग लिए ।
और सुमन सौं मधु जाँचत हो, फाटि न जात हिए ॥
चातक स्वाति बूँद को गाहक, सदा रहत इक रूप ।
कह जानै दादुर जल को ब्रत, सागर औ सम कूप ॥
बात कहौ अब ऐसी जासौं, ताके मन तुम भावहु ।
सूर बचन जैसी उपदेसत, तैसोई तुम पावहु ॥
॥४०१४॥४६३२॥

राग सारग

कुटिल बिनु और न कोई आवै ।
तो ब्रजराज प्रेम की बातैं, ताकैं हाथ पठावै ॥
प्रीति पुरातन सुमिरि साँवरे, सुरति सँदेसे दीन्हे ।
तै अलि कहत और की औरै, स्रुति की मति उर लीन्हे ॥
एऊ सखा कह्यौ नहिं मानत, गहे जोग की टेक ।
ऐसे सूर बहुत मधुबन में, कहा दोप हरि एक ॥
॥४०१५॥४६३३॥

राग धनाश्री

बतिअनि सब कोऊ समुझावै ।
ऐसो कोउ नाहिं है प्रीतम, लै ब्रजनाथ मिलावै ॥

आयो दूत कपट कौ बासी, निरगुन ज्ञान बतावै।
सखा हमारे स्याम मनोहर, नैननि भरि न दिखावै॥
ज्ञान ध्यान कौ मरम न जानै, चतुरहिँ चतुर कहावै।
सूरदास सबही काहू कौं, अपनौ ही हित भावै॥
॥४०१६॥४६३४॥

राग मलार

ऊधौ क्यौं बिसरत वह नेह।
हमरैं हृदय आनि नँदनंदन, रचि-रचि कीन्हे गेह॥
एक दिवस गई गाइ दुहावन, वहाँ जु बरष्यौ मेह।
लिए उढ़ाइ कामरी मोहन, निज करि मानी देह॥
अब हमकौं लिखि-लिखि पठवत हैं जोग जुगुति तुम लेहु।
सूरदास बिरहिनि क्यौं जीवैं कौन सयानप एहु॥
॥४०१७॥४६३५॥

राग नट

घातनि क्यौं ब्रज-नाथ मिलन कौं बिसरत है अलि नेह।
बंसी-नाद स्वाद-रस-लंपट, मानत नहिँ स्रुति एह॥
को मातुल बध कियौ मधुपुरी, को पति परिजन गेह।
को ऊधौ को जोग निरूपन, नय-किसोर बिनु खेह॥
कोटि जतन जुगवौ बन बेली, बिनु सींचे बिनु मेह।
हीरा हार चीर सौंधा मिलि, नीर बिना सब हेह॥
कुंभज कुंभ समान ज्ञान पथ, बिनु गुन पानिप बेह।
सूर स्याम-रस सहज माधुरी, रसकनि कौ अवलेह॥
॥४०१८॥४६३६॥

राग मलार

(ऊधौ) नंद कौ गोपाल मोसौं गयौ तृन ज्यौं तोरि।
मीन जल की प्रीति कीन्ही, नाहिँ निबही ओर॥
अबकैं जौ हम दरस पावैं, देहिँ लाख करोर।
हरि सौं हीरा खोइ कै हम, रहीँ समुद्र झकोर॥
ऊधौ हमरौ दोष नाहीं, वै जु निपट कठोर।
हम जपति हैं नाम निसि दिन, जैसैं चंद चकोर॥

दासी हम बिनु मोल की अलि, ज्यौं गुड़ी बस डोर।
सूर के प्रभु दरस दीजै, नहीं मनसा और॥
॥४०१९॥४६३७॥

राग सोरठ

ऊधौ औरे कान्ह भए।
जब तैं यह ब्रज छाँड़ि मधुपुरी, कुबिजा धाम गए॥
कै वह प्रीति रीति गोकुल बसि, दुख सुख सब निरबाहत।
अब यह करत बियोग देह द्रुम, सुनत काम दव दाहत॥
जहँ स्वारथ तहँ सगुन साँवरौ, निरगुन कपट सुनावत।
सूर सुमिरि ब्रजनाथ आपनै, कत न परेखौ आवत॥
॥४०२०॥४६३८॥

राग धनाश्री

ऊधौ मन माने की बात।
दाख छुहारा छाँड़ि अमृत-फल, बिषकीरा बिष खात॥
ज्यौं चकोर कौं देइ कपूर कोउ, तजि अंगार अघात।
मधुप करत घर कोरि काठ मैं, बँधत कमल के पास॥
ज्यौं पतंग हित जानि आपनौ, दीपक सौं लपटात।
सूरदास जाकौ मन जासौं, सोई ताहि सुहात॥
॥४०२१॥४६३९॥

राग सोरठ

बातैं कहत सयाने की सी।
कपट तुम्हारौ प्रगट देखियत, ज्यौं जल नाये सीसी॥
हौं तौ कहत तिहारे हित की, एते मैं कन भरमत।
हमहूँ कृपा तिहारी तैं कछु थोरौ थोरौ मरमत॥
धाइ धसाइ गए सुफलक सुत, नैकहु लागी बार न।
सूर कृपा करि आए ऊधौ, तापर टेवा टारन॥
॥४०२२॥४६४०॥

राग बिलावल

ऊधौ ऐसी हम गुपाल बिनु। सबही तैं जैसैं हरुवौ तृनु॥

सोचत गनत जाइ इहिँ विधि दिनु । जुग समान निसि होत एक छिनु ।
कहियौ सूर सँदेस स्याम तिनु । जनि राखौ प्रभु पोच वचन रिनु ॥

॥४०२३॥४६४१॥

राग सारंग

मधुकर तोहिँ कौन सौँ हेत ।
जो पै चढ़त रंग तुव ऊपर, तौ पै होत स्याम तैँ सेत ॥
मोहन मनि नहिँ उर मेली तैँ, करि आयौ मुख प्रीति ।
अति हठ ढीठ वसीठ स्याम कौ, हमैँ सुनावत गीति ॥
जौ कारिख तन मेट्यौ चाहत, कमल-वदन तन चाहि ।
सूर गुपाल सुध-रस मैँ मिलि, या मन संग समाहि ॥

॥४०२४॥४६४२॥

राग सूही

ऊधौ सुनौ बिथा तुम तात ।
पारधि मारि भाल क्यौँ काढ़ै, है उरझ्यौ हृद गात ॥
ऐसैँ वधिक मृगनि मारन कौँ माथैँ वाँधे पात ।
सुंदर स्याम नाद वंसी कैँ वँधी काम-सर-घात ॥
यह तौ पीर बिरहिनी जानै, वहुत जियै दिन सात ।
सूर स्याम अपने मारे कत, पूछत हैँ कुसलात ॥

॥४०२५॥४६४३॥

राग नट

जौ पै कृष्न हमहिँ जिय भावत ।
तौ सुनि मधुप जसोदानंदन, अवहीँ गोकुल आवत ॥
जिन नैननि मोहन मुख निरख्यौ, निसि-दिन रूप विचार्‌यौ ।
तेई नैन रहत सूने गृह, प्रीत न हियौ बिदार्‌यौ ॥
जिहिं तन आसन सैन संग सुख, हरि समीप रुचि मानी ।
तिहिं तन विरह न छूटत सुमिरि गुन, नैकहुँ बिथा न जानी ॥
जिन स्रवननि सुनि वचन मनोहर, मुरली कल मुख वाजत ।
तिन स्रवननि अव सुनतिँ मधुपुरी, देत सँदेसनि लाजत ॥

अति प्रचंड यह मदन महाभट, जाहि सबै जग जानत।
सो मद-हीन दीन ह्वै बपुरो, कोपि धनुष नहिं तानत॥
सर सौरभ ससि अनिल त्रिविध गुन, वैसियै, प्रकृति निवाहत।
विषम विरह निजु जानि मानि मिति, ते या तनहिं न दाहत॥
बन-बिलास, ब्रज वास, रास सुख देखि देखि सुचि पावत।
सूरदास बहुरो वियोग-गति, कुकबि निलज ह्वै गावत॥
॥४०२६॥४६४४॥

राग मलार

अब हरि औरै ही रँग राँचे।
तुम अलि सखा स्याम सुंदर के, मतो सयानप काँचे॥
बालापन तैं संग रहत हौ, सुन्यौ न एक पषानो।
जैसे बास बसत है कोऊ, तैसो होत सयानो॥
अरु अपने मुख तुम जु कहत हौ, प्रभु सबहीं भरि पूरि।
आवागमन करत हौ कापै, को लागत को दूरि॥
जे उपमा पटतर लै दीजै, ते सब उनहिं न लायक।
जौ पै अलख रह्यौ चाहत, तौ बादि भए ब्रजनायक॥
अरु जे बुद्धि सिखावहु हमकौं, ते सब हमहिं अलेखैं।
सूर सुमनसा तब सुख मानैं, कमलनयन मुख देखैं॥
॥४०२७॥४६४५॥

राग मलार

हरि बिनु जान लागे दिन ही दिन। कैसैं कै राखैं प्रान कान्ह बिन॥
करत सु जतन कहा छिन ही छिन। सिंह जीभ कैसैं धरै हरे तृन॥
जौ पै नहिं मानत जु वचन रिन। तौ का कहियै सूर स्याय सिन॥
॥४०२८॥४६४६॥

हरि दरसन कौं तलफत नैन।
अरु जो चाहत भुजा मिलन कौं, स्रवन सुनन कौं बैन॥
जिय तलफल है बन बिहरन कौं, तुम मिलि अरु सब सखियाँ।
कल न परत तुम बिनु हम इक-छिन, रोवतिं दिन अरु रतियाँ॥
जब तैं तुम हरि बिछुरे हम तैं, निसि-बासर नहिं चैन।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस कौं, काग उड़ावतिं सैन॥
॥४०२९॥४६४७॥

राग सोरठ

हमकौं नँद-नंदन कौ गारौ ।
इंद्र-कोप ब्रज बह्यौ जात हो, गिरि धरि सकल उबारौ ॥
राम कृष्न बल बदत न काहूँ, निडर चरावत चारौ ।
सगरे बिगरे के सिर ऊपर बल कौ बीर रखवारौ ॥
तबहीं हमहिं भरोसौ आयौ केसि तृना जब मारौ ।
सूरदास प्रभु रंगभूमि मैं हरि जीत्यौ नृप हारौ ॥
॥४०३०॥४६४८॥

राग मलार

यहै प्रकृति परि आई ऊधौ अनुदिन या मन मेरैं ।
जौ कोउ कोटि जतन करौ केसैंहु, फिरति नहीं मति फेरैं ॥
जा दिन तैं जसुदा गृह जनमें, सुंदर कुँअर कन्हाई ।
ता दिन तैं वा दरस परस बिनु, और न कछू सुहाई ॥
क्रीड़त हँसत कृपा अवलोकत, छिनु समान दिन जाते ।
परम तृप्ति सबही अँग होती, लोचन पै न अघाते ॥
जागत सोवत सपन स्याम-घन, सुंदर तन अति भावै ।
सु कहि सूरता कमलनैन बिनु, बातनि क्यौं बनि आवै ॥
॥४०३१॥४६४९॥

राग मलार

ऐसी सुनियत हिरदै माहँ ।
याही मैं सब बात बूझिबी, चतुर सिरोमनि नाह ॥
आवन कह्यौ बहुत दिन लाए, करी पाछिली गाह ।
हमहिं छाँड़ि कुबिजहि मन दीन्हौ, मेटि वेद की राह ॥
एते बर लिखि जोग पठावत, सिद्धि घतावत थाह ।
सूर स्याम अब ब्रज किन आवहु, दिन दस मानौ साह ॥
॥४०३२॥४६५०॥

कहियै कहा कहत नहिं आवै, सोचनि हृदय पचैयै ।
मोहन सौं घर कुबिजा पावै, हमकौं जोग बतैयै ॥
आज्ञा होइ सोइ लै कीजै, बिनती यहै सुनैयै ।
सूरदास प्रभु तृपा बढ़ी अति, दरसन-सुधा पियैयै ॥
॥४०३३॥४६५१॥

राग मलार

इहिँ डर बहुरि न गोकुल आए।
सुनि री सखी हमारी करनी, समुझि मधुपुरी छाए॥
अधरातक तैँ उठि सब बालक, मोहिँ टेरैँगे आइ।
मातु पिता मोकौँ पठवैँगे, बनहिँ चरावन गाइ॥
सूने भवन आइ रोकैँगी, दधि-चोरत नवनीत।
पकरि जसोदा पै लै जैहैँ, नाचहु गावहु गीत॥
ग्वारिनि मोहिँ बहुरि बाँधैँगी, कैतव बचन सुनाइ।
वै दुख सूर सुमिरि मन ही मन, बहुरि सहै को जाइ॥
॥४०३४॥४६५२॥

राग मलार

ऊधौ बेद बचन प्रमान।
कमल-मुख पर नैन-खंजन, निरखि हैँ क्यौँ आन॥
श्रीनिकेत, समेत सब गुन, सकल रूप निधान।
अधर सुधा पियाइ बिछुरे, पठै दीन्हौ ज्ञान॥
दूरि नहीँ कृपाल केसौ, ये जु हिये समान।
निकरि क्यौँ न गोपाल बोलत, दुखिन के दुख जान॥
रूप-रेख न देखिऐ तहँ, स्वाद सब्द भुलान।
इच्छ दंड अडारि हरि गुन, गहत पानि त्रिपान॥
बीतराग सुजान जोगिनि भक्त जननि निवास।
निगम बानी मेटि, कहि क्यौँ सकैँ सूरजदास॥
॥४०३५॥४६५३॥

ऊधौ हम कत हरि तैँ न्यारी।
तब तौ बेद रिचा पौरानी, अब ब्रज-बास दुलारी।
तब हरि निरगुन अगम अगोचर, चले जु चाल हमारी।
अब निज ध्यान हमारौ मोहन, उनहूँ हम न बिसारी॥
चाम के दाम चलावत तुम तौ, कुबिजा के अधिकारी।
सूर स्याम हम सब दिन एकै, भुरै लेहु दिन चारि॥
॥४०३६॥४६५४॥

राग मलार

माधौ मन मरजाद तजी।
ज्यौँ गज मत्त जानि हरि तुमसौँ, बात बिचारि सजी॥

माथै नहीँ महावत सतगुरु, अंकुश ज्ञानहु टूट्यौ।
धावत अघ-अवनी आतुर तजि, साँकर सत्सँग छूट्यौ।
इंद्री जूथ संग लिए विहरत, तृष्ना कानन माहिं॥
क्रोध सोच जल सौँ, रति मानी, काम भच्छ हित जाहि।
और अधार नहीँ कछु सूझत, भ्रम गहि गुहा रह्यौ।
सूर स्याम केहरि करुनामय, कब नहिं बिरद गह्यौ॥
॥४०३७॥४६५५॥

राग सारंग

माधौ छाँड़ि दई पहिचानि।
तब तैँ बिरह कुटिल या गोकुल, कीन्हौ है निज खानि॥
तनु गिरि जानि आनि अवनी उर, इहिं भय भीत रहे।
गमन कान्ह छन-छन जु काम ससि-किरन कुदार गहे॥
रज अंजन जल नैन द्वार है, रह्यौ हृदय भरि पूरि।
निकसत नाहिं उपाइ रतन ज्यौँ, गयौ स्याम संग दूरि॥
तुम सों बात और अलि भाषे, उलटि ध्यान बपु जीति।
द्वै नृप लरत प्रजा इंद्री गति, सूर कौन यह नीति॥
॥४०३८॥४६५६॥

राग नट

सखी री पूरनता हम जानी।
याही तैं अनुमान करति हैं, षट्पद से अगवानी॥
प्रथमहिं गाइ ग्वाल सँग रहते, भए छाँछ के दानी।
अब तौ राजनीति सुनियत है, कुबिजा सी पटरानी॥
मन हरि लियौ बजाइ बाँसुरी, अब ह्वै बैठे ज्ञानी।
महा मल्ल मारत मन मोहन, काहे न संका आनी॥
अर्ध-निसा ब्रजनारि संग लै, बन बसि लीला ठानी।
सूरदास ये कलपतिं बनिता, कहैं कौन अब मानी॥
॥४०३९॥४६५७॥

राग बिलावल

जनि कोऊ अस परौ पराएँ।
सरबस दियौ आपनौ उनकौं, तऊ न कछू कान्ह के भाएँ॥

सहज समाधि रहत जोगी ज्यौं, मुद्रा जटा बिभूति लगाएँ।
राज करौ यह दान तुम्हारौ, जौ पै देत बहुत तरसाएँ॥
ना जानौं अब भलौ मानिहैं, ऊधौ किहि बिधि नाचे गाएँ।
सूरदास प्रभु दरसन कारन, मानौ फिरतिँ धतूरा खाएँ॥
॥४०४०॥४६५८॥

ऊधौ अति ओछे की प्रीति।
बाहर मिलत कपट भीतर यौं, ज्यौं खीरा की रीति॥
मैं अपनौ अभिमान जानि कै, चद चकोरी चीत।
मन वच, क्रम तन-मन सब अर्प्यौ लोक लाज कुल जीत॥
इतौ सँदेस कह्यौ हरि सौं तुम, हम जु तजी किहिं नीत।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, मग जोवत जुग बीत॥
॥४०४१॥४६५९॥

राग मलार

जौ कोउ बिरहिन कौ दुख जानै।
तौ तजि सगुन साँवरी मूरति, कत उपदेसै ज्ञानै।
कुमुद चकोर मुदित बिधु निरखत, कहा करै लै भानै।
चातक सदा स्वाति कौ सेवक, दुखित होत बिनु पानै॥
भौंर, कुरंग काग, कोइल कौं, कविजन कपट बखानैं।
सूरदास जौ सरबस दीजै, कारे कृतहि न मानैं॥
॥४ ४२ ४६६०॥

राग मलार

स्याम बिनु क्यौं जीवैं ब्रजवासी।
इहिं घट प्रान रहत क्यौं ऊधौ, बिछुरैं कुंज-बिलासी॥
कुब्जा वर पायौ मोहन सौं, मानौ तप कियौ कासी।
सूर स्याम कौ यहै परेखौ, इक दुख दूजै हाँसी॥
॥४०४३॥४६६१॥

राग नट

(ऊधौ) कैसैं जीवैं कमल नयन बिनु।
तब तौ पलक लगत दुख पावत, अब जु बरष एकहु छिनु॥

ज्यौं ऊजर खेरे की पुतरी, को पूजै कौ मानै।
त्यौं हम बिनु गोपाल भईं ऊधौ, कठिन-पीर को जानै।।
तुम तैं होइ करौ सो ऊधौ, हम अबला बलहीन।
सूर बदन देखैं हम जीवैं, ज्यौं जल पाएँ मीन।।
।।४०४४।।४६६२।।

ऊधौ सुधि नाहीँ या तन की।
जाइ कहौ तुम कित हौ भूले, हमऽब भईं बन-बन की।
इक घन ढूँढ़ि सकल बन ढूँढ़े, घन बेली मधुबन की।।
हारी परीं बृंदाबन ढूँढ़त, सुधि न मिली मोहन की।
किए बिचार उपचार न लागत, कठिन बिथा भइ मन की।।
सूरदास कोउ कहै स्याम सौं, सुरति करैं गोपिनि की।
।।४०४५।।४६६३।।

राग धनाश्री

लरिकाईं को प्रेम कहौ अलि कैसैं छूटत।
कहा कहौं ब्रजनाथ चरित, अंतरगति लूटत।।
ह चितवनि वह चाल मनोहर, वह मुसकानि मंद-धुनि गावनि।
टवर-भेष नंद-नंदन कौ वह बिनोद, वह घन तैं आवनि।।
रन कमल की सौंह करति हौं, यह संदेस मोहिं बिष लागत।
रदास पल मोहिं न बिसरति, मोहन मूरति सोवत जागत।।
।।४०४६।।४६६४।।

हरि-रस तौ ब्रजवासी जानैं।
बदन-सुधा रस पियत मधुप ज्यौं, चरन-कमल रुचि मानैं।।
ब्रह्म-लोक सिव-लोक नाहिं सुख, निगम जु नेति बखानैं।
सो रस गिरिवरधारी के सँग, जिह्वा सेष कहानैं।।
नैन बिसाल स्याम-सुंदर के, खंजन भृकुटी तानैं।
सूरदास प्रभु बलि सोभा की, मैन अवधि सकुचानैं।
।।४०४७।।४६६५।।

मधुकर यह सुख तुमतैं दूरि।
देख्यौ, सुन्यौ न परस्यौ रंचक, उड़िहु न लागी धूरि।।

अब तौ जोग सिखावन आए, तजि हरि जीवन मूरि।
चितवनि मंद हँसनि, गति परसनि, हृदय रही भरिपूरि॥
मो मन जो घट होत तिहारे, मुक्ति चलै पग चूरि।
मथुरा जाइ सूर-प्रभु पूछहिं, मरिहो तबहिं बिसूरि॥
॥४०४८॥४६६६॥

राग धनाश्री

यह संदेस कह्यौ है माधौ। करि बिचार जिय साधन साधौ॥
इडा, पिंगला सुषमन नारी। सुन्य सहज मैं बसत मुरारी॥
ब्रह्म-भाव करि सब मैं देखौ। अलख निरंजन ही कौं लेखौ॥
पदमासन इक चित मन ल्यावौ। नैन मूँदि अंतरगति ध्यावौ॥
हृदै-कमल मैं ज्योति प्रकासी। सोइ अच्युत अविगत अविनासी॥
इहि उपाइ बिरहा तुम तरिहौ। जोग पंथ क्रम क्रम अनुसरिहौ॥
दुसह सँदेस सुनत ब्रज-बाल। मुरछि परीं धरनी बेहाल॥
रे मधुकर लंपट अन्याई। यह सँदेस कत कहँ कन्हाई॥
श्री बृंदावन भवन बिराजैं। नटवर-भेष सदा हरि साजैं॥
रास बिलास करत बृंदावन। बिच गोपी बिच कान्ह स्याम-घन॥
अलि आयौ हो जोग सिखावन। देखि प्रीति लाग्यौ सिर नावन॥
भँवर गीत जो दिन-दिन गावै। परम भक्ति सो हरि की पावै॥
सूर जोग की कथा न भाई। सदा भक्ति गोपी जन गाई॥
॥४०४९॥४६६७॥

राग धनाश्री

ह्याँ हरि जू बहु क्रीड़ा करी। सो तौ चित तैं जात न टरी॥
ह्याँ पय पीवत बकी सँहार्‍यौ। सकट तृनावत ह्याँ हरि मार्‍यौ॥
बच्छासुर कौं इहाँ निपात्यौ। बका, अघा ह्याँ हरि जू घात्यौ॥
हलधर मार्‍यौ धेनुक कौं इहाँ। देखौ ऊधौ हतौ प्रलंब जहाँ॥
ह्याँ तैं ब्रह्मा बच्छ गयौ हरि। और किए हरि लागी न पल घरि॥
ते सब राखे सैंति नरहरी। तब ह्याँ ब्रह्मा अस्तुति करी॥
ह्याँ हरि काली उरग निकास्यौ। लग्यौ जरावन अनल सु नास्यौ॥
बस्त्र हमारे हरि जू ह्याँ हरे। कहँ लगि कहियै जे कौतुक करे॥
हरि, हलधर ह्याँ भोजन किए। बिप्र-तियनि कौं अति सुख दिए॥

इहाँ गोवर्धन कर हरि धारयौ। मघवा रिस तैं हमैं उबारयौ॥
सरद निसा मैं रास रच्यौ इहँ। सो सुख हम पै बरनि जात कहँ॥
वृषभासुर कौं इहाँ सँघान्यौ। भौमऽरु केसी इहाँ पछान्यौ॥
ह्याँ हरि खेलत आँख मिचाई। कहँ लगि बरनै लीला गाई॥
सुनि-सुनि ऊधौ प्रेम मगन भयौ। लोटत धर पर ज्ञान गरब गयौ॥
निरखत ब्रज भू अति सुख पावै। सूरज प्रभु गुनि पुनि-पुनि गावै॥
॥४०५०॥४६६८॥

राग धनाश्री

(ऊधौ) ज्यौं करि कृपा पाउँ धारत हौ, त्यौं ही तुम्हैं जवाऊँ।
मौन गहे तुम बैठि रहौ, ह्याँ, मुरली-सब्द सुनाऊँ॥
अबहिं सिधारे बनगोचारन, ह्याँ बैठी जस गाऊँ।
निसि आगम श्रीदामा कैं सँग, नाचत प्रभुहिं दिखाऊँ॥
को जानै द्विविधा सँकोच बस, तुम डर निकट न आवैं।
तब यह दुंद बढ़े अति दारुन, सखियनि प्रान छुड़ावैं॥
छिन न रहैं नँदलाल इहाँ बिनु, जो कोउ कोटि सिखावै।
सूरदास ज्यौं मन तैं मनसा, अनत कहूँ नहिं धावै॥
॥४०५१॥४६६९॥

राग मलार

सखी री मो मन धोखें जात।
ऊधौ कहत रहत हरि मधुपुरी, गत आगत न थकात॥
इत देखौं तौ आगे मधुकर, मत्त न्याय सतरात।
फिरि चाहौं तौ प्राननाथ उत सुनत कथा मुसुकात॥
हरि साँचे ज्ञानी सब झूठे, जे निरगुन जस गात।
सूरदास जिहिं सब जग डहक्यौ, ते उनकौ डहँकात॥
॥४०५२॥४६७०॥

उद्धव-बचन

राग सारंग

मैं ब्रजबासिन की बलिहारी।
जिनके संग सदा क्रीड़त हैं, श्री गोबरधन धारी॥
किनहूँ कैं घर माखन चोरत, किनहूँ कैं सँग दानी।
किनहूँ कैं सँग धेनु चरावत, हरि की अकथ कहानी॥

किनहूँ कैं सँग जमुना कैं तट, बंसी टेरि सुनावत।
सूरदास बलि-बलि चरननि की, यह सुख मोहिनिति भावत॥
॥४०५३॥४६७१॥

राग सारंग

हौं इन मोरनि की बलिहारी।
जिनकी सुभग चंद्रिका माथैं, धरत गोबरधन धारी॥
बलिहारी वा बाँस-बंस की, बसी सी सुकुमारी।
सदा रहति है कर जु स्याम कैं, नैकहुँ होति न न्यारी॥
बलिहारी वा गुंज जाति की, उपजी जगत उज्यारी।
सुदर हृदय रहत मोहन कैं कबहूँ टरत न टारी॥
बलिहारी कुल सैल सरित जिहिं, कहत कलिंद-दुलारी।
निसि-दिन कान्ह अग आलिगन आपुनहूँ भई कारी॥
बलिहारी वृंदावन भूमिहिं, सुतौ भाग की सारी।
सूरदास प्रभु नाँगे पाइनि, दिन प्रति गैया चारी॥
॥४०५४॥४६७२॥

गोपी-बचन *राग मारू*

अलि तुम जाहु फिरि उहिं देस।
चीर हम कहिहैं भगौहें, सीख सिख लवलेस॥
भाल लोचन चद चमकनि, कठिन कंठहिं सेष।
नाद, मुद्रा, भूति भारी, करैं राउर भेष॥
उहाँ जाइ सँदेस कहियौ, जटा धारे केस।
कौन कारन नाथ छाँडी, सूर इहै अँदेस॥
॥४०५५॥४६७३॥

राग मलार

हम पर हेत किए रहिबौ।
या ब्रज को ब्यौहार सखा तुम, हरि सौं सब कहिबौ॥
देखे जात आपनी अँखियनि, या तन कौ दहिबौ।
तन की बिथा कहा कहौं तुमसौं, यह हमकौं सहिबौ॥
तब न कियौ प्रहार प्राननि कौ, फिरि-फिरि क्यौं चहिबौ।
अब न देह जरि जाइ सूर इनि, नैननि कौ बहिबौ॥
॥४०५६॥४६७४॥

स्वामी पहिलौ प्रेम सँभारौ ।
ऊधौ जाइ चरन गहि कहियै, जौ तैं हित न उतारौ ॥
जो तुम मधुबन राज काज भए, गोकुल हम न अधारौ ।
कमल-नयन सो चैन न देखौ, नित उठि गोधन चारौ ॥
ये ब्रज-लोग मया के सेवक, तिनसौं क्यौं न विहारौ ।
सूरदास-प्रभु एक बार मिलि, सकल बिरह दुख टारौ ॥
॥४०५७॥४६७५॥

राग मलार

अपनैं जिय सुरति किए रहिवौ ।
ऊधौ इतनी बिनय स्याम सौं, समय पाइ कहिबौ ॥
घोष बसत की चूक हमारी, कछू न चित गहिवौ ।
परम दीन जदुनाथ जानि कै, गुन बिचारि सहिबौ ॥
अबकी बेर दयालु दरस दै, दुख की रासि दहिबौ ।
सूरदास-प्रभु बहुत कहा कहैं, बचन लाज वहिबौ ॥
॥४०५८॥४६७६॥

राग कल्यान

जदुपति को संदेस सखी री कैसैं कैऽब कहौं ।
बिन ही कहैं आपने मन मैं, कब लगि सूल सहौं ॥
जो कछु बात बनाऊँ चित मैं, रचि पचि सोचि रहौं ।
मुख आनत ऊधौ तन चितवत, नवौ बिचार वहौं ॥
सो कछु सीख देहु मोहिं सजनी, जातैं धीर गहौं ।
सूरदास-प्रभु के सेवक सौं, विनती करि निबहौं ॥
॥४०५९॥४६७७॥

राग बिलावल

कर कंकन तैं भुज टाड़ भई ।
मधुबन चलत स्याम मन-मोहन, आवन अवधि जु निकट दई ॥
पूजत गौरि मनावत संकर, बासर निसि मोहिं गनत गई ।
पाती लिखत बिरह तन व्याकुल, कागर ह्वै गयौ नीर मई ॥
ऊधौ मुख के बचननि कहियौ, हरि की सूल नित-प्रति जु नई ।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, मानौ बंसी मीन हुई ॥
॥४०६०॥४६७८॥

राग सकराभरन

इतनी बात अलि कहियौ हरि सौं, कब लगि यह मन दुख मैं गारैं।
पथ जोहत तन कोकिल बरन भइँ, निसि न नींद पिय पियहि पुकारैं॥
जा दिन तैं बिछुरे नँद-नंदन अति दुख दारुन क्यौं निरवारैं।
सूरदास प्रभु बिनु यह बिपदा, काको दरसन देखि बिसारैं॥
॥४०६१॥४६७९॥

ऊधौ जू, कहियौ तुम हरि सौं जाइ, हमारे हिय कौ दरद।
दिन नहिं चैन, रैन नहिं सोवतिं, पावक भई जुन्हाई सरद॥
जबतैं लै अक्रूर गए हैं भई बिरह तन बाइ छरद।
काम प्रबल जाके अति ऊधौ, सोचत भइ जस पीत-हरद॥
सखा प्रवीन निरंतर हरि के तातैं कहित हैं खोलि परद।
ध्यावतिं रूप दरस तजि हरि कौ, सूर मूरि बिनु होतिं मुरद॥
॥४०६२॥४६८०॥

राग कल्यान

कहियौ सुख सँदेस जु हरि कैं, हाथ दीजियौ पाती।
समय पाइ ब्रज बात चालिबी, सुख ही माँझ सुहाती॥
हम प्रतीति करि सरबस अर्प्यौ, गन्यौ नहीं दिन राती।
नंदनँदन यह जुगुति न होई, लै जु रहे मन थाती॥
जौ तब साखि दीजतौ काहू, तौ अब कत पछितातीं।
सूरदास-प्रभु सुकर जानतीं, तौ सँग लीन्हे जातीं॥
॥४०६३॥४६८१॥

ऊधौ इक पतिया हमरी लीजै।
चरन लागि गोबिंद सौं कहियौ, लिखौ हमारो दीजै॥
हम तौ कौन रूप गुन आगरि, जिहिं गुपाल जू रीझैं।
निरखत नैन-नीर भरि आए, अरु कंचुकि पट भीजैं॥
तलफत रहतिं मीन चातक ज्यौं, जल बिनु तृषा न छीजै।
अति ब्याकुल अकुलातिं बिरहिनी, सुरति हमारी कीजै॥
अँखियाँ खरी निहारतिं मधुबन, हरि बिनु ब्रज बिष पीजै।
सूरदास-प्रभु कबहिं मिलैंगे, देखि देखि मुख जीजै॥
॥४०६४॥४६८२॥

राग जैतश्री

हम मति हीन कहा कछु जानै, ब्रजवासिनि अहीर ।
वै जु किसोर नवल नागर तन, बहुत भूप की भीर ॥
बचन की लाज सुरति करि राखौ, तुम अलि इतनौ कहियौ ।
भली भई जौ दूत पठायौ, इतनौ बोल निवहियौ ॥
एक बार तौ मिलौ कृपा करि, जौ अपनौ ब्रज जानौ ।
यहै रीति संसार सबनि की, कहा रंक कह रानौ ॥
हम अनाथ तुम नाथ गुसाईं, राखौ क्यौं नहिं सोई ।
षट रितु ब्रज पै आनि पुकारैं, सूरदास अब कोई ॥
॥४०६५॥४६८३॥

राग धनाश्री

नंदनँदन सौं इतनी कहियौ ।
जद्यपि ब्रज अनाथ करि डार्‌यौ, तद्यपि सुरति किए चित रहियौ ॥
तिनका-तोर करहु जनि हम सौं, एक बास की लाज निवहियौ ।
गुन अवगुननि दोष नहिं कीजतु, हम दासिन की इतनी सहियौ ॥
तुम बिनु प्रान कहा हम करिहैं, यह अवलंब न सुपनेहु लहियौ ।
सूरदास पाती लिखि पठई, जहाँ प्रीति तहँ ओर निवहियौ ॥
॥४०६६॥४६८४॥

राग नट

ऊधौ इतनी जाइ कहौ ।
सबै बिरहिनी पा लागति हैं, मथुरा कान्ह रहौ ॥
भूलिहुँ जनि आवहु इहिं गोकुल, तपति तरनि ज्यौं चंद ।
सुंदर-बदन स्याम कोमल तन, क्यौं सहिहैं नँदनंद ॥
मधुकर, मोर, प्रबल पिक, चातक, बन उपवन चढ़ि बोलत ।
मनहु सिंह की गरज सुनत गो बच्छ दुखित तन डोलत ॥
आसन असन अनल विष अहि-सम, भूषन विविध बिहार ।
जित तित फिरत दुसह द्रुम-द्रुम प्रति, धनुष धरे सत मार ॥
तुम हौ संत सदा उपकारी, जानत हौ सब रीति ।
सूर स्याम कौं क्यौं बोलैं ब्रज बिनु टारे यह ईति ॥
॥४०६७॥४६८५॥

राग सारंग

बिनु गुपाल बैरिनि भईं कुंजैं ।
तब वै लता लगतिं तन सीतल, अब भईं बिषम ज्वाल की पुंजैं ॥
वृथा बहति जमुना, खग बोलत, वृथा, कमल-फूलनि अलि-गुंजैं ।
पवन, पान, घनसार, सजीवन, दधि-सुत किरनि भानु भईं भुंजैं ॥
यह ऊधौ कहियौ माधौ सौं, मदन मारि कीन्हीं हम लुंजैं ॥
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस कौं, मग-जोवत अँखियाँ भईं छुंजैं ॥
॥४०६८॥४६८६॥

राग धनाश्री

ऊधौ इतनी कहियौ बात ।
मदन गुपाल बिना या ब्रज मैं, होन लगे उतपात ॥
तृनावर्त, बक, बकी, अघासुर, धेनुक फिरि-फिरि जात ।
ब्योम, प्रलंब, कंस केसी इत, करत जिअनि की घात ॥
काली काल-रूप दिखियत है, जमुना जलहिं अन्हात ।
बरुन फाँस फाँस्यौ चाहत है, सुनियत अति मुरझात ॥
इंद्र आपने परिहँस कारन, बार-बार अनखात ।
गोपी, गाइ, गोप, गोसुत सब, थर थर काँपत गात ॥
अंचल फारति जननि जसोदा, पाग लिए कर तात ।
लागौ बेगि गुहारि सूर-प्रभु गोकुल बैरनि घात ॥
॥४०६९॥४६८७॥

राग मलार

ऊधौ इतनी कहियौ जाइ ।
अति कृस गात भईं ये तुम बिनु, परम दुखारी गाइ ॥
जल समूह बरषतिं दोउ अँखियाँ, हूँकति लीन्हैं नाऊँ ।
जहाँ जहाँ गो दोहन कीन्हौ, सूँघतिं सोई ठाउँ ॥
परति पछार खाइ छिन ही छिन, अति आतुर ह्वै दीन ।
मानहु सूर काढि डारी हैं, बारि मध्य तैं मीन ॥
॥४०७०॥४६७०॥

राग धनाश्री

तुम कहियौ जैसैं गोकुल आवैं ।
दिन दस रहे भली सो कीन्ही, अब जनि गहरु लगावैं ॥

नहिँ न सुहात कछू हरि तुम बिनु, कानन भवन न भावैं ।
धेनु बिकल अति चरतिँ नहीँ तृन, बच्छ न पीवन धावैं ॥
देखत अपनी आँखिनि तुमहीँ, हम कहि कहा जनावैं ।
सूरदास-प्रभु कठिन होत कत, वै ब्रजनाथ कहावैं ॥
॥४०७१॥४६८९॥

राग गौरी

ऊधौ हरि बेगिहिँ देउ पठाइ ।
नंद-नंदन दरस बिनु, रटि मरैं ब्रज अकुलाइ ॥
मातु जसुमति सहित ब्रजपति, परे घर मुरझाइ ।
अति बिकल तन, प्रान त्यागत, करैं केछु गति आइ ॥
सकल सुरभी जूथ दिन प्रति, रुदत पुर दिसि धाइ ।
जहाँ जहाँ दुहि बन चराईं, मरतिँ तहँ बिललाइ ॥
परम प्यारी सरद राका, रही गृह दुख छाइ ।
तजत चक्र न वक्र चख बिनु, करैं कोटि उपाइ ॥
जोग पद लै देहु जोगिहिँ, हमहिँ जोग मिलाइ ।
मधुप बिछुरे बारि मीनहिँ, अनत कहा सुहाइ ॥
आजु जिहिँ बिधि स्याम आवहिँ, कहौ तिहिँ बिधि जाइ ।
सूर दावा बिरह ब्रज जन, जरत लेहु बुझाइ ॥
॥४०७२॥४६९०॥

राग जैतश्री

अति मलीन वृषभानु-कुमारी ।
रि स्रम-जल भींज्यौ उर-अंचल, तिहिँ लालच न धुवावति सारी ॥
ध मुख रहति अनत नहिँ चितवति, ज्यौं गथ हारे थकित जुवारी ।
टे चिकुर वदन कुम्हिलाने, ज्यौं नलिनी हिमकर की मारी ॥
रे सँदेस सुनि सहज मृतक भइ, इक बिरहिनि, दूजे अलि जारी ।
दास कैसैं करि जीवैं, ब्रज बनिता बिन स्याम दुखारी ॥
॥४०७३॥४६९१॥

राग सारंग

ऊधौ देखि ही ब्रज जात ।
जाइ कहियौ स्याम सौं यौं, बिरह के उतपात ॥

नैन नहिं कछु और सूझै, स्रवन कछु न सुहात।
स्याम बिनु आँसुअनि बूडत, दुसह धुनि भइ गात॥
आइबैं तौ आइऐ हरि, पुनि सरीर समात।
सूर-प्रभु पछिताहुगे तुम, अतहूँ गए गात॥
॥४०७४॥४६९२॥

राग बिहागरौ

ऊधौ तुमहिं स्याम की सौंहैं।
मुख देखत कहियौ तुम उनसौं जित-तित लगी मदन की दौंहैं॥
जो मन जोग जुगुति आराधै, सो मन तौ सबकौ उन मौहै।
जैसैं बसन तजत हैं पन्नग, सो गति करी कान्ह हमकौं है॥
हम बावरी त्यौं न चलि जान्यौ, ज्यौं गज चलत आपनी गौंहैं।
सूरदास कपटी चित माधव, कुबिजा मिली कपटी की खौंहैं॥
॥४०७५॥४६९३॥

राग सारंग

मधुकर कहियौ सुचित सदेसौ।
समय पाइ समुझाइ स्याम सौं, हम जिय बहुत अँदेसौ॥
एक बार रस-रास हमारे, मन मुरली जो हरे सौ।
तब उन बेनु बजाइ बुलाईं, अब निरगुन उपदेसौ॥
और बार उन जोग जुगुति कौ, भेद न कह्यौ परे सौ।
तब पतिब्रत तुम करत कहत, अब उघरौ ज्ञान गडे सौ॥
और कहाँ लौं हम कहैं ऊधौ, अबलनि कौ दुख ऐसौ।
सूरदास इन पर हम मरियत, कुबिजा के बस कैसौ॥
॥४०७६॥४६९४॥

राग काफी

मधुप जाइ कहियौ तुम हरि सौं, बहुरि जु आइ हमरी होरी।
ए सब नवल-नारि गोकुल की, खेलि फाग मुख माँडति रोरी॥
पग पग पर नाचति गावति हैं, चंद्र-बदनि तन गावति गोरी।
सूरदास-प्रभु कबहिं देखिहौं, मोहन, राधा बाहाँ जोरी॥
॥४०७७॥४६९५॥

राग सारंग

ऊधौ कहियौ यह संदेस ।
लोग कहत कुबिजा की प्रभुता, तुम सकुचहु जनि लेस ॥
कबहुँक इत पग धारि सिधारहु, हरि उहिँ सुखद सुबेस ।
हमरे मनरंजन कीन्हे तैँ, ह्वैहौ भुवन नरेस ॥
तब तुम इत ठहराइ रहौगे, देखौगे सब देस ।
नहिँ बैकुंठ अखिल ब्रह्मांडहु ब्रज बिनु सब कृत क्लेस ॥
यह किहिँ मंत्र दियौ नँदनंदन, ब्रज तजि भ्रमन बिदेस ।
जसुमति-जननी प्रिया राधिका, देखे औरहुँ देस ।
इतनी कहत कहत स्यामा पै, कछु न रह्यौ अवसेस ॥
मोहनलाल प्रबाल मृदुल-मन, तच्छन करी सुदेस ।
को ऊधौ को दुसह बिरह ज्वर, को नृप नगर सुरेस ॥
कैसौ ज्ञान कह्यौ कहि कासौँ, किहिँ पठयौ उपदेस ।
मुख मृदु छबि मुरली रव पूरत, गोरज करबुर केस ॥
नट-नायक गति बिकट लटक तब, बन तैँ कियौ प्रवेस ।
अति आतुर अकुलाइ धाइ पिय, पोँछत नयन कुसेस ॥
कुम्हिलानौ मुख-पद्म परस करि, देखत छबिहिँ बिसेस ।
सूर सोम सनकादि इंद्र अज, सारद निगम महेस ॥
नित्य बिहार सकल सुर भ्रम गति, कह गावैँ मुख सेस ॥
॥४०७८॥४६९६॥

उद्धव-बचन राग नट

अब अति चकितवंत मन मेरौ ।
आयौ हो निरगुन उपदेसन, भयौ सगुन कौ चेरौ ॥
जो मैँ ज्ञान कह्यौ गीता कौ, तुमहिँ न परस्यौ नेरौ ।
अति अज्ञान कछु कहत न आवै, दूत भयौ हरि केरौ ॥
निज जन जानि मानि जतननि तुम कीन्हौ नेह घनेरौ ।
सूर मधुप उठि चले मधुपुरी, बोरि जोग कौ बेरौ ॥
॥४०७९॥४६९७॥

गोपी-बचन राग केदारौ

ऊधौ तिहारे पा लागति हौँ, बहुरिहुँ इहिँ ब्रज करबी भाँवरी ।
निसि न नींद भोजन नहिँ भावै, चितवत मग भइ दृष्टि झाँवरी ॥

वहै वृंदावन वहै कुंज-घन, वहै जमुना वहै सुभग साँवरी।
एक स्याम बिनु कछू न भावै, रटति फिरति ज्यौं बकति बावरी॥
चलि न सकति मग डुलत धर-पग, आवति बैठत उठत ताँवरी।
सूरदास-प्रभु आनि मिलावहु, जग मैं कीरति होइ रावरी॥
॥४०८०॥४६९८॥

दिन कछु औरहू बहुरि इहाँ ऐबौ।
चलि हौं गुपाल मिलि जाहि संगहि सग, इतनी कहि बात सुख बहुत पैबौ॥
महाराज भए सुनि सबननि आनद भयौ, तौ बचन एक हमहिं दीजै।
देखि वह नाउँ घन खरिक जमुना पुलिन, नंद नदन नाथ कृपा कीजै॥
बिरह ब्याकुल भईं इहाँ गोपी सकल, कीरति न छाड़ैं गोपाल न्यारे।
ये क्यों जिएँ सूर स्याम! दरसन बिना, जिनहिं तुम प्रान तैं अधिक पियारे॥४०८१॥४६९९॥

यशोदा जी का संदेश *राग धनाश्री*

ऊधौ पा लागति हौं कहियौ, स्यामहिं इतनी बात।
इतनी दूरि बसत क्यौं बिसरे, अपने जननी-तात॥
जा दिन तैं मधुपुरी सिधारे, स्याम मनोहर गात।
ता दिन तैं मेरे नैन पपीहा, दरस प्यास अकुलात॥
जहँ खेलन के ठौर तुम्हारे, नद देखि मुरझात।
जौ कबहूँ उठि जात खरिक लौं, गाइ दुहावन प्रात।
दुहत देखि औरनि के लरिका, प्रान निकसि नहिं जात॥
सूरदास बहुरौ कब देखौं, कोमल कर दधि खात॥
॥४०८२॥४७००॥

राग बिहागरौ

मैं नँदनदन सौं कछु न कह्यौ।
सुनि ऊधौ हरि ऐसौ कीन्हौ, मधुपुरि बसि जु रह्यौ॥

चलत कह्यौ हो मोहन आवन, मैं बिस्वास गह्यौ।
सूर बियोग नंदनंदन कौ, अब नहिं जात सह्यौ ॥
॥४०८३॥४७०१॥

राग मलार

तब तुम मेरैं काहे कौं आए।
मथुरा क्यौं न रहे जदुनंदन, जौ पै कान्ह देवकी जाए ॥
दूध, दही काहे कौं चोर्‌यौ, काहे कौं बन बच्छ चराए।
अघ अरिष्ट, काली फनि काढ़्यौ, बिष जल तैं सब सखा जिवाए ॥
पय पीवत हरे प्रान पूतना, सदा किए जसुमति के भाए।
सूरदास लोगनि के भुरए, काहैं कान्ह, अब होत पराए ॥
॥४०८४॥४७०२॥

राग सोरठ

ऊधौ हम ऐसी नहिं जानी।
सुत कैं हेत मरम नहिं पायौ, प्रगटे सारँग-पानी ॥
निसि बासर छतियाँ सौं लाई, बालक लीला गाऊँ।
ऐसे कबहूँ भाग होहिंगे, बहुरौ गोद खिलाऊँ ॥
को अब ग्वाल सखा सँग लीन्हे, साँझ समै ब्रज आवै।
को अब चोरि चोरि दधि खैहै, मैया कौन बुलावै ॥
बिदरति नाहिं बज्र की छाती, हरि-बियोग क्यौं सहियै।
सूरदास अब नंदनँदन बिनु, कहौ कौन बिधि रहियै ॥
॥४०८५॥४७०३॥

राग रामकली

गोपालहिं पठै देहु, हम देखैं।
एक बार मिलि जाहु पाहुनैं, जनम सफल करि लेखैं ॥
कहियौ जाइ देवकी सौं तुम, कौन घाटि हम कीन्ही।
मैं तुम्हरे ढोटा के बदलैं, तनया कंस बलि दीन्ही ॥
इतनी सील करैं पालागौं, यहै निहोरौ मानैं।
अपने तैं है हैं न पराए, यह प्रतीति जिय आनैं ॥
जौ हौं मधुबन देखन आऊँ, सब ब्रज लागै साथ।
एक बार मुख देखि पठैहौं, सूरदास के हाथ ॥
॥४०८६॥४७०४॥

राग धनाश्री

ऊधौ जौ अब कान्ह न ऐहैं।
जिय जानौ अरु हृदय बिचारौ, हम अतिहीं दुख पैहैं॥
पूछौ जाइ कौन कौ ढोटा, तब कह उत्तर दैहैं।
खायौ खेल्यौ संग हमारैं, ताकौ कहा घतैहैं॥
गोकुल औ मथुरा के बासी, कह लौं झूठौ कैहैं।
अब हम लिखि पठयौ चाहति हैं, ह्वाँऊ पत नहिं पैहैं॥
इनि गाइनि चरबो छाँड्यौ है, जो नहिं लाल चरैहैं।
एते पर नहिं मिलत सूर-प्रभु, फिरि पाछैं पछितैहैं॥
॥४०८७॥४७०५॥

(मोहन) अपनी गैयाँ घेरि लै।
बिडरी जाति काहु नहिं मानतिं, नैंकु मुरलि की टेर दै॥
धौरी, धूमरि, पीरी, काजरि, बन-बन फिरती पीय।
अपनी जानि कै आनि सँभारहु, धरौ चेत अब जीय॥
तुम हौ जग जीवनि प्रतिपालक, निठुराई नहिं कीजै।
ग्वालऽरु बाल बच्छ गो बिलखत, सूर सु दरसन दीजे॥
॥४०८८॥४७०६॥

राग सारंग

तब तैं छीन सरीर सुबाहु।
आधौ भोजन सुबल करत है, सब ग्वालनि उर दाहु॥
नंद गोप पिछवारे डोलत, नैननि नीर प्रबाहु।
आनँद मिट्यौ मिटी सब लीला काहू मन न उछाहु॥
एक बेर बहुरौ ब्रज आवहु, दूध पतूखी खाहु।
सूर सपथ गोकुल जौ पैठहु, उलटि मधुपुरी जाहु॥
॥४०८९॥४७०७॥

राग नट

कहियौ जसुमति की आसीस।
जहाँ रहौ तहँ नंद लाड़िलौ, जीवौ कोटि बरीस॥
मुरली दई दोहनी घृत भरि, ऊधौ धरि लइ सीस।
यह तौ घृत उनहीं सुरभिनि कौ, जे प्यारी जगदीस॥

ऊधौ चलत सखा मिलि आए, ग्वाल बाल दस-बीस।
अबकै यह ब्रज फेरि बसावहु, सूरदास के ईस॥
॥४०९०॥४७०८॥

राग बिलावल

(ऊधौ) देखत हौ जैसे ब्रजबासी॥
लेत उसाँस नैन-जल पूरत, सुमिर-सुमिरि अबिनासी॥
भूलि न उठत जसोदा जननी, मनौ भुवंगम डासी।
छूटत नहीं प्रान क्यौं अटके, कठिन प्रेम की फाँसी॥
आवत नहीं नंद-मंदिर मैं, भयौ फिरत बनबासी।
परम मलीन धेनु दुर्बल, भईं, स्याम बिरह की त्रासी॥
गोपी ग्वाल सखा बालक सब, कहूँ न सुनियत हाँसी।
काहैं दियौ सूर सुख मैं दुख, कपटी कान्ह बिसासी॥
॥४०९१॥४७०९॥

राग सारंग

धन्य नंद, धनि जसुमति रानी।
धन्य ग्वाल गोपी जु खिलाए, गोदहिं सारंगपानी॥
धनि ब्रजभूमि धन्य बृंदावन जहँ अबिनासी आए।
धनि धनि सूर आज हमहूँ जो तुम सब देखे पाए॥
॥४०९२॥४७१०॥

उद्धव आगमन, भ्रम-गीत संक्षेप *राग आसावरी*

हरि-रथ रतन जग्यौ सु अनूर दिखावै।
जिहिं मग कान्ह गयौ तिहिं मग तैं आवै॥
तिहिं मग आवै, सखिनि बुलावै, देखौ आनि बिचारी।
मुकुट कुँडल तन, पीत बसन कोउ, गोबिंद की अनुहारी॥
वेई भूषन निरखन लागीं, तब लगि नेरें आए।
ऊधौ जिन जानी, मन कुम्हिलानी, कृष्न सँदेस पठाए॥
चलौ चलौ पूछैं कछु बातैं।
कहि कहि ऊधौ हरि कुसलातैं।
कहि कुसलातैं साँची बातैं आवन कह्यौ कि नाहीं।
कै गरवाने राजस बाने अब चित हम न सुहाहीं॥

राग धनाश्री

ऊधौ जौ अब कान्ह न ऐहैं।
जिय जानौ अरु हृदय विचारौ, हम अतिहीं दुख पैहैं॥
पूछौ जाइ कौन कौ ढोटा, तब कह उत्तर देहैं।
खायौ खेल्यौ संग हमारैं, ताकौ कहा घतैहैं॥
गोकुल औ मथुरा के बासी, कह लौं झूठौ कैहैं।
अब हम लिखि पठयौ चाहति हैं, ह्याँऊ पत नहिं पैहैं॥
इनि गाइनि चरबो छाँड्यौ है, जो नहिं लाल चरैहैं।
एते पर नहिं मिलत सूर-प्रभु, फिरि पाछैं पछितैहैं॥
॥४०८७॥४७०५॥

(मोहन) अपनी गैयाँ घेरि लै।
बिडरी जातिं काहु नहिं मानतिं, नैंकु मुरलि की टेर दै॥
धौरी, धूमरि, पीरी, काजरि, बन-बन फिरती पीय।
अपनी जानि कै आनि सँभारहु, धरौ चेत अब जीय॥
तुम हौ जग जीवनि प्रतिपालक, निठुराई नहिं कीजै।
ग्वालऽरु बाल बच्छ गो बिलखत, सूर सु दरसन दीजै॥
।४०८८॥४७०६॥

राग सारंग

तब तैं छीन सरीर सुबाहु।
आधौ भोजन सुबल करत है, सब ग्वालनि उर दाहु॥
नंद गोप पिछवारे डोलत, नैननि नीर प्रवाहु।
आनँद मिट्यौ मिटी सब लीला काहू मन न उछाहु॥
एक बेर बहुरौ ब्रज आवहु, दूध पतूखी खाहु।
सूर सपथ गोकुल जौ पैठहु, उलटि मधुपुरी जाहु॥
॥४०८९॥४७०७॥

राग नट

कहियौ जसुमति की आसीस।
जहाँ रहौ तहँ नंद लाडिलौ, जीवौ कोटि बरीस॥
मुरली दई दोहनी घृत भरि, ऊधौ धरि लइ सीस।
यह तौ घृत उनहीं सुरभिनि कौ, जे प्यारी जगदीस॥

ऊधौ चलत सखा मिलि आए, ग्वाल वाल दस-वीस ।
अबकै यह व्रज फेरि बसावहु, सूरदास के ईस ॥
॥४०९०॥४७०८॥

राग बिलावल

(ऊधौ) देखत हौ जैसे व्रजवासी ॥
लेत उसाँस नैन-जल पूरत, सुमिर-सुमिरि अविनासी ॥
भूलि न उठत जसोदा जननी, मनौ भुवंगम डासी ।
छूटत नहीँ प्रान क्यौँ अटके, कठिन प्रेम की फाँसी ॥
आवत नहीँ नंद-मंदिर मैँ, भयौ फिरत वनवासी ।
परम मलीन धेनु दुर्बल, भईँ, स्याम बिरह की त्रासी ॥
गोपी ग्वाल सखा बालक सब, कहूँ न सुनियत हाँसी ।
काहेँ दियौ सूर सुख मैँ दुख, कपटी कान्ह बिसासी ॥
॥४०९१॥४७०९॥

राग सारंग

धन्य नंद, धनि जसुमति रानी ।
धन्य ग्वाल गोपी जु खिलाए, गोदहि सारँगपानी ॥
धनि व्रजभूमि धन्य वृंदावन जहँ अविनासी आए ।
धनि धनि सूर आज हमहूँ जो तुम सब देखे पाए ॥
॥४०९२॥४७१०॥

उद्धव आगमन, भ्रम-गीत सक्षेप *राग आसावरी*

हरि-रथ रतन जऱ्यौ सु अनूप दिखावै ।
जिहिँ मग कान्ह गयौ तिहिँ मग तैँ आवै ॥
तिहिँ मग आवै, सखिनि बुलावै, देखौ आनि विचारी ।
मुकुट कुँडल तन, पीत बसन कोउ, गोविँद की अनुहारी ॥
वेई भूषन निरखन लागीँ, तब लगि नेरैँ आए ।
ऊधौ जिन जानी, मन कुम्हिलानी, कृष्न सँदेस पठाए ॥
चलौ चलौ पूछैँ कछु बातैँ ।
कहि कहि ऊधौ हरि कुसलातैँ ।
कहि कुसलातैँ साँची बातैँ आवन कह्यौ कि नाहीँ ।
कै गरबाने राजस बाने अब चित हम न सुहाहीँ ॥

ठाढ़ी तन काँपैं, हेरैं छाकैं, बार बार अकुलाहीं।
अब जिय कपट कछू जनि राखौ पूछैं सौंहैं दिवाहीं॥
कहौ ऊधौ तुम क्यौं ब्रज आए।
तब हँसि कह्यौ हम कृष्न पठाए॥
कृष्न पठाए हम ब्रज आए कहत मनोहर बानी।
सुनौ सँदेसौ तजौ अँदेसौ तुम हौ चातुर सयानी॥
गोप सखा जिय मैं जनि राखौ, अबिगत हैं अबिनासी।
मोह न माया बैर न दाया, सब घट आपु निवासी॥
ऊधौ जनि कहौ प्रभु की प्रभुताई।
सुनि जिय अनख सही न रिस जाई॥
रिस नहिं जाई अनख बढ़्यौ अति, पुनि ह्याँ लौं चतुराई।
दासी कुबिजा नीच कुसंगति कौन वेदमति पाई॥
तुमहूँ भली कहन कौं आए, हमकौं भले सयाने।
जो कछु वस्तु देखियत नैननि, सो किन मनहीं माने॥
गोविंद की बातैं सब जानैं।
परबस भईं कहत सोइ मानैं॥
सब कोउ जानैं, क्यौं मन मानैं अब न कछू कहि आवै॥
जो कछु कुबिजा के मन भावै, सोई नाच नचावै।
वाकौं न्याउ दोष सब हमकौं, कर्म रेख को जानै॥
गोरस देखि जु राख्यो गाहक, बिधना की गति आनै॥
(ऊधौ) कमलनैन सौं कहियौ जाइ।
एक बेर ब्रज देखौ आइ।
जिनकैं प्रीति निरंतर मन मैं, सो मन क्यौं समुझावैं।
संकर, ब्रह्म, सेष अरु सुरपति, कोऊ हरि दरस न पावैं॥
वैसेइ रास बिलास कुलाहल, घर-घर माखन हरियै।
सूरदास प्रभु मिलत बहुत सुख, बिरह स्वास कत जरियै॥

॥४०९३॥४७११॥

उद्धव-वचन　　*राग भैरव*

मैं तुम पै ब्रजनाथ पठायौ। आतम ज्ञान सिखावन आयौ॥
आपुहिं पुरुष आपुहीं नारी। आपुहिं बानप्रस्थ ब्रह्मचारी।
आपुहिं पिता आपुहीं माता। आपुहिं भगिनी आपुहिं भ्राता॥

आपुहिँ पंडित आपुहिँ ज्ञानी। आपुहिँ राजा आपुहिँ रानी॥
आपुहिँ धरती आपु अकास। आपुहिँ स्वामी आपुहिँ दास॥
आपुहिँ ग्वाल आपुहीँ गाइ। आपुहिँ आपु चरावन जाइ॥
आपुहिँ भ्रमर आपुही फूल। आतम ज्ञान विना जग भूल॥
राव रंक दूजा नहिँ कोइ। आपुहिँ आपु निरंजन सोइ॥
इहि प्रकार जाकौ मन लागै। जरा मरन नासै भ्रम भागै॥
जोग समाधि ब्रह्म चित लावहु। परमानंद तवहिँ सुख पावहु॥

गोपी-वचन

जोगी होइ सो जोग बखानै। नवधा-भक्ति दास रति मानै॥
भजनानंद हमैँ अलि प्यारौ। ब्रह्मानँद सुख कौन विचारौ॥
बतियाँ रचि-रचि कहत सयानी। अँखियाँ हरि के रूप लुभानी॥
ब्यावर व्यथा न बंध्या जानै। विनु देखैँ कैसैँ रुचि मानै॥
पुनि पुनि वहै वहै सुधि आवै। कृष्ण रूप विनु और न भावै॥
नव किसोर जिन नैन निहार्‌यौ। कोटि जोग वा छवि पर वार्‌यौ॥
सीस मुकुट कुंडल बनमाला। क्यौँ बिसरैँ वै नैन बिसाला॥
मृगमद मलय अलक घुँघरारे। उन मोहन मन हरे हमारे॥
भृकुटी कुटिल नासिका राजै। अरुन अधर मुरली कल बाजै॥
दाड़िम दसन तड़ित द्युति सोहै। मृदु-मुसकानि जुवति मन मोहै॥
चंद्रक झलक कंठ मनि मोती। दूरि करत उडुपति की जोती॥
कंकन किंकिनि पदिक विराजै। गज गति चाल नूपुरनि बाजै॥
बन की धातु चित्रित तन कीए। श्रीवत्स चिह्न विराजत हीए॥
पीत बसन छवि बरनि न जाई। नखसिख सुंदर-कुँअर कन्हाई॥
रूप रासि ग्वारनि कौ संगी। कब देखैँ वह ललित त्रिभंगी॥
जौ तुम हित की बात बतावहु मदन गुपालहिँ क्यौँ न मिलावहु॥

उद्धव-वचन

जाकैँ रूप बरन वपु नाहीँ। नैन मूँदि चितवौ मन माहीँ॥
हृदय कमल तैँ जोति विराजै। अनहद नाद निरंतर बाजै॥
इड़ा पिंगला सुषमन नारी। सहज सुन्न मैँ बसहिँ मुरारी॥
माता पिता न दारा भाई। जल-थल घट घट रह्यौ समाई॥
इहिँ प्रकार भव दुस्तर तरिहौ। जोग पंथ क्रम-क्रम अनुसरिहौ॥

गोपी-वचन

हम व्रजबाल गोपाल उपासी । ब्रह्मज्ञान सुनि आवै हाँसी ॥
व्रज मैं जोग कहाँ तैं ल्यायौ । कुबिजा कूबर माहिं दुरायौ ॥
स्याम सुगाहक पाइ दिखायौ । सो माधव तुम हाथ पठायौ ॥
हम अबला ठगीं बिबस अहेरी । सो ठग ठग्यौ कंस की चेरी ॥
राम जनम सीता जु दुराई । बधु भई अब कुबिजा पाई ॥
तब सीता-बियोग दुख पायौ । अब कुबिजा पर हियौ सिरायौ ॥
नीरस ज्ञान कहा लै कीजै । जोग मोट दासी सिर दीजै ॥

उद्धव-वचन

पारब्रह्म अच्युत अबिनासी । त्रिगुन रहित प्रभु बरैं न दासी ॥
नहिं दासी ठकुराइनि कोई । जहँ देखौ तहँ ब्रह्म है सोई ॥
उर मैं आनौ ब्रह्महिं जानौं । ब्रह्म बिना दूजौ नहिं मानो ॥

गोप-वचन

खरे करौ अलि जोग सवारौ । भक्ति बिरोधी ज्ञान तुम्हारौ ॥
कहा होत उपदेसनि तेरैं । नैन सुबस नाहीं अलि मेरैं ॥
हरि-पथ जोवैं छिन छिन रोवैं । कृष्न बियोगी निमिष न सोवैं ॥
नदनँदन कौं देखैं जीवैं । जोग पथ पानी नहिं पीवैं ॥
जब हरि आवैं तब सचु पावैं । मोहन मूरति कंठ लगावैं ॥
दुसह बचन अलि हमैं न भावैं । जोग कहा ओढ़ैं कि बिछावैं ॥

उद्धव-वचन

ऊधौ कह्यौ धन्य ब्रजबाला । जिनके सरबस मदन गुपाला ॥
मैं कीन्हौ हो और उपाई । तुम्हरे दरस भक्ति निजु पाई ॥
तुम मम गुरु मैं दास तुम्हारौ । भक्ति सुनाइ जगत निस्तारौ ॥
भ्रमर गीत जो सुनै सुनावै । प्रेम-भक्ति गोपिन की पावै ॥
सूरदास गोपी बडभागी । हरि-दरसन की ढोरी लागी ॥
॥४०६४॥४७१२॥

राग जैतश्री

ऊधो कौ उपदेस सुनौ किन कान दै ।
हरि-निर्गुन संदेस पठायौ आन दै ॥

कोउ आवत उहिं ओर जहाँ नँद-सुवन पधारे।
वहै वेनु-धुनि होइ, मनौ आए व्रज प्यारे॥
धाईं सब गलगाजि कै, ऊधौ देखे जाइ।
लै आईं व्रजराज गृह, आनँद उर न समाइ॥
अर्घ आरती साजि तिलक दधि माथैं कीन्यौ।
कंचन कलस भराइ और परिकरमा दीन्यौ॥
गोप भीर आँगन भई, मिलि बैठी सब जाति।
जलझारी आगैं धरी, पूछत हरि कुसलाति॥
कुसल छेम वसुदेव कुसल देवै बलदाऊ॥
कुसल छेम अक्रूर कुसल नीक कुबिजाऊ॥
पूछि कुसल गोपाल की, रहे सबै गहि पाइँ।
प्रेम मगन ऊधौ भए, देखत व्रज के भाइ॥
मन मन ऊधौ कही, यौं न बूझियै गोपालहि।
व्रज कौ हेत बिसारि, जोग सिखवत व्रजबालहिं॥
इनकी प्रीति पतंग लौं जारति है सब देह।
वै हरि दीपक जोति ज्यौं नैकु न उनकैं नेह॥
तब ऊधौ कर लई लिखी हरि जू की पाती।
पढ़ी परति नहिं नैकु रहे निष्ठुर करि छाती॥
पाती बाँचि न आवई रहे नैन जल पूरि।
देखि प्रेम गोपीनि कौ ज्ञान गरब गयौ दूरि॥
फिरि इत उत वहराइ नीर नैननि कौ सोध्यौ।
ठानी कथा प्रमोधि बोलि सब घोप समोध्यौ॥
जो व्रत मुनि जन ध्यावहीं, पावहिं तऊ न पार।
सो व्रत सिखयौ गोपिका छाँडौ बिपय-बिकार॥
सुनि ऊधौ के बैन रहीं नीचे करि नारी।
मानौ माँगत सुधा आनि बिप-ज्वाला जारी॥
हम अहीरि कह जानईं, जोग जुगुति की रीति।
नंदनँदन व्रत छाँड़ि कै, को लिखि पूजै भीति॥

उद्धव-वचन

एकै अलख अपार आदि अविगत है सोई।
आदि निरंजन नाम ताहि रीझै सब कोई॥

इहिं तट तैं चलि जात नैकु उत, बिरह पवन झकझोरै।
सुरति वृच्छ सो मारि बाहुबल, टूक-टूक करि तोरै॥
हौं हूँ बूड़ि चल्यौ वा गहिरैं, केतिक बुडकी खाईं।
ना जानौं वह जोग बापुरो, कहँ धौं गयौ गुसाईं॥
जानत हुतौ थाह वा जल कौ, औ तरिबे कौ धीर।
सूर कथा जु कहा कहौं उनकी, परयौ प्रेम की भीर॥
॥४०९७॥४७१५॥

राग सारंग

जब मैं इहाँ तें जु गयौ।
तब ब्रजराज सकल गोपी जन, आगैं होइ लयौ॥
उतरे जाइ नंद बाबा कैं, सबहीं सोध लह्यौ।
मेरी सौं मौसौं साँची कहि, या कहा कह्यौ?
बारबार कुसल पूछी मोहिं, लै लै तुम्हरौ नाम।
ज्यौं जल तृषा बढ़ी चातक चित, कृष्न-कृष्न बलराम॥
सुंदर परम बिचित्र मनोहर, यह मुरली दै घाली।
लई उठाइ सुख मानि सूर-प्रभु, प्रीति आनि उर साली॥
॥४०९८॥४७१६॥

राग सारंग

सुनियै ब्रज की दसा गुसाईं।
रथ की धुजा पीत-पट भूषन देखत ही उठि धाईं॥
जो तुम कही जोग की बातैं, सो हम सबै बताईं।
श्रवन मूँदि गुन-कर्म तुम्हारे, प्रेम मगन मन गाईं॥
औरौ कछू सँदेस सखी इक, कहत दूरि लौं आई।
हुतौ कछू हमहूँ सौं नातौ, निपट कहा बिसराई॥
सूरदास प्रभु बन बिनोद करि, जे तुम गाइ चराई।
ते गाईं अब ग्वाल न घेरत, मानौ भईं पराईं॥
॥४०९९॥४७१७॥

राग सारंग

ब्रज के बिरही लोग दुखारे।
बिन गोपाल ठगे से ठाढ़े, अति दुर्बल तन कारे॥

नंद्र जसोदा मारग जोवति, निसि-दिन साँझ, सकारे।
चहुँ-दिसि कान्ह-कान्ह कहि टेरत, अँसुवन बहत पनारे॥
गोपी, ग्वाल, गाइ गो-सुत सब, अतिहीं दीन बिचारे।
सूरदास-प्रभु बिनु यौं देखियत, चद बिना ज्यौं तारे॥
॥४१००॥४७१८॥

राग केदारौ

हरि जू, सुनहु बचन सुजान।
बिरह व्याकुल छीन तन-मन, हीन लोचन-कान॥
यहै है संदेस ब्रज कौ, नाथ सुनहु निदान।
मैं सबै ब्रज दीन देख्यौ, तन बिना ज्यौं प्रान॥
तुम बिना सोभा नहीं प्रभु, ज्यौं दिवस बिनु भान।
आस साँस उसास घट मैं, अवधि आसा मान॥
जगत-जीवन, जगत पालक, जगत-नाथ, कृपाल।
करि जतन कछु सूर के प्रभु, ज्यौं जियैं ब्रज बाल॥
॥४१०१॥४७१६॥

राग सारंग

विनती एक सुनौ श्री स्याम।
चलन न देतिं, चल्यौ नहिं भावत, चलत कह्यौ आवन पट याम॥
तुम सर्वज्ञ सकल घट व्यापक, जीवन-पद, जन के बिस्राम।
संतत रहत कहत ढीठौ दै, स्याम सदा सेवक सुख धाम॥
वह रस-रीति प्रीति गोपिन की लिए रहतिं लीला, गुन, नाम।
सूरदास-प्रभु सब सुखदाता, तेऊ तौ नियरे नँद-ग्राम॥
॥४१०२॥४७२०॥

राग जैतश्री

सुनहु स्याम वै सब ब्रज-बनिता, बिरह तुम्हारैं भईं बावरी।
नाहीं बात और कहि आवति, छाँड़ि जहाँ लगि कथा रावरी॥
कबहुँ कहतिं हरि माखन खायौ, कौन बसै या कठिन गाँवरी।
कबहुँ कहतिं हरि ऊखल बाँधे, घर-घर ते लै चली दाँवरी॥
कबहुँ कहतिं ब्रजनाथ बन गए, जोवत-मग भई दृष्टि झाँवरी।
कबहुँ कहतिं वा मुरली महियाँ, लै-लै बोलत हमरौ नावँ री॥

कबहुँ कहति ब्रजनाथ साथ तैं, चंद उयौ है इहै ठाँव री।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, अब वह मूरति भई साँवरी॥
॥४१०३॥४७२१॥

राग बिहागरौ

हरि जू आए सो भली कीन्ही।
मो देखत कहि उठी राधिका, अंक तिमिर कौँ दीन्ही॥
तन अति कंप बिरह अति व्याकुल, उर धुकधुकि अति कीन्ही।
चलत चरन गहि रही गई गिरि, स्वेद सलिल भइ भीनी॥
छुटी न भुज, टूटी बलयावलि, फटी कचुकी झीनी।
मनौ प्रेम की परनि परेवा, याही तैं पढ़ि लीनी॥
अवलोकत इहिं भाँति रमापति, मानौ अहि मनि छीनी।
सूरदास-प्रभु कहौँ कहाँ लौं, भई अयान मतिहीनी॥
॥४१०४॥४७२२॥

राग सोरठ

तुम्हारी भावती कह्यौ।
यह कहियौ नँद-नंदन आगैं, अति दुख दुसह सह्यौ॥
लेति उसाँस सोच निसि-दिन के, नैकु न रूप रह्यौ।
बिगलित केस बदन छबि ऐसी, जनु ससि राहु गह्यौ॥
माखन काढ़ि कूबरी लीन्हौ, ब्रज मैं रह्यौ मह्यौ।
सूर स्याम रति जाम प्रेम पय, बहुरौ जम्यौ कह्यौ॥
॥४१०५॥४७२३॥

राग मलार

सुनहु स्याम यह बात और कोउ क्यौं समुझाइ कहै।
दुहुँ दिसि कौ अति बिरह बिरहिनी, कैसैं कै जु सहै॥
जब राधा तबहीं मुख माधौ, माधौ रटत रहै।
जब माधौ ह्वै जात सकल तन, राधा-बिरह दहै॥
उभै अग्र दव दारु कीट ज्यौं, सीतलताहिं चहै।
सूरदास अति बिकल बिरहिनी, कैसैंहु सुख न लहै॥
॥४१०६॥४७२४॥

राग केदारौ

चित दै सुनौ स्याम प्रवीन ।
हरि तुम्हारैं विरह राधा, मैं जु देखी छीन ॥
तज्यौ तेल तमोल भूषन, अंग वसन मलीन ।
कंकना कर रहत नाहीं, टाड़ भुज गहि लीन ॥
जब सँदेसौ कहन सुंदरि, गवन मो तन कीन ।
छुटी छुद्रावलि चरन अरुझी गिरी बल हीन ॥
कठ वचन न बोलि आवै, हृदय परिहस भीन ।
नैन जल भरि रोइ दीनौ, ग्रसित आपद दीन ॥
उठी बहुरि सँभारि भट ज्यौं, परम साहस कीन ।
सूर हरि के दरस कारन, रही आसा लीन ॥

॥४१०७॥४७२५॥

फिरि ब्रज बसौ नंदकुमार ।
हरि तिहारे विरह राधा, भई तन जरि छार ॥
बिनु अभूषन मैं जु देखी, परी है बिकरार ।
एकई रट रटत भामिनि, पीव पीव पुकार ॥
सजल लोचन चुअत उनके, बहति जमुना धार ।
बिरह अगिनि प्रचंड उनकैं, जरे हाथ लुहार ॥
दूसरी गति और नाहीं, रटति बारंबार ।
सूर प्रभु कौ नाम उनकैं, लकुट अंध अधार ॥

॥४१०८॥४७२६॥

राग केदारौ

सुनहु स्याम सुजान, तिय गज-गामिनी की पीर ।
बिरह सर गंभीर ग्राह जु, ग्रसी काम अधीर ॥
सोच पंक जु सनी सुंदरि, मोच नैननि नीर ।
चक्र लै कै बेगि धावहु, करि कृपा बलबीर ॥
नहीं कछु सँभार बिह्वल, बिकल भई सरीर ।
काटि दुःख समूह फंदनि, काढ़ि आनहु तीर ॥
कहा जानि छँड़ाइ लीन्हौ, द्विरद दीनदयाल ।
सूर प्रभु न बिसारियै जू, राधिका सी बाल ॥

॥४१०९॥४७२७॥

राग केदारौ

भरि-भरि लेति ऊरध स्वास।
साँवरे ब्रजनाथ तुम बिन, दुखित मनसिज त्रास।
अमित पीर अधीर डोलति, सुमिरि नैन बिलास।
तेइ सुख दुख भए दारुन, जे किए रस-रास॥
निगम गुरुजन लोग निदरत, जग करत उपहास।
सूर तुम बिनु बिकल बिरहिनि, मरति दरसन प्यास॥
॥४११०॥४७२८॥

राग केदारौ

भरि-भरि लेति लोचन नीर।
तुम बिना ब्रजनाथ सुदरि बिरह खेद अधीर॥
कमल-उर पर धरति छिन-छिन छिरकि चदन चीर।
जाल-मग ससि-किरन रोकति मलय मद समीर॥
हौं इहाँ तुम पास आयौ देखि मनसिज भीर।
सूरदास सुजान श्रीपति मिलि हरहु तन-पीर॥
।४१११ ४७२९॥

राग धनाश्री

उमँगि चले दोउ नैन बिसाल।
सुनि सुनि यह सदेस स्याम घन, सुमिरि तुम्हारे गुन गोपाल॥
आनन अरु उरजनि के अंतर, जलधारा बाढ़ी तिहिं काल।
मनु जुग जलज सुमेरु सृग तैं जाइ मिले सम ससिहिं सनाल॥
भीँजे उर अचल अति राजित तिन तरहरि मुक्तनि की माल।
मानौ इदु नवल नलिनी दल, लंकृत अमी असु-कन-जाल॥
कहँ वह प्रीति रीति राधा की, कहँ यह करनी उलटी चाल।
सूरदास प्रभु कपट बचन तैं, क्यों जीवै बिरहिनि बेहाल॥
॥४११२॥४७३०॥

राग मारू

तुम्हरे बिरह ब्रजनाथ राधिका नैननि नदी बढ़ी।
लीने जात निमेष कूल दोउ, एते मान चढ़ी॥
चलि न सकत गोकुल नाका लौं, सींचि पलक बल बोरति।
ऊर्ध्व उसाँस समीर तरगनि, तेज तिलक तरु तोरति॥

कज्जल कीच कुचील किए तट, अंबर अधर कपोल।
रहे पथिक जु जहाँ सु तहाँ थकि, हस्त चरन मुख बोल॥
नाहीँ और उपाय रमापति, बिनु दरसन क्यौँ जीजै।
आँसु सलिल बूड़त सब गोकुल, सूर स्वकर गहि लीजै॥
॥४११३॥४७३१॥

राग मलार

नैन घन घटत न एक घरी।
कबहुँ न मिटति सदा पावस ब्रज, लागी रहत झरी॥
बिरह इंद्र बरषत निसि बासर, इहिँ अति अधिक करी।
ऊर्ध उसाँस समीर तेज जल, उर भू उमँगि भरी॥
बूड़त भुजा रोम द्रुम अंबर, अरु कुच उच्च थरी।
चलि न सकत पद रेह पंथ की, चंदन कीच खरी॥
सब रितु भई एक सी इहिँ ब्रज इहिँ बिधि उलटि धरी।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे बिछुरे, सब मरजाद टरी॥
॥४११४॥४७३२॥

राग केदारौ

देखी मैँ लोचन चुवत अचेत।
मनहु कमल ससि त्रास ईस कौ, मुक्ता गनि-गनि देत॥
कहुँ कंकन कहुँ गिरी मुद्रिका, कहूँ ताड़ कहुँ नेत।
चेतति नहीँ चित्र की पुतरी, समुझाई सौचेत॥
द्वार खरी इकटक मग जोवति, ऊर्ध उसाँसनि लेत।
सूरदास कछु सुधि नहिँ तन की, बँधी बिहारैँ हेत॥
॥४११५॥४७३३॥

राग मलार

नैननि होड़ बदी बरषा सौँ।
दवस बरषत झर लाए, दिन दूनी करषा सौँ॥
चारि मास बरषैँ जल खूँटै, हारि समुझि उन मानी।
ये तेहूँ पर धार न खंडत, इनकी अकथ कहानी॥
एते मान चढ़ाइ चढ़ी अति तजी पलक की सींव।
मैँ जानी दीनी उन मानौ, महाप्रलय की नींव॥

तुम पै होइ सु करहु कृपानिधि, ये ब्रज के ब्यौहार।
अबकी बेर पाछिले नातैं, सूर लगावहु पार॥
॥४११६॥४७३४॥

राग गौरी

ब्रज तैं द्वै रितु पै न गई।
ग्रीषम अरु पावस प्रवीन हरि, तुम बिनु अधिक भई॥
ऊर्ध उसास समीर नैन घन, सब जल जोग जुरे।
बरषि प्रगट कीन्हे दुख दादुर, हुते जो दूरि दुरे॥
विषम बियोग जु वृष दिनकर सम, हिय अति उदौ करै।
हरि-पद-बिमुख भए सुनि सूरज, को तन ताप हरै॥
।४११७॥४७३५॥

राग कान्हरौ

नाहीं कछु सुधि रही हिए।
सुनहु स्याम वे सखी राधिकहिं, जुगवतिं जतन किए॥
सैन सूच, नख लिखतिं किसलयनि, स्रवन न सब्द छिए।
कर कफन कोकिला उडावतिं, बिनु मुख नाम लिए॥
ससि संका निसि जालनि के मग, बसन बनाइ सिए।
दिसि दिसि सीत समीरहिं रोकतिं, अनल ओट दिए॥
मृगमद मलय परसि तन तलफत, जनु बिष बिषम पिए।
जो न इते पर मिलहु सूर प्रभु, तौ जानिबी जिए॥
॥४११८॥४७३६॥

राग गौरी

कहाँ लौं कहिऐ ब्रज की बात।
सुनहु स्याम तुम बिनु उन लोगनि, जैसैं दिवस बिहात॥
गोपी ग्वाल गाइ गोसुत सब, मलिन बदन कृस गात।
परम दीन जनु सिसिर हेम हत, अंबुजगन बिनु पात॥
जो कोउ आवत देखि दूरि तैं, उठि पूछत कुसलात।
चलन न देत प्रेम आतुर उर, कर चरननि लपटात॥
पिक चातक बन बसन न पावत, वायस बलि नहिं खात।
सूर स्याम सदेसनि कैं डर, पथिक न उहि मग जात॥
॥४११९॥४७३७॥

राग मलार

ब्रज की कहि न परति हैं बातैं।
गिरि-तनया पति भूषन जैसैं, बिरह जरी दिन रातैं॥
मलिन बसन हरि हित अंतरगति, तन पीरौ जनु पातैं।
गदगद बचन नैन-जल-पूरित, बिलख बदन कृस गातैं॥
मुक्ता तात भवन तैं बिछुरैं मीन मकर बिललातैं।
सारँग-रिपु-सुत-सुहृद पति बिना, दुख पावत बहु भाँतैं॥
हरि सुर भपन बिना बिरहाने, छीन भई तन तातैं।
सूरदास गोपिनि परतिज्ञा, मिलहु पहिलैं के नातैं॥
।४१२०॥४७३८॥

राग नट

कहि न परति हरि ब्रज की बात।
नर नारी पंछी द्रुम बेली, दरसन कौं अकुलात॥
जब तुम हे तब बनफल फलते, तहँ अब पुहुप न पात।
क्रीड़त नाहिं कपोत कुलाहल करत नहीं उठि प्रात॥
गो-मृग निकसि नवाइ नैन मुख, अति दुख तृन नहिं खात।
गोपी ग्वाल उसास हुतासन, बिरह ज्वाल अकुलात॥
गोकुल की यह बिपति कहा कहौं, तुम बिनु हो जदुनाथ।
सूरदास स्वामी दरसन की करत सुरति दिन-रात॥
॥४१२१॥४७३९॥

राग कल्याण

रहति रैनि-दिन हरि-हरि-हरि रट।
चितवतिं इकटक मग चकोर लौं, जब तैं तुम बिछुरे नागर नट॥
भरि भरि नैन नीर ढारतिं हैं, सजल करति अति कंचुकि के पट।
मनहु बिरह की बिज्जुरता लगि, लियौ नेम सिव सीस सहस घट॥
जैसैं जब के अग्र ओस कन, प्रान रहत ऐसैं हि अवधिहिं तट।
सूरदास-प्रभु मिलहु कृपा करि, जे दिन कहे तेउ आए निकट॥
॥४१२२॥४७४०॥

राग सारंग

दिन दस घोष चलहु गोपाल।
गाइनि की अवसेरि मिटावहु, मिलहु आपने ग्वाल॥

नाचत नहीं मोर ता दिन तैं रटत न बरषा काल।
मृग दुबरे तुम्हरे दरसन, बिनु सुनत न बेनु रसाल ॥
बृंदावन हर्यो होत न भावत, देख्यौ स्याम तमाल।
सूरदास मैया अनाथ है, घर चलिये नंदलाल ॥

॥४१२३॥४७४१॥

कृष्ण-वचन राग सोरठ

ऊधौ भलौ ज्ञान समुझायौ।
तुम मोसौं अब कहा कहत हौ, मैं कहि कहा पठायौ ॥
कहवावत हौ बडे चतुर पै, उहाँ न कछु कहि आयौ।
सूरदास ब्रज-बासिन कौ हित, हरि हिय माहँ दुरायौ ॥

॥४१२४॥४७४२॥

उद्धव-वचन राग सारग

मैं समुझाई अति अपनौं सो।
तदपि उन्हें परतीति न उपजी, सबै लख्यो सपनौ सो ॥
कही तुम्हारी सबै कही मैं, और कही कछु अपनी।
स्रवननि बचन सुनत भइ उनकैं, ज्यौं घृत नाएँ अगनी ॥
कोऊ कहौ बनाइ पचासक, उनकी बात जु एक।
धन्य धन्य ब्रजनारि बापुरी, जिनकी और न टेक ॥
देखत उमग्यौ प्रेम इहाँ कौ, धरे रहे सब ऊलौ।
सूर स्याम हौं रह्यौ थक्यौ सो, ज्यौं मृग चौका भूलौ ॥

॥४१२५॥४७४३॥

राग सारग

बातैं सुनहु तौ स्याम सुनाऊँ।
जुवतिनि सौं कहि कथा जोग की, क्यौं न इतौ दुख पाऊँ ॥
हौं पचि एक कहौं निरगुन की, ताहू मैं अटकाऊँ।
वै उमडैं बारिधि के जल ज्यौं, क्यौंहूँ थाह न पाऊँ ॥
कौन कौन कौ उत्तर दीजै, तातैं भज्यौ अगाऊँ।
वै मेरे सिर पटिया पारैं, कथा काहि उढाऊँ ॥
एक आँधरो, हिय की फूटी, दौरत पहिरि खराऊँ।
सूर सकल षट दरसन वै, हौं बारहखरी पढाऊँ ॥

॥४१२६॥४७४४॥

राग सारंग

सुनि लीन्ह्यौ उनहीं कौ कह्यौ ।
अपनी चाल समुझि मन ही मन, गुनि अरगाइ रह्यौ ॥
अबलनि सौं न कही परै जु पै, वात तोरि करि कानि ।
अनबोले पूरौ दै निबह्यौ, वहुत दिननि की जानि ॥
जानि वूझि कै कत हौं पठयौ, सठ बावरौ अयानौ ।
तुमहूँ वूझि वहुत वातनि के, उहाँ जाहु तौ जानौ ॥
अज्ञाभग होइ क्यौं मो पै, गयौ तुम्हारे ठीले ।
सूर पठावन ही की ओरी, रह्यौ जुगुति सौं लीले ॥
॥४१२७॥४७४५॥

राग मलार

हरि हौं वहुत दाउँ दै हार्‌यौ ॥
अज्ञाभंग होइ क्यौं मोपै, वचन तिहारौ पार्‌यौ ॥
हारि मानि उठि चल्यौ दीन ह्वै मानि अपुन तन खेद ।
जानि लियौ थोरैं मैं थोरौ, प्रेम न रोकै वेद ।
ऊतर कौ ऊतर नहिं आवै, तब उनहीं मिलि जात ॥
मेरी वात कहा, ब्रह्मा हू, अर्ध-वचन मैं मात ।
अपनी चाल जानि मनही मन, चल्यौ घसीठी तोरि ॥
सूर एकहू अंग न काँची, मैं देखी टकटोरि ॥
॥४१२८॥४७४६॥

राग देवगंधार

हौं हरि अधर दाउँ दै हार्‌यौ ।
कहौं कहा निरगुन की बातैं, उनको प्रेम निन्यारौ ॥
जो हौं कहौं प्रात बातैं वे, निस दिन कथा चलावैं ।
उनकी प्रीति देखि सब भूलन कछू मर्म नहिं पावैं ॥
तन, मन, प्रान सबै हरि अरपन, कमलनैन कौ ध्यान ।
निसि-बासर उनकैं यह चरचा, और न दूजौ ज्ञान ॥
कौन भाँति करि जोग सिखाऊँ, भूलि गईं सुख बातैं ।
सूर सकल वे स्याम उपासी, मोकौं मारत लातैं ॥
॥४१२९॥४७४७॥

राग मलार

कहिबे मैं न कछू सक राखी।
बुधि बिवेक अनुमान आपनैं, मुख आई सो भाषी॥
हौं मरि एक कहौं पहरक मैं, वै पल माहिं अनेक।
हारि मानि उठि चल्यौ दीन ह्वै, छाड़ि आपनी टेक॥
हौं पठयौ कतहीं वे काजै, सठ मूरख जु अयानौ।
तुमहिं बूझ बहुतै बातनि की, उहाँ जाहु तौ जानौं॥
श्री मुख के सिखए ग्रथादिक, ते सब भए कहानी।
एक होइ तौ उत्तर दीजै, सूर सु मठी उफानी॥
॥४१३०॥४७४८॥

राग सोरठ

माधौ जू जोग कौ बोझ ढह्यौ।
स्याम सुमुख बिधु बचन सुधा-रस, सो पुनि कछु न कह्यौ॥
नव-नव भाव तरंग महोदधि, सखि लोचन उमह्यौ।
तुम जो कह्यौ ज्ञान कौ मारग, पानी ह्वै सु वह्यौ॥
सकल सिंगार हार रस सरबस, ब्रज नवनीत लह्यौ।
छूँछे भाँड़े परयौ न पावै, लिखि तुम दियौ मह्यौ॥
मोहिं आचरज एक पै लागत, तुम पै जात सह्यौ।
सूर स्याम सुनि सखा सयानौ लै भुज बीच गह्यौ॥
॥४१३१॥४७४९॥

राग नट

कोऊ सुनत न बात हमारी।
मानैं कहा जोग जादवपति, प्रगट प्रेम ब्रजनारी॥
कोउ कहति हरि गए कुंज-बन, सैन धाम वै देत।
कोऊ कहति इंद्र बरषा तकि, गिरि गोवर्धन लेत॥
कोऊ कहति नाग काली सुनि, हरि गए जमुना तीर।
कोऊ कहति अघासुर मारन, गए संग बलबीर॥
कोऊ कहत ग्वाल बालनि सँग, खेलन बनहिं लुकाने।
सूर सुमिरि गुन नाथ तुम्हारे, कोऊ कह्यौ न माने॥
॥४१३२॥४७५०॥

राग सारंग

हरि तुम्हैं वारंवार सम्हारैं।
कहौ तौ सब जुवतिनि के नाम कहौं, जे हित सौं उर धारैं॥
कबहुँक आँखि मूँदि कै चाहतिं, सब सुख अधिक तिहारैं।
तब प्रसिद्ध लीला सँग विहरतिं, अब चित डोर विहारैं॥
जाकौं कोऊ जिहिं विधि सुमिरै, सोऊ तिहिं हित मानै।
उलटी रीति सबै तुम्हरी है, हम तौ प्रगट कहि जानैं॥
जो पतिया तुम लिखि पठवत हौ, बाँचि समुझि सब पाउ।
सूर स्याम हैं पलक धाम मैं, लखि चित कत बिललाउ॥
॥४१३३॥४७५१॥

राग सारग

माधो जू कहा कहौं उनकी गति।
देखत बनै कहत नहिं आवै, अति प्रतीति तुम तैं रति॥
जद्यपि हौं षट मास रह्यौ ढिग, लही नहीं उनकी मति।
तासौं कहौं सबै एकै बुधि, परमोधी नहिं मानति॥
तुम कृपालु करुनामय कहियत, तातैं मिलत कहा छति।
सूरदास-प्रभु सोई कीजै, जातैं तुम पावहु पति॥
॥४१३४॥४७५२॥

राग केदारौ

अब जनि बाँधिबेहिं डराहु।
दूध दधि माखन मनोहर, डारि देहु अरु खाहु॥
सदा बैठे घोप रहियौ, बन न दैहैं जान।
पलकहूँ भरि दुख न दैहैं, राखिहैं ज्यौं प्रान॥
सब तिहारौ कह्यौ करिहैं, वचन माथैं मानि।
परम चतुर सुजान एते, माँझ लीजौ जानि॥
अब न कबहूँ चूक परिहै, यह हमारौ बोल।
किंकिरिनि की लाज धरि, ब्रज सुबस करहु निठोल॥
समुझि निज अपराध करनी, नार नावतिं नीच।
बहुत दिन तैं बरति हैं, द्वै आँखि दीजै सींच॥
मन वचन अरु कर्मना 'कछु, कहत नाहीं राखि।
सूर-प्रभु यह बोल हिरदै, सात राजा साखि॥
॥४१३५॥४७५३॥

राग सारंग

कहत न बनै ब्रज की रीति।
कहा मोँ सठ काँ पठायौ, देखि उनकी प्रीति॥
जुवति वल्लभ कत कहावत, करत सकल अनीति।
मोहि तौ यह कठिन लागत, क्यों करौं परतीति॥
सुनौ धौँ दै कान अपनी, लोक-लोकनि कीति।
सूर प्रभु अपनी सचाई, रही निगमनि जीति॥

॥४१३६॥४७५४॥

राग नट

परम वियोगिनी सब ठाढ़ी।
ज्यौँ जलहीन दीन कुमुदिनि बन, रवि-प्रकास की डाढी॥
जिहिँ बिधि मीन सलिल तैँ बिछुरै, तिहिँ अति गति अकुलानी।
सूखे अधर न कहि आवै कछु, बचन रहित मुख बानी॥
उन्नत स्वास बिरह बिरहातुर, कमल बदनि कुम्हिलानी।
निदर्ति नैन निमेष छिनहिँ छिन, मिलन कठिन जिय जानी॥
बिनु बुधि बल बिचित्र कृत सोभित, चलि न सकी पचि हारी।
सूरदास प्रभु अवधि लागि नतु प्रान तजति ब्रजनारी॥

॥४१३७॥४७५५॥

राग मारू

सबै ब्रज घर-घर एकै रीति।
ज्यौँ कुरुखेत गडे कौ सोनौ, त्यौँ प्रभु तुम्हरी प्रीति॥
वै सब परम विचित्र सयानी, अरु सब हीँ जग कीति।
उनकौ ज्ञान सुनत हौं सठ भयौँ, ज्यौं बारू की भीति॥
एकै गहन गही उन हठ करि, मेटि बेद-बिधि नीति।
गोप बेप भजि सूर स्याम कैं, रहीँ बिस्व वर जीति॥

॥४१३८॥४७५६॥

राग धनाश्री

ब्रज मैं एकै धरम रह्यौ।
स्रुति सुमृति औ बेद पुराननि, सबै गोबिंद कह्यौ॥

बालक वृद्ध तरुन अबलनि कौ, एक प्रेम निबह्यौ।
सूरदास-प्रभु छाड़ि जमुन जल, हरि की सरन गह्यौ

॥४१३९॥४७५७॥

राग केदारौ

ब्रज जन दुखित अति तन छीन।
रटत इकटक चित्त चातक, स्याम घन-तन लीन॥
नाहिँ पलटत बसन भूषन, दृगनि दीपक तात।
बिलख बदन मलीन तन ज्यौं, तरनि बिनु जल-जात॥
कहत जो तुम कहे सो मत, पच्यौ करि उपदेस।
धरत जल ज्यौं नलिनि दल नहिँ, बचन उर न प्रबेस॥
धरे मुरली मोर चंद्रिक, पीत-पट बनमाल।
रही वह छबि अंग अंगनि, लपटि स्याम तमाल॥
दिवस बितवतिं सकल जन मिलि, कहत गुन बलबीर।
रैनि उडुपति निरखि तलफतिँ मीन ज्यौं बिनु नीर॥
होहु करुनानाथ बंधू, गहे ऊधौ पाइ।
सूर-प्रभु अब दरस दैके, लेहु मरत जिवाइ॥

॥४१४०॥४७५८॥

राग सारंग

तब तैँ इन सबहिनि सचु पायौ।
जब तैँ हरि सँदेस तुम्हारौ, सुनत ताँवरौ आयौ॥
फूले ब्याल दुरे ते प्रगटे, पवन पेटि भर खायौ।
खोले मृगनि चौक चरननि के, हुतौ जु जिय बिसरायौ॥
ऊँचे बैठि बिहंग सभा मैं सुक बनराइ कहायौ।
किलकि-किलकि कुल सहित आपनैं, कोकिल मंगल गायौ॥
निकसि कंदराहू तैं केहरि, पूँछ मूड़ पर ल्यायौ।
गहवर तैं गजराज आइकै, अंगहिं गर्व बढ़ायौ॥
अब जनि गहरु करहु हो मोहन, जो चाहत हौ ज्यायौ।
सूर बहुरि ह्वै है राधा कौं, सब बैरिन कौ भायौ॥

॥४१४१॥४७५९॥

राग धनाश्री

आजु बिरहिनी बिरह तुम्हारैं, कैसो रटति रहीँ।
चारि जाम निसि तुम्हरोइ सुमिरन, और न बात कहीँ॥

बासर कथा कठिन करि करि मन, क्रम-क्रम व्यथा सहीं।
संध्या ससि दव जानि चलीं उठि, रहतिं न अंक गहीं॥
अति श्रम मलय कुकुमा सींचत, सरिता सेज नहीं।
ते क्यौं सीतल होहिं सूर अब पिया वियोग दहीं॥
॥४१४२॥४७६०॥

राग सारंग

कान्ह तुम्हारी विकल बिरहिनी, बिलपतिं बिरह बिगोयँ।
अति आरति न सम्हारति तन मन, इकटक लोमग जोयँ॥
काजर मिलि लोचन बरषत अति, दुख सुख की छवि रोय।
राहु केतु मानौं सुमीडि बिधु, अरु छुड़ावत धोयँ॥
अबला कहा जोग मत जानैं, मनमथ व्यथा बिलोयँ।
सूरदास क्यौं नीर चुवत है, नीरस बसन निचोयँ॥
॥४१४३॥४७६१॥

राग सोरठ

माधौ जू सुनौ ब्रज कौ प्रेम।
सोधि मैं षट मास देख्यौ, गोपिकनि कौ नेम॥
हृदय तैं नहि टरत टारे, स्याम राम समेत।
आँसु-सलिल प्रवाह मानौ, अर्घ नैननि देत॥
चँवर अंचल कुच कलस, बर पानि पद्म चढाइ।
सुमिरि तुम्हरी प्रगट, लीला, कर्म उठतीं गाइ॥
देह गेह सनेह अर्पन कमल-लोचन ध्यान।
सूर उनकौ प्रेम देखैं, फीकौ लागत ज्ञान॥
॥४१४४॥४७६२॥

राग सारंग

माधौ जू सुनियै ब्रज व्यवहार।
मेरौ कह्यौ पवन कौ भुस भयौ, गावत नंदकुमार॥
एक ग्वाल गोसुत ह्वै रेंगत, एक लकुट कर लेत।
एक मंडली करि बैठारत छाक बाँटि इक देत॥
एक ग्वाल नटवर बपु लीला, एक कर्म गुन गावत।
बहुत भाँति करि मैं समुझायौ, एक न उर मैं आवत॥

निसि वासर येही ढँग सब ब्रज, दिन दिन नव तन प्रीति।
सूर सकल फीकौ लागत है, देखत वह रस रीति॥
॥४१४५॥४७६३॥

राग मलार

बातैं बूझत यौं बहरावति।
सुनहु स्याम वै सखी सयानी, पावस रितु राधेहिं न सुनावतिं॥
घन देखत गिरि कहतिं कुसल मति, गरजत, गुहा सिंह समुझावतिं।
नहिं दामिनि द्रुम दवा सैल चढ़ि, करि बयारि उलटी झर धावति॥
नाहिंन मोर बकत पिक दादुर, ग्वाल-मंडली खगनि खिलावति।
नहिं नभ वृष्टि झरत झरना जल, परि-परि बुंद उचटि इत आवति॥
कबहुँक प्रगट पपीहा बोलत, कहि कुपच्छि कर तारि बजावतिं।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु, सो बिरहिनि इतनौ दुख पावतिं॥
॥४१४६॥४७६४॥

राग नट

नैकहु सोच न काहू कीन्हौ।
सुनि ब्रजनाथ सबनि के औगुन, मिलि मिलि है दुख दीन्हौ॥
रितु बसंत अनसमै अधम मति, पिक सहाइ लै धावत।
प्रीतम संग जानि जुबती रुचि, बोलेहूँ नहिं आवत॥
सदा सरद रितु सकल कला लै, सनमुख रहत जुन्हाई।
सो सित पच्छ कुहू सम बीतत, कबहुँ न देत दिखाई॥
त्रिबिध समीर सुमन सौरभ मिलि, मत्त मधुप गुंजार।
जोइ-जोइ रुचै सो कियौ बाँधि बल, तजि मन सकुच बिचार॥
रतिपति अति अनीति करिबे कौं, कोटि धूम-धुज मानौ।
लै कर धनुष चितै तुम्हरौ मुख, अब बोलै तब जानौ॥
इहिं बिधि सबनि बीच पायौ ब्रज, काढ़त बैर दुरासी।
सूरदास-प्रभु बेगि मिलहु अब, पिसुन करत सब हाँसी॥
॥४१४७॥४७६५॥

राग सारंग

सब तैं परम मनोहर गोपी।
नंद-नँदन के नेह मेह जिन, लोक लीक लोपी॥

बरु कुब्जा के रंगहिं राँचे, जदपि तजी सोपी।
तदपि न तजे भजे निसि बासर, नैकहुँ नहिं कोपी॥
ज्ञान कथा कौं मथि मन देख्यौ, ऊधौ बहु धोपी।
टरतिं घरी छिन नेकु न अँखियाँ, स्याम रूप रोपी॥
जिती हुती हरि के अवगुन की, ते सबही तोपी।
सूरदास-प्रभु प्रेम हेम ज्यौं, अधिक आप ओपी॥
॥४१४८॥४७६६॥

राग सारंग

मो मन उनहीं कौ जु भयौ।
परयौ प्रभु उनकैं प्रेम कोस मैं, तुमहूँ बिसरि गयौ।
तुमसौं सपथ करि गयौ मोहन, बेगि कह्यौ हो आवन॥
तिनहि देखि वैसोइ मैं ह्वै रह्यौ, लग्यौ उनहिं मिलि गावन।
समुझि परी षट् मास बितीते, कहाँ हुतो हो आयो।
सूर अनकही दै गोपिनि सौं, स्रवन मूँदि उठि धायौ॥
॥४१४९॥४७६७॥

राग देवगंधार

उनमैं पाँचौ दिन जौ बसियै।
नाथ तुम्हारी सौं जिय उपजत, बहुरि अपुनपौ कसियै॥
वह बिनोद वह लीला रचना, देखे ही बनि आवै।
मोकौं बहुरि कहाँ वैसौ सुख, बडभागी जो पावै॥
मनसा बाचा और कर्मना, हौं न कहत कछु राखी।
सूर काढ़ि डारयौ ब्रज तैं ज्यौं, दूध माँझ तैं माखी॥
॥४१५०॥४७६८॥

राग सोरठ

माधौ जू मैं अतिही सचु पायौ।
अपनौ जानि सँदेस ब्याज करि, ब्रज जन मिलन पठायौ॥
छमा करौ तौ करौं बीनती, उनहिं देखि जो आयौ।
श्रीमुख ग्यान पथ जौ उचरयौ, सो पै कछु न सुहायौ॥
सकल निगम सिद्धांत जन्म क्रम, स्यामा सहज सुनायौ।
नहिं स्रुति, सेष, महेस प्रजापति, जो रस गोपिनि गायौ॥

कटुक-कथा लागी मोहिं मेरी, वह रस सिंधु उम्हायौ।
उत तुम देखे और भाँति मैं, सकल तृषा जु बुझायौ॥
तुम्हरी अकथ कथा तुम जानौ, हम जन नाहिं बसायौ।
सूर स्याम सुंदर यह सुनि कै, नैननि नीर बहायौ॥
॥४१५१॥४७६९॥

राग सारग

ब्रज मैं संभ्रम मोहि भयौ।
तुम्हरौ ज्ञान सदेसौ प्रभु जू सबै जु भूलि गयौ॥
तुमहीं सौं बालक किसोर वपु, मैं घर-घर प्रति देख्यौ।
मुरलीधर घन स्याम मनोहर, अद्भुत नटवर पेख्यौ॥
कौतुक रूप ग्वाल बृंदनि सँग गाइ चरावन जात।
साँझ प्रभातहिं गो दोहन मिस, चोरी माखन खात॥
नँद नंदन अनेक लीला करि, गोपिनि चित्त चुरावत।
वह सुख देखि जु नैन हमारे, ब्रह्म न देख्यौ भावत॥
करि करुना उन दरसन दीन्हौ, मैं पचि जोग बह्यौ।
छन मानहु षट्मास सूर-प्रभु देखत भूलि रह्यौ॥
॥४१५२॥४७७०॥

राग सारग

ब्रज मैं एक अचंभौ देख्यौ।
मोर मुकुट पीतांबर धारे, तुम गाइनि सँग पेख्यौ॥
गोप बाल सँग धावत तुम्हरैं तुम घर घर प्रति जात।
दूध दहीऽरु मही लै ढारत, चोरी माखन खात॥
गोपी सब मिलि पकरतिं तुमकौं, तुम छुड़ाइ कर भागत।
सूर स्याम नित प्रति यह लीला, देखि देखि मन लागत॥
॥४१५३॥४७७१॥

राग मलार

जौ पै प्रभु करुना के आले।
तौ कत कठिन कठोर होत मन, मोहिं बहुत दुख साले।
गहौ बिरद की लाज दीन हित, करि सुदृष्टि ब्रज देखौ।
मोसौं बात कहत किन सन्मुख, कहा अवनि अवलेखौ॥

निगम कहत बस होत भक्ति तैं, सोऊ है उन कीनी ।
सूर उसाँस छाँडि हा-हा-ब्रज जल अँखिया भरि लीनी ॥
।४१५४॥४७७२॥

राग मारू

सुनि ऊधौ मोहिं नैकु न बिसरत वै ब्रजबासी लोग ।
न उनकौ कछु भली न कीन्ही, निसि दिन दियौ वियोग ॥
उ वसुदेव-देवकी मथुरा, सकल राज-सुख भोग ।
ग्रपि मनहिं बसत बसी बट, बन जमुना संजोग ॥
उत रहत प्रेम अवलंबन, इत तैं पठयौ जोग ।
र उसाँस छाँड़ि भरि लोचन, बढ्यौ बिरह ज्वर सोग ॥
॥४१५५॥४७७३॥

राग मारू

ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं ।
बृंदावन गोकुल बन उपबन, सघन कुंज की छाहीं ॥
प्रात समय माता जसुमति अरु नंद देखि सुख पावत ।
माखन रोटी दह्यौ सजायौ, अति हित साथ खवावत ॥
गोपी ग्वाल बाल सँग खेलत, सब दिन हँसत सिरात ।
सूरदास धनि धनि ब्रजबासी, जिनसौं हित जदु-तात ॥
॥४१५६॥४७७४॥

राग सारंग

ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं ।
हँस-सुता की सुंदर कगरी, अरु कुंजनि की छाँहीं ॥
वै सुरभी वै बच्छ दोहिनी, खरिक दुहावन जाहीं ।
ग्वाल-बाल मिलि करत कुलाहल नाचत गहि गहि बाहीं ॥
यह मथुरा कंचन की नगरी, मुनि-मुक्ताहल जाहीं ।
जबहिं सुरति आवति वा सुख की, जिय उमगत तन नाहीं ॥
अनगन भाँति करी बहु लीला, जसुदा नंद निबाहीं ।
सूरदास प्रभु रहे मौन ह्वै, यह कहि-कहि पछिताहीं ॥
॥४१५७॥४७७५॥

राग सारंग

ब्रज सुधि नैंकुहूँ नहिं जाइ।
जदपि मथुरापुरी मनोहर, बिरद जादौराइ॥
जौ कोऊ कहि कान्ह टेरत, चौंकि चितवत धाइ।
ग्वालिनी अवलोकि पाछैं, रहत सीस नवाइ॥
देखि सुरभी बच्छ हित जल रहत लोचन छाइ।
सृंग वेनु बिपान सुनि कै, उठत हेरी गाइ॥
देखि पत्र पलास के अलि, रहत उर लपटाइ।
आनि छबि पै पान कै प्रभु, पिवत जल मुसुकाइ॥
मोर के चँदवा धरनि तैं स्याम लेत उठाइ।
छ क छबि कै कोस भोजन, हँसत दधि परसाइ॥
कुंज-केलि समान नाहीं, सुरपुरी सुखदाइ।
बीसर्‌यौ नहिं सूर कबहूँ, नद जसुदा माइ॥

॥४१५८॥४७७६॥

राग बिलावल

जो जन ऊधौ मोहिं न बिसारत, तिहिं न बिसारौं एक घरी।
मेटौं जनम जनम के संकट, राखौं सुख आनंद भरी।
जो मोहिं भजै भजौं मैं ताकौं, यह परिमिति मेरे पाइं परी।
सदा सहाइ करौं वा जनकी, गुप्त हुती सो प्रगट करी॥
ज्यौं भारत भरुही के अंडा, राखे गज के घंट तरी।
सूरजदास ताहि डर काकौ, निसि बासर जौ जपत हरी॥

॥४१५९॥४७७७॥

श्रीकृष्ण का अक्रूर-गृह-गमन *राग परज*

भक्त-बछल बसुदेव-कुमार।
चले एक दिन सुफलक सुत कैं, पांडव-हेत बिचार॥
मिल्यौ सु आइ पाइ सुधि मग मैं, बार-बार परि पाइ।
गयौ लिवाइ सुभग मंदिर मैं, प्रेम न बरन्यौ जाइ॥
चरन पखारि धारि जल सिर पर, पुनि पुनि दृगनि लगाइ।
बिबिध सुगंध चीर आभूषन, आगैं धरे बनाइ॥
धन्य धन्य मैं, धन्य गेह मम, धनि धनि भाग हमारे।
जो प्रभु ज्ञान ध्यान नहिं आवत, तिन मम गृह पग धारे॥

प्रभु तुव माया अगम अगोचर, लहि न सकत कोउ पार।
दीजै भक्ति अनन्य कृपा करि, होइ सु मम उद्धार॥
अरु जिहि कारन प्रभु पग धारे, कहिये सोइ विचार।
करहुँ ताहि तुम्हरी किरपा तैं, आयसु माथैं धार॥
यह अक्रूर दसा जो सुमिरै, सिखै सुनै अरु गावै।
अर्थ धर्म कामना मुक्ति फल, चारि पदारथ पावै॥
हरि जू कह्यौ मनोरथ तुम्हरौ, करिहैं श्री भगवान।
जो जाँचत सोई सो पावत, यह निश्चै जिय जान॥
तुम जानत हौ पाडव के सुत, है अति हितू हमारे।
कुरुपति अध मोह वस तिनकौं, देत सदा दुख भारे॥
तात जाइ उनकौं तुम भेंटहु, हमरी कुसल सुनावहु।
वहुरौ समाचार सब उनके, लै हम पै चलि आवहु॥
यह कहि स्याम राम ऊधौ मिलि, अपने भवन सिधारे।
सुफलक सुत आयसु माथैं धरि, पाडव गृह पग धारे॥
पहिलैं कौरव पति सौं भेंटे, पुनि पाडव गृह आए।
पकार चरन कुंती के पुनि पुनि, सब गहि गरैं लगाए॥
कुसल भाषि सब जादोकुल की, प्रभु के कहे सँदेस।
भयौ परम संतोष मिले सौं, मिटे सकल अंदेस॥
कुंती कह्यौ स्याम सौं कहियौ, हम हैं सरन तुम्हारी।
कुरुपति अध जु मम पुत्रनि कौं, देत सदा दुख भारी॥
पुनि कुरुपति सौं मिलि सुफलक सुत, कह्यौ वहुत समुझाइ।
चारि दिवस के जीवन ऊपर, तुम कत करत अन्याइ॥
अन्याई कौ वास नरक मैं, यह जानत सब कोइ।
गर्व प्रहारी हैं त्रिभुवनपति, जो कछु करैं सु होइ॥
कुरुपति कह्यौ मैंहुँ जानत हौं, पै मेरौ न वसाइ।
नमस्कार मेरौ जदुपति सौं, कहियौ परि कै पाइ॥
सुफलक-सुत सब कथा तहाँ की, आइ स्याम सौं भाषी।
सूरदास-प्रभु सुनि सुनि तासौं, हृदय आपनैं राखी॥
॥४२६०।४८७८॥

॥ इति श्री सूरसागर पूर्वार्ध समाप्त ॥

———

दशम स्कंध उत्तरार्ध

राग मारू

स्याम बलराम जब कंस मार्‌यौ।
सुनि जरासंध वृत्तांत सुता बदन तैं, जुद्ध हित कटक अपनौ हँकार्‌यौ ॥
जोरि दल प्रबल सो चल्यौ मथुरा पुरी, सुन्यौ भगवान जब निकट आयौ।
तब दोऊ बीर हू साजि दल आपनौ, नगर तैं निकसि रन भूमि छायौ ॥
दुहूँ दिसि सुभट बाँके बिकट अति जुरे, मनौ दुहुँ दिसि घटा उमड़ि आई।
सूर-प्रभु संख-धुनि करत जोधा सकल, जहाँ तहँ करन लागे लराई ॥४१६१॥४७७९॥

राग मलार

मानहु मेघ घटा अति बाढ़ी।
बरषत बान-बूँद सेना पर, महा नदी रन गाढ़ी ॥
बरन बरन बादर बनैत अरु दामिनि कर करवार।
गरज निसान घोर संख-ध्वनि, हय, गय हींस, चिघार ॥
उड़त धूरि धुरवा दसहूँ दिसि, सूल सक्ति जलधार।
प्रगटत दुरत देखियत रवि सम, दोउ बसुदेव कुमार ॥
कुंजर कूल गिरात रथी रथ, स्रोनित सलिल गँभीर।
धनुष तरंग, भँवर स्यंदन-पद, जलचर सुभट सरीर ॥
उड़त जु धुजा पताक छत्र रथ, तरुवर टूटत तीर।
परम निसंक समर सरिता-तट, क्रीड़त जादव बीर ॥
सूने किए भवन भूपति के, सुबस किए सुर लोक।
छिनक मध्य हरि हरे कृपाकरि, उन सबहिनि के सोक ॥
आनंदे मधुबन के बासी, गुनी नगर के लोक।
जरासिंधु कौं जीति सूर-प्रभु, आए अपने ओक ॥
॥४१६२॥४७८०॥

कालयवन-दहन *राग सारंग*

बार सत्तरह जरासंध, मथुरा चढ़ि आयौ।
गयौ सो सब दिन हारि, जात घर बहुत लजायौ॥
तब खिस्याइ कै कालजवन, अपनैं सँग ल्यायौ।
हरि जू कियौ बिचार, सिंधु तट नगर बसायौ॥
उग्रसेन सब लै कुटुंब, ता ठौर सिधायौ।
अमरपुरी तैं अधिक, तहाँ सुख लोगनि पायौ॥
कालजवन मुचुकुंदहिं सौं, हरि भषम करायौ।
बहुरि आइ भरमाइ अचल रिपु ताहि जरायौ॥
जरासिंधुहू ह्वाँ तैं पुनि, निज देस सिधायौ।
गए द्वारिका स्याम राम, जस सूरज गायौ॥
॥४१६३॥४७८१॥

द्वारिका-प्रवेश *राग कल्यान*

देखो री सखि आजु नैन भरि, हरि के रथ की सोभा।
जोग जज्ञ, जप, तप, तीरथ ब्रत, कीजत है जिहिं लोभा॥
चारु चक्र मनि खचित मनोहर, चंचल चँवर पताका।
सोभ छत्र ज्यौं ससि प्राची दिसि, उदय कियौ निसि राका॥
स्याम सरीर सुदेस पीतपट, सीस मुकुट उर माल।
जनु दामिनि घन रवि तारा-गन, प्रगट एक ही काल॥
उपजति छबि अति अंबर सख मिलि, सुनियत सब्द प्रसंस।
मानहु अरुन कमल मंडल मैं कूजत है कल हंस॥
मदन गुपालहिं देखत ही अब, सब दुख सोक बिसारे।
बैठे हैं सुफलकसुत गोकुल लैन जु उहाँ सिधारे॥
आनंदित नर नारि नगर के, बदन बिमल जस गायौ।
सूरदास द्वारिका निवासी, प्राननाथ प्रभु पायौ॥
॥४१६४॥४७८२॥

द्वारिका-शोभा *राग कल्यान*

दिन द्वारावति देखन आवत।
नारदादि सनकादि महामुनि, तेउ अवलोकि प्रीति उपजावत॥
बिद्रुम फटिक पची कंचन खचि, मनिमय मंदिर बने बनावत।
जितै तितै नर नारि मीन खग, सबहिनि के प्रतिबिंब दिखावत॥

जल थल रंग विचित्र बहुत बिधि, अवलोकत आनंद बढ़ावत।
चितै रहे चित चकित चतुर चित, कौन सत्य कछु मरम न पावत ॥
बन उपवन फल फूल सुभग सर, सुक सारिका हंस पारावत।
चातक मोर चकोर बदत पिक, मनहु मदन चटसार पढ़ावत ॥
धाम धाम संगीत सरस गति, बीना बेनु मृदंग बजावत।
अति आनंद प्रेम पुलकित तन, जहाँ तहाँ जदुपति जस गावत ॥
निसि दिन रहत बिमान रूढ़ रुचि, सुर बनितानि संग सब आवत।
सूर स्याम क्रीड़त कौतूहल, अमरनि अपनौ भवन न भावत ॥
॥४१६५॥४७८३॥

राग सारंग

मन मोहन खेलत चौगान।
द्वारावती कोट कंचन मैं, रच्यौ रुचिर मैदान ॥
जादवबीर बराइ बटाई, हरि बल इक इक ओर।
निकसे सबै कुँवर असवारी, उचैस्रवा के पोर ॥
नीले सुरँग कुमैत स्याम तेहि, परदे सब मन रंग।
बरन अनेक भाँति भाँतिन के, चमकत चपला ढंग ॥
झीन जराइ जु जगमगाइ रहि, देखत दृष्टि भ्रमाइ।
सुर, नर, मुनि कौतुक सब लागे, इक टक रहे लुभाइ ॥
जबहीं हरि लै गाइ कुदावत, कंदुक कर सौं लाइ।
तबहीं औचकहीं करि धावत, हलधर हरि के पाँइ ॥
कुँवर सबै घोड़े फेरे पै, छाँडत नहिं गोपाल।
बलै अछत छल-बल करि जीते, सूरदास प्रभु हाल ॥
॥४१६६॥४७८४॥

रुक्मिणी-पत्रिका-प्राप्ति

राग बिलावल

हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरनारबिंद उर धरौ ॥
हरि सुमिरन जब रुकमिनि कर्यौ। हरि करि कृपा ताहि तब बर्यौ ॥
कहौं सो कथा सुनौ चित लाइ। कहै सुनै सो रहै सुख पाइ ॥
कुंडिनपुर को भीषम राइ। बिस्नु भक्ति कौ तिहिं चित चाइ ॥
रुकम आदि ताके सुत पाँच। रुक्मिनि पुत्री हरि रँग राँच ॥
नृपति रुक्म सौं कह्यौ बनाइ। कुँवरि जोग बर श्री जदुराइ ॥
रुक्म रिसाइ पिता सौं कह्यौ। जदुपति ब्रज जो चोरत मह्यौ ॥

रुक्मिनि कौं सिसुपालहि दीजै। करि विवाह जग मैं जस लीजै॥
वह सुनि नृप नारी सौं कह्यौ। सुनि ताकौ अंतरगत दह्यौ॥
रुक्म चँदेरी विप्र पठायौ। ब्याह काज सिसुपाल बुलायौ॥
सो बारात जोरि तहँ आयौ। श्री रुक्मिनि के मन नहिं भायौ॥
कह्यौ मेरे पति श्री भगवान। उनहिं बरौं कै तजौं परान॥
वह निहचै करि पत्री लिखी। बोल्यौ विप्र सहज इक सखी॥
पाती दै कह्यौ बचन सुनाइ। हरि कौ दै कहियौ या भाइ॥
भीषम सुता रुक्मिनी बाम। सूर जपति निसि दिन तुव नाम॥
॥४१६७॥४७८५॥

राग कान्हरौ

द्विज पाती दै कहियौ स्यामहिं।
कुंडिनपुर की कुँवरि रुकमिनी, जपति तिहारे नामहिं।
पालागौं तुम जाहु द्वारिका, नंद-नँदन के धामहिं।
कंचन, चीर-पटंबर दैहौं, कर कंकन जु इनामहिं॥
यह सिसुपाल असुचि अज्ञानी, हरत पराई बामहिं।
सूर स्याम-प्रभु तुम्हरो भरोसौ, लाज करौ किन नामहिं॥
॥४१६८॥४७८६॥

राग कान्हरौ

पाती दीजौ स्याम सुजानहिं।
मुख सदेस सुनाइ दीजियौ, मोहिं दीन करि जानहिं॥
श्री हरि जोग रुकमिनी लिखित, बिनय सुनौ प्रभु कानहिं।
बाँचत बेगि आइयौ माधौ, बरौ, जात मेरे प्रानहिं॥
समुझत नाहिं दीन दुख कोऊ, हरि भख जंबुक पानिहिं।
मनि मरकट कौं देत मूढ़-मति, मृगमद रज मैं सानहिं॥
कब लौं दुःख सहौं दरसन बिनु, भई मीन बिनु पानिहिं।
सूरदास प्रभु अधर सुधाधर, बरपि देहु जिय दानहिं॥
॥४१६९॥४७८७॥

राग सारंग

द्विज कहियौ हरि कौं समुझाइ।
सकल सृगाल सिंह कौ भोजन, दुरबल देखि छीनि कै खाइ॥

काहे कौं नेम धर्म व्रत कीन्हौ, माघ मास जल सीत अन्हाइ।
परमिति गऐं लाज तुमहीं कौं, हंस कौ भाग काग लै जाइ॥
वै कहियत हैं चतुर सिरोमनि, सबके ठाकुर जादौराइ।
सूरदास प्रभु वेगि न आवहु, प्रान गऐं कह लैहौ आइ॥ -
॥४१७०॥४७८८॥

राग सारंग

द्विज कहियौ जदुपति सौं बात।
वेद विरुद्ध होत कुंडिनपुर, हंस के अंस काग नियरात॥
जनि हमरे अपराध विचारहु, कन्या लिखौ मेटि गुरु तात।
तन आतमा समरप्यौ तुमकौं, उपजि परी तातैं यह बात॥
कृपा करहु उठि वेगि चढ़हु रथ, लगन समै आवहु परभात।
कृष्न सिंह बलि धरी तुम्हारी, लैवे कौं जंबुक अकुलात॥
तातैं मैं द्विज वेगि पठायौ, नेम धरम मरजादा जात।
सूरदास सिसुपाल पानि गहै, पावक रचौं करौं अपघात॥
॥४१७१॥४७८९॥

राग धनाश्री

हौं प्रभु जनम-जनम की चेरी।
भीषम भवन रहति हरिनी ज्यौं, लुब्धक असुर सैन मिलि घेरी॥
अति संकट द्विज वेगि पठायौ, कहँ लौं कहौं कहौ बहुतेरी।
प्रातकाल सिसुपाल काल तैं, जदुपति आवहिं नैंकु सवेरी॥
कछु विपरीत बात नहिं आवै, उपजी राति ग्राह गज केरी।
सूरदास प्रभु कृष्न नृपति बिनु, प्रान बिना तन लागत पेरी॥
॥४१७२॥४७९०॥

राग मारू

(द्विज) वेगि धावहु कहि पठावहु, द्वारिका लौं जाइ।
कुँडिनपुर इक होत अजगुत, स्यार घेरी गाइ॥
दीन ह्वै करि करौं विनती, पाती दीजहु जाइ।
रुक्म वीर विवाह ठान्यौ, गनै पिता न माइ॥
लगन सोधि विवाह थाप्यौ, उनत मंडप छाइ।
पैज करि सिसुपाल आयौ, जरासंध सहाइ॥

हंस कौ मैं अंस राख्यौ, काग कत मँडराइ।
गरुड-वाहन कृष्न आवहु, सूर बलि बलि जाइ॥
॥४१७३॥४७९१॥

राग बिलावल

जैसैं जन की पैज न जाइ।
अंगीकार करहु प्रभु मेरे, सुनहु बिहारीराइ॥
ताड-पत्र पर दियौ लगन लिखि, बिजय करहु जदुराइ।
नातरु मेरौ मरन होइगौ, असुर छुवैगौ आइ॥
राजकुमारि सोचि जिय अपने, कर मीड़ै पछताइ।
सूरदास प्रभु कौ रथ आवै, स्वेत धुजा फहराइ॥
॥४१७४॥४७९२॥

राग सारंग

सखी पर होइँ तौ उड़ि जाउँ।
जहँ वै बसत नंद के ढोटा, ढूँढ़ि लेउँ सोइ गाउँ॥
कीजै कहा भई जौ ऐसी, कहौ तौ बिष फल खाउँ।
हिरदे मेरैं दवा जरति है, गहिरे नीर अन्हाउँ॥
बधु बैर कहिबौ जदुपति सौं, ठाढ़ी नहिं ठहराउँ।
सूरदास प्रभु असुर बिवाही, धरती फाटि समाउँ॥
॥४१७५॥४७९३॥

राग आसावरी

बाल मृगी सी आँगन ठाढ़ी। नव बिरहिनि चित चिंता बाढ़ी॥
तुम्हरौ पंथ निहारै स्वामी। कबहिं मिलहुगे अंतरजामी॥
मँडप देखि उर थर थर करै। मनु चहुँदिसि दौ लागी जरै॥
नित बिवाह कै दुंदुभि सुनि-सुनि। चकित मानौ महा सिंह धुनि॥
सखिन की माल जाल जिय जानति। ब्याध रूप सिसुपालहिं मानति॥
सूरदास जुग भरि बीतत छिनु। हरि नवरंग कुरंग पीय बिनु॥
॥४१७६॥४७९४॥

राग सारंग

सुनत हरि रुकमिनि कौ सदेस।
चढि रथ चले बिप्र कौं सँग लै, कियौ न गेह प्रवेस॥

वारंवार विप्र कौं पूछत, कुँवरि वचन सो सुनावत।
दीनवंधु करुना निधान सुनि, नैन नीर भरि आवत॥
कहौ हलधर सौं आवहु दल लै, मैं पहुँचत हौं धाइ।
सूरज प्रभु कुंडिनपुर आए, विप्र सो जाइ सुनाइ॥
॥४१७७॥४७९५॥

राग सारंग

कुँवरि सुनि पायौ अति आनंद।
मनहीं मन सु विचार करति है, कव मिलिहैं नँद-नंद॥
हार, चीर, पाटंबर दै करि विप्रहिं गेह पठायौ।
पै यह भेद रुकमिनी निज मुख, काहू कहि न सुनायौ॥
हरि आगमन जानिकै भीषम, आगे लैन सिधाए।
सूरदास-प्रभु दरसन कारन, नगर लोग सव आए॥
॥४१७८॥४७९६॥

राग आसावरी

देखि रूप सव नगर के लोग।
वारंवर असीस देत है हरि वर वन्यौ रुकमिनी जोग॥
जौ विधि करि आनत चतुराई, और समुझ जग की सव रीति।
तौ अजहूँ ये राज-सुता कौं, लै जैहैं सिसुपालहिं जीति॥
जे राजा कौतुक चलि आए ते मुख निरखि कहत हैं वात।
परत न पलक चकोर चंद लौं, अवलोकत लोचन न अघात॥
मनसा के दाता पूरन हैं सुंदर वर वसुदेव कुमार।
सूरदास जाकैं जिय जैसी, हरि कीन्हौ तैसौ व्यौहार॥
॥४१७९॥४७९७॥

सखी-वचन *राग विलावल*

सोच पोच निवारि री उठि देखि, दीन दयाल आयौ।
निरखि लोचन विपति मोचन, कुवरि फल वाँछ्यौ सो पायौ॥
सुनत भई अकुलाइ ठाढ़ी, ज्यौं मृतक मधु दै जिवायौ।
चढि सदन वा वदन की छवि, निरखि दानव-दव वुझायौ॥
लै वुलाइ जु हिय लगायौ, हरषि मंगल चार गायौ।
नैन आरती अरघ आँसू, भेंट तन-मन-धन चढ़ायौ॥

जानिहौ ब्रजनाथ जी की, कियौ सो जो तुम बतायौ।
अघ हरन पुनि परन-बस हरि, जानि हौं किहिँ जोग भायौ ॥
कृपा सागर गुननि आगर, दासि दुख छिन ही बहायौ।
भक्त के बस भक्त बत्सल, बिदुर सातू साग खायौ ॥
मुदित ह्वै गई गौरि मंदिर, जोरि कर बहु बिधि मनायौ।
प्रगट तिहिँ छिन सूर के प्रभु, चाँह गहि कियौ बाम भायौ ॥
॥४१८०॥४७९८॥

राग आसावरी

रुकमिनि देवी-मंदिर आई।
धूप दीप पूजा सामग्री, अली संग सब ल्याई ॥
रखवारी कौं बहुत महाभट, दीन्हे रुकम पठाई।
ते सब सावधान भए चहुँ दिसि, पंछी तहाँ न जाई ॥
कुँवरि पूजि गौरी बिनती करी, वर देउ जादवराई।
मैं पूजा कीन्ही इहिँ कारन, गौरी सुनि मुसकाई ॥
पाइ प्रसाद अंबिका मंदिर, रुकमिनि बाहर आई।
सुभट देखि सुंदरता मोहे, धरनि गिरे मुरझाई ॥
इहिँ अंतर जादवपति आए, रुकमिनि रथ बैठाई।
सूरज-प्रभु पहुँचे दल अपनैं, तब सुभटनि सुधि पाई ॥
॥४१८१॥४७९९॥

राग आसावरी

याही तैं सूल रही सिसुपालहिँ।
सुमिर-सुमिरि पछितात सदा वह, मान भंग के कालहिँ ॥
दुलहिन कहति दौरि दीजौ द्विज, पाती नंद के लालहिँ।
वर सु बरात बुलाइ, चढे हित, मनसि मनोहर बालहिँ ॥
आए हरषि हरन रुकमिनि, रिस लगी दनुज उर सालहिँ।
सूरजदास सिंह बलि अपनौ, लीन्हौ दलकि सृगालहिँ ॥
॥४१८२॥४८००॥

राग सोरठ

स्याम जब रुकमिनी हरि सिधाए।
साल्व, दंतवक्र बारानसी कौ नृप, चढे दल साजि मनो अभ्र छाए ॥

साँग की झलक चहुँदिसा चपला चमक, गज गरज सुनत दिग्गज डराए।
स्याम बलराम सुधि पाइ सन्मुख भए, बान बरषा लगे करन सारे॥
रुकमिनी भय कियौ स्याम धीरज दियौ, बान सौं बान तिनके निवारे॥
राम हल मुसल संभारि धारयौ बहुरि, पेलि कै रथ सुभट बहु सँहारे।
रुंड भकरुंड झुकि परे वर धरनि पर, गिरत ज्यौं वेग करि वज्र मारे॥
जरासँध जीव लै भज्यौ रनखेत तैं, साल दंतवक्र या विधि पराए।
प्रात के समय ज्यौं भानु के उदय, तम लै होइ जात उडुगन नसाए॥
गह्यौ भगवान सिसुपाल कौं जीवतै, ताहि सौं वचन या विधि उचारे।
पुरुप कौं भाजिबे तैं मरन है भलौ, जाइ सुर लोक द्वारे उवारे॥
बहुरि भगवान सिसुपाल कौं छाड़ि दियौ, गयौ निज देस कौं सो खिस्याई।
सबवन छाँड़ि कै भाजि नरपति गए, जादवनि लै सु हरि दियौ लुटाई॥
रुकुम यह सुनि चल्यौ सौंह करि नृपति सौं, स्याम बलराम कौं बाँधि ल्याऊँ॥
आइ ह्याँ कह्यौ सिसुपाल सौं मैं नहीं, आपनो बल तुम्हैं अब दिखाऊँ॥
बान बरषा लग्यो करन इहिं भाँति कै, कृष्न जू तिन्हैं छिन मैं निवारे।
आपने बान सौं काटि ध्वज रुक्म कौ, अस्व अरु सारथी तुरत मारे॥
रुक्म भू परयौ उठि जुद्ध हरि सौं करयौ, हरि सकल सस्त्र ताके निवारे।
बहुरि खिसियाइ भगवान कैं ढिग चल्यौ, चलत ज्यौं पतँग दीपक निहारे॥

खड्ग लै ताहि भगवान मारन चले, रुकमिनी जोरि कर बिनय कीन्हौ ।
दोष इन कियौ मोहिँ छमा प्रभु कीजियै, भद्र करि सीस जिव दान दीन्हौ ॥
राम अरु जादवनि सुभट ताके हने, रुधिर करि नीर सरिता बहाई ।
सुभट मनु मकर अरु केस सेँवार ज्यौँ, धनुष मछ चर्म कूरम बनाई ॥
बहुरि भगवान कैँ निकट आए सकल, देखि कै रुक्म कौँ हसे सारे ।
कह्यौ भगवान सौँ कहा यह कियौ तुम, छाड़िबे तैँ भलौ हतौ मारैँ ।
मरे तैँ अप्सरा आइ ताकौँ बरतिँ, भाजिहै देखि अब गेह नारी ॥
प्रभु तुम्हरौ मरम रुक्म जान्यौ नहीँ, छाँडि दीजै याहि अब मुरारी ॥
रुक्म सिरनाइ या भाँति बिनती करी, बुद्धि बल मर्म तुम्हरौ न जानौँ ।
प्रभु तुम अनत तुम तुमहिँ कारन करन मैँ कौन भाँति तुमकौं पछानौं ॥
दीनबधु कृपासिधु करुना करन सुनि बिनय दया करि छाँडि दीन्हौ ।
बहुरि निज नगर पैठ्यौ न सो लाज करि तहँ पुनि आपनौ बास कीन्हौ ।
आइ भीषम दियौ दाइज ता ठौर बहु, स्याम आनँद सहित पुर सिधाये ।
सुनत द्वारावती माँहिँ उत्सव भयौ, सूर जन मगलाचार गाये ॥
॥४१८३॥४८०१॥

राग आसावरी

देखहिँ दौरि द्वारिकावासी ।
सुनत सकल रिपु जीति रुकमिनी लै आए जदुपति अविनासी ॥
नगर निकट रथ आनि अगमने, राजत रुचिर रूप दोउ रासी ।
प्रभु पाछैँ बैठी श्री सोभित, जनु घन मैँ चद्रिका प्रकासी ॥

लेत बलाइ करत न्यौछावरि, बलि भुज दंड कितक अरि त्रासी।
नर नारिनि के नैन निरखि भए, चातकि रितु बरषा की प्यासी॥
सजि आरती कलस लै धाईं, चीन्हि परति कुलवधू न दासी।
देस देस भयौ रहस सूर-प्रभु, जरासंध सिसुपाल की हाँसी॥
॥४१८४॥४८०२॥

राग धनाश्री

आवहु री मिलि मगल गावहु।
हरि रुकमिनी लिए आवत हैं, यह आनँद, जदुकुलहिं सुनावहु॥
बाँधहु बंदनवार मनोहर, कनक कलस भरि नीर धरावहु।
दधि अच्छत फल फूल परम रुचि, आँगन चंदन चौक पुरावहु॥
कदली जूथ अनूप किसल दल, सुरँग सुमन लै मंडल छावहु।
हरद दूब केसर मग छिरकहु, भेरी मृदँग निसान बजावहु॥
जरासध सिसुपाल नृपति तैं, जीते हैं उठि अरघ चढ़ावहु।
बल समेत तन कुसल सूर प्रभु, आए हैं आरती बनावहु॥
॥४१८५॥४८०३॥

राग बिलावल

श्री जादौपति ब्याहन आयौ।
धनि धनि रुकमिनि हरि बर पायौ॥
स्याम घन हरि परम सुंदर, तड़ित बसन बिराजईं।
अग भूषन सूर ससि पूरन कला मनु राजईं॥
कमल मुख कर कमल लोचन कमल मृदु पद सोहईं।
कमल नाभि कपोल सुंदर, निरखि सुर मुनि मोहईं॥
सुधा सरोवर चिबुक अनूपम।
ग्रीव कपोत नासिका कीर सम॥
कीर नासा इंद्रधनु भ्रू, भँवर सी अलकावली।
अधर बिद्रुम बज्रकन दाड़िम किधौं दसनावली॥
खौरि केसर अति बिराजत तिलक मृगमद को दियौ।
कामरूप बिलोकि मोह्यौ, बास पद अंबुज कियौ॥
बसुद्यौ नंदन त्रिभुवन बंदन।
मुकुट तरनि मनि कुडल स्रवनन॥

मुकुट कुंडल जरित हीरा लाल सोभा अति बनी।
पन्ना पिरोजा लगे बिच-बिच चहूँदिसि लटकत मनी॥
सेहरा सिर मुकुट लटकत कंठ माला राजई।
हाथ पहुँची हीर की नग जरित मुदरी भ्राजई॥
उर बैजती सोभा अति बनी।
चरननि नूपुर कटि तट किंकिनी॥
किंकिनी कटि चरन नूपुर सब्द सुंदर कूजई।
कोकिला कल हंस बाल रसाल तिनहिं न पूजई॥
तुरी ताजी बिना ताजन चपल चपला श्री हरी।
जीन जरित जराव पाखरि लगी सब मुक्ता लरी॥
चढ़े जदुनंदन बनक बनाइ कै।
सज बरात चले जादव चाइ कै॥
चले साजि बरात जादौ कोटि छप्पन अति बली।
उग्रसेन बसुदेव हलधर करत मन मन अति रली॥
संख भेरि निसान बाजे बजैं बिबिध सुहावने।
भाट बोलैं बिरद, बार बचन कहैं मन भावने॥
सुरपति आयौ सँग आपुन सची।
सोधि महूरत चौरी बिधि रची॥
रची चौरी आपु ब्रह्मा जटित खंभ लगाइ कै।
इंद्र सुर-बरनी सहित बैठे तहाँ सुख पाइ कै॥
चौक मुक्ताहल पुरायौ, आइ हरि बैठे तहाँ।
निरखि सुर-नर सकल मोहे, रहि गए जहँ के तहाँ॥
कुँवरि रुकमिनी कमला औतरी।
ससि सोडष कला सोभ तन धरी॥
कुँअरि ससि सोडष कला स्रृंगार करि ल्याईं अली।
वेद कियौ ब्याह बिधि, बसुदेव मन उपजी रली॥
पुहुप बरषहिं हरष सुर गंधर्व किन्नर गावहीं।
सारदा नारद सुजस उच्चार जयति सुनावहीं॥
बिप्रनि गो दीन्ही बहुत जुगुति करि।
किए अजाची जाचक जन बहुरि॥
बहुरि निज मंदिर सिधारे करी सुभद्रा आरती।
देवकी पियौ वारि पानी, दै असीस निहारती॥

जुवा जुवति खिलाइ कुल ब्यौहार सकल कराइयौ।
सूर जन मन भयौ आनँद हरषि मंगल गाइयौ ॥
॥४१८६ ४८०४॥

राग सारंग

तोसौं गारि कहा कहि दीजै।
वप जुग नावँ कौन कौ लीजै ॥
वप जुगल काकौ नावँ लीजै, जाति गोत न जानियै।
विनु रूप विनु अनुहार औरै, का वखान वखानियै ॥
सब सोधि रहे नहिं सोधि पाए विनु सुने कह कीजियै।
वलि जाउँ जादौपति तुम्हारी, गारि का कहि दीजियै ॥
तेरी माइ सकल जग खोयौ।
सो को जो इहि मिलि न विगोयौ।
सो को जु मिलि करि नहिं विगोयौ, फिरति निसि वासर वनी।
सिर सेत पट कटि नील लहँगा लाल चोली विनु तनी ॥
कछु मंद मुख मुसुकाइ सुर नर नाग भुज भीतर लिए।
वलि जाउँ जादौपति तुम्हारी माइ कुल विनु तुम किए ॥
कछु कहि न जाइ गति ताकी।
नित रहति मदन मद छाकी ॥
नित रहति मन्मथ मदहि छाकी, निलज कुज झाँपति नहीं।
ता देखि देखि जु छैल मोहत, विकल ह्वै धावत तहीं ॥
इक परत उठत अनेक अरुझत मोह अति मनसा गही।
इहिं भाँति कथा अनेक ताकी, कहतहूँ न परै कही ॥
वह तौ नित नूतन रति जोरै।
चित चितवन ही मैं सो चोरै ॥
अति चतुर चितवन चित चुरावति चलत ध्रुव धीरज हरै।
फिरि चमक चोप लगाइ चंचल, नेह नित आतुर करै ॥
वा भौंह की छवि निरखि नैननि, सु को जु न व्रत तैं टरै।
इहिं भाँति चतुर सुजान समधिनि सकति रति सब सौं करै ॥
इनहीं भूलि रहे सब भोगी।
बस कीन्हें वाह्मन अरु जोगी ॥
बस किए वाह्मन वहुत जोगी, छत्रपति केते कहौं।
औरो जगत के जीव जल थल, गनत सुनत न सुधि लहौं ॥

ते परम आतुर काम कातर, निरखि कौतुक नित नए।
इहिं भाँति समधिनि संग, निसि दिन फिरत भ्रम भूले भए॥
अब तुम हौ परम सयाने।
तुम ठाकुर सब जग जाने॥
तुम सबनि के ठाकुर कृपानिधि, सुजस सब जग गाइयै।
या लोक के उपहास कारन बरजि ताहि मिटाइयै॥
यह कही भल बूझिबी जु माधौ और अनत न सूझियै।
सुनि सूर स्याम सुजान इहिं कुल अब न ऐसी बूझियै॥
॥४१८७॥४८०५॥

रुक्मिणी-विवाह की दूसरी लीला राग जैतश्री

दीन बधु ब्रजनाथ कबै मुख देखिहौं।
कहि रुकमिनि मन माहँ सबै सुख लेखिहौं॥
गावहिं सब सहचरी कुँवरि तामस करि हेरयौ।
सब दिन सुख साथिनी आजु कैसे मुख फेरयौ।
मेरैं मन कछु और है तुम कछु गावतिं और।
प्रान तजौंगी आपनौ, देखि असुर सिर मौर॥
तिहूँ लोक के धनी मनी तुमहीं कौं सोहै।
सत्य प्रकृति औ पुरुषहिं समरथ सबहीं मोहै॥
पर पुरुषारथ काग हंसिनी के घर आवै।
कामधेनु खर लेइ, काल अमृत उपजावै॥
कुटुँब बैर मेरे परे, बरनि बरैं सिसुपाल।
करनि सिंह तुम्हरी धरी कैसैं चपै सृगाल॥
भुवन चतुर्दस राज सकल सुर नर मुनि देवा।
कर जोरे ससि सूर पवन पानी करैं सेवा॥
अबहिं और की ओर होति कछु लागै वारा।
तातैं पाती लिखी तुमहिं मैं प्रान अधारा॥
कै जदुपति लै आवहू, करौं प्रान लगि घाउ।
बाज सखहिं जानि हौं, आए जादवराउ॥
कटै भूख औ नींद जीव हौं जानति नाहीं।
अनदेखे वै नैन लगे लोचन पथ माहीं॥
जो माँगौ सो देउँ लेहु माधौ सँग आए।
कोटि जज्ञ फल होइ पिता उन दरसन पाए॥

रोइ रुकमिनी यौं कह्यौ धरौं पानि मैं माथ।
यह पाती लै दीजियौ, प्राननाथ कैं हाथ॥
विप्र भवन रथ चढ़यौ, चलत तव वार न लाई।
छप्पन कोटिन मध्य, राजहीं जादवराई॥
छाँड़ि सकुच पाती दई, तब पूछी कुसलात।
जानि चीन्ह पहिचानि मन, फूले अंग न मात॥
आपुन झारो माँगि विप्र के चरन पखारे।
इती दूरि स्रम कियौ भए द्विजराज दुखारे॥
पाती वाँचि न आवई मार्ग्यौ तुरत विमान।
लोचन भरि-भरि आवहीं, मानहु कर जलपान॥
लीन्हौ विप्र चढ़ाइ वोलि वल सौं कहि सारा।
सकल सभा जिय जानि कसे साजे हथियारा॥
कहहु नाथ कहँ आवई कियौ कौन पर छोहु।
भीषण कै रुकमिनि हरन, सावधान सव होहु॥
आवत देख्यौ विप्र जोरि कर रुकमिनि धाई।
कहा कहैगौ आनि हिऐं धकधकी लगाई॥
विप्र आनि माला दई कहे कुसल के वैन।
कुँअरि पत्यारौ तव कर्यौ जव रथ देख्यौ नैन॥
गए कंचुकि वँद टूटि लूटि हिरदै सौं पाई।
करति मनहि मन सेव निकट रथ दियौ दिखाई॥
तिहूँ लोक के कंत हौ, हौं दासी प्रभु जानि।
रुकमिनि विनती करति है, लाज आपुहीं मानि॥
वैठि असुर सव सभा रुक्म सौं गतौ विचार्यौ।
आयौ सुन्यौ अहीर मनौ इहि काल हँकार्यौ॥
गाइ चरावत ग्वाल है, आयौ मुजरा दैन।
देखौ ढीठौ दूरि तैं, आयौ भातहिं लैन॥
सव दल ह्वै हुसियार चलौ मठ घेरहिं जाई।
परपंची है कान्ह कछू मति करै ढिठाई।
कुँअरि गौरि पाइनि परी मन वांछित फल जानि।
हौं जदुपति वर पाइहौं चरन धरौं दोउ पानि॥
गौरि कहे सुनि कुँअरि, पाइँ मेरे जनि लागहि।
कहा कुटुंव के वैन नैन, श्रीपति अनुरागहिं॥

आधौ श्रीवृषभानु कौं आधौ दीन्हौ तोहिं।
राज सुहाग बढ़ौ सबै, कहा निहोरो मोहि ॥
अब गावहु करि सगुन बोलि मुख अमृत बानी।
दूलह श्रीनँदलाल, दुलहिनी रुकमिनी रानी ॥
याकौ जननी दीजियौ, करत सखिनि सौं नेह।
हौं जदुपति घर जाति हौं, जाकी है यह देह ॥
अंबर-बानी भई सजल बादर दल छाए।
देव तैं तिसौ कोटि जु जज्ञ तमासे आए ॥
हरन रुकमिनी होत है दुहूँ ओर भई भीर।
अति अघात सूझत नहीं, चलहिं बज्र ज्यौं तीर ॥
लागे रुक्म गुहार संग सिसुपाल न छोड़ै।
छाड़ै बान बिसाल जुद्ध ऐसौ को ओड़ै ॥
चक्र धरे हरि आवहीं सुनि असुरनि जिय गाज।
टेरि कह्यौ सिसुपाल सौं, कीजै कंकन लाज ॥
सकल सैन संहारि रुक्म हलधर गहि लीन्हौ।
आगैं इहिं सौं काम रुक्मिनी सौं प्रन कीन्हौ ॥
सात सिखा सिर राखि कै तब बूझी कुसलात।
कुंडिनपुर कौ काज सँवार्‍यौ, भूपनि कौ यह ख्यात ॥
नगर बधाई बजी नाथ बहुतै सुख मान्यौ।
पूरन कीन्हौ नेह रुक्म तैं सत्यहि जान्यौ ॥
कंकन छोर्‍यौ द्वारिका बाज्यौ अनँद-निसान।
भुक्ति मुक्ति न्यौछावरी पाई सूर सुजान ॥
॥४१८८॥४८०६॥

प्रद्युम्न-जन्म राग बिलावल

प्रद्युम्न जन्म सुभ घरी लीन्हौ।
काम अवतार लियौ बदत यह बात जग, ताहि सम तुल्य नहिं रूप चीन्हौ ॥
पृथी पर असुर संबर भयौ अति प्रबल, तिन उदधि माहिं तिहिं डारि दीन्हौ।
मच्छ लियौ भच्छि सो मच्छ मछवा गह्यौ असुरपति कौं सु लै भेंट कीन्हौ ॥

मच्छ के उदर तैं बाल परगट भयौ, असुर मायावती हाथ दीन्हौ।
कह्यौ यह काम परिनाम तेरौ पुरुष वचन नारद सुमिरि रति सु
लीन्हौ ॥
भयौ जब तरुन तब नारि तासौं कह्यौ, रुकमिनी मात हरि तात
तेरौ।
नाम मम रति विदित बात जानत जगत, काम तुव नाम पुनि
पुरुष मेरौ।
असुर कौं मारि परिवार कौं देहि सुख, देउँ विद्या तुम्हैं मैं बताई।
बिना विद्या ताहि जीति सकिहै नहीं, भेद की बात सब कहि सुनाई ॥
प्रद्युम्न सकल विद्या समुझि नारि सौं, असुर सौं जुद्ध माँग्यौ प्रचारी।
काटि करवार लियौ मारि ताकौं तुरत, सुरनि आकास जै धुनि
उचारी ॥
बहुरि आकास मग जाइ द्वारावती, मातु मन मोद अतिहीं
बढ़ायौ।
भयौ जदुवंस अति रहस मनु जनम भयौ, सूर जन मंगलाचार
गायौ ॥४१८९॥४८०७॥

जाबवती और सत्यभामा का विवाह *राग सारंग*

हरि दरसन सत्राजित आयौ।
लोगनि जान्यौ आदित आवत हरि सौं जाइ सुनायौ ॥
हरि कह्यौ आयौ है सत्राजित मनि है ताकैं पास।
रवि प्रसन्न ह्वै दीन्ही ताकौं, यह ताकौ परकास ॥
आइ गयौ सोऊ तिहिं अवसर, हरि तिहिं कह्यौ सुनाइ।
यह मनि अति अनुपम है, सो सुनि दै न सक्यौ ललचाइ ॥
इक दिन तासु अनुज लै सो मनि, गयौ अखेटक काज।
ताकौं मारि सिंह मनि लै गयौ सिंह हत्यौ रिछराज ॥
रिच्छराज वह मनि तासौं लै, जांबवती कौं दीन्ही।
जब प्रसेन कौं बिलँब भई तब सत्राजित सुधि लीन्ही ॥
जहाँ तहाँ कौ लोग पठाए, काहुँ खोज नहिं पायौ।
तब लोगनि सौं कहन लग्यौ, जदुराइ ताहि मरवायौ ॥
हरि यह सुनत गए ता बन मैं, सो प्रसेन मृत देख्यौ।
सिंह खोज बहुरौ तहँ पायौ, सिंह बहुरि मृत पेख्यौ ॥

बहुरौ जांबमंत पग देख्यौ, तहाँ जाइ जदुराई।
द्वादस दिवस अवधि आवन कहि, बिल मैं पैठे धाई॥
जामवंत दिन बीस चारि लौं, जुद्ध कियौ तब जान्यौ।
हाथ जोरि करि अस्तुति कीन्ही, मैं तुमकौं न पिछान्यौ॥
बिहँसि कह्यौ जादवपति तासौं, मनि कारन मैं आयौ।
जाबवती समेत मनि दै पुनि अपनौ दोप छमायौ॥
सँग के लोग अवधि के बीते, कह्यौ नगर मैं जाइ।
मातु पिता व्याकुल ह्वै धाए, मग मैं बैठे आइ॥
मनि सत्राजित कौं प्रभु दीन्ही, रह्यौ सु सीस नवाइ।
सतभामा समेत लै आयौ, मनि कौं हरि सिर नाइ॥
और बहुत दायज दीन्हे उन, करि विवाह ब्यौहार।
भयौ परम आनद दुहूँ दिसि, मगलचार अपार॥
मनि ताकी ताकौं फिरि दीन्ही, सुजस जगत मैं छायौ।
श्रीगुरु चरन प्रताप चरित यह, सूरदास जन गायौ॥

॥४१९०॥४८०८॥

शतधन्वा-वध *राग सारग*

सुकदेव कहत सुनौ राजा।
ज्ञानी लोभ करत नहिँ कबहू, लोभ बिगारत काजा॥
करिकै लोभ अमृत जो पीवै, विष समान सो होई।
बिप अमृत होइ जाइ लोभ बिनु यह जानत जन कोई॥
एक समै जदुपति औ हलधर, पाडव-गृह पग धारे।
सतधन्वा अरु सुफलक सुत मिलि, कीन्हौ मत्र बिचारे॥
सत्राजित कौं हति मनि लीजै, ज्यौं जानै नहिँ कोई।
ऐसौ समय बहुरि फिरि नाहीँ, पाछै होइ सु होई॥
निसि अँधियारी जाइ सुधन्वा, ताहि मारि मनि ल्यायौ।
फैलि गई यह बात नगर मैं, तब मन मैं पछितायौ॥
सतिभामा करि सोक पिता कौं, जदुपति पास सिधाई।
सतधन्वा करतूति करी सो, हरि कौं जाइ सुनाई॥
सुनि जदुपति हलधर उठि धाए, नैकु बिलब न लाई।
लैहैं बैर पिता तेरे कौ, जैहै कहाँ पराई॥
तब मनि डारि अक्रूर पास वह, मिथिलापुर कौं धायौ।
सत जोजन मग एक दिवस मैं, तुरग ताहि पहुँचायौ॥

द्वारावति वैठत हरि सौं सब, लोगनि कह्यौ जनाई।
मिथिलापुरी जाइ तिहिँ मार्‍यौ, पै मनि उहाँ न पाई॥
तब हरि कह्यौ हत्यौ बिन दूषन हलधर भेद बतायौ।
ह्वाँ पुनि जाइ खोज तुम कीजौ, द्वारावति हरि धायौ॥
हलधर रहे गदा जुध सीखन, हरि द्वारावति आए।
सतिभामा मन हरष भयौ जब, समाचार ये पाए॥
सुफलक सुत मन ही मन सकुच्यौ, करौं कहा अब काजा।
देत न वनै वनै नहिँ राखत, डर डरात उठि भाजा॥
सब जादौ मिलि हरि सौं यह कह्यौ, सुफलक सुत जहँ होई।
अनावृष्टि अति वृष्टि होति नहिं यह जानत सब कोई॥
कीजौ दोष छमा अब ताकौ, हरि तब ताहि बुलायौ।
कह्यौ कहा कहियै अब तुमसौं, तिन सिर नीचौ नायौ॥
पुनि कह्यौ मनि सतिभामा कौं दै, जातैं भय भयौ तोहिँ॥
मति उन दई बहुरि तिहिँ दीन्हा कह्यौ लोभ नहिँ मोहिँ।
लोभ भलौ नहिं दोऊपुर मैं, लोभ किएँ पति जाई।
सूर लोभ कीन्हौ सो बिगोयौ, सुक यह कहि समुझाई॥

॥४०९१॥४८०९॥

पंच पटरानी विवाह राग बिलावल

हरि हरि हरि सुमिरौ सब कोई। हरि हरि सुमिरत सब सुख होई॥
हरि हरि सुमिर्‍यौ जब जिहिँ जहाँ। हरि तिहिँ दरसन दीन्हौ तहाँ॥
हरि सुमिरन कालिंदी कीन्हौ। हरि तहँ जाइ दरस तिहिँ दीन्हौ॥
पानि ग्रहण पुनि ताकौ कियौ। सबै भाँति ताको सुख दियो॥
हरिहिँ मित्र बिंदा जब ध्यायौ। हरि तह जात बिलब न लायौ॥
करि बिवाह ताकौ लै आए। तासु मनोरथ सफल पुजाए॥
हरि चरननि सत्या चित दीन्हा। ताके पिता परन यह कीन्हौ॥
सात बैल ये नाथै जोई। सत्या ब्याह तासु सँग होई॥
हरि तहँ जाइ तासु प्रन राख्यौ। धन्य धन्य सब काहू भाष्यौ॥
ताके पिता ब्याह तब कीन्हौ। दाइज बहु प्रकार तिन दीन्हौ॥
बहुरो भद्रा सुमिरे हरी। गए तासु हित बिलँब न करी॥
ऐसो हैं त्रिभुवन पति राइ। ताके मन की आस पुराइ॥

बहुरौ जांबमंत पग देख्यौ, तहाँ जाइ जदुराई।
द्वादस दिवस अवधि आवन कहि, बिल मैं पैठे धाई ॥
जामवंत दिन बीस चारि लौं, जुद्ध कियौ तब जान्यौ।
हाथ जोरि करि अस्तुति कीन्ही, मैं तुमकौं न पिछान्यौ ॥
बिहँसि कह्यौ जादवपति तासौं, मनि कारन मैं आयौ।
जाबवती समेत मनि दै पुनि अपनौ दोप छमायौ ॥
सँग के लोग अवधि के बीते, कह्यौ नगर मैं जाइ।
मातु पिता व्याकुल ह्वै धाए, मग मैं बैठे आइ ॥
मनि सत्राजित कौं प्रभु दीन्ही, रह्यौ सु सीस नवाइ।
सतभामा समेत लै आयौ, मनि कौं हरि सिर नाइ ॥
और बहुत दायज दीन्हे उन, करि बिवाह ब्यौहार।
भयौ परम आनद दुहूँ दिसि, मगलचार अपार ॥
मनि ताकी ताकौं फिरि दीन्ही, सुजस जगत मैं छायौ।
श्रीगुरु चरन प्रताप चरित यह, सूरदास जन गायौ ॥
॥४१९०॥४८०८॥

शतधन्वा-वध *राग सारग*

सुकदेव कहत सुनौ राजा।
ज्ञानी लोभ करत नहिं कबहू, लोभ बिगारत काजा ॥
करिकै लोभ अमृत जो पीवै, बिष समान सो होई।
बिष अमृत होइ जाइ लोभ बिनु यह जानत जन कोई ॥
एक समै जदुपति औ हलधर, पाडव-गृह पग धारे।
सतधन्वा अरु सुफलक-सुत मिलि, कीन्हौ मत्र बिचारे ॥
सत्राजित कौं हति मनि लीजै, ज्यौं जानै नहिं कोई।
ऐसौ समय बहुरि फिरि नाहीं, पाछै होइ सु होई ॥
निसि अँधियारी जाइ सुधन्वा, ताहि मारि मनि ल्यायौ।
फैलि गई यह बात नगर मैं, तब मन मैं पछितायौ ॥
सतिभामा करि सोक पिता कौं, जदुपति पास सिधाई।
सतधन्वा करतूति करी सो, हरि कौं जाइ सुनाई ॥
सुनि जदुपति हलधर उठि धाए, नैकु बिलब न लाई।
लैहैं बैर पिता तेरे कौ, जैहै कहाँ पराई ॥
तब मनि डारि अक्रूर पास वह, मिथिलापुर कौं धायौ।
सत जोजन मग एक दिवस मैं, तुरग ताहि पहुँचायौ ॥

द्वारावति बैठत हरि सौं सब, लोगनि कह्यौ जनाई।
मिथिलापुरी जाइ तिहिं मारयौ, पै मनि उहाँ न पाई॥
तब हरि कह्यौ हत्यौ बिन दूषन हलधर भेद बतायौ।
ह्वाँ पुनि जाइ खोज तुम कीजौ, द्वारावति हरि धायौ॥
हलधर रहे गदा जुध सीखन, हरि द्वारावति आए।
सतिभामा मन हरष भयौ जब, समाचार ये पाए॥
सुफलक सुत मन ही मन सकुच्यौ, करौं कहा अब काजा।
देत न बनै बनै नहिं राखत, डर डरात उठि भाजा॥
सब जादौ मिलि हरि सौं यह कह्यौ, सुफलक सुत जहँ होई।
अनावृष्टि अति वृष्टि होति नहिं यह जानत सब कोई॥
कीजौ दोष छमा अब ताकौ, हरि तब ताहि बुलायौ।
कह्यौ कहा कहियै अब तुमसौं, तिन सिर नीचौ नायौ॥
पुनि कह्यौ मनि सतिभामा कौं दै, जातैं भय भयौ तोहिं॥
मनि उन दई बहुरि तिहिं दीन्हीं कह्यौ लोभ नहिं मोहिं।
लोभ भलौ नहिं दोऊपुर मैं, लोभ किएँ पति जाई।
सूर लोभ कीन्हौ सो बिगोयौ, सुक यह कहि समुझाई॥

॥४८९१॥४८०९॥

पंच पटरानी विवाह *राग बिलावल*

हरि हरि हरि सुमिरौ सब कोई। हरि हरि सुमिरत सब सुख होई॥
हरि हरि सुमिरयौ जब जिहिं जहाँ। हरि तिहिं दरसन दीन्हौ तहाँ॥
हरि सुमिरन कालिंदी कीन्हौ। हरि तहँ जाइ दरस तिहिं दीन्हौ॥
पानि ग्रहण पुनि ताकौ कियौ। सबै भाँति ताको सुख दियौ॥
हरिहिं मित्र बिंदा जब ध्यायौ। हरि तह जात बिलंब न लायौ॥
करि बिवाह ताकौ लै आए। तासु मनोरथ सफल पुजाए॥
हरि चरननि सत्या चित दीन्हौ। ताके पिता परन यह कीन्हौ॥
सात बैल ये नाथै जोई। सत्या ब्याह तासु सँग होई॥
हरि तहँ जाइ तासु प्रन राख्यौ। धन्य धन्य सब काहू भाष्यौ॥
ताके पिता ब्याह तब कीन्हौ। दाइज बहु प्रकार तिन दीन्हौ॥
बहुरौ भद्रा सुमिरे हरी। गए तासु हित बिलँब न करी॥
ऐसो हैं त्रिभुवन पति राइ। ताके मन की आस पुराइ॥

बहुरि लछमना सुमिरन कीन्हौ। ताहि स्वयंवर मैं हरि लीन्हौ ॥
बाँचौ नारि ब्याहि घर आए। सूर दास जन मंगल गाए ॥
॥४१९२॥४८१०॥

श्रीकृष्ण वचन सत्यभामा के प्रति। *राग गौरी*

इती बात तब तैं न कही री।
कितकि बात सुरतरु प्रसून की, जा कारन तू रूठि रही री ॥
बरमुख जनाइ न दीन्हौ, बिनु जाजैं रिस देह दही री।
बेरी सौं सुनि सतिभामा मैं, मन बच कह सुधिहूँ न लही री ॥
सूनौ निपट अकेलौ मदिर, चद कल जनु राहु गही री ॥
तुव बियोग की पीर कठिन अति, सुकहि सूर क्यों जाति सही ॥
॥४१९३॥४८११॥

भौमासुर-वध तथा कल्पवृक्ष आनयन। *राग आसावरी*

रटतिं कृष्न गोविद हरि-हरि मुरारी।
भक्त भय-हरन असुरऽतकारी ॥
षष्ठ दस सहस कन्या असुर वदि मैं नींद अरु भूख अहनिसि बिसारी ॥
नीति तिनकी सुमिरि भए अनुकूल हरि, सत्यभामा हृदय यह उपाई।
कल्पतरु देखिबे की भई साध मोहिं, कृपा करि नाथ ल्यावहु दिखाई ॥
सत्यभामा सहित बैठि हरि गरुड़ पर, भौमासुर नगर कौं तुरत धाए।
एक ही बान पापान कौ कोट सब, हुतौ चहुँ ओर सो दियौ ढाए ॥
गरुड़ चहुँ पास के नाग लीन्हे निगलि जल वरषि अगिनि ज्वाला बुझाई।
स्वास के तेज सौं जल सकल सोषि लियौ, देखि यह लोग सब गए डेराई ॥
करी हरि संख धुनि जाग्यौ तब असुर सुनि, कोप करि भवन सौं निकसि धायौ।
देखि कै गरुड कौं लगी ता हृदय दव, कठिन तिरसूल सो गहि चलायौ ॥

सचिव सिर टेकि तब कह्यौ निज नृपति सौं, नहीं तिहुँ भुवन कोउ सम तुम्हारे।
जुद्ध कौं करत छाजत नहीं है तुम्हैं सुनि महाराज अच्छत हमारे॥
कियौ तब जुद्ध उन क्रुद्ध ह्वै स्याम सौं, हरि कह्यौ गरुड़ इहिं हति प्रचारी।
गरुड़ सुनि धाइ गह्यौ जाइ ताकौं तुरत, तीनहूँ सीस डारे प्रहारी॥
तासु पुत्रनि बहुरि जुद्ध हरि सौं कियौ मार तैं सोउ कायर ढुराने।
कोउ कटि-कटि परे, कोउ उठि-उठि लरे, कोउ डरि-डरि बिदिसि दिसि पराने॥
तब असुर अगिनि जल बान डारन लग्यौ, तासु माया सकल हरि निवारी।
असुर के भटनि कौ गरुड़ लाग्यौ गिलन, तुरग गज उड़ि चले लगि बयारी॥
असुर गज रूढ़ ह्वै गदा मारे फटकि, स्याम अँग लागि सो गिरे ऐसैं।
बाल के हाथ तैं कमल दल नाल जुत, लागि गजराज तन गिरत जैसैं॥
आपु जगदीस सब सीस ता असुर के, मारि तिरसूल सौं काटि डारे।
छाँड़ि सो प्रान निरवान पद कौं गयौ, सूर पुहुप बरषि जै जै उचारे॥
प्रथी गहि पाइ, माल कुंडल छत्र ले, जोरि कर बहुरि अस्तुति सुनाई।
नाथ मम पुत्र कौं दीजिए परमगति, हरि कह्यौ पुत्र तुव मुक्ति पाई॥
बहुरि गए तहाँ कन्या हुतीं सब जहाँ, निरखि हरि रूप सो सब लुभाई।
चरन रहिं लागि बड़ भाग लखि आपने, कृपा करि हरि सु निज पुर पठाई॥
बहुरि गए इंद्रपुर इंद्र रह्यौ पाइँ परि, कल्पतरु वृछ तासौं मँगाए।
त्रिदसपति मात कौं रतन कुंडल दिए, वृच्छ लै आपु निज पुरी आए॥

बहुरि बहु रूप धरि हरि गए सबनि घर, ब्याह करि सबनि की आस पूरी।
सबनि कैं भवन हरि रहत सब रैनि दिन, सबनि सौं नैंकु नहिं होत दूरी॥
सबनि कौं पुत्र दस दस कुँवरि एक इक, दै सकल धर्म के गृह सिखाए।
कोटि ब्रह्मांड नायक सु वसुदेव सुत, सूर सोइ नद नंदन कहाए॥
॥४१६४॥४८१२॥

रुक्मिणी–परीक्षा *राग बिलावल*

भक्त-बछल हरि भक्त उधारन। भक्त परीच्छा के हित कारन।
रुकमिनि सौं बोले या भाइ। हम जानी तुम्हरी चतुराइ॥
राउ चँदेरी कौ सिसुपाल। जाकौं सेवत सब भूपाल॥
तासौं तेरी भई सगाई। तैं पाती क्यौं हमैं पठाई॥
जाति पाँति उन सम हम नाहीं। हम निरगुन सब गुन उन पाहीं॥
उन सम नहिं हमरी ठकुराई। पुरुष भले तैं नारि भलाई॥
निःकिंचन जन मैं मम वास। नारि संग तैं रहौं उदास॥
जौ कहै मोहिं काहे तुम ल्याए। ताके उत्तर द्यौं समुझाए॥
कुंडिनपुर बहु भूपति आए। तिनके हृदय गरब सौं छाए॥
बरजोरी मैं तोहिं हरि ल्यायौ। उनके मन कौ गरब नसायौ॥
यह सुनि रुकमिनि भई बिहाल। जानि पर्यौ नहिं हरि कौ ख्याल॥
लै उसाँस नैननि जल ढारे। मुख तैं बचन न कछू उचारे॥
ताकी दसा देखि हरि जानी। इन मम भक्ति भलैं पहिचानी॥
हँसि बोले तब सारँगपानी। प्रान प्रिया तुम क्यौं बिलखानी॥
मैं हाँसी की बात चलाई। तुम्हरे मन यह साँची आई॥
आँसू पोंछि निकट बैठारी। हँसी जान बोली तब प्यारी॥
कहँ तुम त्रिभुवन पति गोपाल। कहाँ बापुरो नर सिसुपाल॥
कहाँ चँदेरी कहँ द्वारावति। जाकैं सरवरि नहिं अमरावति॥
तुम अनुभव वह जनमैं मरै। मूरख वह तुम सरवरि करै॥
तुम सभ ओर नहीं जदुराइ। यहै जानि मैं सरनहिं आइ॥
यह सुनि हरि रुकमिनि सौं कह्यौ। जौ तुम मोकौं चित करि चह्यौ॥
त्यौं हौं मम चित चाहत तुमकौं। नहिं अंतर कछु तुम सौं हमकौं॥

जदुपति कौ यह सहज स्वभाव। जो कोउ भजै भजैं तिहिं भाउ॥
जो यह लीला हित करि गावै। सूर सो प्रेम भक्ति कौ पावै॥
॥४१९५॥४८१३॥

प्रद्युम्न-विवाह *राग मारू*

स्याम बलराम कौ सदा गाऊँ।
यहै मम जप यहै तप यहै नेम व्रत प्रेम मम यहै फल यहै पाऊँ।
स्याम बलराम प्रद्युम्न के ब्याह हित, रुक्म के देस जबहीं सिधाए।
कलिंग कौ राउ अरु रुक्म बलभद्र कौं, कपट करि सार पासा खिलाए॥
दाउँ बलराम को देखि उन छल कियौ, रुक्म जित्यौ कहन लगे सारे।
देव बानी भई जीति भई राम की, ताहु पै मूढ़ नाहीं सम्हारे॥
कलिंग कौ राउ तब हँसी लाग्यो करन राम तब हृदै मैं क्रोध आन्यौ॥
रुक्म अरु कलिंग कौ राउ मार्‍यौ प्रथम, बहुरि तिनके बहु सुभट मारे।
सूर प्रभु स्याम बलराम रनजीत भए, प्रद्युम्न ब्याहि निज पुर सिधारे॥४१९६॥४८१४॥

अनिरुद्ध-विवाह *राग मारू*

कुँवर तन स्याम मनुकाम है दूसरौ, सुपन मैं देखि ऊषा लुभाई।
चित्रलेखा सकल जगत के नृपनि की छिनक मैं मूर्ति तब लिखि दिखाई॥
निरखि जदुवंस कौ रहस मन मैं भयौ, देखि अनिरुद्ध कौं मूरछाई।
जाइ द्वारावती सोवतै कुँवर कौं, चित्रलेखा तहाँ तुरत ल्याई॥
बान दरवान सौं सुनत आयौ तहाँ, धाइ अनिरुद्ध सौं जुद्ध माड़्यौ॥
सूर प्रभु ठटी ज्यौं भयौ चाहै सु त्यौं, फाँसि करि कुँवर अनिरुद्ध बाँध्यौ॥४१९७॥४८१५॥

राग मारू

स्याम बलराम यह सुनत धाए।
आइ नारद कह्यौ द्वारिकानाथ सौं, बानासुर कुँवर अनिरुध बँधाए॥

छोहिनी दोइ दस हुतौ हरि सँग कटक, जात ही नगर ताकौं लुटायौ।
रुद्र भगवान अरु बान सात्यकि भिरे, राम कुंभांड माड़ी लड़ाई॥
सैनपति कोपि कै प्रद्युम्न सौं भिर्‌यौ सांब कूपकरन दोउ भिरे धाई।
तेज भमवान कौ पाइ जादव भिरे, असुर दल चल्यौ सबहीं पराई॥
रुद्र तब कोप करि अग्नि वरपा करी, स्याम जल बरपि डार्‌यौ बुझाई।
पुनि महादेव जो बान संधान कियौ, आपु भगवान ताकौं प्रहार्‌यौ॥
देखि यह जुद्ध सुर असुर चक्रित भए, लख्यौ तब बान जो रुद्र धार्‌यौ।
बान तब आइ भगवान सन्मुख भयौ, बान वरपा लग्यौ करत भारी॥
एकहू बान आयौ न हरि कैं निकट, तब गह्यौ धनुष सारंगधारी।
एक ही बान संधानि रथ के तुरग, ध्वजा अरु धनुष सब काटि डारे।
सखि कौ सब्द करि लियौ असुर तेज हरि, सुधुनि रही फैलि नभ प्रथी सारे॥
देखि यह असुर की मातु धाई नगन, कृष्न भगवान कैं निकट आई।
नगन तिय देखिबौ जुगत नाहीं कह्यौ, जानि यह हरि रहे मुख फिराई॥
असुर यह घात तकि गयौ रन तैं सटकि, तप्त जुर दियौ तब सिव पठाई।
सीत जुर जुद्ध करि कियौ विह्वल ताहि, तिन तब आइ बिनती सुनाई॥
प्रान दाता तुम्हीं स्थूल सूछम तुहीं, सर्व आतमा तुहीं धर्म पालक।
ज्ञान तुहि कर्म तुहिं बिस्वकर्मा तुहीं, अखिल सक्त प्रभु असुर घालक॥

सीत अरु तप्त कौ बल चलै प्रभु तहाँ, जहाँ नहिँ होइ सुमिरन तुम्हारौ।
करत दंडवत मैं तुम्हैं करुना करन, कृपा करि ओर मेरैं निहारौ॥
सुनत ये वचन हरि कह्यौ अभै करि, मैं कृपा करी तोहिँ त्रिसिरधारी॥
सीत अरु तप्त कौ भय न ह्वैहै, ताहि, सुनै यह कथा जो चित्तधारी॥
तप्त जुर गयौ सिर नाइ हरि कौ तुरत बानासुर बहुरि रणभूमि आयौ।
चक्र परहार हरि कियौ ताकौं निरखि, रुद्र सिर नाइ तब कहि सुनायौ॥
प्रगट तुम गुपत तुम तुमहिँ सरबातमा, चक्र तुव अग्नि रुद्र कितक हारे।
बुद्धि विधि चंद्रमा मन अहंकार मैं, धरि चरन रोम सब वृच्छ सारे॥
सीस आकास अरु स्रवन दसहू दिसा, इंद्र कर लोक त्रै वपु तिहारौ।
बान जगदीस मोहिँ जानि मम ईस तुम, राखि तिहिं माथ अब हाथ चारौ॥
बिहँसि जगदीस कह्यौ रुद्र जो तुहिँ भजै, तहाँ मैं जाउँ यह प्रन हमारैं।
कियौ प्रहलाद कुल अभय मैं प्रथमहीं, बान कियौ अमर भाषैं बिहारे॥
करै जो सेव तुम्हारी सु मम सेव है, विष्नु सिव ब्रह्म मम रूप सारे।
बान अभिमान मन माहिँ धार्‌यौ हुतौ, तब विदित हाथ तातैं सँहारे॥
रुद्र अरु बान अनिरुद्ध सनमान करि, तुरत भगवान कैं निकट ल्याए।
बहुरि ऊपा दई ब्याहि दाइज्ज सहित, हरि हरप करत निज पुरी आए॥

यह सकल कथा जो रुद्र अस्तुति सहित, करै सुमिरन ताहि भय न होई।
कही जो व्यास सुकदेव भागवत मैं, कही अब सूर जन गाइ सोई॥
॥४१९८॥४८१६॥

ग राजा उद्धार राग सारग

अविगत गति जानी न परे।
राई तैं परबत करि डारै, राई मेरु करै॥
नृग राजा नित गऊ सहस दै, करत हुतौ जल पान।
तनक चूक तैं गिरगिट कीन्हौ, को करि सकै बखान॥
कूप माहँ तिहिँ देखि बालकनि, हरि सौं कह्यौ सुनाइ।
कृपानिधान जानि आपनौ जन, आए तहँ जदुराइ॥
अंधकूप तैं काढि बहुरि तेहिँ, दरसन दै निस्तारा।
सूरदास सब तजि हरि भजियै, जब कब करै उधारा॥
॥४१९९॥४८१७॥

ी बलभद्र का व्रज आगमन राग बिलावल

स्याम राम के गुन नित गाऊँ। स्याम राम ही सौं चित लाऊँ॥
एक बार हरि निज पुर छए। हलधर जी वृंदाबन गए॥
रथ देखत लोगनि सुख पाए। जान्यौ स्याम राम दोउ आए॥
नद जसोमति जब सुधि पाई। देह गेह की सुरति भुलाई॥
आगैं ह्वै लैबे कौं धाए। हलधर दौरि चरन लपटाए॥
बल कौं हित करि गरैं लगाए। दै असीस बोले या भाए॥
तुम तौ भली करी बलराम। कहाँ रहे मन मोहन स्याम॥
देखौ कान्हर की निठुराई। कबहूँ पातीहू न पठाई॥
आपु जाइ ह्वाँ राजा भए। हमकौं बिछुरि बहुत दुख दए॥
कहौ कबहुँ हमरी सुधि करत। हम तौ उन बिनु बहु दुख भरत॥
कहा करैं ह्वाँ कोउ न जात। उन बिनु पल पल जुग सम जात॥
इहि अतर आए सब ग्वार। भेंटे सबनि जथा ब्यौहार॥
नमस्कार काहू कौं कियौ। काहू कौं अकम भरि लियौ।
पुनि गोपी जुरि मिलि सब आईं। तिन हित साथ असीस सुनाईं॥
हरि सुधि करि सुधि बुधि बिसराई। तिनकौ प्रेम कह्यौ नहिं जाई॥

कोउ कहै हरि व्याही बहु नार। तिनकौ बढ़यौ बहुत परिवार ॥
उनकौं यह हम देतिँ असीस। सुख सौं जीवैं कोटि बरीस ॥
कोउ कहै हरि नाहीँ हम चीन्हौ। बिनु चीन्हैँ उनकौं मन दीन्हौ ॥
निसि दिन रोवत हमैँ बिहाइ। कहौ करैं अब कहा उपाइ ॥
कोउ कहै इहाँ चरावत गाइ। राजा भए द्वारिका जाइ ॥
काहे कौं वै आवैं इहाँ। भोग बिलास करत नित उहाँ ॥
कोऊ कहै हरि रिपु छै किए। अरु मित्रनि कौं बहु सुख दिए ॥
बिरह हमारौ कहँ रहि गयौ। जिन हमकौं अति हीं दुख दयौ ॥
कोउ कहै जे हरि की रानी। कौन भाँति हरि कौं पतियानी ॥
कोऊ चतुर नारि जो होइ। करै नहीँ पतिआरौ सोइ ॥
कोउ कहै हम तुम कत पतियाईँ। उनकैं हित कुल लाज गवाईँ ॥
हरि कछु ऐसौ टोना जानत। सबकौं मन अपनैं बस आनत ॥
कोउ कहै हरि हम सब बिसराईँ। कहा कहैँ कछु कह्यौ न जाईँ ॥
हरिकौं सुमिरि नयन जल ढारैं। नैंकु नहीँ मन धीरज धारैं ॥
हरिकौं सुमिरि नयन जल ढारैं। नैंकु नहीँ मन धीरज धारैं ॥
यह सुनि हलधर धीरज धारि। कह्यौ आइहैं हरि निरधारि ॥
जब बल यह संदेस सुनायौ। तब कछु इक मन धीरज आयौ ॥
बल तहँ बहुरि रहे द्वै मास। ब्रज बासिनि सौं करत बिलास ॥
सब सौं मिलि पुनि निजपुर आए। सूरदास हरि के गुन गाए ॥

॥४२००॥४८१८॥

राग सारंग

बारुनि बल घूमिति लोचन बन, बिहरत मन सचुपाए।
मनौ मत्त गजराज बिराजत, करिनि जूथ सँग लाए ॥
मुकुलित केस सुदेस देखियत, नील बसन लपटाए।
भरि अपने कर कनक कटोरा, पीवत प्रियहिं चखाए ॥
हँसत रिसात बुलावत बरजत, तरजत भौंह चढ़ाए।
उदित मुदित उठि चलत डगमगत अनुज सुरति जिय आए ॥
इंदु बदन भुवधरन अमित बल, बर बनिता के भाए।
सरबस रीझि देत अपनैं रस, सूरदास गुन गाए ॥

॥४२०१॥४८१९॥

राग सारग

वारुनी वलराम पियारी ।
गौतम-सुता भर्गारथ धीवर, सवहिनि तैं सुंदर सुकुमारी ॥
ग्रीवा बाहु गलारत गाजत, सुख सजनी सतिभाइ सँवारी ।
संकर्षन कैं सदा सुहागिनि, अति अनुराग भाग वहु वारी ॥
बसुधातल जु बाम गिरि राजत, भ्राजत सकल लोक सुखकारी ।
प्रथम समागम आनँद आगम, दूलह वर दुलहिनी दुलारी ॥
रति-रस रीति प्रीति परगट करि, राम काम पूरन प्रतिपारी ।
सूर सुभाग उदित गोपिनि के, हरि मूरति भेंटे हलधारी ॥
॥४२०२॥४८२०॥

राग सारग

कालिंदी करि कह्यौ हमारौ ।
बोली बेगि चलौ बन बिहरत तोहिं अन्हाइ जाइ स्रम भारौ ॥
अतिहिं सतर होइ जनि सरिता, छाड़ि गर्व या गुन कौ गारौ ।
आपनि सौंह कृष्न की कानी, राखत हौं जस मान तुम्हारौ ॥
इतौ महातम मोहि दिखावति, भँवर तरग प्रवाह पसारौ ।
इन खुनसनि गोपाल दुहाई, हल करि खैंचि करौं नदि नारौ ॥
सुरनर गन गंधर्व जे कहिए, बोल वचन तिनहूँ नहिं टारौ ।
सूर समुद्र स्याम के भैयहिं, निपट नदी जानति मतवारौ ॥
॥४२०३॥४८२१॥

राग सारंग

जमुना आइ गई वलदेव ।
जो तुम कहौ सोइ हौं, करिहौं सतन सादर सेव ॥
सुर नर मुनि जन गन गध्रव ये, सव चरननि के देव ।
सूर भनौं यह मान करति हौं, अवलवनि की टेव ॥
॥४२०४॥४८२२॥

राग सारग

कालिंदी है हरि की प्यारी ।
जैसी मोपै स्याम करत हैं, तैसी तुम करौ कृपा निनारी ॥

जमुना जस की रासि चहूँ जुग, जम-जेठी जग की महतारी।
सूर कहे कौ दुख जनि मानौ, कहा करौं यह प्रकृति हमारी॥
॥४२०५॥४८२३॥

पौंड्रक-वध राग बिलावल

हरि हरि हरि सुमिरौ सब कोइ। हरि कैं सत्रु मित्र नहिं दोइ॥
ज्यौं सुमिरैं त्यौं ही गति होइ। हरि हरि हरि सुमिरौ सब कोइ॥
पौंड्रक अरु कासी के राइ। हरि कौं सुमिर्यौ वैर सुभाइ॥
अह निसि रहे यहै लव लाइ। क्यौं करि जीतौं जादवराइ॥
द्वारावति तिनि दूत पठायौ। ताकौं ऐसौ कहि समुझायौ॥
चारिभुजा मम आयुध चारि। वासुदेव मैं ही निरधारि॥
यौं ही कहि जदुपति सौं जाइ। कपट तजौ कै करौ लराइ॥
दूत आइ हरि सौं यह कह्यौ। हरि जू तिहिं यह उत्तर दयौ॥
जो तैं कही सो सब हम जानी। पौंड्रक की आयुस सियरानी॥
कह्यौ जाइ करै जुद्ध विचार। साँच झूठ ह्वै है निरवार॥
दूत आइ निज नृपहि सुनायौ। तब उन मन मैं जुध ठहरायौ॥
जहाँ तहाँ तैं सैन बुलाई। तब लगि जदुपति पहुँचे जाई॥
पौंड्रक सुनि तब सन्मुख आयौ। पाँच छोहिनी दल सँग ल्यायौ॥
सेना देखि सस्त्र सँभारे। जदुपति के लोगनि परहारे॥
हरि कह्यौ तू अजहूँ संभारि। साँच झूठ जिय देखि बिचारि॥
ताकी मृत्यु आइ नियरानी। जो हरि कही सो मन नहिं आनी॥
तब जदुपति निज चक्र सँभार्‌यौ। ताकी सेना ऊपर डार्‌यौ॥
सैन मारि पुनि ताकौं मार्‌यौ। तासु तेज निज मुख मैं धार्‌यौ॥
ऐसे हैं त्रिभुवन पति राइ। जिनकी महिमा वेदनि गाइ॥
कोउ भजै काहू परकार। सूरदास सो उतरै पार॥
॥४२०६॥४८२४॥

सुदच्छिण-वध राग मारू

नृप सुदच्छिन महादेव ध्यायौ।
नाथ तुव कृपा पितु वैर लीयौ चहौं, पाइँ परि वहुरि यौं कहि सुनायौ॥
अगिनि के कुंड तैं असुर परगट भयौ, द्वारिका देस ताकौं बतायौ।
आइ उन दुंद जब कियौ हरि पुरी मैं, चक्र ताकौ ह्वाँ तैं भगायौ॥

हति सुदच्छिन दई जारि बारानसी, कह्यौ तैं मोहिं ह्वाँ क्यौं पठायौ।
सूर के प्रभू सौं बैर जिन मन धर्‍यौ, आपुनौ कियौ तिन आपु पायौ ॥
॥४२०७॥४८२५॥

द्विविद-वध *राग मारू*

द्विविद करि क्रोध हरि पुरी आयौ।
नृप सुदच्छिन जर्‍यौ, जरी बारानसी, धाइ धावन जबै कहि सुनायौ।
द्वारिका माहिं उतपात बहु भाँति करि, बहुरि रैवत अचल गयौ धाई।
तहाँ हूँ देखि बलराम की सभा कौं, करन लाग्यौ निडर ह्वै ढिठाई ॥
लख्यौ बलराम यह सुभट बलवत कोउ, हल मुसल सस्त्र अपनौ सँभार्‍यौ ॥
द्विविद लै साल कौ वृच्छ सनमुख भयौ, फुरति करि राम तन फटकि मार्‍यौ ॥
राम हल मारि सो वृच्छ चुरकुट कियौ द्विविद सिर फूटि गयौ लगत ताकैं।
बहुरि तरु तोरि पापान फैंकन लग्यौ, बल मुसल करत परहार वाकैं॥
वृच्छ पापान कौ नास जब ह्वाँ भयौ, मुष्टिका जुद्ध दोऊ प्रचारी।
राम मुष्टिक लगैं गिर्‍यौ सो धरनि पर, निकसि गए प्रान सुधि बुधि विसारी।
सुरनि आकास तैं पुहुप बरपा करी, करि नमस्कार जै-जै उचारे।
देवता गए सब आपने लोक कौं, सूर प्रभु राम निज पुर सिधारे ॥
॥४२०८॥४८२६॥

साब-विवाह *राग आसावरी*

स्याम बलराम गुन सदा गाऊँ।
स्याम बलराम बिनु दूसरे देव कौं, सपनेहूँ मैं नहीं सीस नाउँ।
स्याम-सुत साब गयौ हस्तिनापुर तुरत, लछमना तहँ स्वयवर रचायौ।
देखतैं सबनि कैं ताहि बैठारि रथ, आपने देस कौं पलटि धायौ ॥

करन दुरजोधनादिक लियौ घेरि तिहिँ, करन ढिग आइ बहु बान मारे।
साँब तिहिँ काटि निज बान संधान करि, तुरँग रथ तासु के सब सँघारे॥
हन्यौ पुनि सारथी एक ही बान करि, पर्‍यौ सो धरनि सब सुधि बिसारी।
एक इक बान भेज्यौ सकल नृपनि पै, मनौ सब साथ कीन्ही जुहारी॥
देखि यह फुरति धनि धन्य सबहिनि कियौ, पुनि करन अस्व रथ के सँहारे।
साँब कौं पकरि बैठारि रथ आपनैं सुभट सब हस्तिनापुर सिधारे॥
आइ नारद कह्यौ तुरत भगवान सौं, चले भगवान हलधर निवारे।
कह्यौ मैं जाइ कै ल्याइहौं सांब कौं, कौरवनि सौं सदा हित हमारैं॥
प्रीति की रीति समुझाइहौं प्रथम उन, काज दोउ ओर पूरन सँवारौं।
जौ न मानैं कह्यौ राज अभिमान करि, एक ही मुसल सबकौं सँहारौं॥
जाइ बलराम भेंटे सकल कौरवनि, बहुरि तिन सबनि यह कहि सुनायौ।
सांब सौं चूक जो भई बालक हुतौ, तुम्हैं नहिं बूझियै जो बँधायौ॥
कह्यौ दुरजोधन अति कोप इहि दोष नहिं, दोष सब लगै पुरपनि हमारैं।
जो इन्हैं कियौ सनमान निज सभा मैं, बहुरि इहिं ओर हित करि निहारै॥
जाँबवँत-सुता-सुत कहाँ कहँ मम सुता, बुद्धिवँत पुरुष यह सब बिचारै।
अरु सदा देत जादव सुता कौरवनि, कहत अब बात बल बिनु सँभारै॥
कह्यौ बलराम यह सांब सुत स्याम कौ, रुद्र बिधि रेनु जाकी न पावैं।
इंद्र सुर सकल दरबार ठाढ़े रहैं, सिद्ध गंधर्व गुन सदा गावैं॥

बहुरि करि कोप हल अग्र पर नग्र धरि, गंग मैं डारि चाहत डुबायौ।
कौरवनि मिलि बहुत भाँति बिनती करी, दोष तिनकौ द्विजनि मिलि छमायौ॥
साँब कौं लक्ष्मना सहित ल्याये बहुरि, दियौ दाइज अगन गनि न जाए।
सूर प्रभु राम बल अतुल को तुलि सकै करत आनंद निज पुरी आए॥४२९१॥४८२७॥

नारद-संशय *राग बनाश्री*

हरि की लीला देखि नारद चकित भए।
मन यह करत बिचार गोमती तट गए॥
अलख निरंजन निराकार अच्युत अबिनासी।
सेवत जाहि महेस सेस, सुर माया दासी॥
धर्म स्थापन हेत पुनि, धार्यौ नर औतार।
ताकौं पुत्र कलत्र सौं, नहिं संभवत पियार॥
हरि कैं षोडस सहस, आठ पतिव्रता नारी।
सबकौ हरि सौं हेत, सबै हरि जू की प्यारी॥
जाकैं गृह द्वै नारि हैं ताहि कलह नित होइ।
हरि बिहार किहिं बिधि करत, नैननि देखौं जोइ॥
द्वारावति रिषि पैठि भवन, हरि जी के आए।
आगे ह्वै हरि नारि सहित, चरननि सिर नाए॥
सिंहासन बैठारि के, धोए चरन बनाइ।
चरनोदक सिर धरि कह्यौ, कृपा करी रिषिराइ॥
तब नारद हँसि कह्यौ, सुनौ त्रिभुवनपति राई।
तुम देवनि के देव, देत हौ मोहिं बडाई॥
बिधि महेस सेवत तुम्हैं, मैं बपुरा किहिं माहिं।
कहैं तुम्हैं प्रभु देवता, यामैं अचरज नाहिं॥
और गेह रिषि गए, तहाँ देखे जदुराई।
चँवर दुरावति नारि, करति दासी सेवकाई॥
रिषि कौ आवत देखि हरि कियौ बहुत सनमान।
हाँ हू तैं नारद चले, करि ऐसौ अनुमान॥

जा गृह मैं हौं जात, स्याम आगैं ही आवत।
तातैं छाँड़ि सुभाव जाउ अबकैं मैं धावत॥
जहँ नारद स्रम करि गए, तहँ देखे घनस्याम।
बालनि सौं क्रीड़ा करत, कर जोरे खरी बाम॥
जहाँ जहाँ रिषि जाइँ तहाँ तहँ हरि कौं देखैं।
कहुँ कछु लीला करत, कहूँ कछु लीला पेखैं॥
यौं ही सब गृह मैं गए, लह्यौ न मन बिस्राम।
तब ताकौं व्याकुल निरखि हँसि बोले घनस्याम॥
नारद मन कौ भरम तोहिं एतौ भरमायौ।
मैं व्यापक सब जगत, वेद चारौ मोहिं गायौ।
मैं करता मैं भोगता, मो बिनु और न कोइ।
जो मोकौं ऐसौ लखै, ताहि भरम नहिं होइ॥
बूझौ सब गृह जाइ, सबै जानत मोहिं यौंही।
हरि कौं हमसौं प्रीति, अनत कहुँ जात न क्यौंही॥
मैं उदास सब सौं रहौं, यह मम सहज सुभाइ।
ऐसौ जानै मोहिं जो, मम माया तरि जाइ॥
तब नारद कर जोरि कह्यौ तुम अज अनत हरि।
तुमसे तुम ही ईस नहीं द्वितिया कोउ तुम सरि॥
तुव माया तुव कृपा बिनु, सके नहीं तरि कोइ।
अब मोकौं कीजै कृपा, ज्यौं न बहुरि भ्रम होइ॥
रिषि चरित्र मम देखि, कछू अचरज मति मानौ।
मो तैं द्वितिया और कोउ मन माहँ न आनौ॥
मैं करता मैं भोगता, नहिं यामैं कछु संदेहु।
मेरे गुन गावत फिरौ, लोगनि कौं सुख देहु॥
नारद करि परनाम, चले हरि के गुन गावत।
बार बार हरि रूप ध्यान, हिरदै मैं ध्यावत॥
यह लीला आचरज की, सूरदास कही गाइ।
ताकौं जो गावै सुनै, सो भव-जल तरि जाइ॥
॥४२१०॥४८२८॥

जरासंध-बध

राग कान्हरौ

राज-रवनि गावतिं हरि कौ जस।
रुदन करत सुत कौं समुझावतिं, राखतिं स्रवननि प्याइ सुधा-रस॥

तुम जनि जिय डरपहु रे बालक, कृपासिंधु कैं सरन सदा बस।
तजि जिय सोच तात अपने कौ, करि प्रतीति निरभय ह्वै कै हँस॥
जिन प्रभु जनक सुता प्रन राख्यौ, अरु रावन के सीस सकल नस।
सोई सूर सहाइ हमारैं, मोचन गोप गयंद महा पस॥
॥४२ १॥४८२९॥

रे सुत बिनु गोविंद कोउ नाही।
तुम्हरे दुःख दूरि करिबे कौं, रिद्धि सिद्धि निधि फिरि फिरि जाहीं॥
और देव की सेवा ऐसी, तृन की अग्नि मेघ की छाहीं।
जगत पिता जगदीस सरन बिनु, अंत अनाथ कहूँ न समाहीं॥
सिव बिरंचि सुर ईस मनुज मुनि, तिनकी भक्ति भजन अवगाहीं।
सूरदास भगवत भजन बिनु, कोटि करौ तउ दुःख न जाहीं॥
॥४२१२॥४८३०॥

राग धनाश्री

नाथ और कासौं कहौं गरुड़गामी।
दीनबंधु दयासिंधु असरन सरन, सत्य सुखधाम सर्वज्ञ स्वामी॥
इहिं जरासंध मद अंध मम मान मथि, बाँधि बिनु काज बल इहाँ आने।
किए अवरोध अति क्रोध गहि गिरि गुहा, रहत भृंगि कीट ज्यौं त्रास माने।
नाहिनै नाथ जिय सोच धन धरनि कौ, मरन तैं अधिक यह दुख सतावै।
भृत्य की रीति हम होत मागध सकल, नाथ जिय दमत उद्वेग पावै॥
मधु कैटभ मथन मुर भौम केसी दलन, कंस कुल काल अरु सालहारी।
जानि जग जूप भय भूप तद्रूपता, बहुरि करिहै कलुष भूमि भारी॥
बदत नृप दूत अनुभूत उर भीरुता, सुनत हरि सूर सारथि बुलायौ।
भयै आरूढ तकि ताहि उत्तर दियौ, जाइ सुधि देहु हौं यहै आयौ॥४२१३॥४८३१॥

चले हरि धर्म सुवन के देस।
संतन हित भू-भार उतारन, काटन वंदि नरेस॥
जब प्रभु जाइ संखधुनि कीन्ही, होत नगर परवेस।
सुनि नृप वंधु सहित उठि धाए, झारत पद-रज केस॥
आसन दै भोजन विधि पूछी, नारद सभा सुदेस।
तच्छन भीम धनंजय माधौ, धन्यौ विप्र कौ भेस॥
पहुँचे जाइ राजगिरि द्वारैं, धुरे निसान सुदेस।
माँग्यौ जुद्धहिं जरासिंधु पै, छत्री कुल आवेस॥
जरासंध कौं जुद्ध अर्थ, वल रहत न छत्री लेस।
सूरज प्रभु दिन सात वीस मैं, काटे सकल कलेस॥
॥४२१४॥४८३२॥

राग मारू

कंस खल दलन, रन राम रावन हतन, दीन दुख हरन गज मुक्तकारी।
नृपति चहुँ देस के वंदि जरासंध के, रैनि दिन रहत जिय दुखित भारी॥
सुनी जदुनाथ यह वात जव पथिक तैं, धर्म सुत कैं हृदय यह उपाई।
राज सू जज्ञ कौ कियौ आरंभ मैं, जानि कै नाथ तुमकौ सहाई॥
भीम अरजुन सहित विप्र कौ रूप धरि, हरि जरासंध सौं जुद्ध माँग्यौ।
दियौ उन पै कह्यौ तुम कोऊ राजसी, कपट करि विप्र कौ स्वाग स्वाँग्यौ॥
हरि कह्यौ भीम अरजुन दोऊ सुभट ये, कृष्न मैं देखि लोचन उघारी।
वचन जो कह्यौ प्रतिपाल ताकौ करौ, कै सभा माहिं पत जाहु हारी॥
पार्थ तुम नहीं समरत्थ मम जुद्ध कौं, भीम सौं लरौं यह कहि सुनाई।
वीस औ सत्त दिन यौं गदाजुद्ध कियौ, दोउ वलवंत कोउ लियौ न जाई॥

याम तृन चीरि दिखराइ दियौ भीम कौं, भीम तब हरषि ताकौ पछार्‍यौ ।
रा जरासंध की सधि जोर्‍यौ हुतौ, भीम ता संधि कौ चीरि डार्‍यौ ॥
ृपति कौं छोरि सहदेव कौं राज दियौ, देव नर सकल जय उचार्‍यौ ।
ूर प्रभु भीम अरजुन सहित तहाँ तैं धर्मसुत देस कौं पुनि सिधार्‍यो ॥४२१५॥४८३३॥

राग सारग

जीत्यौ जरासंध बँदि छोरी ।
जुगल कपाट बिदारि बाट करि, जतनहिं तैं सँधि जोरी ।
बिषम जाल बध बाँधि व्याध लौं, नृप खग अवलि बटोरी ।
जनु सु अहेरी हति जादौपति, गुहा पींजरी तोरी ॥
निकसे देत असीस एक मुख, गावति कीरति गोरी ।
जनु उड़ि चले बिहगम के गन, कटे कठिन पग डोरी ॥
मिटि गए कलह कलेस कुलाहल, जनु वरि बीती होरी ।
सूरदास-प्रभु अगनित महिमा, जो कछु कहौं सो थोरी ॥
॥४२१६॥४८३४॥

राग मारू

जीत्यौ जीत्यौ हो जादवपति रिपु दल मार्‍यौ ।
तऊ न तजत हठ परम मुगुध सठ, ना जानै कुबुद्धि जड को बाहु बिदार्‍यौ ॥
खर बरि मूठि उठि खेलत बालक सुठि आनत ईंधन दौरि दौरि दिसि चार्‍यौ ।
ऐसैं यह नृप नर सकल सकेलि घर, कठिन हृदय करि सब कुल जार्‍यौ ।
कह्यौ न काहू कौ करै बहुरि अरै, एकहि पाइँ दै पग पकरि पछार्‍यौ ॥
सूर स्वामी अति रिस भीम की भुजा कैं मिस ब्यौंतत बसन जिमि तासु तन फार्‍यौ ।४२१७॥४८३५॥

राग बिलावल

...ओं की प्रार्थना

जाहिँ कहाँ अपराध भरे।
...म माता तुम पिता जगत गुरु, तुमहिँ सहोदर बंधु हरे॥
...सन कुचील देह अति दुरबल, उमँगि प्रेम जल सिथिल भरे।
राजा सबै बंदि तैं छोरे, आइ कृष्न के पाइँ परे॥
समाधान करि बिदा दई हरि, उभै कमल कर सीस धरे।
सूरदास प्रभु तुम्हरी कृपा तैं, भवसागर छन माहिँ तरे॥
॥४२१८॥४८३६॥

राग बिलावल

पांडव-यज्ञ, शिशुपाल-गति

हरि हरि हरि सुमिरौ सब कोइ। सत्रु मित्र हरि गनत न दोइ॥
जो सुमिरै ताकी गति होइ। हरि हरि हरि सुमिरौ सब कोइ॥
बैर भाव सुमिरयौ सिसुपाल। ताहि राजसू मैं गोपाल॥
चक्र सुदरसन करि संहार्यौ। तेज तासु निज मुख मैं धार्यौ॥
भक्ति भाव भक्तनि उद्धारत। बैर भाव असुरनि निस्तारत॥
कोऊ सुमिरौ काहु प्रकार। सूरदास हरि नाम उधार॥
॥४२१९॥४८३७॥

राग बिलावल

पांडव सभा, दुर्योधन का क्रोध

भक्त-काज हरि जित कित सारे।
जज्ञ राजसू माहिँ आपु हरि, सब के पाउँ पखारे॥
अष्ट नायिका द्रुपद-सुता कौं, करैं तहाँ सेवकाई।
दुर्योधन यह रीति देखि कै, मन मैं रह्यौ खिस्याई॥
भक्त संग हरि लागे डोलत, भक्त बछल प्रभु भोरे।
सब बिधि काज करत भक्तनि के, गनत नहीँ हम को रे॥
जीतैं जीतत भक्त आपनैं, हारैं हार बिचारत।
सूरदास-प्रभु रीति सदा यह, प्रन जुग-जुग प्रतिपारत॥
॥४२२०॥४८३८॥

राग मारू

शाल्व-वध

सुभट साल्व करि क्रोध हरि पुरी आयौ।
हत्यौ सिसुपाल कौं राजसू माहिँ हरि, धाइ धावन जबै यह सुनायौ॥

वृच्छ बन काटि महलात ढाहन लग्यौ, नगर के द्वार दीन्हे गिराई।
सर्प पाषान की वृष्टि करि लोक पर, वायु अति वेग सौं पुनि चलाई ॥
प्रद्युम्न सात्यकि निकसि सन्मुख भए, बंधु सारन सुनत वेगि धाए।
तहाँ चारुदेष्नहूँ साजि दल बल सकल, हाँकि रथ तुरँग ता ठौर आए ॥
तिमिर कौ बान तब साल्व मार्‍यौ फटकि, प्रद्युम्न बान दीपति चलायौ।
मिट्यौ अँधकार तब बान बरषा करी, तुरँग रथ सारथी स्यौं गिरायौ ॥
सैन के लोग पुनि बहुत घायल किए, ध्वजा-धर धर पर्‍यौ मूरछाई।
साल्व यह देखि कै चकित सौ ह्वै रह्यौ, सस्त्र के गहन की सुधि भुलाई ॥
असुर-बिद्या समर बहुरि लाग्यौ करन, कबहुँ लघु कबहुँ दीरघ सु होई।
गुप्त ह्वै कबहुँ कबहुँ परगट देखियै, कबहुँ धर कबहुँ नभ बसै सोई ॥
अगिनि कबहुँ कबहुँ बारि बरषा करै, प्रद्युम्न सकल माया निवारी।
साल्व परधान द्यौमान मारी गदा, प्रद्युम्न मूरछित सुधि बिसारी ॥
धर्म-वित सारथी गयौ एकांत लै, उहाँ जब चेत ह्वै सुधि सँभारी।
खीझि कह्यौ ताहि क्यौं मोहिं लायौ इहाँ, मम पिता मातु कौं लगी गारी ॥
हैं कहा कहि मोहि राम भगवान सुनि, नारि मम सुनत अति दुखित होई।
मरैं रन सुजस परलोक सुख पाइये, मद मति तैं दोऊ बात खोई।
धर्म-वित कह्यौ करि विनय मम चूक नहिं, सारथी धर्म मोहि गुरु सिखायौ ॥
मूरछित सुभट नहिं राखिये खेत मैं, जानि यह बात मैं इहाँ ल्यायौ।
प्रद्यमन कह्यौ जो भई सो भई अब, बात जनि काहु सौं यह सुनैयै।
ताहि दै सपथ, करि आचमन पुनि कह्यौ, चलौ रनभूमि अब जैयै ॥

आइ रनभूमि मैं सबनि धीरज दियौ, साल्व रथ-तुरग चारौ संहारे।
छत्र धुज तोरि मार्‍यौ बहुरि सारथी, देखि यह सुभट डरि गए सारे॥
हस्तिनापुर गए हुते हरि पांडु गृह, तहाँ तैं चले यह बात जानी।
साल्व उत्पात कियौ द्वारिका माहिँ बहु, हाँकि रथ कह्यौ सारंग-पानी॥
सारथी पाइ रुख दये सटकारि हय, द्वारिकापुरी जब निकट आई।
साल्व के भटनि लखि कटक भगवान कौ, आपने नृपति सौं कह्यौ जाई॥
सुनि सो भगवान कैं आइ सनमुख भयौ, सारथी ओर बरछी चलाई॥
ताहि आवत निरखि स्याम निज साँग सौं, काटि करि साल्व की सुधि भुलाई।
बहुरि तिहिं कोपि निज बान संधान करि, धनुष भगवान कौ काटि डार्‍यौ॥
टूटतैं धनुष के सब्द आकास गयौ, साल्व निज जिय समुझि यौं उचार्‍यौ।
रुकमिनी माँग सिसुपाल की तुम हरी, बहुरि तिहिं राजसू मैं सँहारौ।
जाइहौ अब कहाँ दाँव लैहौं इहाँ, छाँड़ि सो विचार आयौ सँभारौ॥
कह्यौ भगवान सुनि साल्व जे सूर नर, ते नहीं करत निजमुख बड़ाई।
जे करैं, सूर जिनकौं नहीं जानिये, भापि यह गदा ताकौं चलाई॥
गदा कैं लगत ही गयौ सो गुप्त ह्वै, धारि धावन रूप यह सुनायौ।
कह्यौ वसुदेव जगदीस आसचर्ज यह, तुम अछत साल्व मोहिं बाँधि लायौ।
बहुरि करि कपट वसुदेव तहँ प्रगट कियौ, कह्यौ तिन नाथ मैं दुखित भारी।
साल्व करवार लै स्याम के देखतैं, डारि दयौ सीस ताकौ उतारी॥

लख्यौ भगवान करि कपट इन यह कियौ, तासु माया तुरत हरि निवारी।
भागि निज पुर चल्यौ स्याम पहिलैं पहुँचि, खैंचि कै गदा ता सीस मारी॥
गदा जुद्ध साल्व कीन्हौ बहुत बेर लौं, बहुरि हरि साँग ताकौं चलाई।
लगत ताकैं गए प्रान वाके निकसि, सुरनि आकास दुंदुभि बजाई॥
सीस ताकौं बहुरि काटि करवार सौं, मगर सम समुद्र मैं डारि दीन्हौ
सूर प्रभु रहे ता ठौर दिन और कछु, मारि दँतवक्र पुर गवन कीन्हौ॥४२२१॥४८३६॥

दंतवक्र-वध *राग मारू*

हरि निकट सुभट दंतवक्र आयौ।
कह्यौ सिसुपाल तुम राजसू मैं हत्यौ, धन्य सोइ हेत मैं दरस पायौ।
भरत तुम साथ संसै नहीं कछु हमैं, दोऊ बिधि आहिं प्रभु हित हमारैं॥
जिएँ तौ राजसुख-भोग पावैं जगत, मुएँ निरवान निरखत तुम्हारे॥
बहुरि लै गदा परहार कियौ स्याम पर, लग्यौ ज्यौं लगै अबुज पहारै॥
हरि गदा लगत गए प्रान ताके निकसि, बहुरि हरि निज बदन माहिं धारे।
अनुज ताकौ बिदूरथ लग्यौ फिरन पुनि, चक्र सौं सीस ताकौ प्रहार्‍यौ।
सूर प्रभु जुद्ध निरखि भयो मुनि जन हरष, सुर पुहुप बरषि जै जै उचार्‍यौ॥४२२२॥४८४०॥

राग मारू

स्याम बलराम कौं सदा ध्याऊँ।
यहै मम ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यहै, यहै असनान फल यहै पाऊँ॥

स्याम दँतवक्र अरु सात्व कौं जीति करि, करत आनंद निजपुरी आए।
रामगंगादि, जमुनादि अस्नान करि, नैमिसारण्य पुनि जाइ न्हाए॥
सूत तहं कथा भागवत की कहत हे, रिषि अठासी सहस हुते स्रोता॥
राम कौं देखि सनमान सबही कियौ, सूत नहिं उठे निज जानि वक्ता॥
राम तिहिं हत्यौ तब सब रिषिन मिलि कह्यौ, बिप्र हत्या तुम्हैं लगी भाई।
सूत सुत थापि सब तीर्थ अस्नान करि, पाप जो भयौ सो सब नसाई॥
पुनि कह्यौ रिषिन दानव महा प्रबल ह्याँ, हमैं दुख देत सो सदा आई।
ताहि जौ हतौ तौ होइ कल्यान तुव, हम करैं जज्ञ सुख सौं सदाई॥
राम दिन कितक ता ठौर औरौ रहे, आइ बल्वल तहाँ दई दिखाई।
रुधिर औ माँस की लग्यौ बरषा करन, रिनि सकल यह देखि गए डराई॥
राम हल सौं पकरि मुसल सौं हत्यौ तेहि, प्रान तजि तेहि सकल सुधि बिसारी।
सुरनि आकास तैं पुहुप बरषा करी, रिषिन आसीस जय धुनि उचारी॥
बहुरि बलराम परनाम करि रिषिन कौं, पृथी परदच्छिना कौं सिधाए।
प्रभु रची ज्यौं हि ज्यौं होइ सो त्यौं हि त्यौं, सूर जन हरि चरित कहि सुनाए॥४२२३॥४८४१॥

सुदामा-चरित्र *राग बिलावल*

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरनारबिंद उर धरौ॥
बिप्र सुदामा सुमिरे हरी। ताकी सकल आपदा टरी॥
कहौं सु कथा सुनौ चित धारि। कहै सुनै सु लहै सुख सार॥
बिप्र सुदामा परम कुलीन। बिष्नु भक्ति सौं अति लवलीन॥

भिच्छा वृत्ति उदर नित भरे। अह-निसि हरि हरि सुमिरन करे ॥
नाम सुसीला ताकी नारि। पतिव्रता पति आज्ञाकारि ॥
पति जो कहै सो करै चित लाइ। सूर कह्यौ इक दिन या भाइ ॥
॥४२२४॥४८४२॥

राग बिलावल

कहि न सकति सकुचति इक बात।
केतिक दूरि द्वारिका नगरी, क्यौं नाहीं जदुपति लौं जात ॥
जाके सखा स्याम सुंदर से, श्रीपति सकल सुखनि के दात।
तिनहिं अछत तुम अपने आलस, काहैं कत रहत कृस गात ॥
कहियत परम उदार कृपानिधि, अंतरजामी त्रिभुवन तात।
सर्वस देत रीझि भक्तनि कौं, रुचि मानत तुलसी के पात ॥
छाँडौ सकुच बाँधि पट-तंदुल, सूरज समै चलौ उठि प्रात।
लोचन सफल करौ पिय अपने, हरि मुख-कमल देखि बिकसात ॥
॥४२२५॥४८४३॥

राग नट

कत सिधारौ मधुमूदन पै सुनियत हैं वे मीत तुम्हारे।
बाल सखा अरु बिपति बिभंजन, संकट हरन मुकुंद मुरारे ॥
और जु अतिसय प्रीति देखियै, निज तन मन की प्रीति बिसारे।
सरवस रीझि देत भक्तनि कौं, रंग नृपति काहू न बिचारे ॥
जद्यपि तुम संतोष भजत हौ, दरसन सुख तैं होत जु न्यारे।
सूरदास प्रभु मिले सुदामा, सब सुख दै पुनि अटल न टारे ॥
॥४२२६॥४८४४॥

राग धनाश्री

सुदामा सोचत पथ चले।
कैसैं करि मिलिहैं मोहि श्रीपति, भए तब सगुन भले ॥
पहुँच्यौ जाइ राजद्वारे पर, काहू नहिं अटकायौ।
इत उत चितै धँस्यौ मंदिर मैं, हरि कौ दरसन पायौ ॥
मन मैं अति आनंद कियौ हरि, बाल-मीत पहिचान।
धाए मिलन नगन पग आतुर, सूरज-प्रभु भगवान ॥
॥४२२७॥४८४५॥

राग बिलावल

दूरहिं तैं देख्यौ बलबीर ।
अपने बालसखा जु सुदामा, मलिन बसन अरु छीन सरीर ॥
पौढ़े हे परजंक परम रुचि, रुकमिनि चौंर डुलावत तीर ।
उठि अकुलाइ अगमने लीन्हें, मिलत नैन भरि आए नीर ॥
निज आसन बैठारि स्याम-घन, पूछी कुसल कहो मतिधीर ।
ल्याए हौ सु देहु किन हम कौं, कहा दुरावन लागे चीर ॥
दरस परस हम भए सभागे, रही न मन मैं एकहु पीर ।
सूर सुमति तंदुल चाबत ही, कर पकर्‌यौ कमला भई धीर ॥
॥४२२८ ४८४६॥

राग धनाश्री

जदुपति दीख सुदामा आवत ।
बिह्वल बिकल भयौ दारिद बस, करि बिलाप रुकमिनी सुनावत ॥
धाइ आइ हँसि कियौ संभाषन, कर-गहि भुजा अंग लै लावत ।
तंदुल देखि अधिक आनंदित, माँगि सुदामा जो मन भावत ॥
मन ही मन मैं कहत गह्यो कर, सो दीजै जो चित न डुलावत ।
सूरदास नव निधि के दाता, जाकौं कृपा करत सोइ पावत ॥
॥४२२९॥४८४७॥

राग बिलावल

ऐसी प्रीति की बलि जाउँ ।
सिंहासन तजि चले मिलन कौं, सुनत सुदामा नाउँ ॥
कर जोरे हरि बिप्र जानि कै, हित करि चरन पखारे ।
अंक माल दै मिले सुदामा, अर्धासन बैठारे ॥
अर्धंगी पूछति मोहन सौं, कैसे हितू तुम्हारे ।
तन अति छीन मलीन देखियत, पाउँ कहाँ तैं धारे ॥
संदीपन कैं हमऽरु सुदामा, पढ़े एक चटसार ।
सूर स्याम की कौन चलावै, भक्तनि कृपा अपार ॥
॥४२३०॥४८४८॥

राग धनाश्री

गुरु गृह हम जब बन कौं जात ।
तोरत हमरे बदले लकरी, सहि सब दुख निज गात ॥

कहिहैं स्याम सत्त इन छाँड्यौ, उनौ राँक ललचायौ।
तृन की छाहँ मिटी निधि माँगत, कौन दुखनि सौं छायौ॥
सागर नहीं समीप कुमति कैं, विधि कह अंत भ्रमायौ।
चितवत चित्त विचारत मेरौ, मन सपनैं डर छायौ॥
सुरतरु, दासी, दास, अस्व, गज, विभौ विनोद बनायौ।
सूरज-प्रभु नँद-सुवन मित्र है, भक्तनि लाड लड़ायौ॥
॥४२३८॥४८५६॥

राग बिलावल

कहा भयौ मेरौ गृह माटी कौ।
हौं तौ गयौ गुपालहिं भैंटन, और खरच तंदुल गाँठी कौ।
बिनु ग्रीवा कल सुभग न आन्यौ, हुतौ कमंडल दृढ काठी कौ।
घुनौ बाँस जुत बुनौ खटोला, काहु कौ पलँग कनक पाटी कौ॥
नूतन छीरोदक जुवती पै, भूषन हुतौ न लोह माटी कौ।
सूरदास प्रभु कहा निहोरौ, मानत रंक त्रास टाटी कौ॥
॥४२३९॥४८५७॥

राग धनाश्री

कैसैं मिले पिय स्याम सँघाती।
कहियै कंत कौन बिधि परसे, बसन कुचील छीन अति गाती॥
उठिकै दौरि अंक भरि लीन्ही, मिलि पूछी इत-उत कुसलाती।
पटतैं छोरि लिए कर तंदुल, हरि समीप रुकमिनी जहाँ ती॥
देखि सकल तिय स्याम सुँदर गुन, पट दै ओट सबै मुसक्यातीं।
सूरदास-प्रभु नवनिधि दीन्ही, देते और जो तिय न रिसातीं॥
॥४२४०॥४८५८॥

राग बिलावल

ऐसैं और कौन पहिचानै।
सुनु सुंदरि वा दीनबंधु बिन, कौन मित्रई मानै॥
कहँ हम कृपन, कुचील, कुदरसन, कहँ जदुनाथ गुसाईं।
भैंटे हृदय लगाइ अंक-भरि, उठि अग्रज की नाईं॥
निज आसन बैठारि परम रुचि, निज कर चरन पखारे।
पूछी कुसल स्याम-घन-सुंदर, सब संकोच निवारे॥

लीन्हे छोरि चीर तैं चादर, कर गहि मुख मैं मेले।
पूरब कथा सुनाइ सूर-प्रभु, गुरु-गृह वसे अकेले ॥
॥४२४१॥४८५९॥

राग घनाश्री

हरि विनु कौन दरिद्र हरै।
कहत सुदामा सुनि सुंदरि, हरि मिलन न मन विसरै ॥
और मित्र ऐसो गति देखत, को पहिचान करै।
विपति परैं कुसलात न बूझै, बात नहीं विचरै ॥
उठि भेटैं हरि तंदुल लीन्हे, मोहि न वचन फुरै ॥
सूरदास लछि दई कृपा करि, टारी निधि न टरै ॥
॥४२४२॥४८६०॥

राग घनाश्री

और को जानै रस की रीति।
कहँ हौं दीन कहाँ त्रिभुवनपति, मिले पुरातन प्रीति ॥
चतुरानन तन निमिष न चितवत, इती राज की नीति।
मोसौं वात कही हिरदय की, गए जाहि जुग वीति ॥
विन गोविंद सकल सुख सुदरि, ज्यौं भुस पर की भीति।
हौं कइ कहौं सूर के प्रभु की, निगम करत हैं क्रीति ॥
॥४२४३॥४८६१॥

राग घनाश्री

विनु गुपाल और मोहिं, ऐसो को सँभारे।
आपु हँसत दौरि मिले, उर तैं नहिं टारे ॥
छीन अंग जीर्न वसन, दीन मुख निहारे।
मम तन रज पथहिं लगी, पीत पट सु झारे ॥
सुखद सेज आसन दै, स्वहथ पग पखारे।
हरि हित हर गंग धरे, पग जल सिर धारे ॥
कहि-कहि गुरु गेह कथा, सकल दुख निवारे।
कहत विप्र सूरदास, प्रभु ऊपर वारे ॥
॥४२४४॥४८६२॥

संक्षिप्त सुदामा-चरित्र *राग केदारो*

दीन द्विज द्वारैं आइ भयौ ठाढ़ौ।
नाम सुदामा कहत नाथ जू, दुखी आहि अति गाढ़ौ ॥
सुनतहिं बचन कमलदल लोचन, कमलापति उठि धाए।
त्रिभुवन-नाथ जानि अपनौ प्रिय, हित सौं कंठ लगाए ॥
आदर करि मंदिर मैं ल्याए, कनक पलँग बैठाए।
कथा अनेक पुरातन कहि कहि, गुरु के धाम बताए ॥
खैबे कौं कछु भाभी दीन्हौ, श्रीपति श्रीमुख बोले।
फेंट उपर तैं अंजुल तंदुल, बल करि हरि जू खोले ॥
द्वै मूठी तंदुल मुख मेले, बहुरौ हाथ पसार्‌यौ।
त्रिभुवन दै करि कह्यौ रुकमिनी, अपनौ हाथ निवार्‌यो ॥
बिदा कियौ पहुँच्यौ निज नगरी, हेरत भवन न पायौ।
मंदिर रही नारि पहिचानी, प्रीति समेत बुलायौ ॥
दीन-दयाल देवकी-नंदन, वेद पुकारत चार्‌यौ।
सूर सुदामा कौं जु भेंटि हरि, दारिद दुःख निवार्‌यौ ॥

॥४२४५॥४८६३॥

पथिक के प्रति ब्रजनारी वाक्य *राग मलार*

तब तैं बहुरि न कोऊ आयौ।
वहै जु एक बेर ऊधौ सौं, कछु संदेसौ पायौ ॥
छिन छिन सुरति करत जदुपति की, परत न मन समुझायौ।
गोकुलनाथ हमारैं हित लगि लिखि हू क्यौं न पठायौ ॥
यहै बिचार करौ धौं सजनी, इतौ महरु क्यौं लायौ।
सूर स्याम अब बेगि न मिलहू, मेघनि अंबर छायौ ॥

॥४२४६॥४८६४॥

राग गौरी

बहुरौ हो ब्रज बात न चाली।
वहै सु एक बेर ऊधौ कर, कमल नयन पाती दै घाली ॥
पथिक तिहारे पा लागति हौं, मथुरा जाहु जहाँ बनमाली।
कहियौ प्रगट पुकारि द्वार ह्वै, कालिंदी फिरि आयौ काली ॥
तब वह कृपा हुती नँदनंदन रुचि रुचि रसिक प्रीति प्रतिपाली।
माँगत कुसुम देखि ऊँचे द्रुम, लेत उछंग गोद करि आली ॥

जब वह सुरति होति उर अंतर, लागति काम बान की भाली।
सूरदास प्रभु प्रीति पुरातन सुमिरत, दुसह सूल उर साली ॥
॥४२४७॥४

राग ।

तुम्हरे देस कागद मसि खूटी।
भूख प्यास अरु नींद गई सब, बिरह लयौ तन लूटी ॥
दादुर मोर पपीहा बोले, अवधि भई सब झूठी।
पाछैं आइ तुम कहा करौगे, जब तन जैहै छूटी ॥
राधा कहति सँदेस स्याम सौं, भई प्रीति की टूटि।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु, सखी करति हैं कुटि ॥
॥४२४८॥४

कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण, यशोमति, गोपी मिलन *राग*

पथिक कह्यौ ब्रज जाइ, सुने हरि जात सिंधु तट।
सुनि सब अँग भए सिथिल, गयौ नहिं वज्र हियौ फट ॥
नर नारी घर-घरनि सबै यह करतिं बिचारा।
मिलिहैं कैसी भाँति हमैं अब नंद-कुमारा ॥
निकट बसत हुती आस कियौ अब दूरि पयाना।
बिना कृपा भगवान उपाइ न सूरज आना ॥
॥४२४९॥४८६७॥

राग गौरी

हमारे हरि चलन कहत हैं दूरि।
मधुबन बसत आस हुती सजनी, अब तौ मरिहैं झूरि ॥
को नैं कह्यौ कौन सुनि आई, किहिं रुख रथ की धूरि।
संगहिं सबै चलौ माधौ के, ना तरु मरहु बिसूरि ॥
दच्छिन दिसि इक नगर द्वारिका, सिंधु रह्यौ भरि पूरि।
सूरदास अबला क्यौं जीवैं, जात सजीवन मूरि ॥
॥४२५०॥४८६८॥

हमतैं कमल नयन भए दूरि।
चलन कहत मधुबनहु तैं सजनी, इन नयनय की मूरि ॥

। कान्ह सब देखन लागीँ, उड़त न रथ की धूरि ।
ास प्रभु उतर न आवै, नयन रहे जल पूरि ॥
॥४२५१॥४८६९॥

राग धनाश्री

नैना भए अनाथ हमारे ।
मदनगुपाल उहाँ तैँ सजनी, सुनियत दूरि सिधारे ॥
वै समुद्र हम मीन वापुरी, कैसैँ जीवैँ न्यारे ।
हम चातक वै जलद स्याम-घन, पियतिँ सुधा रस प्यारे ॥
मथुरा बसत आस दरसन की, जोइ नैन मग हारे ।
सूरदास हमकौँ उलटी विधि मृतकहुँ तैँ पुनि मारे ॥
॥४२५२॥४८७०॥

राग धनाश्री

अब निज नैन अनाथ भए ।
मधुबन तैँ माधव सखि सुनियत औरौ दूरि गए ॥
मथुरा बसत हुती जिय आसा, औ लगतौ व्यौहार ।
अब मन भयौ भीम के हाथी सुनियत अगम अपार ॥
सिंधु कूल इक नगर बसायौ, ताहि द्वारिका नाउँ ।
यह तन सौँपि सूर के प्रभु कौँ, और जनम धरि जाउँ ॥
॥४२५३॥४८७१॥

राग धनाश्री

उती दूर तैँ को आवै री ।
जासौँ कहि संदेस पठाऊँ सो कहि कहन कहा पावै री ॥
सिंधु कूल इक देस बसत है, देख्यौ सुन्यौ न मन धावै री ।
तहँ नव-नगर जु रच्यौ नंद-सुत, द्वारावति पुरी कहावै री ॥
कचन के वहु भवन मनोहर, रक तहाँ नहिँ त्रन छावै री ।
हाँ के वासी लोगनि कौँ क्यौँ, ब्रज कौ बसिबौ मन भावै री ॥
वहु विधि करतिँ विलाप बिरहिनी, वहुत उपायनि चित लावैँ री ।
कहा करौँ कहँ जाउँ सूर प्रभु, को हरि पिय पै पहुँचावै री ॥
॥४२५४॥४८७१॥

राग सारंग

हौं कैसैं कै दरसन पाऊँ।
सुनहु पथिक उहिँ देस द्वारिका जौ तुम्हरैं सँग जाऊँ॥
बाहर भीर बहुत भूपनि की, बूझत बदन दुराऊँ।
भीतर भीर भोग भामिनि की, तिहि ठाँ काहि पठाऊँ।
बुधि बल जुक्ति जतन करि उहिँ पुर हरि पिय पै पहुँचाऊँ।
अब बन बसि निसि कुंज रसिक बिनु, कौनैं दसा सुनाऊँ॥
श्रम कै सूर जाउँ प्रभु पासहिं, मन मैं भलैं मनाऊँ।
नव किसोर मुख मुरलि बिना इन नैननि कहा दिखाऊँ॥
॥४२५५॥४८७३॥

राग नट

मानौ बिधि अब उलटि रची री।
जानति नहीं सखी काहे तैं, उहाँ न तेज तची री॥
बूड़ि न मुई नीर नैननि के, प्रेम न प्रजरि पची री।
बिरह अगिनि अरु जल प्रवाह तैं, क्यौं दुहुँ बीच बची री॥
जो कछु सकल लोक की सोभा, लै द्वारिका सची री।
ह्वाँ के बारिधि बड़वानल मैं, रेतनि आनि खची री॥
कहियै संकर्षन के भ्राता, कीरति कित न मची री।
सूर स्याम माया जग मोह्यौ, सोइ मुख निरखि नची री॥
॥४२५६॥४८७४॥

राग मारू

आयौ नहिँ माई कोइ तौ।
सुनि री सखी सँदेसहु दुर्लभ नैन थके, मग जोइतौ॥
मथुरा छाँड़ि निवास सिंधु कियौ, प्रानजिवन धन सोइ तौ।
द्वारावती कठिन अति मारग, क्यौं करि पहुँचैं लोइ तौ॥
मिटी मिलन की आस अवधि गई, ब्रजबनिता कहि रोइतौ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु, तृप्ति कहूँ नहिँ होइतौ॥
॥४२५७॥४८७५॥

राग मलार

तातैं अति मरियत अपसोसनि।
मथुरा हू तैं गए सखी री, अब हरि कारे कोसनि॥

यह अचरज सु घड़ो मेरैं जिय, यह छाँड़नि वह पोपनि।
निपट निकाम जानि हम छाँड़ी, ज्यौं कमान बिन गोसनि॥
इक हरि के दरसन बिनु मरियत, अरु कुबिजा के टोसनि।
सूर सुजरनि कहा उपजी जो, दूरि होति करि ओसनि॥
॥४२५८॥४८७६॥

राग मारू

जौ पै लै जाइ कोउ मोहिं द्वारिका कैं देस।
संग ताकौं चलौं सजनी, जटाहू करि केस॥
बोलि धौं हरवाइ पूछौं, आपनौं सनमेष।
जैसैही जो कहै कोऊ, बनैं तैसै भेष॥
जदपि हम ब्रजनारि, जुवती-जूथ-नाथ, नरेस।
तदपि सूर कुमोदिनी ससि, बढ़ै प्रीति प्रबस॥
॥४२५९ ४८७७॥

राग सारंग

उघरि आयौ परदेसी कौ नेहु।
तब जु सबै मिलि कान्ह कान्ह करि फूलति हीं, अब लेहु॥
हाहे कौं सखि अपनौ सरवस, हाथ पराएँ देहु।
उन जु महा ठग मथुरा छाँडी, जाइ समुद कियौ गेहु॥
कह अब करौं अगिनि तनु उपजी, बाढ्यौ अति सदेहु।
सूरदास बिहवल भईं गोपी, नैननि बरषत मेहु॥
॥४२६०॥४८७८॥

राग मलार

माई री कैस बनै हरि कौ ब्रज आवन।
कहियत है मधुबन तैं सजनी, कियौ स्याम कहुँ अनत भवन॥
अगम जु पथ दूरि दच्छिन दिसि, तहँ सुनियत सखि सिंधु लवन।
अब हरि ह्वाँ परिवार सहित गए, मग मैं मार्‍यौ कालजवन॥
निकट बसत मतिहीन भईं हम मिलिहुँ न आईं सुत्यागि भवन॥
सूरदास तरसत मन निसि दिन, जदुपति लौं लै जाइ कवन॥
॥४२६१॥४८७९॥

राग धनाश्री

सुनियत कहुँ द्वारिका बसाई।
दच्छिन दिसा तीर सागर कैं, कंचन कोट गोमती खाई॥
पंथ न चलै सँदेस न आवै, इती दूरि नर कोउ न जाई।
सत जोजन मथुरा तैं कहियत, यह सुधि एक पथिक पै पाई॥
सब ब्रज दुखी नंद जसुदाहू, इक टक स्याम राम लव लाई।
सूरदास प्रभु के दरसन बिनु, भई बिदित ब्रज काम दुहाई॥
॥४२६२॥४८८०॥

राग मारू

उडुपति सौं बिनवति मृग-नयनी।
तुम कहियत उडुराज अमृत-मय, तजि स्वभाव कत बरषत बहनी॥
उमापती-रिपु अधिक दहत है, हरि-रिपु-प्रीतम सूल नितैनी।
कृपा न छीन होति सुनु सजनी, भूमि-घिसन रिपु कहा दुरैनी॥
स्याम सँदेस बिचार करति हौं, कहाँ रहे हरि छाइ जु छौनी।
सूर स्याम बिनु भवन भयानक, जोहत रहति गोपाल की औनी॥
॥४२६३॥४८८१॥

राग केदारौ

दधि-सुत जात हौ उहिं देस।
द्वारिका हैं स्याम सुंदर, सकल भुवन नरेस॥
परम सीतल अमृत-दाता, करहु यह उपदेस।
कमलनैन बियोगिनी कौ, कह्यौ इक संदेस॥
नदनंदन जगत बंदन, धरे नटवर भेष।
काज अपनौ सारि स्वामी, रहे जाइ बिदेस॥
भक्तबच्छल बिरद तुम्हरौ, मोहिं यह अंदेस।
एक बेर मिलौ कृपा करि, कहै सूर सुदेस॥
॥४२६४॥४८८२॥

राग मलार

बीर बटाऊ पाती लीजौ।
जब तुम जाहु द्वारिका नगरी, हमरे रसाल गुपालहिं दीजौ॥

रंगभूमि रमनीक मधुपुरी, रजधानी ब्रज की सुधि कीजौ।
या गोकुल की सकल ग्वालिनी, देतिं असीस बहुत जुग जीजौ।
सूरदास प्रभु हमरे कोतैं, नंद नँदन के पाइँ परीजौ॥
॥४२६५।४८८३॥

राग मलार

स्याम बिनु भई सरद निसि भारी।
हमैं छाँड़ि प्रभु गए द्वारिका, ब्रज की भूमि बिसारी॥
निरमल जल जमुना कौ छाँड़्यौ, सेव समुद जल खारी।
कहियौ जाइ पथिक जैसैं आवैं, चरननि की बलिहारी॥
अबला कहा जोग की जानैं, ब्रजबासिनि जु बिचारी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं रटति राधिका प्यारी॥
॥४२६६॥४८८४॥

राग मलार

ब्रज पर मँडर करत है काम।
कहियौ पथिक स्याम सौं राख, आइ आपनौ धाम॥
जलद कमान बारि दारू भरि, तड़ित पलीता देत।
गरजन अरु तड़पन मनु गोला, पहरक मैं गढ़ लेत॥
लेहु-लेहु सब करत बंदि जन, कोकिल चातक मोर।
दादुर निकर करत जो टोवा, पल पल पै चहुँ ओर॥
ऊधौ मधुप जसूस देखि गयौ, टूट्यौ धीरज पानि।
राखिबैं होइ तौ आनि राखियै, सूर लोक निज जानि॥
॥४२६७॥४८८५॥

राग मलार

ब्रज पर बहुरौ लागे गाजन।
ज्यौं क्यौंहू पति जात बड़े की, मुख न दिखावत लाजन॥
चहुँ दिसि तैं दल बादल उमडे, सूने लागे बाजन।
ब्रज के लोग कान्ह बल बिनु अब, जित कित लागे भाजन॥
आपुन जाइ द्वारिका छाये, लागे स्याम बिराजन।
सूरदास गोपी क्यौं जीवैं, बिछुरे हरि से साजन॥
॥४२६८॥४८८६॥

राग मारू

अब मोहिं निसि देखत डर लागै।
बार-बार अकुलाइ देह तैं, निकसि-निकसि मन भागै॥
प्राची दिसा देखि पूरन ससि ह्वै आयौ तन तातौ।
मानौ मदन बदन बिरहिनि पै करि लीन्हौ रिस रातौ॥
भृकुटी कुटिल कलंक चाप मनु, अति रिस सौं सर साँध्यौ।
चहुँधा किरनि पसारि फाँसि लै, चाहत बिरहिनि बाँध्यौ॥
सुनि सठ सोइ प्रानपति मेरौ, जाकौ जस जग जानै।
सूर सिंधु बूड़त तैं राख्यौ, ताहू कृतहिं न मानै॥
॥४२६९॥४८८७॥

रुक्मिनी वचन श्रीकृष्ण के प्रति राग धनाश्री

रुकमिनि बूझति हैं गोपालहिं।
कहौ बात अपने गोकुल की कितिक प्रीति ब्रजबालहिं॥
तब तुम गाइ चरावन जाते, उर धरते बनमालहिं।
कहा देखि रीझे राधा सौं, सुंदर नैन बिसालहिं॥
इतनी सुनत नैन भरि आए, प्रेम बिवस नँदलालहिं।
सूरदास प्रभु रहे मौन ह्वै, घोष बात जनि चालहिं॥
॥४२७०॥४८८८॥

राग धनाश्री

रुकमिनी मोहिं निमेप न बिसरत, वे ब्रजबासी लोग।
हम उनसौं कछु भली न कीन्ही, निसि-दिन मरत बियोग॥
जदपि कनक मनि रची द्वारिका, विपय सकल संभोग।
तद्यपि मन जु हरत बंसी-बट, ललिता कैं संजोग॥
मैं ऊधौ पठयौ गोपिनि पै, दैन सँदेसौ जोग।
सूरदास देखत उनकी गति, किहिं उपदेसै सोग॥
॥४२७१॥४८८९॥

राग मलार

रुकमिनि मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
वह क्रीड़ा वह केलि जमुन तट, सघन कदम की छाहीं॥

राधिका वचन सखी प्रति *राग सारंग*

राधा नैन नीर भरि आए ।
कब धौं मिलैं स्याम सुंदर सखि, जदपि निकट हैं आए ॥
कहा करौं किहि भाँति जाहुँ अब, पख नहीं तन पाए ।
सूर स्याम सुंदर घन दरसैं, तन के ताप नसाए ॥
॥४२७९॥४८९७॥

राग केदारौ

अब हरि आइहैं जनि सोचै ।
सुनु बिधुमुखी बारि नैननि तैं, अब तू काहैं मोचै ॥
लै लेखनि मसि लिखि अपने, संदेसहि छाँडि सँकोचै ।
सूर सु बिरह जनाउ करत कत, प्रबल मदन रिपु पोचै ॥
॥४२८०॥३८९८॥

श्रीकृष्ण के प्रति गोपी संदेश *राग सारंग*

पथिक, कहियौ हरि सौं यह बात ।
भक्त बछल है बिरद तुम्हारौ, हम सब किए सनाथ ॥
प्रान हमारे संग तिहारैं, हमहूँ हैं अब आवत ।
सूर स्याम सौं कहत सँदेसो, नैनन नीर बहावत ॥
॥४२८१। ४७९९॥

कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण मिलन *राग सारंग*

नंद जसोदा सब ब्रज बासी ।
अपने अपने सकट समाजिकै, मिलन चले अविनासी ॥
कोउ गावत कोउ बेनु बजावत, कोउ उतावल धावत ।
हरि दरसन की आसा कारन, बिबिध मुदित सब आवत ॥
दरसन कियौ आइ हरि जू कौ, कहत स्वप्न कै साँची ।
प्रेम मगन कछु सुधि न रही अँग, रहे स्याम रँग राँची ॥
जासौं जैसी भाँति चाहियै ताहि मिले त्यौं धाइ ।
देस देस के नृपति देखि यह, प्रीति रहे अरगाइ ॥
उमँग्यौ प्रेम समुद्र दुहूँ दिसि, परिमित कही न जाइ ।
सूरदास यह सुख सो जानै, जाकै हृदय समाइ ॥
॥४२८२ ४९००॥

राग कान्हरौ

तेरी जीवन मूरि मिलहि किन माई।
महाराज जदुनाथ कहावत, तबहिं हुते सिसु कुँवर कन्हाई॥
पानि परे भुज धरे कमल मुख, पेखत पूरब कथा चलाई।
परम उदार पानि अवलोकत, हीन जानि कछु कहत न जाई॥
फिरि-फिरि अब सनमुख ही चितवति, प्रीति सकुच जानी जदुराई।
अब हँसि भेंटहु कहि मोहिं निज-जन, बाल तिहारौ नंद दुहाई॥
रोम पुलक गद गद तन तीछन, जलधारा नैननि बरषाई॥
मिले सु तात, मात, बाँधव सब, कुसल कुसल करि प्रस्न चलाई।
आसन देइ बहुत करी बिनती, सुत धोखै तब बुद्धि हिराई॥
सूरदास प्रभु कृपा करी अब, चितहिं धरे पुनि करी बड़ाई॥
॥४२८३॥४६०१॥

राग मलार

माधव या लगि है जग जीजत।
जातैं हरि सौं प्रेम पुरातन, बहुरि नयौ करि लीजत॥
कह हाँ तुम जदुनाथ सिंह तट, कहँ हम गोकुल बासी।
वह बियोग, यह मिलन कहाँ अब, काल चाल औरासी॥
कहँ रवि राहु कहाँ यह अवसर, बिधि संजोग बनायौ।
उहिं उपकार आजु इन नैननि, हरि दरसन सचुपायौ॥
तब अरु अब यह कठिन परम अति, निमिषहुँ पीर न जानी।
सूरदास प्रभु जानि आपने, सबहिनि सौं रुचि मानी॥
॥४२८४॥४६०२॥

रुक्मिनी का प्रश्न *राग कान्हरौ*

हरि सौं बूझति रुकमिनि इनमैं को वृषभानुकिसोरी।
बारक हमैं दिखावहु अपने बालापन की जोरी॥
जाकौ हेत निरंतर लीन्हे, डोलत ब्रज की खोरी।
अति आतुर है गाइ दुहावन, जाते पर घर चोरी॥
रचते सेज स्वकर सुमननि की, नव-पल्लव पुट तोरी।
बिन देखैं ताके मन तरसै, छिन बीतै जुग कोरी॥

सूर सोच सुख करि भरि लोचन, अंतर प्रीति न थोरी।
सिथिल गात सुख बचन फुरत नहिं, ह्वै जु गई मति भोरी॥
॥४२८५॥४९०३॥

राग धनाश्री

बूझति है रुकुमिनि पिय इनमैं को वृषभानु किसोरी।
नैंकु हमैं दिखरावहु अपनी बालापन की जोरी॥
परम चतुर जिन कीन्हे मोहन, अल्प बैस ही थोरी।
बारे तैं जिहिं यहै पढ़ायो, बुधि बल कल बिधि चोरी॥
जाके गुन गनि ग्रथित माला, कबहुँ न उर तैं छोरी।
मनसा सुमिरन, रूप ध्यान उर, दृष्टि न इत-उत मोरी॥
वह लखि जुवति वृंद मैं ठाढ़ी, नील बसन तन गोरी।
सूरदास मेरौ मन वाकी, चितवनि बंक हरथौ री॥
॥४२८६॥४९०४॥

राग मारू

गोबिंद परम कृपा मैं जानी।
निगम जो कहत दयालु सिरोमनि, सत्य सोइ बिधि-बानी॥
अब ए स्रवन बरन करि स्वारथ, तुम जु दरस सुख दीन्हौ।
या फल जोग सुकृत नहि समुझत, दीन देखि हित कीन्हौ॥
यह दिन धन्य-धन्य जीवन जस, धन्य भाग प्रभु पाए।
सिव मुनि मन दुर्लभ चरनांबुज, जनहि प्रकट परसाए॥
हरषित स्वजन सखा प्रिय बालक, कृष्न मिलन जिए भाए।
सूरजदास सकल लोचन जनु, ससि चकोर कुल पाए॥
॥४२८७॥४९०५॥

राग सारंग

हरि जू इते दिन कहाँ लगाए।
तबहिं अवधि मैं कहत न समुझी, गनत अचानक आए॥
भली करी जु बहुरि इन नैननि, सुंदर दरस दिखाए।
जानी कृपा राज काजहु हम, निमिष नहीं बिसराए॥
बिरहिनि बिकल बिलोकि सूर प्रभु, धाइ हृदै करि लाए।
कछु इक सारथि सौं कहि पठयौ, रथ के तुरँग छुड़ाए॥
॥४२८८॥४९०६॥

राग मलार

हरि जू वै सुख बहुरि कहाँ।
जदपि नैन निरखत वह मूरति, फिरि मन जात तहाँ।
मुख मुरली सिर मोर पखौवा, गर घुँघचिनि कौ हार॥
आगैं धेनु रेनु तन मंडित, तिरछी चितवनि चार।
राति दिवस सब सखा लिए सँग, हँसि मिलि खेलत खात॥
सूरदास प्रभु इत उत चितवत, कहि न सकत कछु बात।
॥४२८९॥४९०७॥

राग सारंग

हौं तो आई मिलन गुपालहिं।
सिंधु-धरनि यह जुगुति न तेरी, दुख दीन्हौ ब्रजबालहिं॥
कहा करौं तन स्याम पीत पट, दुइ तैं भए भुज चारि।
वह सुख कहाँ जु तब मन होतौ, भेंटत स्याम मुरारि॥
संतत सूर रहत पति संगम, सब जानति रुचि जी की।
तू क्यौं नहीं धरति या भेषहिं, जु पै मुक्ति अति नीकी॥
॥४२९०॥४९०८॥

राग धनाश्री

रुकमिनि राधा ऐसैं भेंटी।
जैसैं बहुत दिननि की बिछुरी, एक बाप की बेटी॥
एक सुभाव एक वय दोऊ, दोऊ हरि कौं प्यारी।
एक प्रान मन एक दुहुनि की, तन करि दीसति न्यारी॥
निज मंदिर लै गई रुकमिनी, पहुनाई विधि ठानी।
सूरदास प्रभु तहँ पग धारे, जहँ दोऊ ठकुरानी॥
॥४२९१॥४९०९॥

राग धनाश्री

राधा माधव भेंट भई।
राधा माधव, माधव राधा, कीट भृंग गति ह्वै जु गई॥
माधव राधा के रँग राँचे, राधा माधव रंग रई।
माधव राधा प्रीति निरंतर, रसना करि सो कहि न गई॥

ऋषि स्तुति राग बिलावल

हरि-हरि हरि सुमिरौ सब कोइ। बिनु हरि सुमिरन मुक्ति न होइ॥
श्रीशुक, व्यास कह्यौ जा भाइ। सोइ अब कहौं सुनो चित लाइ॥
सूरज-ग्रहन पर्व हरि जान। कुरुक्षेत्र मे आए न्हान॥
तहँ ऋषि हरि दरसन हित गए। हरि आगे ह्वै कै सब लए॥
आसन दै पूजा-विधि करी। हाथ-जोरि बिनती उच्चरी॥
दरस तुम्हारे देवन दुरलभ। हमकौं भयौ सो अतिहीं सुरलभ॥
यौं कहि पुनि लोगन समुझायौ। जैसैं वेद पुराननि गायौ॥
हरिजन कौं पूजै हरि जान। ताकौ होइ तुरत कल्यान॥
सुर पूजा बहु विधि सौं कीजे। तीरथ जाइ दान बहु दीजे॥
यह सब किएँ होइ फल जोइ। सत-सग सो छिन मैं होइ॥
यह सुनि कै ऋषि रहे लजाइ। पुनि बोले हरि सौं या भाइ॥
तुम सबके गुरु सबके स्वामी। तुम सबहिनि के अतरजामी॥
तुम्हे वेद ब्रह्मन्य बखानत। तातैं हमरी अस्तुति ठानत॥
हम सेवक तुम जगत अधार। नमो-नमो तुम्हे बारबार॥
तुम परब्रह्म जगत करतार। नर-तनु धर्‍यौ हरन भुव-भार॥
सुर पूजा अरु तीर्थ बतावत। लोगनि की मति कौं भरमावत॥
तुम निज रूप इहिं भाँति छिपायौ। काठ माँझ ज्यौं अगिनि दुरायौ॥
वसुदेव तुमकौं जानत नाहिं। और लोग बपुरे किहि माहिं॥
कोउ पिता पति कोऊ जानति। कोऊ सत्रु मित्र करि मानत॥
सर्व असंग तुम सर्व अधार। तुम्हैं भजै सो उतरै पार॥
जैसैं नींद माहिं कोउ होइ। बहु विधि सपनौ पावै सोइ॥
पै तिहिं उहाँ न कछू सँभार। किहिं देखत को देखनहार॥
यौं जे रहे विषय-रस भोइ। तिनकी बुद्धि सुद्ध नहिं होइ॥
जापर कृपा तुम्हारी होइ। रूप तुम्हारौ जानै सोइ॥
घट घट माहिं तुम्हारो वास। सर्व ठौर ज्यौं दीप-प्रकास॥
इहिं बिधि तुमकौं जानै जोइ। भक्तऽरु ज्ञानी कहिऐ सोइ॥
नाथ कृपा अब हम पर कीजै। भक्ति आपनी हमकौं दीजे॥
प्रेम भक्ति बिनु कृपा न होइ। सर्व सास्त्र हम देख्यौ जोइ॥
तपसी तुमकौं तप करि पावैं। मुनि भागवत गृही गुन गावैं॥
कर्म जोग करि सेवत जोइ। ज्यौं सेवै त्यौं ही गति होइ॥
ऋषि इहि बिधि हरि के गुन गाइ। कह्यौ होइ आज्ञा जदुराइ॥

हरि तिनकी पुनि पूजा करी। कीरति सकल जगत विस्तरी॥
वेद, पुरान सबनि कौ सार। व्यास कह्यौ भागवत विचार॥
बिनु हरि नाम नहीं उद्धार। सूर जानि यह भजौ मुरार॥
॥४२९८॥४९१६॥

राग बिलावल

देवकी-पुत्र आनयन

श्री गुपाल तुम कह्यो सो होइ।
तुमहीं कर्ता तुमहीं हर्ता, तुम तैं और न कोइ॥
अबलौं मैं तुमकौं नहिं जान्यौ, पुत्र भाव करि मान्यौ।
तुम हौ देव सकल देवनि के, अब तुमकौं पहिचान्यौ॥
गुरु सुत आनि दिए तुम जैसैं, कृपा करौ जदुराई।
मम सुतहू जे कंस सँहारे, ते प्रभु देहु जिवाई॥
मेरैं जिय यह बड़ी लालसा, देखौं नैननि जोइ।
दूध पिवाइ हृदै सौं ल्यावौं, पाछैं होइ सु होइ॥
यह सुनि हरि पाताल सिधारे, जहाँ हुते बलि राइ।
करि प्रनाम बैठारि सिंहासन, हित करि धोए पाँइ॥
तासौं कह्यौ देवकी के सुत, षट कंस जे मारे।
नैंकु मँगाइ देहु ते हमकौं, हैं वे लोक तिहारे॥
तहँ तैं आनि दिये हरि बालक, माता लाड़ लड़ाए।
सूरदास प्रभु दरस-परस करि, ते वैकुंठ सिधाए॥
॥४२९९॥४९१७॥

राग बिलावल

देव-स्तुति

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरनारविंद उर धरौ॥
हरि के रूप रेख नहिं राजा। अरु हरि सम दुतिया न बिराजा॥
अलख रूप कछु कह्यौ न जाई। देवनि कछु वेदोक्त बताई॥
हरि जू कैं हिरदै यह आई। देउँ सबनि यह रूप दिखाई॥
तीन लोक हरि करि बिस्तार। अपनी जोति कियौ उजियार॥
जैसैं कोऊ गेह सँवारि। दीपक बारि करै उजियार॥
त्यौं हरि जोति अपनी प्रगटाई। घट-घट मे सोई दरसाई॥
तीनिहु लोक सगुन तन जानौ। जोति सरूप आतमा मानौ॥
स्वासा तासु भए स्रुति चार। करैं सो अस्तुति या परकार॥

नाथ तुम्हारी जोति अभास। करति सकल जग मैं परकास ॥
थावर जंगम जहँ लगि भए। जोति तुम्हारी चेतन किए ॥
तुम सब ठौर सबनि ते न्यारे। को लखि सकै चरित्र तुम्हारे ॥
स्वयं प्रकास तुम साक्षी सदा। जीव कर्म करि बंधन बंधा ॥
सर्ब व्यापी तुम सब ठाहर। तुमहिं दूरि जानत नर बाहर ॥
तुम प्रभु सबके अंतरजामी। बिसरि रह्यो जिव तुमकों स्वामी ॥
तुम्हरी माया जग उपजाया। जैसे कों तैसे मग लाया ॥
जुग परमान कियो ब्यौहार। तुम्हरी लीला अगम अपार ॥
अद्भुत सगुन चरित्र तुम्हारे। जे करि कै भू भार उतारे ॥
तिनको समुझि सकत नहिं कोइ। निरगुन रूप लखै क्यों सोइ ॥
नर तन भक्ति तुम्हारी होइ। ज्यों तन मैं जिय आश्रय सोइ ॥
भक्ति करै सो उतरै पार। नमो नमो तुम्हैं बारबार ॥
सुक जैसी बिधि अस्तुति गाई। तैसैं ही मैं कहि समुझाई ॥
जो यह अस्तुति सुनैं सुनावै। सूर सु ज्ञान भक्ति को पावै ॥
॥४३००॥४९१८॥

राग बिलावल

नमो नमस्ते बारंबार। मधुसूदन गोबिंद मुरार ॥
माया मोह लोभ अरु मान। ये सब नर कौं फाँस समान ॥
काल सदा सर साँधे फिरै। कैसैं नर तव सुमिरन करै ॥
तुम निरगुन अद्वै निरँकार। सुर अरु असुर रहे पचिहार ॥
तुम्हरौ मरम न जानैं सार। नर बपुरो क्यों करे बिचार ॥
अरुन असित सित पीतऽनुहार। करत जगत मैं तुम अवतार ॥
सो जग क्यों मिथ्या कहि जाइ। जहाँ तरैं तुम्हरे गुन गाइ ॥
प्रेम भक्ति बिनु मुक्ति न होइ। नाथ कृपा करि दीजै सोइ ॥
और सकल हम देख्यौ जोइ। तुम्हरी कृपा होइ सो होइ ॥
यह तन है प्रभु जैसैं ग्राम। जामैं सब्दादिक बिस्राम ॥
अधिष्ठात्र तुम हौ भगवान। जान्यौ जात न तुम्हरौ स्थान ॥
तुम स्वासा त पुहुमी नाथ। स्वास रूप हम लख्यौ न जात ॥
जगत पिता तुमहीं हौ ईस। यातैं हम बिनवत जगदीस ॥
तुम सरि दुतिया और न आहि। पटतर देहिं नाथ हम काहि ॥
सुक जैसैं वेदस्तुति गाई। तैसैं ही मैं कहि समुझाई ॥

सूर कह्यौ श्रीमुख उच्चार। कहै सुनै सो तरै भव पार॥
।४३०१॥४९१९॥

नारद-स्तुति राग धनाश्री

प्रभु तुव मर्म समुझि नहिं परै।
जग सिरजत पालत संहारत, पुनि क्यौं बहुरि करै॥
ज्यौं पानी मैं होत बुदबुदा, पुनि ता माहिं समाइ।
त्यौंहीं सब जग प्रगटत तुम तैं, पुनि तुम माहिं बिलाइ॥
माया जलधि अगाध महाप्रभु, तरि न सकै तिहिं कोइ।
नाम जहाज चढ़े जो कोऊ, तुव पद पहुँचै सोइ॥
पापी नर लोहे जिमि प्रभु जू, नाहीं तासु निबाह।
काठ उतारत पार लोह ज्यौं, नाम तुम्हारौ ताह॥
पारस परसि होत ज्यौं कंचन, लोहपनौ मिटि जाइ।
त्यौं अज्ञानी ज्ञानहिं पावत, नाम तुम्हारौ गाइ॥
अमर होत ज्यौं संसय नासे, रहत सदा सुख पाइ।
यातैं होत अधिक सुख भगतनि, चरन-कमल चित लाइ॥
थावर जंगम सब तुम सुमिरत, सनक सनंदन ताहीं।
ब्रह्मा सिव अस्तुति न सकैं करि, मैं बपुरा केहि माहीं॥
जोग ध्यान करि देखत जोगी, भक्त सदा मोहिं प्यारौ।
ब्रज बनिता भजियौ मोहिं नारद, मैं तिन पार उतारौं॥
नारद ज्यौं हरि अस्तुति कीन्ही, सुक त्यौं कहि समुझाई।
सूरज प्रेम भक्ति की महिमा, श्रीपति श्रीमुख गाई।
॥४३०२॥४९२०॥

सुभद्रा-बिवाह राग बिलावल

भक्त-बछल श्री जादव राइ। भक्त काज हरि करत सदाइ।
अर्जुन तीरथ करन सिधाए। फिरत-फिरत द्वारावति आए॥
सुन्यौ बिचार करत बल येइ। दुर्योधनहि सुभद्रा देइ॥
तब अर्जुन के मन यह आइ। याकौं मैं लै जाउँ दुराइ॥
भेस तापसी कौ तिन गह्यौ। चारि मास द्वारावति रह्यौ॥
बलदेव ताकौं नेवति बुलायौ। भोजन हेतु सो बल-गृह आयौ।
लख्यौ सुभद्रा इहि सन्यासी। राज-कुँवर कोउ भेष उदासी॥

मेरे मन मैं यह उत्साह। मेरौ या सँग होइ बिवाह ॥
इक दिन सो हरि मंदिर गई। तहाँ भेंट पारथ सौं भई ॥
देखि ताहि रथ ठाढ़ौ कियौ। हरि दुहुँ कौ हिरदै लखि लियौ ॥
धनुष बान अपने तब दए। अर्जुन सावधान ह्वै लए ॥
पारथ लै सो रथहि परायौ। रथ के तुरँगनि बेगि चलायौ ॥
यह सुनि कै हलधर उठि धाए। तब हरि अर्जुन नाम सुनाए ॥
बल कह्यौ तुम मन ऐसी आई। तौ तुम क्यौं कीनी न सगाई ॥
हरि कह्यौ अबहुँ बुलावहु ताहि। भली भाँति सौं करै बिवाह ॥
तब बल पारथ तुरत बुलायौ। साधि महूरत लगन धरायौ ॥
करि बिवाह अर्जुन घर आए। सूरदास जन मंगल गाए ॥

॥४३०३॥४९२१॥

राग नट

बिनती करत गुविंद गुसाईं।
दै सब साँज अनंत लोक-पति, निपट रंक की नाईं ॥
धरि धन, धाम सजन के आगैं, स्याम सकुचि कर जोरे।
टहल जोग यह कुवँरि सुभद्रा, तुम सम नाहीं कोरे ॥
इतनी सुनत पाँडु नंदन कह्यौ, यहै बचन प्रभु दीजै।
सूरज दीन-बंधु अब इहिं कुल, कन्या जन्म न कीजै ॥

॥४३०४॥४९२२॥

जनक, श्रुतदेव और श्रीकृष्ण मिलाप — *राग बिलावल*

हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोइ। राव, रंक हरि गिनत न कोइ ॥
जो सुमिरै ताकी गति होइ। हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोइ ॥
श्रुतदेव ब्राह्मन सुमिर्‍यौ हरी। ताकी भक्ति हृदै हरि धरी ॥
राव जनक हरि सुमिरन कीनौ। हरि जू सोउ हृदै धरि लीनौ ॥
तब हरि रिषि बहुतक सँग लए। तिनके देस प्रीति बस गए ॥
स्वरूप धरि दुहुँ को मिले। तोपि तिन्है पुनि निजपुर चले ॥
हरि जू कौ यह सहज सुभाउ। रंक होइ भावै कोउ राउ ॥
जो हित करै ताहि हित करैं। सूरज प्रभु नहिं अंतर धरैं ॥

॥४३०५॥४९२३॥

घरहीं बैठे दोऊ दास। राग कान्हरौ
रिधि सिधि मुक्ति अभय पद दायक, आइ मिले प्रभु हरि अनयास॥
आए सुने स्याम उपवन मैं, भेंट लई भुज परम सुवास।
चर्चित गान चंद्र-मुख चितवत, उर सरवर भयौ कमल बिगास॥
भूपति चँवर विप्र कर बस्तर, करत बाउ अति अंग हुलास।
आनँद उमँगि चल्यौ नैननि-जल, सुरत देव, द्विज, नृप बहु लास॥
जाकौ ध्यान धरत मुनि संकर, सीस जटा दिग अंबर तास।
काम दहन गिरि-कंदर आसन, वा मूरति की तऊ पियास॥
भक्त बछलता प्रगट करी है, भयौ विप्र घर कर कलि ग्रास।
सूरदास स्वामी सुमिरन बस, अछत निरंजन सेवा पास॥
॥४३०६॥४९२४॥

भस्मासुर-बध

तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी। राग धनाश्री
जिनकैं बस अनमिष अनेक गन, अनुचर आज्ञाकारी॥
महादेव वर दियौ असुर कौं, जब उन निज तनु जारयौ।
सिव कैं सीस धरन लाग्यौ कर, सिव वैकुंठ सिधारयौ॥
विप्र-रूप हरि कह्यौ असुर सौं, यह वर सत्य न होइ।
सिर अपने पर धरौ असुर कर, भस्म होइ गयौ सोइ॥
सिव कैलास गए अस्तुति करि, आनँद उपज्यो भारी।
सूरदास हरि कौ जस गायौ, श्रीभागवतऽनुसारी॥
॥४३०७॥४९२५॥

भृगु परीक्षा

हरि सौं ठाकुर और न जन कौं। राग बिलावल
तिहूँ लोक भृगु जाइ आइ कहि, या विधि सब लोगनि सौं॥
ब्रह्मा राजस गुन अधिकारी, सिव तामस अधिकारी।
विस्नु सत्य केवल अधिकारी, विप्र लात उर धारी॥
मुख प्रसन्न सीतल स्वभाव नित, देखत नैन सिराइ।
यह जिय जानि भजौ सब कोऊ, सूरज-प्रभु जदुराइ॥
॥४३०८॥४९२६॥

अर्जुन निज रूप दर्शन तथा शंखचूड़-पुत्र आनयन *राग बिलावल*

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरनारबिंद उर धरौ॥
हरि इक दिन निज सभा मँझार। बैठे हुते सहित परिवार॥
अर्जुन हू ता ठौर सिधाए। संखचूड तब बचन सुनाए॥
द्वारावती बसत सब सुखी। मैं ही इक हौं अह निसि दुखी॥
मेरे पुत्र होत है जबहीं। अंतर्धान होत सो तबहीं॥
अर्जुन कह्यौ द्वारिका माँहिं। ऐसौ कोउ धनुष धर नाहिं॥
जो तुव सुत की रक्षा करै। अरु तेरो यह दुख परिहरै॥
मैं तुव सुत की रक्षा करौं। अरु तेरो यह दुख परिहरौं॥
यह परतिज्ञा जौ न निबाहौं। तौ तन अपनो पावक दाहौं॥
विप्र कह्यौ तुम स्याम कि राम। कै प्रद्युम्न, अनिरुध अभिराम॥
अर्जुन कह्यौ मैं इनमैं नाहिं। पै हौं इनके दासन माहिं॥
अर्जुन है मेरौ निज नाम। धनुष गांडीव मम अभिराम॥
तू निहचित बैठि गृह जाइ। समै होइ कहु मोसौं आइ॥
पुत्र प्रसूत समय जब आयौ। विप्रार्जुन सौं आइ सुनायौ॥
अर्जुन तब सर पिंजर कियौ। पवन सँचार रहन नहिं दियौ॥
गृह कौ द्वारौ राख्यौ जहाँ। अर्जुन सावधान भयौ तहाँ॥
ब्राह्मन कह्यौ समै अब भयौ। अर्जुन धनुष-बान तब लयौ॥
बालक ह्वै भयौ अंतर्धान। अर्जुन ह्वै रह्यौ चकित समान॥
विप्र नारि तब गारी दई। कह्यौ, प्रतिज्ञा का ह्वै गई॥
तैं पुरुषारथ कहँ तैं पायौ। मिथ्या ही कहि बाद बढायौ॥
हरि सौं दुख अब कहिहौं जाइ। अर्जुन कह्यौ तासौं या भाइ॥
तेरे सुत कौं मैं अब ल्याऊँ। तेरो सब संताप नसाऊँ॥
अर्जुन तिहूँ लोक फिरि आयौ। पै सो बालक कहूँ न पायौ।
अर्जुन विप्र स्याम पै आए। हरि अर्जुन सौं बचन सुनाए॥
तुम बालक काहे नहिं राख्यौ। सो वृत्तांत हमैं तुम भाषौ॥
कह्यौ जु मैं परतिज्ञा करी। सो मोसौं पूरी नहिं परी॥
बालक होत कौन लै गयौ। सो मोकौं कछु ज्ञान न भयौ॥
मैं देख्यौ तिहिं त्रिभुवन जाई। पै ताकी कहुँ सुधि नहिं पाई॥
विप्र काज प्रभु अब तुम करौ। ना तरु मोकौं जानौ मरौ॥
हरि रथ पर अर्जुन बैठाइ। पहुँचे लोकालोकहिं जाइ॥
द्वारें तें पुनि आगैं धाए। दारुक हरि-सौं बचन सुनाए॥

अंधकार मग नहिँ दरसाइ। तातैँ रथ नहिँ सकत चलाइ॥
चक्र-सुदरसन आगैँ कियौ। कोटिक रवि प्रकास तहँ भयौ॥
तब हरि अर्जुन पहुँचे तहाँ। गति नाहीँ काहू की जहाँ॥
तहाँ जाइ देख्यौ इक रूप। ता सम और न दुतिय स्वरूप॥
नैननि निरखि चकृत ह्वै गए। मम बानी दोऊ थकि रए॥
कहिवैँ जोग होइ तौ कहै। तहाँ कछू आकार न लहै॥
सेष नाग फन मुकुट-स्थान। मनि-प्रभा मनु कोटिक भान॥
हरि अर्जुन कियौ निरखि प्रनाम। मनौ तहाँ इक सब्दऽभिराम॥
तुम्हरे हेत चरित यह कियौ। बोझ पृथी कौ हरुऔ भयौ॥
आवहु तुम अब अपनैँ धाम। पूरन भए सुरनि के काम॥
दसौ पुत्र ब्राह्मन के दिए। हरि कर्जुन प्रनाम तब किए॥
तहँ तैँ पुनि द्वारावति आए। ब्राह्मन के बालक पहुँचाए॥
अर्जुन देखि चरित्र अनूप। बिस्मय बहुत भयौ सुनि भूप॥
नहिँ जान्यौ मैँ कहाँ सिधायौ। अरु ह्वाँ तैँ ह्याँ कैसैँ आयौ॥
हरि अर्जुन कौँ निज जन जान। लै गए तहँ न जहाँ ससि भान॥
निज स्वरूप अपनो दरसायौ। जो काहूँ देखन नहिँ पायौ॥
ऐसे हैँ त्रिभुवन पति राइ। कहा सकै रसना गुन गाइ॥
ज्यौँ सुक नृप सौँ कहि समुझायौ। सूरदास ताही बिधि गायौ॥
॥४३०९॥४९२७॥

॥ दशम स्कंध उत्तरार्ध समाप्त ॥

———

एकादश स्कंध

उद्धव-वचन श्रीकृष्ण प्रति — *राग नट*

कैसैं करि आवत स्याम इती ।
मन, क्रम, वचन और नहिं मेरैं, पद-रज त्यागि हिती ॥
अंतरजामी यहौ न जानत, जो मो उरहि बिती ।
ज्यौं जुवारि रस-बींधि हारि गथ, सोचत पटकि चिती ॥
रहत अवज्ञा होइ गोसाईं, चलत न दुखहिं मिती ।
क्यौं बिस्वास करहिंगी कौरौ, सुनि प्रभु कठिन कृती ॥
इतर नृपति जिहिं उचित निकट करि देत न मूठि रिती ।
छुटत न असु सु नितहिं कृपन कैं, प्रीति न सूर रिती ॥
॥१४९२८॥

राग केदारौ

क्यौं करि सकौं आज्ञा भंग ।
कहन मय पद कमल लालच, नहिंन छूटत संग ॥
यह रजायसु होत मोसन, कहत बदरी जान ।
कह करौं मम पाप पूरन, सुनि न निकसत प्रान ।
मैं ऽपराधी ब्रज-बधुनि सौं, कहे बचन बिष तूल ।
मोहिं तजि कै अवर को बिय, सहै ऐसे सूल ॥
अब न जौ तुम जाहु ऊधौ, मिटै जुग भूत रीति ।
हौं जु तेरी सकल जानत, महा मोसन प्रीति ॥
सकल ज्ञान प्रबोधि उनसौं, कहि कथा समुझाइ ।
जादवन कौ प्रलय सुनि वे, मरहिंगी अकुलाइ ॥
अति बिषाद सु ह्रदै करि-करि, उठि चल्यौ ह्वै दीन ।
सूर-प्रभु तुम कृपा-सागर, किन भयौं हौं मीन ॥
॥२।४९२९॥

नारायण-अवतार-वर्णन — *राग बिलावल*

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ । हरि चरनारबिंद उर धरौ ॥

नारायन जब भए अवतार। कहौं सो कथा सुनौ चित धार ॥
धर्म पिता अरु मूरति माइ। भए नारायन सुत तेहि आइ ॥
बद्रीकास्रम रहे पुनि जाइ। जोगऽभ्यास समाधि लगाइ ॥
उनके और कामना नाहिं। सुख पावै त्रिभुवन मन माहिं ॥
सुरपति देखत गयौ डराइ। काम सैन सँग दियौ पठाई ॥
रितु वसंत फूली फुलवाइ। मंद, सुगंध बयार बहाइ ॥
करत गान गंधर्व सुहाइ। नृत्य भली अप्सरा दिखाइ ॥
काम बान पाँचौ सधाने। नारायन ते मनहिं न आने ॥
तब तिन सबनि तहाँ भय पायौ। कह्यौ इंद्र हमैं कहाँ पठायौ ॥
तब नारायन आँखि उघारी। उन सबकी कीन्ही मनुहारी ॥
तुव कछु मन मैं भय मति करौ। अभय हमारैं आस्रम करौ ॥
दोष तुम्हारौ है कछु नाहिं। तुम्हैं पठायौ है सुरनाह ॥
इंद्रहु कौ कछु दूषन नाहिं। राज हेत डरपत मन माहिं ॥
उन कर जोरि विनै उच्चारी। नारायन हरि-हरि बनवारी ॥
उधरत लोग तुम्हारे नाम। क्यौं करि मोह सकै तुम्है काम ॥
जे नर सेवा न तुम्हरी करैं। अरु संसार मनोरथ धरैं ॥
तिन कौ अंतराइ हम करैं। ते सब अहनिसि हमसौं डरैं ॥
कबहूँ पुत्र-मोह उपजावैं। कबहूँ तिय के रूप लुभावैं ॥
भूख, प्यास ह्वै कबहुँ सँतापैं। ऐसी विधि हम उनकौं ब्यापैं ॥
जो कोउ तुम्हरैं सरननि आवै। सुख ससार सकल बिसरावै ॥
तासौं हमरो कछु न बसाइ। हमैं जीति सो तुम पै जाइ ॥
सहस अपसरा सुदर रूप। एक एक तैं अधिक अनूप ॥
नारायन तहँ परगट करी। इद्र अपसरा सोभा हरी ॥
काम देखि चकित ह्वै गयौ। रूप दीख हम इनको नयौ ॥
गुन जेते सबही इन माहिं। इन सम इंद्र लोक कोउ नाहिं ॥
तब नारायन आज्ञा करी। इनमैं लेहु एक सुंदरी ॥
नाम उर्वसी उन एक लीनी। पुनि प्रणाम हरि कौ तिन कीनी ॥
सो सुरपति कौ दीन्ही जाइ। कह्यौ सकल वृत्तांत सुनाइ ॥
यौं भयो नारायन अवतार। सूर कह्यौ भागवतऽनुसार ॥
॥३॥४९३०॥

हंस-अवतार वर्णन *राग बिलावल*

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरनारबिंद उर धरौ ॥

झूठे नर सों लेहिं अँकोरि। लावैं साँचे नर को खोरि॥
प्रजा न धर्म रत होइ न कोइ। बरन धर्म न पिछानें सोइ॥
दूरि तीरथनि स्रम करि जाहिं। जहाँ रहैं तहँ कबहुँ न न्हाहिं॥
जाके गृह में प्रतिमा होइ। तिन तजि पूजें अनतै सोइ॥
ब्राह्मन पूछे जान्यौ जाइ। सन्यासी फिरैं भेष बनाइ॥
गृही न अपनो धर्म पिछाने। अतिथि आए को नहिं मनमाने॥
दया, सत्य, संतोष नसाइ। दया, धर्म की रीति बिलाइ॥
फल सुधर्म को जानै सोइ। पै सुधर्म कों करै न कोइ॥
पापनि को फल चाहे नाहीं। अह-निसि पाप करत ही जाहीं॥
बरषा समय न बरषा होइ। बिना अन्न दुख पावैं लोइ॥
दान देहिं तौ जस के काज। कलि न होइ पृथ्वीपति राज॥
मन इंद्रिय बस करैं न लोग। ज्यौं त्यौं कीन्हा चाहैं भोग॥
सत सबत आयुः कलि होइ। सोऊ जीवे बिरला कोइ॥
नृप ऐसी आवर्दा पाइ। पृथ्वी हित नित करैं उपाइ॥
पृथी देखि तिन हाँसी करै। ऐसो को जो मोकों बरै॥
मन्वंतर लगि कियौ जिहिं राज। तेऊ नृपति गए मोहिं त्यागि॥
पृथु से पृथ्वीपति जग भए। तेऊ अंत छाँडि मोहिं गए॥
तुच्छ आयु पर वे स्रम करत। आपु-आपु में लरि-लरि मरत॥
इनहिं देखि मोहिं हाँसी आवत। इनिकौं इतनी समुझ न भावत।
सतजुग सत त्रेता जग करते। द्वापर पूजा मन में बरते॥
कलिजुग एक बड़ो उपकार। जो हरि कहे सो उतरै पार॥
कलि में पाप करैं नित लोइ। कहँ लगि कहिगे अंत न होइ॥
हरि-हरि कहत पाप पुनि जाइ। पवन लागि ज्यौं रुई उड़ाइ॥
अजामील सुत-हित हरि भाख्यो। जमदूतनि तें तिहिं हरि राख्यो॥
कलि में राम कहै जो कोइ। निहचै भवजल तरिहै सोइ॥
जब लगि बढ़ै अधर्म अपार। रहै बिस्नु जस धर्म सँभार॥
ता गृह संभल कलंकी होइ। करै संहार दुष्ट जन लोइ॥
पृथी अकास तहाँ रहि जाइ। राज देहि सतजुग बैठाइ॥
सम दृष्टी होवैं सब लोइ। दुष्ट-भाव मन धरै न कोइ॥
यों होइहै कलंकि अवतार। कलि में राम नाम आधार॥
सुक नृप सों कह्यौ जा परकार। सूर कह्यौ ताही अनुसार॥
॥२॥४९२८॥

राजा परीक्षित हरि-पद प्राप्ति *राग बिलावल*

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरनारबिंद उर धरौ ॥
बिनु हरि भक्ति मुक्ति नहिं होइ। कोटि उपाइ करौ किन कोइ ॥
रहट घरी ज्यौं जग ब्योहार। उपजत बिनसत बारबार ॥
उतपति प्रलय होति जा भाइ। कहौ सुनौ सो नृप चितलाइ ॥
राजा प्रलय चतुर्विधि होइ। आवत जात चहूँ मैं लोइ ॥
जुग परलय तौ तुमसौं कही। तीनि और कहिबे कौं रही ॥
चतुर-जुगी बीतै इकहत्तर। करै राज तब लगि मनवतर ॥
चौदह मनु ब्रह्मा-दिन माहिं। बीतत तासौं कल्प कहाहिं ॥
राति होइ तब परलय होइ। निसि मरजादा दिन सम होइ ॥
प्रात भएँ जब ब्रह्मा जागै। बहुरौ सृष्टि करन कौं लागै ॥
दिन सौ तीनि साठि जब जाहिं। सो ब्रह्मा कौ वर्ष कहाहिं ॥
वर्ष पचास परारध कहिए। प्रलय तीसरी या बिधि रहिऐ ॥
बहुरौ ब्रह्मा सृष्टि उपावै। जब लौं परारध दूजौ आवै ॥
सत संबत भए ब्रह्मा मरै। महा प्रलय तब हरि जू करैं ॥
माया माहिं नित्य-लय पावै। माया हरि-पद माहिं समावै ॥
उतपति प्रलय सदा यौं होइ। जन्मैं-मरैं सदाई जोइ ॥
हरि कौ रूप कह्यौ नहिं जाइ। अलख अखंड सदा इक भाइ ॥
फिरि जब हरि की इच्छा होइ। देखैं माया की दिसि जोइ ॥
माया सब सबहीं उपजावै। ब्रह्मा ह्वै पुनि सृष्टि उपावै ॥
हरि कौं भजै सो हरि-पद पावै। जनम मरन तिहिं ठौर न आवै ॥
नृप मैं तोहिं भागवत सुनायौ। अरु तुम सुनि हिय माहिं बसायौ ॥
मुक्ति माहिं संसय नहिं काइ। सुनै भागवत मैं सो होइ ॥
सप्तम दिवस आजु है राउ। हरि चरनारबिंद चित लाउ ॥
यह अच्छेद्ऽभेद अबिनासी। सर्व गती अरु सर्व उदासी ॥
द्रष्टहि द्रष्ट सोइ द्रष्टार। काकौं दीखै को दिखहार ॥
हरि स्वरूप सौं रतिहि बिचार। मिथ्या तन कौ मोह बिसार ॥
नृप कह्यौ तन कौ मोह न कोइ। याकौ जो भावै सो होइ ॥
मोहिं अब सर्व ब्रह्म दरसावै। तच्छक भय मन मैं नहिं आवै ॥
तुम प्रसाद मैं पायौ ज्ञान। छुटि गो मिथ्या देहऽभिमान
अब मैं गहि हरि-पद अनुराग। करिहौं मिथ्या तन कौ त्याग ॥

सुक जान्यौ नृप कौं भयौ ज्ञान। आज्ञा लै करि कियो पयान ॥
तच्छक नृप सरीर कौं डस्यौ। नृप तन तजि हरि-पद मैं बस्यौ ॥
सूत सोनकनि कहि समुझायौ। मैं हूँ ता अनुसार सुनायौ ॥
अंत समय हरि पद चित लावै। सूरदास सो हरि-पद पावै ॥
॥४॥४९३५॥

जन्मेजय-कथा *राग बिलावल*

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरनारबिंद उर धरौ ॥
जनमेजय जब पायौ राज। एक बार निज सभा बिराज ॥
पिता बैर मन मैं सो बिचारि। बिप्रनि सौं यौं कह्यौ उचारि ॥
मोकौं तुम अब जज्ञ करावहु। तच्छक कुटुम समेत जरावहु ॥
बिप्रनि सेत-कुली जब जार्‌यौ। तब राजा तिन सौं उच्चार्‌यौ ॥
तच्छक कुल समेत तुम जार्‌यौ। कह्यौ इंद्र निज सरन उबार्‌यौ ॥
नृप कह्यौ इंद्रसहित तिहिं जारौ। बिप्रनि हूँ यह मतौ बिचारौ ॥
आस्तीक तिहिं अवसर आयौ। राजा सौं यह बचन सुनायौ ॥
कारन करन हार भगवान। तच्छक डसनहार मत जान ॥
बिनु हरि आज्ञा डुलै न पाति। कौन सकै काकौ संतापि।
हरि ज्यौं चाहैं त्यौंही होइ। नृप तामैं संदेह न कोइ ॥
नृप कैं मन यह निश्चै आयौ। जज्ञ छाँड़ि हरि पद चित लायौ ॥
सूत सौनकनि कहि समुझायौ। सूरदास त्यौंही कहि गायौ ॥
॥२॥४९३६॥

॥ इति श्रीसूरसागर समाप्तम् ॥

परिशिष्ट (१)

सूचना—इस परिशिष्ट में सूरसागर की हस्तलिखित और मुद्रित प्रतियो
प्राप्त वे पद दिए जा रहे हैं जिनके सूरदास जी द्वारा रचित होने में संपादक
। सदेह है। इनमें से अधिकतर पद किसी एक प्रति में ही मिलते हैं, शेष
तियों में वे नहीं है। परिशिष्ट के इन पदों की भी दो श्रेणियाँ हैं। परिशिष्ट
१) में वे पद रखे गए हैं जो निश्चित रूप से प्रक्षिप्त नहीं माने गए,
नके संबंध में सशय और जिज्ञासा को स्थान है। परिशिष्ट (२) में वे पद
जो सपादक की दृष्टि में निश्चित रूप से प्रक्षिप्त हैं। इनके अतिरिक्त प्रक्षिप्त
दों का एक समूह और जो 'काँकरौली' की प्रति से सग्रह किया गया है।
स समूह के पद इतने स्पष्ट रूप से अप्रामाणिक और गढ़े हुए ज्ञात हुए कि
न्हें परिशिष्ट में रखने की भी आवश्यकता नहीं जान पड़ी।

—संपादक

ाजा अंबरीष की कथा *राग भोपाली*

जन कौ हौं आधीन सदाई।
दुरवासा वैकुंठ गये जब तब यह कथा सुनाई॥
विदित बिरद ब्रह्मन्य देव तुम करुनामय सुखदाई।
जारत है मोहिं चक्र सुदर्शन हा प्रभु लेहु बचाई॥
जिन तन धन मोहिं प्रान समरपे सील सुभाव बड़ाई।
ताकौ बिपम विपाद कहौं मुनि मोपै सह्यो न जाई॥
उलटि जाहु नृप-चरन-सरन मुनि वहै राखिहै आई।
सूरजदास दास की महिमा श्रीपति श्रीमुख गाई॥ १॥

हनुमान का सीता-समाधान *राग सारंग*

जानकी मन संदेह न कीजै।
आए राम लपन प्रिय तेरे काह प्रानन दीजै॥
जामवंत सुग्रीव बालिसुत आए सकल नरेस।
मोहि कह्यौ तुम जाहु खबरि कौं अब जिनि करौ अँदेस॥

रावन के दस सीस तोरि कै कुटुंब समेत वहैहां।
तैंतिस कोटि देवता बंधन तिनहिं समस्त छुडैहौं ॥
आयसु दीजै मातु मोहिं अब जाइ प्रभुहिं लै आऊँ।
सूरदास हौं जाइ नाथ पहँ तेरी कुसल सुनाऊँ ॥ २ ॥

भकरण-रावण-संवाद राग मारू

रावन चल्यौ गुमान भरयौ।
श्री रघुनाथ अनाथ बंधु सौं सनमुख खेत खर्‍यौ ॥
कोप कर्‍यौ रघुबीर धीर तब लछिमन पाइ पर्‍यौ।
तुम्हरैं तेज-प्रताप नाथ जू मैं कर धनुष धर्‍यौ ॥
सारथि सहित अस्त्र बहु मारे रावन क्रोध जर्‍यौ।
इद्रजीत लीन्हीं तब शक्ती देवनि हहा कर्‍यौ ॥
छूटी तेज बिज्जु-रासि यह मानौ भूतल बंधु पर्‍यौ।
करुना करत सूर कोसलपति नैननि नीर झर्‍यौ ॥ ३ ॥

लक-लीला राग बिलावल

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि-चरनारविंद उर धरौ ॥
कहौं सु राधा कौ अवतार। सूर तरौ सो भव-निधि पार ॥
भादौं सुक्ल अष्टमी जानु। ता दिन भयौ अवतार प्रमानु ॥
॥ ४ ॥

राग सारंग

राधा माधौ दोय नहीं।
प्रकृति पुरुष न्यारे नहिं कबहूँ वेद पुरान कहत सबहीं ॥
देह भेद तैं भेद जानि कै मति भ्रम भूलैं लोइ।
ब्रह्मा के स्थावर चर माहीं प्रकृति पुरुष रहे गोइ ॥
भक्त हेत अवतार धर्‍यौ ब्रज पूरन पुरुष पुरान।
सूरदास राधा माधौ के तन द्वै एकै प्रान ॥ ५ ॥

राग सारंग

छाया तरुवर दोइ नहीं।
नैन दोइ ज्यौं स्रवन दोइ ज्यौं कहन सुनन कौं दोइ नहीं ॥
दोइ न कंचन-भूषन कबहूँ जल तरंग ज्यौं दोइ नहीं।
त्यौं हीं जानि सूर मन वचक राधा माधौ दोइ नहीं ॥ ६ ॥

हेरि रे भैया हेरि रे ।
सकल काज पूरन भयौ हो, नैननि देखौ आज ॥
नँदरानी ढोटा जायौ हो आयो व्रज मैं राज ।
दही दूब माथैं धरे हो रोरी तिलक सुभाल ॥
मंगल गावैं गोपिका हो रहसे सबै गुवाल ।
कहैं नंद उपनंद सौं हो जैसौ जाकौ भाव ॥
उठि किन बाबा नाचहू हो भलौ बन्यौ है दाव ।
उठि बाबा ठाढ़े भए हो संग लिए बहु ग्वाल ॥
लचकति थौंदिहा हालई हो देखैं सब व्रज-बाल ।
नंद कहैं उपनंद सौं हो गैयाँ सुकुल मँगाइ ॥
जसुमति कैं भयौ लाड़िलौ हो बिप्रनि देहु बुलाइ ।
काहू कौं चादर दई हो काहूँ दीनी खोर ॥
काहू कौं दीनी दुपटि हो करि करि पीले छोर ।
काहू कौं पटुका दियौ हो काहू कुलह कबाइ ॥
काहू पीरी पागरी हो बागे सहित मँगाइ ।
गोप कहत हैं नंद सौं सदा बसौ व्रजराइ ॥
नंद महर के लाड़िले हो सूरदास बलि जाइ ॥ ७ ॥

राग धनाश्री

ढाढ़ी तैं पढ़ि नंद रिझायौ ।
जसुमति-सुत की कीरति गाई सबहिनि कैं मन भायौ ॥
नंद सुबागौ अपनैं गर कौ ढाढ़ी कौं पहिरायौ ।
दीने धेनु धौरहर घोरे अरु भंडार खुलायौ ॥
ढाढ़िनि कौं सोने कौ नूपुर गहनौ अगढ़ गढ़ायौ ।
रतन-जटित खँगवारौ गर कौ जसुमति लै पहिरायौ ॥
तेरैं भले भलौ या व्रज कौ या घर मगल आयौ ।
सूरदास कौं सरबस दीनौ मगल सुजस सुनायौ ॥ ८ ॥

सकटासुर-बध

राग बिभास

देखौ सखि अकथ रूप अतूथ ।
एक अंबुज मध्य देखियत बीस दधि-सुत-जूथ ॥
एक सुक तहँ दोइ जलचर उभय अर्क अनूप ।
पंच बिरचे एकही ढिग कहौं कौन सरूप ॥

भई सिसुता माँहिं सोभा करो अर्थ विचारि।
सूर श्री गोपाल की छवि राखिए उर धारि॥ ६॥

तृणावर्त-वध *राग बिलावल*

एक समय सुत कौं हलरावति जसुमति मुदित करति मृदु गानै।
बिधु सो बदन कमल दल-लोचन सुंदर स्याम तबै जँभुआने॥
तब बिलोकि व्याकुल भई जननी तीनहुँ लोक बदन दरसाने।
सूरदास प्रभु मंद-मंद हँसि तबहिं महरि माया अरुझाने॥ १०॥

घुटुरुवों चलना *राग कलिंग*

घुटुरुवनि घनस्याम चलै रे।
कटि किंकिनि पग नूपुर बाजै नाक बुलाक हलै रे॥
किलकत बिहँसत दूरि निकसि गए जसुमति कहति भलै रे।
सूरदास-प्रभु बालक लीला मन आनंद रलै रे॥ ११॥

राग सारग

निरखि छबि पुलकत हैं ब्रजराज।
उत जसुदा इत आपु परस्पर आड़ि रहे कर पाज॥
किंकिनि कटि-तट मध्य प्रसरि भुज उभय मिलत फनि लाज।
झमित लरन अलि सैन कंज पर मनु मकरँद के काज॥
अर्द्ध गिरा मृदु स्रवत सुधा जनु पिवत स्रुतिनि पुट आज।
सूरदास प्रभु सुत रति करि-करि लै लै ऊपर भ्राज॥ १२॥

राग धनाश्री

ऐसे दिन बिधना कब करिहै।
स्याम सुँदर की सुनियै बातैं कब धरती पग धरिहै॥
प्रातहिं उठत कलेऊ कारन सीकैं बासन टरिहै।
कब मोसौं मैया कहि बोलै पेट पै लोटि झगरिहै॥
कब मेरौ मोहिं गारि दिवैहै यह रस काननि परिहै।
सूर जसोदा देव मनावति सुख दै सब दुख हरिहै॥ १३॥

बालछवि-वर्णन *राग धनाश्री*

लरिकाई मैं जोबन की छवि देखौ सुदर लोचन भरि भरि।
बिछुरी अलक बदन छवि छाजति सुरति केलि मनु सीखि लई हरि॥

गंड चखौड़ा मेचक विंदुली भए चिह्न मनु चुंबन करि करि।
नैन सलोने भ्रमत भ्रमर ज्यौं ललित गिरा सु तौ सहजहि तोतरि ॥
आँगन डोलत मत गयंद मनु राखति सखि वर भुज लतिका भरि।
सूर स्याम सब समय महा सुख देत लाल पावति सब नागरि ॥ १४ ॥

खेलन

राग बिलावल

सोवत ग्वालनि कान्ह जगाए।
भोर भएँ हम आए दरस कौं जीवन जन्म सफल करि पाए ॥
उत्तम सेजऽरु स्वेत विछौना चहुँदिसि रचि रचि आपु बनाए।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस कौं पूरन चंद प्रगट ह्वै आए ॥ १५ ॥

माटी-भक्षण-प्रसंग

राग रामकली

मोहन तैं माटी क्यों खाई।
ठाढ़े ग्वाल कहत सब बालक जे तेरे समुदाई ॥
मुकरि गए मैं सुनी न देखी झुठई आनि बनाई।
दै परतीति पसारि बदन तब सब बसुधा दरसाई ॥
चकित भई जसुमति जिय डरपी मन माया उपजाई।
सूरदास उर लाइ लाल कौं लोन उतारति राई ॥ १६ ॥

प्रथम माखन-चोरी

राग बिलावल

जसुमति तू जु कहति हँसी माई।
यहै उरहनौ सत्य करन कौं हरिहिं पकरि लै आई ॥
दिन प्रति देन उरहनौ आवति कहा तिहारौ काई।
देखन चली जु सुत लै अपनौ वह चलि गयौ पराई ॥
तेरे हियें नैन मति नाहिंन बदन देखि लखि पाई।
तैं जो नाम कान्ह मेरे कौ सूधौ करि है पाई ॥
सुनि री सखी कहति डोलति हौ इहिं काहू सिख पाई।
सूरदास वा नागर सब मैं उहिं कौनै सिखराई ॥ १७ ॥

ग्वारिनि जियहिं परस्पर भावै।
खेलत स्याम सखा सँग लीन्हैं खटकौरी दै गारि दिवावै ॥
मिस करि हरपि खिलौना हरि के गेंद उरोजनि माँझ दुरावै।
रह्यौ न परत रसिक मोहन बिन अंग सु कर सौं परस करावै ॥
कंचुकि चीर आपुहीं फारै आपुहिं जसुदहिं जाइ दिखावै।
सूरदास प्रभुभुज अंतर करि कहै चलौ नँदरानि बुलावै ॥१८॥

राग सारंग

अपने नान्हहिं केरि दुहाई।
अबहीं तैं यह स्याम ढुटौना उलटी करत है माई॥
बासन फोरि गटौना कीनौ गोरस कीच मचाई।
हटकौ जसुदा नंद कुँअर कौं घर घर देखो जाई॥
मानो कुँअर कछू नहिं जानत बैठि रह्यो अरगाई।
सूरदास बतिआ कहि दैहौं जासौं हाहा खाई॥१९॥

स्याम सबै बतियाँ कहि दैहौं।
सूधें चले जाहु जसुमति-सुत, कुटिल भौंह किएँ हौं न डरैहौं॥
उलटि चीर नख रेख उदित करि, छाँड़ि सकुच सब चिह्न बतैहौं।
जो कछु कह्यौ तबहिं पछियावत, तुम दुराउ पै मैं न दुरैहौं॥
जो तुम लेहु नैन जल भरि-भरि, ह्वै दयाल इत-उत न चितैहौं।
सूर स्याम गोपी उर लाए, जिनि डरावौ बलिहौं न डेरैहौं॥२०॥

मेरे गिरधर जू सौं कौन लरी।
पकरि ल्याउ मेरे मुख आगैं वारि डारौं सिगरी॥
चलि री मैया तोहिं बताऊँ जो मोसौं झगरी।
गौर बरनि नीलांबर ओढ़े चंचल चपल खरी॥
हौं बालक वह बडे बैस की कैसेक भुज पकरी।
मो कौ देखि ढकेलि चलति है नैननि नेह भरी॥
तीखे वचन सुनति जसुमति के आगैं आनि खरी।
सूरदास मुख निरखि राधिका रिस सिगरी बिसरी॥२१॥

कहा लौं राखियै माई कानि।
कैस सही परै सुनु सजनी नित उठि गोरस हानि॥
एक दिवस घर कौ दधि ढार्‌यौ मोहिं अनतहीं जानि।
ता कारन निज हाथ त्रास दै बाँध्यौ ऊखल तानि॥
जैसो अपनौ भवन सु त्यौं ही औरनि कौ मन मानि।
सूरदास प्रभु बहुत बँचति हौं सुंदर मुख पहिचानि॥२२॥

उलूखल-बंधन *राग बिलावल*

कर तैं लकुट डारि नँद रानी।
रोस निवारि आपनैं सुत कौ बदन बिलोकि अयानी॥

देखि त्रास त नमित वदन कियो मलिन ज्योति कुँम्हिलानि ।
मानौ हिमकर-उदित मुदित अति कुमुद कली सकुचानी ॥
कन राजत उर खेद स्वेद-जल उपमा जिय यह आनी ।
ज्यौं निज पति क्यौं दुखित देखि श्री रुदन करति अकुलानी ॥
क्यौं तोहिं भुज पसारि आवत है सूर कठिन करि वानी ।
जा मुख मध्य विस्व निरख्यौ तव अब क्यौं ताहि भुलानी ॥२३॥

राग धनाश्री

हलधर हरि कौं देखि रिसाने ।
अनुज वीर ऊखल सौं बाँधति जननी सौं न वसाने ॥
त्रिभुवन पलटि धरौं हल गहि कै कितौ घोप मो आगैं ।
अखिल लोक के हरता करता डरैं साँटि के माँगैं ॥
अजहूँ तू पहिचानति नाहीं कठिन लकुट दै डारि ।
भुवन चतुर्दस तोहिं दिखाए आनन माहिं पसारि ॥
संतत-छीर-सम्द्र-सैनि जो दह्यौ चुरावत त्रासौ ।
सूर स्याम की अविगतलीला ब्रज-बासी वस जासौ ॥ २४ ॥

यमलार्जुन-उद्धार की दूसरी लीला *राग धनाश्री*

हरि क्रीड़ा कापैं कहि जाइ ।
देखत पेखत लोग नगर के सब बातनि अरुझाइ ॥
कबहूँ हँसत स्याम जू कबहूँ समुझि बात समुझाइ ।
कबहूँ हरि रोवत अति व्याकुल नैन नीर ढरकाइ ॥
प्रगटी रीति स्याम की सोभा क्रीड़ा बरनि न जाइ ।
जाकौ नाम अनत संत कहँ और सखा नहिं माइ ॥
जाकी सुरति मुरति आँखिनि मैं नहीं कबहुँ मुख आनै ।
तासौं कौन भवन रव मानत अति अपनो जिय जानै ॥
वह अति अगम अपार महा मुनि बरनत थाह न पावै ।
तासौं राज भाग अब कैसो उपमा बरनि न आवै ॥
नंद-नँदन मुख वदन कदन दन सुख बरनत क्यौं पावै ।
सूरदास प्रभु अगम अगोचर बात ,चलत मो आवै ॥ २५ ॥

वत्सासुर-वध *राग नटनारायनी*

चले बछरू चरावन ग्वाल ।
बृंदाबन सब छाँड़ि कै लै गए जहँ घन ताल ॥

राग सारंग

अपने नान्हहिँ केरि दुहाई।
अबहीँ तैँ यह स्याम दुटौना उलटो करत है माई॥
बासन फोरि गठौना कीनो गोरस कीच मचाई।
हटकौ जसुदा नद कुँअर कौँ घर घर देखो जाई॥
मानौ कुँअर कछू नहिँ जानत वैठि रह्यो अरगाई।
सूरदास बतिआ कहि देहौँ जासौँ हाहा खाई॥१९॥

स्याम सबै वतियाँ कहि देहौँ।
सूधैँ चले जाहु जसुमति-सुन, कुटिल भौंह किएँ हौँ न डरैहौँ॥
उलटि चीर नख रेख उदित करि, छाँडि सकुच सब चिह्न बतैहौँ।
जो कछु कह्यौ तबहिँ पछियावत, तुम दुराउ पै मैँ न दुरैहौँ॥
जो तुम लेहु नैन जल भरि-भरि, ह्वै दयाल इत-उत न चितैहौँ।
सूर स्याम गोपी उर लाए, जिनि डरावौ बलिहौँ न डेरैहौँ॥२०॥

मेरे गिरधर जू सौँ कौन लरी।
पकरि ल्याउ मेरे मुख आगैँ वारि डारौं सिगरी॥
चलि री मैया तोहिँ बताऊँ जो मोसौँ झगरी।
गौर बरनि नीलाबर ओढ़े चचल चपल खरी॥
हौँ बालक वह बड़े बैस की कैसेक भुज पकरी।
मो कौ देखि ढकेलि चलति है नैननि नेह भरी॥
तीखे वचन सुनति जसुमति के आगैँ आनि खरी।
सूरदास मुख निरखि राधिका रिस सिगरी बिसरी॥२१॥

कहा लौँ राखियै माई कानि।
कैस सही परै सुनु सजनी नित उठि गोरस हानि॥
एक दिवस घर कौ दधि ढार्‍यौ मोहिँ अनतहीँ जानि।
ता कारन निज हाथ त्रास दै बाँध्यौ ऊखल तानि॥
जैसो अपनौ भवन सु त्यौं ही औरनि कौ मन मानि।
सूरदास प्रभु बहुत बँचति हौँ सुंदर मुख पहिचानि॥२२॥

उलूखल-बंधन *राग बिलावल*

कर तैँ लकुट डारि नँद रानी।
रोस निवारि आपनैँ सुत कौ वदन बिलोकि अयानी॥

देखि त्रास त नमित वदन कियो मलिन ज्योति कुम्हिलानि ।
मानौ हिमकर-उदित मुदित अति कुमुद कली सकुचानी ॥
कन राजत उर खेद स्वद-जल उपमा जिय यह आनी ।
ज्यौं निज पति क्यौं दुखित देखि श्री रुदन करति अकुलानी ॥
क्यौं तोहिं भुज पसारि आवत है सूर कठिन करि वानी ।
जा मुख मध्य विस्व निरख्यौ तव अत्र क्यौं ताहि भुलानी ॥२३॥

राग धनाश्री

हलधर हरि कौं देखि रिसाने ।
अनुज वीर ऊखल सौं बाँधति जननी सौं न वसाने ॥
त्रिभुवन पलटि धरौं हल गहि कै कितौ घोप मो आगैं ।
अखिल लोक के हरता करता डरैं साँटि के माँगैं ॥
अजहूँ तू पहिचानति नाहीं कठिन लकुट दै डारि ।
भुवन चतुर्दस तोहिं दिखाए आनन माहिं पसारि ॥
संतत-छीर-समुद्र-सैनि जो दह्यौ चुरावत त्रासौ ।
सूर स्याम की अविगतलीला व्रज-वासी वस जासौ ॥ २४ ॥

यमलार्जुन-उद्धार की दूसरी लीला *राग धनाश्री*

हरि क्रीड़ा कापैं कहि जाइ ।
देखत पेखत लोग नगर के सब घातनि अरुझाइ ॥
कवहूँ हँसत स्याम जू कवहूँ समुझि घात समुझाइ ।
कवहूँ हरि रोवत अति व्याकुल नैन नीर ढरकाइ ॥
प्रगटी रीति स्याम की सोभा क्रीड़ा वरनि न जाइ ।
जाको नाम अनंत संत कहैं और सखा नहिं माइ ॥
जाकी सुरति मुरति आँखिनि मैं नहीं कवहुँ मुख आनै ।
तासौं कौन भवन रव मानत अति अपनो जिय जानै ॥
वह अति अगम अपार महा मुनि वरनत थाह न पावै ।
तासौं राज भाग अब कैसो उपमा वरनि न आवै ॥
नंद-नँदन मुख वदन कदन दन सुख वरनत क्यौं पावै ।
सूरदास प्रभु अगम अगोचर वात ,चलत मो आवै ॥ २५ ॥

वत्सासुर-वध *राग नटनारायनी*

चले वछरू चरावन ग्वाल ।
वृंदावन सब छाँड़ि कै लै गए जहँ धन ताल ॥

परम सुंदर भूमि देखत हरप मनहिँ बढाइ।
आप लागे तहाँ खेलन बच्छ दिए बगराइ॥
जानिकै हलधर गए तहँ बाल बछुरा-पास।
रोहिनी नदनहिँ देखत हरप भयहु हुलास॥
ताल-रस बलराम चाख्यौ मन भयौ आनंद।
गोप-सुत सब टेरि लीन्हे सुधि भई नँद-नंद॥
कह्यौ बछुरा हाँकि ल्यावहु चलौ जहाँ कन्हाइ।
ताल रस के पान तैं अति मत्त भए बल राइ॥
तहाँ छल करि दनुज आयौ धरे बछरा-भेप।
फिरत ढूँढ़त स्याम कौं अति प्रबल बल कौं देख॥
सबै बछरनि घेरि ल्याए वह न घेर्‌यौ जाइ।
दाउ कहि बालकनि टेर्‌यौ बृपभ-सुत न धराइ॥
कह्यौ मन इहिँ अबहिँ मारौं उठे बलहिँ सम्हारि।
टेरि लए सब ग्वाल-बालक गए आपु प्रचारि।
आग ह्वै इत कौं बिँडार्‌यौ पूछ हाथ लगाइ॥
पकरि कै भुज सौं फिरायौ ताल कैं तर आइ।
असुर लै तरु सौं पछार्‌यौ गिर्‌यौ तरु भहराइ॥
ताल सौं तरु ताल लाग्यौ उठ्‌यौ बन घहराइ।
बछासुर कौं मारि हलधर चले सबनि लिवाइ।
सूर प्रभु के बीर जाकी तिहूँ भुवन बड़ाइ॥ २६॥

गौ-चारण

जसोदा मैया काहे न मगल गावै।
पूरन ब्रह्म सकल अविनासी ताकौं गोद खिलावै॥
कोटि कोटि ब्रह्मा सिवमुनि जन जाकौ ध्यान लगावै।
ना जानौ यह कौन पुन्य तैं सो तुव धेनु चरावै॥
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद जप तप ध्यान न आवै।
सेस सहस-मुख जपत निरतर हरि कौ पार न पावै॥
सुदर बदन कमल-दल-लोचन गोधन कैं सँग आवै।
करति आरती मातु जसोदा सूरदास बलि जावै॥ २७॥

ब्रह्मा-बालक-वत्स-हरण

बिहरत बृंदावन बनवारी।
तासौं कहत स्याम घन सुंदर जाकी जानन वारी॥

ले लै नाम बुलावन गाइनि और गुबर्धन धारी।
हे पीरी हे रातीं रौंछी धौरी धूमरि कारी॥
खात ताल-फल सखनि खिझावत देत परस्पर गारी।
सूरदास प्रभु जाइ जमुन-तट करत कुलाहल भारी॥२८॥

धेनुक वध *राग रामकली*

तातैं तरकि कह्यौ वनमाली।
पसु तन चपल सरूप न जानतिं डोलति चाली चाली॥
धरि तन सगुन त्रिपद पूरन प्रभु आपु कमल प्रतिपाली।
जद्यपि वृषभ सुता पति तजि कै फिरति कुमति की घाली॥
अति स्रम भयौ सकल वन ढूँढ़त वन वेली द्व जाली।
सूरदास संतनि जन हरि-हित इहिं अव सव तैं टाली॥२९॥

व्रज-प्रवेश-शोभा

वलि वलि जाऊँ सुभग कपोलनि।
गोरज सोभित अलकावृत मुख कूलकलिंद-सुता वन डोलनि॥
नैन विसाल, वक भृकुटी, तन अतिसी-कुसुम, सुपीत निचोलनि। -
दामिनि दसन समान, उवै रवि मकराकृत कुंडल छवि लोलनि॥
अधर मुरलि धरि, मुद्रिकानि कर, वोलत धेनु मधुर सुर वोलनि।
वच्छ सुचिन्ह प्रकास, मुद्रिका गुंजा, मनि आभूष अमोलनि॥
सरनागत जन अभय कमल कर वंद कपाट हृदय की खोलनि।
सूरदास करत पुन्य पुंज सव चरन ललित अहि वोलनि॥ ३०॥

कमल-पुष्प मँगाना, काली-दमन लीला *राग सारंग*

भरोसौ कान्ह कौ है मोहि।
सुनि जसुदा काली के भय तैं, तू जनि व्याकुल होहि॥
प्रथम पूतना आई कपट करि, अस्तन विष जु निचोहि।
मारि, डारि दीन्ही दिन द्वै के, प्रगट दिखाई तोहि॥
अघ, वक, धेनु, तृनाव्रत, केसी कौ वल देख्यौ जोहि।
सात दिवस गिरिवर कर राख्यौ, गयौ इंद्र-मद छोहि॥
सुनि-सुनि कथा नंद-नंदन की, मन आयौ अविरोहि।
सूरदास-प्रभु जो कछु करियै, आवत है सव सोहि॥३१॥

राग कान्हरौ

कृपा जैसैं काली कौं करी।
ऐसैं आदि अंत काहू कौं कबहुँ न चित्त धरी ॥
अंकुस कुलिस कमल धरि फन पर नृत्यत स्याम हरी।
सिव सनकादिक नारदादि मुनि निगमनि रटनि परी ॥
सभु-सीस चरनोदक की गति राखी जटा धरी।
सूरदास सतनि के कारन गौतम-घरनि तरी ॥३२॥

राग रामकली

(जमुना मैं कूदि परयौ) कान्हा तेरो जमुना मैं कूदि पर्‍यौ।
अति व्याकुल भई मातु जसोदा नैनन नीर झर्‍यौ ॥
जल जमुना के कारैं पानी पैठत नाहिँ डर्‍यौ।
कसराइ घर होत वधाई माथ कलंक टर्‍यौ ॥
पैठि पताल कालिया नाथ्यौ बाहिर कस डर्‍यौ।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे मिलन कौं मोतियनि थार भर्‍यौ ॥३३॥

राग टोडी

सुनि भइया गइया हैँ पाई।
बसी बट कैं निकट रहित हैँ चरति फिरति अतुराई ॥
बोलत सखा सुबल श्रीदामा मुरली-टेर सुनाई।
सुनि मुरली की टेर चतुरदिसि गहै लेति तृन बाई ॥
इतनी सुनत सकल देवनि मिलि पुहुप-वृष्टि बरसाई।
सूरदास-प्रभु तुम्हरी लीला वेद पुराननि गाई ॥३४॥

राग बिलावल

जबहि वेनु-धुनि साँमरैं बृंदावन लाई।
मोही तिया जाति जमुना-जल सुधि तनु की बिसराई ॥
सुरभी तृन गहि रहीँ मुखनि मैं पंछी रहे चुपाई।
कालिंदी-परवाह थकित भयौ गति निज पवन भुलाई ॥
मुनि कौ ध्यान छूटि गयौ तबहीँ जै जै जै जदुराई।
सूरदास रवि-बाजि चलत नहिँ तातैं रथ बिलमाई ॥३५॥

राग सारग

अँचवत अति आदर लोचन-पथ मन छन तृपति न पावै।
हरि जू के तन की शोभा, कछु कहत नहीँ कहि आवै ॥

सजल मेघ घन स्याम सुंदर वपु, तड़ित वसन, वनमाल।
सिखर सिखंडी, धातु विराजत, सुतन, सुरग प्रवाल॥
कुंडल करन कपोलनि की छवि, वने कमल दल नैन।
अधर मधुर मुसुक्यानि मनोहर, करत मधुर मुख वैन॥
कछुक कुटिल, कमनीय सुभग सिर, गोरज मंडित केस।
राजत मनु अंवुज-पराग रस रीझत मधुप सुदेस॥
प्रति प्रति अंग अनंग-कोटि-छवि सुनि सखि चित्त रही न।
सूरदास जहँ दृष्टि परति है नैन रहत ह्वै लीन॥ ३६॥

राग विभास

चलि री मुरली वजाई कान्ह जमुन तीर।
तजि कुल की कानि लाज़ गुरुजन की भीर॥
जमुना जल थकित भयौ वछ न पिवैं छीर।
सुर-विमान थकित भए थकित कोकिल कीर॥
देह की सुधि विसरि गई विसरयौ तन चीर।
मातु पिता विसरि गए विसरे वालक वीर॥
मुरली धुनि मधुर वजै कैसैं धरौं धीर।
सूरदास मदन मोहन जानत हौ पर पीर॥ ३७॥

राग सोरठ

वाँसुरी दीजियै व्रज नारि ध्रुव।
काल्हि सखि इहि ठौर वाँसुरी भूलि विसारी॥
तुम जु गई लै धाम वात हम सुनी तिहारी।
तुम्हरैं काम न आवई वंसी हमरी देहु॥
हम आतुर है माँगहीं तुम नहिं नाहिं करेहु।
वंसी कैसी होइ नैन भरि कवहुँ न देखी॥
पिता तुम्हारे साधु कान्ह तुम भए विद्वेषी।
इत उत खेलत तुम फिरौ कितहूँ भूलि गई सु॥
सौंह खाति हौं ववा की नाहिं जु नाहिं लई सु॥
वंसी हमरी देहु काहे कौं रारि वढावौ।
समुझि वूझि मन माहि काहे कौं लोग हँसावौ॥
लोग हसैं चरचा करैं देखौ मनहिं विचारि।
यह वंसी व्रजनाथ की देति न काहैं गँवारि॥

छंद

अपने जु पति पैं गई कीरति प्रीति-रीति जनाइयौ।
मंत्र कीन्हौ व्याह कौ सब सखिन मंगल गाइयौ॥
रच्यौ बृंदाबन स्वयंबर कुंज मंडप छाइयौ।
सूर के प्रभु स्याम सुंदर राधिका बर पाइयौ॥

तहँ बिधिवत बिधि बिधि सब कीन्ही। मंगल भरि कै भाँवरि दीन्ही॥
बिबुध बिबिध कुसुमनि बरखावैं। नर नारी मिलि मंगल गावैं॥

छंद

आनंद मैं ब्रजनारि हरषीं कहतिं कंकन छोरियै।
यह नहीं गिरि जो उचकि लीन्हौ स्याम हँसि मन मोरियै॥
छोरौ न छूटै कंकना दृढ़ प्रीति-गाँठि हियैं भई।
सूर के प्रभु जुवति जन मिलि गारी मन भावति दई॥४१॥

राग मलार

हरि सँग नीकी लागतिं बूँदैं।
कंचुकि चीर चूनरी भींजी कहूँ परी सिर गूँदैं॥
मृगनैनी ससि बदनी बाला कनक-कलस कुच फूँदैं।
कारहैं अंग मुदित सूरज प्रभु मेटि बिरह की दूँदैं॥४२॥

राग कन्हरौ

कान्ह जगाइ गुपाल मुदित मन हठरी बैठे गिरिवरधारी।
हलधर संग सुबल श्रीदामा गोप ग्वाल सब गए सिंगारी॥
देखन कौं उमहे सुर नर मुनि राउर माँझ भीर भई भारी।
जै-जै-कार होत चहुँ दिसि तैं सुरपति करत कुसुम बरषा री॥
कंचन रतन जटित हीरा-नग विसकर्मा रचि सुविधि सँवारी।
परम विचित्र बनी अति सुंदर जगमगाति कुहु तिमिर बिदारी॥
नंद भवन भरि धरे बिबिध पक अगनित मेवा गरी छुहारी।
टेरि टेरि जब देत सबनि कौं सिव ब्रह्मादिक गोद पसारी॥
करति आरती मातु जसोदा मंगल गावति सब ब्रजनारी।
सूर रसिक गिरिवर सुख बिलसत बरष बरष प्रति परब दिवारी॥
॥ ४३ ॥

राग बिलावल

कहत गोपाल जु नंद सौं, पूजौ गिरि राइ।
बहु विधि व्यंजन साजि कै, पकवान बनाइ॥
करौ मतौ सब गोप तैं, तुम बोलि पठाइ।
उपनंद औ वृषभानु जू, सब बैठे आइ॥
कान्ह कह्यौ मोसौं सपन मैं, बोले गिरि-राइ।
अरपौ वलि मोकौं सबै, बढ़िहैं बछ गाइ॥
सबहिनि मन आनँद भयौ, यह भलौ उपाइ।
याके दीन्हैं वाढ़िहैं, गोधन सुख पाइ॥
चले सबै मिलि सौंज लै, बहु सकट जुराइ।
विधि सौं पूजा पूजि कै, सब भोग धराइ॥
देखि इंद्र अति कोप करि, मेघनि झरलाइ।
सूर स्याम रच्छा करी, गिरि लियौ उठाइ॥ ४४॥

राग बिलावल

पूजा-विधि गिरिराज की नँदलाल बतावैं।
झुंडनि झुंडनि गोपिका मिलि मंगल गावैं॥
गंगाजल अन्हवाइ पय धौरी कौ नावैं।
विविध वसन पहिराइ कै, चंदन लपटावैं॥
धूप दीप करि आरती बहु भोग भरावैं।
तिलक कियौ बीरा दियौ माला पहिरावैं॥
दरकि चले लहुरे बड़े वय गाइ खिलावैं।
फिरि गिरिवर भोजन कियौ सुख सूर दिखावैं॥ ४५॥

गिरिधारण-लीला *राग मलार*

बादर ब्रज पर आनि अरे।
तब तैं वाम करज गिरि राख्यौ, बहुरि फेरि घुमरे॥
सात दिवस मूसल जलधारा, सायर समुद भरे।
नहिं परवाह नंद के ढोटहिं, टेरत वेनु धरे॥
लियौ उठाइ कोपि कै गिरिवर, सकल सरन उबरे।
सूरदास बलि-बलि चरननि की, सुरपति पाइ परे॥ ४६॥

गोपादि की बातचीत *राग सारग*

सबनि मिलि कै कह्यौ पूजौ साँवरे की बाँह ।
गाई गोपी ग्वाल राखे सात दिन करि छाहँ ॥
इंद्र कहा रिसाइ कीन्हौ गयौ अपबल गाहि ।
आइ तिनहूँ पाँइ पकरे समुझि कै मन माँहि ॥
पूतनादिक कितिक लीला करी हैं सब चाहि ।
हमारे घनश्याम रामऽरु हम न जानैं काहि ॥
सबै बात अचर्ज इनकी बिधिहु जाने नाहि ।
सूर प्रभु की प्रबल माया जानि बूझि भुलाहिं ॥ ४७ ॥

बरुण से नद को छुड़ाना *राग सारंग*

नंद कहत तुम भले कन्हाई ।
तुम तौ तिहूँ लोक के ठाकुर हमकौं भले भ्रमाई ॥
इंद्र कुबेर बरुन सब दिगपति तिनके तुम हौ साईं ।
बरुन हमहिं लै गयौ पतालहिं सुमिरत तुमहि गुसाईं ॥
तबहिं स्याम यह कही नद सौं जल कौ यहै सुभाई ।
जमुना-जल मैं यहै अचंभो भीतर देत दिखाई ॥
चलिये फेरि न्हान तुम बाबा कैसे चरित दिखाहीं ।
जमुना जाइ नंद पुनि देख्यौ बरुन-लोक दिखराहीं ॥
सूर स्याम सौं कहत नद घर चलियैं महर डेराई ॥ ४८ ॥

रास पचाध्यायी

अति रँग भीनी अति रँग भीनौ । मोहन लाल बन्यौ रँग भीन्यौ ॥
गोपिनि सबकौं अति सुख दीन्हौ । सबहिनि कौ मनभायौ कीनौ ॥
लालन कैं उर मरगजी माला । निरखत थकित भईं ब्रजबाला ॥
लालन पाग केसरी सोहै । देखत रति पति कौ मन मोहै ॥
लालन पीक कपोल बिराजै । अधरनि अजन-रेपा छाजै ॥
तापर एक चद्रिका धारी । अतिहिं बने बानक बनवारी ॥
अँग अँग सोभा कहै कहा री । छबि पर सूरदास बलिहारी ॥
॥ ४९ ॥

राग नट

मोहन मोहिनि घातैं करैं जु मोकौं करत न आवै री।
तन सुख मन सुख नैननिहूँ सुख स्रवन सुधा रस प्यावै री॥
दच्छिन चरन चरन राखे मुरली मधुर बजावै री।
मनि-मय मकर-मनोहर-कुंडल सिपी-सिषंड डुलावै री॥
सजल मेघ घन स्यामल सुंदर पीतांबर फहरावै री।
असित अभ्र मनु लसति तड़ित-दुति इहि विधि सोभा पावै री॥
उर सुचि गंध सुरंग माल पद-पंकज लौं लटकावै री।
अति उमँगी सुंदरता रोकित छवि तरंग उपजावै री॥
वन के धातु विचित्र चित्र तनु अंग अनंग लजावै री।
नटवर भेष मनोहर मूरति मधुर मधुर सुर गावै री॥
कंकन-किंकिन-नूपुर-रव जुवती-जन मोद बढ़ावै री।
बाल मराल परस्पर बोलत मुर्छा-मदन जगावै री॥
काम कमान समान भौंह दोउ मनमथ बान चलावै री।
चंचल नैन सैन रति-पति मनु ब्रज-ललना ललचावै री॥
जगत-विमोहन हँसि कबहूँ कै मानहिं मान छुड़ावै री।
नैकु-विलोकन-सहज-माधुरी तीनौ ताप नसावै री॥
कैसो रास रच्यौ वृंदावन वंसी नारि बुलावै री।
मनौ नालमनि-कनक-खंभ-बिच मंडल सुभग बनावै री॥
मानौ घन घन अंतर दामिनि मदन के मदहिं गँवावै री।
कला-निधान सकल-गुन-सागर निर्त्तत भेद दिखावै री॥
सीतल मंद सुगंध पवन वहै उड़पति अतिहिं थकावै री।
नव किसोर नँद-लाल लड़ैतो सूरदास जिय भावै री॥५०॥

श्रीकृष्ण का अंतर्धान होना *राग बिहागरो*

तुमहीं धन तुमहीं तन मेरे॥
तुमहीं प्रान अधार स्याम घन तुम बिनु दुतिया और न हेरे॥
कान्ह मन बच तुम्हैं चाहौं करौं नाहीं मान।
सुन्यो चाहौं सदा स्रवननि मधुर मुरली तान॥
कुंज कुंजनि फिरति फेरति तुम गुननि की माल।
सूर के प्रभु वेगि मिलि कै हरो सब जंजाल॥५१॥

गोपी गीत *राग कान्हरौ*

सुनहु स्याम इक बात नई।
आजु रास राधा अवलोक्यौ मेरे मन मैं भूलि भई॥
हँसि बोलन डोलन बन विहरन वह चितवनि न जाति चितई।
कौन कहै वृषभानु-नंदिनी प्रगट भई जनु काम जई॥
तुम सम नैन बैन तुमहीं सम तुम आनँद केलि ठई।
तुम्हारौ रूप धर्‌यौ तुमहीं सौ तुमहीं सी भई तुमहिं मई॥
माथैं मुकुट पीत पट मुरली बनमाला छबि छाति छई।
रंचक भेद रह्यौ या तन में और सकल विधि पलटि लई॥
तिय आलिगन पिय अवलोकन तुरत जु उठि मोहिं अक दई।
फिरि चितवन अरु मुरि मुसुक्यावन उघटन मिस कर नृपति ठई॥
यह कौतुक अनुपम मोहन मन मनहुँ चोप रस बेलि बई।
सूरदास स्वामी के परसत ललिता बलि बलि हारि गई॥५२॥

रास नृत्य तथा जल-क्रीडा *राग बिहागरौ*

मुरलि बजावत स्याम। लखि लजत कोटिक काम॥
हरि मोहिनी-वपु-धर्‌यौ। तब काम को मद टर्‌यौ॥
श्रीमदनमोहन लाल। नव नागरी सग बाल॥
नव कुज जमुना-कूल। रहे सूर देखि सु भूलि॥५३॥

राग रामकली

(श्री जमुना जी) तिहारो दरस मोहि भावे।
बंसीबट कैं निकट बहति हौ लहरनि की छबि आवै॥
दुख हरनी सुख देनी जमुना प्रातहिं जो जस गावे।
मन मोहन की खरी पियारी पटरानी जु कहावे॥
वृदावन में रास बिलासै मुरली मधुर बजावे।
सूरदास दपति छवि निरखत बिमल बिमल जस गावै॥५४॥
इहिं मुरली मन हर्‌यौ हमारौ, कमल नैन जदुराई हो।
एक अचभौ सखि मैं देख्यौ, वृदावन मैं जाई हो॥
बिच गोपी बिच माधौ सोभित, रास रच्यौ बन ठाईं हो।
बाजत वेनु मृदग मधुर धुनि, लीला अगम दिखाई हो॥
मोहे नर सुर-असुर नाग मुनि ब्योम बिमाननि छाई हो।
दीन दयाल सूर के स्वामी, चलु सखि देखि न जाई हो॥५५॥

राग बिहागरौ

निसि सरद कोटिक काम। सोभित तहँ घन स्याम॥
मन मोहन रूप धरयौ। तब काम कौ गर्व हर्‍यौ॥
श्री मदन मोहन लाल। नव नागरी सँग बाल।
नव कुंज जमुना-कूल। देखत सु दरसहिँ फूल॥
मुरली जु अधर धरी। नर नारि बहु बस करी॥ ५६॥

विद्याधर-शाप-मोचन *राग बिलावल*

राजत जुगल किसोर किसोरी।
प्रात समय देखियत ग्रीवा-भुज स्याम सिथिल आलस गति गोरी॥
रहे उघटि बलहीन बिलासनि बरनौ कहा मदन रँग बोरी।
मनौ अंग अँग सुख फलकैँ हित दुति बसंत-मारुत झकझोरी॥
ससि मुख सखी स्याम लोचन छबि प्रगटत मिलत उभय पट कौ री।
मनु रबि देखि तरपि कछु सकुचत निरखत जुवति लेति चित चोरी॥
थकित सुभग दृग अरुन उनौँदे कुरुष कटाच्छ करति मुरि थोरी।
खंजन मृग अकुलात घात डर स्याम ब्याघ बाँधे रति डोरी॥
नील अलक ताटंक अंक दै स्याम गंड उपटित बर छोरी।
मनहुँ सेस मधु-सर कूरम रजु काढ़त उभय रूप धरि तोरी॥
कोमल कठिन कपोल अमल अति तहँ उपटित क्रीड़ा-रद-रोरी।
मदन कोप पर सैल-सँचारी छाप ताप मोचन मधु घोरी॥
नैन बैन कर चरम चिकुर चल सिथिल उभय स्रम स्वेद निचोरी।
मनु सेना संग्राम मध्य तैँ प्रीति दै जाइ बहोरी॥
थाके रँग-रन की छबि छाजत हार मानि नहिँ रहत निहोरी।
सूर सुभट दोउ खेत न छाँड़त मनहु आइ ठाढ़े दल जोरी॥ ५७॥

राग मलार

देखौ माई सुंदरता की रास।
अति प्रवीन बृषभानु-नंदिनी निरखि बँध्यौ दृग-पास॥
अंग अंग प्रति अमित माधुरी भ्रकुटी मदन बिलास।
जब तैँ दृष्टि परी सुंदरता बस कियौ बिनहिँ प्रयास॥
प्रथम समागम कौँ सुनि सुंदरि उपजति है अति त्रास।
अब तौ मन बच क्रम सब दीन्हौ सुनि सुनि सूरजदास॥ ५८॥

राग टोड़ी

क्रीडत कालिंदी कूल मैं तहाँ कोमल मलय समीरे।
संका रहित बिपुल अबलनि सँग बिलसत कुंज कुटीरे॥
कुमकुम अगरु सत सोचित रेखा पंकति भँवर बिसेखे।
मालति मिलित सरिता जल सूर प्रतिकृत अभिसेखे॥ ५९॥

राग सामत

कुंज मैं विहरत नवल किसोर।
एक अचंभौ देखि सखी री उग्यौ सूर बिनु भोर॥
तहँ घन स्याम दामिनी राजत द्वै ससि चारि चकोर।
अबुज खंजन मधुप मिलि क्रीडत एकहिं खोर॥
तहँ द्वै कीर बिब फल चाखत बिद्रुम मुक्ता चोर।
चारि मुकुर आनन पर झलकत नाचत सीसनि मोर॥
तामैं एक अधिक छबि सोहै हस कमल इक ठौर।
हेमलता तमाल नहि द्वै फल मानौ देति अँकोर॥
कनक लता नीलम राजत उपमा कहँ सब थोर।
सूरदास प्रभु इहिं बिधि क्रीडत ब्रज-जुवती चित चोर॥ ६०॥

शंखचूड़-बध

जब जब हरि कर वेनु गहत।
पसु मोहैं सुरभी मृग बिथकैं तृन मुख टेकि रहत॥
सुक सनकादि सकल जग मोहैं जोग-ध्यान उपहत।
सूर स्याम तेऊ सब मोहैं जिनके सुखहिं लहत॥ ६१॥

पनघट लीला *राग पचम*

मैया तेरौ मोहन अतिहि सयानौ देत अटपटी गारी।
कुज महल मैं अँचरा फारयौ हँसि हँसि दै दै तारी॥
गोरस ढोरै मटुकी छोरै माट दही के फोरै।
उठावँ की डौरी कैसे बाँधौ जबोदै भव बंध तोरै॥
अधर-पान परिरभन चुबन कहँ लौं कहौं लजानी।
सुक नारद सो लिला अगोचर सूर कितक बर बानी॥ ६२॥

दान-लीला राग बिलावल

तुम कौन घोष तैं आए। तेरे बेष देखि जिय भाए॥
तुम कब तैं भए दधिदानी। तुव मन की मैं पहिचानी॥
तुम छाँड़ौ अरक-अरंती। हम हैं गृह-तातन-मंती॥
तुम कहियत कुंज बिहारी। हमहूँ वृषभानु-दुलारी॥
तुम सेष सहसफन सैनी। मौं पन्नग लाजति वेनी॥
तेरैं कुटिल अलक अलि मूला। मौं सीस बिबिध विधि फूला॥
तू वृंदावन चंद कहावै। मौं मुख सम चद न पावै॥
तेरौ कमल-नयन है नाऊँ। हौं अँग अँग कमल लजाऊँ॥
तेरैं मोर-पच्छ रति-रंगा। मेरैं सिंधु-सुता-सुत मंगा॥
तेरैं कुंडल-मकर बनाए। मौं स्रुति ताटंक लगाए॥
तुम सुंदरता की सींवाँ। मौं देखि बिमोहति ग्रीवाँ॥
तुव कटि पीतांबर राजै। मौं कृस कटि किंकिनि साजै॥
तुव बाँहैं बरुन की फाँसी। मो भुज मृनाल रूपासी॥
तेरैं उर कौस्तुभ-मनि सोहै। मौं उर कुच श्रीफल मोहै॥
तू अनुपमता कर अंघा। मो कदलि दलिय जुग जंघा॥
तैं करज अग्र गिरि राखी। मैं राखे धरि तुहिं आँखी॥
बिनु पुन्य सुजस नहिं होई। श्रम करौ बिबिध विधि कोई॥
तेरौ पद-प्रताप जन जानै। मो पद परसत हौ मानै॥
तुम चलहु जमुन-जल तीरा। जहँ सीतल मंद समीरा॥
करी लौंग-लता हरि केली। हँसि प्रिया-अंस भुज मेली॥
मिलि सुरति-रग रस पायौ। जन सूरदास जस गायौ॥
॥ ६३ ॥

राग नट

(दधि लूटी) आजु वृंदावन मैं दधि लूटी।
कहुँ मेरो हार, कहूँ नक-बेसरि, कहुँ मोतिनि की लर टूटी॥
बरजि जसोमति अपनैं कान्हर, झकझोरत मटुकी फूटी।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस कौं, सरबस दै ग्वालिनि छूटी॥ ६४॥

राग नट

मैं तौ आजु करी नँद कानि।
ऐसौ त्रास कौन ब्रज रैहै नित उठि गोरस-हानि॥

प्रात समय गोकुल की गली मैं गही मथानी आनि ।
और संग की जानि दई सब हौं लूटी पहिचानि ॥
उलटी रीति चली या ब्रज मैं कोउ न घटावत कानि ।
सूरदास-प्रभु ब्रज जोधा ये सब के हैं दधि दानि ॥ ६५ ॥

गिरि पर चढ़ि टेरत ग्वालनि सौं को नैं वन तुम गाइ बिडारी ।
पसु पच्छी अति करत कुलाहल बीथिनि सघन भई उँजियारी ॥
कटि किंकिनि-कंकन नूपुर-धुनि तिनके सब्द रहे गुंजारी ।
कोटि प्रकास भयौ रवि ससि कौ या वन मैं कोउ गोप-कुमारी ॥
आई भलैं जानि जिनि पावे पूरन इच्छा भई हमारी ।
माँगो जाइ दान सबहिनि पैं बोलो बचन मधुर सुखकारी ॥
उनमैं तौ बृषभानु-नंदिनी दैहै स्याम सबनि कौं गारी ।
सूरदास-प्रभु प्रगटि ग्वारिनिनि लेहु दान तुमहीं अधिकारी ॥
॥ ६६ ॥

क्यौं री तैं दधि लीन्हे डोलति ।
झूठैं हीं इत उत फिरि आवति इहँहिं आनि कै बोलति ॥
मही भरी ज्यौं मटुकी त्यौंहीं मोहिं देखत भई साँझ ।
गोरस कौ न लिवैया जानति हौं इहिं घखरा-माँझ ॥
सुनि री सखी बात इक मेरी कहति बुरौ जिनि मानै ।
तेरे घर मैं तुहीं सयानी और बेंचि नहिं जानै ॥
रिझई रसिक स्यामघन सुंदर चितवत चित्त चुरावै ।
सूरदास ग्वारिनि रसभीजी ससकत आपु बँधावै ॥ ६७ ॥

ग्रीष्म-लीला, सखियों के साथ यमुना-विहार *राग सारंग*

हरि-मुख किधौं मोहिनी माई ।
अवलोकत अघात नहिं, मेरे नैना ठगे ठगौरी लाई ॥
कुडल किरनि निकट भ्रू, लोचन अरति मीन दृग सम चपलाई ।
स्रवन रंध्र नहिं निपुन दास जनु काम कुबैनी कलित वनाई ॥
छाजति रदन रदन-छद की छबि मद माधुरी गिरा सुहाई ।
जपा कुसुम दल मनहुँ कमल पर तडि जुत कोप कोकिला गाई ॥
सब बिधि वसीकरन की पाँकी वलित वलाक अनुज वल भाई ।
सूरदास प्रभु वदन बिलोकत जकित थकित चित अनत न जाई ॥६८॥

अनुराग समय *राग गौरी*

देखन दै पिय बैरिनि पलकैं।
निरखत रूप नंद-नंदन कौ बीच परै मनु ब्रज की सलकैं॥
बन तैं आवत बेनु बजावत गोरज-रंजित राजति अलकैं।
चपल कुँडल अरु चपल अग बलि ललित कपोलनि मंजुल झलकैं॥
ऐसौ मुख देखन कौं सजनी कौन करै सठ लूटि कमल कैं।
सूरदास प्रभु की गति यह जिय मीन मरै भावै नहिं जलकैं॥६९॥

राग केदार

जल-सुत-सुत ताकौ रिपु-पति-सुत घेरि लई सखि कत हौं धाऊँ।
कालनेमि-रिपु ताकौ रिपु अरु ता वनिता कौं काहु न पाऊँ॥
धरनि गगन मिलि होइ जु सजनी सो गए ता बिनु दिन बिलखाऊँ।
दसरथ-तात सत्रु कौ भ्राता ता प्रिय सुता सु कैसैं पाऊँ॥
एक उपाउ जानि जौ पाऊँ मो खगपति-पितु-दृष्टि चुराऊँ।
सूरदास ते गिरिवर भ्राता चिंता रहित सकल दिन गाऊँ॥७०॥

राग बिलावल

तैं मेरी लाज गँवाई हो जसुमति के ढोटा।
देह बिदेही ह्वै गई मिलि घूँघट-ओटा॥
कमल नयन तुम कुँवर हौ हलधर तैं छोटा।
चपल छबीले रूप मैं भई लोटक पोटा॥
श्री गुपाल तुम चतुर हौ पै मति के खोटा।
सूरदास जानै वहै जिहिं प्रेम की चोटा॥७१॥

राग बिभास

स्याम के भुजनि बीच, राखी है सुरति सींचि, सोई सुकु-
मारि जागी तमचुर स्वर तैं।
हा हा कान्ह उदै भान, अबहीं होइगो जान, धुकुर पुकुर छाती,
गुरुजन-डर तैं॥
मधुर बचन कह्यौ, प्यारे कौ भलौ मनायौ, चुंबन अँकोर देति,
निरुवारि गर तैं।
आँगन मैं ठाढ़े आइ, ललिता लेति बलाइ, सूर स्वामिनी राजति,
आनँद के भर तैं॥७२॥

यमुना-गमन, युगल-समागम *राग कान्हरौ*

स्यामा निसि मैं सरस बनी री।
मृग-रिपु लंक, तासु रिपु गज, ता ऊपर मधु केलि ठनी री॥
कीर कपोत मधुप पिक तंबा, रिपु सत रेख बनी री।
उड़पति बिंब धरे अति सोभा, सुर बाला जोरि चिनी री॥
कनक-खभ रचि नव-सत साजे, जलधर-भष जब स्रवन सुनी री।
कर गहि सत्र सात परि सारँग, दंपति ही की सुरति ठनी री॥
उमापति-रिपु कौं ललचानी, बन रिपु तन मैं अधिक जरी री।
सूरदास-प्रभु मिले राधिका, तन मन सीतल रोम भरी री॥
॥७३॥

राग ललित

भोरहु भए प्रगट स्यामा जू तउ रजनी मन आनति।
पिय-अँग-रुचि लोचन पथ पूरित निसि अँधियारी मानति॥
अलि-गन स्रोनि रटत नीरज पर सुनि रसना रव ठानति।
पूरब कृत करनी माधव सौं आनँद सैन सुनावति॥
सूरदास सहचरि सब प्रमुदित बिहद जतन करि भानति।
दिन पुनि प्रगटि विनोद रजनि के तरनि-उदोत न मानति॥
॥७४॥

राग बिलावल

अति रस-बस नैना रतनारे।
छपत न छपे छपावत हौ कत जनु मनमथ सिर बरत अँगारे॥
तब पाले हित जानि भली बिधि जे हुते हरि सबर दधि डारे।
जब भए प्रगट प्रबीन तरुन तन तरुनाई तामस जनु तारे॥
पुनि सिव पूरब बैर समुझि करि मदन मुदित मादक बल भारे।
अति रिस भौंह-सरासन जुत करि आनि कमल साधत सर न्यारे॥
समुझि परी सखि रति स्वरूप तुम रति पति ज्यों निसि बिलसनहारे।
सूरदास धनि धन्य भामिनी जिहिं अनुराग तिलक हरि सारे॥
॥७५॥

राग बिभास

आली री परी यह भई है निकसि ठाढ़ि भई द्वार कुंज ऐन के।
नथ खैंच्यौ बदन निरखत ही जी मो जान्यौ चंद्रमा तातैं धोखे रैन के॥

नैन कुरंग जानि जिय मैं आयौ सतभाव आधौ विंदुति आधौ
इत रह्यौ चैन के।
सूरदास सखि स्याम मोती माल तारागन और उपमा को देखि
मदन मोहन पीय संग सुख मैन के ॥७६॥

राग विलावल

सोइ उठी वृषभानु-किसोरी।
जम्हुआनी अरसाइ मोरि तनु ठाढ़ी उलटि उभय कर तोरी॥
विवि-कर बीच बदन यौं राजत मोहे मोहन प्रीति न थोरी।
नाल सहित मनु जलज जुगल निज मधि बाँध्यौ विधु वैर वहोरी॥
तिहिं छिन कछुक उरोज उदय भए सोभा सुभग कहै कवि को री।
मनु द्वै कमल सहाइ सहित अलि उठे कोपि जिय संक न जोरी॥
तापर लोचन चारु बने अति अरुन कोर त्रिभुवन-छवि छोरी।
सूरदास इंदीवर विय मनु विरचि लरे ससि सौं दल जोरी॥
॥७७॥

लघु मानलीला *राग विभास*

जान्यौ जान्यौ री सयन तेरो प्रानेस्वर सौं तैं कियौ मान
भयौ है विहान।
पिय कौं तेरोई ध्यान मेरी सिख सुनि कान जामैं बसै प्रान तासौं
कैसौ धौं गुमान॥
सुनि री मुरली-गान आछी नीकी मीठी तान सकेत-सुथल रच्यौ
कुसुम वितान।
सूरदास-प्रभु सब-जान-सिरोमनि मान मदन मोहन तेरे सुख
कौ निधान॥७८॥

राग विभास

प्रात समय नँद-नदन स्यामा देखे आवत कुजगली।
नव घन स्याम तरुन दामिनि मिल राजत रूप अनूप अली॥
लटपटि पाग सीस कर मुरली लोचन घूमत भाँति भली।
सिथिलित चीर मरगजी अँगिया काम कामिनी देखि छली॥
चारि जाम निसि जागत बीते उन उमँग्यौ अनुराग बली।
कज्जल अधर नैन बीरी रँग मदन नृपति की चमू दली॥

सूरबदन पंकज रस पीके अलक मधुप की पाँति चली।
प्रफुलित प्रीति परस्पर निरखत तरनि उदय ज्यौं कमल कली॥
॥७९॥

राग सारग

जौ गिरिधर मुरली हौं पाऊँ।
तेई तान कहौं तेरी सौं कै सुर भेद अनेक उपाऊँ॥
तुम बस करी सकल ब्रज बनिता मैं बस करि हरि तुम्हैं लजाऊँ।
जौन गुनी विद्याधर आदिक गुन करि किन्नर कोटि रिझाऊँ॥
अनहद भेद बताऊँ सारँग तुरग सहित रवि-रथ बिरमाऊँ।
अब गति मंद करौं मारुत की सूरज-सुता-प्रवाह थकाऊँ॥
सुक मुनीस-सनकादिक सकर-ध्यान छुँडाइ मोहिनी लाऊँ।
सूर कहै वृषभानु-नदिनी धरि अधरनि पर अचल चलाऊँ॥
॥८०॥

आजु दोउ स्यामा स्याम बने।
बिहरत फिरत बाह ग्रीवा धरि एकहिं प्रेम सने॥
बिबि उर पर बनमाल बिराजति स्रम-सीकर जु घने।
मानहुँ चपल होत उडिबे कहँ चाहत कीर चुने॥
धीर समीर कलिंदी कैं तट प्रफुलित कुंज बने।
सूरजदास बिलास-रूपनिधि अँचवत दृग अपने॥८१॥

प्रीतम बने मरगजे बागे।
सुरत-कुंज तैं चले प्रात उठि धन पाछैं प्रिय आगे॥
छूटी लट टूटी मुकुतावलि अध घूँघट-पट पागे।
खंडित अधर पयोधर मडित अति अलास निसि जागे॥
नख सिख कुसुम-बिसिख की सेना मनहुँ छुटे रन रागे।
सूरदास निसि रसिक राधिका, बिलसे स्याम सभागे॥८२॥

आजु री नीके स्यामा स्याम।
कुंज भवन तैं निकसे हैं पिय आगैं पाछैं बाम॥
लटपट पेंच मरगजे बागे सो लखि लज्जित काम।
सूरदास-प्रभु रैनि-उनीदे जागे चारौं जाम॥८३॥

नैन समय के पद राग सारंग

नैना पंकज पंक खये।
मोहन-मदन स्याम-मुख निरखत, भ्रुवनि बिलास रचे॥
बोलनि हँसनि बिराजमान अति, स्रुति अवतंस सचे।
जनु पिनाक की त्रास लागि, सारँग-ससि सरन बचे॥
चँद चकोर-चातक ज्यौं जलधर हरि पर हरषि लचे।
पुहुप बास लै मधुप सैल बन घन करि भवन रचे॥
परे प्रीति कैं कुंड महागज काढ़त बहुत पचे।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस कौं मज्जन हेत सचे॥८४॥

राग आसावरी

मेरे नैननि हीं सब दोस।
कहा बसाइ अबस हैं मो तैं हीन हिये कौ सोस॥
बल छल कल, इन तकि नहिं पूजति तिनसौं कैसौ रोस।
गुपुत हुती पूँजी तन की सब मूसि दिये गुन कोस॥
मानत नहीं नैन ये मेरे इन पायौ परसोस।
सूरदास प्रभु कैं बस कीन्ही आपु रहे गहि बोस॥८५॥

राग मलार

देखि सखि लोचन फिरत न फेरि।
अंगद मुकुट छुद्र छुद्रावलि जालावलि रहे घेरि॥
छबि बिलोल अँग अँग पर उपजति, लेति चहूँ दिसि हेरि।
बिसद दाम अभिराम सितासित अलि-सावक कुल-केरि॥
दुज दामिनि दमकन बिरचित चित-चातक परनि परे रि।
अंबर धरनि धार आलंबित बारिद मगन अरे रि॥
कोसत कोस नैन बिबि पंकज रीति तनत उर फेरि।
तन मन पलटि लियौ सखि मेरौ स्यौ दृग मूल अजेरि॥
सूरदास प्रभु चतुर सिरोमनि भए बस्य बिनु बेरि॥८६॥

खंडिता-प्रकरण; मान-लीला तथा दंपति-बिहार राग बिलावल

वहँ जाहु जहँ रैनि रहे बसि।
तब कत दामिनि पद प्रगटित, आए मारन दुअन बान कसि॥

हर-द्रावन संतत-अधिकारी, ज्यौँ विधि चंद चकोर।
दधिगृह जुगल बनावति क्यौँ नहिँ बिनसित अंबुज भोर॥
कंपित स्वास त्रास अति मोकति ज्यौँ मृग केहरि-कोर।
सूरदास स्वामी रति नागर तौ न हर्‌यौ मन मोर॥९४॥

बड़ी मान-लीला *राग केदारौ*

तोहिँ बोलै री मधु-केसि-मथन।
जमुन-कूल अनुकूल तृपारत चकित बिलोकत सकल पथन॥
न करु बिलँब भूपन कृत दूपन चिहुर-चिहुर नाना कर न गथन।
समुद कुमुद कमल मलिन दुति पसित भए सब नाथ नथन॥
कुंजननि सेज सजे एकाकी रमत सखी वीयौ न सथन।
कुसुम बास सखि आस तुम्हारी हरि जू रचि धरे अपने हथन॥
जुग जु जात पल श्री गुपाल कैँ कुटिल तम करी चढ़े हैँ रथन।
सूरदास अति गात काम-रत बासर गत भयौ तुम्हरैँ कथन॥९५॥

राग विलावल

घर सुत सहज बनाउ किये।
जल सुत-सुत ताकौ सुत बाहन ते तिरिया मिलि सीस दिये॥
सुर-भष-रिपु-बाहन के बाहन सुरपति-मित्र के सीस नियें।
ताहि मध्य राजति कठावलि मनौ नवग्रह गुदरि दिये॥
सुंदरता सोभा की सींवाँ बसै सदा यह ध्यान हिये।
धन्य सूर एकौ पल इहिँ सुख कह इहिँ बिनु सत कलप जिये॥९६॥

राग मलार

राधे तेरौ रूप न आन सौ।
सुरभी-सुत-पति ताकौ भूषन उदित न पूजै भान सौ॥
अमी रसाल कोकिला साधे अंबुज-चित कुम्हिलान सौ।
विद्रुम अधर दसन दाड़िम-बिज भ्रकुटी किये सुठान सौ॥
सूरदास-प्रभु सौँ कब मिलिहौ सुफल रूप कल्यान सौ॥९७॥

राग केदारौ

लागौ मोहि या बदन-बलाइ।
खंजन तेरे खरे कटाच्छनि न्याउ गुपाल बिकाइ॥

कह पटतर द्यौं चंद्र कलंकी घटत बढ़त दिन जाइ।
जा ससि की तुम आरि करति हौ चंद्र निहारौ आइ॥
ढोटा जौ पै खरौ अटपटौ बातैं कहत बनाइ।
सूरदास प्रभु तुम्हरैं मिलन तैं तन की तपति बुझाइ॥९८॥

राग गौरी

किन तू गवन खरिकहिं कई री।
अब चलि देखि प्रानपति की गति, तब तैं कहा भई री॥
जा छिन तैं तू दई दिखाई कर दोहनी लई री।
तब तैं तन मन परी चटपटी गाइ न दुहन दई री॥
अब ताकौ उपचार करै किन, प्रीति की बेलि बई री।
इतने कारज पर सब की चलि लागी प्रेम जई री॥
चलि मिलि बहुरि बहुरि जामन दै दै उर छवि जमई री।
सूरदास-प्रभु स्याम सुंदर सन भेंटत काम रई री॥९९॥

राग मलार

बिमल तजि भामिनी बिलसि ब्रजनाथ सौं निकट प्रावृट कटक निकट आयौ।
सघन घन स्याम तन सजत नभ नव बरन कान्ह उर उरनि तैं नाथि घायौ॥
कहा कर जलद तन प्रभू बन उपकरन सुरन बिद्युत-छटा निगम गायौ।
चलहि अरधांग अँग संग हिलि मिलि हुलसि मैं जु संजोग कौ सपथ खायौ॥
न करु मन मान अभिमान गथ ग्रहन कौं प्रेम प्राचींद्र इंद्र धनु चढ़ायौ।
सूर बलबीर तेऊ न धरि रहैं धीर भीरु नँदलाल तौ सुजस गायौ॥१००॥

राग सारंग

मानत नहिं तोहिं कौन मनैहै।
ये दिन चारि गएँ सुनि नागरि नैननि नीर कढ़ैहै॥

काठ तैं कठिन कठीली हठीली उठि चलि निसा बितैहै ।
जोबन छाहँ छाहँ बादर की सूर न ऐसैं हिं रैहै ॥१०१॥

राधिके बदन की बलि लेहु ।
कोटि मदन बसंत रितु ससि करि निछावर देहु ॥
लोल लट सु कपोल राजति खुभी खुटिला चारु ।
अलक झलकति झिलमिली अति नील सिर पर सारि ॥
भ्रकुटि भंग भिरंग राजति चिबुक साँवल बिंद ।
सूर स्वामी नैन सौं मिलि नैन रसिक गुबिंद ॥१०२॥

सुनि हरि हरि पति आजु बिराजै ।
मधु हरि त्रसत मंद भयौ हरि बल बल करि हर दल गाजै ॥
हरि की चाल चलन चंचल गति (हरि के) बदन बिरह दुख साजै ।
सूरदास-प्रभु कौं भजि इक छन त्रिविध ताप तन भाजै ॥१०३॥

अब लौं किये रहति ही मान ।
जोबन-गुन-गरबित सुनि सजनी तज्यौ नहीँ अज्ञान ॥
आजु खरिक तैं निकरे मोहन अँग अँग रूप-निधान ।
निरखि बदन-छबि अरुझि पर्‍यौ मन भूली सबै सयान ॥
को जानै तब तैं नैननि कौं कहा भई गति आन ।
सूर सु को जु रहै अपनैं बल सुनत बेनु कल कान ॥१०४॥

मेह बरसै मंद मद ।
कुसुभी चीर अग पर भीजै निरखि हँसे नँद-नद ॥
मुरि मुसक्याइ चली फिरि सकुची कर दै आनन-चद ।
सूर स्याम पट पीत उढ़ावत पुलकत आनँदकंद ॥१०५॥

झूलन *राग केदार*

मोहन प्यारे कौ सुरँग हिंडोरना झूलन जैवै हो ।
ब्रज रसिक मोहिनी सुदरी सब कहतिँ हँसि हँसि बैन ॥
पावस काल गुपाल गोकुल बसत सब सुख चैन ।
ते सखी सकल सुहागिनी जे जपतिँ दै दै सैन ॥

सावन मास हिँडोरना पिय हमहिँ देहु गढ़ाइ।
झुलत गोकुल ग्वालिनी गिरिधरन गोकुलराइ॥
बोलि बिसकर्मा लियौ तब गढ़त लगी न झेरि।
सुमन खंभ सुदेस भौंरा बन्यौ मरुवनि मोर॥
पटुली मयारि सकारि कै डाँड़ी सु आगम केरि।
गावति गुन गोपाल कहि कहि चाह चहुँ दिसि होत॥
रसिक स्याम समीप झूलत देत पहिली पोत।
रमकन रहत हिँडोरना पिय पीत पट फहरात॥
राधिका अंगर सीस तैं खसि गहि रही अंचल दाँत॥
तहाँ लटकि भुज की ओट भामिनि लटकि ग्रीवा जात।
नैन खजन चपल चंचल उड़न कौं अकुलात॥
बेनी भुअंगम भेद निरखि मुरि मुरि मुसुकात।
जैसीय दामिनि लसति घन मैं तैसोइ बरसत मेह॥
तैसीयै राधिका नारि भली भीजि लागी देह।
नील कंचुकी पीत उन परम स्याम सनेह॥
वही होति ब्रज पति राय सो हँसि हिलकिहति कुमारि।
सूरदास गोपाल प्यारी प्रीति परति निहारि॥१०६॥

राग मलार

सखी री सावन दूलह आयौ।
चारि मास को लगन लिखायौ बदरनि अंबर छायौ॥
बिजुरी चपल बराती बगुला कोकिल सब्द सुनायौ।
दादुर मोर पपीहा उमँगे इंद्र निसान बजायौ॥
हरित भूमि पर जरद देखियत सबुज बिछौन बिछायौ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं सखियनि मंगल गायौ॥
॥१०७॥

राग देवगिरि

मदन मोहन जू कैं मदन-सदनहीं मोहिनि भूलन आई हो।
झूमक नाचति देवगिरि गावति सायन तीज खेलाई हो॥
पहिरि पहिरि सुहो सुरग सारी चुहिचुही चुनरि रँगाई हो।
नील लहँगा लाल चोली कसि केसरि उबटि सिंगार बनाई हो॥

मनिमय भूषन पट अँग साजे नँदलाल सौं प्रीति लगाई हो।
पूर्नकला मुख चंदा मनु चित चकोर प्रेम रस धाई हो॥
माथैं मोर चंद्रिका विराजति कंठ बैजंती कमल प्रसाई हो।
कुंडल लोल कपोलनि कैं ढिग मनु रवि-परकास कराई हो॥
अधर अरुन छवि कोटि वज्र दुति ससि-गुन रूप समाई हो।
मनि मय भूपन कंठ मुकुताली देखि कोटि अनग लजाई हो॥
हैं खँभ कंचन के सु मनोहर रत्ननि जटित जराई हो।
पटुली आठ हाटक विद्रुम की नव मनि खचित खचाई हो॥
पँच रँग पाट कनक की डोरी अतिहीं सुघर बनाई हो।
बिसकर्मा सुतहार सुतिधारी सुरलभ सिलप सुहाई हो॥
फटिक सिंहासन मध्य राख्यो है नवरत्न मनि सजाई हो।
पाँतिनि पाँति प्रवाल लगाए बिच बिच वज्र पचाई हो॥
षोडस डाँड़ी परमहिं सुंदर हीरा रत्न लगाई हो।
मरुव मयारि पिरोजा लाल लटकैं सुदर सुठि सु ढराई हो॥
दंपति झूलत गगन हिंडोलौ ब्रज-बधु देतिं झुलाई हो।
कंकन नूपुर कुनित कनक मय कटि किंकिनि झमकाई हो॥
वहाँ त्रिविध सीतल सुगंध मँद पवन सु गवन सुहाई हो।
विहरत उठत सुबास जहाँ बहु उड़त मधुप गन धाई हो॥
जैसी हरी हरी भूमि हुलसावनि पावस रितु सुखदाई हो।
तैसियै नान्ही नान्ही बूँद बारि बारि बरषे मेघवा मधुर गरजाई हो॥
चढ़े बिमान त्रिदसपति देखैं जै-जै धुनि नभ छाई हो।
सखि स्यामा स्याम रमत बृंदावन सुर ललना ललचाई हो॥
सुक सारदा सेस नारदादि बिधि सिव ध्यान न पाई हो।
तिहिं देखैं त्रिताप तनु नासहि ब्रज-बधूनि मन भाई हो॥
झूलति जुवती मदन गुपाल सँग एक बस इकदाई हो।
सूरदास प्रभु कुंज बिहारी आपुन झूलि झुलाई हो॥१०८॥

राग हिंडोल

(ऐसे) ब्रजपति कौ अति विचित्र हिंडोरन भावै जू।
ब्रज ललना स्यामा सँग देखन कौं आवैं जू॥
कल्पद्रुम के खंभ रोपे मलय गिरि की पाटि।
भँवरा मरुवा कृष्नऽगरु के कनक बहु बिधि काँटि॥

डाँड़ि बनई पारिजातक कनक-पटुली वानि।
बिस्वकर्मा रच्यौ पचि पचि रत्न नाना आनि॥
आनि रत्न सु रच्यौ पचि पचि अति अनूपम भाँति।
जच्छ किन्नर देव नर मिलि देखि मोहैं काँति॥
उपमा कौं त्रैलोक नाहिं जु देहुँ पटतर डाँटि।
कल्पद्रुम के खंभ रोपे मलय गिरि की पाटि॥
बृंदावन कालिंदि कैं तट हरित सोभित भूमि।
बिरध लता द्रुम कुसुम मुकुलित रहे झुकि झुकि झूमि॥
तहँ लालमुनियाँ-झुंड बैठे मत्त अलि-कुल गुंज।
हंस - चक्क-चकोर - चातक कीर - कोकिल - पुंज॥
कुंज कुंज तहँ मोर निरतत करत कुलाहल नाद।
हारिल परेवा भृंग पिकऽरु कपोत दुज-कुल बृंद॥
बोलहीं गहगह मधुर बानी गगन गरजै घूमि।
बृदावन कालिंदि कैं तट हरित सोभित भूमि॥२॥

झूलहिं तहाँ ब्रज-सुदरी रति रूप सम बहु-रंग।
परम मंगल गीत-हरि-गुन गावहीं सब संग॥
तहँ रास हास बिलास क्रीडत हरपि सिद्धि कलोल।
मचकहिं परस्पर कृष्न सनमुख अलक लोल कपोल॥
अलक लोल कपोल कुडल ललित फरहरे चीर।
राजत विचित्र सुहावने जनु धुजा मन्मथ कीर॥
वलय कंकन रसन मुकुलित सकल भूपन अंग।
झूलहिं तहाँ ब्रज सुंदरी रति-रूप-सम बहु-रंग॥३॥

तहँ स्याम सुंदर कमल लोचन पीतपट बनमाल।
मोर पच्छ सिर करन कुंडल तिलक ससि-सम भाल॥
अंग कुमकुम खौरि सोहै गुंज हार बनाइ।
कोटि काम लवन्य मूरति बँध्यौ तिहिं मन धाइ॥
धाइ तिहिं मन बँध्यौ रति-रस-रूप-सागर मैं पर्‍यौ।
मगन भयौ फिरि नाहिं आयौ प्रेम आनँद सौं भर्‍यौ॥
भक्त-हित अवतार लीन्हौ संग बाल गुपाल।
सूर के प्रभु स्याम सुंदर पीत पट बनमाल॥१०९॥

नीले नीले बादर असाढ सावन के आए उनय गगन धुरि गाढ़े।
बन रमनीक भूमि हरियारी सो हैं सर सरितनि जल बाढे॥
दादुर मोर पपीहा बोलत चहुँ दिसि सकल चाय अति चाढ़े।
महुअर बेनु बिषान बजावत गावत ग्वाल सकल सँग ठाढे॥
मद पवन बहँ मँद बूँदकन भूमि रहे झरके बर बाढ़े।
सूरदास-प्रभु धेनु चरावत जमुना के कान्ह करारनि ठाढ़े॥११०॥

माथैं बने मोरन के चँदवा अरु घुँघुचिनि के हार हिये।
पीतांबर की फेंट बाँधि बन-धातु-रग अँग चित्र किये॥
सावन समय सँध्या घन घन बन आए इद्र जु धनुष लिये।
सूर उडुपगन दामिनि मानौ बरषत प्रेम पयोधि पिये॥१११॥

पीतांबर सिर धरे चूनरी बचावत।
घन बरषत राधे गिरिधर सँग सघन कुज बन धावत॥
ज्यौं ज्यौं बूँद लगति तिरछौंही बिज्जु छटा डरपावत।
त्यौं त्यौं श्रीबृषभानु नदिनिहिं हरषित हृदय लगावत॥
राजत जोट कलिंद इदु दोउ भींजत अति छबि पावत।
हँसि मुसुकाइ चितै इकटक ह्वै अधिकौ प्रेम जनावत॥
बिहरत सघन कुंज मैं दोऊ यह समयौ मन भावत॥११२॥

दोउ जन भींजत अटके बातनि।
स्यामा स्याम कुज के द्वारैं अंबर लपटे गातनि॥
ललना लाल रूप रस भीजे बूँद बरावत पातनि।
बरनत सूर परसपर प्रीतम मिले प्रेम रस घातनि॥११३॥

हौं समीप लालन के अब घन बरस्यौ क्यौं न करै।
चहुँ दिसि बादर उलहि आए हैं चहुँ दिसि बिज्जु छटा फहरै।
नान्हीं नान्हीं बूँदनि मेघ रैनि दिन सरित उमडि जग नीर भरै।
सूरदास गिरिवर मैं पाए मन्मथ दोउ कर मीजि मरै॥११४॥

राग सूही

झूलत सुदर जुगल किसोर।
नद-नँदन बृषभानु-नदिनी, पियत सुधा-रस नैन-चकोर॥

भृकुटी वक्र धनुष श्री सोभित, तिलक भाल मनु सायक जोर।
मंद मंद मुसुकात स्याम घन, निरखत करत कटाच्छनि ओर ॥
अंजन की पति रजन लागै, राजत अधरनि दसन तमोर।
मृगमद आड़ धने कर कंकन मोतिनि हार सिगारनि डोर ॥
लियौ सिर तैं पट झटकि मनोहर उघरि गए कुच कलस कठोर।
सूर सु निरखि भए बस प्रीतम तब प्यारी सौं करत निहोर ॥
॥११५॥

राग केदारौ

ओल्हर आई हो घन घटा हिंडोरे झूलत है स्यामा स्याम।
कंचन थंभ जरित डाडी पटुली धरनाखारी पीत वसन फहरात
भृकुटी जितै कोटि काम ॥
बनी है अद्भुत जोरी उपमा को दीजै कोरी कौंटा देत सब मिलि
बृज की वाम।
आनंद बढ़ो ठौर ठौर नाचत है मोर मोर इह छवि निरखि सूर
पायौ है सुप धाम ॥११६॥

संत लीला *राग बसंत*

छिरकत स्याम छबीली राधा चंदन बंदन बोरी।
अबिर गुलाल विविध रँग सौंधे लोचन भरि रहे रोरी ॥
सरबस कियौ बृषभानु नंदिनी नैननि फँगाही डोरी।
सूर के प्रभु गिरिधरन लाल भरि, रही प्रेम-अँकोरी ॥
॥११७॥

राग होरी

विहरत ब्रज बीथिनि बृंदबन, गोपिन जमुना-धारी।
लाल पाग सिर, लाल छरीकर, जुही माल गरधारी ॥
देखि देखि फूले ब्रज-बासी, सुख की रासि विचारी।
कुसुमावलि बरखत इंद्रादिक, सूरदास बलिहारी ॥
॥११८॥

राग श्रीहटी

हौं तो आजु नंदलाला सौं खेलौंगी सखि होरी।
ललिता बिसाखा अंगना लिपावौ चौक पुरावौ रोरी ॥

मलयज मृगमद केसरि लै लै मथि मथि भरौ कमोरी।
नवसत साजि सिँगार करौ सब भरहु गुलालहिँ झोरी॥
ज्यौं उडुगन मैं इंदु सहेलिनि मैं त्यौं राधा गोरी।
इक गोरी अरु एक साँवरि हो इक चंचल इक भोरी॥
बरजति सखि बरज्यौ नहिँ मानै लै पिचकारी दौरी।
उन रँग लै पिय ऊपर डार्‌यौ पियहूँ रँग मैं बोरी॥
इंद्र देव गन गंध्रब बरखैं पुहुप बाटिका खोरी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन कौं चिरजीवौ बर जोरी॥
॥११९॥

राग माल कौशिक

नागर रसिकऽरु रसिक नागरी।
बलि बलि जाउँ देखि ब्रज दंपति प्रमुदित लीला प्रथम फाग री॥
राधा दधि मंथान आपनैं गेह करति धरि सुकर पाग री।
तब हरि उठि आए औचानक उससि सीस सचि ढरति गागरी॥
लै उसास अंजुरि भरि लीन्हौ बिदुरित दधि जु अनूप आँगरी।
अति उमँगाति स्याम घन छिरके मनु बिछुरी बग-पाँति माँग री॥
मोहन मुसकि गही दौरत मैं छुटी तनी छँद रहित घाँगरी।
जनु दामिनि बादर तैं बिमुख वपु तरपित तच्छन लई तलाग री॥
परमानंदित दंपति ऐसैं पट तैं परसत परत दाग री।
सूरदास-प्रभु रसिक-सिरोमनि का बरनौं ब्रज-जुवति-भाग री।
॥१२०॥

राग रागिनी बंगाली

(श्री मदन मोहन जू) मति डारौ केसरि पिचकारी।
दधि ही मथति जाहुँ जमुना-जल हो मोहन तुम कुंज बिहारी॥
मर्म न गुरुजन पुर-जन जानैं नहिँ या बृंदाबन की नारी।
सासु रिसाइ लरै मेरी नँनदी देखैं रंग देहिँ मोहि गारी॥
मुरली मैं गावत बंगाली अधर चुवत अंमृत बनवारी।
मुदित पियत संतनि सुखकारी पूरब खचित नेह गिरिधारी॥
मृदु मुसुकानि जुवति-मन मोहत हो हरि माखन-चोर मुरारी।
सूरदास-प्रभु दोउ चिरजीवौ ब्रज-नायक बृषभानु दुलारी॥
॥१२१॥

परिशिष्ट (१)

राग धमार

ठाढ़ी देखी नंद-दुवारैं हौं सुंदरि इक दह्यौ लिये ।
बढ़ी प्रीति ललना गिरिधर सौं, गुरुजन सबहिनि बिसरि दिये ॥
नैननि कज्जल नासिका बेसरि, मुख तमोर अति राजै ।
ढार सुढार बन्यौ जाकौ मोती, रहत अधर मुख छाजै ॥
कटि लहँगा पहुँची-बँध अँगिया, फुँदना बहु विधि सोहै ।
रतन जराव जरी जाकी जेहरि, हंस चाल गज मोहै ॥
कंचन-कलस भराइ जमुन-जल, मोतियनि चौक पुराए ।
मानहु छौना हंसनि के से, चुगन सरोवर आए ॥
तुम तौ कहावत हौ नँद-नंदन, सारँग बुझिहै थोरी ।
सूरदास प्रभु नंदलाल की बनी छबीली जोरी ॥१२२॥

राग कल्यान

वृंदावन खेलत हरि होरी ।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ नंद-लला वृषभानु-किसोरी ॥
हौं अपनैं गृह तैं निकसी सखि सास की त्रास ननद की चोरी ।
और सखी सब छाँड़ि स्याम मो कर मरोरि पहुँची गहि तोरी ॥
स्याम-बरन अति सुंदर साँवरौ कनक-बदन राधे-तनु गोरी ।
सूरज के प्रभु दोऊ राजत पारस कंचन की सी जोरी ॥१२३॥

राग गौरी

होरी के खिलार भावते यौं ही जान न दैहौं ।
बागे बीरे जो बनि आए जागे हैं भाग हमारे नैननि भरि राखौं फगुवा न लैहौं ॥
न्यारे ह्वै मुख माडिहौं अँखियाँ अँजैहौं । बीरी पलटि न लेहु और सौं काहू की प्यारे औरै भरन न दैहौं ॥
न्यारे ही खिलैहौं । लोनी मूरति माधुरी हँसि हृदै लगैहौं ।
सूरदास मदन मोहन सँग हिलि मिलि दोऊ जल की तरंग जैसें जलहीं समैहौं ॥१२४॥

राग पूरवी

ऐसो को खेलौ तोसौं होरी ।
बारंबार पिचकारी मारत वा पर बाँह मरोरी ।

नंद बबा की गाइ चरावौ हमसौं करौ बरजोरी।
छाक छीनि खाते ग्वालनि की करते माखन चोरी॥
चोवा चंदन और अरगजा अबिर लिये भरि झोरी।
उड़त गुलाल लाल भए बादर केसरि भरी कमोरी॥
बृंदाबन की कुंज-गलिनि मैं गावो राधा गोरी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं चिरजीवो यह जोरी॥१२५॥

राग होरी

ब्रज मैं हरि होरी मचाई।
इततैं आवति कुँवरि राधिका उततैं कुँवर कन्हाई॥
खेलत फाग परस्पर हिलि मिलि यह सुख बरनि न जाई।
(सु घर घर बजत बधाई)
बाजत ताल मृदग झाँझ डफ मजीरा सहनाई।
उड़ति अबीर कुमकुमा केसरि रहत सदा ब्रज ठाई॥
मनौ मघवा झरि लाई।
राधा जू सैन दियौ सखियनि कौं झुंड झुंड उठि धाईं।
लपटि झपटि गईं स्याम सुंदर कौं बरबस पकरि ले आईं॥
लाल जू कौं नाच नचाईं॥
लीन्हौ छीरि पितांबर मुरली सिर सौं चुनरी ओढाईं।
बेंदी भाल नैन बिच काजर नक बेसरि पहिराईं॥
मनौ नई नारि बनाईं।
फगुवा दिए बिनु जान न पैहौ करिहौ कौन उपाई।
लैहौं काढि कसरि सब दिन की तुम चित-चोर चबाई॥
बहुत दिन दधि मेरी खाई।
सुसुकत हौ मुख मोरि मोरि तुम कहाँ गई चतुराई।
कहाँ गए वै सखा तुम्हारे कहाँ जसोमति माई॥
तुम्हे किन लेति छुडाई।
रास बिलास करत बृंदावन ब्रज-बनिता जदुराई॥
राधे स्याम जुगल जोरी पर सूरदास बलि जाई॥
प्रीति उर रहति समाई॥१२६॥

राग होरी

स्यामा स्याम सौं आजु बृंदावन खेलति फाग नई।
नंद नंदन कौ राधे कीन्हौ माधव आपु भई॥

सखा सखी ह्वै सखी सखा ह्वै जुरि नँद भवन गईं।
उलटे रूप देखि जसुमति की गति मति भूलि गईं ॥
गोरे स्याम साँवरी स्यामा दोउ मूरति चितई।
सूर स्याम कौ वदन विलोकत उघरि गई कलई ॥

॥१२७॥

राग होरी

भली भई होरी जो आई घर आए घनस्याम।
धनि मेरौ भाग सुहाग लड़ैते और न दूजी बाम ॥
काजर दै मुख माँड़ि हरद सौं राधा पूरे काम।
सूरदास की इच्छा पूजी, सीता मिली श्रीराम ॥

॥१२८॥

राग बिलावल

नंद-सुवन व्रज-भावते संग फाग मिलि खेलौ (जू)।
हमें तुम्हें यह जानवी नव जुवति दल पेलौ (जू) ॥
रसिक सिरोमनि साँवरे स्रवन सुनत उठि धाए।
बल समेत सब टेरि कै घर घर सखा बुलाए ॥
विविध भाँति बाजे बजे ताल मृदंग उपंग।
डिमडिम झालरि झिल्लरी आउझ बर मुँहचंग ॥
उततैं नवसत साजि कै निकसी सब व्रजनारी।
भुंडनि आईं भूमिकै गावति मीठी गारी ॥
केसरि कुमकुम घोरि कै भाजन भरि भरि धाईं।
छूटी सनमुख स्याम के करनि कनक-पिचकाईं ॥
इतहीं स्याम गोपाल संग भरे महा रस खेलैं।
चोवा मृगमद घोरि कै जुवति जूथ पर मेलैं ॥
सोभित ग्वालनि वृंद में हरि हलधर की जोरी।
इतहिं चतुर चंद्रावलि सब गुन राधा गोरी ॥
सौंह किये ललिता कहै पग न पिछौड़े डारैं।
उत नायक इत नाइका को जीतै को हारैं ॥
टिके परस्पर देखिये खेल मच्यौ अति भारी।
इत उत हटक न मानहीं चोत परे नर नारी ॥

जुवति-जूथ दल पेलि कै छैंकि सुबल गहि लीनौ।
कंठ उपरना मेलि कै खैंचि आपु बस कीनौ॥
सुनहु सुबल साँची कहौ तौ छूटन भले पावौ।
कल बल बानकि बानि कै हलधर कौं पकरावौ॥
बहुरि सिमिटि सब सुंदरी संकर्षन मिलि घेरे।
फैंट गही चंद्रावली उलटि सखिनि तन हेरे॥
सौंधे नावौ सीस तैं काजर लै भरि आई।
मोहन मुरि हँसि कै कहैं दाऊ आँखि अँजाई॥
फेरि पुकारी राधिका स्याम जहाँ हैं ठाढ़े।
और सखिनि की ओट ह्वै गहे औचकहिं गाढ़े॥
देखि सबै चहुँ ओर सौं दौरि आइ लपटानी॥
अंग अंग बहु रंग सौं करी बान मनमानी॥
केसरि सौं पट बोरि कै श्रीमुख माडत रोरी।
ताली हाथ बजाइ कै बोलत हो हो होरी॥
नागरि अति अनुराग सौं मुदित वदन तन हेरै।
सरबस वारै वारने अंचल हरि पर फेरै॥
परस-परम-सुख ऊपज्यौ भयौ तृषित कौ भायौ।
मगन भईं सब सुंदरी रस भीन्यौ हिय आयौ॥
उत अग्रज इत स्याम सौं दुहुनि दिसा रस लीन्हौ।
... ...॥
सूरज-प्रभु-सँग खेलतीं इहिं बिधि गोप-कुमारी।
सब ब्रज छायौ प्रेम सौं सुख-सागर गिरिधारी॥१२९॥

राग नदन

वृंदावन परम सुहावनौ राधा खेलैं फाग बारे कान्हैया।
मोहन बँसिया बजावै नदि जमुना कैं तीर बारे कान्हैया॥
स्रवन सुनत सब धावहीं झोरी भरी अबीर बारे कान्हैया।
उर मोतिनि की माल री पहिरे रातुल चीर बारे कान्हैया॥
ब्रज की वधु सब सुदरी स्रवननि झलकै बीर बारे कान्हैया।
चोवा चदन अरगजा छिरकैं सकल सरीर बारे कान्हैया॥
इक तौ राधा सुदरी दूजैं परी अबीर बारे कान्हैया।
साँकरि खोरिया बिरज की भई चोवा की हील बारे कान्हैया॥

वृंदावन के कुंज मैं भई दोऊ दिसि भीर वारे कान्हैया।
इहिं विधि होरी खेलहीं गावै निसि दिन सूर वारे कान्हैया ॥१३०॥

राग धमारि

(प्यारी) नंदनँदन वृषभानु कुँवरि सौं खेलत रंग ठह्यौ।
उड़त गुलाल कुमकुमा आली अंबर छाइ रह्यौ॥
अलि सुत जुग वरन्यौ वंकट छवि जलसुत अधर लह्यौ॥
खंज मीन मुकताहल मानौ रवि रथ खैंचि रह्यौ।
हँसि मुसुकात सहज स्वारथ कौं रमनिहिं रूप थह्यौ।
दारौं दरनि अरुन अति सोभा मनु ससि ग्रहन गह्यौ॥
गोपी ग्वाल सिमिटि सब सुदर सज्यौ सिंगार नह्यौ।
वरखत कंचन नीर कुसुम जल मनु घन गरजि रह्यौ॥
स्यामा स्याम सबै सुखदाई सुख-सागर सगरौ।
सूरदास-प्रभु मिलौ कृपाकरि जिनि हृदये बिसरौ ॥१३१॥

राग सारंग

हो हो होरी खेलैं रँग सौं व्रजराज-कुवर वृषभानु पौरि।
सुनि मुरली डफ ताल वेनु चढ़ीं अटा अटारिनि दौरि दौरि॥
जो प्यारी न्यारी छवि सौं देखति जलधर कौं छवि अपार।
घन घटा अटा मंद छटकै ह्वै उदित चंद वादर विदार॥
जो प्यारे को हितू हुतीं ते उझकि झरोखैं झाँक वार।
करषैं भौंह भाव भेदनि बहु हरषैं बरखैं रँग अपार॥
इक प्यारी चंदन घसि छिरकै एक लिये कर मैं गुलाल।
इक प्यारी केसरि छिरकति है भनत सूर चलि गति मराल॥१३२॥

राग होरी

आजु हौं होरी हरिहिं खेलाऊँ।
व्रज की खोरि साँकरी घेरौं गारी देहुँ दिवाऊँ॥
चोवा चंदन कुमकुम अरगजा मुठी गुलाल उड़ाऊँ।
अपने अपने घर सौं निकसि लै अबिर झोरि भरि ल्याऊँ॥
सूरदास-प्रभु तुम्हरे मिलन कौं गारी गाइ रिझाऊँ॥
॥१३३॥

राग सारंग

रबि तनया को सलिल गँभीर, आवहु रे मिलि न्हाइये।
इहँ अति स्रमहिं गँवाइ देह को, पुनि अपनें घर जाइये॥
भीजे गात जातही नूतन, तब जसुदा पै जाइये।
लै सबही को स्वाद मनोहर, मीठो होइ सो खाइये॥
ये भूषन ये बसन मनोहर, सादर सूर दिखाइये।
जानत हो हरि बेगि बिदा व्रज, बिमुखनि जाइ चिताइये॥

॥१३४॥

धनुष भंग लीला *राग सकराभरन*

अति चित चंचल जानि लई।
मन भाँवरि करियत नागर पर, रन बस मोल लई॥
परमानंद साँवरे ऊपर, तन मन बिसरि गई॥
राधा स्याम प्रीति उर अंतर, सरवस प्रीति हई।
आवन जान गवन कत कीन्हों, हरि सब भाँति ठई॥
गोपीनाथ प्रान के रस बस, जानी जई दई।
गिरिधरलाल रसिक के ऊपर, कुबिजा वारि गई॥
मान मनाइ लियो साँवरे कों, छन में प्रीति भई।
मानिनि मान करत गोपी हम तुम सब भाँति पई॥
सूरदास चिंतामनि चित धरि, अब किन प्रीति गई।
मेरे मन बच कर्म साँवरे, और न मान मई॥

॥१३५॥

गोपी-विरह

प्रीति बटाऊ सौं कत करिऐ।
हिलि मिलि चले कान्ह परदेसी फिरि पछताए मरिऐ॥
सुनियत कथा स्रवन सीता की, का बिचार अनुसरिऐ।
बिनु अपराध तजै सेवक कौं, ता ठाकुर सौं डरिऐ॥
एक बार बसुदो को ढोटा, बालन गोकुल छरिऐ।
बाल बिनोद जसोदा आगैं, सबहिन को मन हरिऐ॥
जाति पाँति बलि सरबस दीन्हौ, तिनकि पीठि पग धरिऐ।
सूरदास ऐसे लोगनि तैं, पार न क्यौंहू परिऐ॥

॥१३६॥

बिछुरनि जनि काहू सौं होइ।
बिछुरन भयौ राम सीता कौ, क्रम छुत देखे धोइ॥
बिछुरन भयौ मीन अरु जल कौ, तलफि तलफि तन खोइ।
बिछुरन भयौ चकवा अरु चकई, रैनि गँवाई रोइ॥
रुदन करत बैठी वन महियाँ, बात न बूझत कोइ।
सूरदास स्वामी कौ बिछुरन, बनत उपाइ न कोइ॥१३७॥

तब काहे कौं भए उपकारी लिखिलिखि पठवत चीठी।
आपुन जाइ मधुपुरी छाए, हमकौं जोग बसीठी॥
ढाढ़े ऊपर लोन लगावत, हम जु भई मति हीठी।
सूरदास प्रभु विकल विरहिनी, जरि बरि भई अँगीठी॥१३८॥

राग रामकली

मरियत देखिबे की हाँसनि।
जिनि सत कलप पलक सम जाते, अब सो रहीं दुख मैं सनि॥
पलक भरे की ओट न सहतीं, अब लागे दिन जानि।
इतनेंहू पर बिनु साखन घर, घट निकसत नहिं प्रान॥
जदपि मोहिं बहुतै समुझावत, सकुचनि लीजत मान।
अंतहकरन जरत बिनु देखैं, कौन बुझावे आन॥
कुबिजा पै आवन क्यौं पावत, अब तौ परिहै जानि।
लीन बड़ी यहऊ की सब बात पाछिली वे सब गानि॥
आए सूर दिना द्वै तौ कहा, तौ मानियौ समोसो।
कोटि बेर जल औंटि सिरावैं, तऊ कहा पति लोसो॥१३९॥

पावस प्रसंग *राग मलार*

ऐसे मैं सुध्यो न करै, अति निठुराई बरै, उनै उनै घटा देखौ
पावस की आई है।
चहुँ दिसि घोर मोर लागी है मदन रोर, पिक की पुकार उर आर
सी लगाई है॥
दामिनि की दमकनि, बूँदनि की झमकनि, सेज की तलफ कैसैं
जीजियतु माई है।
लागे हैं बिखारे बान, स्याम बिनु जुग जाम, घायल ज्यौं घूमैं
मनौ बिपहर खाई है॥

मिटै न जिय कौ सूल जात है जोबन फूल, घरी घरी पल-पल
बिरह सताई है।
जगत के प्रभु बिनु कल न परति छिनु ऐ रे पापी पिय तोहिं पीर
न पराई है ॥१४०॥

अब मेरे नैननि ही झरि लाई, बालम कान्ह बिदेसी।
तब तौ निबही चाल सनेही, अब निबहै धौं कैसी॥
घर घर सखी हिंडोला भूलैं, गावैं गीत सुदेसी।
हम अधीन ब्याकुल भइ डोलैं, बनी जोगिनी भेषी॥
भरि गईं ताल तलैया सागर, बोलन लागे देसी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौ, को घर सहै अँदेसी ॥१४१॥

सखी री बूँद अचानक लागी।
सोवत हुती मदन मद माती, घन गरजत हौं जागी॥
बोलत मोरवा बरषत धुरवा, राग करत अनुरागी।
सूरदास प्रभु कब रे मिलौगे, हौं हूँ होहुँ सभागी ॥१४२॥

सावन (माई) स्याम बिना कैसैं भरिऐ।
बादर देखि बिथा उपजति है, चतुर कान्ह बिनु मरिऐ॥
काजर तिलक तँबोर तेल सखि, ये सबहीं परिहरिऐ।
सूनी सेज सिंह सम लागति, बिनुहीं पावक जरिऐ॥
आजु सखी उपजति जिय ऐसी, घोष देस परिहरिऐ।
सूरदास प्रभु के मिलिबे कौं, कोटि भाँति जिय धरिऐ ॥१४३॥

राग सारग

गगन सघन गरजत भयौ द्वंद।
पसर्‌यो भूमडल केतकि जुत, मारुत मनु मकरंद॥
पर पथ अपथ भयौ सुनि सजनी कियौ बासव तित खेत।
कोउ न जाइ कान्ह परदेसहिं, दोउ तजि निबह अनेत॥
बिपति बिचारि जानि जदुनदन, दीजै दरस उदार।
सूर स्याम भेंटैं अरु मेटैं, बिरह बिथा भरि भार ॥१४४॥

आजु वन बोलन लागे मोर ।
कारी घटा घुमड़ि बादर की, बरषति है घन घोर ॥
आधी रात कोकिला बोली, बिछुरे, नंद-किसोर ।
पीउ सु रटत पपीहा बैरी, कीन्हौ मन्मथ जोर ॥
दिन प्रति दहत रहत नहिँ कबहूं, हा हा किएँ निहोर ।
सूर स्याम बिनु जियत मूढ़ मन, जिये जाइ सो थोर ॥१४५॥

गोपी-विरह, चंद्रोपालंभ *राग सारंग*

अब हरि हमकौं माई री मिलत नाहिंन नैंकु ।
नित उठि जाइ प्रात लै बन सँग, आगैं पाछैं डग नहिँ एक ॥
बाहाँ जोरी कुसुम चुनत दोउ, मेरे उर लगि इक दिन नख एक ।
रसन दसन धरि भरि लिए सोचन, तोरन लइ सुधर बरषे एक ॥
लावत हृदय खोंचि पूरत पट, फुरुहुरी लेत परिजन रेक ।
अब को ऐसौ है सूरज प्रभु, कौन अधिक जिहिं परिवेष ॥
॥१४६॥

राग सारंग

या गति की माई को जानै ।
पंकज सौं पंकज गहि सींचै, एकौहू न निदानै ॥
सिवि नृप अरु सनकादिक कवि मुनि, येई पर रति मानै ।
करि हारी वह लोभनि सौं, ये रहत जु इकता तानै ॥
वपु विचारि अवगनि इन इन तैं, भाव कुचित यह ठानै ।
सूरदास-प्रभु सिसु लीला मैं, नाना बिरैनि जु बानै ॥
॥१४७॥

जौ कोउ कहै बात सुनाइ ।
तिहिँ छिन ब्रजराज गोकुल, पियहिँ पानी आइ ॥
संग तौ अक्रूर ऊधौ, गए जोग बनाइ ।
निरखि विरह वियोग सब ब्रज, कही तब समुझाइ ॥
स्रवन हूँ नहिँ समुझ आगैं, थके सब गुन गाइ ।
सूर जिहिँ कुल रीति जैसी, सोइ सहज सुभाइ ॥
॥१४८॥

राग गूजरी

कुँवर दोउ वैरागी वैराग ।
पलटति वसन करति निसि चोरी, वपु विलसत भइ जाग ॥
वेसरि वेह मूँदि मृगमद मथि, उर धुकधुकी जु कीनी ।
चलत चरन चित गयो गलित भरि, वेद सलिल भइ भीनी ॥
छूटी भुजबँद फूटि वलय कर, फटी कंचुकी भीनी ।
मनहु प्रेम की परनि परेवा, याही तैं पढि लीनी ॥
अवलोकत इहि भाँति रमारति, जानो अहि मनि छीनी ।
सूरदास-प्रभु कहि न जाइ कछु, हौं जानौं मति हीनी ॥१४८॥

याहे बहुत जो बात चलावैं ।
राजकाज मैं स्याम मनोहर, कृपा करैं तो निकट बुलावैं ।
जादवपति वसुद्यो के वै सुत, नंद-नंदन अव कतहिं कहावे ॥
कुबिजा दासी रस वस कीन्हे, अव कैसें व्रज वनिता भावे ।
अव सुनियै वनमाल लाल गर, मोरमुकुट नहिं देखि सुहावैं ॥
मुक्तामाल मनोहर कुंडल, वनी कांति सोभाहिं जनावैं ।
कत कर वेनु विषान गहैं अव, सुनियत मुरली देखि लजावैं ॥
भए छत्रपति त्रिभुवन नायक, अव वै सुरभी कोन चरावैं ।
चूक परी सेवा न करी कछु, सुमिरत दुख गोपी जन पावैं ॥
सूरदास स्वामी सुखसागर, जाको जस ब्रह्मादिक गावैं ॥
॥१५०॥

पीर न जानी हो निरमोही, अतिहीं निठुर अहीरा ।
हम बावरी बिलोकि वदन छवि, भईं दीप को कीरा ॥
एक दिना हौं सखी सखिन मिलि, गई जमुन जल पानी ।
छल करि आनि वीच भए ठाढे, लिये गगरिया पानी ॥
मैं जानी कोउ घोष पाहुनी, हँसि उर तैं लपटानी ।
लागत हृदै प्रेम उमग्या अलि, हौं दूनो ललचानी ॥
जैसें गरभक सेइ विरानो, कागा रह्यो खिसाइ ।
अपनो जानि मोह मन दीन्हो, रूप बिलोकि पत्याइ ॥
अंत मिले उडि छाँडि गए गोकुल, जूठो माखन खाइ ।
ऐसें कान्ह छाँडि आपनहौं, वोले वन खँड जाइ ॥

जल मैं रहै मिलैपै नाहीं, जथा कमल अरु नीरा ।
तासों प्रीति कौन विधि निबहै, क्यौं आवै मन धीरा ॥
कामी कुटिल क्रूर अपराधी, छिन तातौ छिन सीरा ।
ऊपर मिल्यौ हृदय मैं न्यारो, जैसैं वालम खीरा ॥
जैसैं मधुप कोस रस कारन, आनि वलैया लेइ ।
जित जित फिरै तितहिं तित डोलै, भ्रमि भ्रमि भाँवरि देइ ॥
रस कौं मिले चोप अपनी सौं, यातैं छेद करेइ ।
ऐसैं तूल गोपि सुक ज्यौं, पुनि, भूलै सेमर सेइ ॥
जैसैं व्याल छोड़ि अपनौ वपु, फिरि न विलोकै सोइ ।
टूटौ कै फूटौ कै विनसौ, सदा जात पै खोइ ॥
सो गति स्याम हमारी कीन्हीं, दिन दस लाड़ लड़ाए ।
वारक आनि दिखाई दीन्हीं, गारी मूड़ चढ़ाए ॥
प्रीति की रीति परेवा जानै, मन लै उड़ै अकासा ।
पंख पसारि दसहुँ दिसि धावै, ऊरध लेत उसासा ॥
गिरत न करत सँभार देह की, प्रान परेई पासा ।
सूर सुरति लागी जु प्रीति वस, सब तैं भयौ निरासा ॥
नैसुक धरे मुरलिया कर मैं, मोहे सबके प्राना ।
तऊ न भए आपने सजनी, कपटी कान्ह निदाना ॥
॥ १५१ ॥

या ब्रज तैं द्रव-रितु न गई ।
ग्रीषम प्रगट सखी री गोकुल, हरि बिनु अधिक भई ॥
बिरह अगिनि अँग अंग सबनि कैं, ग्रीषम प्रबल समान ।
नैन नीर उर बहत रैन दिन, पावस कौ जु प्रमान ॥
जा दिन तैं बिछुरे नँदनंदन, बाढ़ी है तन ताप ।
सूर स्याम बिनु तपति रैन दिन, अवधि धरैं उर छाप ॥
॥ १५२ ॥

येई हैं जग जीवन माधौ । देवकि मन मन आनँद लाधौ ॥
कंस मारि पितु बंदि छुड़ाए । उग्रसेन सिर छत्र धराए ॥
जननी दरस करन हरि आए । माइ अनँद पकवान मँगाए ॥
ग्वाल सकल सँग बल बनवारी । नंद सहित पंगत बैठारी ॥
उज्ज्वल थार झारि बहुधारी । परसन आप उठीं महतारी ॥

पापर, पूरी, पेरा-फेनी। माठ मुरकुनी दही दहेनी ॥
लौंग कपूर खाँड़ घृत धारे। अंदरसे खटमिठे सिंघारे॥
निबुआ लोन तेल तर सूजी। राइ करौंदा अंब कलौंजी॥
सूरठि मीठी मठ जिरवानी। दूध भात बहु परुसन आनी॥
अगनित स्वाद परत नहिं चीन्ही। चूक परत हरि गारि न दीन्ही॥
क्रीड़ावंत सखिनि कछु राग्यौ। पान दमाल दूसरौ माँग्यौ॥
मेवा आनि धरे भरि थारी। दाख चिरौंजी गरी छुहारी॥
ताजे पान धरे तिहिं तीरा। दिव्य सुगंध सहित बहु बीरा॥
परम मान विनती अनुसारी। हौं बलि चरन कमल पर वारी॥
भोजन अंत आचमन कीन्हौ। सूरजदास दीन जन चीन्हौ॥
दै प्रसाद यौं कह्यौ मुरारी। गऊ भक्त हरि सरन तुम्हारी॥
॥ १५३ ॥

नैना मेरे तलफि तलफि भए राते।

खग मृग मीन परे पद पिंजरनि, न तरु मधुवन उड़ि जाते॥
करि सुनि सुरति स्याम सुंदर की, उमँगि चले धुरवा ते।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे मिलन कौं, बरषत हैं बरषा से॥१५४॥

नंद नँदन मधुपुरी बिरमि रहे, कटहिं न माइ ये दिन बिकट।
असन बसन की स्याम सुध्यौ गइ, सीस मँजन बिनु चिकुर चिकट॥
देतिं सँदेसौ पंथ निहारतिं, सगुन बिचारतिं बँबी लिकट।
सूरदास प्रभु बेगि मिलौ जू, बोलि लेहु कै आवौ निकट॥१५५॥

तुम्हरी बलैया लागौं नागर।

पहिली रीति भाँति गोकुल की, लिखिहु न पठवत कागर॥
अवनि लोक त्रैलोक जानियत, सुनियत हौ सुख-सागर।
आपुन गुप्त ओट ह्वै रहिऐ, हम छाँड़ी ज्यौं बागर॥
पति पितु मातु सकल वधू जन, सब तजि हम भईं दागर।
सूरज स्याम तृषा न बुझाई, हा ब्रज रीती छागर॥१५६॥

मेरे मन मैं वे गुन गड़े।

तब जु कलोल कियौ कानन मैं, बहु विधि लाड़ लड़े॥

कबहूँ पिय दधि दान लागि कै, झगड़ौ कठिन मड़े।
कहत जु स्याम बाल लीला मैं, बचन कठोर घड़े॥
अब वे बोल ह्वै रहे नाटसल, पुनि पुनि हिए अड़े।
सूरजदास उपाव कौन जो, हरि चुंबक बिछुड़े॥१५७॥

पपीहा माई बोलि, बान भरि मारी।
बिसरी सुरति दिवाइ स्याम की, चमकि उठी निसि कारी॥
तुम बिछुरे घन स्याम मनोहर, कौन करै रखवारी।
तन भयो लंक, विरह भयौ बनचर, इहिँ वियोग हम जारी॥
दादुर मोर कोकिला चातक, ये जीते हम हारी।
कहि अब सूर होत कब आवन, बैठि विरछ की छाँ री॥१५८॥

उद्धव-ब्रज-आगमन *राग सारंग*

ऊधौ कहियौ जाइ राधिकहिँ, तुम इतनी सी बात।
आवन दए कहौ काहे कौँ, फिरि पाछैँ पछितात॥
अब दुख मानि कहा धौँ करिहौ, हाथ रहैगी गारि।
हमैँ तुम्हैँ अंतर है जेतौ, जानत हैँ बनवारि॥
ये तौ मधुप सब रस भोगी, तहाँ जहाँ रस नीकौ।
जो रस खाइ स्वाद करि छाँड़े, सो रस लागत फीकौ॥
इक कूबर हरि हर्‌यौ हमारौ, जगत माँझ जस लीन्हौ।
ताकौ कहा निहोरौ हमकौ, मैँ त्रिभंग करि दीन्हौ॥
तुम सब नारि गँवार अहीरी, कहा चातुरी जानौ।
राखि न सकीँ आपु बस कै तन, अब काहेँ दुख मानौ॥
सूरदास प्रभु की ये बातैँ, ब्रह्म लखै नहिँ पारै।
जाके चरन पाइ कै कमला, गति आपनी बिसारै॥
॥१५९॥

गोपी-वचन

सखी मैँ सुनी बात इक आज।
पाती लै आए हैँ ऊधौ, पठई है ब्रजराज॥
तजि तजि भोग जोग आराधौ, यहै लिख्यौ है मूल।
सही न जाति सुनत मरियत हैँ, उठत करेजे सूल॥

जप तप नेम धरम औ संजम, बिधवा को व्यौहार।
जुग जुग जियौ हमारे सिर पर, जसुदा नंदकुमार॥
खसम अछत तन भसम लगावैं, कहौ कहाँ की रीति।
तुम तौ चतुर सकल विधि ऊधौ, वे तौ करत अनीति॥
हमरे जोग नंदनंदन व्रत, निसि दिन उन गुन गावति।
सूरदास प्रभु खोरि तुम्हैं नहिं, कुबिजा नाच नचावति॥
॥१६०॥

भ्रमर-गीत

मधुकर निपट हीन मन उचटे।
सूँघत फिरत सकल कुसुमनि कौं, कहूँ न रीझि कटे॥
जे कवि कहत कंज रति मानत, ते सब भ्रमहिं रटे।
अलक, तिलक, दृग, भौंह पलक की उपमा तैं न हटे॥
सर सूखे तूखे पराग रस, कमलनि पर प्रगटे।
झूठैं हूँ नहिं उझकत झझकत, तब वै छेद जटे॥
जुगति जोग सब्दहिं की बोलत, बहुतै भरम भटे।
सूर कहा कहियत ताकी गति, चुरई भले पटे॥
॥१६१॥

ऊधौ हम लगीं साँच के पाछे।
मदन गोपाल चतुर चिंतामनि, गोप वेष वपु काछे॥
साँचौ ज्ञान ध्यान पुनि साँचौ, साँचौ जोग उपाई।
हमकौं साँचे नदनंदन हैं, गर्ग कह्यौ समुझाई॥
जुवती जाति मोह कौ भाजन, सदा काम अभिलाषी।
ते करील फल क्यौं चाखत हैं, जिन चाखी रस दाखी॥
ओसनि प्यास जात कहि कैसैं, जब लगि जल नहिं पीजै।
सूरदास को ठाकुर कान्हा, प्रगट मिलै तौ जीजै॥
॥१६२॥

राग सारंग

इहिं ब्रज सरगुन दीप प्रकास्यौ।
सुनि ऊधौ त्रिकुटी त्रिवेद पर, निसि दिन प्रगट अभास्यौ॥
सबके उर सर वास नेह भरि, सुमन तिली कौ बास्यौ।
गुन अनेक ते गुनि कपूर सम, परिमल बारह मास्यौ॥

बिरह अगिनि अंगनि सब कैं, नहिं बुझति परे चौमास्यौ ॥
साधन भोग निरंजन तेरे, अंधकार तम नास्यौ ।
वा दिन भयौ तिहारौ आवन, बोलत हौ उपहास्यौ ॥
रहि न सके तुम सींक रूप ह्वै, निरगुन काज उकास्यौ ।
बाढ़ी जोति सुकेस देस लौं, टूट्यौ ज्ञान मवास्यो ॥
दुर्वासना सलभ सब जारे जे, छै रह्यौ अकास्यौ ।
तुम तौ बिटप निकट के बासी, सुनियत हुते खवास्यौ ॥
गोकुल कछु रस रीति न जानत, देखत नहीं तमास्यौ ।
सूर करम कौ खीर परोस्यौ, फिर-फिरि चरन जवास्यौ ॥१६३॥

ब्रज तौ नीकी जीवन जीयौ ।
जिहिं रस मुनि जन सींक न बोरी, सो ब्रज नारिन पीयौ ॥
तिन हिन घास बिधाता कीन्हौ, है सरबस हरि केरौ ।
अब कोउ नीर पियौ वसुधा मैं, जूठौ चातक केरौ ॥
अब कोउ फूल धरौ वसुधा मैं, भ्रमर प्रथम रस लीन्हौ ।
सूरदास प्रभु कहा भयौ जौ, हरि नहिं आवन कीन्हौ ॥१६४॥

हरि बिनु लोचन मरत पियास ।
वृंदावन मैं गाइ चरावत, तोरत पात पलास ॥
जाइ सँदेस कहौ उन आगैं, काहैं कीन्ह बिसास ।
चितवत पंथ बहुत दिन बीते, अब मन होत उदास ॥
चकई ज्यौं तन मन बिरमावतिं, अवधि भानु की आस ।
सूरदास प्रभु आनि मिलावहु, मोहन मदन-बिलास ॥१६५॥

मधुकर की संगति तैं जनियत, वंस तेन चितयौ ।
कह पूछति बिनु समुझे सुंदरि, सोइ मुख कमल गह्यौ ॥
ब्याध नाद कह जानै हिरनी, कर सायल की नारि ।
आलापहु गावहु कै नाचहु, दावँ परै लै मारि ॥
जुवा कियौ ब्रज मंडल यह हरि, जीति अवधि लौं खेलि ।
[illegible]थ परयौ सु गयौ चपल तिय, कहा सदन मैं हेलि ॥
[illegible]नि सतकर्म कियौ मातुल वधि, मदिरा मदन प्रमाद ।
[illegible]र स्याम एते औगुन मैं, निरगुन तैं अति स्वाद ॥१६६॥

दिन ही दिन गोपिनि तन छीन ।
सुनहु हिम रितु विरह प्रभु कैं, कमलिनी ज्यौं दीन ॥
जोग कथा सँदेस दिनकर-किरनि हरि हरि लीन ।
अवधि पंक समेत सूखी, सुनहु पाइ कलीन ॥
हम विवाद सिवार उरझीं, प्रेम साहस कीन ।
रूप भँवर सिँगार तजि कै, दुखहिं सदा मलीन ॥
चरन पकरि पुकारि विनती, करतिं स्याम अधीन ।
सूर सावन वरषि कै व्रज, ज्याइयै परवीन ॥१६७॥

ऊधौ को तुम्हरे कहैं लागै
कहा करैं काकैं मति एती, जोग साधि तन आगै ॥
हम बिरहिनि बिरहा की जारी, जारे ऊपर दागै ।
राज करै यह ज्ञान तुम्हारौ, मुक्ति को तुम सौं माँगै ॥
वह सूरति मन गड़ी हमारैं टरति न सोवत जागैं ।
वारक मिलैं सूर के प्रभु तौ, मन हमरे अनुरागैं ॥
॥१६८॥

ऊधौ कत हम हरि विसराई ।
सुमिरि सुमिरि गुन जपतिं स्याम के, नैन सजल भरि आईं ॥
एक दिवस वृंदावन भीतर, रति पति प्रीत बढ़ाई ।
जमुना हेरि बुलाइ स्याम घन, अंबर रचि पहिराई ॥
दस नख अधरनि धरि मुख अंबुज, पाइँ जु पकरि मनाई ।
सूरदास-प्रभु दीन दयानिधि देहु दरस मन भाई ॥
॥१६९॥

(ऊधौ) हरि कुबिजा के मीत भए ।
जे जे सुख कीन्हे उन हम सँग, ते सब भूलि गए ॥
सुमिरि सुमिरि गुन ग्राम स्याम के, बहु दुख होत नए ।
अवधि आस सोचत दिन बीतत, विरह सर निसि हए ॥
बूड़त छाँडि विरह घन महियाँ, मधुबन जाइ छए ।
ऐसे भाग हमारे सजनी, कतहिं छीनि लए ॥

हम अनजान हीन मति भोरी, कत उन ज्ञान दए।
अब कह होत सोच किएँ सूरज, कठिन वियोग ठए॥

॥१७०॥

ऊधौ बनि आए की बात।
अब न बने हमसौं कुबिजा सौं, काहैं आवत जात॥
वह बंसी वट, वह जमुना तट, वे पलास के पात।
सूर स्याम हमरे ब्रजबासहिं, मानत नात लजात॥

॥१७१॥

ऊधौ हरि रीझे धौं काहैं।
इक चेरी अरु सुनतिं कूबरी, बाँधे मोर पछाहैं॥
कुटिल कुरूप मध्य तिरबंकी, सोवै नाहिं उतानी।
सुनि सुनि सोभा हँसत लोग सब, भली स्याम मन मानी॥
जो कछु रिद्धि सिद्धि कूबर मैं, हमहूँ कहि न पठावैं।
चलैं चाल हमहूँ बनि टेढ़ी, कूबर कनक बनावैं॥
जो हरि कहैं करैं हम सोई, लोक लाज सब छोड़ी।
सूरदास प्रभु रहैं हमारैं, कुबिजा तजैं निगोड़ी॥

॥१७२॥

बढ़ौ जस ऐसे काज करे तैं।
सो ऊधौ काहे नासत हैं थोरी बात बुरे तैं॥
तृनावर्त केसी धेनुक बक, अघासुर चकी लरे तैं।
इंद्र मान मलि गोकुल उबर्यौ, गिरिवर पानि धरे तैं॥
जमुना तैं काली काढ़यौ हरि, राखे ग्वाल मरे तैं।
ऐसैं ही जब जतन कियो है, बिधि बछ बाल हरे तैं॥
कंसराज चानूर कुबलया, जग जस इन्हैं दरे तैं।
भयौ जस विमल मलीन सूर प्रभु, दासी अंक भरे तैं॥

॥१७३॥

मधुकर आवत मन पछितायौ।
चेरी सुनी कंस की कुबिजा, करति सौति कौ दायौ॥

चंदन घसि लै चली नृपति को, मारग मैं हरि पायौ।
अब क्यौं कृष्न परखिहैं हमकौं, पढ़ि टोना सिर नायौ॥
हौं निसि बासर पूजति तुमकौं, चदन तुम्हें चढ़ाऊँ।
बैरी मित्र बसत हिरदै मैं, तातें तुम्हैं लगाऊँ॥
तीनि ठौर तैं टेढ़ी कुबिजा, परसि सुंदरी कीन्ही।
ठाकुर ह्वै दासी तन परस्यौ, सुधि बुधि मति हरि लीन्ही॥
लज्जा मान देखि जुवती कौं, कृष्न कटाच्छन हेरे।
कुबिजा उलटि पीत पट पकरयौ, चलौ निकट घर मेरे॥
यह हम सुनी देखि मिलि दोऊ, मोहन मुरि मुसकाने।
ता दिन तै गोपिनि तजि कान्हा, कुबिजा हाथ बिकाने॥
जीवै लाख करोरनि कुबिजा, कलियुग चलै कहानी।
ज्यौं अँधरनि मैं कानौ राजा, त्यौं कुब्जा पटरानी॥
हमरैं दृढ़ ब्रत नंदनँदन सौं, निरगुन सरौ न जानैं।
परौ छठी मैं छार सूर प्रभु तजिकै आनहिं मानैं॥
॥१७४॥

हमतौ निसि दिन हरि गुन गावैं।
लाल कृपाल कृपा सुख उपजै, जैसैं तुमकौं पावैं।
जो प्रभु तुम्हैं चोप चंदन की, हमहूँ घसि लै आवैं॥
टेढ़ी चाल चलत सुख मानत, टेढ़ैं चलि दिखरावैं।
और अनेक उपाय करैं हम, जे जे तुमकौं भावैं।
जौ पै सूर कूबरहि रीझे, आजु कहाँ तैं पावैं॥
॥१७५॥

ऊधौ कब हरि आवैंगे, साँची कहौ न बात।
वे तौ रीझे सँग कुबिजा के, कुटिल कुटिल दोउ गात॥
निसि सब बीतति गिनतहिं उडुगन, वृथा होत परभात।
छिन आँगन छिन गृह बन मधुकर, मग जोवत दिन जात॥
कठिन बान बेध्यौ तन मन मैं, बिरह बधिक कियौ घात।
करकत घाव बिकल ब्रज बनिता, उन बिनु कछु न सुहात॥
बालापन की प्रीति पुरातन, क्यौं मोहन बिसरात।
राजा ह्वै कुबिजा सँग माते, आवत ब्रजहिं लजात॥

कहियत हैं अधीन दासी के, यहै सुनत अनखात।
सूर सुमिरि गुन ग्राम स्याम के, निसि दिन नहीं बिहात ॥

॥१७६॥

(ऊधौ) बात कहौ हरि आवन की।
अवधि बदी सो बीत गई है, और सुनी उत छावन की ॥
कहँ लगि बिथा कहौं सुनि मधुकर, निठुराई मन भावन की।
ा जानियै कहाँ तैं सीखी, छतियाँ बिरह जरावन की ॥
ासि दिन नैननि नीर बहत है, जैसैं नदिया सावन की।
दास प्रभु सौं अलि कहियौ, बानि खरी तरसावन की ॥

॥१७७॥

मधुकर कहियत चतुर सुजान।
ार बार यह जोग सब्द की हम पर टूटति तान ॥
है सब्द संदीपन पाँड़े, रचि करि बहु सुख पायौ।
है सब्द उनके मुख सुनि कै, भेंट इहाँ लै आयौ ॥
भसम भेस उपदेस कह्यौ तुम, सो हमसौं नहिं होइ।
मंत्र हीन नागिनि क्यौं पकरैं, सो कहि कैसैं कोइ ॥
फूलि-फूलि कै कूर भ्रमत मति, निजु निरवार्‌यौ ज्ञान।
सूरदास ते घर क्यौं बसिहैं, जिनके तुम परधान ॥

॥१७८॥

मधुकर लागत हौ सुठि भारे।
अलक कलीन कोक रस पीवत, उडुपति जैसे तारे ॥
जो तुम पथिक दूर के बासी, गुंजत गुंजत हारे।
बारह मध्य अलक उर अंतर, आदि अंत लौं कारे ॥
मधि मूरति सूरति जिय भावत, बिरचे लै दुख भारे।
सूरदास-प्रभु बिरह कपट हथ, अंत ह्वै गए न्यारे ॥

॥१७९॥

राग आसावरी

ऊधौ हरि जू हित जमाइ, चित चुराइ लीयौ।
चपल नयन उन चलाइ, अंग राग दीयौ ॥

परम साधु सखा सुजन, जदुकुल के मान।
कहौं बात प्रात एक, साँची जिय जानि॥
सरद सुभग बारिज दृग, भौंहैं ज्यौं कमान।
क्यौं जीवहिं बेधे उर, लगे विषम बान॥
मोहन मधुपुरी बसे, पठयौ ब्रज सँदेस।
क्यौं न काँपी मेदिनी, जुवतिनि उपदेस॥
तुम सयाने स्याम के, देखौ जिय विचारि।
प्रीतम पति नृपति भए, जोग गहैं नारि॥
कोमल कर मधुर मुरलि, अधर धरे तान।
परस सुधा पूरि रही, कहु सुनें ऽब कान॥
मृगीऽरु मृग विलोचनी, उभय एक प्रकार।
नाद बैन विषम तैं न जान्यौ मारनहार॥
गोधन तजि गमन कियौ, लियौ विरद गुपाल।
नीकैं करि कहिबी यह, भली निगम चाल॥
सूर सुमति सुंदरी, कुम्हिलाने मुख सरोज।
सहि न सके स्याम जु, उर चाँपि लई उरोज॥

॥१८०॥

याम रंग पर तर्क — राग सारंग

मधुकर सुनौ ज्ञान कौ ज्ञान।
जौ पै है घट ही घट ब्यापक, पाछैं कहा विनान॥
वसत सदा तुव घट हिरदै मैं, प्रगट संग जिहि खायौ।
सोइ सगुन सुख छाँड़ि तुमहिं भ्रम, अध कूप दिखरायौ॥
तिनहिं तत्व मिलि कारन बिनु ही, वदत जोग बहु मूढ़।
हरि-पद परसि समर चितवत हैं, कोपि मरै आरुढ़॥
पूरक रेचक कुंभक कारन, करत महा दुख मारी।
इडा पिंगला गंगा जमुना, सुषमन निरपद नारी॥
हृदय कमल परगास गुप्त सो, सुख सु कमल परगासी।
सो सर सूर बतावत औरै, कैसे धा तम नासी॥

॥१८१॥

सबहीं विधि सब बात अटपटी कहत सयाने की सी।
अंग अंग प्रति स्याम विराजत ज्यौं जल नाई सीसी॥

तुमहूँ कहत हमारे हित की, वैद रोग जौ पावै।
बिनु जाने उपचार करै तौ, अधिकौ विथा जनावै॥
अपनी पीर समुझि तुम देखौ, तजै पुहुप रस वेलि।
सूर कहौ सुख क्यौं बिसरत है, करी सरस रस केलि॥
॥१८२॥

कान्ह कही सो तौ नहिं ह्वैहै।
किधौं नई सिखई सीखे हरि, निज अनुराग बिछोहै॥
संचित करै पेट मैं राखै, वे बातैं बिकचोहै।
स्याम सु गाहक पाइ सयाने, छोरि दिखाये सोहै॥
सोभा निधि सागर नागर मन, जग जुवती हठि मोहै।
लिये रूप गुन ज्ञान गठरिया, पहिलैं ठग्यौ ठग ओहै॥
ये निरगुन सर मारि कमल घर, चाहै करै अयौ है।
सूरदास नागर नारि निकट, जिन्हैं आज सब मोहै॥
॥१८३॥

मधुकर कहा बोलत साखि।
जोग वैन निवारि अलि अति सरस हरि रस भाखि॥
उभय तन कालिमा, तू सब अटपटी धरि राखि।
कहे सब्द सु बास कहा नहि, अतिहि अमृत चाखि॥
सोभि है का कुंभ खंडित, दियौ कानौ लाखि।
सिधि करौ तुम सूर प्रभु, भृत इन सँदेसनि काखि॥
॥१८४॥

मधुकर भए देवैया जी के।
पूछति पा लागौं सब बिरहिनि, नंदकुँवर अति नीके॥
कहि धौं संकर्पन की बातैं, बोलौ बचन अमी के।
कहु कैसे वसुदेव देवकी, बरत दीवला घी के॥
कंस मारि मथि मल्ल कौन विधि, दाता उपकारी के।
उग्रसेन कौ नगर आनि कै, राज काज करि टीके॥
कोटि बरप सुख राज करैं वे, ब्रज जन दिन दिन फीके।
हाँसी नहीं सूर साँची कहि, समाचार कुब्री के॥
॥१८५॥

राग केदारौ

स्याम हौं निजु कै बिसारी ।
मारग चितवत सगुन मनावत, काग उड़ावत हारी ॥
ना जानौ सखि कौन हेत तैं, ब्याप्यौ यह दुख भारी ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, काम बिखम सर मारी ॥
॥१८६॥

ऊधो कपट रूप के मूल ।
हमकौं आए जोग सिखावन, कहा जोग कौ सूल ॥
स्याम बिसासी कै सँग तुमहू, ह्वै गई भूल ।
हम तौ डारी बिरह जुर, अब धौं कहाँ लगावैं धूल ॥
जोग जाइ तिनहीं किन सिखवहु, रहत स्याम कैं कूल ।
निसि दिन करत बिलास मधुप सँग, ज्यौं बेली तरु फूल ॥
जाइ कहौ उन कुँवर लाड़िलै, प्रेम-कथा निसि तूल ।
सूरदास हरि बिनु को काढ़ै, अनरगति की सूल ॥
॥१८७॥

वै हरि कठिन कठिन हौ ऊधौ, तुम्हैं कह्यौ नहिं चहियै ।
जिनसौं भेंट करी रस रासनि, तिनकौं जोग पढ़ैयै ॥
जिनसौं बचन रसिक रस बोलत, तिनसौं कटुक बखानत ।
तुम नीकैं कै बेई ऊधौ, और न कोऊ जानत ॥
जिन कानन कचन के भूषन, जरि जराय पहिरावत ।
अब तिन कानन मुद्रा मोहन, तुम्हरैं हाथ पठावत ॥
जिन अंगनि चंदन लपटैयत, करियत अग सुहाए ।
तिनकौं छार मधुप सुनि गोबिंद, तुम्हरे हाथ पठाए ॥
जिहिं सिर डारि फुलेल चप जल, मलि मलि आप न्हवावैं ।
तिहिं सिर कौं तुम सौं कहि पठयौ, मधुकर जटा बनावैं ॥
सोभित चीर दच्छिनी जिहिं अँग, भगुए तिन्हैं रँगावैं ।
तुम मधुकर बानत सुखकारी, जे पाटबर लावैं ॥
कहा जु रारि जोग की तुम सौं, बिगत बिगत पुनि कहिऐ ।
सूरदास कुबिजा सौं रचि पचि, मधुकर मधुबन रहिऐ ॥
॥१८८॥

ऊधौ देखौ यह गति मोर ।
सुधि बुधि चिंता सबै हिरानी, निरखि स्याम की ओर ॥
नैन प्रान मेरे हरि सौं लागे, ज्यौं निसि चंद चकोर ।
बिनु दरसन अब कल न परति है, मारत मदन मरोर ॥
प्रीति के बान लगे मन मोहन, निकसि गए हिय फोर ।
औषधि करत घाव नहिं पूजत, बिनु वा नंदकिसोर ॥
गरजत गगन चहूँ दिसि धावत, स्याम घटा घन घोर ।
ता ऊपर बिरहिनि मारन कौं, कुहुकि उठत है मोर ॥
कुहुकि कुहुकि कोकिल अब जारति, अरु दादुर दल सोर ।
क्यौं जीवैं बिरहिनि ब्रज बनिता, बिरह बिथा अति जोर ॥
जैसैं मीन परत बस बंसी, मदन करत झकझोर ।
भईं अधीन छीन तन व्याकुल, तलफतिं ब्रज की खोर ॥
आवन अवधि आस जो दै गए, मग जोवतिं उठि भोर ।
सूरदास अबला बिनवति हैं, ल्यावहु स्याम निहोर ॥
॥१८९॥

राग ईमन कल्यान

छार भूमि जोगी तन, निरगुन तहँ बीजै ।
बहुत जतन पायौ तुम, ब्रज बेएँ नहि छीजै ॥
आल बाल बाघांबर, नैन मूँदि सींचै ।
मुरली बस मानस ह्याँ, को मृग नैन मीचै ॥
रूखी चट लकुट टेकि, मौन बंध दीजै ।
सगबगे सनेह इहाँ, उन बिनु नहिं जीजै ॥
उपजी जब दंपति, बासना घाम बाँचै ।
इहाँ रास स्याम संग, अंग अंग नाचै ॥
मौन फूल बारे फल, देह किए पावै ।
सूर स्याम चुटकिनि फल, धाइ कंठ लावै ॥
॥१९०॥

राग गौरी

सखा तिहारे हितू हमारे ।
तब गोरस माखन मुख देते, सुख-कारन हे प्यारे ॥

बपु पोष्यौ बल जानि धर्‍यौ गिरि, बहुत भए जिय तारे।
अब नृप जीति असुर मधुबन सुनि, आइ बचन किलकारे॥
तेरैं हाथ कहा कहि पठई, मिलि दासी भए कारे।
सूर बिधाता जानि किए इक, वै दासो वै कारे॥
॥१६१॥

राग बिलावल

हरि कित भए ब्रज के चोर।
तुम्हरे मधुप वियोग उनके मदन की झकझोर॥
इक कमल पर धरे गज रिपु, एक ससि रिपु जोर।
दोउ कमल इक कमल ऊपर, जगी इक टक भोर॥
एक सखि मिलि हँसति पूछति, खैंचि कर की कोर।
तजि सुभाइ सुभखत नाहीं, निरखि उनकी ओर॥
बिरस रासिनि सुरति करि करि, नैन बहु जल तोर।
तीन त्रिवली मनो सरिता, मिलीं सागर छोर॥
षट् कध अधरनि माल ऊपर, अजा रिपु की घोर।
सूर अबलनि मरत ज्यावौ, मिलौ नंदकिसोर॥
॥१९२॥

जौ पै मोहिं कान्ह जिय भावै।
तौ सुनि मधुप जसोदा नंदन, काहे कौ गोकुल आवै॥
किन प्रभु गोप बेप ब्रज धरिकै, कब बन रास बनावै।
जौ पूरविलौ प्रेम निरंतर, अंतर कौन बढ़ावै॥
यह कछु और कह्यौ चाहत ते, और कछू बनि आवै।
सूर कौन यह प्रगट करै अब, भले जु उनकौ भावै॥
॥१९३॥

जौ पै कान्ह और गति आनी।
तौ कत सुनैं बात अलि तेरी, हिऐं नहीं ठहरानी॥
सुरति होत मोहन मूरति की, हुते घोष इक चद।
अब कुबिजा बदरी तर काँपै, मिति न बिरह नँदनद॥
बिनु दरसन कुमुदिनि बिरहिनि अब, क्यौं जीहैं रस रीति।
काहू जुग नहिं सुनी उभय मन, एक सूर रस रीति॥
॥१९४॥

राग गौरी

सागर के धोखैं हरि नागर, उर बेकाज मथ्यौ।
इतनैं हू पर कहा न चितवत, क्यौं दुख जात सह्यौ॥
मदर मैन प्रेम अहि जल मनु, अमर असुर अहिगात।
विभ्रम भए मथन हिय लागे, नाहीं ऊधौ बात॥
मुख छवि ससि अरु चंचलता हय दृग, बचन सुधा गज गौन।
वैद मिलन, जोवन मद सुरभी, सील मोद तरु जौन॥
लछमी गुन, रंभा दुति, भ्रू धनु, मनि भूपन है आनी।
ग्रीव संख, बँसुरी मुख रूठी, भई सबै विप सानी॥
जतन जतन करि हरि जु मथे सब, रहे नहीं कछु तन मैं।
मथौ नहीं किहिं काज सूर प्रभु, कहा बसी अब मन मैं॥
॥१९५॥

राग सोरठ

सुनि मधुप कौन कौ काज कौन पायौ।
राज रिपु चमू धसि पैठि जन पद लियौ, जीति बिनु कपट दुंदुभि बजायौ।
सुभट के सुभट रन जीत रन विवस भए, फिरे नृप दसहुँ दिसि दव लगायौ॥
ऐसी करुना किये लेत बिच राखि कै, सत्त मुख सेन सजि सचिव धायौ॥
बली बल साजि वाजित्र बहु बाजहीं, कहा करैं ईस पगु न ठहरायौ॥
नवल बय वेप सम सील गुन रूप सम, गवन कौ हेत कछु मन सुनायौ।
इतै जैसौ कपट तितहुँ तैसौ कपट, सो कहत नाथ सौं क्यौं बसायौ॥
सूर संयोग रसधर्म के हेत जौ, प्रीति के हेत तिन तन बनायौ॥
॥१९६॥

तुम बिनु हम अनाथ ब्रजवासी।
इवौ सँदेसौ कहियौ ऊधौ, कमलनयन बिनु त्रासी॥

जा दिन तैं तुम हमसौं बिछुरे, भूख नींद सब नासी।
बिह्वल बिकल कलहुँ न परत तन, ज्यौं जल मीन निकासी॥
गोपी ग्वाल बाल बृंदावन, खग मृग फिरत उदासी।
सबही प्रान तज्यौ चाहत हैं, को करवत को कासी॥
अंचल छोरि करतिं मिलिबे की, बिनती ये सब दासी।
हमारो प्रानघात ह्वै निबरै, तुम्हरे जानैं हाँसी॥
मधुकर कुसुम न तजत सखी री, छाँडि सकल अबिनासी।
सूर स्याम बिनु यह तन सूनो, ससि बिनु रैनि उदासी॥

॥१९७॥

राधा भई सयानी माधौ।
अब फिर कृपा करहु गोकुल पर, मिटी मान की साधौ॥
चातक काक कुरग, भृग, पिक, तब देखे अनखाती।
अब तिन हँसि हँसि पूछति है बलि, चरन कमल कुसलाती॥
ललिता आदिक आवत देखतिहीं, दौरि अटा चढ़ि जाती।
अब तिनसौं मिलि सखी सखी कहि, रोइ कंठ लपटाती॥
बाला बिरह जानि नँद-नदन, सुमिरि-सुमिरि पछिताती।
सूरदास सरबस हरि लीन्हौ, टूटि बेलि जनु पाती॥

॥१९८॥

राग केदारौ

ऊधौ एक मेरी बात।
बूझियौ हरवाइ हरि सौं, प्रथम कहि कुसलात।
तुम जु यह उपदेस पठयौ, आनि जो मन ज्ञान।
सत्यहू सब बचन झूठौ, मानियै मन न्यान॥
और ब्रज कहि दूसरौ हू, सुन्यौ कहँ बलबीर।
जाहि बरजन ह्यॉं पठायौ, करि हमारी पीर॥
आपु जब तैं गए मथुरा, कहत तुमसौं लोग।
सहज ही ता दिवस तैं हम, भूलियौ भव भोग॥
प्रगट पति पितु मातु प्रिय जन, प्रान तुव आधीन।
ज्यौं चकोरहिं सँग चकोरी, चित्त चदहिं लीन॥
रूप रस न सुगध परसन, रुचि न इंद्रिनि आन।
होत हौंस न ताहि बिष की, कियौ जिन मधु पान॥

ह्वै गयौ मन आपुही वस, गनत गुन गन ईस।
ज्ञान है कि अज्ञान अलि, तृन तोरि दीजै सीस॥
वहुत कहियै कहा केसौ राय, परम प्रवीन।
सूर सुमत न छाड़िहैं जहँ, जियत जल विनु मीन॥१९९॥

ऊधौ वहुरौ ह्वैहै रास।
नंद-नँदन सौं ऐसी कहियै, तुम जु रहत उन पास॥
सरद रास जव वेनु वजायौ, थकित चंद्र आयास।
एते दिवस जात किन जाने, वीतन लागे मास॥
सूरदास-प्रभु अवधि वदि गए, वह दरसन की आस।
मोहन विन इहिं धिक जीवन कौं, अजौं रहत घट स्वास॥
लाल कल्यान वेगि व्रज आवहु, सावन भादौं ए दोउ मास।
वहुरौ तौ मधुवनहिं जाइऐ, जव कुआँर फूलहिंगे कास॥
कृपा करहु तौ सरदहुँ रहिऐ, जल उज्ज्वल औ अमल अकास।
सूरदास प्रभु यहै चाँदनी, वेनु वजाइ खेलिवौ रास॥२००॥

यशोदा जी का संदेश

मोहन अपनी घेरि लै गइयाँ।
विडरी जातिं फिरतिं नहिं फेरी, डोलति हैं वन महियाँ॥
ग्वाल वाल जितनक फिरि फेरत, नहिं पत्यातिं वे सइयाँ।
तनिक मुरलि की टेर सुनावहु सवै परति हैं पइयाँ॥
वूड़ति विरह सिंधु सव अवला, औधि आस पर थहियाँ।
सूर स्याम सौं जाइ कहौ कोउ, लै निकासि गहि वहियाँ॥२०१॥

उद्धव प्रत्यागमन *राग सारंग*

विरही कैसें जिऐं विचारे।
ज्यौं घायल गहि फिरि-फिरि वूझत, काम वान के मारे॥
नाहिंन नींद परति निसि-वासर, नैन नींद भरि ढारे।
मानहिं नहीं मनैयै कैसें, वहुत मनावत हारे॥
ज्वाल सकल अंगनि तें नखसिख, जैसें दावा जारे।
कठ कपोल अधर कुम्हिलाने, भए भँवर तें कारे॥
जोग जज्ञ तीरथ व्रत तुमहीं, लोक वेद तें न्यारे।
सव सौं तोरि तुमहि चित वाँध्यौ, अव ह्वै रहे तुम्हारे॥

डगमगात तन धरत न धीरज, डोलत दुखित दुखारे ।
सूरजदास कहत कर जोरे, दरसन देहु पियारे ॥२०२॥

उद्धव-वचन *राग सारग*

तुम्हरोइ चित्र वनाउ कियौ ।
तब कौ इंदु सम्हारि तुरत ही, मनसिज साज लयौ ॥
व्रत गहि जुग अँगुरी के बीचहिं, उन भरि पानि पियौ ।
पुर प्रति करतिं लेख कौ प्रारंभ, तवहिं प्रहार कियौ ॥
ह्वै पथ बिकल चकित अति आतुर, भरमति है जु हियौ ।
भृत्ति बिलंबि पृष्ठ दै स्यामा, स्यामै स्याम बियौ ॥
या गति पाइ रही राधा अब, चाहति अमृत पियौ ।
सूरदास-प्रभु प्रीति उलटि परी, कैसैं जात जियौ ॥२०३॥

परिशिष्ट (२)

मोहन जागि हौं बलि गई ।
ग्वाल-बालक द्वार ठाढ़े, बेर बन की भई ॥
पीत पट करि दूरि मुख तैं, छाँड़ि दै अरसई ।
अति अनंदित होति जसुमति, देखि कै द्युति नई ॥
जागे जंगम जीव पसु खग, और ब्रज सबई ।
सूर के प्रभु दरस दीजै, अरुन किरन छई ॥

॥१॥२०४॥

राग कान्हरौ

अंतरजामी श्री रघुबीर ।
करुनासिंधु अकाम कल्पतरु, जानत जन की पीर ॥
बालि त्रास कपि बसत बिषम बन, व्याकुल सकल सरीर ।
सो सुग्रीव कियौ कपिपति प्रभु, मेटि महा रिपु भीर ॥
दसमुख दुसह क्रोध दावानल, पुंज-उपाधि समीर ।
तिहिं जर जरत बिभीषन राख्यौ, सींचि कृपा वर नीर ॥
कहि कहि कथा प्रेम पूरन जस, जुग जुग जग सब तीर ।
मूरि नाम कल कियौ सूर प्रभु, रामचंद्र रनधीर ॥

॥२॥२०५॥

मुरली बहुतै ढीठ भई ।
ऐसी निठुर भई देखतहीं, उपजी व्याधि नई ॥
यह रस भरी बदति नहिं काहूँ अति उर रोष तई ।
सूरदास ऐसी कुनारि किन्हि बचननि मोल लई ॥

॥३॥२०६॥

वेष बन्यौ नँद-नंदन प्यारे । सुंदर नैना फिरत तुम्हारे ॥
सुनत बेनु पसु पच्छी मोहे जमुना थाकी कथा बिचारे ।
देखत गति सूर सुरपति मोहे जतन चंद चलिबे तैं हारे ॥

विरह ताप तन अधिक तपत है अब बिसरे दुख सबै हमारे।
सूरदास-प्रभु अधिक चतुर जय जय जय श्री नंद-दुलारे॥
॥४॥२०७॥

मुरली या तैं हरिहिं पियारी।
अधर धरत सरजीव होति है मृतक होति किये न्यारी।
जैसी प्रीति मीन जल पंकज तरनि बिना मुरझाई॥
× × × × ॥
अरु ज्यौं जगै अगिनि चकमक की पाथर सहै झरारी।
तौ लौं सूर कहाँ पिय पैयत गोकुल चंद बिहारी॥
॥५॥२०८॥

मुरली तेरौई बड़ भाग।
धन्य सुवंस कुंज कौ लहनो जिहिं उपजी बन बाग॥
प्रथम सह्यौ छत कर कुठार कौ दूजें सब तन दाग।
उतनौ दुख इतनौ सुख पायौ पीवति कमल-पराग॥
जाकौ जस गुन गंध्रप गावत सुर नर मुनि जन नाग।
सूरदास प्रभु वस्य किये हरि बसी करि अनुराग॥
॥६॥२०९॥

स्याम सुंदर मदन मोहन बाँसुरी बजाई री।
दोऊ कर जोरि बहुरि अधरान पर आनि धरी थकित भईं
ग्वारिनि सुधि नहीं रही काई री।
बाजै सु अनेक राग बानी, सिव सेस नाग धुनि सब सीस
धुनैं धरनि परी आई।
बाजै बर कौन सुनै यातैं मगन भए सुर नर मुनि रुद्र जु कौ ध्यान
छुट्यौ परवती गुन लाई री।
सूर गावत हरि छंद गोपिन में भयौ अनंद सबनि राधा प्यारी
प्रीति कै बुलाई री॥७॥२१०॥

आजु कहुँ मुरली स्याम बजाई।
तब तें तरवर मोर सबै पुर रही बदरिया छाई॥

गौवनि अधर दसन तृन रहि गयौ बछरा पियत न धाई।
सिध साधक ब्रह्मादिक येऊ रहे सबै लौ लाई॥
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस कौं धुनि सुनि-सुनि उठि धाई॥
॥८॥२११॥

सुनौं हो या मोहन की बैन।
स्रवन सुनत सुधि-बुधि सब बिसरी बिरह बिथा भई ऐन॥
गृह अँगना न सुहाइ मेरी सजनी नहीँ परत चित चैन।
जब मुख देखौं स्याम सुँदर कौ तब सचुपावैं नैन॥
रास रच्यौ बृंदावन महियाँ सब गोपिनि सुख दैन।
अपने अपने बानक बनि आईं तट जमुना जल फैन॥
देवलोक सुरलोक बिसारी चंदा बिसर्‍यौ रैन।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे दरस कौं चली मदन गढ़ लैन॥
॥९॥२१२॥

मुरली मोहन-अधरनि बासा।
सिव समाधि छूटी धुनि सुनि कै सरिता कियौ निवासा॥
मीन कुरंग सेप ससि मोहे सब थकि रहे निवासा।
कमल नैन कहि कहि अति जोधा जपत रहे सूरदासा॥
॥१०॥२१३॥

राग काफी

मोहन मन मोहि लियौ ललित बेनु बजाई री।
मुरलि-धुनि स्रवन सुनत बिबस भई माई री॥
लोक-लाज कुल की मरजादा बिसराई री।
घर घर उपहास सुनत नैकु ना लजाई री॥
जप तप बेदऽरु पुरान कछू ना सुहाई री।
सूरदास-प्रभु की लीला निगम नेति गाई री॥
॥११॥२१४॥

राग काफी

सुनि आधी सी राति मोहन मुरलि बजावै।

मन हरि लियौ देह गति भूली गृह अँगना न सुहावै।
सूरदास-प्रभु मुरली ताननि देह-दसा बिसरावै॥
॥१२॥२१५॥

स्याम तेरी मुरली मधुर धुनि बाजै।
मुरली तेरी सुर नर मोहै तीनि लोक पर गाजै॥
लीन्हे बाल गुपाल लाल सँग आवत गैयनि पाछै।
मोर-मुकुट कुंडल की सोभा पीत काछनी काछे॥
काँध कमरिया हाथ लकुटिया माथैं तिलक बिराजै।
सूरदास के प्रभु की सोभा कोटिक काम पराजै॥
॥१३॥२१६॥

माई मुरली बजाई किन री।
नंद महर कौ कुँअर कन्हैया रैनि न जानै दिन री॥
मोहे खग मृग अरु पसु-पालक मोहे बन उपबन री।
चलत न नीर थकित भई जमुना गऊ न चारैं तृन री॥
मुरली बजाई सब मन लाई स्रवन सुन्यौ जिन जिन री।
सूरजदास सकल जन मोहे मुरली की धुनि सुनि री॥
॥१४॥२१७॥

जब कर बेनु सची बलबीर।
स्रवन सुनत सुर नर जु थकित भए सरिता थकि बहत नहिं नीर॥
सागर थकित कमठ पुनि बिथक्यौ सेस सहस मुख धरत न धीर।
सिव थकि ध्यान ज्ञान ब्रह्मा थके गो-सुत थकित पिवत नहिं छीर॥
पवन थकित अरु थकि बन-बेली बनित थकित बिसारे चीर।
सूरदास प्रभु थकित जसोदा उड़गन थकित रहे इहिं तीर॥
॥१५॥२१८॥

राग मलार

मुरली कौन गुमान भरी।
जानति है उतपात आपने उतपति क्यौं बिसरी॥
हृदय आपनैं बेध बनाए बहु बिधि जरनि जरी।
तातैं श्री कमलापति लीन्ही अधरनि आनि धरी॥

अब धौं कहा कियौ चाहति है सरवस लै निवरी।
सूरदास ब्रज हा हा करि कै गोपी कहतिं खरी॥
॥१६॥२१९॥

राग धनाश्री

बाजी हो बृंदावन रानी।
धन्य बंस-दुख-भंजनि गिरिधर कर धरि मोहिनि मानी॥
तरल रसाल अधर-छबि कर लै मुरली सकल कहानी।
कुंज खोह कहु करत तपी तप तिन तन-तपति सिरानी॥
अंबर घेरि घटा घन आए रही धार धरि पानी।
बूझत बाल गुपाल सखा सौं कृत्रिम कहँ तैं आनी॥
सुख जनराज श्री सुंदर हरि मुख सूर सबै जग जानी॥
॥१७॥२२०॥

राग नट

हम न भईं बड़भागिनि बँसुरी।
कर अंबुज मैं बास सदाईं जोकौ छन छन पियति अधर-मधुरसु री॥
मुरली मनोहर नाम कहावत तीनौ लोक बिदित जग जसु री।
सूरदास-प्रभु अधिक निठुर भए मुरलीं कौं दियौ हमारौ सर बसु री॥
॥१८॥२२१॥

राग गौरी

मुरली कुंजनि कुंजनि बाजति।
सुनि री सखी स्रवन दै अब तू जिहिं बिधि हरि मुख राजति॥
कर पल्लव जब धरत साँवरे सप्त सुरनि कल साजति।
सूरदास यह सौति साल भई सबहिनि कैं सिर गाजति॥
॥१९॥२२२॥

राग काफी

बजाई बाँसुरी ब्रजराज (मोहे ब्रजराज)।
सुनि स्रवननि भवननि रहि सकीं न नहिं सुहात गृह-काज॥
मातु पिता पति पूत बंधु की तजी इन नैननि लाज।
हरे भरे द्रुम भरे झरे भए बृंदावन बिप राज॥

गैया गोप गोठ गृह अँटके हंस-सुता भई थीर ।
गन-गँधर्व सब थकित भए हैं चलत न त्रिविध समीर ।।
सुनि सुनि सकल ब्रज बधू धाईं बिकल बावरी वेस ।
रही न सम्हार हार उर अंचल छुटे कचुकी केस ।।
सिव बिरंचि ससि सेस सारदा मघवा मगन भए ।
रबि रथ रोकि रहे सुरपुर मैं बाजि बाग जुगए ।।
सुर नर मुनि थावर जगम जड़ भए सबहि मन-पग ।
तजि धन धाम बाम गृह अँटकीं सूर स्याम कैं सग ।।
।।२०।।२२३।।

मुरली तनक सुनै जो है ।
जल थल जीव जंतु कौ स्वामी सोऊ वा सुर मोहै ।।
जा तीरथ ब्रत कियौ तरुन सब स्रम करि पीठि न दीन्ही ।
ता तीरथ के ब्रत के फल सौं स्याम सुहागिनि कीन्ही ।।
हमैं छुड़ाइ अधर-रस पीवै करति न रंचक कानि ।
सूरदास-प्रभु निकसि कुंज तैं जुरी सौति बनि आनि ।।
।।२१।।२२४।।

राग बिलावल

कहियौ अति अबला दुख पावै ।
हिरन पटन-पति प्रबिसत ज्यौं है बार बार समुभावै ।।
सारँग-रिपु ता पति-रिपु वा रिपु ता रिपु तनहिं जरावै ।
हरि बाहन-बाहन-पति-धाइक ता सुत आनि बचावै ।।
सुर रिपु-गुरु-बाहन ता रिपु पति ता चढ़ि भेष दिखावै ।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे मिलन कौं बिरहिनि तपति बुझावै ।।
।।२२।।२२५।।

राग नट

नैननि ऐसीये कछु बानि ।
मोहन-मुख देखतहीं देखत छिनु होति हित-हानि ।।
परबस लै दीन्ही हौं इनहीं मिटी लाज कुलकानि ।
लव निमेष न्यारे नहिं सजनी मिलि रहे ज्यौं पय पानि ।।

जा दिन तैं देखे आनँद निधि बोलत मृदु मुसुक्यानि ।
तब तैं सूर मनहुँ या कुल सौं कबहुँ नहीं पहिचानि ॥
॥२३॥२२६॥

को समुझावै मेरे नैननि हौं समुझाइ रही ।
लाज न धरत फिरत पंछी ज्यौं करत न सीख कही ॥
बिनु आदर बिनु भाव बिना फिरि जात तहीं ।
वै बेधत सर ये सुख मानत यातैं अधिक दही ॥
इनके लियैं जगत उपहाँसी करि जिय कठिन सही ।
भौन गौन जल आनन कारन आनहिं बदत नहीं ॥
लालच लागे रहत स्वान ज्यौं चितवत स्याम जहीं ।
सुनहु सूर सबहिनि की यह गति नैननि गुसा गही ॥
॥२४॥२२७॥

नैना ऐसे हठी हमारे ।
परबस भए रूप रस-लोभी निरखि निमेष बिसारे ॥
राखे रोकि सखी घूँघट-पट टरत नहीं ये टारे ।
नैंकु बिलोकत परी ठगौरी भए लाज तजि न्यारे ॥
अपनौ दाम होइ जौ खोटौ दोष न परखत हारैं ।
जौ पै सरबस दयौ सूर प्रभु अब नहिं बनत पुकारैं ॥
॥२५॥२२८॥

सखी मेरे लोचन लोभ भरे ।
जिहिं टक परे स्याम सुंदर सौं तिहि टक सौं न टरे ॥
निद्रा तजी निमेष निवारी सदा रहत उघरे ।
सूल सलाक सहत निसि-बासर बिरह बयारि भरे ॥
लोक-बेद-कुल-लाज राज भय ये एकौ न डरे ।
नैन सूर नाहीं बस मेरैं कित उपाइ करे ॥
॥२६॥२२९॥

नैना नहीं सखी वै मेरे ।
बरजत हीं वै गए सखी री भए स्याम के चेरे ॥
जद्यपि जतन किये जुगवति ही स्यामल सोभा घेरे ।
तउ मिलि गए दूध पानी ज्यौं निबरत नहीं निबेरे ॥

कुल-अंकुस आरज-पथ तजि के लाज सकुच दई डेरे।
सूर स्याम कैं रूप लुभाने कैसेहुँ फिरत न फेरे॥
॥२७॥२३०॥

(मेरे) नैननि को रस नद-लला।
कहा करौं सिर परी ठगोरी बिनु देखें नहिं रहत पला॥
कुंडल-मकर पीत उपरैना राजति है उर बन-जु मला।
सुदरता की सींव छबीलो कद्रप कोटिक धरत कला॥
जब तैं चरन स्याम के देखे मनु अपंगु चित कहुँ न चला।
सूरदास प्रभु भई एक मन अंग-अग-प्रति भेद भला॥
॥२८॥२३१॥

कमल-नैन बस कीन्हे मुरली बोलि मधुर मृदु बैन।
सब विथकित कीन्हे एकहि धुनि मुनि-जन खग मृग धेनु॥
मुरली मनहर साँवरैं कर पल्लव निज बास।
अधर लागि सरबस लई अंमृत रस की रास॥
ब्रज नर-नारि दसौं दिसि जमुना पसु पच्छी द्रुम बेलि।
तब धुनि सुनि मुनि-जन-मन मोहे त्रिभुवन सुख रत केलि॥
अब तौ हेत हमसौं नहीं जेतौ तुमसौं हेत।
हम चितवति ठाढ़ी सबै तुमहिं अधर-रस देत॥
जानि बूझि कै वै करहिं एक जाति द्वै भाँति।
पगति भेद भलौ नहीं बुरौ सु यह उतपात॥
जाति-पाँति मद-गरब तैं रही सकल जग जीति।
सूर सुमृति स्रुति मेटिकै चली आपनी रीति॥
॥२९॥२३२॥

हरि मुरली कैं प्रेम भरे।
और कछू भावत नहिं उनकौं निसि-दिन रहत खरे॥
वा बिनु और कछू नहिं चाहत रहत सदा उमहे।
दास-प्रभु ऐसी कीन्ही हम-तन फिरि न चहे॥
॥३०॥२३३॥

कान्ह तिहारी सौं आऊँगी।
रेक बछरुवा सौंपि सभांरुं स्याम समय जो पाऊँगी॥

जुरी भवन मैं भीर न ह्वै है तौ यौं तुम्हैं बुलाऊँगी।
बालक पारि पालनैं कै मिस ऊँचे स्वर लै गाऊँगी॥
होत घैर घर दूरि कुबेरिया ऊतरु कहा बताऊँगी।
सूरदास-प्रभु तुम्हसौं छल करि कबलौं आपु छुड़ाऊँगी॥
॥३१॥२३४॥

हौं हरि यहै सिखाव सिखाऊँ।
जौ तुम नंद-नँदन दधि चाहौ तौ मैं तुम्हैं खवाऊँ॥
हाँ जु दूध बाखरी धेनु कौ तुम-हित औटि जमाऊँ।
बछरुनि कैं सँग टेरत डोलत तहाँ तुम्हैं कहँ पाऊँ॥
जा भाजन दधि औटि जमाऊँ सो दधि तुम्हैं बताऊँ।
मेरी परोसिनि आप काज कौं जब उठि जाइ वहाऊँ॥
छीके पर है कनक-कमोरी जौ हौं नैन नचाऊँ।
मेरे नैन दरस के प्यासे बहुरौ दरसन पाऊँ।
सूरदास-प्रभु छल करि आवहु इहिं मिस देखि अघाऊँ॥
॥३२॥२३५॥

मेरौ दधि लीजै कुंज दानि।
नैंकु तुम्हारी बुहनी सचु पाऊँ लै आई यह जानि॥
आछौ नीकौ अछूतौ गाढ़ौ सो प्रतीति तू मानि।
छुअत हौं हाथ स्याम के जो कछु मिलयौ ह्वै है पानि॥
झगरत सुख सरिता अति बाढ़ी अनमिल कछु रही नहिं कानि।
सूर श्रीगुपाल-मुख निरखत गोरस बेंचत हित न बिकानि॥
॥३३॥२३६॥

देखौ माई आवत हैं घनस्याम।
दामिनि ज्यौं पीतांबर सोहत मोहत कोटिक काम॥
घूँघरवारी अलक मनोहर मंडित गोपद-धूरि।
तिनकैं निकट प्रकट कुंडल-दुति मनु नव घन मैं सूर॥
बनमाला जो हिय कंजनि की इंद्र-धनुष की भाँति।
मुक्ता माल अनूपम राजति ज्यौं जलधर बग पाँति॥
माथें मुकुट मोर ज्यौं निर्त्तत मुरली-सब्द रसाल।
सूरदास-प्रभु मेघ स्याम घन चातक सब ब्रज-बाल॥
॥३४॥२३७॥

हरि-चितवनि चित तैं नहिं टरै।
कमल-नैन सौं अरुझि रह्यौ मन कहा करैं क्यौं हूँ न निवरै॥
जद्यपि मात पिता मोहिं त्रासत भई भवन मैं तृन तैं हरै।
तद्यपि यह मन रहै न हटक्यौ बिनु देखैं अतर उर जरै॥
जाकौ बिगरि पर्‌यौ मन चचल भली बुरी सिर ऊपर धरै।
सूरदास-स्वामी सौं मिलि अब को जाने मीठी अरु करै॥
॥३५॥२३८॥

यह पट पीत कहाँ तैं पायौ।
इतनक बोल गुपुत माधौ को राधे तैं तिहुँ लोक जनायौ॥
एक समय अतर बन खेलत बहुत जतन करि मर्हीं उठायौ।
नाहीं याकौ मोल न गाहक घर उपज्यौ नहिं मोल मँगायौ॥
सुमिरत ध्यान कवै उर अंतर त्रिभुवन रूप भलौ वर पायौ।
ये सब भेद चतुर सोइ जानैं सूरदास-प्रभु कहि समुझायौ॥
॥३६॥२३९॥

आजु बन लीला ललित सँवारी।
ग्वाल-बाल सखियाँ सँग लीन्हे राधे रूप मुरारी॥
मृगमद तैं लेपन कियौ पुनि तापर चदन खौर।
बनमाला मुक्तावली सिर मुकुट चंद्रिका मोर॥
घेरि गूजरिनि सौं कह्यौ तुम देहु दही को दान।
कौड़ी एक न छाँड़िहौं मैं वै न कनौड़े कान्ह॥
एक सखी गोकुल गई तिनि कह्यौ स्याम सौं टेरि।
दानी एक नयौ भयौ तिनि दयौ अमल तुव फेरि॥
सुनि मोहन कोहन भयौ उठि गोहन दौरे धाइ।
रूप अनूप बिलोकि कै कछु भ्रम तैं भाषि न जाइ॥
निरखतहीं लोचन मिले वै मंद मद मुसुकाइ।
राम राम हो राम जै दोउ बिहँसि मिले उर लाइ॥
रस कैं बस ह्वै प्रेम तैं मिलि लपटि रहे भुज चारि।
सूर स्याम बस राधिका उत राधे हरि अनुहारि॥
॥३७॥२४०॥

तुम्हैं कोउ हेरत है हो कान्ह।
गोरी सी भोरी थोरे दिननि की थोरी वैस उठान॥

पहिरे नीलांबर अति सोहै मुख-दुति चंद समान ।
बंसीबट की ओर गई है लाल मनोहर जान ॥
जानति हैं मन बच क्रम मोहन तुम मैं वाकै प्रान ।
सूरदास-प्रभु अबहीं चलियै नई करौ पहिचान ॥
॥३८॥२४१॥

८

राग गूजरी

घनी राधे काजर की रेख ।
चारु चिबुक मुदरो पिउ मोहन लै दरपन मुख देख ॥
मुकुता पति कपोत कोक कर इंदुक बदन बिसेष ।
हिरदय तैं न टरै कुंज बिहारी चारु गवने निसेस ॥
आरत भए अनंत रोइ कै थरथर कॉप्यौ सेप ।
सूरदास लीला सागर बिसरत नाहिं निमेप ॥
॥३९॥२४२॥

राग कान्हरा

बरनौ राधिका लाल ।
रूप गुन उपमा न पावत नाग सुर नर व्याल ॥
वारि जलसुत करन भूपन कुटिल हारक साल ।
मनो थल नव कमल अंकुर विकस है भरमाल ॥
सीस फूल दुकूल जल मैं जोति जगमग जाल ।
मनो रवि पर प्रगट विहरत छीन घन की माल ॥
कबहुँ विलुठत पीठि दीठत कर कजल की व्याल ।
मनौ फूटे कनक कुंभहिं देखत दोऊ भाल ॥
किंच बंकक हेम मंडित सकस नवल प्रवाल ।
मनो भरि भरि अंक भैंटत उमँगि पिय उठि लाल ॥
सुभग नासा रदन की छबि परम सुरँग रसाल ।
यौं मरकत सैल ....॥
जुगल जंघ जराइ जेहरि चलत मंद रसाल ।
रूप गुन के सूर बलि बलि मिलहु दीनदयाल ॥
॥४०॥२४३॥

राग नट

जाकैँ हरि जू कौ बरु ताकै धौँ कौन कौ डरु।
काहैँ जिय सोच कीजै को है हो ऐसौ अवरु॥
सबहिनि के हैँ नाथ जीवन वाही कैँ हाथ वेई अजर अमर अजित अकाथ।
सोई बसै साथ सदा सरन अनाथ वेद बदत विदुप देखौ धौँ गावत गाथ॥
पुनि धौँ जिनकी भीति सकल चलत नीति अपनी प्रतीति चित थकित रहत।
रवि न तपत अति वायु न तजत गति डोलत न सेप सिर सिंधु न बहत॥
काल के मारनहार प्रगट धरनि बसि अनाथ अभय करि हिय हुलसत।
प्रगट सूर के स्वामी अखिल अंतरजामी असुर अबोध दुष्ट अजहूँ ग्रसत॥४१॥२४४॥

जागौ मोहन भोर भयौ।
फूले कमल कुमुद मुद्रित भए तमचुर कौ सुर हारि गयौ॥
टेरत ग्वाल बाल सब ठाढ़े पूरब सौ पतंग उदयौ।
सुनत बचन जागे नँद-नंदन सूर जननि तब उछँग लयौ॥
॥४२॥२४५॥

राग रामकली

बे सइयाँ मेरी रैनि बिदा होन लगी।
घटि गई ज्योति मद भए तारे फूल बासाना दिसि पागी॥
सोरह सिंगार बतीस आभरन अपने प्रीतम सँग जागी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन कौँ कृष्न हमारे अनुरागी॥
॥४३॥२४६॥

राग रामकली

बढ़ि घढ़ि बात लागी करन।
स्याम सुदर मदनमोहन आए तेरे घरन॥

उदित उर पर चिकुर छूटे चिकुर उर पर दरन ।
काम कौ दल साजि आई आड़ दै दै लरन ॥
विरह कौ संग्राम जीत्यौ वाधि अपनो परन ।
सूर के प्रभु तरन तारन राखि अपनी सरन ॥
॥४४॥२४७॥

राग रामकली

निपट छोटे कान्ह सुनि जननी कहौं बात ।
होत जब समुदाइ करत तब सिसु भाइ एकांतहिं पाइ कै नैन भरि मुसुकात ॥
देखि रस-रीति की प्रीति विपरीत गति मति मानि छाँड़ि सँग लगी रहौं निसि प्रात ।
जात नहिं बिसरि देखे बहुत जतन धरि समुझि कहुँ चंद देखैं कमल बिगसात ॥
दुरत घूँघर जवै लाल जसुमति ह्वै उझकि धसि धरनि धरि पाँव मुख किलकात ॥
मनहुँ आषाढ़ घन बादरी सूर तजि होत आनंद सब फूल अति जलजात ॥४५॥२४८॥

राग सारंग

श्री जमुना निज दरसन दीजै ।
आस अरौं गिरिधरन लाल की इतनी कृपा करीजे ॥
हौं चेरी महरानी तेरी चरन-कमल रखि लीजै ।
बिलँब करौ जिनि वोलि लेहु मोहिं दरस परस नित कीजै ॥
करौ निवास उर अंतर मेरैं स्रवन सुजस सुनि लीजै ।
प्रान-प्रिया की खरी पियारी पानि पकरि अब लीजै ॥
हौं न अबूझ मूढ़ मति मेरी अनत नहीं चित भीजै ।
सूरदास मोहि यह आसा है निरखि निरखि मुख जीजै ॥
॥४६॥२४९॥

कहँ लौं कहौं सखि सुंदरताई ।
मोर पच्छ माथे पर राजत फेरत कमल अंग सुखदाई ॥

पहिरे पीतांबर हैं ठाढ़े बहु बिधि (सुंदर) ठाट बनाई।
मुरली अधर मधुर धुनि बाजति नए मेघ मानौ घहराई॥
सिर पर लाल पागरी बाँधे उर मुक्तनि की माल-रुराई।
जुगल प्रबाह सुरसरी-धारा निरखत कलिमल गए हिराई॥
बैजनी लटकति चरननि लौं हस कीर रहे बैठि लजाई।
सोभा-सिधु पार नहिं जाकौ सिव बिरचि सोचत अधिकाई॥
बड़े भाग प्रगटे जसुदा कैं घर बैठे हीं नव निधि आई।
सूरदास प्रभु नंद अनदित तिहूँ लोक-छिति छबि न समाई॥
॥४७॥२५०॥

निरखत रूप नैन मेरे अटके।
रहत न घरी प्रबल-बल उमँगे मधु माखी ज्यौं दोऊ लटके॥
कल नहिं परत धरत नहिं धीरज बिन रसना निसि-बासर रट के।
छाँड़ी लाज काज गृह बिसर्‍यौ बोल कुबोल हियैं नहिं खटके॥
लै घट गई सुभाइ आपनें भर्‍यौ जाइ जमुना-जल टटके।
दई उठाइ सीस पर गागरि मो तन चितै कोर दृग मटके॥
चचल भौंह तबै पहिचानी चलनहार वे औघट घट के।
मैं हूँ सोच कर्‍यौ जिय अपनें भूलत नहीं पीत पट कट के॥
मंत्र सुमंत्र करौ कछु सजनी तृपित होत जैसे अमृत घट के।
सूरदास-प्रभु ब्रज सुखदायक श्री स्यामा बर नागर नट के॥
॥४८॥२५१॥

निरखि रूप अटकीं मेरी अँखिया।
अति रस लुब्ध प्रेम-बस सजनी बिधीं सहत कौं ज्यौं हठि मखियाँ॥
तोरि कपाट आड अचल की गई धाइ काहू नहिं लखियाँ।
अब ये अधिक पिरातिं रैनि दिन करहु जतन सुंदर सब सखियाँ॥
राखति हुतीं बहुत जतननि सौं गुरुजन-लाज-कोट गढ़ नखियाँ।
सूरदास प्रभु मोहन नागर कल कहँ परति रूप जिन चखियाँ॥
॥४९॥२५२॥

राग बिलवाल

देखि सखि तीस भानु इक ठौर।
ता ऊपर चालीस बिराजत रुचि न रही कछु और॥

धर तैं गगन गगन तैं धरती ता विच रहे विस्तार ।
गुन निर्गुन सागर की सोभा विनु रवि भयौ भिनुसार ॥
कोटिनि कोटि तरंगैं उपजतिं जोग जुगति चित ल्याउ ।
सूरदास प्रभु अकथ कथा कौ पंडित भेद बताउ ॥

॥५०॥२५३॥

राग विलावल

(अहो) दधि-तनया-सुत-रिपु-गति-गमनी सुनि वृषभानु-दुलारी ।
दादुर-रिपु-रिपु-पतिहिं पठाई सों चित वेष विचारी ॥
अलि-वाहन-रिपु-वाहन-रिपु की तपति भई अति भारी ।
सोच सम्हारि प्रभू खेदित हैं हौं वलि जाउँ तिहारी ॥
मारुतसुत पति-रिपु-पति-पत्नी ता सुत-नारि विसारी ।
सूरदास-प्रभु तुम्हरे मिलन कौं ज्यौं हठ होत हत्यारी ॥

॥५१॥२५४॥

राग विलावल

सारँग-सुत-पति तनया कैं तट ठाढ़े नंद-कुमार ।
वहुत तपत जु रासि मैं सविता ता तनया-सँग करत विहार ॥
गुड़ाकेस-जननी-पति-वाहन ता सुत के अँग सजे सिंगार ।
चंद चौहत्तर आठ हंस द्वै व्याल कमल वत्तीस विचार ॥
एक अचंभौ और वताऊँ पाँच चंद द्वै कमल मँझार ।
सूरदास इहिं जुगल रूप कौं रोमनि राखि सदा उर धारि ॥

॥५२॥२५५॥

राग कान्हरा

रास रच्यौ वृंदावन मोहन चलु प्यारी खेलत गिरिधर ।
कालिंदी तट सघन कुंज अति सरद-रैनि सोभित हिमकर ॥
पास भामिनी वीच स्याम घन सब कर जोरि करत अवसर ।
वाजत ताल मृदंग झाँझ डफ चतुर नागरी सवै सुघर ॥
संग सखा सब लिये विराजत पिचकारी साधे भर भर ।
उड़त गुलाल अवीर अरगजा चंदन खोरि कुंकुमा‑गर ॥
सब सिंगार नीके लागत हैं गिरत सुरत मोतिनि के लर ।
सूरदास-प्रभु की छवि निरखत थकित भए सुरपति ऊरध पर ॥

॥५३॥२५६॥

राग बिहागरा

सुभग सेज मैं पौंढ़े कुँवर रसिक वर रसमसे अग रंग-जागरन जागे हैं।
सिथिल बसन बीच भूपन अलक छबि सोहैं मुख सुख सौं लपटि उर लागे हैं॥
झुकि झुकि आवैं नैन आलस झलकि रह्यौ लटपटी बातैं कर अति अनुराग हैं।
सूरदास नंद जू के सुवन तिहारौ जस जानौ प्रान प्रिय सुखही मैं रस पागे हैं॥५४॥२५७॥

राग बिहागरा

पौंढ़े लाल राधिका उर लाइ।
नव कुसुम अरु नवल सेज्या नव चतुर दोउ राइ॥
गान सहचरि करतिँ द्वारैं सरस राग जगाइ।
सूर प्रभु गिरिधरन सँग-सुख रही उर लपटाइ॥
॥५५॥२५८॥

राग कान्हरा

घूँघट के बगरोट ओट रहि चोट सरासन भौंह सायक दृग।
वेध्यौ बिदित चपल पलकनि अलकनि फस निसस चली डिग॥
ते करि सायल नायक की मनि सुनि सुदरि सरि को जग।
बचन प्रसंसि अंस भुज धरि हरि धरि करि करुना तुव भूपन को नग॥
चित चितयो फिरि दिसा अनौपी पोखि अधर मधु सुधि भई जो लग।
सूरदास संजोगहि यह गति रति बिछुरे की अकथ कथा खग॥
॥५६॥२५९॥

राग आसावरी

एक समय मदिर मैं देखे राधा जू अरु नदकिसोर।
दच्छिन कर मुक्ता स्यामा के तजत हंस चुप चुगत चकोर॥
तामैं एक अधिक छबि उपजी ऊपर मधुप करत घन घोर।
सूरदास प्रभु इंद्र सकान्यौ रवि अरु ससि वैठे इक ठौर॥
॥५७॥२६०॥

राग आसावरी

गुरुजन मैं डटि वैठी स्यामा स्याम मनावन जाहीं।
सनमुख ह्वै कै चरन छुवाई मोर-मुकुट परछाहीं॥
तव दरपन लै निरखन लागी कहि तिय नाहीं नाहीं।
सूरदास मोहन पाछैं ह्वै छवि निरखत सुख माहीं॥
॥५८॥२६१॥

अरी तू को है हौं हरि दूती।
कहा कहति तजि मान मनोहर सुनि सखि समुझि कहा है सूती॥
ताहि मनाउ जगाइ जु तिनकौ अधर-सुधा मधु मय संजूती।
सूरदास-प्रभु रसिक-सिरोमनि छल बल करि जु राधिका धूती॥
॥५९॥२६२॥

मोसी हितू न तेरैं ह्वैहै।
ये दिन चारि गए सुन नागरि नैननि नींद न ऐहै॥
कठिन काठ तै ग्वारि हठीली (उठि चलि) वेगि निसा घटि जैहै।
जोवन बादर छाहँ सूर-प्रभु ऐसी जोति न रैहै॥
॥६०॥२६३॥

आपुनहीं चलियै जू मोहन मन कीजियै न लाज।
मोसी जौ तुम कोटिक पठवौ प्रिया न मानति आज॥
हौं जु तिहारी आज्ञाकारिनि कहा कहत व्रजराज।
सूरदास प्रभु वड़े कहि गए आपु काज महा काज॥
॥६१॥२६४॥

राग सारंग

मनावति हारि रही हौं माई।
तू चित तैं पट होति न राधे हौं तोहिं लेन पठाई॥
राजकुमारि होइ तौ जानै घर की होइ बढ़ाई।
कमलनैन कौ जानि महातम अपनी राखि बड़ाई॥
टेढ़ी भौंह चली करि दूती तिरछैं हाथ नचाई।
सूरदास प्रभु जौ करौं दुलहिनि तौ बाबा की जाई॥
॥६२॥२६५॥

राधे कत तू खरिक गई री।
अब चलि देखि प्रानपति की गति तब तैं कहा भई री॥
जा छन तैं तैं दई दिखाई कर दोहनी लई री।
ता छन तैं मन परी चटपटी गाइ न दुहन दई री॥
अब ताकौ उपचार करै किन प्रीति की बेलि बई री।
अनँगराज सींचत कुंभी लै लागी प्रेम-जई री॥
चलि बलि फिरि चित (वन) दै मन दै मन उर की गई री।
सूरदास-प्रभु स्यामसुंदर मन मथियत काम-रई री॥
॥६२॥२६६॥

राग काफी

बिलोकौ राधा नागरि प्यारी हो छबि गुन रूप-निधान।
सारी नील मोल मँहगे की गौर गात छबि होति।
मनहुँ नीलमनि-मंडप-मध्ये बरति निरंजन जोति॥
चोटी चारु तीन-सरि मानौ कहा केतु अरु राहु।
चढ़ि हिलि मिलि एकै सँग हिम गिरि ससि मुख कीन्हौ ग्राहु॥
मंजुल माँग मोति लर लटकति भटकत उपमा देत।
जनु उड़ुगन सब सिमिटि सिमिटि एक बीच करत बिधु-हेत॥
सुंदर भाल बाल ससि मानौ रचित लाल रज-बिंदु।
मनहुँ सुमन बंधूक आनि इक मनसिज पूज्यौ इंदु॥
जुवा आड़ ताटक चक्र जुग भ्रू सुसंक मृग नैन।
मानहुँ तिलक बाग गहि बैठ्यौ ससि रथ सारथि मैन॥
नाक की बेसरि मैं मोती बरनत होत सकोच।
मनहुँ कीर दाड़िम फल फोर्‍यौ बीज लागि रह्यौ चोंच॥
रच्यौ अधर बिधि सानि सुधा रस इहिं उपमा कौ अंत।
मानहु मुकुलित सीप रूप-निधि मोति-दमक दुति-दंत॥
पुष्प कपोल चारु अति चिक्कन उपमा देत सकात।
जनु जुग संख करत ससि सौं मत मानि अनुज कौ नात॥
ठोढ़ी ठकुराइनि की नीकी नीलौ बिंदु मँझार।
सालिग्राम मनु कनक-सँपुट मैं रहि गयौ तनक उघार॥
कंठसिरी बिच पदिक बिराजत अरु राजत उर हार।
मनहुँ महेस परसि मंदाकिनि बरहिं बँसी जुग धार॥

कंचु कंठ राजति कंठस्री अरु सृग अभरन कॉति ।
मनहुँ कनक-मूरति गंगा तट निकट दिपति दिप-पॉति ॥
चौकी चारु लाल नग उदित यह उपमा दियौ हेरि ।
मानौ कंज अवनि तैं उपज्यौ इंद्र-वधुनि लियौ घेरि ॥
पहुँची पानि वाहँ धाजू बँद फवत फूँदन रूर ।
मनहुँ काम-वट-वरुह रहे गहि झूलत वाल मयूर ॥
चोली चारु छींट की छाजति उपमा देत अटोट ।
मनहुँ महेस मानि मनसिज-मय वैठ्यौ वगछल ओट ॥
सुंदर उदर रोम की राजी नाभि वसत रति रौन ।
मानहुँ साँगि सुधि करि वैठ्यौ द्वै महँ मारहुँ कौन ॥
नीवी वनी वोरि केसरि सौं कसी त्रिनोदे वाम ।
मनहुँ सीस सदवर्ग वाँधि कै वैठ्यौ सदन चढ़ि काम ॥
छीन लंक नीवी किंकिनि धुनि राजति अतिहिं प्रवीन ।
जुग नितंव मनु तुंव परस्पर समर ठटत रन-वीन ॥
जंघ कदलि विपरीत रची मनु लहँगा ललित सुहाइ ।
मनहुँ मदन गड़दार पेलि कै उमड़ि चल्यौ गजराइ ॥
अंवुज चरन पावटौ फुंदौ इहिं उपमा कौ ठौर ।
मधुर नाद गुंजार करत मनु उड़ि उड़ि वैठत भौंर ॥
कहै सहचरी वड़ दुख ल्याई प्रभु तुम्हरें हित लागि ।
अव रस परसि विलसि वृंदावन दम सकुच डर त्यागि ॥
जोरी वनी सुदेस सूर प्रभु वढ्यौ रीति रस रंग ।
ठकुराइनि मेरी श्रीराधा ठाकुर नवल त्रिभंग ॥
॥६४॥२३६॥

राग सारंग

तवहीं मेरौ मन चोर्‌यौ री जव कर मुरलि लई ।
वाजत राग रागिनी उपजत तान तरंग नई ॥
देह दसा विनु सुधि भई सजनी अँग अँग प्रीति रई ।
तन मन प्रान ज्ञान गुन मेरौ स्यामहिं अरपि दई ॥
हरि-मुख-वचन-सुधा-रस लोचन इकटक चितहिं दई ।
सूरदास-प्रभु तुम्हरी दासी करि विनु मोल लई ॥
॥६५॥२६८॥

राग केदार

मुरली सबनि कौ मन हर्‌यौ ।
प्रथमहीं ब्रजनारि सुनि कै आनि गिरिधर बर्‌यौ ॥
तब नहीं रहि गयौ हम पै सब्द स्रवननि पर्‌यौ ।
पिता सुत पति बिसरी अंबर चलीं तजि गृह भर्‌यौ ॥
सिद्ध चारन गुनी गंध्रब सुनत सब बिसर्‌यौ ।
मगन मन मारुत न डोलै सिथिल ससि न टर्‌यौ ॥
मोर मधुप चकोर सारस सबनि यह मत कर्‌यौ ।
आपनौ ब्रत छाँड़ि धार्‌यौ जोग-जड़-ब्रत धर्‌यौ ॥
निकसि सर्प न दुरत बाँबी कछु जु बसी कर्‌यौ ।
तोरि तृन मृग सुरभि दसननि दाबि नाहिंन चर्‌यौ ॥
चतुर कोकिल रही चित दै कीर नैंकु न मुर्‌यौ ।
ध्यान सौं धरि रहे द्रुम सब नाद उर मैं अर्‌यौ ॥
थके थिर चर सुर असुर नर लए धरनी धर्‌यौ ।
सूर प्रभु मुरली अधर धरी काम नाचत खर्‌यौ ॥

॥६६॥२६९॥

राग धमार

सुंदरि एक दह्यौ लिये ठाढ़ी देखी नंद-दुवारि ।
बढ़ी प्रीति ललना गिरिधर सौं गुरुजन सबहिं बिसारि ॥
मोतियनि माँग भरी सखियनि सँग बेंदी दिपति लिलार ।
करनफूल खुठिला अति राजत मदन जोबन कैं भार ॥
नैननि कज्जल नासिका बेसरि मुख तमोर अति राज ।
ढार सुढार बन्यौ जाकौ मोती रहत अधर मुख छाज ॥
कटि लहँगा पहुँची बँद अँगिया फुँदना बहु बिधि सोहै ।
रतन जराव जरी जाकी जेहरि हंस-चाल गति मोहै ॥
कचन कलस भराइ जमुन-जल मोतियनि चौक पुराए ।
मनु द्वै छौना हंसनि के से चुगन सरोवर आए ॥
तौ कहावत हौ नँद-नंदन सारँग बुधि है थोरी ।
सूरदास प्रभु नंदलला की बनी है छबीली जोरी ॥
॥६७॥२७०॥

———

प्रतीकानुक्रमणिका

सूचना—इस अनुक्रमणिका में दिए हुए अंक पदों के क्रमांक हैं जो ग्रंथ में प्रत्येक पद के अंत में दिए हुए हैं। कहीं-कहीं राग भी मात्रा-पूर्ति के निमित्त रखे हुए कुछ शब्द कोष्ठ में दिए हुए हैं, किंतु अनुक्रम-निर्धारण में उनका विचार नहीं रखा गया है। परिशिष्टवाले पदों के क्रमांक 'प'-पूर्वक व्यक्त किए गए हैं।

ऊ

औ

औ

क

ग

छ

ज

थ

द

थ

द

प

फ

भ

भीषम धरि हरि कौ उर ध्यान २८०

य

र